



भविष्यपुराण भाषा ॥

जिसमें [illegible] नारियों [illegible] आवश्यकता, स्त्रियों [illegible] परीक्षा, [illegible] व स्त्रियोंके [illegible] विधियोंके [illegible] व कथा, [illegible] व चिकित्सा, [illegible] नागों [illegible] वर्णन, प्राणा[illegible] [illegible] की उत्पत्ति, [illegible] वर्णन [illegible] राजाओं [illegible] [illegible] [illegible] ब्राह्मण, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] उत्तम २ विषयवर्णित हैं ॥

[illegible]

श्रीयुत मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के निदेशसे [illegible] [illegible] निवासि [illegible] ब्राह्मण कुलोत्पन्न श्रीपण्डित[illegible]लालजीके पुत्र श्रीपण्डित दुर्गाप्रसादने संस्कृतभविष्यपुराणसे आर्य भाषा में अनुवादकिया ॥

[illegible]

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापागया

जून सन् १८८१ ई० ॥

इसमतबे में जो भाषापुराण छपेहैं उनमें से कुछ नीचे लिखे हैं ॥

देवीभागवत भाषा ॥

बारहों स्कन्धका उल्था मनोहर वार्त्तिक रीतिपरहै ॥

बृहन्नारदीयपुराण भाषा ॥

पण्डित शुकदेवसहायजीकी भाषाटीका सहित—जिसमें नारदजी व सनत्कुमार का संवाद व श्रीगंगाजी की उत्पत्ति, राजा बलि का वृत्तांत वर्णन है ॥

गणेशपुराण भाषा ॥

मुन्शीनवलकिशोर (सी,आई,ई) की आज्ञानुसार नारनौल निवासी पण्डित देवीसहायने संस्कृतसे श्लोक२ प्रतिदेशभाषामें उल्था किया है ॥

श्रीवाराहपुराण भाषा ॥

इसमें श्रीभगवान् वाराहनारायणने धरतीसे चौबीसहज़ार श्लोकों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सिद्ध होनेके लिये इतिहास संयुक्त कथायें वर्णन की हैं ॥

शिवपुराण भाषा ॥

इसमें शिवजीके निर्गुण सगुण स्वरूपका वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजाचरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काश्युपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड,रुद्राक्ष व भस्म माहात्म्य,व्रतविधि,भूगोल,खगोल व आदि में छहों शास्त्रोंके मतकी भूमिकाभी संयुक्त कीगई है छपी सन्१९०ई०॥

विष्णुपुराण भाषा ॥

इसका अयोध्याके द्वितीयाध्यापक पण्डित महेशदत्तने भाषान्तर किया जिसमें जगदुत्पत्ति, स्थिति, पालन,ध्रुव, पृथु आदि राजाओंकी कथा भूगोल,खगोल,वर्णन,नरक,स्वर्गबखान, धर्मशास्त्र,मन्वंतरकथा, सूर्य,सोमबंशीय राजाओंका कथन इत्यादि बहुतसीकथायें हैं ॥

भविष्यपुराणकी भूमिका ॥

विदितहो कि धर्म अर्थ काम औ मोक्ष ये चारपदार्थ इस संसारमें सारहैं इसीलिये सबमनुष्य अपनी २ रुचिके अनुसार इनकी प्राप्तिके लिये यत्न करतेहैं परंतु इन चारोंमें धर्म मुख्यहै धर्मके सेवनसे ये सब प्राप्तहोसकते हैं श्रीवेदव्यासजीनेभी कहाहै कि (ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येषनचकश्चिच्छृणोति से। धर्मादर्थश्चकामश्चसकिमर्थंनसेव्यते) धर्मकी प्राप्ति अपने २ वर्ण औ आश्रमके लिये कहे वैदिक कर्मोंके यथोक्त आचरणसे होतीहै इसीकारण पूर्वकालमें सब त्रैवर्णिक अर्थात् ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्य वेद पढ़नेमें अतिपरिश्रम करतेथे औ वेदपढ़ तदुक्तकर्म कर अपने अभीष्ट फल पातेथे परंतु कलियुगके मनुष्य ऐसे अल्पायुष औ मंदबुद्धिहुये कि जो संपूर्ण वेदको अपने जन्मभरमें अतिपरिश्रमसे भी नपढ़सकें यह देख परमकारुणिक श्रीकृष्ण द्वैपायनमुनिने वेदके चार भागकिये इसीसे उनका नाम वेदव्यासभया औ द्वापरयुगके अंतमें अठारहपुराण औ महाभारतरचे कि जिनसे थोड़े परिश्रमकरकेभी कलियुगके मंदबुद्धि आर्यमनुष्योंको धर्मका ज्ञानहोजाताथा औ उसके आचरणसे अभीष्टफलपाते थे परंतु पुराणं आदिका तात्पर्य जाननेके लिये भी संस्कृत वाणीका भलीभांति ज्ञानहोनाचाहिये औ वर्त्तमान कालके आर्यजनोंसे प्रायःसंस्कृत विद्याका अभ्यास छुटगया इसीसे पुराण आदिका परिशीलननहीं होसकता औ अपने वर्णाश्रमधर्मको नहींजानते जब धर्मका ज्ञानहीनहीं तो आचरण क्योंकर होसकताहै धर्माचरणके नहोने से प्रतिदिन धन आयुष् बुद्धि बल विद्यैश्वर्य तेज पुरुषार्थ संतानयश

आदिसे हीन होतेजातेहैं यहदशा अपने बंधु आर्यजनोंकी देख औ सबपुरुषार्थ प्राप्तिकामूल ज्ञानपूर्वक धर्माचरण औ धर्मज्ञानका मूल पुराणइतिहास आदिका परिशीलन जान औ आर्यजनोंको प्रायः संस्कृतवाणीके अनभिज्ञदेख विज्ञा-तिविज्ञ भरतखण्डके परमहितैषीढूसर वंशावतंस अतिदक्ष आर्यजनोंकी उन्नतिकेलिये बद्धकक्ष अवधसमाचारपत्रसं-पादक श्रीयुतमुंशीनवलकिशोरसाहबने यहइच्छाकी कि ये सब पुराण यदि आर्यभाषामें अनुवाद किये जायँ तो सब आर्यजन इनका तात्पर्यसुगमतासेजानसकैं औयथार्थस्व-रूप अपने धर्मकापहिचान दुराचरणसेनिवृत्तहो सत्कर्ममें प्रवृत्तहोवैं औ ईश्वरके अनुग्रहसे सबप्रकारके क्लेशोंसेछुट अपरिमित आनंदपावैं यहमनमें निश्चयकर मुंशीसाहबने इसकार्यमें सत्कारपूर्वक हमको नियुक्तकिया हमनेभी उनके इच्छानुसार अठारहपुराणोंमें बारहवेंपुराण औसाढ़ेचौदह सहस्रश्लोक प्रमाण श्रीभविष्यपुराणका आर्यभाषामें अनु-वादकिया इस पुराणमें अनेक उत्तम २ विषय भरे हैं जिनके देखनेसे धर्मकास्वरूप संसारको व्यवहार परमेश्वरका प्र-भाव जानाजाताहै औ अनंतपुण्य प्राप्तहोताहै औ चित्तको अतिहर्ष होताहै यहभविष्यपुराणका अनुवाद हमने अति सावधानतासे कियाहै औ हमारे परममित्र पण्डितवर श्री-युत श्रीसरयूप्रसादजीने इसको भलीभांति शुद्धकियाहै तौ भी जो कहीं किसीप्रकार अशुद्धहोय तो सरलहृदय क्षमा शील अतिसज्जन इसपुराणके पाठकगणदोषकीओर दृष्टि न देकर केवल गुणही ग्रहण करैंगे औ ईश्वरके अनुग्रहसे सब प्रकारका आनन्दपावैंगे ॥ (पण्डित दुर्गाप्रसाद शर्मा)

भविष्यपुराण भाषा पूर्वार्द्ध का सूचीपत्र ॥

श्रीभविष्यपुराण भाषा पूर्व्वार्द्ध का सूचीपत्र समाप्तभया ॥

———०———

भविष्यपुराण भाषा उत्तरार्द्ध का सूचीपत्र ॥

श्रवण कियाचाहते हैं कि जिसके श्रवण से अनेक पातक निवृत्तहों औ शुभ फलकी निरन्तर प्राप्ति होय यह राजा का वचन सुन प्रसन्नहो सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजा हम आपको भविष्य पुराण का श्रवण कराते हैं जिसके श्रवण करनेसे ब्रह्महत्या आदि बड़े २ पातक विलायजाते हैं इस पुराण में पांचपर्व ब्रह्माजीने कहेहैं पहिला ब्रह्मपर्व दूसरा विष्णुपर्व तीसराशिवपर्व चौथा त्वाष्ट्रपर्व औ पांचवांप्रति-सर्ग नाम पर्वहै ये पांच तो पर्व हैं औ पुराणमें पांचलक्षण होतेहैं उनको हम कथन करते हैं सर्ग प्रतिसर्ग वंश मन्व-न्तर औ वंशानुचरित इन पांच लक्षणोंसे युक्त औ चौदह विद्याओं करकेयुक्त पुराण होताहै चारवेद उनके छः अंग पुराण धर्मशास्त्र मीमांसा औ न्याय ये चौदह विद्याहैं आ-युर्वेद धनुर्वेद गांधर्व औ नीतिशास्त्र के मिलने से अठारह विद्याहोजातीहैं हेराजा अब हमभूतोंकेसर्गका अर्थात् जीवों की उत्पत्तिका बर्णनकरतेहैं जिसके सुननेसे सबपाप निर्मुक्त होय मनुष्यको शांति प्राप्तहोतीहै पूर्व कालमें यह सम्पूर्ण जगत् अंधकारसे व्याप्त था औ किसी पदार्थ का लक्षण नहीं बिदित होताथा उस समय सूक्ष्म अतीन्द्रिय औ सर्व भूतमय परमात्मा की सृष्टि करनेकी इच्छा भई औ प्रथमही परमेश्वरने जलको सिरजा औ उसमें अपना बीर्य्य डाला जिससे देवता असुर मनुष्यआदि सब जगत् उत्पन्न भया बीज शुक्र रेत उग्रवीर्य्य आदिनामब्रह्माजीने बीर्य्यके कहेहैं वह वीर्य्यजलमें गिरनेसे अत्यंत प्रकाशवान् सुवर्णका अ-ण्डहोगया उस अण्ड के मध्यसे सब लोगों के रचनेहारे ब्रह्माजी उत्पन्न भये क्षेत्रज्ञ पुरुष वेधा शम्भु नारायण बि-

वर्षकाहै अर्थात् उत्तरायण दिन औ दक्षिणायन देवताओं की रात्रि गिनीजातीहै अबहम ब्रह्माजीके दिन रात्रि औ युगोंका प्रमाण कहते हैं सत्ययुग चारहजार वर्षका है औ आठसौवर्ष उसकी सन्ध्या औ सन्ध्यांशहैं अर्थात् चारसौ वर्षसन्ध्या औ चारसौवर्ष सन्ध्यांशगिनाजाताहै इसीभाँति तीनहजार वर्षका त्रेतायुगहोताहै औ तीन २ सौवर्षकेउस के संध्या संध्यांश हैं द्वापरयुग दोहजारवर्षकाहै और चार सौवर्ष द्वापरके सन्ध्या सन्ध्यांशहैं कलियुगका प्रमाण एक हजारवर्षहै औ दोसौवर्ष कलिके सन्ध्या औ सन्ध्यांशगिने जाते हैं ये सब वर्ष मिलके बारहहजारवर्ष होते हैं यही देवताओंका एकयुग कहलाताहै देवताओंके हजारयुगहोने से ब्रह्माजीका एकदिनहोताहै औ यहीप्रमाण उनकीरात्रि काहै अर्थात् एकहजार युगकीही ब्रह्माजीकी रात्रिहोतीहै जब ब्रह्माजी अपनीरात्रिके अन्तमेंसोकर उठते हैं तबसत् असत्रूप मनको उत्पन्नकरतेहैं वह मनसृष्टिकरनेकीइच्छा से विकारको प्राप्तहोताहै तब उससे आकाश उत्पन्नहोता है जिसकागुण शब्द है आकाश विकृतहोता है तब अति बलवान्वायुको उत्पन्नकरताहै जिसवायुका गुणस्पर्शहै इसी प्रकार वायुसे रूपगुण करके युक्ततेज तेजसे रसगुण करके युक्तजल औ जलसे गंधगुणयुक्त भूमिकी उत्पत्तिहोतीहै जो हमने बारहहजारवर्षका एकदिव्ययुगकहा वैसे इकहत्तरयुग होनेसे एक मन्वन्तर होताहै औ ब्रह्माजीके एकदिनमेंचौदह मन्वंतर ब्यतीतहोते हैं अब युगोंकी व्यवस्थाकहते हैं सत्ययुगमें धर्मकेचारोंपाद वर्त्तमानरहते हैं फिरत्रेताआदि युगोंमें क्रमसे एक२ चरण घटताजाताहै सत्ययुगकेमनुष्य

वर्षकाहै अर्थात् उत्तरायण दिन औ दक्षिणायन देवताओं की रात्रि गिनीजातीहै अबहम ब्रह्माजीके दिन रात्रि औ युगोंका प्रमाण कहते हैं सत्ययुग चारहजार वर्षका है औ आठसौवर्ष उसकी सन्ध्या औ सन्ध्यांशहैं अर्थात् चारसौ वर्षसन्ध्या औ चारसौवर्ष सन्ध्यांशगिनाजाताहै इसीभाँति तीनहजार वर्षका त्रेतायुगहोताहै औ तीन २ सौवर्षकेउस के संध्या संध्यांशहैं द्वापरयुग दोहजारवर्षकाहै और चार सौवर्ष द्वापरके सन्ध्या सन्ध्यांशहैं कलियुगका प्रमाण एक हजारवर्षहै औ दोसौवर्ष कलिके सन्ध्या औ सन्ध्यांशगिने जाते हैं ये सब वर्ष मिलके बारहहजारवर्ष होते हैं यही देवताओंका एकयुग कहलाताहै देवताओंके हजारयुगहोनें से ब्रह्माजीका एकदिनहोताहै औ यहीप्रमाण उनकीरात्रि काहै अर्थात् एकहजार युगकीही ब्रह्माजीकी रात्रिहोतीहै जब ब्रह्माजी अपनीरात्रिके अन्तमेंसोकर उठते हैं तबसत् असत्रूप मनको उत्पन्नकरतेहैं वह मनसृष्टिकरनेकीइच्छा से विकारको प्राप्तहोताहै तब उससे आकाश उत्पन्नहोता है जिसकागुण शब्द है आकाश विकृतहोता है तब अति बलवान्वायुको उत्पन्नकरताहै जिसवायुका गुणस्पर्शहै इसी प्रकार वायुसे रूपगुण करके युक्ततेज तेजसे रसगुण करके युक्तजल औ जलसे गंधगुणयुक्त भूमिकी उत्पत्तिहोतीहै जो हमने बारहहजारवर्ष का एकदिव्ययुगकहा वैसे इकहत्तरयुग होनेसे एक मन्वन्तर होताहै औ ब्रह्माजीके एकदिनमें चौदह मन्वंतर ब्यतीतहोते हैं अब युगोंकी व्यवस्थाकहते हैं सत्ययुगमें धर्मकेचारोंपाद वर्त्तमानरहते हैं फिरत्रेताआदि युगोंमें क्रमसे एक२ चरण घटताजाताहै सत्ययुगकेमनुष्य

आरोग्य धर्मनिष्ठ सत्यवादी होते हैं औ चारसौ बर्ष तक जीते हैं फिरत्रेताआदियुगोंमें इनसब बातोंका एक २ चतुर्थांश न्यून होताजाताहै त्रेताके मनुष्यों का आयुष्तीन सौवर्ष द्वापरके मनुष्योंका दोसौ औ कलियुगके मनुष्यों का आयुष् एकसौ वर्षहोताहै औ इनचारों युगोंमें धर्मभी भिन्न२ भाँतिके हैं सत्ययुगमें तप त्रेतामेंज्ञान द्वापरमें यज्ञ औकलियुगमें दानकरनाही मुख्यहै ब्रह्माजीने सम्पूर्ण सृष्टि की रक्षाकेहेतु अपने मुख भुजा ऊरु अर्थात् जांघ औ चरणों से ब्राह्मणआदि चारवर्ण उत्पन्नकिये पढ़ना पढ़ाना यज्ञ करना यज्ञकराना दानदेना औ दानलेना ये छः कर्म ब्राह्मणके अर्थ नियतकियेगये पढ़ना यज्ञकरना दानदेना प्रजाकापालनकरना औ विषयोंका भोगकरना येसबबातें क्षत्रियों के लिये कल्पितकीगईं पढ़ना यज्ञकरना दानदेना पशुओं की रक्षाकरना खेतीकरना ब्यापारसे धनसंपादन करना ये काम वैश्योंकेलिये ठहरायेगये औ शूद्रकेलियेइनतीनवर्णोंकीसेवाकरनायही मुख्यकर्म नियतकियागया पुरुषके देहमें नाभि से ऊपरका भाग उत्तमहै उसमें भी मुख प्रधानहै और ब्राह्मण ब्रह्म के मुखसे उत्पन्न हुआ इसलिये ब्राह्मण सब से उत्तम है यहवेदकी श्रुतिहै ब्रह्माजीने वहुतकाल तप करके ब्राह्मणको उत्पन्नकिया इससे ब्राह्मण सृष्टि भरका स्वामीहै देवता और पितर हव्य औ कव्यको मुखसे भक्षण करते हैं औब्राह्मण मुखस्वरूपहै इसलिये सबमें प्रधानहै सबभूतों में प्राणी श्रेष्ठहै प्राणियों में बुद्धिमान् बुद्धिमानों में मनुष्य मनुष्योंमें ब्राह्मण ब्राह्मणोंमें विद्वान् विद्वानोंमें कृतबुद्धि कृतबुद्धियोंमें कर्म्मकरनेहारे औ कर्म्मकरनेहारोंमें भी ब्रह्मवेत्ता

श्रेष्ठहोते हैं ब्राह्मणकाजन्म धर्म्मसम्पादन करनेके लिये है औ धर्मके आचरणसे ब्राह्मण ब्रह्मलोकको जाताहै धर्म की रक्षा औ सृष्टिकीउत्पत्तिकेलिये ब्राह्मणकाजन्महैसृष्टिमें जितने पदार्थहैं सबकास्वामी ब्राह्मणहै ब्राह्मण अपने धनका उपभोग करता है और वर्ण ब्राह्मणकी कृपा से ब्राह्मणकेही धनसे अपना कालक्षेपकरतेहैं तीनवर्णोंके भाव औ अभाव करनेमें ब्राह्मण समर्थहै जो प्रसन्नहोय तो तीनों वर्णोंका कल्याण औ क्रोधकरै तो तीनों वर्णोंकाअभाव करसक्ताहै इस लियेब्राह्मणसदा पूजनीयहै ब्राह्मणके आगे किसीकाप्रभुत्व नहींचलसक्ताब्राह्मण अपनीइच्छासेस्वर्गमें जाताहै स्वर्गसे महर्लोकमहर्लोकसे जनलोककोचलाजाताहै औ ब्रह्मत्वको भी प्राप्तहोताहै इतनीकथासुन राजाशतानीक बोले कि हे सुमन्तुमुनि ब्रह्मलोक औ ब्रह्मत्व अति दुर्लभ है किनगुणों करकेयुक्त ब्राह्मण ब्रह्मलोकको जाताहै औ ब्रह्मत्वको प्राप्त होताहै यहआप कृपाकरकेवर्णनकरें यहराजाका वचनसुनि मुनिने कहा कि हे राजा जिस ब्राह्मणं के गर्भाधान आदि अड़तालीस संस्कार विधिपूर्वक हुयेहों वही ब्राह्मण ब्रह्मलोक औ ब्रह्मत्व को प्राप्तहोताहै संस्कारही ब्रह्मलोक की प्राप्तिका कारण है यह सुन राजाने कहा कि हे मुनीश्वरजी वे संस्कार कौनसे हैं आप सुनाइये तब मुनि बोले कि हे राजा आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया वेदमें औ शास्त्रमें जो संस्कार कहे हैं वे हम वर्णनकरते हैं गर्भाधान पुंसवन सीमन्त जातकर्म नामकरण अन्नप्राशन चौड़मेखला चार प्रकारका वेदव्रतस्नान बिवाह पंचमहायज्ञोंका करना जिनसे देवता पितर मनुष्य भूत औ ब्रह्मकी तृप्तिहोती है अ-

ष्टकाश्राद्ध पार्वणश्राद्ध श्रावणी आग्रहायणी चैत्री आश्वयु-
जी अग्निहोत्रदर्श पौर्णमास चातुर्मास्य निरूढ़ पशुबन्ध
सौत्रामणी अग्निष्टोम अत्यग्निष्टोम षोड़शी बाजपेय अ-
तिरात्र औ सप्तसोम ये सब ब्राह्मणके संस्कारहैं औ आठ
गुणभी ब्राह्मणमें होनेचाहिये जिनसे ब्रह्मकी प्राप्तिहोतीहै
वे ये हैं अनसूया दया क्षांति अनायासमङ्गल अकार्पण्य
शौच औ स्पृहा अब इनआठगुणों के लक्षणसुनिये गुणी
के गुणों को न छिपाना निर्गुणीकी भी स्तुतिकरना दूसरेके
दोषसे भी अप्रसन्न न होना अनसूया कहाताहै अपनेमें
पराये में मित्रमें औ शत्रुमें अपने समान बर्त्तना औ दू-
सरेका दुःख दूरकरने की इच्छारखना इसका नाम दयाहै
मन बचन कर्म करके कोई पुरुष दुःखदेवे तौभी उसपर क्रोध
न करना इसको क्षमाकहतेहैं अभक्ष्यवस्तु न खाना निंदित
पुरुषोंका संग नहीं करना औ आचारमें रहना इसका नाम
शौच है जिस शुभकर्म करके भी शरीर को कष्टहोय उस
कर्मको अत्यन्त न करना यही अनायासहै नित्य भलेकाम
करना औ बुरेकर्मोंको त्यागना इसको मङ्गलकहते हैं कष्टसे
उपार्जित कियेहुये धनसे भी थोड़ा बहुत नित्य देना इसका
नाम अकार्पण्यहै ईश्वरकीइच्छासे जो थोड़ाबहुतामिलजाय
उतनेहीमें संतुष्टहोजाना औ परायेधनकी इच्छा न रखना
इसका नाम स्पृहाहै इन आठगुणों औ संस्कारों करके जो
ब्राह्मणयुक्तहोय वहीब्रह्मत्वको प्राप्तहोयब्रह्मलोकको जाताहै
निषेक आदि वैदिक पवित्र संस्कारोंसे शरीरको शुद्धकरना
चाहिये जिसकीगर्भशुद्धिहो औसबसंस्कारहुयेहों औ वर्णा-
श्रमधर्म्मका आचरण करतारहै वह अवश्य मुक्तिपाता है

यहनिश्चय इसपुराणकाहै इनसंस्कारोंको जो सुने अथवा पढ़ै वह ऋद्धि लक्ष्मी कीर्त्ति धन धान्य यश पुत्र बन्धु औ उत्तमरूप को पाताहै औ कुछ काल सूर्य्यलोक में रहकर ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै॥

दूसरा अध्याय॥

यज्ञोपवीतादि संस्कारोंकी विधिऔर भोजनविधि व निषेध॥

इतनासुन राजा शतानीकने कहा कि महाराज इनसंस्कारोंके लक्षण औ वर्णाश्रम धर्मआप मुझे श्रवणकराइये यह राजा का बचनसुन सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हे राजा गर्भाधान पुंसवन सीमन्त जातकर्म्म नामकरण अन्नप्राशन चौड औ यज्ञोपवीत इनसंस्कारों करके बीजके औ गर्भके सब दोष निवृत्तहोजाते हैं औ स्वाध्याय व्रत होम महायज्ञ यज्ञ औ इज्याआदि से यह शरीर ब्रह्मरूप होजाताहै नालच्छेदनसे पहिले जातकर्म होताहै जिससे वेदके मन्त्रोंकरके सुवर्ण शहत औ घृतका बालकको प्राशन करायाजाताहै दशवेंदिन बारहवेंदिन अठारहवेंदिन अथवा एक महीना पूराहोनेपर नामकरण अच्छे मुहूर्त्तमें कियाजाताहै उससमय ब्राह्मणका नाम मंगलदायकरखना चाहिये जैसा शिवशर्म्मा क्षत्रिय का बल युक्त नाम जैसा इन्द्रवर्मा वैश्यका धनयुक्त जैसा धनवर्द्धन औ शूद्रका नाम जुगुप्सित अर्थात् बुरा रखनाचाहिये जैसा सर्व्वदास औ मनुजीने कहा है कि ब्राह्मण के नाममें शर्म्मा लगादेना क्षत्रियका नाम रक्षायुक्त वैश्य का पुष्टि संयुक्त और शूद्रका दासांत नाम रखना अर्थात् जिसके अंतमें दास आदि शब्दहों औ स्त्रियोंकानाम ऐसा रखनाचाहिये कि जिसके

बोलने में कष्ट न पड़े क्रूर न हो अर्थ स्पष्ट और अच्छा हो जिसके सुननेसे मनप्रसन्नहो मङ्गलदायक आशीर्वाद युक्त औ जिसके अन्तमें आकार ईकार आदि दीर्घस्वरहों बारहवेंदिन अथवा चौथेमहीने बालक को घरसे बाहरले जाना छठेमास अन्नप्राशन कराना पहिलेबर्ष अथवा तीसरेवर्ष चूड़ाकर्म अर्थात् मुण्डन करना गर्भ से आठवेंबर्ष में ब्राह्मण का यज्ञोपवीत गर्भसे ग्यारहवेंमें क्षत्रियका औ गर्भसे बारहवेंबर्षमें वैश्य का करनाचाहिये परन्तु ब्रह्मवर्चसकी इच्छावाला ब्राह्मण पांचवेंबर्षमें बलकीइच्छावाला क्षत्रिय छठेंबर्षमें औ धनकीकामनावाला वैश्य आठवेंबर्ष में अपने २ बालकों का यज्ञोपवीतकरैं सोलहबर्षतक ब्राह्मण बाईसवर्षतक क्षत्रिय औ चौबीसबर्षतक वैश्यगायत्री के अधिकारीरहतेहैं इसके अनन्तर गायत्रीके अधिकारी नहीं रहते औ ब्रात्य कहाते हैं जबतक ब्रात्यस्तोमनामक संस्कार उनका न कियाजाय तबतक शुद्ध नहीं होते इन ब्रात्योंकेसाथ आपत्तिमें भी कभी पठन पाठनका अथवा विवाह आदिका सम्बन्ध न करै यज्ञोपवीतके समय तीन वर्णोंकेलिये क्रममें तीनचर्म होतेहैं सिंहका रुरुनाम [illegible] औ बकरे का इसीप्रकार तीनप्रकारके वस्त्र शणके [illegible] के औ भेड़की ऊनके तीनवर्णोंके लिये कहे हैं [illegible] सुन्दरचिकनी मूँजकी मेखला ब्राह्मणके लिये [illegible]नामतृण की क्षत्रियके लिये औ शण तन्तुओंकी [illegible]लिये कहीहै मूँजआदि न मिले तो कुशाअश्मन्तक औ बल्वज नामतृण की मेखलाबनावै मेखलाको तिन[illegible]के एकतीन [illegible] पांचग्रन्थि उसमें लगावै ब्राह्मण कपासके सूत्रका [illegible]-

वीत पहिने क्षत्रिय शणके सूत्रका औ वैश्य भेड़के ऊनकाज-
नेऊ धारणकरै ब्राह्मणविल्व औपलाशके काष्ठकादण्डशिर
तक ऊंचाधारे क्षत्रिय बड़ और खैरके काष्ठकादण्ड मस्तक
पर्यंत ऊंचा ग्रहणकरै औ वैश्य पीपल औ गूलरके काष्ठका
दण्डनासिका पर्यंत ऊंचा धारणकरै ये दण्ड सूधे चिकने
और व्रणरहित होनेचाहिये यज्ञोपवीतके समय माता ब-
हिन अथवा मौसीसे पहिले भिक्षामांगे जो इसका अपमान
न करै वहभी सुवर्ण चांदी औ अन्न इसके पात्रमें डाले
इसभांति भिक्षाग्रहणकर गुरुके आगे निवेदनकरै औ गुरु
की आज्ञापाय आचमनकर पूर्वाभिमुख बैठ उसी अन्नको
भक्षणकरै पूर्वको मुखकरके भोजन करनेसे आयुष्की वृद्धि
होती है दक्षिणको यशकी पश्चिमको लक्ष्मीकी औ उत्तर
को सत्यकी आचमनकरके एकाग्रचित्तहो उत्तम अन्नको
भोजनकरै औ भोजनकरके फिर आचमनकर सब इंद्रियों
को जलसे स्पर्शकरै अन्नकी नित्य स्तुतिकरै औ अन्नको
देख प्रसन्न होजाय औ हर्षसे भोजन करै कभी अन्नकी
निन्दानकरै यह मनुजीकी आज्ञाहै पूजित अन्नके भोजन
से बल औ तेजकी वृद्धि होती है औ निन्दित अन्नके भो-
जनसे दोनोंकीहानि इसकारण सदा सुन्दर अन्नको भोजन
करै उच्छिष्ट किसीको न देवै औ भोजनकरके जिस अन्न
को छोड़देवे उसको फिर न भक्षणकरै अर्थात् बार२ में छोड़
कर भोजन न करै एकबार बैठकर तृप्तिपूर्वक भोजन कर
लेवे जो पुरुष बीच२में विच्छेद करके भोजनकरता है उसके
दोनोंलोक नष्टहोते हैं जिसभांति पूर्वकालमें धनवर्द्धन नाम
वैश्यके भये यहसुन राजाने पूछा कि महाराज वैश्यने क्यों

कर भोजनकिया औ उसको क्याफल प्राप्तहुआ यह आप वर्णनकरैं तब सुमन्तुमुनि बोले कि हेराजा सत्ययुगमें एक धनवर्द्धननाम वैश्य पुष्करमें रहताथा एकदिन ग्रीष्मऋतु में मध्याह्नके समय बलिवैश्वदेवकर अपने पुत्र मित्र बन्धु आदि के संग बैठा भोजन करता था इतने में अकस्मात् एक बड़ा दीनशब्द बाहरहुआ वह उस शब्दको सुनतेही दयासे भोजन छोड़ उठधाया बाहरगया तबतक वहशब्द निवृत्त होगया और वैश्यने भी अपने घरमें आय उसी भोजनको खाया जो पात्रमें छोड़गयाथा भोजनकरतेही वह मृत्युवशहुआ औ इसी अपराधसे परलोकमें भी उसकी दुर्गति भई इसलिये अन्तर करके भोजन न करे अधिक भोजनभी न करै औ उच्छिष्ट होकर अर्थात् जूठेमुख से कहीं बाहर न जाय बहुतखाने से रसकी उत्पत्ति होती है औ रस होनेसे अनेक भांतिके रोग शरीरमें खड़े होते हैं जब अजीर्ण होय तब स्नान, दान, जप, होम, तर्पण, पूजा पाठ आदि कोईकर्म नहीं बनपड़ता अति भोजन करनेसे अनेकरोग उत्पन्नहोते हैं आयुष् घटताहै लोकमें निन्दा होतीहै औ अन्तमें सद्गतिभी नहीं होती इसकारण कभी बहुतभोजन न करै जो पुरुष उच्छिष्टहो उसको यक्ष भूत पिशाच राक्षस आदि दबालेतेहैं औ पवित्रपुरुषके समीप नहीं आते इससे सदाशुचि रहना चाहिये पवित्र मनुष्य यहां सुखसे रहताहै औ अन्तमें स्वर्ग में जाताहै इतना सुन राजानेपूछा कि हे मुनीश्वर ब्राह्मण कौनकर्मसे पवित्र होताहै यह आप वर्णनकरैं यह राजा का वचनसुनि मुनि कहनेलगे कि हे राजा विधिसे जो ब्राह्मण आचमन करे

वह पवित्रहोजाताहै औ आचमनकी विधि यहहै कि हाथ पांवधोय पवित्रस्थानमें आसनकेऊपर पूर्वकीओर अथवा उत्तरकी ओरमुखकरके बैठे औ दहिनेहाथको जानुकेभीतर कर दोनोंचरण बरोबररख शिखामेंग्रंथिलगाय निर्मल औ शीतल जलसे आचमनकरै खड़े २ बातकरते इधर उधर देखते शीघ्रतासे और क्रोधयुक्तहोकर आचमननकरै और गरमजलसे अथवा मलिनजलसेभी आचमननकरै ब्राह्मण केहाथमें पांचतीर्थहैं देवतीर्थ पितृतीर्थ ब्रह्मतीर्थ प्राजापत्य औ सौम्य अब इनके लक्षण कहते हैं अँगुलियोंके आगे देवतीर्थ तर्जनी और अंगुष्ठ के बीच पितृतीर्थ अंगुष्ठ के मूलमें ब्रह्मतीर्थ कनिष्ठाके मूलमें प्राजापत्यतीर्थ औ हाथ के मध्यभाग में सौम्यतीर्थहै देवपूजा औ बलिदेव तीर्थसे करै औ ब्राह्मण को दक्षिणा भी देवतीर्थसेही देवै तर्पण पिण्डदानआदि कर्म्म पितृतीर्थकरके करै ब्रह्मतीर्थकरके आचमन करै बिवाह के समय लाजा होम औ सोमपान प्राजापत्य तीर्थकरके करै कमण्डलु ग्रहण औ दधिप्राशन नाम कर्म्म सौम्य तीर्थसेकरै हाथकी अँगुलियोंको इकट्ठा कर एकाग्रचित्तहो तीन आचमन पवित्र जलसे करै औ मुखसे शब्द नकरै उसको बहुत फल होताहै पहिले आचमनसे ऋग्वेदकी तृप्तिहोतीहै दूसरे आचमनसे यजुर्वेद की औ तीसरे से सामवेदकी तृप्तिहोतीहै आचमन करके दहिने अंगुष्ठ से जलकरके मुखको स्पर्शकरै तो अथर्वण वेदकी तृप्तिहोतीहै ओष्ठके मार्ज्जनसे इतिहास औपुराणों की तृप्तिहोती है मस्तकमें अभिषेक करनेसे रुद्र भगवान् प्रसन्नहोते हैं शिखाके स्पर्श से ऋषि दक्षिण बामनेत्र के

स्पर्शसे सूर्य्य औ चन्द्र नासिका स्पर्श से बायु कर्णों के स्पर्शसे दिशा भुजाके स्पर्शसे यम कुबेर बरुण इन्द्र अग्नि तृप्तहोतेहैं पैर धोनेसे विष्णुभगवान् प्रसन्न होतेहैं भूमिमें जल छोड़नेसे बासुकिआदि नाग सन्तुष्टहोते हैं औ बीच में जो जलबिन्दुगिरें उनसे चारप्रकारके भूतग्रामकीतृप्ति होतीहै अंगुष्ठ औतर्जनीसे नेत्रस्पर्शकरै अंगुष्ठ अनामिका से नासिका अंगुष्ठ मध्यमासे मुख अंगुष्ठ कनिष्ठा से कर्ण औ सब अँगुलियों से भुजाओंको स्पर्शकरै अंगुष्ठ करके नाभि औ सबअँगुलियोंसे शिरको स्पर्शकरै अंगुष्ठ अग्नि रूपहै तर्जनी बायु रूप मध्यमा प्रजापतिरूप अनामिका सूर्य्यरूप औ कनिष्ठा इन्द्ररूपहै इसविधिसे ब्राह्मण आचमनकरै तो सम्पूर्ण जगत् देवता औलोक तृप्तहोतेहैं ब्राह्मण सदा पूजनीय है क्योंकि वह सर्व देवमय है ब्राह्मतीर्थ करके आचमन करै अथवा प्राजापत्य औ देवतीर्थ करके करै परन्तु पितृतीर्थ करके कभी आचमन न करै ब्राह्मण इतने जलसे आचमन करै कि जल हृदय तक जाय तब पवित्र होताहै क्षत्रिय कण्ठतक जानेसे औ वैश्य जल के प्राशन मात्रसे शुद्ध होजाताहै औ शूद्रभी जलके स्पर्शसे शुद्धहोताहै दहिनाहाथ उठारहै औ बामके ऊपर यज्ञोपवीतरहै उसको उपवीत कहतेहैं बामहाथ उठेरहनेसे प्राचीनावीती औ जिसका जनेऊ कण्ठ में लटकै वह निवीती कहाताहै मेखला मृगचर्म दण्ड यज्ञोपवीत औ कमण्डलु इनमें से कोई बस्तु नष्ट होजाय तो आचमन कर दूसरी बस्तुका ग्रहणकरै उपवीती होकर औ दहिने हाथको जानु अर्थात् घुटने के भीतर रखकर जो ब्राह्मण आचमन करै

वह पवित्रहोजाताहै औ आचमनकी विधि यहहै कि हाथ पांवधोय पवित्रस्थानमें आसनकेऊपर पूर्वकीओर अथवा उत्तरकी ओरमुखकरके बैठे औ दहिनेहाथको जानुकेभीतर कर दोनोंचरण बराबररख शिखामेंग्रंथिलगाय निर्मल औ शीतल जलसे आचमनकरै खड़े २ बातकरते इधर उधर देखते शीघ्रतासे और क्रोधयुक्तहोकर आचमननकरै और गरमजलसे अथवा मलिनजलसेभी आचमननकरै ब्राह्मण केहाथमें पांचतीर्थहैं देवतीर्थ पितृतीर्थ ब्रह्मतीर्थ प्राजापत्य औ सौम्य अब इनके लक्षण कहते हैं अँगुलियोंके आगे देवतीर्थ तर्जनी और अंगुष्ठ के बीच पितृतीर्थ अंगुष्ठ के मूलमें ब्रह्मतीर्थ कनिष्ठाके मूलमें प्राजापत्यतीर्थ औ हाथ के मध्यभाग में सौम्यतीर्थहै देवपूजा औ बलिदेव तीर्थसे करै औ ब्राह्मण को दक्षिणा भी देवतीर्थसेही देवै तर्पण पिण्डदानआदि कर्म्म पितृतीर्थकरके करै ब्रह्मतीर्थकरके आचमन करै विवाह के समय लाजा होम औ सोमपान प्राजापत्य तीर्थकरके करै कमण्डलु ग्रहण औ दधिप्राशन नाम कर्म्म सौम्य तीर्थसेकरै हाथकी अँगुलियोंको इकट्ठा कर एकाग्रचित्तहो तीन आचमन पवित्र जलसे करै औ मुखसे शब्द नकरै उसको बहुत फल होताहै पहिले आ-चमनसे ऋग्वेदकी तृप्तिहोतीहै दूसरे आचमनसे यजुर्वेद की औ तीसरे से सामवेदकी तृप्तिहोतीहै आचमन करके दहिने अंगुष्ठ से जलकरके मुखको स्पर्शकरै तो अथर्वण वेदकी तृप्तिहोतीहै ओष्ठके मार्ज्जनसे इतिहास औपुराणों की तृप्तिहोती है मस्तकमें अभिषेक करनेसे रुद्र भगवान् प्रसन्नहोते हैं शिखाके स्पर्श से ऋषि दक्षिण बामनेत्र के

स्पर्शसे सूर्य्य औ चन्द्र नासिका स्पर्श से बायु कर्णों के स्पर्शसे दिशा भुजाके स्पर्शसे यम कुबेर बरुण इन्द्र अग्नि तृप्तहोतेहैं पैर धोनेसे विष्णुभगवान् प्रसन्न होतेहैं भूमिमें जल छोड़नेसे बासुकिआदि नाग सन्तुष्टहोते हैं औ बीच में जो जलबिन्दुगिरें उनसे चारप्रकारके भूतग्रामकीतृप्ति होतीहै अंगुष्ठ औतर्जनीसे नेत्रस्पर्शकरै अंगुष्ठ अनामिका से नासिका अंगुष्ठ मध्यमासे मुख अंगुष्ठ कनिष्ठा से कर्ण औ सब अँगुलियों से भुजाओंको स्पर्शकरै अंगुष्ठ करके नाभि औ सबअँगुलियोंसे शिरको स्पर्शकरै अंगुष्ठ अग्नि रूपहै तर्जनी बायु रूप मध्यमा प्रजापतिरूप अनामिका सूर्य्यरूप औ कनिष्ठा इन्द्ररूपहै इसविधिसे ब्राह्मण आचमनकरै तो सम्पूर्ण जगत् देवता औलोक तृप्तहोतेहैं ब्राह्मण सदा पूजनीय है क्योंकि वह सर्व देवमय है ब्राह्मतीर्थ करके आचमन करै अथवा प्राजापत्य औ देवतीर्थ करके करै परन्तु पितृतीर्थ करके कभी आचमन न करै ब्राह्मण इतने जलसे आचमन करै कि जल हृदय तक जाय तब पवित्र होताहै क्षत्रिय कण्ठतक जानेसे औ वैश्य जल के प्राशन मात्रसे शुद्ध होजाताहै औ शूद्रभी जलके स्पर्शसे शुद्धहोताहै दहिनाहाथ उठारहै औ बामके ऊपर यज्ञोपवीतरहै उसको उपवीत कहतेहैं बामहाथ उठेरहनेसे प्राचीनावीती औ जिसका जनेऊ कण्ठ में लटकै वह निवीती कहाताहै मेखला मृगचर्म दण्ड यज्ञोपवीत औ कमण्डलु इनमें से कोई बस्तु नष्ट होजाय तो आचमन कर दूसरी वस्तुका ग्रहणकरै उपवीती होकर औ दहिने हाथको जानु अर्थात् घुटने के भीतर रखकर जो ब्राह्मण आचमन करै

वहपवित्र होजाताहै ब्राह्मणके हाथकीसबरेखा गंगाआदि नदीहैं औ अंगुलियोंके पर्व हिमालय आदि पर्वतहैं इसलिये ब्राह्मणका दहिना हाथ सर्व देवमयहै हे राजा हमने जो यह आचमनका विधान कहा इस विधिसे जो आचमन करै वह अवश्य स्वर्गको जाय ॥

तीसरा अध्याय ॥

वेद व विद्याध्ययनविधि और गायत्री माहात्म्य
व फल आचारादिका अभिवादन ॥

सुमंतु मुनि कहते हैं कि हे राजा केशांत नाम संस्कार ब्राह्मण का सोलहवें बर्षमें क्षत्रिय का बाईसवें में औ वैश्य का पचीसवें वर्ष में होताहै केशांत संस्कार होनेके अनंतर चाहै तो गुरुके घरमें रहै अथवा अपने घरमें आय विवाह कर अग्निहोत्रका ग्रहणकरै स्त्रियोंके लिये मुख्य संस्कार बिवाहहै हे राजा यह उपनयन का विधान हमनेकहा अब इसके आगे का कर्म्म कहते हैं शिष्यका यज्ञोपवीतकर गुरु पहिले उसको शौच आचार सन्ध्योपासन औ अग्निकार्य्य सिखावे औ वेद पढ़ावै शिष्यभी आचमनकर उत्तराभिमुख बैठ दोनों हाथों करके ब्रह्मांजलि बांध एकाग्र चित्त हो वेद पढ़ै पढ़नेके आरम्भ औ समाप्ति में गुरुके चरणों का बंदन करै पढ़ने के समय दोनोंहाथोंकी जो अंजली बांधीजाती है उसको ब्रह्मांजली कहतेहैं शिष्य दहिने हाथसे गुरु का दहिना चरण औ बायेंसे बायां ग्रहणकरै पढ़ने के आरम्भ में (अधीष्वभोः) यह वाक्य शिष्यसे गुरु कहै औ समाप्ति के समय (विरामोस्तु) यह वाक्य कहै वेद पढ़नेके समय आदिमें औ अन्तमें ओंकारका उच्चारणकरै बिना ओंकार

के उच्चारण करने से फल नहींहोता पहिले पवित्रहो तीन प्राणायामकरैपीछे ओंकारका उच्चारणकरै प्रजापतिने अकार उकार औमकार येतीनवर्ण तीनोंवेदोंकासारनिकाले हैं जिनसेओंकारबनताहै औ भूःभुवःस्वः ये तीनोंव्याहृति औ गायत्रीके तीनपाद तीनवेदोंसे निकलेहैं इसलिये जो ब्राह्मण दोनों सन्ध्याओंमें इसको जपै वह वेदपाठके फल को प्राप्तहोताहै जो घरके बाहर नदीके तटपर बैठ एकसहस्र गायत्री नित्यजपै वह बड़ेभारी पापसेभी एकमहीनेमें छूटजाताहै जो ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्य अपनी क्रियासे हीन होते हैं उनकी साधुपुरुषों में निन्दाहोती है औ परलोकमें भी कल्याणके भागी नहींहोते इसकारण कर्म्मका त्याग न करनाचाहिये प्रणव तीनव्याहृति औ त्रिपदागायत्री ये सब मिलके जो मंत्र होता है वही ब्रह्माका मुखहै इसको जो तीनबर्ष नित्य जपै वह परब्रह्ममें लीनहोता है होम दानयज्ञआदिक्रिया ओंकाक्षरणअर्थात् नाशहोजाता है औ प्रणवस्वरूप एकाक्षर ब्रह्म अक्षर है विधियज्ञों से जपयज्ञ उत्तमहै जपोंमेंभी उपांशु जपकरनेसे सौगुणा फल होताहै औ मानस जपसे सहस्रगुण सम्पूर्णविधि यज्ञ जप यज्ञकी सोलहवीं कलाकीभी तुल्यता नहींकरसक्ती ब्राह्मण कोसबसिद्धि जपसेही प्राप्तहोती हैं और कुछकरै अथवा न करै परन्तु ब्राह्मण को गायत्री जप अवश्य करनाचाहिये क्योंकि ब्राह्मण मैत्रकहलाताहै तारा दीखतेहोयँ तब प्रातःसन्ध्याका आरम्भकरै औ सूर्य्योदयपर्यंत गायत्री जप करतारहै इसी भांति सूर्य्यास्त से पहिलेही सायंसन्ध्या का आरम्भकरै औ तारादर्शनतक गायत्रीजपै प्रातःकाल की

सन्ध्यासे रात्रिके किये पापदूर होते हैं औ सायंसन्ध्या से दिनके किये इसलिये दोनोंकालकी सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये जो दोनों सन्ध्या न करै वह शूद्रके समान होताहै घरके बाहरजाय जलके तटपर गायत्रीजप औ संध्याकरने से बहुतफल है सन्ध्याके मंत्र होम मंत्र और जो ब्रह्मयज्ञ आदि नित्यकर्म्म हैं इनके मंत्रोंके उच्चारणमें अनध्यायको विचार नकरै यज्ञोपवीतके अनन्तर समावर्त्तन संस्कारतक गुरुके घरमेंरहै भूमिशयनकरै औ सर्वप्रकारसे गुरुकी शुश्रूषाकरतारहै औ वेदपढ़ै विनापूछे किसीको न बोलै औ जो अन्यायसे पूछै उससेभी कुछ न कहै जानता हुआ भी जड़कीभांति होजाय जो अधर्मसे पूछै औ अधर्म्म से कहै वह दोनों नरकमें जाते हैं औ जगत्में भी सबके अप्रिय होते हैं जिसको पढ़ाने से धर्म अथवा अर्थकी प्राप्ति नहो औ वह कुछ शुश्रूषा भी नकरै उसको कभी नपढ़ावै क्योंकि ऐसेविद्यार्थीकोविद्यादेना ऊषरमेंबीजबोनाहै विद्या ब्राह्मण से यह कहती है कि मेरी भलीभांति रक्षाकर तौ मैं तेरेलिये शेवधिहूं औअसूयावालेपुरुषको मुझेमतदे जिससे बलवती रहूं शेवनाम सुख औ ज्ञानकाहै इनदोनोंको जो धारणकरै वह शेवधि कहलाती है अर्थात् सुख और ज्ञानके देनेहारी और विद्या यहभी कहतीहै कि जो ब्राह्मण शुचि ब्रह्मचारी औ प्रमादसेरहितहो उसकोमुझेदे जोगुरुकेबिना वेदशास्त्र आदिको आपही ग्रहणकरै वह अति भयंकर रौरव नरक में बासकरताहै जिससे वेदपढ़ै सदा प्रथम उसको प्रणाम करै केवलगायत्री जानताहो परन्तु शास्त्रकी मर्यादामें चलै वह सबसे उत्तमहै औ जो सब वेद औ शास्त्र जानकर भी

मर्यादा में न रहै सब बस्तु भोजनकरै औ सब पदार्थबेंचै वह अधमहै गुरुके आगे शय्या अथवा आसन आदि पर न बैठै जो बैठाहोय तो गुरुको आते देख नीचे उतर कर अभिवादन अर्थात् प्रणामकरै वृद्धको आते देख तरुणपुरुष के प्राण ऊपरको उठतेहैं जब वह वृद्धको अभ्युत्थान देकर प्रणामकरलेवै तब फिर ठिकाने आजातेहैं जो पुरुष वृद्धों की सेवाकरै औ उनको प्रणाम आदिकरै उसकेआयुष् बुद्धि यश औ बलकी वृद्धिहोतीहै बड़ेको जब अभिवादनकरै तब अपना नामलेवै कि मैं अमुकशर्मा आपको अभिवादन करताहूँ अथवा केवल इतनाही कहै कि मैं प्रणाम करताहूँ गुरुभी अभिवादन सुनकर आशीर्बाददेवै कि (आयुष्मानूभव) अर्थात् बड़े आयुष्वालाहो जो अभिवादन के अनन्तर प्रत्यभिवादन अर्थात् लौटकर अभिवादनकरना न जाने उसकोकभी अभिवादन न करै वह शूद्रके तुल्य है औ जो अभिवादन करनेपर अभिमानसे प्रत्यभिवादन न करै अथवा आशीर्बाद न देवै वह नरक को जाताहै ब्राह्मणको कुशल पूछै क्षत्रियको अनामय वैश्य को क्षेम औ शूद्रको आरोग्य पूछै जो यज्ञकी दीक्षालिये हो वह चाहै अपने से छोटाभी हो परन्तु उसको नामलेकर नहीं पुकारना पराईस्त्री को जिससे कुछ सम्बन्ध न हो उसको भवती सुभगे भगिनि इनसम्बोधनों से बोलै पितृव्य अर्थात् चाचा औ ताऊ मामा श्वशुर ऋत्विक् गुरु इनको सदा उत्थान देवै मौसी मामी सासु बूआ अर्थात् पिताकी बहिन औ गुरुकीस्त्री ये सब मान्यहैं बड़ेभाई की जो सवर्णा स्त्री उसका नित्य जो आदरकरै औ मात

समानजानै वह विष्णुलोकपावै माताकी बहिन पिताकी बहिन औ अपनी बड़ीबहिन ये तीनोंभी माताके समान होतीहैं परन्तु माताका आदर सबसेअधिक रखनाचाहिये बड़ापुत्र मित्र औ भानजा इनको अपने समान समझैदश बर्षका ब्राह्मणहो औ सौवर्षका क्षत्रिय परन्तु उनमें पिता पुत्रका सम्बन्धहोता है अर्थात् ब्राह्मण पिता औ क्षत्रिय पुत्र इसभांति ब्राह्मण क्षत्रिय का पिता वैश्य का पितामह औ शूद्रका प्रपितामह होताहै धन बन्धु अवस्था आचरण औ विद्या ये पांचो बड़ाईकेहेतु हैं इनमें पहिले से दूसराऔ दूसरेसे तीसरा तीसरेसे चौथा औ चौथेसे पांचवां अधिकहैं अतिवृद्ध शूद्रभी मानके योग्यहोताहै अतिवृद्ध रोगी भारयुक्त स्त्री ऋषी औ राजा इनको रस्तादेना चाहिये अर्थात् ये आगे से आतेहोयँ तो मार्ग छोड़ अलग खड़ाहोजाय औ बिवाह करने के अर्थ जो वर जाताहोय उसकोभी मार्गदेवै इनमें जो दो तीन आगेसे आजावैं तो ऋषी औ राजा मुख्यहैं औ इन दोनोंमें भी ऋषि प्रधान है जो यज्ञोपवीत करके शिष्यको रहस्य औ कल्पके सहित वेदपढ़ावै उसको आचार्य्य कहते हैं जो वेद का एकभाग अथवा वेदके अंगजीविकाकेअर्थ पढ़ावै उसकी उपाध्याय संज्ञाहै जो निषेक अर्थात् गर्भाधानआदि सबसंस्कारकरै औ खानेको अन्नदेवै उसको गुरुकहतेहैं जो अग्निष्टोम आदि यज्ञबरणीलेकर जिसकेअर्थकरै वहउसका ऋत्विक् कहलाताहै जोपुरुषकेदोनोंकान वेदसेभरताहै औ पवित्र करताहै वही मातापिताहै उसकेसाथ कभी द्रोह न करना चाहिये उपाध्यायसेदशगुणागौरवआचार्यका औआचार्य

सेसौगुणापिताका औ पितासेभीहजारगुणागौरव माताका करनाचाहिये जन्मदेनेहारा औ वेद पढ़ानेहारा ये दोनों पिताहैं परंतु वेद पढ़ानेहारा मुख्य है क्योंकि ब्राह्मणका मुख्यजन्म तो वेद पढ़नेसेही होताहै औ माता पिता तो कामसे उत्पन्नकरतेहैं ये उपाध्याय आदि जितने पूज्य हमने कहे इनसबसे अधिक गौरवके योग्य महागुरु होताहै औ चारों वर्णोंमें पूजनीयहै यहसुन राजानेपूछा कि महाराज उपाध्याय आदिके लक्षण तो मैंनेसुने अब कृपाकर महागुरुका लक्षणभी बर्णनकीजिये यह राजाका वचनसुन सुमन्तुमुनि ने कहा कि हेराजा जो ब्राह्मण जपोपजीवीहो अर्थात् जपसे अपना उपजीवनकरै औ अठारह पुराण रामायण भारत बिष्णुधर्म्म आदित्यधर्म्म शिवधर्म्म औ वेद इनसबको भलीभांतिजाने वह महागुरु कहाताहै वह सबका पूज्यहै हे राजा शतानीक जो जिसको थोड़ा बहुत पढ़ावै वह उसका गुरुहोताहै चाहै अवस्थामें छोटाही हो पढ़ानेसे बालक वृद्धकाभी पिताहोसक्ताहै पूर्बकालमें अंगिरा मुनि का बालक पुत्र वृहस्पति बड़े वृद्ध पितरों को पढ़ाताथा औ पढ़ाने के समय यह कहता कि हे पुत्रो भली भांति पढ़ो पितर बालक के इसवचनको सुन क्षोभ कर देवताओं के समीप गये औ सब वृत्तान्त कहा तब देवताओंने कहा कि हे पितरो जो अज्ञहो अर्थात् कुछ न जानताहो वह बालक कहाता है औ जो पढ़ावै वह पिता गिनाजाताहै न तो अवस्था अधिक होनेसे न श्वेत केश होनेसे औ न बहुतसेमित्र बन्धुहोनेसे बड़ाहोताहै ऋषियों ने यह धर्म नियत कियाहै कि जो विद्यामें अधिकहो व

सबसे वृद्ध गिनाजाय ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ शूद्रोंमें जो ज्ञान बल जन्मशील विद्या आदिसे बड़ाहो वही बड़ाहोताहै शिरके बालश्वेत होजानेसे वृद्ध नहींहोता जो तरुणभीहो परन्तु भली भांति विद्या सम्पादन करलेवै उसी को वृद्ध जानो जैसे काठकाहाथी अथवा केवल चर्म्मकामृग किसी कामका नहीं होता इसीभांति बिनापढ़ा ब्राह्मण नाममात्र को ब्राह्मणहै जिसभांति स्त्रियोंका परस्पर समागमनिष्फल होताहै जैसे मूर्खको दानदेनाबिफलहै इसीभांति वेदसेहीन ब्राह्मणका जन्मवृथाहै जो वेदपढ़केभी वैश्वदेवआदिकर्म्म नकरै वहशूद्रके समानहै जोवेद न पढ़ै वैश्यकीवृत्तिकरैशूद्र की सेवाकरैनटवृत्तिचोरी औचिकित्सासे अपनानिर्वाहकरै वहभी शूद्रही कहाताहै जिसग्राममें वेदबिनापढ़े औ ब्रतसे हीन ब्राह्मणोंको भोजनमिलै वह ग्राम राजाको दण्डनीय है वेदपढ़कर अग्निहोत्रका ग्रहणकरै तब वेदपढ़ना सफल है यहवेदमेंहीलिखाहै जोवेदपढ़कर अग्निहोत्रनहींकरते उन का वेदपढ़नेका परिश्रम वृथाहोताहै वेदकहतेहैं कि जो हम को पढ़कर हमारा अनुष्ठान न करै वह हमारे पढ़नेका व्यर्थ क्लेश उठाताहै इसलिये वेदपढ़करवेदमें कहेहुयेकर्मोंको अ-नुष्ठानकरै तबवेदपढ़ना सफलहै वेदको जानकर जोधर्मका उपदेशकरै वही उपदेश ठीकहै जो मूर्ख वेद बिनाजाने धर्म का उपदेश करते हैं व बड़ेपापके भागी होते हैं शौचसे हीन वेदसे रहित नष्ट ब्रत ब्राह्मण को जो अन्न दियाजाता है वह अन्नरोदन करताहै कि मैंने क्या पापकियाथा जो ऐसे मूर्ख ब्राह्मणके हाथमें पड़ा औ वही अन्न जो जपोपजीवी को दियाजाय तो प्रसन्नतासे नाचताहै कि मेरे बड़ेभाग्य

हैं जो ऐसे पात्रमें आया विद्या औ तप करके युक्त ब्राह्मण जब घरमें आवै तब सब औषधी जो घरमें विद्यमान हैं अतिप्रसन्न होतीहैं औ कहतीहैं कि अब हमारीभी सद्गतिहो जायगी व्रत वेद औ जपसेहीन ब्राह्मणको कभी दान न देवै क्योंकि पत्थरकी नाव नदीके पार नहींउतारसक्ती वेदपाठी कोही हव्य कव्य देनेसे देवता औ पितरोंकी तृप्तिहोती है घरकेसमीप मूर्खब्राह्मण रहताहो औ विद्वान् घरसे दूरहो तौभी विद्वान्कोही बुलाकर दानदेना मूर्खब्राह्मणका त्याग करनेमें कुछदोषनहीं क्योंकि प्रज्वलित अग्निको छोड़कर कोई बुद्धिमान् भस्ममें हवन नहींकरताहै परन्तु घरके समीप रहनेहारा ब्राह्मण जोगायत्री मात्रभी जानता होयतो उसका त्याग न करै जो उसका त्यागकरै तो रौरवनरकको जाय क्योंकि ब्राह्मणचाहैनिर्गुणहो वा गुणवान् परन्तु गायत्री जानता होय तो परमदेव स्वरूप है परन्तु पतित न होय धान्यसेहीन ग्राम औ जलबिन कूप जैसे किसीअर्थ नहींआते ऐसेही बिनापढ़ा ब्राह्मण है जो पतितब्राह्मणके साथ स्नेहसे अथवाभयसे भोजनआदिका व्यवहाररक्खै वह ब्रह्महत्या समान पातकको प्राप्तहोताहै सब जीवोंको अहिंसासे शासनकरै औ सदामीठा सच्चावचनबोलैजिस के मन औ बचन शुद्धहैं वहवेद औ यज्ञका पूराफल पाता है ऐसा बचनकभी न कहै कि जिससे किसीका आत्मा दुःख पावै औ सुननेवालोंको अच्छा न लगै पुरुषको वैसाआनन्द न चन्द्र के किरणोंसे न चन्दनसे न शीतल छायासे औ न ठंढेजलसेमिलै जैसा मीठेवचन सुनकर मिलता है आदरसे ब्राह्मण सदा डरतरहै जैसा विषसे औ अवमान

सबसे वृद्ध गिनाजाय ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ शूद्रोंमें जो ज्ञान बल जन्मशील विद्याआदिसे बड़ाहो वही बड़ाहोताहै शिरके बालश्वेत होजानेसे वृद्ध नहींहोता जो तरुणभीहो परन्तु भली भांति विद्या सम्पादन करलेवै उसी को वृद्ध जानो जैसे काठकाहाथी अथवा केवल चर्म्मकामृग किसी कामका नहीं होता इसीभांति बिनापढ़ा ब्राह्मण नाममात्र को ब्राह्मणहै जिसभांति स्त्रियोंका परस्पर समागमनिष्फल होताहै जैसे मूर्खको दानदेनाबिफलहै इसीभांति वेदसेहीन ब्राह्मणका जन्मवृथाहै जो वेदपढ़केभी वैश्वदेवआदिकर्म्म नकरै वहशूद्रके समानहै जोवेद न पढ़ै वैश्यकीवृत्तिकरैशूद्र की सेवाकरैनटवृत्तिचोरी औचिकित्सासे अपनानिर्बाहकरै वहभी शूद्रही कहाताहै जिसग्राममें वेदबिनापढ़े औ व्रतसे हीन ब्राह्मणोंको भोजनमिलै वह ग्राम राजाको दण्डनीय है वेदपढ़कर अग्निहोत्रका ग्रहणकरै तब वेदपढ़ना सफल है यहवेदमेंहीलिखाहै जोवेदपढ़कर अग्निहोत्रनहींकरते उन का वेदपढ़नेका परिश्रम वृथाहोताहै वेदकहतेहैं कि जो हम को पढ़कर हमारा अनुष्ठान न करै वह हमारे पढ़नेका व्यर्थ क्लेश उठानाहै इसलिये वेदपढ़करवेदमें कहेहुयेकर्मोंको अनुष्ठानकरै तबवेदपढ़ना सफलहै वेदको जानकर जोधर्मका उपदेशकरै वही उपदेश ठीकहै जो मूर्ख वेद बिनाजाने धर्म का उपदेश करते हैं व बड़ेपापके भागी होते हैं शौचसे हीन वेदसे रहित नष्ट व्रत ब्राह्मण को जो अन्न दियाजाता है वह अन्नरोदन करताहै कि मैंने क्या पापकियाथा जो ऐसे मूर्ख ब्राह्मणके हाथमें पड़ा औ वही अन्न जो जपोपजीवी को दियाजाय तो प्रसन्नतासे नाचताहै कि मेरे बड़ेभाग्य

हैं जो ऐसे पात्रमें आया विद्या औ तप करके युक्त ब्राह्मण जब घरमें आवै तब सब औषधी जो घरमें विद्यमान हैं अतिप्रसन्न होतीहैं औ कहतीहैं कि अब हमारीभी सद्गतिहो जायगी व्रत वेद औ जपसेहीन ब्राह्मणको कभी दान न देवै क्योंकि पत्थरकी नाव नदीके पार नहींउतारसक्ती वेदपाठी कोही हव्य कव्य देनेसें देवता औ पितरोंकी तृप्तिहोती हैं घरकेसमीप मूर्खब्राह्मण रहताहो औ विद्वान् घरसे दूरहो तौभी विद्वान्कोही बुलाकर दानदेना मूर्खब्राह्मणका त्याग करनेमें कुछदोषनहीं क्योंकि प्रज्वलित अग्निको छोड़कर कोई बुद्धिमान् भस्ममें हवन नहींकरताहै परन्तु घरके समीप रहनेहारा ब्राह्मण जोगायत्री मात्रभी जानता होयतो उसका त्याग न करै जो उसका त्यागकरै तो रौरवनरकको जाय क्योंकि ब्राह्मणचाहैनिर्गुणहो वा गुणवान् परन्तु गायत्री जानता होय तो परमदेव स्वरूप है परन्तु पतित न होय धान्यसेहीन ग्राम औ जलबिन कूप जैसे किसीअर्थ नहींआते ऐसेही बिनापढ़ा ब्राह्मण है जो पतितब्राह्मणके साथ स्नेहसे अथवाभयसे भोजनआदिका व्यवहाररक्खै वह ब्रह्महत्या समान पातकको प्राप्तहोताहै सब जीवोंको अहिंसासे शासनकरै औ सदामीठा सच्चावचनबोलैजिस के मन औ वचन शुद्धहैं वहवेद औ यज्ञका पूराफल पाता है ऐसा वचनकभी न कहै कि जिससे किसीका आत्मा दुःख पावै औ सुननेवालोंको अच्छा न लगै पुरुषको वैसाआनन्द न चन्द्र के किरणोंसे न चन्दनसे न शीतल छायासे औ न ठंढेजलसेमिलै जैसा मीठेवचन सुनकर मिलता है आदरसे ब्राह्मण सदा डरतरहै जैसा विषसे औ अवमान

सबसे वृद्ध गिनाजाय ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ शूद्रोंमें जो ज्ञान बल जन्मशील विद्याआदिसे बड़ाहो वही बड़ाहोताहै शिरके बालश्वेत होजानेसे वृद्ध नहींहोता जो तरुणभीहो परन्तु भली भांति विद्या सम्पादन करलेवै उसी को वृद्ध जानो जैसे काठकाहाथी अथवा केवल चर्म्मकामृग किसी कामका नहीं होता इसीभांति बिनापढ़ा ब्राह्मण नाममात्र को ब्राह्मणहै जिसभांति स्त्रियोंका परस्पर समागमनिष्फल होताहै जैसे मूर्खको दानदेनाबिफलहै इसीभांति वेदसेहीन ब्राह्मणका जन्मवृथाहै जो वेदपढ़केभी वैश्वदेवआदिकर्म्म नकरै वहशूद्रके समानहै जोवेद न पढ़ै वैश्यकीवृत्तिकरैशूद्र की सेवाकरैनटवृत्तिचोरी औचिकित्सासे अपनानिर्बाहकरै वहभी शूद्रही कहाताहै जिसग्राममें वेदबिनापढ़े औ ब्रतसे हीन ब्राह्मणोंको भोजनमिलै वह ग्राम राजाको दण्डनीय है वेदपढ़कर अग्निहोत्रका ग्रहणकरै तब वेदपढ़ना सफल है यहवेदमेंहीलिखाहै जोवेदपढ़कर अग्निहोत्रनहींकरते उन का वेदपढ़नेका परिश्रम वृथाहोताहै वेदकहतेहैं कि जो हम को पढ़कर हमारा अनुष्ठान न करै वह हमारे पढ़नेका व्यर्थ क्लेश उठानाहै इसलिये वेदपढ़करवेदमें कहेहुयेकर्मोंको अ-नुष्ठानकरै तबवेदपढ़ना सफलहै वेदको जानकर जोधर्मका उपदेशकरै वही उपदेश ठीकहै जो मूर्ख वेद बिनाजाने धर्म का उपदेश करते हैं वे बड़ेपापके भागी होते हैं शौचसे हीन वेदसे रहित नष्ट व्रत ब्राह्मण को जो अन्न दियाजाता है वह अन्नरोदन करताहै कि मैंने क्या पापकियाथा जो ऐसे मूर्ख ब्राह्मणके हाथमें पड़ा औ वही अन्न जो जपोपजीवी को दियाजाय तो प्रसन्नतासे नाचताहै कि मेरे बड़ेभाग्य

हैं जो ऐसे पात्रमें आया विद्या औ तप करके युक्त ब्राह्मण जब घरमें आवै तब सब औषधी जो घरमें विद्यमान हैं अतिप्रसन्न होतीहैं औ कहतीहैं कि अब हमारीभी सद्गतिहो जायगी व्रत वेद औ जपसेहीन ब्राह्मणको कभी दान न देवै क्योंकि पत्थरकी नाव नदीके पार नहींउतारसक्ती वेदपाठी कोही हव्य कव्य देनेसें देवता औ पितरोंकी तृप्तिहोती हैं घरकेसमीप मूर्खब्राह्मण रहताहो औ विद्वान् घरसे दूरहो तोभी विद्वान्कोही बुलाकर दानदेना मूर्खब्राह्मणका त्याग करनेमें कुछदोषनहीं क्योंकि प्रज्वलित अग्निको छोड़कर कोई बुद्धिमान् भस्ममें हवन नहींकरताहै परन्तु घरके समीप रहनेहारा ब्राह्मण जोगायत्री मात्रभी जानता होयतो उसका त्याग न करे जो उसका त्यागकरै तो रौरवनरकको जाय क्योंकि ब्राह्मणचाहैनिर्गुणहो वा गुणवान् परन्तु गायत्री जानता होय तो परमदेव स्वरूप है परन्तु पतित न होय धान्यसेहीन ग्राम औ जलबिन कूप जैसे किसीअर्थ नहींआते ऐसेही बिनापढ़ा ब्राह्मण है जो पतितब्राह्मणके साथ स्नेहसे अथवाभयसे भोजनआदिका व्यवहाररक्खै वह ब्रह्महत्या समान पातकको प्राप्तहोताहै सब जीवोंको अहिंसासे शासनकरै औ सदामीठा सच्चावचनबोलैजिस के मन औ वचन शुद्धहैं वहवेद औ यज्ञका पूराफल पाता है ऐसा वचनकभी न कहै कि जिससे किसीका आत्मा दुःख पावै औ सुननेवालोंको अच्छा न लगै पुरुषको वैसाआनन्द न चन्द्र के किरणोंसे न चन्दनसे न शीतल छायासे औ न ठंढेजलसेमिलै जैसा मीठेवचन सुनकर मिलै आदरसे ब्राह्मण सदा डरतरहै जैसा विषसे औ अ

को सदा अमृतके समानमानै क्योंकि जिसका अवमानकरो उसकी कुछहानि नहींहोती अवमानकरनेहाराही नाश को प्राप्तहोजाताहै वेद पढ़करतपकरै वहीवेदके फलको पाता है जो सुखकेअर्थ वेदपढ़ै औ उससे और जीविकाकरैवह शूद्रके समानहोताहै ब्राह्मणके तीनजन्महोते हैं एकतोमाताके गर्भसे दूसरा यज्ञोपवीतसे औ तीसरा यज्ञकीदीक्षा लेनेसे यज्ञोपवीतकेसमय गायत्रीमाता औ आचार्य्यपिता होताहै यज्ञोपवीतके पहिले किसी कर्म्मका अधिकारीनहीं होता इसकारण वहकभी वेदका उच्चारण न करै जबयज्ञोपवीत होजाय तब वेदपढ़नेका अधिकारीहोताहै यज्ञोपवीत के समयसे मेखला चर्मदंड औ यज्ञोपवीतका धारणकरै औ तभीसे देवता पितर मनुष्योंका तर्पण कियाकरै पुष्प फल जल समिधा मृत्तिका कुशा औ अनेक प्रकारके काष्ठोंका संग्रहरक्खै मद्य मांस गंध पुष्पमाला अनेकप्रकार के रस औ स्त्रियोंका त्यागरक्खै अनेकप्रकारकेशुक्त अर्थात् सिर्के औ अर्कोंका खानापीना आंखोंमें सुर्माडालना शरीर में तेललगाना जूता औ छत्रकाधारण गीतसुनना नाच देखना जूआखेलना झूठबोलना निन्दाकरना स्त्रियोंके समीप बैठना काम क्रोध लोभआदिके बशहोना व्यभिचारिणी स्त्रियोंसे बातचीतकरना वीर्यपात करना ये सबबातें ब्रह्मचारीकेलिये निषिद्धहैं अर्थात् ब्रह्मचारी येबातें न करै जो स्वप्नमें ब्रह्मचारी का वीर्य स्खलनहोजाय तो उठकर स्नानकरै औ सूर्य्यनारायणकी पूजाकर गायत्री जपै तब शुद्धहोताहै जल पुष्प गोबर मृत्तिका कुशा औ भिक्षा इनको नित्य लायाकरै परन्तु जो पुरुष अपने कर्ममेंतत्पररहैं औ

वेदपढ़े हैं अतिथिका आदरकरते हैं उनके घरोंसेही भिक्षा ग्रहणंकरै गुरुके कुलमें औ अपनेजातिके घरोंमें भिक्षा न मांगे जो अन्यत्र भिक्षा न मिलै तौ इनकी भी ग्रहण करै परन्तु जो किसी भाँति कलंकितहोय उनकी भिक्षान लेवे नित्य समिधा लाकर सायङ्काल औ प्रातःकाल हवनकरै भिक्षा मांगनेके समय मौनसे रहै जो ब्रह्मचारी भिक्षा के अन्नविना सातदिनपर्य्यन्त औरअन्नखाय औरोगआदि निमित्तकेविना सातदिन अग्निहोत्रभी न करै वह नष्टव्रत होजाताहै ब्रह्मचारी के लिये भिक्षाका अन्न मुख्य है इस कारण एकका अन्ननित्य न लेवै भिक्षान्नके भोजनसे नित्य उपवास का फलहोताहै यह धर्म्म केवल ब्राह्मणका कहा है क्षत्रिय औ वैश्यके धर्म्म में कुछ भेद है गुरुके सन्मुख हाथजोड़ खड़ारहै जब गुरुकी आज्ञाहोय तब बैठे परन्तु आसनपर न बैठे गुरुके सोते उठनेसे पहिले उठै औ सोने से पीछे शयनकरै गुरुके सन्मुख अति नम्रतासे बैठे किसी बातमें गुरुका अनुकरण अर्थात् नकल न करै गुरुकीनिंदा न करै औ जहां निन्दा होतीहोय वहांसे उठकर चलाजाय अथवा कानमूंदलेवै गुरुकी निन्दा सुननेसे गर्द्दभकी योनि में जाताहै औ निन्दा करनेसे श्वानहोताहै वाहनपर चढ़ा हुआ गुरुको अभिवादन न करै अर्थात् सवारीसे उतरकर प्रणामकरै गुरुके साथ एकवाहन शय्याआसन शिला चटाई पट्टा आदिपर न बैठे जो गुरुसमीप न होयँ तो यही आचरण गुरुपुत्रके साथरक्खे परन्तु उच्छिष्ट भोजन गुरु काहीकरै गुरुकी सवर्णा स्त्रीको गुरुके समानमाने परन्तु गुरु पत्नीके देहमें तैल लगाना स्नानकराना इत्यादि कर्म

करै औ तरुण शिष्य अनेकप्रकारके गुण दोष समझकर गुरुपत्नीके पैरभी न दबावै क्योंकि स्त्रियोंके संगसे पुरुषोंको अनेक दूषण लगते हैं इसलिये बुद्धिमान् पुरुष उनसे बचतारहै माता बहिन अथवा अपनी कन्याहो परन्तु इनके साथ भी एकान्तमें बातचीत न करै क्योंकि ये इन्द्रियबडे बलवान्हैं बिद्वान्की बुद्धिभी चलादेते हैं राजाकीस्त्री औ गुरुकी स्त्री को अपना नाम लेकर प्रणामकरै जिसप्रकार भूमिको खोदते २ जल मिलजाता है इसीभांति शुश्रूषा करते २ गुरुसे विद्या प्राप्तहोती है शिरमुड़ायेरहै अथवा जटाधारणकरै सूर्य्योदय और सूर्य्यास्तकेसमय ग्राममें न रहै अर्थात् जलकेतटपरजाय सन्ध्याबन्दनकरै जिसकेसोते सोते सूर्य्योदय अथवा सूर्य्यास्तहोय वह बड़ेपापकाभागी होताहै बिना प्रायश्चित्त शुद्ध नहीं होता माता पिता औ आचार्य्यका बिपत्तिमें भी अनादर न करै माता पृथिवी की मूर्त्तिहै पिता प्रजापतिकी औ आचार्य्य ब्रह्माकी इस लिये इनका सदा आदररक्खै पुत्रके उत्पन्न करने औ पालन करने में माता पिता जितना क्लेश उठातेहैं उसका बदला सौ बर्षतक सेवा करनेसेभी पुत्र नहीं देसक्ता इस लिये सदा माता पिता औ गुरुकी शुश्रूषाकरै जिससे सब प्रकारके तपकाफलहो औ इनकी शुश्रूषाही बड़ातपहै ये तीनों तीनलोकहैं तीनआश्रमहैं तीनवेदहैं औ येही तीन २ अग्निहैं माता गार्हपत्यनामक अग्निहै पिता दक्षिणाग्नि है औ गुरु आहवनीय नाम अग्निका रूप है जिसपर ये तीन प्रसन्नहोयँ वह तीनोंलोक जीतलेताहै औ देवताओं की भांति स्वर्गमें विहार करताहै जोइनकाआदर न रक्खै

उसकी सब क्रिया निष्फल हैं जबतक येतीनोंजीतेरहैं तब
तक इनकी शुश्रूषाकेबिना और कोईधन्धा न करै यहीबड़ा
तप वृत औ धर्म्म है औ जो कुछ कर्म्म करै तौभी इनकी
आज्ञासे करै उत्तमविद्या अधमपुरषमें होय तौभी ग्रहण
करलेवै क्योंकि विषसे अमृतबालकसे सुभाषित अर्थात्
अच्छीबात शत्रुसेभी उत्तमआचरण कर्दम अर्थात् कीच
सेभी काञ्चन औ दुष्कुलसेभी स्त्री रत्न अर्थात् उत्तमस्त्री
ग्रहणकरते हैं उत्तम स्त्री रत्न विद्या धर्म शौच सुभाषित औ
अनेकप्रकारके शिल्प जहांसेमिलैं वहांसेही ग्रहण करलेवै
औ विपत्तिकाल में क्षत्रिय औ वैश्य से भी वेदपढ़ै परन्तु
उतने कालतकही उनके समीपरहै औब्राह्मण गुरुकेसमीप
तो शरीररहै तबतक रहने में कुछ दोष नहीं जो जन्मभर
गुरुकी शुश्रूषाकरै वह ब्रह्मलोकमें निवास करताहै पढ़नेके
समय गुरुको कुछदेनेकी इच्छा न करै पढ़नेकेअनन्तर गुरु
की आज्ञापाय भूमि सुवर्ण गौ घोड़ा छत्र धान्य वस्त्रआ-
दि अपनी शक्तिके अनुसार समर्पणकरै गुरुका जब देहांत
होजाय तब गुरुपुत्र औ गुरुस्त्रीको गुरुकेस्थानमें मानै औ
येभी न होयँ तो जो गुरुके भाईबन्धु होयँ उनकोमानै औ
अग्निहोत्र नित्य करतारहै इस भांति जो ब्रह्मचारीधर्मका
आचरणकरै वह ब्रह्मलोकमें जाय ब्रह्माजीकेसमीप निवास
करै इतनाकह सुमन्तुमुनिबोले कि हे राजा यह हमने ब्रह्म-
चारीका धर्म वर्णनकिया अब गृहस्थके धर्मका वर्णनकरते
हैं आपसुनो ब्राह्मणआदि अपने २ समयमें व्रतकीसमाप्ति
करें औ ब्राह्मण का यज्ञोपवीत वसन्त ऋतुमें क्षत्रिय
ग्रीष्ममें औ वैश्यका शरद् ऋतुमें करना चाहिये ॥

चौथा अध्याय॥

स्त्री के सर्वांगोंका लक्षण॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा यह ब्रह्मचारिव्रत जो कहा इतनाकरै इससे आधा अथवा चतुर्थांशहीकरै व्रतके अन्तमें गुरुको सिंहासनपर बैठाय माला पहिनाय पूजाकरै औ उत्तम गो निवेदनकरै फिर समावर्त्तन नाम संस्कारकर गुरुकी आज्ञापाय घर आय सुन्दर लक्षणोंसे युक्त अपने वर्णकी स्त्रीसे बिवाहकरै यहसुन राजानेकहा कि हेमुनीश्वर प्रथम आप स्त्रियोंके लक्षण वर्णनकीजिये कि किनलक्षणों करकेयुक्त कन्या शुभदायक होती है यह राजाका वचनसुनि मुनि कहनेलगे कि हे राजा पूर्वकालमें ऋषियोंके प्रति जो ब्रह्माजीने स्त्रीलक्षण कहा है वह हम वर्णन करते हैं आप एकाग्रचित्त होकर सुनो जिसके श्रवण करनेसे सब शुभाशुभ ज्ञात होय एकसमय ब्रह्माजी अपने लोकमें सुखपूर्वक बैठे थे उस समय सम्पूर्ण ऋषिगये औ ब्रह्माजीको प्रणाम कर बिनयसे प्रार्थना करतेभये कि महाराज सम्पूर्ण लोकों के कल्याणके अर्थ हम स्त्रीके लक्षण सुनना चाहते हैं आप कृपाकर कथन कीजिये यह सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो हम स्त्रीलक्षण कहते हैं आपसब एकाग्र चित्तहो श्रवण कीजिये रक्त कमलके समान औ भूमिपर सम्पूर्ण टिकजायँ बीचसे ऊंचे न रहैं औ अति कोमल हों ऐसे स्त्री के चरण उत्तम होते हैं भोगके देनेहारे हैं औ जिनके चरण रूखे फटेहुये मांससे हीननाड़ियों करके ब्याप्त होयँ वे स्त्रीदरिद्रा औ दुर्भगाहोतीहैं पैरकीअंगुली आपुसमें मिली हुई सीधी गोल औ सूक्ष्म नखोंकरकेयुक्त औ लंबी अति

ऐश्वर्य्य देनेहारीहैं औ स्त्रीको रानी बनातीहैं छोटी२ अं-
गुली होनेसे आयुष् न्यूनहोताहै औ बिरली अंगुलियोंसे
धनकी हानिहोतीहै मूलमें जो टेढ़ीहोयँ तो दारिद्रकरैं औ
मोटी अंगुलियों वाली स्त्री दासीहोयँ जिसस्त्रीकी अंगुली
एककेऊपर एक चढ़जाय इस भांति सब अंगुली हों वह
अनेक पतियोंकोमार अन्तमें दासीहोय पैरकी अंगुलियों
के नख स्निग्ध अर्थात् चिकने लाल ऊँचे औ छोटे होयँ
तो सौभाग्य धन पुत्र औ राज्य मिलै श्वेत रंगके फूटेहुये
रूखे नीले धुन्धले नखों से दरिद्र होय औ पीले नखहोयँ
तो अभक्ष्य बस्तुखाय गुल्फ अर्थात् टंकने गोल स्निग्ध
औ नसैं जिनमें नदीखतीहोयँ वे गुल्फ उत्तमहोतेहैं रोमों
से रहित गोल गौरबर्णकी जंघा सौभाग्य औ चढ़नेकेलिये
हाथी पालकी देनेहारी होतीहैं रोमयुक्त जंघाहोयँ तो वह
स्त्री भ्रमणकरै जिसकी पिंडली ऊपरको खिंचीहो वह स्त्री
क्लेशभोगै काकके समान जिसकी जंघाहो वह पतिको हनन
करै जिसके जानु अर्थात् घुटने मार्जार अर्थात् बिल्ली औ
सिंहकेजानुकेसमानहोयँ वहपुत्र धनऔ सौभाग्यकोपातीहै
औ जिसके जानु घटके समानहोयँ वह निर्द्धनहोयनिर्मांस
जानुओंसे कलह करनेहारीहोय नाड़ी दीखतीहोयँ तोहिंसा
करै जिसस्त्रीकेरोम अथवा केशकुंचित अर्थात् घुंघुरूवाले
होयँ रूखेआगेसे फटे औ एक२ रोमकूपमें तीन२ चार२हों
औ उस स्त्रीका पिंगलवर्णहो वह विषके समान प्राणहरने
हारीहोती हैं वह सातदिनके भीतर अपने पतिके प्राणहरै
स्त्रियोंके ऊरु हाथीकीसूंडकेसमानगोल औ केलाकेस्तं-
गोर औ कोमल होयँतो कामदेवका सुखदेनेहार होतें

सूखे रोमों से व्याप्त ऊरु दौर्भाग्य देतेहैं जिसकी भग रोमोंसे हीनहो औ उसकीसंधि आपसमेंश्लिष्टहों वहस्त्रीचाहे नीच कुलमेंभी उत्पन्न भईहो परन्तु राजाकीरानीहोय पीपलके पत्रके समान कछुवाकी पीठकेसदृश ऊँची औ चन्द्रबिम्ब के समानयोनि अनेक प्रकारके सुखदेतीहै जो योनि तिल पुष्पकेसमहो औ आगेसे खुरके सदृशहो वह दरिद्र करने हारी होतीहै नितंब पुष्टहोय तो उत्तमहोताहै ऊखलके समान होय तो शोकदेनेहाराहोताहै स्तनोंके भारसे नम्ररोमावलीसे भूषित अतिकृश औ त्रिबली करके शोभित मध्यभाग शुभहोताहै इससेविपरीत लक्षण होयँ तो अशुभ जानिये पीठऊँची न होय औ रोमोंसे रहितहोय तो उत्तम होतीहै और जो कुबड़ी औ रोमोंकरकेयुक्तहोय तो उसको कभी पतिका सुखनहींप्राप्तहोता वह पतिके प्राणहरती है जिनकेपेटसुकुमार औ चौड़ेहोयँ उनके सन्तानबहुतहोती हैं जिसकी कुक्षिमंडूकके समानहो वह राजाकीमाताहोय ऊँचे पेटवाली बंध्या गोलपेटसे व्यभिचारिणी औ दासी होती है औ ऊँचे नीचे पेटवालीस्त्री क्षुद्राहोतीहै गोल ऊँचेभारी औ बिस्तारयुक्त स्तन उत्तमहोते हैं गर्भकेसमय जिस स्त्री का दहिनाकुचऊँचाहोजाय उसकेपुत्रउत्पन्नहोय औ बायां कुच ऊँचाहोनेसे कन्या जिसका चिबुक अर्थात्‌ठोढ़ी लंबी होय वह स्त्री धूर्त्तहोय औ जिसकी ठोढ़ी दबीहुईहोय वह पतिकेसाथद्वेषरक्खै जिनकेकुच सर्पकेफणकेसमान अथवा कुत्ताकीजीभकेतुल्यहों वे दरिद्रा होतीहैं जिसका वक्षस्थल अर्थात्‌छाती मांससेपुष्टरोम औ नाड़ियोंसेरहितहो वहअनेकप्रकारके भोगभोगै गोलछातीवाली हिंसाकरै रोमयुक्त

छातीहोय तो कुशीलाहोय निर्मांसहोय तो विधवा औ बहुतचौड़ी छातीहोनेसे कलहकरनेहारीहोय जिस स्त्रीकेहाथ कीरेखा गहरी स्निग्ध औ रक्तवर्णहोयँ वहसुखभोगै औ टूटीरेखाओंसे दरिद्र होताहै जिसके हाथमें कनिष्ठाकेमूल से तर्जनीतक एक पूरीरेखा चलीजाय वह सौबर्षका आयुष्पावै जो रेखान्यूनहोय तो आयुषभी न्यूनहोय हाथकी अँगुली गोल लम्बी पतली छिद्ररहित औ कोमल तथा रक्तवर्णहोयँ तो अनेकप्रकारके भोगमिलैं अत्यन्तलालऊँचे औ स्निग्ध नखहोयँ तो ऐश्वर्य्यमिलै जो रूखे श्वेत नीले पीले नखहोयँ तो दौर्भाग्य औ दरिद्रहोय स्त्रीकेहाथ फटे हुयेरूखे औ बिषम अर्थात् ऊँचेनीचे व छोटे बड़ेहोयँ वह क्लेशभोगै औ कोमलरक्तवर्ण स्निग्ध औ छोटे२हाथोंवाली स्त्री सुखमें रहतीहै जिसके अँगुलियोंके पर्वोंमें यवकेचिह्न होयँ उसको बहुतसुख औ धन धान्य मिलताहै जिस स्त्री का मणिबंध अर्थात् हाथकीकलाईतीनरेखाओंसे भूषितहो वहउत्तमभोग औ दीर्घआयुषपातीहै जिसकेहाथमेंश्रीवत्स ध्वजा कमल हाथी घोड़ा चक्र स्वस्तिक वज्र खड्ग पूर्णकलश अंकुश प्रासाद अर्थात् महल छत्र मुकुट हार केयूर कुंडल शंख तोरण आदिके चिह्नहोयँ वहराजाकी स्त्रीहोती है तुला अर्थात् तखड़ी का चिह्नहोने से धनवान् वैश्यकी स्त्रीहोय दराती जूआ हल फाल ऊखल आदिका चिह्नहोनेसे धनाढ्य कृषीवल अर्थात् ज़मींदारकी पत्नीहोय स्त्रीकीभुजा ऊपरसेनम्र रोमरहित औ गोपुच्छकेआकारहोयँ तो उत्तम होतेहैं कूर्पर अर्थात् कुहनीभी रोमरहित औ गूढ़हो श्रेष्ठहै स्कन्धनत अर्थात् नयाहुआ उत्तमहै स्थूल

होनेसे बन्ध्या होतीहै जिसका कन्धा ऊँचा नीचाहोय वह व्यभिचारिणीहोय जिसकी ग्रीवामें तीनरेखाहोयँ वहसदा रत्नोंकेभूषणपहिने दुर्बल ग्रीवावालीस्त्री निर्द्धन स्थूलग्रीवा वाली दुःख भोगनेहारी छोटी ग्रीवावाली मृतवत्सा अर्थात् जिसके संतानहोकर मरजायँ औ लम्बी ग्रीवावाली स्त्री व्यभिचारिणी होय जिसके दोनों कन्धे औ कृकाटिका अर्थात् घेंटू ऊंचे न होयँ वह स्त्री दीर्घ आयुष् पाती है औ उसका पतिभी चिरकाल तक जीता है जिसका मुख चौखूंटा होय वह स्त्री धूर्ता होती है गोल मुखवाली शठ छोटे मुखवाली सन्तानहीन बड़े मुखवाली दुर्भगा होती है श्वान शूकर भेड़िया उल्लू बन्दर औ काक के समान जिस का क्रूरमुख होय वह पापिनी औ संतान तथा बंधुओं से हीन होती है जिनका मुख कमल दर्पण अथवा चन्द्रके समान होय वे सब उत्तमभोग पाती हैं रक्तवर्ण स्निग्ध औ पतला ओष्ठअच्छा होताहै जिसका ऊपरका ओष्ठ मोटाहोय वह कलहकरै नीलेआदि रंगका ओष्ठहोय तो दुःख भोगै औ जिसका ऊपरका ओष्ठ तीक्ष्ण होय वह अति क्रोध युक्तहोय जीभलालवर्णथोड़ेजलसे युक्त पतली औ लंबी अच्छी होती है मोटी छोटी टेढ़ी फटी हुई औ बुरे रंगकी अच्छीनहीं अतिश्वेत स्निग्ध औ ऊंचेदांत उत्तम होतेहैं छोटे फूटे विरल रूक्ष विकट औ ऊंचे नीचे दांत दुःखदायकहैं न बहुत मोटी न पतली न बहुतलम्बी औ ऊंची नासिका श्रेष्ठ है नील कमल के समान औ सुन्दर पक्ष्म अर्थात् बांकन करकेयुक्तनेत्र उत्तमहोतेहैं खंजनाक्षी मृगाक्षी औ वराहके समान नेत्रोंवाली स्त्री उत्तम भोग

भोगतीहैं औ शहतके समान पिंगलवर्ण रेखायुक्त औ मल आदिसे रहितनेत्र ऐश्वर्य देतेहैं जिसके नेत्र गड़े हुयेहोयँ औ अति पिंगल वर्णहोयँ वह दुःख भागिनी होतीहै लाल नेत्र छोटे बड़े धूम्रवर्ण प्रेतके नेत्रोंके समान औ श्वान के नेत्रोंके तुल्य जिसके नेत्रहोयँ वह स्त्री सदा त्यागने योग्य है जिसके नेत्र उद्भ्रांत औ केकर अर्थात् ऐंचेताने होयँ वह स्त्री व्यभिचारिणी होय औ मद्यमांस खानेवालीहोय जिसकेकान कोमल औलम्बेहोयँ वह अनेकप्रकार के भूषणपहिले औगर्दभ ऊंट नकुल उल्लू अथवा बानरके समान जिसके कान होयँ वह दुःखभोगै गोल कोमल औ रोमों से रहित कपोल उत्तमहोतेहैं अर्द्धचन्द्रके समान औचमकताहुआ ललाट अच्छा होताहै मस्तक न बहुतबड़ा न छोटा अच्छाहोताहै हाथीकेसमान मस्तक उत्तम नहीं पतले काले स्निग्ध औ लम्बेकेश उत्तमहोते हैं हंस कोयल भ्रमर मयूर वीणा अथवा बांसुरी के तुल्य जिनका स्वर होय वे भाग्य करके युक्त होतीहैं जिनका स्वर फूटी थाली के समान अथवा काकके तुल्यहो वे अनेक भाँतिके दुःख भोगतीहैं हंस वृष अथवा मस्तहाथीके समान जिसकी गतिहोय वह अपनाकुल विख्यात करै औ राजाकी राणी होय जिसकीगति श्वानजम्बुक काक औ मृगकेसमानहोय औ बहुत जल्दीचलै वह दासीहोय गोरोचन सुवर्ण चम्पा के पुष्प अथवा केसरिके समान स्त्रीकारंग उत्तम होताहै सम्पूर्ण स्त्री के अंग कोमल रोमों से औ पसीनेसे रहित अच्छेहोतेहैं कपिल वर्णकी स्त्री हीनांगी अधिकांगी रो- से रहित अथवा बहुत रोमोंसे व्याप्त जिसका देहहो-

नदी औ पर्वतके नामवाली अथवा यक्ष प्रेत आदिकेनाम वाली स्त्रीको न व्याहै जिसके अंग सब ठीक हों औ केश रोम दंत सूक्ष्महों ऐसी स्त्री से बिवाह करै क्रियासे हीन पुरुषों से रहित वेद शास्त्र से बर्जित क्षय कुष्ठ अपस्मार आदि रोगों से पीड़ित औ बहुत रोमों करके युक्त जो कुल होय उसकी कन्यासे बिवाह न करै इतना कह ब्रह्माजीने ऋषियों से कहा कि ये सब उत्तमलक्षण जिसस्त्री में होयँ औ आचरणभी अच्छाहोय ऐसीसे बिवाहकरै तोधन धान्य संतान कीर्त्ति औ ऐश्वर्यपावै हे मुनीश्वरो सब लक्षणों से अधिक सद्वृत्त अर्थात् भला चालचलन है यह स्त्री में अवश्य देखना चाहिये॥

पांचवां अध्याय॥

धन संपादन करने की आवश्यकता का कथन, तुल्यकुलमें सम्बन्ध करने की प्रशंसा॥

इतनासुन राजाशतानीकने कहा कि महाराज स्त्रियोंके लक्षण तो मैंने आपके मुखारविन्द से सुने अब स्त्रियों का सद्वृत्त सुनना चाहताहूँ यह राजाकी बिनतीसुन मुनि बोले कि हे राजा ब्रह्माजीनेही ऋषियों के प्रति सद्वृत्त भी कहा है वही हम आप से कहते हैं ऋषियों के प्रश्न के अनन्तर ब्रह्माजी कहने लगे कि हे मुनीश्वरो पहिले गुरुकुल में विद्या पढ़कर धन सम्पादन करै पीछे सुन्दर लक्षणों से युक्त औ सुशील स्त्री से शास्त्र की रीति करके विवाह करै धनकेबिना गृहस्थाश्रम बड़ी बिडम्बनाहै इसलियेधन सम्पादन करके पीछेगृहस्थीबनै नरककादुःखभोगना अच्छा परन्तु स्त्री पुत्रोंको भूखकेमारे रोतेहुयेदेखना

अच्छानहीं फटे औ मैलेवस्त्रपहिने अतिदीन औ भूखेस्त्री पुत्रोंकोदेख जिनका हृदयनहींफटता वे अतिकठोरहैं परन्तु उनकेजीवनकोधिक्कारहै उनकेलिये मृत्युपरम उत्सवहै इस-लिये जो धनबिना बिवाहकरै उसको स्त्रीकासुख प्राप्तनहीं होता केवल अपने गलेमें स्त्रीरूप फांसीडालताहै औ स्त्री बिना गृहस्थाश्रमनहींहोसक्ता इसलिये धनमुख्यहै कोईक-हतेहैं कि संतानसे त्रिवर्ग अर्थात् धर्म अर्थ औ कामकी प्राप्तिहोतीहै परन्तु नीतिवेत्ताओंका यहमतहै कि धन औ उत्तमस्त्री ये दोनों त्रिवर्गकेहेतुहैं दो प्रकारका धर्म्महै एक तो इष्ट अर्थात् यज्ञआदि करना दूसरापूर्त्त अर्थात् बापी कूप तलाव धर्म्मशाला आदि बनाना ये दोनों धनसे हो सक्ते हैं दरिद्रीकेबन्धुभी उससे लज्जाकरते हैं औ धनाढ्य के अनेकबन्धु बनजातेहैं धनही त्रिवर्गका मूलहै धनवान् में अनेक उत्तम गुण होजाते हैं औ निर्द्धन के विद्यमान गुणभी नष्टहोजातेहैं सब वस्तुओंका साधन धनहै धनके बिना अजागलस्तन अर्थात् बकरीके गलथने की भाँति पुरुषका जन्मव्यर्थहै पूर्व्वजन्मके पुण्यसे धनमिलताहै औ धनसे पुण्य होताहै इसलियेधन औ पुण्य अन्योन्याश्रय अर्थात् एक दूसरेके सहारेहैं इसकारणपहिले उत्तमरीति से धन सम्पादन करके बिवाह करै जबतक बिवाह न करै तबतक पुरुष अर्द्धशरीर होता है जिस भांति एक पहिये का रथ अथवा एक परका पक्षी किसी कामका नहीं होता इसी भांति स्त्री हीन पुरुष भी किसी कर्म्म के योग्य नहीं बिवाह तीनप्रकारका होताहै नीचकुलमें समान कुलमें औ उत्तमकुलमें नीचकुलमें बिवाहकरनेमें निन्दाहोतीहै उत्त-

कुलवाले अपना अनादर करते हैं इसकारण समान कुल में बिवाह करना चाहिये औ बिजातीय सम्बन्ध भी ठीक नहीं जैसा कोयल औ हंसका जिससम्बन्ध में प्रति दिन स्नेहकी वृद्धिहोय औ बिपत्ति सम्पत्तिके समय प्राणतक भी देनेमें विचार न करैं वह उत्तम सम्बन्ध कहाताहै परन्तु यह बात उनमेंही होतीहै जो कुल शील औ धनमें समान होते हैं मनुष्योंके स्नेह औ कृतज्ञताकीपरीक्षा बिपत्तिमेंही होतीहै बिवाह औ मंत्र अर्थात् सलाह समानोंके साथही करै उत्तम औ अधमोंकेसाथ कभी न करै जिससेसुखहोय॥

छठवां अध्याय॥

चारों वर्णोंके बिवाह व उनसे उत्पन्नहुये पुत्रोंके लक्षण॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो जो कन्या माताकीस-पिण्डा न होय औ पिताकी सगोत्रा न होय वह तीनवर्णों को बिवाह के योग्य होतीहै धर्म्म साधनके लिये ब्राह्मण ब्राह्मणकी कन्यासे बिवाहकरै और कामबश होकर क्षत्रिय आदि तीनवर्णों की कन्या बिवाहै इसी भांति क्षत्रिय अ-पने बर्णकी कन्याको धर्मसे औ वैश्य तथा शूद्रकी कन्या को कामसे बिवाहै वैश्य धर्म्मके लिये अपने वर्णकी कन्या से औ काम बशहो शूद्रकी कन्यासेभी बिवाह करै परन्तु शूद्र के लिये शूद्र की कन्याही भार्य्या कही है ब्राह्मण के लिये चारों वर्ण की कन्या ब्याहनी लिखीहैं परन्तु शूद्रा से बिवाह करना योग्य नहीं शूद्रा से बिवाह कर औ पुत्र उत्पन्न कर उतथ्य शौनक भृगु आदि ऋषि पतित भये शूद्रा के साथ संग करने से ब्राह्मण अधोगति को जाता है औ उसमें पुत्र उत्पन्न करके ब्राह्मणपने से हीन हो-

जाता है अर्थात् वह भी शूद्र होजाता है देवता पितर उसका हव्य कव्य ग्रहण नहीं करते है मुनीश्वरो अब हम आठ प्रकारके विवाह कहते हैं ब्राह्म दैव आर्ष प्राजापत्य आसुर गान्धर्व राक्षस औ आठवां पैशाचनामक विवाह होताहै इनमें पहिले चारविवाह ब्राह्मणको करनेयोग्य हैं पिछले चारका अधिकारी क्षत्रिय है आसुर औ राक्षसका अधिकारी वैश्य है औ शूद्रभी इनदोकाही अधिकारी है पहिले चारविवाह ब्राह्मणकेलिये उत्तमहैं राक्षसविवाह क्षत्रियकेलिये औ आसुरवैश्य औ शूद्रकेलिये मुख्यहै पैशाच औ आसुर ये दोविवाह निंद्य हैं वेदशास्त्र पढ़े हुये उत्तम कुलकेवरको बुलाय विधिपूर्वक विवाहकरदेना इसको ब्राह्म विवाहकहते हैं यज्ञहोरहाहै औ ऋत्विक् अपना कर्म कर रहे हैं उस समय कन्याको अलंकृतकर उत्तमवरसे विवाह देना इसकानाम दैवविवाह है एक बैल औ एकगौ वरसे लेकर विधिपूर्वक उसको कन्यादेना यह आर्षविवाहकहलाताहै बधूवरकाविवाह करदेना औ यह कहदेना कि ये दोनों साथधर्मका आचरणकरैं इसकानाम प्राजापत्य विवाहहै कन्याके मातापिता औ बन्धुओंको धनदेकर विवाह करना आसुर विवाह कहलाता है कन्या औ वर परस्पर अनुरक्तहो बातचीतकर आपही विवाह करलेवें इसका नाम गान्धर्वविवाहहै मारपीटकरके रोती चिल्लातीकन्या को लेआना राक्षसविवाहहोताहै सोईहुई अथवा मत्तकन्याको गुप्तउठालाना यह पैशाच नामक विवाह है ब्र ह्म विवाहसे उत्पन्नहुआपुत्र दशअगले औ दश पिछ का उद्धारकरता है दैवविवाहसे उपजापुत्र सात

पिछले कुलोंको तारता है आर्षबिवाहसे उत्पन्नहुआ सुत तीनअगले औ तीनपिछले पुरुषोंका उद्धारकरताहै बाकी चारप्रकारके बिवाहों से उत्पन्नहुये पुत्र क्रूरस्वभाव धर्म के द्वेषी झूठबोलनेहारे औ दुष्टहोते हैं अनिंदित बिवाहों से सन्तान उत्तमहोतीहै औ निन्दितबिवाहोंसे निन्दित इस कारण आसुर आदि निन्दितबिवाह न करै बिवाहरूपसंस्कार सवर्णा स्त्रीसे बिवाह करकेही होताहै कन्याकापिता यत्किंचित् धनभी बरसे न लेवे बरकाधन लेनेसे वह अपत्यबिक्री अर्थात् सन्तान बेचनेहारा गिनाजाता है जो पुरुष कन्याकेधनसे अपना जीवन करतेहैं कन्याकेदिये वस्त्र पहिनते हैं अथवा कन्या देकर मिलेहुये बाहनोंपर चढ़ते हैं वे नरकमेंजातेहैं आर्ष बिवाहमें गो मिथुन अर्थात् एक बैल औ एकगोलेनी कहीहै परन्तु वहभी ठीकनहीं क्योंकि चाहै थोड़ालो चाहे बहुत परन्तु वहकन्या का मूल्यही गिना ज़ाताहै इसलिये बरसे कुछ भी न लेनाचाहिये इसभांति बिवाह करके ब्राह्मण उत्तमदेशमें निवासकरै जिससे बहुत यशहोय यह ब्रह्माजी का वचनसुन ऋषियोंने पूछा कि महाराज कौनसादेश निवास करनेके योग्यहै कि जहां बसने से धर्म औ यशकी वृद्धिहोय यह मुनि वचनसुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो जिसदेशमें धर्म अपने चारोंचरणों करके सहितहो औ विद्वान्लोग बसतेहों सब व्यवहार शास्त्रकी रीतिसे होतेहों वह देश उत्तमहै औ निवास के योग्य है इतना सुन ऋषियों ने पूछा कि महाराज विद्वान् जिस आचरण को ग्रहणकरें औ धर्म्मशास्त्र में जो कहाहै इसको आप कथनकरैं तब ब्रह्माजी बोले कि उत्तम

विद्वान् रागद्वेषसे रहितहोकर जिसधर्मका आचरणकरैं वह मरूयहै न तो अत्यन्त निष्कामहो औ न सबकर्म कामनासेहीकरै संकल्पसे कामहोताहै वेदपढ़ना यज्ञकरना व्रत नियम धर्म्म आदिक करना सबकामसेही होते हैं ऐसी कोई क्रियानहींजिसमें कामनहींहो श्रुति स्मृतिसदाचार औ अपनेमनकी प्रसन्नता इनचारबातोंसे धर्मका निर्णयकरै श्रुति स्मृतिमें कहेहुये धर्मके आचरणसे इसलोकमें बहुत यश मिलताहै औ परलोकमें इन्द्रलोककी प्राप्तिहोतीहै श्रुति वेदकोकहते हैं स्मृति धर्मशास्त्रका नामहै इनदोनोंसे सब बातोंका विचारकरै क्योंकि धर्मकीजड़ येहीहैं जो इनदोनों का तर्कशास्त्र आदिसे अवमानकरै उस नास्तिक औ वेद निंदकको सत्पुरुष अपनेसमीप न रहनेदेवें निषेकसे लेकर मरणपर्य्यन्त जिसकेसबसंस्कार वैदिकमंत्रोंसे हुयेहोयँ उसीको वेदका अधिकारहै सरस्वती दृषद्वती औ गंगा इन तीननदियोंकेबीचमें जोदेशहै वहदेवताओंकाबनायाहुआ है उसको ब्रह्मावर्त्त कहते हैं जिसदेशमेंचारोंवर्ण औ उपवर्णोंमें जो आचार परम्परासे चलाआयाहोय उसकानाम सदाचारहै कुरुक्षेत्र मत्स्यदेश पांचालदेश शूरसेनदेश ये देशभी ब्रह्मऋषियों करके सेवितहैं परन्तु ब्रह्मावर्त्तसे कुछ न्यूनहैं इनदेशोंमें उत्पन्नहुये ब्राह्मणोंसे सब देशके मनुष्य अपना २ आचार सीखते हैं हिमालय औ विन्ध्यपर्वत के बीच कुरुक्षेत्रसे पूर्व औ प्रयागसे पश्चिम जोदेशहै इसका नाम मध्यदेशहै औ इन्हींदोनों पर्वतोंकेबीच पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्रतक जो देशहै उसको आर्य्यावर्त्त कहते हैं जिसदेश में कृष्णसार मृग अपनी इच्छासेविचरैं वह

धना नहीं होसक्ता इस कारण सदा स्त्री का आदर रक्खै उनमें जो अधिक प्रियाहोय उससे अपनी प्रीति एकांतमें प्रकटकरै प्रकटमें सबकेसाथ तुल्य व्यवहार रक्खै अर्थात् वृत्तिबस्त्र भूषणआदि उपचार सबको समानदेवै औ ऋतुकालमें सबके समीप गमनकरै औ नित्यभी क्रमसे सबके पासरहै एकके साथ जो बातचीत एकांतमें करै वह दूसरी से न कहै औ जो एक दूसरीके दोष ईर्षासे कहै तो उसका अनादर न करै सुनलेवै परन्तु अपने मनमें सब बिचार कर उनके जितने सन्तानहोयँ उनको बस्त्र भूषण औ भोजन तुल्य देवै माताके दोषसे सन्तान पर पिता को स्नेह न्यून न करना चाहिये उन सबकी प्रीति द्वेष अभिप्राय शौच अशौच आदि गुप्तरीतिसे सब जानतारहै पुराने सेवक बूढीदासी दाई आदि अनेक प्रकारकी कथा सुनाय उनके अभिप्रायको जानै औ कथा कहनेके समय उनके नेत्र मुखआदिकी चेष्टादेखै जिससे अभिप्राय विदित होजाय सीता अरुंधती शकुन्तला आदि के चरित सुनाय उनके भावको भलीभांति जानै इनबातोंसे दुष्टस्त्रीको जान उससे अपने प्राणोंको बचातारहै अपने केशोंमें शस्त्र छिपाय रानीने राजा विदूरथ को मारदिया मेखलामणि देने से सौवीर राजाके प्राणहरे भाई से मिलकर रानीने राजा भद्रसेन को यमलोक दिखाया काशिराज औ रैवतनाम राजा दोनों उनकी रानियोंने विषदेकर मारे इसभांति अनेक राजा औ ब्राह्मण स्त्रियों ने मारे हैं औरोंकी तो क्या कथाहै इसकारण सावधानहो स्त्रियों की रक्षाकरै औ दुष्ट स्त्रियोंसे आपभीबचै स्त्रीका अपराधदेख उसकेसाथ संभोग

न करै यही उनकेलिये दण्डहै भर्त्ताके साथ द्वेष होजानेसे स्त्री नष्टहोतीहै औ वह सत्कुल आचारधर्म गुणआदि कुछ भी नहीं देखती इसलिये इन दोषोंसे बचावै स्त्री के पतिव्रताहोनेके तीनकारणहैं पुरुष न मिलै एकांतस्थान न होय औ घरके धन्धेसे अवसर न मिलै उत्तम स्त्रीको साम औ दानसे अपने अधीन रक्खै मध्यमको दान औ भेदसे औ अधम स्त्रीकोभेद औ दण्डसे स्वाधीनकरै परन्तु दण्डदेने के अनन्तर भी साम दान आदिसे उसको प्रसन्न करलेवै भर्त्ताका बुराकरनेहारी औ व्यभिचारिणीस्त्री कालकूटनाम विषकेसमानहोतीहै इसलिये उसका त्यागकरै उत्तमकुलमें उत्पन्न पतिव्रता विनीता औ भर्त्ता का हित चाहने वाली स्त्रीका सदा आदररक्खे हे मुनीश्वरो यह जो हमने स्त्रियों का व्यवहार वर्णन किया इसरीति पर जो पुरुष चलै वह त्रिवर्ग औ संसार में सुखपावै ॥

आठवां अध्याय ॥

शास्त्र व परम्परा के धर्म व आचरण की आवश्यकता ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो यह मनुष्योंको स्त्रियों के साथ जैसे वरतनाचाहिये वह हमनेकहा अब हम पुरुषों के साथ स्त्रियों को जिस विधिवरतना योग्य है वह वर्णन करते हैं संपूर्णकार्य विधिसे कियेहुये उत्तमफलदेते हैं औ विधिनिषेध शास्त्रसे जानाजाताहै परन्तु स्त्रियोंको शास्त्रका अधिकार नहीं इसलिये उनको दूसरे से विधिनिषेध जानेकी अपेक्षा रहतीहै पहिले तो भर्त्ता सब धर्मों का उपदेश करताहै औ भर्त्ता मरनेके अनन्तर पुत्र अब विवश स्त्रीं पतिव्रताकेधर्म बतावै कोई स्त्री शास्त्रकोभी ९

हैं उनको उपदेशकरना कुछ आवश्यकनहीं सबबात शास्त्र सेही ज्ञातहोतीहैं परन्तु परम्परासेभी जानतेहैं जैसे व्याध कहार अहीरआदि ग्रामीण निकृष्ट मनुष्यभी भद्रा भौमवार व्यतिपात आदि को बुरा जानते हैं इस वास्ते चारों वर्ण औ आश्रमों में मुख्य औ गौण भेदकरके सबशास्त्र के अधिकारीहैं अर्थात् कोई मुख्य अधिकारी है औ कोई गौणहै लोकका औ शास्त्र का पौर्वापर्य जानना कठिन है अर्थात् लोक व्यवहार शास्त्रसे निकला है अथवा लोक व्यवहार के अनुकूल शास्त्ररचेगये यह निश्चय होना कठिन है नास्तिकपना औ बुद्धिके विकल्पोंको छोड़ शास्त्रके अनुसार अपने बड़े पुरुष जिसमार्गमें चलेहों उसपर चलाजाय इसीमें सब प्रकार का कल्याण है गृहस्थके धर्मों का मूल पतिव्रता स्त्री है वह पतिव्रता पतिका आराधन किसविधिसेकरै अब हम इसका वर्णन करते हैं॥

नवां अध्याय॥

पतिव्रता का आचरण॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो सब आराध्य अर्थात् आराधन करनेके योग्य पुरुषोंके आराधनकी यह विधिहै कि उनकी चित्तवृत्तिको भलीभांति जानकर उसके अनुकूल चलना औ सदाउनका हितचाहना भर्ताकेचित्तकेअनुकूल चलना यह पतिव्रता का मुख्यकार्य है पतिके माता पिता ज्येष्ठभ्राता पितृव्य गुरु मामा बहनोई आदिका बड़ाआदर रक्खै औ जो अपने से सम्बन्धमें छोटेहोयँ उनको आज्ञा दियाकरै पति के मित्र औ देवर आदिसे भी हास्य न करै किसी पुरुषकेसमीप एकांतमेंबैठना औ हास्यकी बातकरना

ये पतिव्रताधर्मके नाशके हेतुहैं इसकारण उत्तमस्त्री इनको कभी न करै दुष्टोंकासंग स्वतन्त्रता बहुतहँसीकरना अपने हाथसे किसी पुरुषको वस्तुदेना अथवा लेना घरकेद्वारपर ठहरना राजमार्गकादेखना वहुत पुरुषोंके आगे निकलना ऊँचे स्वरसे बोलना औ हँसना दृष्टिसे वचनसे औ शरीर से चंचलता करना दुष्टस्त्रियोंका संगकरना इत्यादि और भी बुरीबातैं पतिव्रता स्त्री न करै जो कोई पुरुष अपने को कुदृष्टि से देखै उसको आप पिता अथवा भाई के समान मानै इस रीतिसे स्त्रीका शील नहीं बिगड़ताहै औ कुलकी निन्दाभी नहीं होतीहै ॥

दशवां अध्याय ॥

गृहस्थका व्यवहार ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो उत्तमस्त्री पतिको मन वचन कर्मकरके देवताके समानजानै औ सदाउसके हित करनेमें तत्पररहै पतिके मित्रोंको मित्रजानै औ शत्रुओंको शत्रु अधर्म औ अनर्थसे पतिको बचावै देवताऔपितरोंके कृत्य अभ्यागतोंका सत्कार औ पतिकेस्नान भोजनादिकर्म समयपर सावधानहोकरकरै रहनेकाघर औशरीर इनदोनों को तुल्य समझै औ शरीरसेभी अधिक घरको स्वच्छ औ भूपितरक्खै प्रातःकाल मध्याह्न औसायङ्कालकेसमयघरको मार्जनकरके स्वच्छकरै गोशालासे दासियों के हाथ गोबर उठवाय वहां झाड़ू दिलावै दास दासियोंको भोजनआदि से सन्तुष्टकर अपने २ काममें लगादेवै गृहस्थोंको उचित है कि शाक मूल फल बेल कन्द ओषधी आदिका अपने२ समयपर संग्रहकरावै औसमयपर इनको खेतआदिमेंबुआ

हैं उनको उपदेशकरना कुछ आवश्यकनहीं सबबात शास्त्र सेही ज्ञातहोतीहैं परन्तु परम्परासेभी जानतेहैं जैसे व्याध कहार अहीरआदि ग्रामीण निकृष्ट मनुष्यभी भद्रा भोमवार व्यतिपात आदि को बुरा जानते हैं इस वास्ते चारों वर्ण औ आश्रमों में मुख्य औ गौण भेदकरके सबशास्त्र के अधिकारीहैं अर्थात् कोई मुख्य अधिकारी है औ कोई गौणहै लोकका औ शास्त्र का पौर्वापर्य जानना कठिन है अर्थात् लोक व्यवहार शास्त्रसे निकला है अथवा लोक व्यवहार के अनुकूल शास्त्ररचेगये यह निश्चय होना कठिन है नास्तिकपना औ बुद्धिके बिकल्पोंको छोड़ शास्त्रके अनुसार अपने बड़े पुरुष जिसमार्गमें चलेहों उसपर चलाजाय इसीमें सब प्रकार का कल्याण है गृहस्थके धर्मों का मूल पतिब्रता स्त्री है वह पतिब्रता पतिका आराधन किसबिधिसेकरै अब हम इसका वर्णन करते हैं॥

नवां अध्याय॥

पतिब्रता का आचरण॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो सब आराध्य अर्थात् आराधन करनेके योग्य पुरुषोंके आराधनकी यह विधिहै कि उनकी चित्तवृत्तिको भलीभांति जानकर उसके अनुकूल चलना औ सदाउनका हितचाहना भर्ताकेचित्तकेअनुकूल चलना यह पतिब्रता का मुख्यकार्य है पतिके माता पिता ज्येष्ठभ्राता पितृव्य गुरु मामा बहनोई आदिका बड़ाआदर रक्खै औ जो अपने से सम्बन्धमें छोटेहोयँ उनको आज्ञा दियाकरै पति के मित्र औ देवर आदिसे भी हास्य न करै किसी पुरुषकेसमीप एकांतमेंबैठना औ हास्यकी बातकरना

ये पतिव्रताधर्मके नाशके हेतुहैं इसकारण उत्तमस्त्री इनको कभी न करै दुष्टोंकासंग स्वतन्त्रता बहुतहँसीकरना अपने हाथसे किसी पुरुषको वस्तुदेना अथवा लेना घरकेद्वारपर ठहरना राजमार्ग्गकादेखना बहुत पुरुषोंके आगे निकलना ऊँचे स्वरसे बोलना औ हँसना दृष्टिसे बचनसे औ शरीर से चंचलता करना दुष्टस्त्रियोंका संगकरना इत्यादि और भी बुरीबातैं पतिव्रता स्त्री न करै जो कोई पुरुष अपने को कुदृष्टि से देखै उसको आप पिता अथवा भाई के समान मानै इस रीतिसे स्त्रीका शील नहीं बिगड़ताहै औ कुलकी निन्दाभी नहीं होतीहै॥

दशवां अध्याय॥

गृहस्थका व्यवहार॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो उत्तमस्त्री पतिको मन बचन कर्मकरके देवताके समानजानै औ सदाउसके हित करनेमें तत्पररहै पतिके मित्रोंको मित्रजानै औ शत्रुओंको शत्रु अधर्म औ अनर्थसे पतिको बचावै देवताऔपितरोंके कृत्य अभ्यागतोंका सत्कार औ पतिकेस्नान भोजनादिकर्म समयपरसावधानहोकरकरै रहनेकाघर औशरीर इनदोनों को तुल्य समझै औ शरीरसेभी अधिक घरको स्वच्छ औ भूषितरक्खै प्रातःकाल मध्याह्न औ सायङ्कालकेसमयघरको मार्जनकरके स्वच्छकरै गोशालासे दासियों के हाथ गोबर उठवाय वहां झाड़ू दिलावै दास दासियोंको भोजनआदि से सन्तुष्टकर अपने २ काममें लगादेवै गृहस्थीको उचित है कि शाक मूल फल बेल कन्द ओषधी आदिका अपने२ समयपर संग्रहकरावै औसमयपर इनको खेतआदिमेंबुआ

दे तांबा कांसी पीतल लोह काष्ठ बांस औ मृत्तिकाकेबर्त्तनों का संग्रहरक्खै जलकेलिये कुंड कूंडी कलश झारी उदंचन अर्थात् बड़ेपात्रसे जलनिकालनेके छोटेपात्र घीतेलरखने के वर्त्तन दूध दही छाछआदि धरनेकेपात्र भांति२ के रसोई केपात्र मूसल ऊखल छाज चलनी सिल लोढ़ी चक्की दही मथनेकी रई सनसी चिमटे पली कड़छी कड़ाही तवे तखड़ी तोलनेकेबांट पिटार पिटारियां सन्दूक़ पलंग चौकी आदि अनेक प्रकारके उपकरण हींग जीरा धनियां पीपल राई मिरच सूँठ आदि अनेकप्रकार के मसाले लवण भांति २ के खार सिर्के अचार कांजी सबभाँतिकीदाल सबप्रकारके तेल स्नेह अनेकदूध दहीकेपदार्थ सूखाकाष्ठआदि जोजो बस्तु नित्य औ नैमित्तिककार्य्योंमें अपेक्षितहो सब पहिले से संग्रहकररक्खै कि समयकेऊपर ढूँढ़नी न पड़ै जिसवस्तु का आगेकाम लगनाहो वह पहिलेही संग्रह करलेवे सूखे गीले पीसे बिनपीसे कच्चे पक्के आदि भाँति २ के अन्नोंका संग्रह बिचारकर करलेवे॥

ग्यारहवां अध्याय॥

गृहस्थका व्यवहार॥

ब्रह्माजीकहते हैं कि हेमुनीश्वरो धान कोदों कँगुनी गेहूँ आदिअन्न अपने २ समयपर संग्रहकरै औ पतिब्रतानारी शय्या आसन पीढ़े कंचुकी ओढ़नी लहँगे कुरते आदि अनेकवस्त्रोंका संग्रहरक्खै गुरु बालक वृद्ध अभ्यागत औ पतिकी शुश्रूषामें आलस्य न करे देवरआदिके पहिनेहुये माला वस्त्र भूषण आदि कभी न पहिनै औ उनके शयन करनेकी शय्याकोकभी आक्रमण न करे अर्थात् उसपरपैर

भी न रक्खै घरमें पाककियाहुआ जो बासी अन्नबचै वह गौओंके खानेमेंडालदेवै गौकादूध इतना निकालै कि जिस में उनके बछडे भूखे न रहें औ दहीकोबिलोय उससेघी नि-काललेवै वर्षाशरत् औ वसन्तऋतुमें दोनोंवक्त गौदुहै औ बाकी ऋतुओंमें एकवारहीदूधनिकालै छाछकरके घरकी रक्षाकेअर्थ पालेहुये कुत्तोंका पोपणकरै गोप आदिकों को गौकीचराईमें अन्नदेवै अथवा रुपयादेवै परन्तु यहभी दृष्टि रक्खै कि गाय भैंसोंकादूध न पीजावैं समयकेऊपर आय कर दोहनकरनेवाला गोपआदि दूधनिकालजायाकरै जब गौ व्यावै तब एक महीनेतक उसकादूध न निकालै बछडे को चूंखनेदेवै पीछे एक महीनेतक एकथनका फिर एकम-हीनेतक दोथनका औ इसके अनन्तर तीनथनका दूधनि-कालै एकथन सदा बछडेकेलिये छोडतारहै तिलकी खल कोमलतृण लवण आटा आदिसे बछडोंका पालनकरै औ समयपर उनको जलपिलावे बूढीगौ गर्भिणी दूधदेतीहुई औ बछडे बछियाओंका बराबर पोषणकरै न्यूनअधिक न समझै तीनगौओंकेअर्थ एकग्वाल होनाचाहिये औ पांच बछडोंकेलियेभी एकहीहोय गौकेगलेमें घण्टाअवश्य बां-धनाचाहिये एकतो घण्टाबांधनेसे शोभाहोतीहै दूसरेउस के शब्दसे कोई दुष्टजीव गौके समीप नहींआता औ गौ कहीं दौडकरचलीजाय तो घण्टाके शब्दकेअनुसार उसको ढूँढसक्ते हैं जहां सिंह व्याघ्रआदि दुष्टजीव न होयँ तृण औ जल बहुत होय छायाकेलिये घनेवृक्ष होयँ औ पशुओंके कोई रोग न होय ऐसे स्थान गोष्ठ अर्थात् गौओंके रहने का स्थान बनावै औ भेड़ बकरियों के लिये गुप्त स्थ

बनावै औ बर्ष में दोबार चैत्र औ आश्विनमें उनका ऊन उतारे गौओं के यूथमें चार अथवा पांच सांड़ चाहिये औ बकड़ियोंके यूथमें दशसांड़ होने आवश्यकहैं घोड़े ऊंट औ महिषोंके यूथमें जितने होयँ उतनेहीं ठीकहैं कुछ नियम नहीं खेतीकरानेकेअर्थ जिनसेवकोंको रक्खे उनको भोजन औ कुछ बेतन अर्थात् तनख्वाह देवै औ जहां खेत खलिहान अथवा बाटिका आदिमें वे काम करते होयँ वहां बार २ जायकर देखै औ उनमें जो अच्छा कामकरताहोय उसका सत्कार अधिक करै औ उसको भोजनभी औरोंसे कुछ उत्तम देवै समय २ पर सब प्रकारके अन्न का संग्रह करे औ समयपर सबको खेतों में बुआवै घरका मूल स्त्री है औ गृहस्थ का मूलअन्न इसकारण अन्नमें मुक्त हस्त न होय अर्थात् अन्नको वृथा न खर्चै सदा संचयकरतारहै संचयकरनेमें औ खर्चकरनेमें अन्नको थोड़ासासमझ अवज्ञा नकरे देखो थोड़ा २ शहदइकट्ठा करते २ मक्खी कितना इकट्ठा करलेती हैं चींटी जरा २ सी मट्टी लाकर कितना ऊंचा बल्मीक बनालेतीहैं औ बहुतसा अंजनभी नित्य २ आंखमें डालते २ निबड़जाताहै इसीभांति सब बस्तुओंका संग्रह औ खर्च भी होता है इसमें थोड़ी बस्तु की अवज्ञा न करनीचाहिये सब घरकेकाम स्त्री पुरुष एक मतहोने से अच्छेहोते हैं औ जगत्में ऐसेभी हजारों पुरुषहैं कि जिनके सब कामों में स्त्री प्रधान रहती हैं परन्तु जो स्त्री बुद्धिमान् औ सुशीलाहोय तो कुछ हानि नहींहोती नहीं तो अनेक प्रकारके दुःखभी होतेहैं इसकारण स्त्रीकी योग्यता अयोग्यताकोसमझ बुद्धिमान् पुरुष उसको कार्य्यमें नियुक्त करै

कांगनी का पांचवांभाग धानका तीसराभाग यव गेहूँ मूँग उड़द आदिका चौथाभाग भूननेसे कमती होजाताहै औ येही अन्न रांधनेसे द्विगुण होजाते हैं कंगुनी कोदों चीना औ चावल इनका भात चौगुणा होताहै औपुराने चावलों का चौगुनेसेभी अधिकहोताहै परन्तु पाककरनेहारा चतुर चाहिये लाई परमल खील औ भुनेहुये चने पांचवां भाग अधिकहोजातेहैं इसीभांति मूँग उड़द मसूरआदिभी जानो अलसीमें छठांभाग तेल निकलताहै सरसों कैथके बीज औ नींबके बीजोंमें पांचवां भाग तिल महुआ कुसुम्भ के बीज औ इंगुदी अर्थात् एकप्रकारका पहाड़ीफल उसके बीज इनमें चौथाई तेल निकलताहै बाक़ी सबखल होतीहै ये सब बातें अनुमानसे कही हैं समयभेद औ देश भेदसे इनमें अन्तरभी पड़जाताहै गौके सोलहसेर दूधमें एकसेर घी औ भैंसके सोलहसेर में सवासेर घी निकलताहै परन्तु भूमि औ तृण अर्थात् चारेकेभेदसे न्यून अधिकभी होताहै इसलिये इन सबबातोंको अपने अनुभवसे निश्चयकरलेवै रेशम कपास शण आदिका सुधारना लोढ़ना आदि कंधी लंगड़ी बहरी आदि स्त्रियों से करावै जो थोड़ी मजूरी पर करदेवैं बालक वृद्ध अन्धे भूखेआदि मनुष्योंसे भोजनआदि देकर काम करालेवै भर्त्ता विदेश में गयाहोय तो ये सब काम सावधानहोकर स्त्री करायाकरै सूत्रों का व्यवहार भी भली भांति जाने अलसी औ कपासमें पांचवां भाग सूत बैठताहै रुई के धुनने से तेईसवां भाग घटजाताहै परन्तु धुनियां जानकर न उड़ादेवै औ छिपाभी न लेवै अच्छेसूत्र का वस्त्र बनानेसे पचासवांभाग घटताहै परन्तु माड़ीदेकर

तंतुवाय उसमें दशवां अथवा ग्यारहवांभाग बँधादेतेहैं औ सूत्रके मोटमहीन होनेपरभी घटतीबढ़ती देखीजातीहै औ बुनवाईभी सूत्रके ऊपरही है इन सब बातोंको जो गृहस्थ पुरुष भलीभांति जानै औ देशकालके अनुसार सब व्यवहार समझै वह सुखसे रहताहै॥

बारहवां अध्याय॥

गृहस्थकी स्त्रीके आचरण॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो घरमें स्त्री प्रभात सबसे पहिले उठै औ रात्रिको सबके पीछे भोजनकरै औ पीछेही सोवै औ आवश्यककार्यके बिना घरकी देहलीके बाहरपैर न धरै जो बहुतप्रभात उठबैठे तो भर्त्ताकेसमीप बैठकरही सब सेवकोंको अपने २ कामकी आज्ञादेवै बाहर न जाय जब पतिभी जग उठे तबवहांकाआवश्यक कार्यकरघरके धंधेमें लगै रात्रिकेपहिले उत्तमवस्त्र भूषणउतार घरकेकार्यकेयोग्य वस्त्रपहिन सावधानहो सबकामकरै पहिले रसोईकेमकान औ चूल्हेकोलीपपोतकर स्वच्छकरै और रसोईके पात्रोंकोमांजिधोय औ पोंछकर वहांरक्खै औरभीसबरसोईकी सामग्री वहांइकट्ठीकरै रसोईका स्थानभी न तो अति गुप्त न बहुत प्रकटस्वच्छ विस्तीर्ण औ जिसमें धुआं न होय ऐसाहोनाचाहिये दूधदहीकेबर्तनों कोसीपीरस्सी अथवा वृक्षकीत्वचासे खूबरगड़करधोडालै पीछे धूपमें सुखालेवै जिससे दहीदूधमेंकुछबिकृति न होय बुरेपात्रोंमें दही दूध बिगड़ जातेहैं घी दही दूध छाछआदिको सावधानीसे रक्खै फिरस्नानादि आवश्यक कृत्यकरके पतिकेलिये अपने हाथसे रसोई बनावै औ यह बिचार करै कि कौनसा

पदार्थ उनको प्रियहै अग्निकी वृद्धि किस भोजनसे होती है क्या पथ्यहै क्या अपथ्य हैं औ आरोग्य देनेहारा देश कालके अनुकूल कौन भोजन है यह सब विचारकर प्रीति पूर्व्वक रसोई बनावै औ रसोईके स्थानमें ऐसे वैसे स्त्री पुरुषोंको न आनेदेवे इस विधि रसोई बनाय सब पदार्थों को स्वच्छपात्रोंसे ढक बाहर आकर शरीरका प्रस्वेद पोंछ गंध ताम्बूल मालावस्त्र आदिसे अपनेको थोड़ासा भूषितकरे फिर भोजनके लिये पति को बुलाय सब प्रकारके व्यंजन भात रोटी मिठाई आदि परसै जो देशकालके विपरीत न हो औ जिनका परस्पर विरोधभी नहो जैसा दूध औ लवणकाहै पतिके भोजन समय आप पंखा लेकर धीरे धीरे पवनकरे औ जिस पदार्थ पर पतिकी अति रुचिदेखे वह और परसै इसभांति पतिको भोजन करावे सब सपत्नियों को अपनी सगीबहिनके समानजानै औ उनके संतानोंको अपने सन्तानसेभी अधिक प्रिय समझे उनके भाई बंधुओं को अपने भाइयोंके बराबर मानै भोजन वस्त्र अभ्यङ्ग भूषण ताम्बूल आदि जबतक सपत्नियों को न देलेवे तब तक आपभी न ग्रहणकरे जो सपत्नीके अथवा अपने घर में और किसी मनुष्यके कुछ रोगहोजाय तो उसकी भली विधि चिकित्साकरावे नौकर बन्धु सपत्नी आदिको दुःखी देख आपभी दुःखपावे औ उनको प्रसन्न जान आपभी सुख माने घरका सबवृत्तांत पतिसे एकान्तमें सुनादेवै परन्तु सपत्नियोंके दोष न कहै जो कोई व्यभिचार आदि बड़ादोष देखै कि जिसके गुप्त रखनेसे कुछ अनर्थहो ऐसे दोषको अवश्य पतिसे कहदेवे दुर्भगा जिसका पति सदा तिरस्कार

करै औ सन्तानहीनहो ऐसी सपत्नीकोभी सदा आस्वासन करै औ भोजन वस्त्र भूषणआदिसे दुःखी न होने देवे औरभी जो किसी नौकरकेऊपर पतिकोपकरै उसकाभी आस्वासन करदेवे परन्तु पहिले यहबिचारलेवै कि इसकाआस्वासन करनेसे कुछहानि न होय जो देखै कि बहुतकाल ब्यतीत हो-गया औ मेरे कोई सन्तान न भया तो पतिको दूसरा बि-वाह करनेकेलिये समझाय प्रीतिसे अपने हाथ पतिकाबि-वाहकरै औ नई सपत्नीको छोटी बहिनके समान जानै औ उसके भाईबन्धुओंकाआदर प्रसन्नचित्तहोकरकरै औ माता की भांति घरके सब काम उसको सिखावै औ सायंकालके समयभलीभांति शृङ्गारकरायरात्रिकोपतिकेसमीपपहुँचाय देवै इसप्रकार सबरीतिसे पतिको प्रसन्नरक्खे क्योंकि स्त्रियों का देवतापति है बर्णोंका देवता ब्राह्मण ब्राह्मणों का देवता अग्नि औ प्रजाओंका देवतामेघहै स्त्रियोंकात्रिबर्गप्राप्तिके दो उपाय हैं एकतो सबप्रकारसे पतिकोप्रसन्नरखना दूसरे आचरणशुद्धचित्तके अनुकूल चलनेसे जैसी पतिकीप्रीति स्त्रीपर होतीहै वैसी न रूपसे न यौवनसे औ न उत्तमशृं-गार करनेसेहोय क्योंकि प्रायः देखते हैं कि उत्तमरूप औ तरुण अवस्थाकरके युक्तस्त्रीभी पति के बिपरीत आचरण कर दौर्भाग्यको प्राप्तहोतीहै औ अतिकुरूपा औ अवस्था सेहीनभी पतिकेचित्तके अनुकूल चलनेहारी सुखभोगतीहैं इसलिये पतिके चित्तका अभिप्राय भलीभाँति समझना औ उसके अनुकूलचलना यहीस्त्रीकेलिये सबसुखोंकाहेतु है जब जाने कि बाहर से अब पतिको आनेका समय है तब घरको स्वच्छकर उत्तम आसनबिछाय सावधानहोकर

बैठे औपतिकेआतेही अपनेहाथ उनकेचरणधोय आसन पर बैठाय पंखाले धीरे २ पवनकरै येसबकाम दासीआदि से न करावै अपने बन्धु औपतिके बन्धुओंका सत्कारआदि पतिकी इच्छानुसार करै अर्थात् जिसपर पतिकीरुचि न देखै उससे अधिक शिष्टाचार न करै कोई कुलीनपुरुष अपनी कन्यासे उपकारकी आशा नहींरखता औ जो रक्खे वह अधम पुरुषहोताहै कन्या विवाहिकर फिर उससे अपनी वृत्तिकी इच्छा करना यहमहात्मा औ कुलीन पुरुषों की रीति नहीं यह मार्ग नट भांड़ दास आदि नीच मनुष्यों काहै इसलिये स्त्रीके बन्धु केवल प्रीतिकेलिये व्यवहाररक्खें औ यथाशक्ति कुछ देतेभीरहैं उनसे आप कोई बस्तु लेने की इच्छा न रक्खें इसप्रकार जोस्त्री सद्वृत्तकोजान सब बातकरै वहपति औ उसके सब बन्धुओंको सम्मत होतीहै परन्तु पतिकी प्रिया औ सुशीलाहोकर भी स्त्रीको लोकापवादसे डरना चाहिये क्योंकि सीताआदि उत्तम स्त्रियोंको भी लोकापवाद होजानेसे अनेक भांतिके दुःख भोगनेपड़े उत्तम आचरणवाली स्त्रीभी जो बुरासंगकरै अपनीइच्छा से चाहेजहां चलीजाय उसके अवश्य कलङ्कलगताहै औ झूठादोष लगनेसेभी कुलकलङ्कित होजाताहै उत्तमकुल की स्त्रियोंको ये बातें आवश्यकहैं कि किसी भांति अपने कुलको दूषित न होनेदेना पतिकेधर्म अर्थ औ काम का साधन करना औ सन्ततिस्थापनकरना बुरेआचरणवाली स्त्री अपने कुलोंको नरकमें डालती हैं औ भले आचरण वाली नरकमें गिरेहुओंकोभी निकालतीहैं पतिके चित्तकी अनुकूलता औ शुद्ध आचरण ये दोनों स्त्रियोंके भूषण

सुवर्ण रत्नआदि भूषण तो केवल शरीरपर बोझलादनाहै जो स्त्रीपतिको औलोकको भलीभांति आराधनकरै अर्थात् पतिके चित्तके अनुकूलचलै औ लोकव्यवहार भलीभांति समझ उसके ऊपर आचरणकर कीर्त्तिसम्पादनकरै किसी भांतिका कलङ्क अपनेको न लगनेदेवै वह नारी धर्म अर्थ औ कामको निर्विघ्न पातीहै ॥

तेरहवां अध्याय॥

प्रोषितपतिका आचरण छोटी बड़ी सपत्नियोंका परस्पर वर्त्तन ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अब हम प्रोषितपतिका अर्थात् जिसका भर्त्ता परदेशमें गयाहो उसकाआचरण कहते हैं पति जब बिदेशमें गयाहोय तब बहुत भूषण न पहिने मंगलकेलिये एकआध कण्ठसूत्र नथआदि पहिने रहै पतिने जिस कामका आरम्भ कियाहो उसको अपनी शक्तिके अनुसार करतीरहै देहका अधिक संस्कार न करै केशोंकी एक बेणीरक्खै रात्रिको सास आदि पूज्य स्त्रीके समीप सोवै बहुत खर्च न करै ब्रत उपवास आदि करती रहै पति का वृत्तांत सदा पूछती रहै नित्य उसके आने की बाटदेखै औ विदेशमें उसके कल्याणके लिये नित्यदेव पूजाआदि शुभकर्म करतीरहै जाति बिरादरीमें किसीकेघर न जाय जो आवश्यक कार्यहोय तो अपनेबड़ोंकीआज्ञाले घरमेंसे किसीशिष्ट दासीआदिको संगकरजाय परन्तु वहां बहुतकाल न ठहरै औ स्नानभोजन आदिभी न करै जब पति विदेशसे आजाय तब सुन्दर वस्त्र भूषणपहिन देवताओं के जो उपयाचितक अर्थात् मन्नतमान रक्खीहोयँ सबपूरीकरदेवै अपनेसे बड़ीसपत्नीको माताकेसमान जानै

औ उसके सन्तानको अपनीसन्तानसे भी अधिकमानै पिताके घरसे जो कुछवस्तु आवै पहिले उसको देवै वहभी थोडीसीग्रहणकरले औ बाक़ीको भलीभांतिरखदे जब २ छोटीको उसबस्तुकी अपेक्षाहो तब २ देतीरहै छोटीसपत्नी केदियेहुये पदार्थका अनादर न करै सपत्नियों में परमद्वेष होजाताहै परन्तु बुद्धिमतीस्त्री अपने उदार आचरणसेकभी द्वेषनहींहोनेदेती हैं ऋतुस्नानके अनन्तर बड़ीसपत्नीकीप्रेरणासे औ उसीसे अपनाशृङ्गार करवाय लज्जासे संकुचितहोतीहुई पतिके निकटजाय औ वहांजाय एकान्तमें उस समयकेयोग्य हावभाव औ बातचीतसे पतिकामन हरलेवै औ प्रभातउठकर लज्जितहुई २ बड़ीसपत्नीके समीपजाय औ सदा उसकेसाथ प्रीतिरक्खै परन्तु अपनी बुद्धिमानी से पतिको अधीनकरलेवै सबकाल में लज्जास्त्रीकाभूषणहै परन्तु एकान्तमें पतिके समीप प्रगल्भताही परमभूषण है पतिको सबप्रकारसे अनुकूल करके भी बड़ीसपत्नी आदि का गौरव औ आदर न्यून न करै औ घरके कामनमें जो पति आज्ञा देवै उसमें ऐसी बुद्धिमत्ताकरै कि सपत्नीकी आज्ञा लेलेवैं औ वह यहीजानै कि मेरीही आज्ञासे कामकरतीहै बड़ी सपत्नीभी जब देखै कि पतिकाचित्त इसमें आसक्तहोगयाहै तबकुछ क्षोभ न करै औ अपनी बेटीकेसमान उससेप्रीति रक्खै इसीसे उसकीबड़ाई औ पतिकी अनुकूलताहोती है मनबचन कर्मकरके पतिकी अनुकूलताकरै किसीभाँतिपतिकेआगे उद्धतपना औ द्वेषप्रकट न करै इसप्रकार सौभाग्यकी वृद्धिहोतीहै औ पतिकीआलिप्यारी नारीसेविरोध करनेसे पतिसे द्वेषहोजाताहै इसलिये बड़ीस्त्री पतिसे औ

सपत्नीसे प्रीतिरक्खै घरका सबकाम मनलगायकरै नौकरों का भरण पोषण औ पूज्योंकी पूजा भलीभांति करती रहै औ सबप्रकारसे अपनेशीलकी रक्षारक्खै वह इसलोकमें औ परलोकमें सुखपातीहै औ यशकमातीहै ॥

चौदहवां अध्याय ॥

दुर्भगाको योग्य आचरणका उपदेश जिससे पतिअनुकूल होजाय ॥

ब्रह्माजीकहतेहैं कि हे मुनीश्वरो अबहम दुर्भगा अर्थात् जिसपर पति अतिक्रोधयुक्तहो औ कभी उसका आदर न करै उसकेलिये जो आचरण योग्यहै उसका वर्णनकरतेहैं दुर्भगास्त्री व्रत उपवासआदि क्रियाकरै औ जिसदिनकुछ बिशेषकृत्य घरमेंहो उसदिन सबकाम प्रीतिसेकरै अपनी निन्दा सपत्नियोंकी प्रशंसाकरै औ भर्त्ताके आगे कभीईर्षा प्रकट न करै औ सदायह कहतीरहै कि मेरीसरीखी स्त्रीको यही बहुतकुछहै कि ऐसेउत्तमपतिकीभार्या कहातीहूँ भूषण उत्तम बस्त्र आदिसदा पहिने रहै परन्तु बहुत उद्धतभी न बनै शरीरको हाथपैरोंको दांतोंको अतिस्वच्छ रक्खै बेतसीवृत्ति धारणकर सब सपत्नियोंमें रहै अर्थात् जैसे बेतका वृक्ष बड़बेगसे आतेहुये जल में झुकजाता है औ जलका बेगनिकलजानेपर फिर खड़ाहोजाताहै औ आनन्दसे उसी स्थानपर बनारहताहै औ जो वृक्ष नहीं झुकते वे जड़से उखड़कर जलकेसाथही बहेचलेजाते हैं इसकानाम बेतसीवृत्ति है जो पतिकी बहुत प्रियाहो उससे बहुतस्नेह रक्खै जिसकार्यमें पतिकीइच्छादेखै उसकोकरै भण्डारवस्त्र अन्न ताम्बूल गन्ध औषध पानके द्रव्य आदि को आज्ञाबिना हाथ न लगावै औ घरमें झाड़ूदेना चौका लगाना आदि

काम आज्ञा बिनाभी करै सपत्नी के सन्तानों की स्नान वस्त्र भूषण भोजन आदिसे सदा शुश्रूषा करतीरहे जाति से कोई स्त्री दुर्भगा अथवा सुभगा नहीं है उत्तम स्त्री भी भर्त्ता के चित्तका अभिप्राय न जानने से उसके प्रतिकूल चलने से औ लोक विरुद्ध आचरण से दुर्भगा होजा-तीहै औ पतिके अनुकूल चलनेसे सुभगा होतीहै इसलिये सब अवस्थामें मन वचन कर्म करके पतिके चित्तके अनु-कूल चलै जिस सपत्नको पति इच्छा करै उसको पतिसे मिलायदेवै पतिकीप्रिया जो मानवती होगईहोय तो उसको समझाय क्रोधशांतकर पतिके अनुकूल करदेवै पैरदबाना अंगोंकोमर्दनकरना शिरमलनाआदि भलीभांतिसीखै औ पतिकीसेवाकरै अंगोंकासंबाहन अर्थात् दबाना तीनप्रकार काहै मृदु मध्य औ गाढ़ भुजा ऊरुकटि पृष्ठ कंधे शिर औ पैरोंमें गाढ़मर्दनकरनाचाहिये अर्थात्इनको ज़ोरसेदबावे इनके बिना और अंगोंमें मध्यम औ नीचे अंगनाभि मर्म-स्थान हृदय गल कपोलआदिमें मृदुसंबाहन करै अर्थात् इनअंगोंको धीरे२दबावे जोपतिजागताहोय तो गाढ़मर्दन करै आधा सोयाहोय तो मध्य औ भलीभांति सोगयाहोय तो मृदुमर्दन करै अथवा न करै ऐसीयुक्तिसे अंग संबाहन करै कि पतिको आनन्दहोय रोमांचहोजाय औ दबाते २ निद्रा आजाय सोताहोय चाहे बैठाहोय जब पतिको एकांत में देखै तबउसकेअंगोंको मर्द्दनकरै औ जिसअंगके मर्दन करनेसे आंखमूंदै रोमांच होय कामका उद्दीपन होय उस अंग को विशेष करके दबावै औ ऊरुमूल को तथा जिस अंगपर पतिबार २ हाथरक्खै उसअंगको भलीभांतिधीरे२

संबाहन करै इसभांति जो दुर्भगास्त्री भी पतिका सेवनकरै वह पतिको अनुकूल करलेतीहै औ संसारके सुखभोगतीहै औ त्रिबर्ग पातीहै ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

तिथियों के व्रतकी बिधि, प्रतिपदा व्रतका माहात्म्य ॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजाशतानीक इसप्रकार स्त्रियोंके सम्पूर्णलक्षण औ सदाचार ऋषियों के प्रतिकह कर ब्रह्माजी हिमालयकोगये औ सबऋषिभी प्रसन्नहोते हुये अपने२आश्रमको जातेभये हेराजा यहस्त्रीलक्षण औ स्त्रीकाआचरणजान आगेजो कुछगृहस्थीको करनाचाहिये वहहमवर्णनकरतेहैं वैवाहिकअग्निमें गृह्यकर्मकरना चाहिये गृहस्थीकेघरपंचसूना अर्थात् जीवाहिंसाकेस्थानहैं वहां जीव मरनेसे गृहस्थ स्वर्गको नहींजाता उखली चक्की चूल्हा मार्जनी अर्थात् झाड़ू औ उदकुंभी अर्थात् जलका घड़ा इन पांचोस्थानोंमें जीवहिंसाहोतीहै उस हिंसादोषकी निवृत्ति केलिये पांचमहायज्ञ गृहस्थीको अवश्य करनेचाहिये ब्रह्मयज्ञ पितृयज्ञ देवयज्ञ भूतयज्ञ औ अतिथियज्ञ वेदपाठ को ब्रह्मयज्ञ कहतेहैं तर्पणकानाम पितृयज्ञहै होम देवयज्ञ कहाताहै भूतयज्ञ बलिवैश्व देवकीसंज्ञाहै औ अतिथियज्ञ अभ्यागतके सत्कारको कहतेहैं इनपांचयज्ञोंको जो नियम से करै वह घरमें बसकर भी पंचसूना दोषोंसे लिप्त नहीं होता औ जो समर्थ होकरभी न करै वह वृथाजीता है श्वास लेताहुआ भी मरेके समानहै इतनासुन राजाशतानीक ने पूछा कि महाराज जिसब्राह्मणके घरमें अग्निहोत्र नहीं वह मृतककेसमानहोताहै यहआपनेकहा ... वह

देवपूजा आदि क्योंकरकरै देवता पितर उससे संतुष्ट कैसे होयँ औ उसका उद्धार किसविधिहोय यह आपमेरा स-न्देह निवृत्तकरैं यह राजाका प्रश्नसुन सुमन्तुमुनिबोले कि हेराजा जिन ब्राह्मणोंके घरमें अग्निहोत्र न हो उनका उ-द्धार व्रत उपवास दान देवताकी स्तुति औ देवभक्ति आ-दिसे होताहै औ जिस देवताकी जो तिथि हो उसमें उप-वास करने से वह देवता विशेषकरके प्रसन्न होता है यह सुन राजा ने फिर पूछा कि महाराज तिथियों की विधि तिथियों के दिन जो अलग २ भोजन होयँ औ उपवास विधि यह सब आप वर्णनकरैं जिसके करने से संसार के जीव पापसे मुक्तहोजायँ यह राजाका वचनसुन सुमंतुमुनि ने कहा कि हे राजा तिथियोंकी विधि हम वर्णन करते हैं जिसके सुननेसेभी पाप कटजायँ प्रतिपदाके दिन क्षीरका भोजनकरै पुष्पोंका भोजन द्वितीयाको लवणरहित भोजन तृतीयाको तिलचतुर्थीको क्षीरपंचमीको फलषष्ठीको शाक सप्तमीको बिल्व अष्टमीकोपिष्ट नवमीको अग्निबिना सि-द्धकिया भोजन दशमीको घृत एकादशी को खीर द्वादशी को गोमूत्र त्रयोदशीको यवचतुर्दशीको कुशाकाजल पौर्ण-मासीको औ मूंग चावलआदि हविष्य भोजन अमावास्या को करै यहसब तिथियोंके भोजनकीविधिहै इसविधिसेजो एक पक्ष भोजनकरै वह दश अश्वमेध यज्ञोंके फलकोप्राप्त होय एक मन्वन्तर स्वर्गमें रहताहै औ गंधर्वोंसहित अ-प्सरा उसके आगे नाचती गातीहैं जो इस विधिसे चार महीने भोजन करै वह सौ अश्वमेध औ सौ राजसूय यज्ञ का फलपाय स्वर्गमेंजाय गंधर्व औ अप्सराओं करके से-

वित दोमन्वन्तर आनंदसेनिवासकरताहै आठमहीने पर्यंत जो इसबिधिसे भोजनकरै वहहज़ार यज्ञोंका फलपावै औ चौदह मन्वन्तर स्वर्गमें निवास करै जो एकबर्ष इस भोजनके नियमसे व्यतीतकरै वह सूर्यलोकमें कई मन्वन्तर सुखसे निवास करै ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ स्त्री पुरुष शूद्रआदि सब इन तिथिव्रतोंके अधिकारीहैं इन ब्रतोंका आरम्भ आश्विनकी नवमी माघकी सप्तमी बैशाखकीतृतीया कार्तिककी पूर्णिमासेकरै इनकाकरनेहारा सूर्यलोकको जाताहै जिनपुरुषोंने पूर्बजन्ममें ब्रतउपबास आदिकिये दानदिये अनेकप्रकारसे ब्राह्मणोंको संतुष्टकिया मातापिता औ गुरुकी शुश्रूषाकरी तीर्थयात्रा बिधिसेकरी वेपुरुष स्वर्ग में बहुतकाल रहकर जब भूमिपर जन्मलेते हैं तब उनके चिह्न प्रत्यक्षही देखपड़तेहैं हाथी घोड़े पालकी रथ सुवर्ण रत्न कंकण केयूर हार कुण्डल मुकुट उत्तम वस्त्र सुन्दर सुन्दर स्त्री अच्छे सेवक आदि उनको मिलतेहैं आधि व्याधि से रहित होकर बहुतआयुष् भोगतेहैं औ पुत्र पौत्रादिका सुखदेखतेहैं औ बंदीजनोंके स्तुति शब्दसे सोतेहुये उठतेहैं औ जितने ब्रत दानआदि सत्कर्म नहींकिये वे काणे अंधे लँगड़े कुबड़े गूंगे रोग औ दरिद्रसेपीड़ितहोतेहैं यहही पुण्य औ पापकी प्रत्यक्ष परीक्षाहै इतनीबिधि सुमंतुमुनि से सुन राजाने कहा कि महाराज आपने संक्षेपसे तिथियों का वर्णन किया अब यह वर्णन कीजिये कि कौनदेवताकी किस तिथिमें पूजाकरनी चाहिये औ ब्रत आदि किसबिधिसेकरने चाहिये कि जिनके कियेसे यज्ञोंकाफल प्राप्तहोय यह राजा का प्रश्न सुनि मुनि कहनेलगे कि हे राजा तिथियों का

रहस्य पूजाका बिधान फल नियम देवता अधिकारी हम कहतेहैं आप श्रवणकरैं यह सब आजतक हमने किसी से नहीं कहाहै पहिले संक्षेपसे हम सृष्टिका वर्णन करतेहैं प्रथम परमात्माने जल उत्पन्नकर उसमें अपना वीर्यडाला जिससे एक अण्ड बनगया उसअण्ड से ब्रह्मा उत्पन्नभये औ सृष्टिकरनेकी इच्छाकर अण्डके एककपालसे भूमि औ दूसरे से आकाशरचा औ दिशा उपदिशा देवता दानव आदि रचे औ जिसदिन यह सब कामकिया उसका नाम प्रतिपदारक्खा सब तिथियोंमें ब्रह्माजीने इसको प्रवर अर्थात् उत्तम बनाया सब तिथियों के प्रारम्भ में प्रतिपादन किया औ सब तिथियोंका पद इससे आगेभया इसलिये इसकानाम प्रतिपदारक्खा हे राजा अब इस तिथिके उपवास औ नियमोंका हम वर्णन करते हैं प्रतिपदा के दिन यथाशक्ति दुग्ध ब्राह्मणकोदेवै औ पीछे यहकहै कि ब्रह्माजी मेरेऊपर प्रसन्नहोयँ औ आपभी क्षीरही भोजन करै इस बिधि एकबर्ष ब्रतकर अन्तमें गायत्री सहित ब्रह्माजी का पूजनकर ब्रतसमाप्तकरै इसबिधि ब्रतकरनेसे सबपाप दूर होतेहैं औ सुन्दर अप्सराओं करकेयुक्त दिव्यरत्नों से जड़ाहुआ सुवर्णका विमान ब्रह्माजी उसकोदेतेहैं जिसमें बैठकर सबलोकोंमें जासक्ताहै इसभांति बहुतकाल स्वर्गआदि लोकोंमें निवासकर पृथिवीमें जन्मलेताहै तबभी दशजन्म तक वेदविद्याका पारगामी धनवान्दीर्घायुष् आरोग्यभोगी औ यज्ञकरनेहारा ब्राह्मणहोताहै विश्वामित्र मुनिने ब्राह्मण होनेकेलिये बहुकालतक घोरतपकिया परन्तु ब्राह्मण न बने तब नियमसे प्रतिपदा का ब्रतकरनेलगे इससे

ही प्रसन्नहो ब्रह्माजीने उनको ब्राह्मण बनादिया. क्षत्रिय वैश्य शूद्र आदि कोई इस तिथिका व्रतकरै वह सब पापों से मुक्तहो दूसरे जन्म में ब्राह्मण होताहै यह प्रतिपदा का रहस्य हमने वर्णनकियाहै हैहय तालजंघ तुरुष्क यवन शक आदि म्लेच्छजातिके मनुष्यभी इसव्रतसे ब्राह्मण होसक्ते हैं यहतिथि परमपुण्य औ कल्याणके देनेहारी है जो इसके माहात्म्यको भी पढ़ै अथवा सुनै वह ऋद्धि वृद्धि औ कीर्त्ति पाकर अन्तमें सद्गति पाताहै ॥

सोलहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीकेपूजन व मंदिरबनाने व दुग्धादिद्रव्योंसेस्नानकरानेकाफल॥

राजाशतानीक पूछतेहैं कि हेसुमंतुमुनि प्रतिपदाकाकल्प ब्रह्माजीके पूजनकाविधान औ पूजनकाफल आप बिस्तार से वर्णनकरैं यहसुन सुमंतुमुनि कहनेलगे कि हे राजा पूर्व कालमें जब सब स्थावर जंगम जगत् नष्टहुआ औ सर्वत्र जलही जलहोगया उससमय ब्रह्माजी उत्पन्नभये औ अनेकप्रकारके देवता भूत मनुष्य नदी पर्वत समुद्र आदि उनने सिरजे इससे येसबदेवताओंकेपिता औ औरजीवोंकेपितामहठहरे इसकारण इनकीसदा पूजाकरनीचाहियेयेहीजगत् को उत्पन्न करते हैं औ संहारकरनेहारेभी येही हैं रुद्रइनके मनसे उत्पन्नभये विष्णुवक्षस्स्थलसे औ अपने २ अंगोंसहित चारोवेद इनके चारोमुखोंसे निकलेहैं सब देवता दैत्य गन्धर्व यक्ष राक्षस नागआदि इनकी पूजाकरते हैं सम्पूर्ण जगत् ब्रह्ममय औ ब्रह्मामेंस्थितहै इसलिये ब्रह्माजी सबके पूज्य हैं जो ब्रह्माजीको भक्तिसे नहींपूजता वह राज्यस्वर्ग औ मोक्षकभी नहींपाता ये तीनोंपदार्थ इनके सेवनसेमि-

लते हैं इसकारण सदाप्रसन्नचित्तहो ब्रह्माजीकी पूजाकरनी चाहिये ब्रह्माजीका पूजन बिनकिये भोजन करनेसे प्राण त्यागदेना अथवा नरकमें गिरना अच्छाहै जो भक्तिसेसदा ब्रह्माजीका पूजनकरै वह मनुष्यरूपमें साक्षात्ब्रह्माहीहैब्र- ह्माजीके पूजनसे अधिककोई पुण्यनहीं यह समझ सदा ब्रह्माजीका अर्चनकरतारहै ऐसे पुरुषकेदर्शन औ स्पर्शसे इक्कीस कुलोंका उद्धारहोजाताहै ब्रह्माजीको पूजनेहारा म- नुष्य बहुतकाल ब्रह्मलोकमें निवासकर मर्त्यलोकमें जन्म लेवै तब चक्रवर्तीराजा अथवा वेदवेदांगका पारगामी कु- लीन ब्राह्मणहोय न तो बड़ेकठिनतपोंसे औ न यज्ञोंसेकुछ प्रयोजनहै केवलब्रह्माजीकी पूजासेही सबपदार्थ मिलसक्ते हैं मट्टी ईंट काष्ठ अथवापत्थरों से जो ब्रह्माजी का मन्दिर बनावै वह अपने इक्कीसकुलोंसाहित ब्रह्मलोकमेंनिवासकरै मृत्तिका करके मन्दिर बनानेसे कोटिगुणपुण्य काष्ठ औईंट सेमन्दिर बनानेकरकेहोताहै और इससेदूना पुण्यपाषाणों सेमन्दिर बनानेकरकेप्राप्तहोताहै जोक्रीड़ाकरकेभी ब्रह्माजी केनामसे एकशाला बनवादेवै वह ब्रह्मलोकमेंनिवासकरै औ उत्तम अप्सराओंकरकेयुक्त पुष्पमाला मोतियोंकेहार घंटा चामर दोला आदि से भूषित मधुर शब्द करनेहारी किं- किणियोंकी मालाओं से अलंकृत औ सबऋतुओंमें सुख देनेहारा विमान पाताहै औ उसमेंबैठ सब उत्तमलोकोंमें देवताओंके साथ बिहारकरताहै ब्रह्माजी के मन्दिरमें जो छोटे जीवोंको बचाकर धीरे२ झाड़ूदेवै वह चांद्रायणव्रत का फल पाताहै वस्त्रसे जलछान जो मन्दिरमें लेपन करै औ जीवों को बचावै वहभी चान्द्रायण के फलका

होताहै जो एकपक्षतक ब्रह्माजीके मन्दिरमें जीवरक्षापूर्वक झाडूलगाय उपलेपन करै वह सौकोटि युगसेभी अधिक ब्रह्मलोक में निवास करताहै औ उसके अन्त में भूमिपर आय सबगुणोंकरके युक्त धर्मात्मा राजा होताहै जो कपट सेभी ब्रह्माजीके मन्दिरमें मार्जन आदि करै वहभी ब्रह्मलोक पावै जबतक भक्तिसे ब्रह्माजी का पूजन न करै तब तकही संसारमें भटकताहै जैसा मनुष्यकाचित्त बिषयोंमें मग्नहोताहै ऐसा जो ब्रह्माजीमेंलगे तो कौन पुरुष मुक्ति न पावै जो ब्रह्माजी के मन्दिर का जीर्णोद्धार करै अर्थात् फूटेटूटे मन्दिरको सुधरावै वहभी ब्रह्मलोक में निवासकरै ब्रह्माजीके समान देवता गुरु ज्ञान औ तप कोईभी नहीं प्रतिपदा आदि सबतिथियोंमें भक्तिसे ब्रह्माजी का पूजन करै औ पूर्णमासीको विशेषकरके पूजाकर शंखभेरीआदि के शब्दों सहित आरती करै औ गीत नृत्यभीकरावै इस भांति जितने पर्व्वों में आरती करै उतने हजार युग ब्रह्मलोकमें निवासकरै औ आनन्द भोगै कपिला गोके पंचगव्य औ कुशाकेजलसे वेदमन्त्रोंकरके ब्रह्माजीको स्नान करावै इसकानाम ब्रह्मस्नानहै औ और स्नानोंसे सौगुणा पुण्य इसमें अधिकहै देवकार्य औ अग्निकार्यके लिये ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्य कपिला गोकोरक्खैं शूद्रकभीकपिला को अपने घरमें न लावै जो शूद्र कपिलाकादुग्ध पानकरै वह महाघोर रौरव नरकमेंगिरै ब्रह्माजीकी मूर्त्तिको सुगन्ध तैलसे अभ्यंगकरै तो करोड़ोंवर्षोंके कियेपापोंसे मुक्तहोय ब्रह्माजी को घृतसे स्नानकरावै तो अनेक जन्मों के पाप दग्धहोजायँ प्रतिपदा के दिन जो घृतसे स्नानकरावै वह

इक्कीसकुलकाउद्धारकरैसुवर्णवस्त्रआदिसे भूषितदशहजार सबत्सा गो वेदवेत्ता ब्राह्मणोंको देनेसे जो पुण्यहोताहै वही पुण्य ब्रह्माजीको दुग्धकरके स्नानकरानेसे प्राप्तहोताहै एक बारभी जो पुरुषचारसेर दूधसे ब्रह्माजीको स्नानकरा देवै वह सुवर्णके बिमानमें बिराजमानहो ब्रह्मलोकको सिधारै दहीसे स्नानकराय विष्णुलोकपावै शहतसे नहवाय वीर-लोककोजावै ईखकेरससे स्नानकराय सूर्य्यलोककी प्राप्ति होय फलोंकेरससे जो स्नानकरावै वह सब पापोंसेमुक्तहो ब्रह्मलोक में निवासकरै जो पुरुष बस्त्रसे छनेहुये जलकरके ब्रह्माजीको स्नानकरावै वह सदातृप्तरहै औ अन्तमें ब्रह्म लोकपावै सर्बौषधियों के जलसे स्नानकराय ब्रह्मलोक च-न्दनकेजलसे स्नानकराय रुद्रलोक औ गंगाजलसे स्नान कराय विष्णुलोकपावै कमलके पुष्प नीलकमल पाटला करबीर मालती बाण आदि पुष्पों से स्नानकरानेसे चन्द्र लोककी प्राप्तिहोतीहै कपूर औ अगरकेजलसे स्नानकरावै अथवा गायत्रीमंत्रसे सौबार जलको अभिमंत्रितकर उ-ससे स्नानकरावै तो ब्रह्मलोकपावै शीतलजलसे अथवा धारोष्णदुग्ध अर्थात् थनसे निकलते २ गरम २ कपिला के दूधसे स्नानकराय पीछेघृतसे स्नानकरावै तो सब पापों से मुक्तहोजाय येतीनों स्नानकराय भक्तिसे पूजाकरै तो ह-जारअश्वमेधका फलपावै मृत्तिकाकेघटसे स्नानकरावै तो एकगुणफल ताम्रकेघट से सौगुणा चांदीकेसे लाखगुणा औ सुवर्णके कलश से ब्रह्माजी को स्नानकरावै तो कोटि गुण फल पावै ब्रह्माजी के दर्शनसे उनका स्पर्शकरना उ-त्तम है स्पर्शन से अर्चन औ अर्चनसे भी घृतस्नान अ-

धिक फलदायकहै कायिकवाचिक मानसिकपाप घृतस्नान करने से कटजाते हैं इसविधि स्नानकराय भक्तिसे पूजन करै पवित्रवस्त्र पहिनआसनपरबैठ सम्पूर्णन्यासकरै पहिले चार हस्तके बिस्तारमें एकअष्टदललिखकर उसके मध्य में द्वादशदल यंत्रलिखै औ पांचरंगोंसे उसको भरै इस विधि यंत्रलिखकर गायत्री के बर्णोंकान्यासकरै मस्तक से चरणोंतकप्रणव कान्यास करततको मस्तकमें स-को मुख में बि-कोकंठमें तुः-अंगसंधियोंमें व-हृदयमें रे-दोनोंपार्श्वों में णि-दक्षिणकुक्षिमें यं-बामकुक्षि में भः-कटि औ नाभिमें गो-जानुओंमें दे-जंघाओं में व-चरणों में स्य-अंगुष्ठोंमें धी ऊरुओंमें म-जानुओंमें हि-गुह्यमें धि-हृदयमें यो २ ओष्ठों में नः-नासिका में प्र-नेत्रों में चो-भ्रूमध्य में द-प्राण मेंयां-मस्तकमें औ अन्तके त्-कोकेशोंमें न्यासकरै अपने देहमें ये न्यासकर देवताके शरीरमेंभीकरै केसरि अगर चंदन कपूर आदिकरकेयुक्त जलसे गायत्री मंत्रपढ़ सबपूजा द्रव्यों को मार्ज्जन करै प्रणव करके पीठस्थापन करै औ प्रणव करकेही तेजोरूप ब्रह्माजी का आवाहनकरै पद्ममेंबिराजमान चारमुखों करके युक्त सब जगत् के सिरजनेहारे श्री ब्रह्माजी का ध्यान कर पूजाकरै गायत्री मन्त्र करके पाद्य अर्घ आचमन स्नान गंध पुष्प धूप दीप भांति२ के नैवेद्य पकेहुयेफल ताम्बूलआचमन आदि उपचारोंसेभक्तिकरके ब्रह्माजी का पूजन करै पहिले मूल मंत्रकरके ब्रह्माजी की मूर्ति कल्पना करै प्रथम देहशुद्ध के लिये तीन प्राणायाम कर पीठ में अनन्त कालाग्नि रुद्र औ कूर्मरूप बिष्णुका ध्यानकर उसकेऊपर कमलमें बिराजमान ब्रह्माजीकोध्यावै

औ ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य औ धर्म इनकी पूजा दिशा बिदिशाओं में कर शिक्षाकल्प व्याकरण निरुक्तछंद ज्योतिष उपवेद इतिहास पुराणआदि का पूजनकरै शिक्षा औ व्याकरण का ब्रह्माजी के सम्मुख पूजनकरै औ बाक़ी चारोंओर पूजै प्रणवसहित महाव्याहृतियोंका पूर्वादि दिशाओंमें पूजनकरै ये व्याहृति ब्रह्माजी की शक्तिहैं इसलिये अवश्य पूजनीयहैं सात समुद्र नक्षत्र ग्रह ऋषि नाग गरुड़ देवता नदी कुल पर्वतआदि सबकी यथायोग्य पूजा करै पीछे शुद्ध जलसे आचमन देवै फिर शिखा नेत्र कवच औ अस्त्र इनचारोंका न्यासकरपूर्वआदि चारोंदिशाओंमें पूजनकरै इसबिधिभक्तिसे पूजनकर बिसर्जनमुद्रासे ब्रह्माजीकाबिसर्जनकरै औ आपोहिष्ठा इसऋक् से हृदय ऋतंचसत्यं इससेशिखा उदुत्यं इसकरके नेत्रचित्रन्देवानां इससे अस्त्र मर्माणितेवर्मणा इसकरके कवच औ गायत्रीमंत्रकरके शिरका न्यासकरै यह षडंगन्यास है गायत्रीमन्त्र मुख्यहै औ सबकर्म साधनेहाराहै इससे ब्रह्माजी का पूजन प्रणवयुक्त गायत्रीमन्त्र करके करै केवल प्रणव करके ऋग्वेद आदिका पूजनकरै आवाहन बिसर्जन आदि गायत्रीमन्त्रसेहीकरै इसप्रकार जो पुरुष प्रतिपदाके दिन भक्तिपूर्वक गायत्रीमन्त्रकरके ब्रह्माजी का पूजनकरै वह चिरकालपर्य्यन्त ब्रह्मलोक में निवासकरै ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीकीरथयात्रा का विधान, कार्त्तिकशुक्ल प्रतिपदाकी प्रशंसा ॥

सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हे राजाशतानीक कार्त्तिकमास में जो ब्रह्माजी की रथयात्राकरै वह ब्रह्मलोक को जाताहै

कार्त्तिककी पूर्णमासी को मृगचर्मके ऊपर सावित्री सहित ब्रह्माजी को विराज सब उपचारों से उनका पूजनकरै औ उनके अग्रभागमें शांडिली पुत्रकी पूजाकरै जो ब्रह्माजी का परमभक्त ब्राह्मण था ब्राह्मण भोजनकराय बड़े उत्सव से ब्रह्माजी को रथपर बैठावै औ रथ के आगे शांडिली पुत्र को स्थापनकरै उसरात को जागरणकरै नृत्य गीत आदि उत्सव भांति २ के तमाशे ब्रह्माजीके सम्मुख रातभरहोते रहैं इसबिधि जागरणकर प्रतिपदा के दिन ब्रह्माजीका पूजनकरै औ ब्राह्मणको भोजनकराय रथयात्राकरै चारोंवेदों के जाननेहारे उत्तम ब्राह्मण उसरथ को खैंचैं औ रथके आगे ब्राह्मण वेदपढ़ते चलैं शूद्र इसरथ को स्पर्शनकरै आगे शङ्खभेरी मृदंग आदि भांति २ के बाजेबाजतेचलैं इसप्रकार सारेनगरमें रथको घुमाय औ नगरकी प्रदक्षिणा कराय अपनेस्थानपर लेआवैं औ आरतीकर ब्रह्माजीको उनके मंदिरमें स्थापनकरैं इसप्रकार जो रथयात्राकरैं जो रथको खैंचैं जो दर्शनकरैं वे सब ब्रह्मलोक को जायँ दीप मालाको जो ब्रह्माजीके मन्दिरमें दीप प्रज्वलित करै वह ब्रह्मलोकपावै दूसरेदिन प्रतिपदाको ब्रह्माजीका सब उपचारोंसे पूजनकरै औ अपने को भी वस्त्रभूषण आदि से अलंकृतकरै यह तिथि ब्रह्माजी को बहुत प्रियहै औ इसी तिथिसे बलिके राज्यकी प्रवृत्तिभईहै जो इसदिन ब्रह्माजी का पूजनकर ब्राह्मण भोजन करावै वह विष्णुलोक पावै चैत्रमें कृष्णप्रतिपदाके दिनचांडालको स्पर्शकर स्नानकरै तो आधिव्याधियोंसे छूटजाय उसदिन गो भैंस आदिको भूषितकर तोरणके नीचे से निकालै औ ब्राह्मणोंको भोजन

करावै चैत्र आश्विन औ कार्त्तिक इनतीनों महीनोंकी प्रति-
पदा उत्तमहैं परन्तु कार्त्तिककी विशेषकरके प्रधान है उस
में कियाहुआ स्नान दान आदि सौगुण फलको देता है
औ राजाबलिको राज्य उसीदिनमिलाहै इसलिये कार्त्तिक
की प्रतिपदा बहुत उत्तम मानीजाती है ॥

अठारहवां अध्याय ॥

द्वितीयाकल्पारंभ, च्यवन मुनिकीकथा, पुष्पद्वितीया व्रतबिधि ॥

सुमंतुमुनि कहतेहैं कि हे राजाशतानीक द्वितीयाके दिन
च्यवन ऋषिने इन्द्रके देखते २ अश्विनीकुमारोंको यज्ञमें
सोमपानकरादिया यहसुन राजानेपूँछा कि महाराज इन्द्रके
देखते २ च्यवन मुनिने किसबिधि अश्विनीकुमारोंको सोम
पिलाया क्या च्यवनजी के तपकाप्रभाव ऐसाप्रबल है कि
इन्द्रभी कुछ न करसका तब सुमंतुमुनि कहनेलगे हे राजा
सत्ययुगकी पिछली संध्यामें च्यवनमुनि गंगातीर समाधि
लगाय बहुतकालसे तपकरतेथे एकसमय अपनीसेना औ
अंतःपुरको साथलेकर राजाशर्याति गंगास्नानकरने आया
औ च्यवनके आश्रममें उतरगंगास्नानकर देवता औपितरों
का तर्पणकिया इतनेमें सब सेना व्याकुलभई औ मूत्रबिष्ठा
सबके बन्दहोगये यह सेनाकी दशादेख राजाभी घबराया
औ प्रतिमनुष्यसे पूछनेलगा कि किसीने कुछ अपराध तो
नहीं कियाहै यह बड़े तपस्वी च्यवनमुनिका आश्रमहै इस
बिधिसब मनुष्यों से पूछा परन्तु किसीनेकुछ न बताया तब
राजाकीपुत्री सुकन्यानाम अपने पितासे बोली कि महाराज
एकआश्चर्य्यमैंने देखा वह आपसेवर्णनकरतीहूँ मैं अपनी
सहेलियोंको संगलिये वनबिहारकररही थी कि एकओरसे

यह शब्दहुआ कि हे सुकन्ये इधरआव इधरआव यह सुन- तेही मैं अपनी सखियों सहित उस शब्दकीओरगई वहां जाकर बहुत ऊँचा एक मट्टी का बल्मीक देखा औ उसके भीतरछिद्रोंमें दीपककीभांति जलतेहुयेदोपदार्थदेखे वे देख मुझे बड़ा आश्चर्य्यहुआ कि यह पद्मराग मणिसे क्या च- मकरहेहैं औ मैंने मूर्खता औ चंचलतासे कुशाके अग्रभाग करके दोनोंफोड़दिये तब वह तेज शान्त होगया यह सुन राजा अतिब्याकुलभया औ अपनी कन्याकोसाथले वहां गया जहां च्यवनऋषि तपकरतेथे औ उनको इतनाकाल वहां बैठे २ बीत गयाथा कि उनकेऊपर बल्मीक बनगया औ उनके सुकन्याने जो कुशासे फोड़डाले वे उनके अति प्रकाशमान नेत्रथे राजावहां जाय अतिदीनता से बिनती करनेलगा कि महाराज मेरीकन्यासे बड़ाअपराध बनपड़ा आप क्षमाकरें यह राजाकी प्रार्थना सुन मुनि बोले कि हे राजा अपराध तो हमने क्षमाकिया परन्तु अपनी कन्या हमसे बिवाहदे इसीमें तेराकल्याणहै यहमुनिका बचनसुन राजाने झटपट सुकन्याको च्यवनऋषिसे ब्याहदिया औ सब सेनाभी सुखीहोगई इसविधि मुनिको प्रसन्नकर सुख पूर्वक अपनेनगरमें आय राजकरनेलगा सुकन्याभी बि- वाहके अनन्तर भक्तिसेमुनिकी सेवाकरनेलगी वृक्षकीछाल औ मृगचर्म्मपहिनलिया राजकेबस्त्र भूषण उतारडालेइस भांति मुनिकीसेवा करते २ कुछकाल व्यतीतहुआ औ ब- सन्तऋतु आया सबबन फूलगया कोकिलबोलनेलगे भ्र- मरोंने कोलाहलमचाया मन्द २ सुगन्धपवन बहनेलगा ऐसेसमयमें एकदिन मुनिने अतिरूपवती अपनीपत्नी सु-

कन्यासे कहा कि हेप्रिये हमारेसमीपआओ इसउत्तम ऋतु में हमतुमभीबिहारकरैं औ दोनोंकुलोंको आनन्ददेनेहारा पुत्र तुम्हारे गर्भसे उत्पन्नहोय यहसुन सुकन्या ने कर जोर विनयसे विनतीकरी कि महाराज आपकीआज्ञा मैं किसी प्रकार नहीं भंगकरसकती परन्तु जैसीउत्तम शय्यापर मैं अपने पिताके घरमें सोतीथी वैसी शय्याहोय औ आप सुन्दर रूप औ यौवन करके युक्तहो उत्तमवस्त्र भूषण औ सुगन्धसेअपनेको अलंकृत करैं औ मैं भी सब शृंगारकरूं तब इस उत्तम ऋतुमें बिहारकरने का आनन्दहै यह सुन च्यवनमुनि उदासहो बोले कि हे प्रिये न तो मेरा उत्तम रूपहोय न तेरे पिताकासा धन मेरे पास कि जिससे सब भोग की सामग्री इकट्ठी करूं यह सुन सुकन्या बोली कि महाराज आपतपके प्रभाव से सब कुछकरने को समर्थहैं यह तो कितनी बड़ीबात है तबमुनिने कहा कि हेराजपुत्रि इसकामकेलिये मैं अपनातप ब्यर्थनहीं करूंगा इतना कह पहिलीभांति तपकरनेलगे औ सुकन्या भी उनकी सेवा में तत्परभई इसप्रकार बहुतकाल ब्यतीतहोनेके अनन्तर अश्विनीकुमार वहांआये औ दोनोंसुकन्याका अति रूपदेख बोले कि हेभद्रे तू कौनहै औ इसघोरबनमें इकल्ली क्योंकर रहतीहै यहसुनसुकन्याने कहा कि शर्याति राजाकी सुकन्या नाममैं पुत्री हूंमेरेपति च्यवनमुनि यहां तपकरते हैं उनकी सेवाके लिये मैं उनकेसमीपरहतीहूँ यहमेरावृत्तान्तहै अब तुमभीकहोकि दोनोंकौनहो तबअश्विनी कुमारोंने कहा कि हम देवताओंके वैद्य अश्विनीकुमारहैं औ इस वृद्धपतिसे तुझेक्यासुखमिलेगा हमदोनोंमेंसे एककोबरले तब सुकन्या

बोली कि हेदेवताओ आप ऐसामतकहो मैं पतिव्रताहूँ औ सब प्रकारसे अनुरक्तहोकर दिन रात अपनेपतिकी सेवा करतीहूँ यहसुन अश्विनीकुमारोंने कहा कि जो ऐसी बात है तो तू अपने पतिको बुलाला हम उसको उत्तमरूप बनादेंगे औ तीनोंगंगामें स्नानकर बाहरनिकलें तब जिस परतेरी इच्छाहोय उसको बरलेना यहसुन सुकन्याने कहा कि मैं अपने पतिसे पूछआती हूँ अश्विनीकुमारों ने कहा कि अच्छा पूछआ जबतक तू आवेगी तबतक हम यहांहीं ठहरतेहैं यहसुन सुकन्या अपने पतिके समीपगई औ सब वृत्तान्त कहा उननेभी स्वीकार किया औ सुकन्या अपने पति च्यवनमुनि को संगले अश्विनीकुमारोंके समीपआई च्यवनमुनि ने कहा कि हे अश्विनीकुमारो आपका बचन हमको स्वीकार है आप हमारा रूप उत्तम बनादेवें पीछे सुकन्या चाहै जिसको बरलेवे यह कहने के अनन्तर अश्विनी कुमार च्यवनमुनि को लेकर जल में प्रविष्टभये औ थोड़ेकालकेअनन्तर निकले तब सुकन्यानेदेखा कि येतीनों समानरूप समान अवस्थावाले समानबस्त्रभूषणोंसे अलंकृतहैं इनमें मेरेपतिका निश्चय क्योंकर होय इसचिन्तामें विचारकर अश्विनीकुमारोंकी प्रार्थनाकरनेलगी कि हे देवो अति कुरूपपति कामी मैंने त्याग नहीं किया अबतो उस कारूप आपकेसमान होगया फिरमैं क्योंकर त्यागकरूं इस से आपकेशरणहूं यहसुकन्याकी प्रार्थना सुनप्रसन्नहो अश्विनीकुमारोंने अपने देवचिह्न धारणकिये तब सुकन्या ने देखा कि दोपुरुषोंके नेत्रनिमेषनहींकरते औ उनकेचरण भी भूमिकोनहीं स्पर्शकरते केवल तीसरापुरुष भूमिपरखड़ा

है औ नेत्रोंसे निमेष कररहाहै यहचिह्नदेख सुकन्याने च्य-
वन मुनिको बरलिया तब उसके ऊपर आकाश से पुष्प
वृष्टिभई औ देवताओंने दुन्दुभि बजाये इसप्रकार उत्तम
रूपपाय च्यवनमुनि ने अश्विनीकुमारों से कहा कि तुमने
मेरेऊपर बड़ा उपकार किया कि यह उत्तमरूप दिया औ
पत्नीदी अब मैं तुम्हारेसाथ इसके बदले क्या प्रत्युपकार
करूं जो उपकार करनेहारेके संग प्रत्युपकार न करै वह इ-
क्कीस नरकों में क्रमसे जाता है इसकारण मैं तुम्हारे ऊपर
बड़ाभारी प्रत्युपकार कियाचाहताहूँ जो तुम्हारी इच्छाहोय
सो कहो उनने च्यवनमुनिको प्रसन्नदेख कहा कि हमको
यज्ञमेंभागदिलाइये यह बात च्यवनमुनिने अंगीकारकरी
औउनको बिदाकर अपने आश्रममेंआये यह सब वृत्तांत
सुन राजाशर्याति भी अपनी रानी सहित च्यवन ऋषिके
आश्रममें आये औ प्रणामकरी च्यवनमुनिने भी उनका
आदर सत्कार किया सुकन्या अपनी माताकेगले लगकर
मिली राजाभी अपने जामाताको उत्तमरूप करकेयुक्तदेख
बहुत प्रसन्नभया च्यवनमुनिने राजा से कहा कि यज्ञकी
सामग्री इकट्ठीकरो हम तुमको यज्ञकरावेंगे यह च्यवनमुनि
की आज्ञापाय अपनी राजधानीमें आय सब यज्ञकी सा-
मग्री इकट्ठी करी औ मंत्री पुरोहित आचार्य आदिको बु-
लाय यज्ञकी आज्ञादी च्यवनभी अपनी पत्नीसहित यज्ञमें
आये औरभी सबऋषि यज्ञमें निमंत्रण देकर बुलायेगये
यज्ञहोनेलगा ऋत्विक्‌हवनमें प्रवृत्तभये सबदेवता अपनार
भाग लेनेआये औ च्यवनमुनिके कहनेसे अश्विनीकुमार
भी आयपहुंचे उनके आनेका प्रयोजन जान इन्द्रने च्य-

वनमुनिसे कहा कि ये दोनों देवताओं के वैद्य हैं इसलिये यज्ञभागके अधिकारी नहीं आप इनका पक्ष न कीजिये तब च्यवनमुनिने कहा कि ये देवताहैं औ मेरेऊपर इनका बड़ा उपकारहै मेरेही बुलायेसे यहां आये हैं इसलिये मैं इनको अवश्य यज्ञमें भागदूंगा यह सुन क्रोधसे इन्द्रने कहा कि हे मुनि जो मेरा वचन न मानैगा तो बज्रसे तेरा मस्तक उड़ादूंगा यह इन्द्रका कठोर वचन सुनकर भी मुनिने क्रोध न किया औ अश्विनीकुमारोंको भाग देदिया तब तो इन्द्र ने अति कोपकर च्यवनमुनिके ऊपर बज्र उठाया च्यवनने अपने तपके प्रभावसे इन्द्रको स्तम्भन करदिया कि हाथ में बज्र उठाये खड़ेके खड़े रहगये च्यवनमुनिने भी अश्विनीकुमारोंको भागदे अपनी प्रतिज्ञा पूरीकर यज्ञ समाप्त किया इस अवसरमें ब्रह्माजीने आयकर च्यवनसे कहा कि इन्द्रका स्तम्भन खोलदो औ यही वचन इन्द्रने भी कहा औ यह भी कहा कि आपके तपकी ख्याति होने के लिये मैंने इनको भागदेनेमें निषेध किया आजसे सब यज्ञों में इनको भाग मिलाकरैगा औ इस आपके प्रभावको जो सुनैगा अथवा पढ़ैगा वहभी उत्तमरूप औ यौवन पावैगा यह सुन च्यवनमुनिने इन्द्रको बिसर्जनकिया आप अपनी स्त्री सहित आश्रमको आये वहां देखा कि बहुतउत्तममहल बन गये हैं जिनमें सुन्दर उपबन औ बापी बिहारके लिये बने हैं भांति २ की शय्या बिछी हैं रत्नों के जड़ाऊ भूषणों औ नानाप्रकारके उत्तम २ बस्त्रोंके ढेरलगे हैं सब भक्ष्य भोज्य रक्खे हैं यह सबदेख च्यवनमुनि बहुत प्रसन्नभये औ इन्द्र की प्रशंसाकरी इतनी कथा सुनाय सुमन्तुमुनि बोले कि हे

राजा इसप्रकार द्वितीयाके दिन अश्विनीकुमारों को यज्ञ भाग मिलाथा अब हम इसके व्रतकी विधि कहते हैं जो पुरुष उत्तमरूपकी इच्छाकरै वह कार्त्तिक शुक्ल द्वितीयासे व्रतका आरम्भकरै औ पुष्पभोजनकरै इस विधि प्रति द्वितीया को व्रतकरै औ जो उत्तम हविष्य पुष्प उस ऋतुमें होयँ उनका फलाहार करै इसभांति एकबर्ष व्रतकर चांदी सोनेके पुष्पबनाय ब्राह्मणोंको देवै औ व्रतसमाप्तकरै उसको अश्विनीकुमार उत्तम रूपदेते हैं और वह उत्तम बिमान में बैठ स्वर्ग में जाय अप्सराओं से बिहार करता है फिर मर्त्यलोकमें जन्मलेकर वेद वेदांग जाननेहारा दानी निरोग पुत्रपौत्रों करकेयुक्त औ उत्तम पत्नी करके सेवित ब्राह्मण होताहै अथवा मध्यदेशके उत्तम नगरमें राजाहोता है हे राजा यह पुष्प द्वितीयाका बिधान हमनेकहा ऐसीही फल द्वितीयाभी होतीहै जिसको अशून्य शयनाभी कहते हैं फल द्वितीयाको जो श्रद्धासे व्रतकरै वह ऋद्धि वृद्धिपाय अपनी भार्यासहित आनन्द भोगताहै ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

फल द्वितीयाका व्रत बिधान और कल्पकी समाप्ति ॥

राजाशतानीक कहते हैं कि हे सुमंतुमुनि अब आपकृपाकर फल द्वितीया का विधानकहैं जिसके करनेसे उत्तम फलहोय यहसुन सुमंतुमुनि कहनेलगे कि हेराजा हम फल द्वितीयाके व्रतका बिधान कहते हैं जिसव्रतके करनेसे स्त्री बिधवा नहींहोती औ स्त्रीपुरुषका कभी बियोगभी नहींहोता जब भगवान् लक्ष्मीजीके संग क्षीरसागरमें शयनकरैं तब यहव्रतहोताहै श्रावणकृष्ण द्वितीयाकेदिन लक्ष्मीसहितभ-

गवान्‌का पूजनकर हाथजोर येश्लोकपढ़ै (श्रीवत्सधारिन् श्रीकान्त श्रीवत्सश्रीपतेप्रभो। गार्हस्थ्यंमाप्रणश्येत मम धर्मार्थकामद १ गावश्चमाप्रणश्यन्तु माप्रणश्यन्तुमेजनाः। जामयोमाप्रणश्यन्तु मत्तोदाम्पत्यभेदतः २ लक्ष्म्यावियुज्यतेदेव नकदाचिद्यथाभवान्। तथाकलत्रसम्बन्धो देव मामेवियुज्यतु ३ लक्ष्म्यानशून्यंवरद यथातेशयनंसदा। शय्यामसाप्यशून्यास्तु तथातुमधुसूदन ४) इसप्रकार प्रार्थनाकर व्रतकरै औ जो फल भगवान्‌को प्रियहैं वे भगवान् के शयनमें चढ़ावै औ रात्रिके समय वेहीफल आपभी भोजनकरै दूसरेदिन ब्राह्मणों को भोजन कराय दक्षिणा देवै इतनासुन राजा शतानीक ने पूँछा कि महाराज कौन फल भगवान्‌को प्रियहैं सो आप कहैं औ दूसरेदिन ब्राह्मणको क्या दानदेवै यह आप वर्णनकरैं यह राजाका बचन सुन सुमंतुमुनिने कहा कि हेराजा जो फल उसऋतुमें मीठे औ पकेहोयँ वही भगवान्‌के अर्पणकरै कडुये कच्चे औ खट्टे फल न चढ़ावै ऐसेफलोंसे भगवान् प्रसन्न नहींहोते हैं औ दूसरेदिन ऐसेही फल बस्त्र औ अन्न सुवर्ण ब्राह्मणकोभी देवै इसप्रकार जो पुरुष चारमहीने व्रतकरै तीनजन्म पर्यन्त उसकाघर न बिगड़ै औ ऐश्वर्यभंग न होय औ जोस्त्रीइस व्रतकोकरै वह तीनजन्म बिधवा दुर्भगा औ पतिसे वियुक्त न होय परन्तु भगवान् को खजूर नारिकेल मातुलुंग अर्थात् बिजौराआदि फलचढ़ाये बिना यह व्रत सफलनहीं होताहै इसकारण फल अवश्यचढ़ाने चाहिये औ ब्राह्मण कोभी अपनीशक्तिकेअनुसार दानदेनाचाहिये औ इसव्रत के दिन अश्विनीकुमारोंकाभी पूजनकरै हेराजा यहद्वितीया

का कल्पहमने वर्णनकिया इसके सुननेसेलक्ष्मीमिलतीहै॥

बीसवां अध्याय॥

तृतीयाकल्पारम्भ, गौरी तृतीया व्रत विधान औ फल॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा जोस्त्री सबप्रकारकासुख चाहै वह तृतीयाका व्रतकरै औ लवण न खाय तो उसको गौरी भगवती रूप सौभाग्य औ लावण्य देतीहैं इसव्रत का बिधान गौरीने अपने मुखसे धर्मराज प्रतिकहाहै वही हम बर्णनकरते हैं गौरीदेवीने कहाहै कि जो स्त्री इस व्रत कोकरै वह सदा अपने पतिके साथ आनन्द भोगै जैसा शिवजीके साथ मैं भोगतीहूँ बिवाहके प्रथम कन्या यहव्रत करै सुवर्णकी गौरीकीमूर्त्ति स्थापनकरै औ भक्तिसेचित्तल-गाय पूजाकर भाँति२ की नैवेद्यलगावै औ रात्रिको लवण रहित भोजनकर स्थापनकीहुई मूर्त्तिकेआगे शयनकरै औ दूसरेदिन ब्राह्मणों को भोजनकराय दक्षिणादेवै इसप्रकार जो वृतकरै वह उत्तमपति पावै औ चिरकालतक भूमिपर उत्तमभोगभोगकर संतानको स्थापनकर पतिसहितसूर्य्य लोकको जाय वहां बहुतकाल सुखभोगकर ब्रह्मलोक को वहांसे सप्तऋषियोंके लोकको औ वहांसे शिवलोकमें प्राप्त होय बिधवा स्त्री इसबृतकोकरैतो वहभी अपनेपतिसे जाय मिलै औ बहुतकाल स्वर्गके सुख अपनेपतिकेसहित भोग करै औ पहिलेकहा हुआ सबफलपावै इन्द्राणीने यहबृत पुत्रके अर्थकिया तब जयन्त नाम पुत्रपाया अरुन्धती ने उत्तम स्थानके लियेकिया जिसकेप्रभावसे पतिसहित सब के ऊपर स्थानपाया औ आजतकआकाश में देखपड़तीहै रोहिणीने सबपत्नियोंके जीतनेके लिये यह बृतकिया औ

लवण न खाया तब सब सपत्नियों में प्रधान औ अपने पति चन्द्रमाकी अतिप्रिया भई इसप्रकार यह व्रत उत्तम फल देनेहाराहै बैशाख भाद्रपद औ माघकी तृतीया सब तृतीयाओं में उत्तम है जिसमें भाद्र औ माघकी तृतीया स्त्रियोंके लिये विशेषफल देनेहारीहैं औ बैशाखकीतृतीया सबकेलिये साधारणहै माघकी तृतीयाको गुड़ औ लवण का दानकरै गुड़के दानसे इन्द्र औ लवणके दानसे शची प्रसन्नहोती हैं गुड़के अपूप भाद्रकी तृतीयाको दानकरै औ पायस दानकरै तो शिव पार्वती प्रसन्नहोयँ औ बैशाखकी तृतीयाको मोदक औ शीतलजलकादानकरै तो सबदेवता प्रसन्नहोयँ बैशाखकी तृतीया अक्षयतृतीया कहातीहै इस दिन अन्न वस्त्र भोजन सुबर्ण जल आदि जो दानकरै वह अक्षय होजाताहै इसीसे इसतृतीयाकानाम अक्षयतृतीया है इसतृतीयाको शीतलजलसेभरेहुये पात्रका जो दानकरै वह सूर्य्यलोक को जाय हे राजा शतानीक इस तिथि को उपवासकरै तो ऋद्धि वृद्धि औ लक्ष्मी यह तृतीयाकाकल्प जो सुनै वहभी उत्तम फलका भागीहोताहै॥

इक्कीसवां अध्याय॥

चतुर्थी व्रत बिधि गणेशजी का वृत्तान्त,शिव ब्रह्मा बिबाद वर्णन॥

सुमन्तुमुनिकहतेहैं कि हे राजा चतुर्थीके दिनव्रतकरै औ गणेशका पूजनकर ब्राह्मणको तिलदेकर आपभी तिलही भोजनकरै इस प्रकार दोबर्षव्रतकरै तब बिघ्ननायक श्री गणेशजी प्रसन्नहोयँ मनोवांछितफल देतेहैं असाध्यकार्य भी इसव्रतके करने से सिद्ध होजातेहैं हाथी घोड़े धन पुत्र पौत्र उत्तम स्त्री विद्या यश औ बुद्धि गणेशजी प्रसन्नहो

कर देतेहैं औ सातजन्मतक वह पुरुष राजा होताहै औ पीछे बिघ्नराजके लोकको जाताहै यहसुन राजाने मुनिसे पूछा कि महाराज गणेशजीने किसको बिघ्नकिया जिससे उनकानाम विघ्नराज भया यह आप वर्णनकरें यहराजा का बचनसुन सुमन्तुमुनिकहनेलगे कि हे राजा स्वामकार्त्तिकेय स्त्री औ पुरुषोंकालक्षण बनातेथे उसमेंगणेशजीने बिघ्नकिया तब कार्त्तिकेय ने इनकाकिया बिघ्न समझ क्रोध कर गणेशजीका एकदांतउखाड़लिया औ गणेशजी कोही मारनेचले तब महादेवजीने कार्त्तिकेय को निवारणकिया औ पूछा कि तुमने इतना क्रोध क्यों किया तब कार्त्तिकेय बोले कि महाराज मैं स्त्री पुरुष लक्षणबनाताथा उसमें इसने बिघ्न किया इससे मुझे बहुत क्रोध आया यह सुन महादेवजी ने कार्त्तिकेयका कोपशान्त किया औ हँसकर पूछा कि हे पुत्र तुमपुरुष लक्षण जानतेहो तोकहो कि हम में क्या लक्षणहैं तब कार्त्तिकेय ने कहा कि महाराज आप मेंऐसा लक्षणहै कि थोड़ेहीदिनोंमें आपहाथमें कपालधारोगे औ जगत् में आपका नाम कपाली होजायगा यह पुत्रका बचनसुन महादेवजीने क्रोधकर उनकी पुरुषलक्षण की पुस्तक उठाकर समुद्रमें फेंकदिया औ आप अन्तर्द्धान भये कुछकालके अनन्तर ब्रह्माजी औ महादेवजी का बिवादभया ब्रह्माजी ने कहा कि हम बड़े औ महादेवजी ने कहा कि हम बड़े हैं हमारी उत्पत्ति कोई नहीं जानता औ तुम्हारा जन्म हम जानते हैं तब ब्रह्माजी का पांचवां मुख हँसकर बोला कि हे शिव तुम्हारी उत्पत्ति हम जानते हैं यह सुन शिवजी ने कोप किया औ अपने नख से

ब्रह्माके शिरको काट अपने हाथ में लेकर सुमेरु पर्वत में जहां विष्णु भगवान् तप करतेथे वहां चलेआये इस अवसरमें ब्रह्माजीने क्रोधकिया औ उनके कटेहुये शिरस्थान से श्वेतकुण्डलधारे कवच पहिने धनुष बाण हाथमें लिये अतिक्रूर एक पुरुष निकला औ करजोर ब्रह्माजीसे कहने लगा क्या आज्ञा है तब ब्रह्माजी ने कहा कि जिस दुर्बुद्धि ने मेरा मस्तक काटलिया उसको जाकर मारदे यहसुनतेही वह पुरुष उठधाया औ जहां विष्णु भगवान् तप करते थे वहां पहुँचा उसकोदेख भगवान्ने शिवजीसेकहा कि आप त्रिशूलसे हमारी भुजाको भेदनकरो तब शिवजीने विष्णु जीकी भुजा भेदनकरी उसमेंसे एक रुधिरकी धारनिकल कर आकाशको उछली पीछेशिवजीके हाथमें जो ब्रह्माके शिरका कपालथा उसमेंगिरी औ कपाल रुधिरसे भरगया उसरुधिरको शिवजीने अपनी तर्जनीअँगुलीसे मथा तब उससे कवच पहिने रक्तस्वर्ण के कुण्डलधारे धनुषबाण लिये एकपुरुष अति भयंकर निकला औ हाथजोड़ शिव जीसे बोला कि हे प्रभू क्या आज्ञा है तब महादेवजी ने आज्ञादी कि इसब्रह्माके भेजेहुये श्वेतकुण्डली को मारदे यह सुनतेही वह रक्तकुण्डली पुरुष श्वेतकुण्डलीसे लिपट गया औ दोनोंकायुद्ध होनेलगा जैसा प्रलयके समय मंगल औ केतुकाहोय बहुतकाल उनदोनोंका घोरयुद्धहुआ परन्तु जय किसीका न भया औ सम्पूर्णलोक व्याकुलभये तब आकाशबाणी भई कि युद्ध मतकरो औ विष्णु भगवान्ने दोनों को समझाय युद्ध से निवृत्त किया औ कहा कि भूमि का भार उतारने के लिये तुम दोनों सहित मेरा

अवतार होगा इतना कह भगवान् ने श्वेत कुण्डली सू-
र्य्यनारायण को दिया औ रक्त कुण्डली इन्द्र के हवाले
किया वे दोनों भी इन क्रोधसे उत्पन्नहुये पुरुषों को लेकर
अपनेअपने धामको गये औ शिवजी से भगवान्ने कहा
कि इसकपालको आपधारणकरें औ इसआपके कपाल-
ब्रतको जो धारणकरेंगे उनको कोईपदार्त्थ दुर्लभ न होगा
औ समुद्रको बुलाकर शिवजीने कहा कि स्त्री पुरुषलक्षण
तू बनाये यहसुन कार्त्तिकेयसे क्रोधकरकहा कि बिनायकका
दांत जो तैंने उखाड़ लियाहै वह देदे तेरे पुरुष लक्षणमें
बिघ्नहोनाथा सो होगया और जो तुझेलक्षण की अपेक्षा
होय तो समुद्रसे लेले परन्तु नाम समुद्रकाही रहैगा अ-
र्थात् यहलक्षण सामुद्रिक कहावैगा यह शिवजीका बचन
सुन कार्त्तिकेयने कहा कि आपकीआज्ञासे मैं गणपति को
दांत देताहूं परन्तु गणपति भी इस को सदा धारण करैं
जो इसदांतको कहीं फेंकदेंगे तो उसीक्षण भस्महोजायँगे
इतनाकह कार्त्तिकेय ने वहदांत गणेशजी को देदिया औ
गणेशजीनेभी वहधारणकिया औ आजतकधारेहीहैं इतनी
कथा सुनाय सुमन्तुमुनिबोले कि हे राजा यह देवताओंकी
गुप्तबात आपसे कहीहै इसको जो वेदवेत्ता ब्राह्मण क्षत्रिय
वैश्य औ उत्तम गुणोंकरकेयुक्त शूद्रकोसुनावै औ जो भक्ति
से सुनै उसको कोई पदार्त्थ दुर्लभनहीं औ किसी कार्य्यमें
बिघ्न न होय ऋद्धि सिद्धि औ लक्ष्मी मिलै॥

बाईसवां अध्याय॥

गणपतिके बिघ्नराज होनेका कारण व उपद्रुत पुरुषके लक्षण॥

राजाशतानीक पूछतेहैं हेसुमन्तुमुनि गणेशजीको बिघ्नों

राजा किसनेबनाया औ गणोंकेस्वामी क्योंकर कहाये यह आप वर्णनकरैं यहराजाका प्रश्नसुन सुमन्तुमुनिने कहा कि हे राजा बहुत उत्तमबात तुमनेपूछी हम बर्णनकरतेहैं प्रीति से श्रवणकरो पूर्वकालमें प्रजाओंके सबकाम निर्विघ्न सिद्ध होजातेथे इसलिये प्रजाको बहुत अहंकार बढ़ा तब ब्रह्मा जीके कहने से प्रजाके कार्यों में बिघ्नकरनेके लिये शिवजी ने गणेशजीको उत्पन्नकियातबसेगणेशजीके अनुग्रहबिना किसीका कार्य निर्विघ्न सिद्धनहीं होता इसीसे बिघ्नराज कहाये जिसपुरुष पर गणपतिका कोपहोय उस के लक्षण सुनो वह स्वप्नमें तैलमें स्नान करताहै नंगे मुंडे मूड़के पुरुषों को देखता है क्रव्याद अर्थात् मांस खानेहारे सिंह व्याघ्र आदि जीवोंपर चढ़ताहै चाण्डाल गधे ऊंट आदि के बीच बैठता है ऊंट पर चढ़ कषाय वस्त्रधारेहुये पुरुषों करके बेष्टित यमके समीप जाताहै औ करबीरके फूलोंकी माला गलेमें पहिनता है ये सबलक्षण स्वप्नमें देखता है औ जागताहुआ बिना कारण उदास रहताहै चलता फिरता यह देखताहै कि कोईमेरे पीछे चलाआताहै औ जिस कार्यका आरम्भकरै उसीमें बिघ्नहोजाताहै गणपति करके उससृष्ट राजाराज्यको नहींप्राप्तहोता कन्याको पतिनहींमिलता गर्भिणी स्त्रीके संतान नहींहोती आचार्य पढ़ानहींसक्ता विद्यार्थी पढ़नहींसक्ता वैश्यको व्यापारमें लाभ नहीं होता खेती करनेहारा खेतीमें कुछफल नहींपाता इन सबबिघ्नों के निवृत्त करनेके लिये शुक्लचतुर्थी बृहस्पतिबार अथवा पुष्य नक्षत्रके दिन गणेशजी का स्नानकरावै उसकी हम बिधि कहते हैं सिंहासन पर गणेशजीकी मूर्तिको स्थापन

कर सरसोंका उबटनालगाय सर्बौषधि औ सुगन्ध बस्तुओं का तैलमर्दनकर स्नानकरावे औ ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराय पूजाकरै पहिले शिव पार्बतीकी पूजाकर गणेशजी का पूजनकरै औ कार्त्तिकेय वृहस्पति बुध राहुकी भी पूजा करै औ चारकलश जलके मँगाय उनमें घोड़ोंके स्थानकी हाथियों के स्थानकी बल्मीककी नदियों के सङ्गमकी औ सरोवरकी मृत्तिका डाले तथा गूगल औ गोरोचन आदि द्रव्य औ सुगन्ध पदार्थ उस जलमें मिलाय गणेशजी के सिंहासनको लाल वृषभके चर्मकेऊपर बिराज इनमंत्रोंसे पूर्बोक्त जलकरके गणेशजी को स्नानकरावे । स्नानके मंत्र येहैं । सहस्राक्षंशतवारंऋषिभिःपावनैःकृतम् । तेनत्वामभिषिंचामिपावमान्यःपुनन्तुवह १ भगन्तेवरुणोराजाभगंसूर्यो बृहस्पतिः । भगम्मिंद्रश्चवायुश्चभगंसप्तर्षयोददुः २ यत्तेके शेषुदौर्भाग्यंसीमन्तेयच्चमूर्द्धनि । ललाटेकर्णयोरक्ष्णोरापस्त द्घ्नन्तुतेजसा ३ इन मंत्रोंसे स्नानकराय सरसोंके तेलका हवन करै हवनके लिये गूलरके काष्ठका स्रुवा बनावे मित संमित शाल कटंकट कूष्माण्ड औ राजपुत्र इन नामों के अन्तमें स्वाहालगाय हवनकरै औ शूर्प अर्थात् छाज में कुशाबिछाय उसमें कच्चे पक्के चावल मांस भात कच्चामांस कच्चेपक्के मत्स्य तीनप्रकार की सुरा भांति २ के पुष्प अतर आदि सुगन्ध द्रव्य लड्डू पूरी अपूप दही बरे खीर गुड़ के पक्कान्न औ अनेकप्रकारके फल मूल रखकर नमस्कारान्त नाम औ बलिमंत्रकरके चतुष्पथ अर्थात् चौराहेमेंबलिदेवे इसप्रकार बलिदेकर अंजलिमें पुष्प दूर्बा औ सर्षपलेकर गणेशजीकी माता पार्वतीजीकी प्रार्त्थनाकरै कि । रूपंदेहि

यशोदेहिभगंभवतिदेहिमे। पुत्रान्देहिधनन्देहिसर्वान्कामां श्चदेहिमे॥ इसमन्त्रसे भगवतीकी प्रार्थनाकर ब्राह्मणोंको भोजनकराय दोवस्त्र औकुछ दक्षिणा गुरुके समर्पणकरै इस विधि गणेशजी औ ग्रहोंकी पूजाकरै तो सब काम निर्विघ्न होयँ औ लक्ष्मीमिलै सूर्य गणेश औ कार्त्तिकेय की पूजा करनेसे सदा विघ्न निवृत्त होते हैं॥

तेईसवां अध्याय॥

पुरुषोंके लक्षण॥

राजा शतानीक पूँछते हैं कि हे सुमन्तुमुनि जो स्त्री पुरुषोंके लक्षण स्वामिकार्त्तिकने बनाये औ शिवजीने क्रोध कर समुद्रमें फेंकदिये वे लक्षण फिर कार्त्तिकेयको प्राप्तभये कि नहीं यह आप वर्णनकरैं यहसुन सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजा वे लक्षण जिसविधि कार्त्तिकेय को प्राप्तभये वह हम वर्णन करते हैं कार्त्तिकेयने जब अपनी शक्तिसे क्रौंच पर्वतको विदारण किया तब ब्रह्माजीने प्रसन्नहो कार्त्तिकेय सेकहा कि हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं बरमांगो उस समय कार्त्तिकेय ने कहा कि महाराज जो स्त्री पुरुष लक्षण मैंने बनायेथे वे मेरे पिताने क्रोधकर समुद्रमें फेंकदिये औ मुझे भीं स्मरण न रहे अब उनके श्रवणकरनेकी इच्छाहै आप अनुग्रहकरके कथन कीजिये यह कार्त्तिकेयका बचन सुन ब्रह्माजी बोले कि हे कार्त्तिकेय वे सब लक्षण समुद्रने जिस प्रकार कहे हैं वैसेही हम तुमको सुनाते हैं उत्तम मध्यम औ अधम ये तीनप्रकारके लक्षण समुद्रने कहेहैं अच्छे मुहूर्त्त में मध्याह्नके पूर्व पुरुषके लक्षण देखै प्रमाण संहति छाया गति सम्पूर्ण अङ्ग दांत केश नख औ श्मश्रु अर्थात् दाढ़ी

मोलके लक्षण देखै पहिले आयुष्की परीक्षा करके लक्षण देखै आयुष् थोड़ाहोय तो सब लक्षण वृथा हैं अपने अंगुलोंसे जो पुरुष एकसौ आठ अंगुलहोय वह उत्तमहोता है सौ अंगुल होय वह मध्यम औ नव्बे अंगुल ऊँचा पुरुष अधम गिनाजाताहै यह प्रमाणका लक्षण समुद्रनेकहा है अब पुरुषके अंगोंका लक्षण कहते हैं जिसके चरण कोमल रक्तवर्ण स्निग्ध ऊँचे पसीनेसे रहितहों औ नाड़ियों करके व्याप्तनहीं अर्थात् नाड़ी न देखपड़तीहों वह पुरुष राजा होता है जिसके पादतलमें अंकुश का चिह्नहोय वह सदा सुखीरहै कूर्मके समानऊँचे कमलसे कोमल औ रक्त अंगुली जिनकी परस्पर मिलीहुई सुन्दर पार्ष्णि अर्थात् एड़ीकरकेयुक्त औ निगूढ़ गुल्फ अर्थात् जिनकेटंकने गुप्त हों उष्ण अर्थात् सदा गर्मरहैं परन्तु प्रस्वेद न आवै औ लालवर्णके नखोंसे भूषित ऐसेचरण राजाहीके होतेहैं शूर्प के समान रूक्षश्वेत नखोंकरकेयुक्त टेढ़े रूखे नाड़ियोंकरके व्याप्त विरल अंगुलियोंवाले औ जिनमें पसीनाआवै ऐसे चरण दरिद्री औ दुःखी पुरुषोंकेहोते हैं जिसके चरणतल अर्थात् तलुवे पकीमृत्तिका के समान वर्णहोयँ वह पुरुष ब्रह्महत्या करै पीततलवाला अगम्या स्त्रीसे संगकरै कृष्ण वर्ण चरण तल होनेसे सदा पानमें आसक्तरहै औ जिसके चरणतल श्वेतवर्णहोयँ वह अभक्ष्य पदार्थ भोजनकरै जिनके पैरोंके अंगुष्ठ बहुत मोटेहोयँ वे भाग्यहीनहोते हैं विकृत अंगुष्ठवाला मार्ग्गमें चलतारहै चिपटे टूटेहुये अंगुष्ठ होयँ तो वह अति निन्दितहोयँ टेढ़े छोटे औ फटेहुये अंगुष्ठ जिसकेहोयँ वह क्लेशभोगै गोल न बड़े न छोटे रक्तवर्ण

नखोंसे भूषित औ कोमल अंगुष्ठहोयँ तो राज्यमिलै जिस पुरुषके पांवकी तर्जनी अंगुली अंगुष्ठ से बड़ीहो उस को सदा स्त्री भोगमिलै औ कनिष्ठा अंगुली दीर्घहोनेसे सुवर्ण की प्राप्तिहोय चपटीबिरल रूखी औ टेढ़ी जिसकी अंगुली होयँ वह धनहीन होय औ सदादुःख भोगै रूखे फटेहुये औ श्वेतनख होयँ तो दुःखमिलै बुरे नखहोयँ तो पुरुष शीलसे रहित औ कामभोगसे हीनहोय हरेनख होयँ तो वह पुरुष ब्रह्महत्या करै बन्धुओंसे बियोग होय औ अपने कुलकासंहारकरै इन्द्रगोप अर्थात् बीरबहोटी नामकीटके समानबर्ण जिसके अतिअरुणनखहोयँ वह अवश्य राजा होय रोमकरके युक्त जिनकी जंघाहोयँ वे भाग्यहीनहोते हैं अश्व के समान जिनकी जंघाहोयँ वे ऐश्वर्य्य पावैं औ बन्धन भोगैं मृगके समान जंघाहोयँ तो राजाहोय शृगाल औ काककी जंघाकेसमान जिनकीजंघाहोयँ वे भाग्यहीन औ दुःख भोगनेहारे होतेहैं दीर्घ अर्थात् लम्बी औ मोटी जंघावालेभी भाग्यहीनहोतेहैं औ सिंह तथा व्याघ्रकेसमान जिनकी जंघाहोयँ वे धनवान्होतेहैं एक २ रोमकूपमें एक२ रोमहोय तो राजाहोय दो२रोमहोयँ तोपण्डिततथाश्रोत्रिय होय औ तीन२रोमहोनेसे धनहीनऔ दुःखीहोय इसप्रकार रोम औ केश भले औ बुरेहोतेहैं जिसके जानु अर्थात् घुटने मांसरहितहोयँ वह बिदेशमेंमरै बिकट जानुहोयँ तो दरिद्री होय निम्नहोयँ तो स्त्रीजितहोय औ मांसकरके सहित जानुहोयँ तो राजाहोय हंस भास शुक वृष सिंह हाथी औ और जो उत्तमपक्षीहैं उनके समानगतिहोय तो राजा अथवा भाग्यवान्होय जलकेतरंगोंकेसमान औ काक उलूक

आदि दुष्टजीवों के समान अथवा श्वान उष्ट्र महिष गधा शूकर आदिके तुल्य जिनकी गतिहोय वे दुःख औ शोक करके युक्तहोतेहैं तथा भाग्यसे भी हीनहोते हैं यह समुद्र का बचन है इसमें संदेह नहीं ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

पुरुषों के लक्षण ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे कार्त्तिकेय जिसका लिंगदहिनी ओर झुकाहो उसके पुत्रहोयँ औ बाईंतरफ़ झुकेरहने से कन्याहोतीहैं स्थूल नाड़ियों से व्याप्त औ विषमलिंगहोय तो दरिद्रीहोय वर्त्तुल औ सीधाहोय तो पुत्रहोयँ निम्नपादोंपर बैठेहुये जिसका लिंग भूमिको स्पर्शकरै वह राजा होय औ स्त्रियोंके अतिप्रियहोय सिंह अथवा व्याघ्रकेसमान छोटालिंगहोय तो भोगीहोय औ अश्वके लिंगसमान लिङ्गहोय तौभी भोगीहोय जिसकामणि अर्थात् लिङ्ग के अग्रभागकी ग्रन्थि रक्तवर्ण स्निग्ध औ अतिकांतियुक्तहो वह राजाहोय पांडुर मलिन रूक्ष औ लम्बामणिहोय तो देशाटनकरै समऊंचा औ स्निग्धमणि जिनकेहोय वेधनका भोग करनेहारे औ स्त्रियोंके बल्लभहोते हैं मध्यमें नीचा मणिहोय तो कन्या बहुतहोयँ औ धनहीनभी होय दहिनी ओर एकधाराहोकर मूत्रगिरै तो राजाहोय औ स्निग्ध दो धारामूत्रकी गिरैं तो धनवान् औ भोगवान् होय जिसके बहुतसी रूक्षधारागिरैं औ शब्द भी होय वह अधमपुरुष होय जिसके वीर्य्यमें मक्षी का गन्धहोय वह धनवान् औ पुत्रवान् होय घृतका गन्धहोय तो धनी औ वेदवेत्ता होय मेषका गन्धहोय अथवा कमलका तो राजाहोय औ लाख

मद्य तथा क्षारकेसमान जिसके वीर्य्यमें गन्धहो वह धन-
हीन कन्या सन्तानवाला औ युद्धकरनेहारा हो जो पुरुष
शीघ्र मैथुनकरै वह दीर्घायुहोता है औ जो बहुत देरतक
मैथुनकरै उसका आयुष्थोड़ा होताहै जिसकेवीर्य्य थोड़ा
होय उसके कन्याहीहोयँ जिसका रक्त कमलके पुष्पके स-
मान बर्णहोय वह धनवान्होताहै कुछ लाल औ कुछ का-
ला रुधिरहोय वह मनुष्य अधम औ पापकर्म्म करनेहारा
होय कुछलाल औ कुछपीला रुधिरहोय वह मध्यम पुरुष
होताहै औ कभी सुखभोगै कभीदुःखमें पड़ै जिसकारुधिर
प्रवाल अर्थात् मूँगेके समान अतिरक्तबर्ण औ स्निग्धहोय
वह सप्तद्वीपों का राजाहोय चौड़ीमांससे पुष्ट औ स्निग्ध
वस्ति अर्थात् नाभिका अधोभागहोय तो अच्छाहोता है
औ निर्म्मांस बिकट तथा रूक्ष वस्ति अच्छी नहीं होती
जिसकी वस्ति जम्बुक श्वान ऊंट औ महिष के समान हो
वह पुरुष सदा दुःखभोगै जिसके एकवृषण अर्थात् अंड
होय वह जल में प्राणत्यागै छोटे बड़े वृषण होयँ तो स्त्री
लम्पटहोय दोनों समानहोयँ तो धनवान् होय ऊपर को
खिंचेहोयँ तो थोड़ा आयुष् भोगै औ नीचको लटकतेहुये
लम्बे वृषण होयँ तो वह पुरुष सौवर्ष जीवै जिसके स्फिक्
अर्थात् कटिके ऊपरके मांस पिण्ड स्थूल औ बिषम होयँ
वह धनहीन होय दोनों समानहोयँ तो धनीहोय व्याघ्र मं-
डक औ सिंहतुल्य स्फिक् होयँ तो राजा होताहै औ ऊंट
अथवा बानरके समान जिसके स्फिक्होयँ वह पुरुष धन
हीन औ दुःख भोगनेहारा होय मृग अथवा मोरके समान
जिसका उदर अर्थात् पेट होय वह पुरुष उत्तम होता है

व्याघ्र मेंडक औ सिंहके समान उदर होने से राजा होय मांससे पुष्ट सीधे औ गोल जिनके पार्श्व अर्थात् पसवाड़े होयँ वे राजा होतेहैं जिसकी पीठ व्याघ्रके समान होय वह सेनाकापति होताहै सिंहके समान लम्बीपीठवाला मनुष्य वन्धनमें गिरताहै अर्थात् क़ैद होता है औ जिनकी पीठ कछुवेके समानहो वे राजा होतेहैं जिनका हृदय चौड़ा मांस से पुष्ट औ रोमों करके युक्तहोय वे पुरुष उत्तम होते हैं सौ वर्षका आयुष् भोगते हैं औ धनवान् तथा भोगी होते हैं जिसके हाथकी अंगुली सूखी रूखी औ बिरल होयँ वह धनहीन औ नित्य दुःखी होताहै जिसके हाथमें मत्स्यरेखा होय उसके सब कार्य्य सिद्ध होयँ औ धनवान् तथा पुत्र-वान् होय जिसके हाथमें तखड़ी अथवा वेदीका चिह्नहोय उसको व्यापारमें लाभ होय जिसके हाथमें सोमकी बेल होय वह धनी होय औ यज्ञकरे पर्व्वत औ वृक्ष होयँ तो लक्ष्मी स्थिररहै औ वह पुरुष बहुत सेवकोंका स्वामीहोय बर्छी बाण तोमर खड्ग औ धनुषका चिह्न हाथमें होय तो युद्धमें जयपावै ध्वजा औ शंखका चिह्नहोय तो जहाज़ से व्यापारकरै औ धनवान्होय श्रीवत्स कमल बज्र चक्र रथ औ कलशका चिह्न जिसके हाथमेंहो वह राजाहोय दहिने हाथके अंगूठेमें जिसके यवका चिह्नहोय वह सबविद्याओं का जाननेहाराहोय जिसके हाथमें कनिष्ठाके नीचेसे तर्ज्ज-नी के मध्यतक रेखा चलीजाय बीचमें टूटैनहीं वह पुरुष सौवर्ष जीवै यह समुद्रने कहाहै ॥

पच्चीसवां अध्याय॥

पुरुषों के लक्षण॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे कार्त्तिकेय अब हम जो लक्षण शेषरहे हैं उनको कहतेहैं जिसकी कुक्षि अर्थात् पेटसमान होय वह भोगीहोताहै बिषम कुक्षिहोय तो अनेक माया औ छल करनेहारा होय निम्नकुक्षिहोय तो राजाहोय औ जिसका पेट सर्प्पके समान लम्बा होय वह दरिद्री औ बहुत भोजन करनेहारा होय बिस्तीर्ण गम्भीर औ गोल नाभि होय तो सुख भोगनेहारे औ धनधान्ययुक्त पुरुष होते हैं नीची औ छोटी नाभि होय तो भांति २ के क्लेश भोगै जो बलिके बीच नाभिहोय औ बिषम होय तो धनकी हानिकरै दक्षिणावर्त्त नाभि अच्छी होती है औ बामावर्त्त नाभि उत्तम नहीं होती कमलकी कर्णिकाके समान जिसकी नाभि होय वह राजा होय पेटमें एकबलि होय तो शस्त्रसे मारा जाय दो बलिहोयँ तो स्त्री भोगी होय तीनहोयँ तो राजा अथवा आचार्य्यहोय औ चारबलि होनेसे बहुत पुत्रहोयँ बिषमबलिहोयँ तो अगम्या स्त्रीसे संगकरै औ सीधीबलि होयँ तो भोगीहोय परन्तु परस्त्रीसे स्पर्श न करै समान ऊंचा कंपसे रहित औ पुष्ट हृदय राजाका होताहै औ कठोर रोम तथा नाड़ियों करके व्याप्त हृदय दरिद्रीका होता है दोनों कन्धे समानहोयँ तो धनवान्होय पुष्टहोयँ तो शूरबीर होय छोटेहोयँ तो धनहीन औ बड़ेछोटेहोयँ तो धनहीनहोय औ शस्त्रसे माराजाय जिसके जत्रु अर्थात् कन्धोंकी संधि बिषम होय वह दरिद्रीहोय समहोयँ तो सुख भोगै औ ऊंचे जत्रुहोयँ तो अनेकप्रकारके सुखभोगै जिसकी ग्रीवा चपटी

निमेषकरैं वे राजा औ जो पुरुष पांचमात्रा इतने काल में निमेष करते हैं वे चक्रवर्त्तीराजा दीर्घायुष् औ धर्मात्माहोते हैं अर्द्धचन्द्रकेतुल्य ललाटहोय तोराजाहोताहै बड़ाललाट होय तो धनवान्होताहै छोटेललाटसे धर्म्मात्माहोय ललाट के बीच जिस स्त्री अथवा पुरुषके पांच आड़ी रेखाहों वह सौबर्ष जीवै औ ऐश्वर्य्यभी पावै चाररेखाहोयँ तो अस्सी वर्ष तीनहोयँ तो सत्तरवर्ष दोहोयँ तो साठबर्ष एक रेखा होय तो चालीसवर्ष औ एकभीरेखा न होय तो पच्चीसवर्ष आयुष्पाताहै इन रेखाओंसे हीन मध्यम औ पूर्ण आयुकी परीक्षाकरै छोटीरेखाहोयँ तो अल्पायुष् औ लम्बी २ रेखा होयँ तो दीर्घायुष् पावै जिसके ललाट में त्रिशूल अथवा पट्टिशका चिह्नहोय वह बड़ाप्रतापी औ कीर्त्ति करके युक्त राजाहोय छत्रकेसमान शिरहोय तो राजाहोय लम्बा शिर होय तो दरिद्री बिषमहोय तो दुःखी समान तथा गोलशिर होय तो सुखी औ हाथीके शिरके सदृशशिरहोय तो राजा होताहै जिनकेकेश अथवा रोम मोटे रूखे कपिल औआगे से फटेहुयेहोयँ वे पुरुष अनेकप्रकारके दुःखभोगतेहैं औ बहुतगहरे औ कठोरकेशभी दुःखदेनेहारेहोतेहैं बिरलस्निग्ध कोमल भ्रमर अथवा अंजनके समान अति कृष्ण जिनके केशहोयँ वे अनेकप्रकारके सुखभोगतेहैं औ राजाहोते हैं॥

छब्बीसवां अध्याय॥

राजाके लक्षण॥

कार्त्तिकेयजी पूछते हैं कि हे ब्रह्माजी आप संक्षेपसे राजा के अंगोंके शुभलक्षण कथनकीजिये यह कार्त्तिकेयका वचन सुन ब्रह्माजीने कहा कि अब हम राजाके शुभ लक्षणोंका

बर्णनकरते हैं कि जो लक्षण साधारण पुरुषकेभी पड़जायँ
तोअवश्य राजाहोय जिसपुरुषके तीनगम्भीर तीनविस्तीर्ण
छः उन्नत अर्थात् ऊँचे चारह्रस्व अर्थात् छोटेसात रक्त
बर्ण पांच दीर्घ और पांचसूक्ष्म होयँ वह चक्रवर्त्ती राजा
होय औदीर्घआयुष्पावै नाभि स्वर औसत्व येतीनगम्भीर
होयँ वदनललाट औ छाती येतीनविस्तीर्णहोयँ बक्षस्स्थल
कक्ष नख नासिका मुख औ कृकाटिका अर्थात् घेंटू ये छः
ऊँचेहोयँ लिंग पीठ ग्रीवा औ जंघा ये ह्रस्वहोयँ नेत्रों के
प्रान्त हस्त पाद तालू ओष्ठ जिह्वा औ नख ये सात रक्त-
बर्णहोयँ हनु नेत्र भुजा नासिका औ दोनों स्तनों का अ-
न्तर ये दीर्घहोयँ दन्त केश अँगुलियोंके पर्व त्वचा औ नख
ये पांच जिसपुरुषके सूक्ष्महोयँ वह सप्तद्वीपवती पृथिवीका
राजाहोय राजाओंकी छींकइकहरीहोतीहै और सुन्दरशब्द
करके युक्तहोतीहै औ दोहरी तेहराछींक धनवानोंकीहोतीहै
जिसकेनेत्र कमलदलके तुल्यहोयँ औ अन्तमें रक्तबर्णहोयँ
वह भूमिकास्वामीहोय शहतके तुल्य पिंगलनेत्र होयँ तो
महात्मापुरुषहोय हरिणके तुल्य नेत्रहोयँ तो भीरु अर्थात्
डरनेवालाहोय गोल औ चक्रयुक्त नेत्र होयँ तो चोर औ
दुष्टहोय केकर अर्थात् भेंगे नेत्रहोयँ तो क्रूरहोय नीलक-
मल के तुल्य नेत्रहोयँ तो विद्वान्होय श्यामनेत्रहोयँ तो
सुभगहोय विशालनेत्रहोयँ तो भोगी औ स्थूलनेत्रहोनेसे
राजमंत्रीहोय औ दीननेत्रहोयँ तो दरिद्री पुरुषहोय नेत्रों
के ऊपर भ्रू ऊँचीहोयँ तो अल्पायुषहोय विषम अथवा
बहुत लंबी भ्रूहोयँ तो दरिद्रीहोय औ दूनोंभ्रू मिलजायँ तो
धनहीन औ पापीहोय मध्यभागमें नीचे भ्रूहोयँ तो परस्त्री

गामीहोय चन्द्रकलाके तुल्य वक्र औ विशाल जिनके भ्रू होयँ वे राजाहोयँ ऊँचा औ निर्मलललाटहोय तो उत्तम पुरुषहोय नीचाहोय तो पुत्र औ धनसेहीनहोय कहींऊँचा कहींनीचा ललाटहोय तो दरिद्री औ शुक्ति अर्थात् सीप के तुल्य ललाटहोय तो आचार्यहोय स्निग्ध हास्यकरके युक्त दीनता औ अश्रुपातसे रहितमुखहोय तो राजाहोता है औ दीनमुख अश्रुपातकरकेयुक्त रूक्षहोय तो अच्छानहीं उत्तम पुरुष का हास्य धीरेहोताहै औ बड़े शब्दसे अधम हँसतेहैं जो हँसतेसमय आंखमूँदे वह पापीहोताहै जिसका गोलशिरहोय वह बहुत गौओं का स्वामीहोता है चपटा शिरहोय तो माता पिताकोमारे घटकेसमान शिरहोय तो सदा मार्गमें चलै निम्न शिरहोय तो अनेक प्रकारके अनर्थकरनेवालाहोय हे कार्त्तिकेय यह पुरुषोंके शुभ औ अशुभ लक्षणहमने कहेहैं अब स्त्रियोंकेलक्षण कहतेहैं॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

स्त्रियों के लक्षण॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे कार्त्तिकेय अबहम आपको स्त्र लक्षण सुनातेहैं जिससे स्त्रियोंकाशुभ अशुभ जानाजार अच्छेमुहूर्त्तमें कन्याकेहस्त पाद अंगुली नख हाथकी रेख जंघा कटि नाभि ऊरु जघन उदर पीठ कुच भुजा कान जिह्व ओष्ठ दंत कपोल गल नेत्र नासिका ललाट शिर केश रोम रोमावली स्वर वर्ण औ आवर्त्त अर्थात् भौंरी इन सब के लक्षण देखै जिसकी ग्रीवामें रेखाहोयँ औ नेत्रों के अन्त कुछ लालहोय वह स्त्री जिसघरमें जाय उसकी प्रतिदिन वृद्धिहोती है जिसकेललाटमें त्रिशूल का चिह्नहो वह कई

हज़ाररनारियोंकी स्वामिनीहोय राजहंसकेसमान गति मृगकेसे नेत्र सुवर्ण के तुल्य शरीर का वर्ण औ सम सूक्ष्म औ श्वेतदन्त जिसकन्याके हों वह उत्तमहोती है मेडकके तुल्य जिसकी कुक्षि हो वह एकपुत्र उत्पन्न करती है परंतु वह पुत्र राजाहोता है हंसकेतुल्य स्वर मेघकेसमान वर्ण औ शहत से पिंगल नेत्र जिस कन्याके हों वह आठ पुत्र उत्पन्न करै औ धन धान्य करके युक्त होय लम्बेकान सुन्दर नाक औ धनुषके तुल्यटेढ़ी भ्रू जिसकीहोयँ वह कन्या अत्यन्त सुखभोगै तन्वी अर्थात् पतली श्यामवर्ण मीठे बचन बोलनेहारी शंख के तुल्य अतिश्वेत दांतोंवाली औ स्निग्ध अंगों करके युक्त जो कन्या होय वह अति ऐश्वर्य पावै जिसका जघन बिस्तीर्णहोय मध्यभाग वेदीके तुल्य अति कृशहोय औ विशाल नेत्रहों वह राजाकी रानीहोय जिसके बायें स्तनपर हाथमें कानके ऊपर अथवा गलेपर तिल अथवा मसाहोयँ उस स्त्रीके प्रथम पुत्र उत्पन्नहोय जिसके चरण रक्तवर्ण गूढ़गुल्फ अर्थात् जिनमें टकने बहुत ऊँचे न होयँ छोटी एड़ीकरके युक्त औ परस्पर मिली हुई सुन्दर अंगुलियों से शोभितहों वह कन्या सुख भोगै जिस के चरण रूखे ऊँचेनख औ टेढ़ी अंगुलियों करके युक्त हों उस कन्या को न बिवाहै जिसका कोई अङ्ग तो बहुत बड़ा औ कोई अति छोटाहो वह गर्दभी होतीहै औ कभी सुख नहीं पाती जिसके पैर की तर्जनी अंगुली अंगूठे से लम्बी हो वह व्यभिचारिणी होय जिस के पैरकी मध्यमा अंगुली भूमि को स्पर्श न करै वह पति के समीप न रहै औ व्यभिचार करै इसी भांति जिसकी अना।

भी न स्पर्श करै वह भी ब्यभिचारिणी होय नदी वृक्ष पर्व्वत अन्न औ पुरुष के तुल्य जिसका नाम हो वह भी अच्छी नहींहोती जिसके पीठपर औ नाभिके ऊपर आवर्त हो वह संतान उत्पन्न करै परंतु अल्पायुष् होय पीठ परही आवर्त्त होय तो पति को हननकरै कटिमें आवर्त्त होयतो व्यभिचारिणीहोय औ नाभिमें आवर्त्त होनेसे पतिव्रता होतीहै जिस स्त्री के हँसनेकेसमय कपोलोंमें गढ़ पड़जायँ वह व्यभिचारिणी होय जिसके बड़े २ चरणहों सब अङ्गोंमें रोमहोयँ औ छोटे औ मोटे हाथहों वह दासी होय जिसके पैरकांपैं मुख बिकृतहोय औ ऊपरके ओष्ठ पर रोम होयँ वह बहुत शीघ्र अपनेपतिको भक्षण करैजो स्त्री पवित्ररहै पतिव्रताहो औ देवता गुरु औ ब्राह्मणोंकी भक्त हो वह मानुषी होतीहै नित्य स्नान करै सुगन्ध लगावै मधुर बचन बोलै थोड़ा खाय औ थोड़ा सोवै सदा पवित्र रहै वह स्त्री देवताहै गुप्त पापकरै निन्दासेडरै औ चित्तका अभिप्राय किसीसे प्रकट न करै वह स्त्री मार्जारी कहातीहै कभी हँसै कभी क्रीडाकरै किसीसमय क्रोध करै औ कभी प्रसन्नहोय औ पुरुषोंमें रमै वह गर्दभी होतीहै पतिके तथा बन्धुओंके हितबचन नमानै औ अपनी इच्छानुसार बिहार करै वहस्त्री आसुरीहै जो नारी बहुतखाय बहुतसोवै अति क्रोधकरै नित्य खोटे वचन बोलै औ पतिको मारै उसको राक्षसी जानो शौच आचार औरूपसे हीनहो नित्य मैली कुचैलीरहै औ अति भयंकरहो वह पिशाचीहोतीहै नित्य स्नानकरै सुगन्धलगावै बगीचेआदिमें प्रसन्नरहै औ मांस मद्य पर बहुत प्रीतिरक्खै वह यक्षणी कहाती है जिसका

स्वभाव अतिचंचलहो नेत्र चपलहों इधरउधर बहुतदेखै औ लोभ युक्तहो वह नारी बानरी होतीहै चन्द्रके समान मुख मस्तहाथी के तुल्यगति रक्तबर्णके नख औ हस्त औ सम्पूर्ण अंग शुभ लक्षणों करके युक्तहों वह विद्याधरी है जिसकी बीणा मृदंग बंशीआदिका शब्दसुननेमें प्रीतिहो औ पुष्पोंमें तथा भांति२ के सुगन्ध द्रब्यमें अधिक रुचिहो उसको गन्धर्वीजानो इतनी कथा सुनाय सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजा ब्रह्माजी इसप्रकार स्त्रीपुरुषोंका लक्षण कार्त्तिकेय को सुनाय अपने लोकको गये ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

गणपति के आराधन का विधान,मंत्रके अनेक प्रयोग ॥

राजाशतानीककहतेहैं कि हे सुमन्तुमुनि आप गणेशजी के आराधनका बिधान बर्णनकरैं जिसके करनेसे गणपति प्रसन्नहों यह राजाका बचनसुन सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हे राजा गणेशके आराधन में तिथि बार नक्षत्र आदिकी कुछ अपेक्षानहीं औ उपवास आदि करनेकाभी कुछ प्रयोजननहींहै चाहै जिस अवस्थामें रहकर आराधनकरै गणपति अनुग्रह करतेहीहैं श्वेतअर्कका मूललेकर अंगुष्ठमात्र गणेशकी मूर्त्तिबनावै मूर्त्तिका यह लक्षणहोवै कि चारभुजाओंमें दन्त अक्ष माल परशु औ मोदक पचहों पद्मासन पर बैठी सब भूषण पहिने सर्पका यज्ञोपवीत धारे मस्तक पर चन्द्रकला चढ़ाये औ अति सुन्दरहोय इसप्रकार की मूर्त्तिबनाय केसर चन्दन वस्त्र भूषण रक्तबर्णके पुष्प सुगन्ध धूप दीप लड्डू आदि उत्तम नैवेद्य ताम्बूल आदि से उस मूर्त्तिकी पूजाकरके उसके सम्मुख बामन अथवा कुब्ज अ-

र्थात् कुबड़े ब्राह्मणको भोजनकराय उससे आशीर्वादलेवै जिससे सब सिद्धि होतीहै अब हम मन्त्र कहतेहैं (ओं गं स्वाहा यह मूलमन्त्रहै ओं गां हृदयायनमः ओं शिरसेस्वाहा ओं गूं शिखायैवषट् ओं गैं कवचायहूं ओं गौं नेत्रत्रयायवौषट् ओं गः अस्त्रायफट् ये छः षडंगन्यासके मंत्रहैं ओं आगच्छोल्कामुखायस्वाहा इस मंत्रसे आवाहनकरै ओं गं गंधोल्काय नमः इससे चन्दन चढ़ावै पुष्पोल्कायनमः इस करके पुष्प ओं धूपोल्कायनमः इससे धूप ओं दीपोल्कायनमः इस करके दीप गंमहोल्कायनमः इससे नैवेद्य औ बलि निवेदन करै फिर पूर्वमें दुर्जयायस्वाहा दक्षिणमें महागणपतये बीराय स्वाहा पश्चिममें सदामहोल्कायस्वाहा उत्तरमें कूष्मांडाय स्वाहा अग्निकोणमें एकदंत त्रिपुरांतकायस्वाहा नैर्ऋत्य में श्यामदन्त विकटघ्राणायस्वाहा बायव्यमें चलदंतलंबनासायस्वाहा ईशानमें पद्मदन्तगजाननायस्वाहा इनमंत्रों से पूजनकरै औ हवनकरै गणेशजीके आगे हुंफट् २ इस मंत्र करके हाथोंकी तालीबजावै औ नाचैगावै ओं गच्छोल्कायस्वाहा यह विसर्ज्जनका मंत्र है यह तो पूजनका बिधानहै अब प्रयोग कहते हैं तीन दिन काले तिलों करके मूलमन्त्रसे आठहजार आहुतिदेवै तो राजाबशहोय तिल औ यवके हवनसे सब मनुष्य बशहोयँ औ रूपवती कन्या के बश करनेको यह हवनकरै तो वह पीछे उठलगै लवण औ चावलके हवनसे अजित होजाय अर्थात् कोई उसको न जीतसके निम्बपत्र मिलाकर हवन करनेसे विद्वेषणहोय चन्द्रग्रहणके समय जलमें खड़ाहोकर आठहज़ार जपकरै तो युद्धमें जयपावै सूर्य्यकीओर मुखकरके आठहज़ारजपै

तो सूर्य्यनारायण प्रसन्नहोयँ शुक्लचतुर्थीको उपवास करके
सब उपचारोंसे गणेशजीका पूजनकरै औ तिल चावलका
हवनकर मूलमंत्रको अष्टगंधसे भूर्जपत्र पर लिख शिरमें
धारणकरै तो सर्वत्र जयपावै अपामार्गके काष्ठसे अग्नि
प्रज्वलितकर तीनदिन इक्कीस आहुतिदेवै तो शत्रुको मारै
वृक्षके नीचे बैठ कज्जल बनाय सातबार अभिमंत्रण कर
नेत्रमें लगाय जिसको देखै वह वश होजाय पुष्प फल अ-
थवामूल आठहजारबार अभिमंत्रणकर जिसको देवै वहबश
होय मूलमंत्रसे जो कामकरै वह सिद्ध होताहै इसके जपसे
सब ग्रह प्रसन्न रहते हैं नगरके द्वारपर जाय आठहजार
जपै औ द्वारको देखताजाय तो वहनगर ज्वरकरके पीड़ित
होजाय दक्षिणमुख होकरजपै तो शत्रुका उच्चाटनकरै जल
में खड़ाहो सातरात्रि जपै तो अकालमें भी वृष्टिहोय इस
मंत्रके जपसे आकर्षण स्तम्भन उच्चाटन आदि करसक्ताहै
हज़ारबार अभिमंत्रणकर गोरोचनको हाथमें बांधे तो सौ
योजन जाकर लौटआवै खदिर वृक्षका कील मंत्रित कर
जिस स्त्री पुरुषके नामसे गाड़ देवै वह उसी क्षण मृत्युबश
होय इसमंत्रका जपकरनेहारा अति तेजस्वी औ अपरा-
जित होताहै अंगुष्ठप्रमाण निम्बकाष्ठकी मूर्त्तिबनाय धूप
गंध आदिसे उसका पूजनकर शिरके ऊपरधारै तो सब म-
नुष्योंका प्रियहोय इसीभांति श्वेत आककी जड़की मूर्त्तिब-
नाय धारणकरै तो सबवर्ण बशहोजायँ श्वेत चन्दनकी अं-
गुष्ठप्रमाण मूर्त्तिबनाय शुक्लचतुर्थी अथवा अष्टमीके दिन
पूजनकर बलिदेवै औ आठहज़ार हवन कर उस मूर्त्तिको
शिरपरधारै तो राजाबशहोय इसीभांति रक्तचन्दनकी मूर्त्ति

बनाय घृतका हवनकर धारणकरै तो प्रजाबशहोय रक्तक-
रबीरके मूलकी मूर्त्तिबनाय रक्तचन्दन रक्तपुष्प आदिसे पू-
जनकर बलिदेवै औ तिल घृत औ लवणका हवनकरमूर्त्ति
को धारणकरै तो दशग्रामों को बशकरै इसीप्रकार मूर्त्ति
बनाय पूजनकर तिल दही दूध घृत औ हल्दी मिलाकर
हवनकरै तो वेश्या बशहोय तेंदूके काष्ठकरकेहवनकरै तो शत्रु
बश होय बिल्वमूलकी मूर्त्तिबनाय पहिली भांति पूजनादि
कर घी शहत औ शर्कराका हवनकरै तो राजाके मंत्रीबश
होयँ शिरमेंमूर्त्तिकोधार राजद्वारमेंजाय तो प्रतिष्ठापावैहाथी
के दांतसे उखाड़ीहुई मृत्तिकाकी अंगुष्ठ प्रमाण मूर्त्तिबनाय
कृष्ण चतुर्थीकेदिन एकान्त में नग्नहो पूजाकरै तो स्त्रियों
का अतिप्रियहोय बैलकेसींगसे खुदीहुई मृत्तिका से मूर्त्ति
बनाय पूजनकरै औ गुगुलकाधूपदेवै तो घोष अर्थात् जहां
बहुत से गोप औ गौ रहतेहों उनके स्वामीको वशकरै ब-
ल्मीक की मृत्तिका से मूर्त्तिबनाय कटुतैल से उसको लिप्त
करै औ धतूरे के काष्ठसे अग्नि जलाय उसमें सातहज़ार
हवनकरै तो जिसकन्यासे चाहै उसीसे बिवाहहोय (ओं
नमोगणपतये बक्रतुण्डाय गुलगुलेतिनिनादकराय चतुर्भु
जाय त्रिनेत्राय मुशलवज्रहस्ताय सर्वलोकवशङ्कराय सर्व
दुष्टोपघातजननाय सर्वशत्रुविमर्दनाय सर्वराजसंमोहनाय
हन २ पच २ वज्रांकुशेनफट्स्वाहा) ओंहस्तिपाणिनेगः
स्वाहा) यहभी गणपतिकामन्त्रहै इसके अंगन्यासध्यान
औ पूजा विधान पहिले मन्त्रकेही तुल्य हैं (ओंमहाकर्णाय
विद्महेवक्रतुण्डायधीमहितन्नोदन्तीप्रचोदयात्) यह गणेश
गायत्री है इससे पूजनकरै पद्मदन्तमाला प्रहर्षिणी परशु

पाश अंकुश औ पटह ये आठमुद्रा पहले दिखाय सर्वकर्म करै जो शिवजीके पूजनका मण्डल पीठ औ बिधानहै वही गणपति पूजनकाभी है केवल मन्त्रों में भेदहै इस बिधिसे जो पुरुष पार्वतीकेपुत्र श्रीगणेशजी का पूजनकरै उसके सब विघ्न औ अरिष्ट निवृत्तहोजाते हैं चतुर्थीको उपवासकर जो गणेशजीका पूजनकरै उसके सब कार्य सिद्धहोतेहैं गणेशजी अनुकूलहोयँ तो सब जगत् अनुकूल होजाय जिस पुरुषपर गणपति सन्तुष्टहोयँ उससे देवता पितर मनुष्य आदि सब तुष्टहोतेहैं इसकारण श्रद्धासे गणेशजीका आराधनकरै केसर चन्दन चमेली धतूरे कमल आदिके पुष्प अनेक भांतिके मोदक आदि नैवेद्य तांबूल आदि अनेक उपचारों से सम्पूर्ण विघ्न निवृत्तहोनेके लिये श्रीगणेशजी का भक्तिसे पूजनकरै औ मनबांछितफलपावै॥

उनतीसवां अध्याय॥

तीनप्रकारकी चतुर्थीकाफल औ व्रतका विधान चतुर्थीकल्प समाप्ति॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा तीनप्रकार की चतुर्थी हैं शिवा शान्ता औ सुखा इनके हम लक्षण कहते हैं भाद्र महीने की शुक्लचतुर्थीका नाम शिवाहै उसदिन जो स्नान दान उपवास जप आदि सत्कर्म्मकरै वह गणपतिके प्रसाद से सौगुणाहोजाता है उसचतुर्थी को गुड़ लवण औ घृत का दानकरै औ गुड़केअपूपों से ब्राह्मणोंको भोजन करावै उसदिन जो स्त्री अपने सास औ श्वशुरको गुड़केपुये खिलावै वह गणपतिके अनुग्रहसे सौभाग्यपावै प[illegible] नावाली कन्या विशेषकरके इसचतुर्थीका व्रतकरै औ [illegible] जीकी पूजाकरै हे राजा यह शिवचतुर्थीका विधान[illegible]

की शुक्लचतुर्थी को शान्ता कहते हैं इसदिन कियेहुये स्नान दान आदि कर्म्म हजारगुणे होजाते हैं इसचतुर्थीको उपवासकर गणेशजी का पूजनकरै औ लवण गुड़ शाक औ गुड़के अपूप ब्राह्मणकोदेवै औ स्त्रीभी अपने श्वशुर आदि पूज्योंको भोजनकरावै इसव्रतके करनेसे सब विघ्नदूरहोते हैं औ गणेशजी का अनुग्रह होता है सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा अब हम सौभाग्यदेनेहारी सुखाचतुर्थी का विधान कहते हैं यह व्रत स्त्रियोंका रूप उत्तम हाव भाव औ सौभाग्यदेनेहाराहै जो भौमबार करकेयुक्त शुक्लचतुर्थी हो वही सुखा चतुर्थी कहातीहै पूर्वकालमें शिव पार्वतीकेमैथुन के समय रुधिरका बिन्दुगिरा उसको भूमिने अपने मुखमें धारणकिया उसीसे भौम ग्रह उत्पन्नभया भूमिपुत्र होनेसे भौम कहाया औ अंगोंकादेनेहाराहै अंगोंकाकरनेहाराहै औ सौभाग्यदेताहै इससे इसको अंगारक कहतेहैं भौमवारयुक्त शुक्लचतुर्थीको उपवासकरै औ भक्तिसे गणेशजीका पूजन कर रक्तचन्दन रक्तपुष्प आदि करके भौमका पूजनकरै उस पुरुष अथवा स्त्रीको सब सम्पत्तिरूप औ सौभाग्य मिलता है पहिले संकल्पकरके स्नानकरै फिर हाथमें शुद्ध मृत्तिका लेकर यहमंत्रपढ़ै (इहत्वम्बंदितापूर्वं कृष्णेनोद्धारिताकिल। तस्मान्मेदहपाप्मानं यन्मयापूर्वसंचितम) फिर मृत्तिकाको सूर्य्यके सन्मुखकर अपने शिर आदि सब अंगोंमें लगाय स्नानकरै औ जलके बीच खड़ाहोय मंत्रपढ़ै (त्वमापोयोनि सर्वेषां देवदानवरक्षिसाम्। स्वेदाण्डजोद्भिदानांच रसानां पतयेनमः) औ यह ध्यानकरै कि सबतीर्थों में नदियों में सरोवरों में झरनों में औ तड़ागों में मैंने स्नान किया यह

ध्यान करताहुआ गोते लगाकर स्नानकरै फिर घरमें आकर मंत्रपढ़ दूर्बा पीपलका वृक्ष शमीवृक्ष औ गऊका स्पर्श करै इनके स्पर्शके मंत्र ये हैं (त्वन्दूर्वेऽमृतनामासिसर्वदेवैस्तुबन्दिता । बन्दिताहरतत्सर्वं यन्मयादुरितंकृतं) यहदूर्बाका मंत्रहै (पवित्राणांपवित्रात्वं काश्यपिप्रथिताश्रुतौ । शमीशमयमेपापं यन्मयाचिरसंचितम्) यह शमीका मंत्र है (नेत्रस्पदंभुजस्पदं दुःस्वप्नन्दुर्विचिन्तनम् । शत्रूणांचसमुद्योगमश्वत्थशमयस्वमे) यह पीपलके वृक्षको स्पर्श करने का मंत्रहै (सर्वदेवमयीदेवी मुनिभिस्तुसुपूजिता । तस्मात्स्पृशामिवन्देत्वां बन्दितापापहाभव) पहिले गौकी प्रदक्षिणा करै इस मंत्रको पढ़ स्पर्शकरै जो गौकी प्रदक्षिणाकरै उसको सम्पूर्ण पृथ्वीकी प्रदक्षिणाका फलहोताहै इसप्रकार इनको स्पर्शकर हाथ पैर धोय आसनपर बैठ आचमनकर खदिरके समिधाओंसे अग्नि प्रज्वलित कर घृत दुग्ध यव तिल औ भांति २के भक्ष्यपदार्थोंसे इनमंत्रों करके हवनकरै (ओंशर्वायस्वाहाओंशर्वपुत्रायस्वाहा ओंक्षोण्युत्संगभवाय स्वाहा ओंकुजायस्वाहा ओंललितांगायस्वाहा ओंग्रहेशाय स्वाहा ओंअंगारकायस्वाहा) इन प्रत्येक मंत्रों से एकसौ आठ२ आहुति देवै अथवा अपनी शक्तिके अनुसार देवै फिर सुबर्ण चांदी चन्दन अथवा देवदारुके काष्ठकी मूर्त्ति बनाय सुवर्ण अथवा चांदीके पात्रमें स्थापनकर रक्तचन्दन पुष्प नैवेद्य आदिसे पूजाकरै अथवा ताम्र मृत्तिका अथवा कांसके पात्रमें मूर्त्ति लिखकर पूजनकरै अग्निमूर्द्धा इत्यादि वैद्यक मन्त्रसे सब उपचार समर्पणकरै पीछे वह ब्राह्मणको देवै औ घी दूध चावल गेहूं गुड़ आदि

ब्राह्मणको देवै इसमें वित्तशाठ्य अर्थात् खर्चका संकोच न करै वित्तशाठ्य करनेसे फल नहीं होता इसप्रकार चार भौम युक्त चतुर्थी व्रतकरै फिर दशतोले सुवर्णकी अथवा पांच तोलेकी मंगल औ गणपतिकी मूर्त्तिबनाय बीसपल अथवा दशपलके सौने चांदी ताम्र आदिके पात्रसे स्थापनकरै औ इसीप्रकार शिव पार्व्वतीकी मूर्त्तिबनाय पात्रमें स्थापनकरै औ उत्तमवस्त्र उढ़ावै औ सब उपचारों से पूजन करके दक्षिणा सहित सत्पात्र ब्राह्मणको देवै तब व्रत का सम्पूर्ण फलहोय हे राजा यह उत्तम तिथि हमने कही इस दिन जो व्रतकरै वह चन्द्रके तुल्य कांति रविकासातेज औ बायुके समान बलपावै औ अन्तमें गणपतिके अनुग्रहसे शिवलोकमें निवासकरै इस तिथिके माहात्म्यकोभी जो पुरुष भक्तिसे पढ़ैं अथवा सुनैं वेभी ब्रह्महत्या आदि पापोंसे छुट उत्तम लोकपावैं औ व्रतकरनेहारे स्त्री पुरुषोंको जो फल होताहै उसका तो कहांतक वर्णन करैं॥

तीसवां अध्याय॥

पंचमी कल्पका प्रारम्भ,नागोंको मातासे शापहोने की कथा नागपंचमीका विधान औ व्रतका फल॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हेराजा शतानीक अब हम पंचमी का कल्पकहते हैं पंचमीतिथि नागोंको आनंद देनेहारी है इस दिन नागोंके लोकमें बड़ा उत्सवहोताहै पंचमीको जो पुरुष दुग्धकरके नागोंको स्नान करावै उसके कुलमें बासुकि तक्षक कालिय मणिभद्र ऐरावत धृतराष्ट्रकर्कोटक औ धनंजय बड़े २ नाग अभयदेतेहैं अर्थात् उनके कुलमें सर्पका भयनहींहोता माताके शापसे नाग दग्ध होनेलगतेथे इस-

लिये अबभी वह दाहकीव्यथा दूरहोनेके अर्थ गौके दूधसे नागोंको स्नान करातेहैं यहसुन राजाने पूछा कि महाराज माताने नागोंको क्यों शाप दिया और फिर क्योंकर बचे यह आप वर्णन करैं यह राजाका प्रश्नसुन सुमन्तु कहने लगे कि हे राजा देवताओं ने समुद्र मथन किया उस से अतिश्वेतवर्ण उच्चैःश्रवा नाम घोड़ा निकला उसको देख नागोंकीमाता कद्रूने अपनी सपत्नी विनतासे कहा कि यह घोड़ा श्वेतवर्णहै परन्तु इसके बाल काले देखपड़तेहैं तब विनता बोली कि यह अश्व सर्व श्वेतहै न तो कालाहै न लाल यह सुन कद्रूने कहा कि मेरे साथ प्रणकर कि जोमैं कृष्णवर्ण के बाल इस अश्वके दिखादूं तो मेरी तू दासी होजा यदि न दिखासकूँ तो मैं तेरीदासीहूँ विनतानेभी यह प्रण अंगीकार किया औ दोनों अपने २ स्थानको गईं कद्रू ने अपने पुत्र नागों से बुलाकर सब वृत्तान्त सुनाया औ कहा कि हे पुत्रो तुम बालकेतुल्य सूक्ष्म बनकर उच्चैःश्रवा के शरीरमें चिपटजाओ जिससे वह कृष्णवर्ण देखपड़े तब मैं अपनी सपत्नी विनताको जीत दासी बनाऊँ यह माता का वचनसुन नागों ने कहा कि हे माता यह छल तो हम नहींकरते चाहे तू जीत चाहे हार यह अति अधर्म्महै कि छलसे जीतना यह पुत्रोंका वचनसुन कद्रू कोपकर बोली कि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानते इसलिये मैं तुमको शाप देतीहूँ कि पाण्डवोंके बंशमें उत्पन्न राजा जनमेजय सर्प-सत्रकरेगा उसयज्ञमें तुम अग्निमें दग्ध होजाओगे इतना कह कद्रू चुपहोरही नागभी माताका शापपाय बहुत घब-राये औ वासुकिको साथले सब ब्रह्माजी के समीप आये

औ अपना वृत्तान्त ब्रह्माजीसे कहा तब ब्रह्माजीबोले कि हे बासुकि चिन्तामतकरो या याबरबंशमें बड़ातपस्वी जरत्कारुनामक ब्राह्मण उत्पन्नहोगा उसको तुम यहजरत्कारु नाम अपनी बहिन बिवाहदेना औ उसका वचन मानना उसके आस्तीक नामक पुत्र उत्पन्नहोगा वह जनमेजय के सर्पयज्ञको रोकेगा औ तुम्हारी रक्षाकरेगा यह ब्रह्माजीका वचनसुन सब बासुकि आदि नाग अति प्रसन्नहो ब्रह्माजीको प्रणामकर अपने धामको आये इतनी कथासुनाय सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजा वह यज्ञ तेरेपिता राजा जनमेजय ने किया यह बात श्रीकृष्ण भगवान् नेभी युधिष्ठिर से कहदीथी कि हे राजा आजसे सौबर्षके अनन्तर सर्पयज्ञ होगा जिसमें बड़े बिषधर औ दुष्ट नागक्षय को प्राप्तहोंगे जब करोड़ों नाग अग्निमें दग्धहोनेलगेंगे तब आस्तीक नाम ब्राह्मण नागोंकी रक्षाकरेगा ब्रह्माजीने पंचमीकेदिन नागोंको बरदिया औ आस्तीकने पंचमी कोही नागों की रक्षाकरी इसलिये पंचमी नागोंको अति प्रियभई पंचमी के दिन नागों की पूजाकर यह प्रार्थना करै कि जो नाग पृथ्वीमें आकाश में स्वर्गमें सूर्य्यकी किरणों में नदियों में सरोवरों में औ बापी कूप तालाब आदिमें रहतेहैं वे सब हमारेऊपरप्रसन्नहों उनको हम बारम्बार नमस्कारकरतेहैं इसप्रकार नागोंको बिसर्जनकर ब्राह्मणोंको भोजन कराय आपअपने कुटुम्बके साथ भोजनकरै पहिले मीठा भोजन करै पीछे जिसपर रुचिहोय सो खाय इसप्रकारजो नियम से नागों का पूजन करै वह नागलोक में जाय उत्तम बिमानमें बैठ अप्सराओं के साथ बिहारकरै औ बहुतकाल

के अनन्तर भूमिपर आय पांच जन्मतक बड़ा पराक्रमी आरोग्य औ प्रतापी राजा होय इतनी कथा सुन राजाने पूछा कि महाराज जो पुरुष सर्प्पके काटनेसे मृत्युबशहोय वह किसगति को प्राप्तहोता है औ जिसके माता पिता भाई पुत्रआदि सर्प्पके काटनेसे मरेहों वह उनके उद्धारके लिये कौन व्रत दान अथवा उपवासकरै यह आपकृपाकर वर्णनकरैं यह राजाका वचनसुन सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हे राजा सर्प्पकेकाटेसे जो मरै वहनिर्विष सर्प्पहोताहै औ जिसके माता पिता आदि सर्प्पके काटेसे मृतकहुयेहों वह उनकी सद्गति होनेके अर्त्थ भाद्र शुक्ल पञ्चमीका उपवासकर नागों का पूजनकरै इसप्रकार बारहमहीने शुक्लपंचमीको व्रतकरके सुवर्ण अथवा चांदीका पांचफण करकेयुक्त नागबनाय पंचमीके दिन करवीर कमल चमेली आदि पुष्प धूप दीप औ अनेकप्रकारके नैवेद्योंसे उसका पूजनकर घृत खीर औ लड्डू ब्राह्मणों को भोजन करावै अनन्त वासुकि शंख पद्म कम्बल कर्कोटक अश्वतर धृतराष्ट्र शंखपाल कालिय तक्षक औ पिंगल इन बारहनागोंका बारहमहीनों में क्रमसे पूजनकरै चतुर्थीकेदिन एकबार भोजनकरै औ पंचमी को व्रतकर नागपूजा करै औ रात्रिको भोजनकरै अन्तमें सुवर्णका नाग औ एक उत्तमगौ ब्राह्मणको देकर ब्राह्मणभोजन करावै यह उद्यापनकी विधिहै हे राजा तेरेपिताने भी अपने पिता परीक्षितके उद्धारके लिये यह व्रतकिया औ सुवर्णका बड़ाभारीनाग औ बहुतसी गौ ब्राह्मणोंकोदी तब पिता से अनृणभया औ परीक्षितभी उत्तमलोकों में प्राप्त भया हे राजा जो पुरुष इसकथाको भक्तिसे श्रवणकरै उसके

कुलमें कभी सर्प्पकाभय नहींहोताहै औ इस पंचमी व्रतके करनेसे उत्तम लोककी प्राप्तिहोती है ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

सर्पोंकी उत्पत्ति व शरीर दाढ़ और अवस्था तथा काटने के कारण व काटेहुयेदंशके लक्षण ॥

राजाशतानीक पूछते हैं कि हे सुमन्तुमुनि सर्प्पोंके कितनेरूपहैं क्या लक्षणहैं कैरंगहैं औ क्या जातिहै यह आप वर्णनकरैं यह सुन सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजा हिमालय पर्वतमें कश्यप औ गौतमका सम्बाद जो भयाथा वह हम वर्णनकरते हैं एक समय कश्यपमुनि अग्निहोत्रकर स्वस्थ चित्तहो हिमालय पर्वतमें अपने आश्रमके बीच बैठेथे उस समय गौतमने प्रणामकर विनयसे पूछा कि महाराज सर्पों के लक्षण जाति वर्ण औ स्वभाव आप वर्णनकरैं औ सर्प्प किसप्रकार उत्पन्नहोताहै बिषकैसेछोड़ताहै विषके वेग कितने हैं बिषनाड़ी कितनी हैं सर्पकी दंष्ट्रा कै प्रकारकी हैं सर्प्पिणीको गर्भ कबहोताहै औ प्रसव कितनेदिनके अनन्तर होताहै स्त्री पुरुष नपुंसकसर्पका क्या लक्षणहै औ ये क्योंकर काटते हैं यह सबभेद आप कृपाकर मुझे बतावैं यह गौतमका वचनसुन कश्यपने कहा कि चित्तलगाय श्रवण करो हम सर्पों का सब भेदकहते हैं ज्येष्ठ औ आषाढ़ में नागोंको मदहोताहै तबहीं मैथुनकरते हैं औ वर्षाऋतु के चारमहीने सर्प्पिणी गर्भधारतीहै औ कार्त्तिकमें दोसौचालीस अण्डदेतीहै औ उनको नित्यआपही खानेलगतीहै अन्तमें दयासे थोड़ेसे छोड़तीहै उनमें जो अण्डे सुवर्णकी भांति चमकतेहों उनमें पुरुष ककोड़ाके फलकेतुल्यहरे औ

लम्बीरेखाओं करकेयुक्त अण्डोंमें स्त्री औ शिरीष पुष्पके समान रंगवाले अण्डोंकेबीच नपुंसकसर्पहोतेहैं उनअण्डों को सर्प्पिणी छः महीनेतक सेतीहै पीछे अण्डेफूटकर उनसे सर्प निकलते हैं औ वे बच्चे अपनी मातासे स्नेहकरते हैं अण्डे के बाहर निकलने से सातदिन में उनबच्चोंका कृष्ण वर्णहोजाताहै सर्प्पका आयुष् एकसौबीसवर्षकाहै औ मृत्यु आठप्रकारका है मयूरसे मनुष्य से चकोरपक्षीसे बिल्ली से नकुलसे शूकरसे वृश्चिकसे औ गौआदि पशु के खुरसे इनसे बचे तो एकसौबीसबर्षजीवै सातदिनके अनन्तर दंष्ट्रा ऊ-गतीहैं औ इक्कीसदिनमें बिषहोजाताहै परन्तु सर्प्पदंशकर-नेके समय बिषत्यागदेताहै फिरऔर बिषइकट्ठाहोजाता है सर्प्पिणीकेसाथ जोफिरै वह बालसर्पकहाताहै पच्चीसदिनमें वहबच्चा प्राणहरनेमें समर्थहोजाताहै छःमहीनेमें कंचुकत्या-गताहै दोसौबीसपैर सर्प्पके होतेहैं परन्तु गौकेरोमके तुल्य अतिसूक्ष्महोतेहैं इसीसेदेखनहींपड़ते चलनेकेसमय निक-लआतेहैं नहीं तो भीतरप्रविष्टरहते हैं इनकेशरीरमें दोसौ बीसपसली औ दोसौ बीसही सन्धिहोती हैं अकाल में अर्थात् अपने समय बिना जो सर्प उत्पन्नहोते हैं उन में बिषन्यूनहोताहै औ सत्तरवर्षसे अधिक जीतेभीनहीं जिन के दांत लाल पीले नीलेहों औ बिषका वेग भी मन्दहो वे अल्पायुषहोतेहैं औ बहुतभीरु अर्थात् डरपोकने होते हैं सर्प्पोंके एकमुख दो जीभ बत्तीसदांत औ बिषसे भरीहुई चारदाढ़ होतीहैं उनकेनाम मकरी कराली कालरात्रि औ यमदूतीयेहैं औ क्रमसे ब्रह्मा विष्णु रुद्र औ यम इनचारोंके देवताहैं यमदूती नाम दाढ़ सबसे छोटीहोतीहै इससे जिस

को सर्प्प काटे वह तत्क्षणमरजाय मंत्र यंत्र ओषधीआदि इसपरकुछभी नहीं चलता मकरीदाढ़ का चिह्न शस्त्रकासा होताहै कराली काकपदके तुल्य कालरात्रि टकारअक्षरके सदृश औ यमदूती कूपके समान होती है येचारों क्रमसे एक दो तीन औ चारमहीने में उत्पन्नहोती हैं औ क्रमसे बात पित्त कफ औ सन्निपात इनमें होताहै गुड़युक्तभात कषायरसयुक्त अन्नकटुपदार्थ औ सन्निपातमें हितवस्तुक्रमसे इनकेभोजनहैं श्वेतरक्तपीत औ कृष्ण इनचारदाढ़ोंके रङ्गहैं औ क्रमसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ शूद्र ये चारइनके वर्णहैं सर्प्पोंकी दाढ़ोंमें सदाबिषनहीं रहता बिषके रहनेका स्थान सर्प्पकेदहिने नेत्रके समीपहै सर्प्प जबक्रोधकरताहै तबबिष नाड़ियोंके द्वारा दाढ़में पहुंचजाताहै आठ कारणोंसे सर्प्प काटता है दबनेसे पूर्व्वबैरसे भयसे मदसे क्षुधासे बिषका वेगहोनेसे सन्तानकी रक्षाकेलिये औ कालकी प्रेरणासे जो सर्प्प काटतेही पेटकी ओर उलटा होजाय औ उसकीदाढ़ टेढ़ीहोजाय उसको दबाहुआ जानो जिसके काटसे बहुत गहराघाव होजाय उसको बैरसे काटा जानो एक दाढ़का चिह्नहोय वह भी भलीभांति न देखपड़े तो भयसे रेखाकी भांति दाढ़लगे तो मदसे दोदाढ़लगैं औ बड़ाघावहोय तो क्षुधासे दोदाढ़लगैं औ घावमें रुधिर भरजाय तो बिषके वेगसे दो दाढ़ लगैं औ गहराघाव न होय तो सन्तानकी रक्षाकेलिये औ काकपदकी भांति तीन दाढ़गहरीलगैं अथवा चारदाढ़लगैं वह कालकी प्रेरणासे काटता है उसका कुछउपाय नहीं असाध्य होताहै दष्ट दष्टानुपीत औ दंष्ट्रोद्धृत्त ये तीन काटनेकेभेदहैं सर्प्पकाटै औ ग्रीवाभुकै उसको

दष्ट कहतेहैं काटकरपानकरै उसको दष्टानुपीत कहतेहैं इस में तिहाई बिषचढ़ताहै औ काटकर सबबिष उगिलदेवै औ आप निर्विषहो उलटजाय अर्थात् पीठकेबल उलटा होय औ उसकापेट देखपड़े उसदंशको दंष्ट्रोद्वृत्त कहतेहैं॥

बत्तीसवां अध्याय॥

कालसर्पसे डसेहुये पुरुष व दूत के लक्षण नागोंका उदय सर्पकाटने की तिथि व नक्षत्रका बिचार॥

कश्यपमुनि कहते हैं कि हे गौतम अबहम कालसर्पकरके काटेहुये पुरुषका लक्षण कहते हैं जिसको काल सर्प्प काटै उसकी जिह्वाभंगहोजाय हृदयमें शूलहोय नेत्रोंसे देखनपड़े दांत औशरीर कृष्णवर्ण होजायँ बिष्ठा औमूत्र निकलजाय कन्धे कमर औग्रीवा टूटपड़ें नीचेको मुखहोजाय आंखेंऊपर को चढ़जायँ शरीरमें दाह औ कम्पहोय शस्त्रसे काटनेकरके भी शरीरमें रुधिर ननिकलै बेतमारनेसेभी देहमें रेखा नपड़ें औ काटनेका स्थान पकेजम्बूफलकी भांति नीलबर्ण सूजा-हुआ रुधिरसे भरा औ काकपदके तुल्यहो हिचकीचलै कंठ रुकजाय श्वासबढ़ै शरीरकी त्वचा पाण्डुवर्ण होजाय उसको कालसर्पका काटाजानो घाव सूजजाय नीलबर्णहोय पसीना बहुत आवै अनुनासिक अर्थात् नाकसे बोलै ओष्ठ लटक पड़ै हड़फूटनहोय हृदयकांपै तो कालसर्पका डसाजानो दांत पीसै नेत्रफिरजायँ लंबेश्वासलेवै ग्रीवालटकपड़ै नाभिफ-रकै तो कालका काटाजानो दर्पण अथवा जलमें अपनी छाया न देखै सूर्य्य तेजसेहीन देखपड़ैं नेत्रलालहोयँ पीड़ा से सब शरीरकांपै उसको कालदष्टजानो वह शीघ्रहीमृत्यु

बशहोय अष्टमी नवमी कृष्णचतुर्दशी औ नागपंचमी के दिन जिनको सर्पकाटै उनकेजीने में संदेहहै आर्द्रा श्लेषा मघा भरणी कृत्तिका बिशाषा तीनोंपूर्वा मूल स्वाती औ शतभिषा नक्षत्रमें सर्पकाकाटा नहीं जीता औ इननक्षत्रों में जो बिषखाय वहभी तत्कालमरै पूर्वोक्त तिथि औ नक्षत्र दोनोंमिलजायँ औ अग्निहोत्र शालामें श्मशानमें औ सूखेवृक्षके नीचे जिसको सर्पकाटै वह न जीवै मनुष्यों के शरीर में एकसौ आठ मर्म हैं उनमें भी शंख अर्थात् ललाटकी अस्थि नेत्र भ्रू मध्य वस्ति अण्डकोशों का मध्य कक्ष कन्धे हृदय तालुठोडी औ गुदा ये मर्मस्थान मुख्यहैं इनमें सर्पकाटै अथवा चोटलगै तो मनुष्य कभी न जीवै सर्प काटने के अनन्तर वैद्यको जो बुलानेजाय उसदूत के लक्षण कहते हैं उत्तमवर्णका हीनवर्ण दूत औ हीनवर्णका उत्तम वर्णदूत अच्छा नहीं वह दूतदण्ड हाथमेंलिये हो दो दूतहों कृष्ण अथवा रक्तबस्त्र पहिने हों शिरपरही एक बस्त्र लपेटेहो शरीरमें तेललगायेहो केशखोलेहो घोरशब्द करताहुआ आवै औ हाथ पैरपीटै ऐसादूत बहुत बुराहोता है जिसरोगी का दूत इन लक्षणों करकेयुक्त वैद्यके समीप आवै वह रोगी अवश्यमरै अब नागों का उदय कहते हैं जो शिवजीने कहाहै अनन्त नाग सूर्य्यहैं बासुकि चन्द्रमा तक्षक भौम कर्कोटक बुध पद्म वृहस्पति महापद्म शुक्र कुलिक औ शंखपाल येदोनों शनैश्चरकारूपहैं रविवारकेदिन दशवां औ चौदहवां यामार्द्ध सोमवारको आठवां बारहवां भौमबारको छठा दशवां बुधकोचौथा आठवांवृहस्पतिको दूसरा छठां शुक्रको चौथा आठवां औ दशवां औ शनिवार

को पहिला सोलहवां दूसरा औ बारहवां प्रहरार्द्ध निंद्य है इनमें सर्पकाटै तो जीवैनहीं ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

विषके फैलने व सातबेग व सातधातुओं में प्राप्तभये विषके अलग २ लक्षण व चिकित्सा ॥

कश्यपजी कहतेहैं कि हे गौतम जो जानै कि यमदूतीनाम दाढ़लगीहै तो उसकी चिकित्सा नकरै दिनमें औ रात्रि में दूसरा औ सोलहवां प्रहरार्द्ध सर्पकाहै उसमेंकाटै तो चिकित्सा नकरै बालके अग्रसे जितनाजल उठसक्ताहै उतनाविष सर्प डालताहै वहसब देहमें फैलजाताहै जितनीदेरमें भुजा को पसारै अथवा समेटै इतनेकालमें काटनेके अनन्तर विष मस्तकमें पहुँचजाताहै रुधिरमें पहुँचनेसेविषकी बहुतवृद्धि होतीहै जैसे जलमें तैलकीबूँद फैलजाय त्वचामें पहुँच विष दूनाहोताहै रक्तमें चौगुणा पित्तमें आठगुणा कफमें सोलह गुणा वातमें तीसगुणा मज्जामेंसाठगुणा औ प्राणोंमेंपहुँच वहीविष अनन्तगुणाहोय सबशरीरके स्रोतरोकलेताहै तब वह जीव श्वास नहींलेता औ मृत्युबश होजाता है शरीर पृथिवी आदि पांच भूतोंसे बनाहै मृत्युके अनन्तर ये भूत अलग २ होजाते हैं औ अपने २ में लीन होजाते हैं विष की चिकित्सा बहुतशीघ्र करनीचाहिये बिलम्बहोनेसे रोगी असाध्यहोजाताहै जैसाजंगमविष अर्थात् सर्पादिजीवोंका विष प्राणहरनेहाराहै ऐसाही स्थावर विष संखियाआदि भी है विषकेपहिलेबेगमें रोमांचहोताहै दूसरेवेगमेंपसीनाआता है तीसरेमें शरीरकांपताहै चौथेमेंभीतरसे शरीरके स्रोतरुक ने लगतेहैं पांचवेंमें हिचकीचलतीहैं छठेमेंग्रीवालटक० ।

है औसातवेंवेगमें प्राणचलेजातेहैं इनसातवेगोंमें शरीरकी सातों धातुओंमें विष व्याप्तहोजाताहै अबइन धातुओंमें पहुँचेहुये विषके अलग २ लक्षण कहते हैं आंखोंके आगे अँधेराहोय औ खड़ा न रहसके तो जाने कि विषत्वचामेंहै तब आककी जड़ अपामार्ग तगर औ प्रियंगु इनको जल में घोटकर पिलादेवे तो विषकीबाधा शान्तहोजाय त्वचा से रुधिरमें विष पहुँचता है तब शरीरमें दाह औ मूर्च्छा होतीहै शीतल पदार्थ अच्छेलगते हैं उशीर अर्थात् खस चन्दन कूठ तगर नीलोफ़र सिंदुबारकी जड़ धतूरेकी जड़ हींग औ मिरच इनको पीसकरदेवै इससेशान्त न होय तो कटेली इन्द्रायणकी जड़ सर्पगन्धा औ वृश्चिकाली इनको घृतमें पीसदेवै इससेभी शान्ति न होय तो सिंदुबार औ हींगकी नासदेवै औ यही पिलावै इसीका अंजन औ लेपनकरै तो रक्तमेंप्राप्त विषकीबाधा निवृत्तहोय रक्तसेपित्त मेंविष पहुँचताहै तब पुरुष उठ२कर गिरताहै शरीरपीला होजाताहै सबदिशा पीतवर्ण देखपड़तीहैं मूर्च्छा औ दाह होता है तब पीपल शहत महुआ घी तूंबे की जड़ इन्द्रायणकीजड़ इन सबकोपीस नस्य लेपन औ अंजनकरै तो विषका वेग निवृत्तहोय पित्तसे विष कफमें प्रवेशकरताहै तब शरीर जकड़जाता है श्वास भली भांति नहीं आता कण्ठमें घर्घर शब्दहोताहै मुखसे लारगिरतीहै यह लक्षण देख पीपल मिरच शुंठी लोधको शहतकी अर्थात् तुरई औ मधुसार इनको गोमूत्रमें पीस नस्य लेपन अंजनकरै औ यही पिलावे तो विषकावेग शान्तहोय कफसे बातमें विष प्रवेशकरताहै तब पेटअफरजाताहै कोई पदार्थ देख

नहीं पड़ताहै औ दृष्टिभंग होजातीहै यह लक्षण होय तो अरलूकीजड़ खिरनी गजपीपल भारंगी पीपल देवदारु मधुसार सिंदुबार औ हींग इनसबको पीसगोली बनावै वह गोलीखिलावै औ नस्य लेपन अंजन आदि भी इसीसे करै यहगोली सब विषोंको हरतीहै औ ब्रह्माजीने कहीहै बात से मज्जामें विष पहुँचताहै तब दृष्टि नष्टहोजातीहै औ सब अङ्ग बेसुधहो गिरजाते हैं यह लक्षण होय तो घी शहत खांड़ नख चन्दन औ खस इनसबको घोटकर पिलावै औ नस्य आदिभी देवै तो विषकावेग निवृत्तहोय मज्जासेविष मर्मस्थानोंमें पहुँचताहै तब सबइन्द्रिय नष्टहोजायँ काटने से रुधिर न निकले केश उखाड़नेसेभी पीड़ा न होय उस को मृत्युकेबशहुआ जानै ऐसे लक्षणोंकरकेयुक्त मनुष्यकी साधारण वैद्य चिकित्सा नहींकरसक्ते हैं जिनकेपास सिद्ध मन्त्र औ औषधी होयँ वे वैद्यऐसेरोगीका उपाय करने में समर्थहोते हैं इसकेलिये साक्षात् रुद्रने एक औषध कहाहै मयूर नकुल औ मार्जार इनतीनोंका पित्ताधनालीकी जड़ केसर भार्गवी कूठ काशमर्दकी छाल उत्पल कुमुद औ कमल इनतीनोंके केसर इनसबके समानभाग लेकरगोमूत्रमेंपीस नस्य आदि देवै औ खानेकोभी देवै तो कालसर्पकरके डसा हुआभी अतिशीघ्र निर्विषहोय यहऔषध मृतसंजीवनीहै अर्थात्मरेकोभीजिलादेतीहै इसलिये अवश्यदेनीचाहिये॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

सर्पोंकी भिन्न २ जातियां व उनके काटेहुयेके लक्षण व नाग पंचमी पूजनफल व विधान ॥

गौतम पूछते हैं कि हे कश्यपजी सर्प सर्पिणी बालसर्प

सूतिका नपुंसक औ व्यन्तरनाम सर्पके काटेमें क्या भेद होताहै इनकेअलग २ लक्षणकहो यहसुन कश्यपमुनिकहने लगे कि हेगौतम यहसब हमसंक्षेपसे कहते हैं औ नागोंके रूपका लक्षणभी वर्णनकरतेहैं सर्पकाटै तो ऊपरकोदृष्टिहो-जाय सर्पिणीके काटनेसेनीचेको बालकसर्पके काटेसेदहिनी ओरको औ बालसर्पिणी के डसनेसे बाईं ओर दृष्टि झुक जातीहै गर्भिणीके काटेसे पसीना आताहै प्रसूतीकाटै तो रोमांच औ कंप होताहै नपुंसकके काटनेसे शरीर टूटताहै सर्प दिनमें सर्पिणी रात्रिमें औ नपुंसक संध्यासमय अ-धिकबिष करिकेयुक्त होताहै अंधकारमें जलमें बनमें सर्प काटै तथा सोतेहुये मत्तहुये को काटै तो सर्प नहीं देखपड़ै औ देख भी पड़ै तो उसकी जाति न पहिंचानी जाय औ पूर्वोक्त लक्षणभी न जानता होय तो वैद्य क्योंकर चिकित्सा करसक्ताहै चारप्रकारके सर्पहोतेहैं दर्वीकर मंडली राजिल औव्यंतर इनमेंदर्वीकर बात स्वभावहै मंडली पित्तस्वभाव राजिल कफस्वभाव औव्यंतर सन्निपात स्वभावहै अर्थात् उसमें बात पित्त औ कफ तीनों अधिकहैं दर्वीकरमें रुधिर कृष्णबर्ण औ स्वल्प होताहै मंडलीमें गाढ़ाबहुत औरक्तवर्ण रुधिर निकलताहै औ राजिल तथा व्यंतरमें बहुत गाढ़ा थोड़ासा रुधिर होताहै इनचारजातियों बिना पांचवीं कोई जाति सर्पोंकी नहीं मिलतीहै ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य औ शूद्र इनचार वर्णोंके सर्पहोतेहैं ब्राह्मण सर्पकाटैतो शरीरमें दाह होय मूर्च्छाहोय मुखकाला पड़जाय ग्रीवा स्तंभहोजाय औ संज्ञा जातीरहै ये लक्षणहोयँ तोअश्वगंधा अपामार्ग सिं-दुवार औ हींगको घृतमेंपीस नस्यदेवै औ पिलावै तो बिष

निवृत्तहोय क्षत्रियसर्पकाटै तोशरीरकांपैमूर्च्छाहोय ऊपरको दृष्टिहोजाय पीड़ाहोय यहलक्षणदेख आककीजड़ अपामार्ग इन्द्रायण औ प्रियंगुको घीमेंपीस पिलावै औ इसीकानस्य देवै तो बिषकी बाधामिटै वैश्यसर्प्पडसै तो कफ बहुतआवै मुखसे लारबहै मूर्च्छाहोय संज्ञा जातीरहै येलक्षणहोयँ तो अश्वगन्धा गृहधूम गूगुल शिरीष अर्क पलाश औ श्वेत फूलवाली गिरिकर्णिका इनसबको गोमूत्रमें पीस नस्यदेवै औ यही पिलावै तो वैश्य सर्प्पके बिषकीबाधा ततूक्षण दूर होय शूद्रसर्प्प जिसकोकाटै उसको शीतलगै कांपै ज्वरहोय सब अंग चुलचुलावैं यह लक्षणजान कमल कमलके केसर लोध शहत मधुसार औ श्वेतगिरिकर्णी इनको समानभाग लेकर शीतल जलसेपीस नस्य आदि देवै औ पानकरावै तो बिषका वेग शान्तहोय ब्राह्मण सर्प्प मध्याह्न के पहिले क्षत्रिय मध्याह्नमें वैश्य मध्याह्नकेपीछे औ शूद्रजातिका सर्प्प संध्यामें बिचरताहै ब्राह्मणसर्प्प पुष्पभोजन कर्त्ताहै क्षत्रिय मूषक वैश्य मेंडक और शूद्रसर्प्प सबपदार्थ भक्षणकर्त्ताहै ब्राह्मण सर्प्प आगे डसताहै क्षत्रिय दाहिने वैश्य बायें औ शूद्र पीछे काटताहै मदकेसमय मैथुनकी इच्छाकरके पीड़ित सर्प्प विषके बढ़ने से व्याकुलहो बिना समय भी काटताहै ब्राह्मणसर्प्पमें पुष्पके समान गन्धहोताहै क्षत्रियमें चन्दन का वैश्यमें घृतका और शूद्रमें मत्स्यका गन्ध आताहै नदी कूप तालाब झरने बाग औ पवित्र स्थानोंमें ब्राह्मण सर्प्प रहतेहैं ग्राम नगरआदिके द्वार चतुष्पथ तोरणआदि स्थानोंमें क्षत्रिय गोशाला ऊषर भस्म घास आदिके ढेर औ वृक्षों में वैश्य औ अपवित्र स्थान वन शून्यघर श्मशान

आदि बुरे स्थानोंमें शूद्रसर्प्प निवास करतेहैं श्वेत कपिल अग्निके समान तेजस्वी औ सात्विकब्राह्मण सर्प्प होते हैं मूँगेके समान रक्तबर्ण अथवा सुवर्णके तुल्य वर्ण सूर्य्य के समान तेजवाले क्षत्रिय सर्प्प जानो अलसी अथवा बाण पुष्पके समान वर्ण अनेक रेखाओं करके युक्त वैश्य होतेहैं औ अंजन अथवा काकके समान कृष्णवर्ण औ धूम्रवर्ण शूद्रसर्प्प होतेहैं एकअंगुल अन्तर में दंशहोय तो बालक सर्प्पका काटाजानो दोअंगुल अन्तरहोय तो तरुणका औ ढाई अंगुल अन्तर होय तो वृद्धसर्प्प का दंश पहिचानो अनन्त सम्मुख देखता है बासुकि बाईंओर तक्षकदाहिनी ओर औ कर्कोटककी दृष्टि पिछली तरफ होती है अनन्त बासुकि तक्षक कर्कोटक पद्म महा पद्म शंखपाल औ कुलिक ये आठोनाग पूर्वआदि आठदिशाओं के स्वामी हैं पद्म उत्पल स्वस्तिक त्रिशूल पद्म शूल छत्र औ अर्द्धचन्द्र ये आठों इनके आयुधहैं अनन्त औ कुलिक ये दोब्राह्मण हैं शंख औ बासुकि क्षत्रिय हैं महापद्म औ तक्षक वैश्यहैं पद्म औ कर्कोटक शूद्रहैं अनन्त औ कुलिक शुक्लवर्ण औ ब्रह्मासे उत्पन्नहैं बासुकि औ शंखपाल रक्तवर्ण औ अग्निसे उत्पन्नहैं तक्षक औ महापद्म पीतवर्ण औ इन्द्रसे उत्पन्न हैं पद्म औ कर्कोटक कृष्णवर्ण औ यमसे उत्पन्न भयेहैं दर्वीकरोंके सोलह भेद हैं सात भेद मंडली सर्पोंके हैं दश भेद राजिल सर्पों के हैं औ व्यंतर चौंसठ भेदके हैं बराहकर्णी गजपीपल गांधारिका पीपल देवदारु मधुकसार सिंदुवार औ हींग इनको समभागले गोमूत्र में पीस गोली बनाय सदा समीप रक्खै इतनी कथा सुनाय सुमंतुमुनि बोले कि

हे राजा यह सब सर्पों के लक्षण औ चिकित्सा कश्यप मुनि ने गौतम को उपदेशकरे हैं सदा भक्ति से नागों की पूजाकरै औ पंचमी को विशेषकर दुग्ध खीर आदिसेपूजै श्रावण शुक्ल पंचमी को द्वारके दोनों ओर गोबरसे नाग बनाय दही दूध दूर्वा पुष्प कुशा गन्ध अक्षत औ अनेक प्रकारके नैवेद्यों से पूजन कर ब्राह्मण भोजन करावै उस पुरुषके कुलमें कभी सर्पभय नहीं होता इसी प्रकार भाद्रपदकी पंचमीको अनेक रंगके नाग लिखकर घी पायस दूध पुष्प आदिसे पूजनकर गूगुलका धूपदेवै तो तक्षकआदि नागप्रसन्नहोते हैं औ उसके सातपीढ़ीतक सर्प भयनहींहोता आश्विनिकी पंचमीको कुशाकेनागबनाय इन्द्राणीसहित उनका पूजनकरै दुग्ध घृत औ जलसेस्नान कराय दूधमें रँधेहुयेगेहूँ औ भांति२के भक्ष्य भोज्यचढ़ावै इस पंचमीको जो नागपूजाकरै उसपर वासुकिआदि नाग सन्तुष्ट होते हैं औ वह पुरुष नागलोकमें बहुतकाल सुख भोगताहै हे राजा यह पंचमी तिथिका कल्प हमने वर्णन कियाहै जहां यह पढ़ाजाय वहां सर्पभयनहीं होताहै (ओं कुरुकुल्लेहुंफट्स्वाहा) यहमंत्रभी सर्पभय निवृत्तकरताहै॥

पैंतीसवां अध्याय॥

षष्ठी कल्पका प्रारंभ, पुष्पषष्ठिका विधान, औ फल, स्कंद प्रशंसा॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा अब हम षष्ठीतिथिका कल्प वर्णन करते हैं जिसका राज्य छुटगयाहो वह षष्ठीका व्रतकरै औ रात्रिको फल खाये वह अवश्य अपना राज्य पावै यह तिथि स्वामि कार्तिकेयको बहुत प्रियहै इसीतिथि को स्वामिकार्तिक देव सेनाके स्वामीभये हैं इस तिथिको

व्रतकर घृतदही जल औ पुष्पों करके स्वामिकार्तिक को दक्षिणकी ओर मुखकरके अर्घ्य देवे औ ब्राह्मणको अन्न देकर रात्रिको फल भोजन करै औ व्रतके दिन शुक्ल वस्त्र पहिरे पवित्रऔ ब्रह्मचर्यसे रहै औ शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की दोनों षष्ठियों को यह व्रतकरै वहस्कंदके अनुग्रह से सिद्धि धृति तुष्टि राज्य आयुष् औ मुक्तिपाताहै जो पुरुष उपवास न करसकै वह नक्तव्रतही करै तौ भी दोनों लोकोंमें उत्तम फलपाताहै इस व्रतके करनेहारे पुरुष को देवताभी नमस्कार करते हैं औ वह इसलोकमें आय चक्रवर्ती राजा होताहै हे राजाजो पुरुष षष्ठी व्रतके फल को भक्तिसे श्रवणही करै वह भी स्वामिकार्तिकेय की कृपासे भांति २ के उत्तमभोग सिद्धि तुष्टि धृति औ लक्ष्मी पाता है औ परलोकमें उत्तम गतिका अधिकारी होताहै ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

जाति भेदका खंडन ॥

राजाशतानीक पूछते हैं कि हेसुमन्तुमुनि स्वामिकार्त्तिक के जन्मको सुन हमको अति सन्देहहोता है कि अनेकोंसे स्वामिकार्त्तिक की उत्पत्तिभई औ उनका माहात्म्य तथा प्रभाव अत्यन्त वर्णन कियाहै इसमें जातिउत्तमहै किकर्म यहमेरा सन्देह आप निवृत्तकरैं औ इन दोनोंमें जो श्रेष्ठ हो वह कहैं यह राजाका बचनसुन सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हेराजा यहीबात मुनियोंने ब्रह्माजीसे पूछीथी जो ब्रह्माजीने मुनियोंसे कहा वहीहम आपको श्रवण करातेहैं एक समय ब्रह्माजी अपनेलोकमें सुखसे बैठे थे उस अवसरमें सबऋषि ब्रह्माजीके समीपगये औ प्रणामकर कुशलप्रश्न

के अनन्तर पूछतेभये कि महाराज विश्वामित्र को क्षत्रिय से ब्राह्मणभये देख हमारे हृदयमें परम सन्देह उत्पन्न हो रहाहै ब्राह्मणत्व क्या पदार्थ है जाति वेदाध्ययन देह औ आत्माके संस्कार आचार वैदिक कर्मोंका करना इन सब में ब्राह्मणत्व का हेतु कौनसा है कदाचित् कहो कि जीवही ब्राह्मणहै तो वह संसारकी क्षत्रिय वैश्य शूद्र चंडाल श्वान शूकर आदि योनियों में घूमता है फिर क्योंकर ब्राह्मणरह सक्ताहै जैसा गौओंके समूहमें अश्व पृथक् पहिचानाजाताहै ऐसे मनुष्योंमें ब्राह्मणको नहीं जानसक्ते इस कारण ब्राह्मणत्व क्याबस्तुहै यह आप कृपाकर वर्णनकरें यह मुनियोंका प्रश्न ब्रह्माजीसुन कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो मनु जीकी कही सप्तव्याध कथा सुननेसे जीवमें तो ब्राह्मणत्व सन्देह निवृत्तहोजाता है दशार्ण देश में सातव्याध थे वे सातों कालञ्जर पर्वतमें मृगभये शरद्वीपमें वेही चक्रवाक मानसरोवर में हंस औ वेही सातों कुरुक्षेत्रमें वेदके पारगामी ब्राह्मणभये इसहेतु जीवको तो किसीप्रकार ब्राह्मण नहीं कहसक्के औ जैसे गवय अर्थात् नीलगायसे गौका भेद गल कम्बलकरके होताहै ऐसाभी कोई चिह्ननहीं कि जो ब्राह्मणको और मनुष्योंसे भेदकरै इससे जातिभी ब्राह्मणनहीं गौ महिषी बकरी भेड़ ऊँट गधे खच्चर घोड़े हाथी आदिकी नौकरी करै दूसरेके सेवकहो बनिया लुहारआदि कारीगर नट आदिका कामकरैं मांस लशुन पलाण्डु अर्थात् प्याज भक्षणकरैं मद्य औ ऊँटनी का दूध पीवै मांस लवण आदि रस औ दूध बेचैं पुनर्भू अर्थात् जिस स्त्रीका दोबार बिवाह हुआहो शूद्री चण्डाली दासी आदि स्त्रियों

से संगकरै शूद्र का अन्न प्रेतका अन्न जन्म औ मरण के अशौचका अन्न जो भोजनकरैं देवता माता पितागुरुआदि से जो मात्सर्यद्वेष औ अहंकारकरैं इत्यादि औरभी अनेक कारणोंकरके वेद वेदांगका पठनपाठन करनेहारे उत्तमकुल में उत्पन्न ब्राह्मणभी अपने ब्राह्मणत्व से हीनहोते हैं इस लिये ब्राह्मणत्व एक शरीर में स्थिरभी नहीं होसक्ता मनुजीनेभी यह कहाहै कि मांस लवण लाक्षा दूध आदि पदार्थ बेचने से ब्राह्मण शूद्र होजाता है गौओं से अपना निर्वाहकरै खेतीकरै नौकरीकरै नट वैश्य आदिका कर्मकरै वह ब्राह्मण शूद्रके तुल्य होताहै इसप्रकार ब्राह्मणसे शूद्र औ शूद्रसे ब्राह्मणभी बनजाताहै ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

जाति भेदका खण्डन ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो वेदपढ़नेसेभी ब्राह्मण नहींहोता क्योंकि रावण आदि राक्षसोंने भी वेदपढ़ रक्खा था और भी शूद्र चण्डाल धीवरआदिकोई२छलसे वेदपढ़ लेते हैं परन्तु ब्राह्मण नहीं होसकते कई शूद्र दूसरे देशमें जाय ब्राह्मण बन वेदपढ़लेते हैं औ उत्तम ब्राह्मणकी कन्या से बिवाहकरलेते हैं अथवा वेद बिनापढ़ेभी पंचगौड़ पंचद्रविड़ आदिकोंमें किसीप्रकारके ब्राह्मण बन सत्कुलमें बिवाह करलेतेहैं इसकारण वेदपढ़नेसेभी ब्राह्मणकीपहिचान नहींहोसक्ती शास्त्रकार यहकहतेहैं कि आचारहीनको वेदपवित्रनहींकरसक्ते चाहैसबअङ्गोंसहित भलीभाँति पढ़ेहोंवेद पढ़ना तो ब्राह्मणोंकाशिल्पहै आचरणही मुख्यहै कई शूद्र भी संध्योपासन आदिकरतेहैं दण्ड मृगचर्म मेखला यज्ञोप-

वीत आदि धारलेते हैं उनको कोई निषेध नहीं करसक्ता अभिचार आदि कर्म शूद्र भी करसक्तेहैं तप सत्यआदिके प्रभावसे देवताका अनुग्रह औ मन्त्र सिद्धि शूद्रों को भी होतीहै शाप अनुग्रह का सामर्थ्यभी तप करने से शूद्रों में होजाता है ये सब बातें ब्राह्मण औ शूद्रोंमें तुल्य होसक्ती हैं संस्कारभी ब्राह्मणत्वके हेतु नहीं क्योंकि व्यास आदिकों के गर्भाधान सीमन्त आदि संस्कार किसनेकियेथे शरीर भी सब मनुष्यों के तुल्यही है प्रत्युतम्लेक्ष चौर नास्तिक आदि शरीर से पुष्ट औ बलवान्होतेहैं देह आत्मा वचन सुख ऐश्वर्य रोग आज्ञा वीर्य्य आकृति इन्द्रिय व्यापारआ-युष् दुर्बलता पुष्टता चंचलता स्थिरता बुद्धि वैराग्य धर्म पराक्रमरूप औषधगर्भ देहकी मलिनता उज्ज्वलता अस्थि रोम मांस त्वचा त्रिवर्गमें रुचि इत्यादि पदार्थ ब्राह्मण औ शूद्रमें तुल्यही होतेहैं इनबातोंसे शूद्र औ ब्राह्मण का भेद देवताभी नहीं करसक्ते औ ब्राह्मण चन्द्रकिरणों के समान श्वेतवर्णनहीं हैं क्षत्रिय टेसूके फूल की भांति रक्तवर्ण नहीं वैश्य हरितालसे पीले नहीं औ शूद्र कोयलासे कालेनहीं होते कि सब को अलग २ पहिचानलेवें चलना फिरना बैठना बोलना सोना सुख दुःख सबको समान है फिर म-नुष्य चार प्रकारके क्योंकर भये एक पिताके चारपुत्रहोवें एकजातिकेही होतेहैं इसीप्रकार इसजगत् का पिता एक परमेश्वर है फिर उसकी संतान में क्योंकर जातिभेद हो-सक्ताहै जैसे एकवृक्षके फल रूप स्वाद आदि करके तुल्य होतेहैं इसीबिधि परमेश्वर रूप वृक्षसे उत्पन्नभये मनुष्य रूप फल सब समान हैं कौशिक काश्यप गौतम कौडिन्य

मांडव्य वशिष्ठ आत्रेय कौत्स अंगिरा गर्ग मौद्गल्य कात्यायन भार्गव भारद्वाज आदि गोत्रभी ब्राह्मणत्वका हेतु नहीं क्योंकि येगोत्र और भी वर्णोंमेंहोतेहैं जो शरीरको ब्राह्मण कहो तो पहिले यह कहो कि कोई एक अंग ब्राह्मण है अथवा सम्पूर्ण शरीर यदि एकअंगको ब्राह्मण मानो तो वह अंग कटजाने से ब्राह्मणत्व जातारहैगा औ यदि सम्पूर्ण शरीर को ब्राह्मण ठहराओ तो मरने के अनन्तर उस शरीरका जो दाहकरैगा वह ब्रह्महत्याका भागीहोगा जो कहो कि ब्राह्मण की कन्या के साथ जो बिवाह करै वह ब्राह्मण होताहै तो वहीब्राह्मण जब क्षत्रियकी कन्यासे बिवाहकरैगा तब क्षत्रियहोजायगा क्योंकि ब्राह्मणको चारोंवर्णोंकी कन्या से बिवाहकरना लिखाहै इसलिये जातिदेह कर्म्म वेदाध्ययन आदि कोई भी ब्राह्मणत्व के हेतु नहीं होसक्ते॥

अरतीसवां अध्याय॥

जातिभेद का खण्डन॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो रूपऐश्वर्य विद्या औ जातिका अभिमान वृथाहै क्योंकि यह जीव बनस्पति शंख चींटी भ्रमर हाथी आदि अनेक योनियों में जाय नटकी भांति नानाप्रकारके देहधारताहै फिर जातिका अभिमान कहांरहा इसलिये बुद्धिमान् मनुष्य कभी जातिका गर्व न करै क्योंकि जाति स्थिर नहीं रहती जो कहै कि संस्कारों से ब्राह्मण होता है तो गर्भाधान पुंसवन सीमन्त जातकर्म अन्नप्राशन यज्ञोपवीत वेदाध्ययन समावर्तन बिवाह आदि संस्कार जिनके होते हैं उनका कुछ तेज अथवा आयुष् नहीं बढ़जाता औ संस्कारहीन अल्पायुष् नहीं

होते सुख दुःखभी दोनों तुल्यही भोगते हैं उत्तम संस्कार जिनके हुयेहों वे दुराचरण करके पतित होजाते हैं औ नरक में पड़ते हैं औ संस्कार हीन उत्तम चाल चलनसे भले कहाते हैं औ स्वर्ग्ग पाते हैं संस्कार युक्त पुरुष भी द्यूत वेश्यासंग आदि कुकर्म्मों में आसक्त होजाते हैं और संस्कार हीन जप तप दान आदि सत्कर्म करतेभी देखे हैं व्यास आदि मुनीश्वर संस्कारहीनभी होकर उत्तम आचरणसे सब ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ औ जगत्पूज्यठहरे हैं इससे संस्कारभी ब्राह्मणत्वका निमित्त नहीं बनसक्के जो कहो कि जन्मसे ब्राह्मण होताहै तो देखो कि व्यासजी कैवर्त्तीके गर्भसे पराशरमुनि चण्डालीके पेटसे शुकदेव शुकीके उदरसे कणाद उलूकीसे ऋष्य शृंग मृगीसे वशिष्ठ वेश्यासे मन्दपाल मुनि लाविका अर्थात् लवानाम पक्षिकी स्त्रीसे मांडव्य मंडूकीके गर्भसे उत्पन्नभये इसप्रकार औरभी हजारों अधमयोनिसे जन्मे औ उत्तम ब्राह्मण गिनेगये ये सब संस्कारहीनहैं औ जन्मभी उत्तम नहीं परन्तु प्रबल तपकरके सबब्राह्मणभये संस्कारहोय औ विद्या तप आदिभी होय तो वह उत्तमोत्तम ब्राह्मण होजाता है औ सब संस्कारोंसे संस्कृत होकरभी महापातक करनेसे ब्राह्मणपना खो बैठता है इसलिये ब्राह्मणत्व नियत नहीं सांकेतिक है अर्थात् ब्राह्मणत्व एक संकेत है ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

जातिभेदका खण्डन ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो वेदवेत्ता पुरुषोंसे यह भी पूछनाचाहिये कि शुक्रशोणितसे उत्पन्न विष्ठासे उत्पन्न

हुये कीटके तुल्य यह अति मलीन देह क्योंकर शुद्धहोती है मनमें तो दुष्टता भरीरहै औ बाहिरसे सब संस्कारहोयँ कई पुरुष वैदिक संस्कारोंसे संस्कृत आचरणमें शूद्रोंसेभी अधिक मलीन होजाते हैं क्रूरकर्म करनेहारा ब्रह्मघ्न गुरुदारगामी चोर गोघ्नमद्यप परस्त्रीगामी मिथ्याबादी मदोन्मत्त नास्तिक वेदनिन्दक मायाजाल कलिआदिमें आसक्त अति दोषोंकरके युक्त निषिद्ध आचरणका सेवन करनेहारा धूर्त शठ पापी सर्वभक्षी सर्व्वविक्रयी ऐसे जो ब्राह्मणहोयँ उनके चाहै सब संस्कार भयेहों औ वे सब वेद वेदांगपढ़े हों परन्तु कभी उनकी निष्कृति नहींहोती जो इष्ट अनिष्ट ब्राह्मणको होते हैं वेही शूद्रकोभी होतेहैं इसलिये वेदपठन अग्निहोत्र यज्ञमें पशु बधकरना इत्यादि कोई कर्मभी ब्राह्मणत्वके हेतु नहींवैधव्य वियोग मरणआदि सबको तुल्य होते हैं बात पित्त कफ लोभधनकी तृष्णा सबको होती है दयाहीन हिंसक परमदांभिक कपटी लोभी पिशुन अति दुष्ट ऐसे पुरुष वेदपढ़के संसारको ठगते हैं औ वेदविक्रय कर अपना पोषण करते हैं अनेक प्रकारके छल छिद्रकर प्रजाकी हिंसा करते हैं केवल अपना सांसारिक सुख साधते हैं ऐसे ब्राह्मण शूद्रसे भी अधम होते हैं इसलिये जाति वृथाहै सकामा शूद्रसे ब्राह्मण संगकरके गर्भ स्थापन कर देताहै औ ब्राह्मणी को शूद्रके संगसे गर्भ होजाता है फिर जातिभेद कहां ठहरा जातिभेद तो गौ ऊष्ट्र घोड़ा हाथी आदि पशुओंमें है जो अपनी जातिकी स्त्री बिना दूसरी जातिकी स्त्रीसे संग नहीं करते औ न दूसरीजाति में गर्भ रखसकते हैं पशुजातिकी स्त्री से मनुष्य संग करै तौ सुख

नहीं होता औ न गर्भरहताहै इसीप्रकार मनुष्य स्त्री पशुसे मैथुनकरै तो न गर्भधारै औ न उसके आनंदहोय परन्तु मनुष्यजातिमें किसी वर्णके साथ संगकरै तबहीं आनंदमिलै औ गर्भधारै इससे जातिभेद नहींबनसक्ता यह जो मनुष्यों में जाति कल्पना है सो केवल व्यवहारके लिये संकेत है वास्तव में सत्य नहीं है ॥

चालीसवां अध्याय ॥

चारवर्णोंके लक्षण औ उनमें भेद होनेका कारण ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो जो ग्राह्य अग्राह्य के तत्त्वको जानैं अन्याय औ कुमार्गका त्यागकरैं जितेन्द्रिय सत्यवादी औ सदाचार हों नियम आचार औ सद्वृत्त में स्थिर रहैं सबकेहितमें तत्परहों भलीभांति वेदवेदांग औ शास्त्र जानतेहों समाधिमें स्थितहों क्रोधहीनहों मत्सर मद शोक आदि करके वर्जितहों वेदके पठन-पाठनमें आसक्त हों विशेष करके किसीका संग न करैं एकान्त औ पवित्र स्थानमें रहैं सुख दुःखमें समानहों धर्मनिष्ठहों पापसे डरैं निर्मम निरहंकार दानशूर ब्रह्मवेत्ता शान्तस्वभाव औ तपस्वी हों वे ब्राह्मण कहातेहैं इसप्रकारके ब्राह्मण जगत्के हितकेलिये उत्पन्नकियेगये हैं ब्रह्मके भक्तहोने से ब्राह्मण क्षतसेरक्षा करने करके क्षत्रिय वार्त्ताका सेवन करनेसे वैश्य औ श्रुतिसे द्रुत होने करके शूद्र कहाये क्षमा दम शम दान सत्य शौच धृति दया मृदुता ऋजुता सन्तोष तप निरहंकारता अक्रोधता अनसूयता अशठता अस्तेय अमात्सर्य्य अपैशुन्य धर्म्मज्ञान ब्रह्मचर्य्य ध्यान आस्तिक्य वैराग्य पापभीरुत्व अद्वेष गुरु शुश्रूषा इत्यादिगुण जिनमें

देखा उनको सृष्टिके समय ब्राह्मण ठहराया जो बलवान् औ दूसरे की रक्षा करने में समर्थ देखे वे मनुष्य क्षत्रिय कहाये जो वृत्ति औ धनके उपार्जनकरनेमें तत्पर भये उनकी संज्ञा वैश्य भई औ जो निस्तेज औ अल्पबल पुरुष शोचते औ द्रवते हुये इन तीनोंकी सेवामें तत्पर भये वे शूद्र भये इसभांति अपने २ स्वभावके अनुसार वर्णोंकी कल्पनाभई शम तप दम शौच क्षान्ति आर्जव ज्ञान विज्ञान औ आस्तिक्य ये ब्राह्मणोंके स्वाभाविककर्म्महैं शौर्य्य तेज धृति दाक्ष्ययुद्धमें अपलायन अर्थात् पीछे न फिरना दान औ ईश्वरभाव ये क्षत्रियोंका स्वाभाविक कर्म्महै जिसके ज्ञानरूपशिखा औ तपोरूपसूत्र अर्थात् यज्ञोपवीतहो उसको स्वायम्भुव मनुने ब्राह्मण कहाहै चाहे जिसवर्ण में उत्पन्न हो औ पाप कर्मोंसे निवृत्तहोकर उत्तम आचरण रक्खै वह ब्राह्मणके समानही है शील करकेयुक्त शूद्र ब्राह्मणसे अधिकहोजाता औ आचारसे रहित ब्राह्मण शूद्र से भी निकृष्ट माना जाताहै जोअपने घरमें मद्य न बनावै औ बाजार आदिमें बेचैभी नहीं वह शूद्र उत्तम होताहै पहिले तो जीवमात्र एकजातिहैं फिर मनुष्य आदि जाति अलग २ हैं उनमें स्त्री पुरुष आदि भेदहैं उनमें भी बालक तरुण वृद्ध ये जाति हैं इसके बिना और जातिकी कल्पना संकेत मात्रहै हे मुनीश्वरो यहहमने तर्कसे पूर्ण वचन जाति के विषयमें कहे परन्तु जिस प्रकार दैव औ पुरुष मिलकर कार्य्यसिद्ध होते हैं इसप्रकार उत्तम जाति औ सत्कर्म्मका योग होनेसे पूर्णसिद्धिहोतीहै इतनी कथा सुनाय सुमन्तु मुनि बोले कि हे राजा इसप्रकार ब्रह्माजी ने ऋषियों को

जातिके बिषयमें सतर्क बाक्य कहे हैं इसलिये कार्त्तिकेयके जन्मपर आपभी कुछ बिस्मय मत करो क्योंकि देवताओं कीलीला दुर्ज्ञेयहै यहप्रसङ्गसे हमनेजातिकानिर्णयकहाहै॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

भाद्रषष्ठीका माहात्म्य स्कंदके दर्शन पूजन आदिका फल॥

सुमन्तु मुनि कहतेहैं कि हे राजा शतानीक भाद्रपद मास की षष्ठी बहुतउत्तम तिथिहै औ कार्त्तिकेय को अतिप्रियहै उसदिन कियाहुआ स्नान दान आदि कर्म अक्षयहोता है दक्षिण दिशामें प्रसिद्ध स्वामिकार्त्तिकका उसतिथिको जो दर्शनकरै वह ब्रह्महत्यादि पापों से छुटै जो भक्तिसे कार्त्तिकेयका पूजनकरै वह मनोबांछित फलपावै औ अन्तमें रुद्रलोकमें निवासकरै जो पत्थर ईंट काष्ठ आदिकरके श्रद्धा से कार्त्तिकेयका मंदिर बनावै वहसुबर्णके बिमानमें बैठ उनकेही लोककोजावै जो मन्दिरपर ध्वजाचढ़ावै मन्दिरमें मार्जन आदिकरै वह रुद्रलोकपावै चन्दन अगर कपूरआदिसे जो कार्त्तिकेयका पूजनकरै वहहाथी घोड़े पालकी आदिबाहनों का स्वामीहोय राजाओंको तो अवश्य कार्त्तिकेय का आराधनकरना चाहिये जो राजाकार्त्तिकेयका पूजनकर युद्ध मेंजाय वह अवश्य शत्रुओंकोजीतै इसलिये हे राजा सदा भक्तिसे कार्त्तिकेय का आराधन करना चाहिये जो कार्त्तिकेय का पूजनकर भक्तिसे अनेकप्रकार की स्तुतिपढ़ै वह सब पापों से मुक्तहो शिवलोक को जाय षष्ठीकेदिन तेल न खावै जो षष्ठीकेदिन ब्रतकर कार्त्तिकेय का पूजनकर रात्रि को भोजनकरै वह कार्त्तिकेय के लोकमें निवासकरै जो पुरुष दक्षिणदेशमें तीनबारजाय कार्त्तिकेय का दर्शनकरै -

भक्तिसे उनका पूजनकरै वह शिवलोक में निवासकरै॥

बयालीसवां अध्याय॥

सप्तमीकल्पारंभ, सूर्यभगवान् की उत्पत्ति,उनकी स्त्रीसंज्ञा औ छायाकी कथा, सप्तमी व्रतका विधान॥

सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हे राजा हम अब सप्तमी कल्प का वर्णन करतेहैं सप्तमीकेदिन सूर्य्यभगवान्ने जन्मलिया है अण्डेसहित उत्पन्नभये औ अण्डेमेंहीरहे दक्षने अपनी अतिरूपवती कन्या इनको बिवाही जिसमें यमुना औ यम उत्पन्नभये बहुतकाल अण्डेमें रहने से मार्त्तण्डकहाये द-क्षकीआज्ञासे विश्वकर्माने इनके शरीर का संस्कार किया सूर्य्यभगवान् की भार्य्या दक्षकीपुत्री अतिव्याकुलहो चि-न्तना करनेलगी कि इनके अति प्रचण्ड तेजसे मेरी दृष्टि नहीं ठहरती कि इनके अंग देखपड़ैं औ सुवर्ण वर्ण अति सुन्दर मेरा शरीर इनके तेजसेदग्ध हो श्यामवर्ण होगया इससे मेरानिर्वाह होना यहां कठिन है यह बिचारकर अ-पनी छाया से एक स्त्री उत्पन्नकरी औ उससे कहा कि तू सूर्य्यभगवान् के समीप मेरेबदले रहना परन्तु यह भेद न खोलना इतना समझाय उसछायाको वहां रख अपने स-न्तान यम औ यमुनाको वहांही छोड़कर उत्तरकुरुमेंजाय घोड़ी का रूपधार मृगोंकेसाथ विचरनेलगी औ बहुतबर्ष तक वहांहीरही औ सूर्य्यभगवान्ने भी छायाकोही अपनी भार्य्या समझ रक्खाथा कुछकालके अनन्तर शनैश्चर औ तपतीनामकन्या छायासे उत्पन्नभई तब छाया अपने स-न्तानपर अधिकस्नेह रखनेलगी औ यमुना तथा यम से स्नेह न करती यमुना औ तपती का एकदिन बिवादभया

औ परस्पर शापसे दोनों नदीहोगई तब छायाने यमुनाके
भाई यमको ताड़नकिया यमने क्रोधकर छायाको मारनेके
लिये लातउठाई तब क्रोधकर छायाने शापदिया कि रे दुष्ट
यह जो चरण तैंने मेरेऊपर उठाया यह गलजावै जबतक
सूर्य्यचन्द्ररहैं तबतक मलिनरहै औ जो इसचरणको भूमि
पर रक्खै तो कृमिखाजावें यह दोनों का बिवाद होरहाथा
इसी अवसरमें सूर्य्य भगवान्‌भी वहांआये तब यमनेकहा
कि हे पिता यह नित्य हमको क्लेश देतीहै औ समान दृष्टि
नहीं रखती यह सुन सूर्य्यभगवान्‌ने क्रोधकर कहा कि तुम
को यह उचित नहीं कि अपनी सन्तान में एकसे प्रेमकरो
औ दूसरेसे द्वेषरक्खो जितने सन्तानहों सबको तुल्य सम-
झना चाहिये यह सुन छाया तो न बोली और यमने कहा
कि हे पिता यहदुष्टा मेरीमाता नहींहै उसकी छायाहै इसीसे
उसनेमुझेशापदियाहै यहकहकर सबवृत्तांत सुनादिया तब
सूर्यभगवान्‌नेकहा कि मांस औ रुधिरलेकरकृमि भूलोकको
जाय औ हे पुत्र तेरा चरण अच्छाहोजाय औ ब्रह्माजीकी
आज्ञासे तू लोकपालहोजा औ यमुनाका जल गंगाजलके
समानहोय औ तपतीकाजल नर्मदाजलकेतुल्यमानाजाये-
गा बिंध्यपर्वतके दक्षिणभागमें पुष्पजानदीकेसाथ तपतीका
सङ्गमहोगा और गंगाकेसाथ यमुनाकासंगमहोगा तब य-
मुनाभी गङ्गारूपहोजायगी दोनोंनदी सबपापहरनेहारी हों-
गी औ यहछाया सबकेदेहोंमें स्थितहोगी यहव्यवस्थाकर
दक्षप्रजापतिके समीप आये औ अपना सबसमाचार कहा
तब दक्षने कहा कि आपके अतिप्रचण्ड तेजसे व्याकुल
हो तुम्हारी भार्याछोड़कर चलीगई अब विश्वकर्म्मासे तुम

अपना रूप सुधरवालो यहकह विश्वकर्म्माको बुलाय कहा कि इनका रूपप्रकाशितकरो विश्वकर्म्मा बोले कि महाराज जो शस्त्रकी पीड़ा ये सहसकें तो हम इनको खरादपर चढ़ाय ठीक करदेवें यह सुन सूर्य्यभगवान्ने कहा कि हम पीड़ा सहैंगे परन्तु हमारा रूप उत्तम होजाय यह उनकी सम्मति पाय विश्वकर्म्मा अपने शस्त्रों से सूर्य्य भगवान् के अंग छीलनेलगे तब अति पीड़ासे सूर्य्य भगवान्को बार२ मूर्च्छा होतीथी इससे सब अंग तो छांटकर ठीक करदिये परन्तु पैरोंकीअंगुलीरहगई सूर्य्यभगवान्ने कहा कि हे विश्वकर्म्मा तुम अपना कामकरचुके परन्तु हम पीड़ासे बहुत व्याकुलहैं तब विश्वकर्म्माने कहा कि रक्तचन्दन औ करवीरके पुष्पोंका आप सम्पूर्ण शरीरमें लेपकरैं जिससे अभी यह व्यथा शांतहोजाय सूर्य्यभगवान्ने विश्वकर्म्माके कहने के अनुसार किया औ वेदना मिटगई उस दिनसे रक्तचंदन औ कनेरके पुष्प सूर्य्यभगवान्को अतिप्रियभये और कहा कि हमारे पूजनमें और कोई पदार्थदेवे चाहे न देवे परंतु जो पुरुष रक्तचन्दन औ करवीरके पुष्प हमारे अर्पणकरै वह मानों प्राण देता है इसलिये ये दोनों पदार्थ अवश्य हमारे अर्प्पणकरै सूर्य्यभगवान्के देहमें जोतेज उतरा उस करके दैत्योंके नाश करनेहारा बज्र रचा सूर्य्यभगवान् ने भी उत्तमरूप पाय उत्तर कुरूमें जाय बड़ी उत्कंठासे अपनी भार्याको ढूंढ़ा औ देखा कि मृगोंके साथ अश्वाका रूपधारे चररही है तब सूर्य्यभगवान्नेभी अश्वका रूपधार उससे संगकिया तब उस घोड़ीकी नासिकासे दो बालक उत्पन्न भये वे अश्विनीकुमार कहाये औ देवताओंके वैद्य भये त

पती शनि औ सावर्णि ये तीन सन्तान छायाके औ यमुना तथा यम संज्ञाके भये सप्तमीकेही दिन दिव्यरूप औ भार्य्या सूर्य भगवान्‌ने पाये इससे सप्तमीतिथि उनकी अतिप्रिया भई सप्तमीके दिन जो पुरुष उपवासकरै अथवा रात्रि के समय भोजनकरै औ अनेकप्रकारके भक्ष्य भोज्य औ उ-त्तम २ सिद्ध कियेहुये शाक ब्राह्मणोंको देवै औ जन्म भर इस ब्रतको करै वह अनेकप्रकारके सुख भोगकरै औ स-र्बत्र जयपावै औ अन्तमें उत्तम विमानपर चढ़ सूर्य्यलोक में जाय कई मन्वन्तर पर्यंत वहां निवासकर पृथ्वीपर चक्र-वर्त्ती राजा होय औ बहुतकाल निष्कंटक राज्य करै राजा कुरुने यह सप्तमीका बृत बहुतकाल पर्यन्तकरा औ केवल शाकही भोजनकिया तब कुरुक्षेत्र नाम पुण्यक्षेत्र पाया स-प्तमी नवमी षष्ठी तृतीया औ पंचमी ये तिथि बहुत उत्तम हैं औ स्त्री पुरुषों को मनबाञ्छित फल देनेहारी हैं माघमें सप्तमी आश्विनमें नवमी भाद्रपदमें षष्ठी बैशाखमें तृतीया औ भाद्रपदमेंही पंचमी ये तिथि इन महीनों में बिशेष हैं कार्त्तिकशुक्ल सप्तमीसे इस बृतको ग्रहणकरै उत्तम शाकको सिद्धकर ब्राह्मणको देवै औ आपभी रात्रिके समय शाकही भोजन करै इसप्रकार चारमास ब्रतकरके प्रथम पारणकरै पंचगव्यसे सूर्य्यभगवान्‌को स्नानकरावै औ आपभी पंच-गव्यका प्राशनकरै पीछे केसरका चन्दन अगस्त्यके पुष्प अपराजित नाम धूप औ पायसका नैवेद्य सूर्य्यनारायणके समर्पण करै औ ब्राह्मणों को भी पायस भोजन करावै दू-सरे पारणमें कुशाके जलसे स्नान करावै आप गोबर प्रा-शन करै औ श्वेत चन्दन सुगन्ध पुष्प अगरुका धूप औ

गुड़ के अपूप नैवेद्य अर्पण करै औ कर्ष समाप्त होने पर तीसरा पारण बर्ष के अंत में करै सर्षपका उबटन लगाय स्नान करावै औ आपभी उसको प्राशनकरै फिर रक्तचन्दनकरवीरके पुष्प गूगुलकाधूप औ अनेकप्रकारके भक्ष्य भोज्य सहित दहीभात नैवेद्य चढ़ावै औ यही ब्राह्मणोंको भोजन करावै औ सूर्य्य नारायणके आगे ब्राह्मणसे पुराण श्रवणकरै अथवा आपही पुराण बांचै औ अन्तमें ब्राह्मण भोजन कराय पौराणिकको वस्त्र भूषण दक्षिणा आदि देकर प्रसन्नकरै पौराणिकके प्रसन्नहोनेसे सूर्य्यनारायण प्रसन्नहोते हैं रक्तचन्दन करवीरके पुष्प गूगुलकाधूप मोदक पायसका नैवेद्य घृत ताम्रपात्र पुराणकथा औ पौराणिक ये सब सूर्य्य भगवान्को अति प्रियहैं हे राजा शतानिक यह सप्तमीव्रत सूर्य्य भगवान्को अति प्रियहै इस व्रतके करनेहारा पुरुष कभी लक्ष्मीसे बियुक्त नहींहोता ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण व सांबका संबाद व सूर्य्यनारायणका आराधन ॥

राजा शतानीक कहते हैं कि महाराज सूर्य्यभगवान्का माहात्म्य सुनते २ मुझे तृप्तिनहींहोती इसलिये आप विस्तारसे सप्तमी कल्पका वर्णनकरैं जिससे सूर्य्यनारायणके गुणानुबाद सुननेमें आवें यहसुन सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजा इसविषयमें श्रीकृष्ण औ उनकेपुत्र साम्बसे जोपरस्पर सम्बाद हुआथा वह हम वर्णन करते हैं एक समय साम्बने अपने पिता श्रीकृष्णभगवान् से पूछा कि महाराज संसारमें जन्मलेकर मनुष्य सुखी क्योंकर रहसक्ता है अपने मनोबांछित फल किसकर्मसे पाताहै औ अन्त में

बहुतकाल स्वर्गके सुख भोग मुक्तिकाभागी किस विधिसे होताहै यह आपवर्णनकरैं इस संसारमें अनेक प्रकार की व्याधिदेख मेराचित्त अति उदास होरहाहै क्षणमात्र जीने कीभी इच्छा नहींहोती इसलिये आप ऐसा उपाय उपदेश करैं कि जितने दिन संसारमें रहैं उतनेदिन आधि व्याधि से पीड़ित न होयँ औ फिर इस संसारमें जन्म न होय यह पुत्रकी प्रार्थनासुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हेपुत्र देवता के आराधनसे यह बात प्राप्त होसक्ती है देवता अनुमान औ आगमसे सिद्धहैं विशिष्ट देवताका विशिष्ट पुरुष आ-राधनकरै तो विशिष्टही फलपावै यहसुन साम्बने कहा कि महाराज पहिले देवताओंके होनेमेंहीं सन्देह है कई पुरुष कहते हैं कि देवताहैं औ कईकहतेहैं कि नहीं फिर विशिष्ट देवता क्योंकर जानैं यह पुत्रका सन्देह सुन श्रीकृष्णभग-वान्ने कहा कि हे पुत्र शास्त्रसे अनुमानसे औ प्रत्यक्षसे देवताओंका होना सिद्धहोताहै यह सुन साम्बने कहा कि जो प्रत्यक्षभी देवता सिद्ध होसक्तेहों तो उनके साधनके लिये अनुमान औ शास्त्रकी कुछ अपेक्षा नहीं तब श्रीकृष्ण ने कहा कि हे पुत्र सब देवता प्रत्यक्ष नहींहोते शास्त्र औ अनुमानसेही हजारों देवताओंकाहोना सिद्धहोता है सा-म्बनेकहा कि महाराज जो देवता प्रत्यक्ष हो प्रथम आप उसीका वर्णनकरैं शास्त्र औ अनुमानसे सिद्ध देवताओं का वर्णन पीछेकरना तब श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे पुत्र प्रत्यक्ष देवता तो सूर्य्यनारायणहैं जिनसे बढ़कर कोई दू-सरा देवता नहीं सब जगत् इनसे उत्पन्नभया औ इनहीं में लीनहोगा त्रुटिआदि कालकीसंख्या इनसेहै ग्रह नक्षत्र

योग करण राशि आदित्य वसु रुद्र वायु अग्नि अश्विनी-कुमार इन्द्र ब्रह्मा दिशा भू भुवःस्वः आदिसबलोक पर्व्वत नदी समुद्र नाग औ सम्पूर्ण भूत ग्रामकी उत्पत्तिके हेतु सूर्य्यनारायण हैं सबजगत् इनकी इच्छासे उत्पन्न भयाहै इनकीही इच्छासे स्थितहै औ अपने २ ब्यवहार में सब प्रवृत्तहैं सूर्य्यभगवान्के उदयकेसाथ जगत्का उदय औ अस्तकेसाथ अस्तहोताहै इनसेअधिक न कोईदेवताहुआ न कोईहोगा सब वेदोंमें औ इतिहास पुराण आदिमें इन को परमात्मा अन्तरात्मा आदिशब्दोंसे प्रतिपादन किया है इनके सम्पूर्ण गुण औ प्रभाव सौ वर्षमें भी वर्णन नहीं करसक्के सबके स्वामी सबके सिरजने हारे औ संहार कर्त्ता येही हैं मण्डल रच सायंकाल औ प्रातःकाल जो पुरुष इनका पूजनकर उपस्थानकरै वह सब सिद्धिपाताहै फिर जो प्रत्यक्ष सूर्य्यनारायण का पूजन करै उसको कौन पदार्थ दुर्लभहै जो इनका मन्त्र जपै हवन करै पूजनकरै वह सब कामना पाताहै औ अन्तमें इनके लोकमें निवास करताहै हे पुत्रजो तुमसंसारमें सुख चाहतेहो औ भुक्ति मुक्तिकी इच्छारखतेहोतो बिधिपूर्बक सूर्य्यनारायणका आराधन करो आध्यात्मिक आधिभौतिक औ आधिदैविक दुःखतुमकोकभी न होंगे जो सूर्य्यभगवान्के शरणमें प्राप्त हैं उनको किसीप्रकारका भय नहीं होता हमने सूर्य्यभगवान्का बहुतकाल आराधनकिया तबयहदिब्य ज्ञानपाया है इससेबढ़कर मनुष्योंके लिये कोईहित उपाय नहीं है हे साम्ब हमने यह बहुत संक्षेपसे कहा है॥

चवालीसवां अध्याय ॥

सूर्य्यनारायणके नित्यार्चनका बिधान ॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि हेसाम्ब अब हम सूर्य्यनारायणके पूजनका बिधान कहते हैं जिसके करनेसे सम्पूर्ण पाप औ बिघ्न निवृत्तहोते हैं प्रभात उठ शौचआदि से निवृत्त हो नदी आदिके तटपर जाय आचमन कर शुद्ध मृत्तिका से शरीरकोलीप सूर्य्योदय समय काल स्नान करै फिर आचमन कर शुद्ध बस्त्र पहिनै सूर्य्यभगवान् को अर्घ्य देकर सप्ताक्षरमंत्रकरके पूरककुम्भक औ रेचक नाम प्राणायाम कर बायवी आग्नेयी माहेयी औ बारुणी धारणाकरके भूत शुद्धिकी रीतिसे शरीरका शोषण दहन स्तम्भन औ प्लावन करके नवीनशरीर उत्पन्नकरै और स्थूल सूक्ष्म शरीर तथा इन्द्रियों को अपने २ स्थानमें स्थापनकरै खःस्वाहा हृदयायनमः खो स्वाहा शिरसेस्वाहा उल्कायस्वाहा शिखायै वषट् स्वाहा कवचायहुं स्वाहा स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ख खोल्काय स्वाहा अस्त्रायफट् इनमंत्रोंसे न्यासकर पूजाकी सामिग्रीको मूलमंत्रसे प्रोक्षणकरै फिर सब उपचारों से सूर्य्यभगवान्का पूजन करै दिनके समय मूर्तिमें औ रात्रि को अग्निमें सूर्य्यनारायण का पूजन करै प्रभात के समय पूर्वाभिमुख सायङ्कालको पश्चिमाभिमुख औ रात्रिके समय उत्तराभि मुख होकर पूजनकरै ओं खखोल्काय स्वाहा इस सप्ताक्षर मूलमन्त्र करके सूर्य्यमण्डलके बीच षट्दल कमलका ध्यानकर उसके मध्यमें सूर्य्यनारायण की मूर्त्ति ध्यावै फिर रक्तचन्दन करवीर आदि रक्तपुष्प धूप दीप अनेकप्रकारके नैवेद्य वलि बस्त्र भूषण आदि उपचारों करके

पूजनकरै अथवा रक्तचन्दन से ताम्रपात्रमें षट्दल कमल लिखकर मध्यमें सब उपचारों करके सूर्य्यनारायण का पूजनकर छहोदलोंमें षडङ्ग पूजन उत्तर आदि आठ दिशाओं में चन्द्र आदि आठग्रहों का अर्चन औ दिक्पाल तथा उनके अस्त्रों का अपनी२ दिशामें पूजनकरै आदि में प्रणव लगाय चतुर्थी नमोन्तनाम मन्त्रोंसे सब का पूजनकरै फिर व्योममुद्रा नमस्कारमुद्रा पद्ममुद्रा महाश्वेतामुद्रा औ अस्त्र मुद्रा दिखावै ये सब मुद्रा पूजा जप ध्यान अर्घ्य आदि के अनन्तर दिखानीचाहिये इसप्रकार एकबर्षपर्यन्त भक्तिसे सूर्य्यनारायण का आराधनकरै तो भोग औ मोक्षपावै इस बिधि पूजन करके रोगी रोगसे छूटै धनहीन धन पुत्रहीन पुत्र औ राज्यहीन राज्यपावै औ चिरकालजीवै बुद्धि निर्मल होजाय उत्तमकुलमें उत्पन्न अतिरूपवती कन्यासे बिवाह होय औ इसबिधिके करनेसे कन्याको बरमिलै औ कुरूपा नारीभी सौभाग्यपावै औ बिद्याकी इच्छाहोय तो बिद्यामिलै यह सूर्य्यनारायणने अपनेमुखसे कहा है इसपूजनके करने से धनधान्य सन्तान पशुआदिकी नित्य बढ़तीहोतीहै औ अन्तमें सद्गति मिलती है॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

नैमित्तिकार्चन औ ब्रतके उद्यापन का बिधान,ब्रतका फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे साम्ब नित्यार्चन का विधान औ फल तो हमने बर्णनकिया अब नैमित्तिक यज्ञोंकीविधि कहतेहैं सप्तमी शुक्ल पंचमी ग्रहण अथवा संक्रांतिके पहिले दिन एकबार हविष्य अन्न भोजनकर सायङ्काल के समय आचमनकर अरुणको प्रणामकरै औ सब इन्द्रियोंको वश

मेंकर कुशकीशय्यापर सोवै दूसरेदिन प्रातःकालउठ विधि से स्नानकर सूर्य्य भगवान् का पूजनकरै औ सूर्य्याग्नि में हवनकर तर्पणकरै वेदीबनाय अस्त्र मन्त्रसे उल्लेखन औ गायत्री मन्त्र करके प्रोक्षणकर पूर्व्वाग्र औ उत्तराग्र कुशा बिछाकर सब पात्रोंका शोधनकरै दो कुशाका प्रादेशमात्र एक पवित्र बनाय उसकरके सब वस्तु प्रोक्षण करै घृतको अग्निपर रखकर गलाय उत्तरकी ओर पात्रमें रक्खै फिर जलताहुआ उल्मुकलेकर पर्य्यग्निकरण औ घृतका उत्पवन करै फिर अग्निमें सूर्य्यनारायणका अर्चनकर मूलमन्त्रसे हवनकरै दहिनेहाथमें स्रुवालेवै औ बामहस्तकरके भूमिमें लिखेहुये यन्त्रको स्पर्श कियेरहै हृदय मन्त्रसे सब क्रियाकरै फिर पूर्णाहुति देकर तर्पणकरै औ ब्राह्मणोंको उत्तमभोजन करावै औ यथाशक्ति दक्षिणादेवै तो मनोबांछित फलपावै माघमें वरुणनामक सूर्य्यका पूजनकरै फाल्गुणमें सूर्य्य चैत्र में श्वेतांशु वैशाखमेंधाता ज्येष्ठमेंइन्द्र आषाढ़में रवि श्रावण में भग भाद्रपदमें यम आश्विनमें पर्जन्य कार्त्तिकमें त्वष्टा मार्ग्गशीर्षमें मित्र औ पौषमें विष्णुनाम सूर्य्य का अर्चन करै इसप्रकार एक दिन पूजनकरनेसे वर्षभर करी पूजाका फल प्राप्तहोताहै प्रथम रीतिसे एकवर्ष ब्रतकरके रत्नों से जटित सुवर्ण का रथबनाय उसमें सातघोड़े लगावै रथके मध्यमें सुवर्ण कमलके ऊपर रत्नोंके भूषणोंसे भूषित सुवर्ण की सूर्य्यनारायणकी मूर्त्ति स्थापनकरै रथके आगे सारथि बैठावै फिर बारहब्राह्मण बारह महीनोंके सूर्य्योंकी भावना से औ तेरहवें मुख्य आचार्य्य को साक्षात् सूर्य्यनारायण समझ पूजनकरै फिर वह रथ छत्र गो भूमि आदि

र्य्य को देवै औ रत्नों के भूषण वस्त्र दक्षिणा औ एक एक घोड़ा उन बारह ब्राह्मणोंकोदेवै औ हाथजोड़ यहप्रार्त्थना करै कि इसके अनन्तर ब्रत न करने से मुझे दोष न होय ब्राह्मणों सहित आचार्य्यभी यह आशीर्बाद देवै कि सूर्य्य भगवान् तुमपर प्रसन्नहोयँ औ जिसमनोरथके पूर्णहोनेके लिये तुमने यह ब्रतकिया वह तुम्हारा सिद्धिहोय औ अब ब्रत न करनेसेभी दोष न होगा इसप्रकार आशीर्वाद पाय दीन अन्धे अनाथोंको भोजनकराय औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा देकर ब्रत समाप्तकरै जो पुरुष इस ब्रतको एकबर्षकरै वह सौयोजन लम्बे चौड़े देशका राजा होय औ सौबर्षसेभी अधिक निष्कण्टक राज्यकरै औस्त्री इसब्रतके करनेसेरानीहोय जो धनहीन ब्रतकेअन्तमें पूर्बोक्त बिधिसे तांबेकारथ ब्राह्मणकोदेवै वह अस्सीयोजन लम्बा चौड़ा राज्यपावै पिष्ट अर्त्थात् आटेकारथ बनाकर देवै तो साठ योजन विस्तारका राज्यमिलै इस ब्रतका करने हारा एककल्प सूर्य्यलोकमें निवासकर राजाहोताहै जो मनकरके भी सूर्य्यभगवान्का पूजनकरै उसको आधि ब्याधि दारिद्र नहीं स्पर्शकरते फिर जो भक्तिसे यह ब्रतकरै औ मंत्रों से सूर्य्यनारायणका पूजनकरै वह तो क्यों न आधि ब्याधियों से मुक्तहोय हे पुत्र यह विधान सूर्य्यनारायणने हमको अपने मुखसे उपदेश किया था हमने आजतक इसको गुप्त रक्खा आज तुमसेकहाहै हमने इसीब्रतके प्रभावसे हजारों पुत्र पौत्रपाये दैत्यजीते देवता बशकिये इस हमारे चक्रमें सदा सूर्य्य भगवान् निवास करतेहैं नहीं तो इसमें इतना तेज कैसेहोता औ इसकरके दैत्य किसाविधि से जीते जाते

सूर्य्यनारायणका नित्य जप ध्यान पूजनआदि करनेसे हम जगत्पूज्य भये हे पुत्र तुमभी इसविधिसे सूर्य्यनारायणका आराधन करो जिससे भांति २ के सुख प्राप्तहोयँ औ इस विधानको गुप्तरक्खो जो पुरुष भक्तिसे इसविधानको श्रवण करै वहभी पुत्र पौत्र आरोग्य औ लक्ष्मीपावै॥

बियालीसवां अध्याय॥

माघ आदि ज्येष्ठआदि औ आश्विनआदि चार २ महीनोंमें सूर्यपूजन विधान,रथसप्तमी का फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे पुत्र माघ शुक्ल पंचमी को एक बार भोजनकर षष्ठी को नक्तव्रत करै कोई पंचमी को औ कोई षष्ठीको उपवास करना कहते हैं षष्ठीके दिन उपवास कर सूर्य्यनारायण का अर्चनकरै रक्तचन्दन करबीरकेपुष्प गुग्गुलधूप औ पायस नैवेद्य आदिसे माघ आदि चारमहीने सूर्य्यनारायण का पूजन करै औ आत्मशुद्धीके लिये गोबरके जल से स्नानकरै औ गोबर का प्राशनकरै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै ज्येष्ठ आदि चारमहीने श्वेतचन्दन श्वेतपुष्प अगरका धूप औ उत्तम नैवेद्य सूर्य्य नारायणके अर्पण करै पंचगव्य प्राशन करै औ ब्राह्मण भोजन करावै आश्विन आदि चारमास अगस्त्य पुष्प अपराजित धूप औ गुड़के अपूप नैवेद्य औ इक्षुरस सूर्य्य भगवान्को समर्पणकरै औ यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनकरावै कुशाके जलसे स्नान करै औ कुशोदकही प्राशनकरै ब्रत की समाप्ति में रथ का दान करै औ सूर्य्य भगवान्की प्रसन्नताके लिये रथ यात्रा करै इस रथसप्तमी को जो उपवास करै वह धन पुत्रकीर्त्ति विद्या आरोग्य आयुष् औ

उत्तमकान्ति पाता है हे पुत्रतुमभी इस व्रतकोकरो जिससे तुम्हारा सब अभीष्ट सिद्धिहोय इतनाकह शंख चक्र गदा औ पद्मके धारनेहारे श्रीकृष्ण भगवान् अन्तर्द्धानभये औ उनकी आज्ञापाय साम्बभी भक्तिसे रथसप्तमी का व्रत औ सूर्य्यनारायण का आराधन करने में प्रवृत्तभये औथोड़ेही कालमें अपना मनवांछित फल पाया॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

सूर्य्यभगवान् के रथका वर्णन॥

राजाशतानीक पूछतेहैं कि हेसुमन्तुमुनि सूर्य्यनारायण की रथयात्रा किसविधिसे करनीचाहिये रथकैसाबनावे औ यह रथयात्रा किसने प्रवृत्तकरीहै यह आप कृपाकर वर्णन करें यह सुन सुमन्तुमुनि कहतेभये कि हे राजा एकसमय सुमेरु पर्वतमें रुद्र ने ब्रह्माजी से पूछा कि हे ब्रह्माजी यह लोक को प्रकाशकरने हारे सूर्य्य भगवान् रथ में बैठ किस प्रकार भ्रमणकरतेहैं यहआप वर्णनकरें तब ब्रह्माजीने कहा कि महाराज जिसप्रकार सूर्य्यनारायण रथ में बैठ भ्रमण करतेहैं उसका हम वर्णनकरते हैं आप प्रीतिसे श्रवणकरें एक चक्र तीनिनाभि पांच अरे एक नेमि औ आठ बन्धो करकेयुक्त दशहजार योजनलम्बे चौड़े अति प्रकाशवान् सुवर्णकेरथमेंबिराजमानहो सूर्य्यभ्रमणकरतेहैं रथकेउपस्थ से ईषादण्ड तीनगुणाहै अरुण वहां बैठतेहैं पवनकेसमान वेगवान्छंदोरूप सातघोड़े रथमेंलगेहैं सम्वत्सरके जितने अवयवहैं वहीरथकेअंग हैं तीनकाल चक्रकी तीनिनाभिहैं पांचऋतुअरे औ छठाऋतुनेमिहै दक्षिण औ उत्तर येदोनों अयन रथकेदोभागहैं मुहूर्त्त रथका अभिषव क्षण अक्षदंड

निमेष अनुकर्ष लव ईषादण्ड रात्रिवरूथ और धर्म्म उस रथका ध्वजहै अर्थ औ काम धुरी का अग्रभाग गायत्री त्रिष्टुप् जगती अनुष्टुप् पंक्तिबृहती औ उष्णिक ये सात छन्द सातअश्वहैं धुरीपर चक्र घूमताहै औ वह धुरी ध्रुवमें लगीहै ऐसेरथमेंबैठ सूर्य्यनारायण आकाशमें भ्रमण करते हैं एकचक्रका रथहै औ बाईं ओर अश्वलगेहैं दहिने युग औ धुरीके ऋग्वेद तथा यजुर्वेद धारण कियेहैं दो रश्मि अर्थात् घोड़ोंकीबाग युगमें बँधीहैं उत्तरायण में वे रश्मि कम होजाते हैं औ दक्षिणायन में बढ़जाते हैं ध्रुवके चारों ओर यहरथ भ्रमता है एकसौअस्सी मण्डल उत्तरायणमें औ इतनेही दक्षिणायन में रथके होते हैं देवऋषि गन्धर्व अप्सरा सर्प ग्रामणी औ राक्षसये सूर्य्यकेरथके साथचलते हैं औ दो २ मासके अनन्तर इनकी बदलीहोती है धाता अर्यमा पुलस्त्य पुलह तुम्बरु नारद शंख बासुकि ऋतु-स्थला पुंजिकस्थला रथकृत्स्न रथौजा रक्षोहेतु औ प्रहेतु ये सबचैत्र औ बैशाखमें रथकेसाथरहतेहैं मित्रबरुण अत्रि वशिष्ठ तक्षक अनन्त मेनका सहजन्या हाहा हूहू रथस्वन रथाचित्र पौरुषेय औ बध ये ज्येष्ठ औ आषाढ़में साथ र-हतेहैं इन्द्र बिवस्वान अंगिरा भृगु एलापर्ण शंखपाल प्र-म्लोचा दुन्दुका भानु दर्दूर औ सर्प तथा ब्याघ्र ये श्रावण भाद्रपदमें साथरहतेहैं पर्जन्य पूषा भरद्वाज गौतम चित्र-सेन व सुरुचि विश्वाची घृताची ऐरावत धनंजय सेनजित् सुसेन आप औ वात ये आश्विन कार्त्तिकमें साथरहते हैं अंशुभग कश्यप क्रतु महापद्म कर्कोटक चित्रांगद ऊर्णायु उर्व्वशी सहजन्या प्रसेन सुषेण नकुल और गज ये मार्ग

पौषमें रहते हैं पूषा बिष्णु यमदग्नि विश्वामित्र कम्बल अश्वतर धृतराष्ट्र सूर्यवर्चा तिलोत्तमा रंभा ऋतजित् सत्यजित् ब्रह्म औ उपेत ये माघ फाल्गुणमें रथके साथ भ्रमण करतेहैं ब्रह्माजी कहतेहैं कि और भी मन्देहनाम राक्षसोंके बधकेलिये औ सूर्य्यनारायणकी रक्षाके लिये जोजो रथके साथ भ्रमते हैं उनका हम वर्णन करते हैं॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

रथके साथवाले देवतावोंका कथन, गमनका वर्णन, उदयास्तकाभेद॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे रुद्र हमने अपनाअवतार अरुण रथका सारथी बनाया इन्द्रने माठर वायुने नागबाहन गरुड़ने ताक्ष्यनाम अपना अवतार रथके साथ दियाहै जिसके नख और चोंचही शस्त्रहैं औ रथकेआगे उड़ता चलताहै काल ने दण्डायुध वसुओं ने आयुध औ आगारिक ये दे अग्निनेपिंगल यमनेदण्ड बरुणने पाशहस्त कुबेरने विष्णु अश्विनीकुमारोंने काल उपकाल नरनारायण ने वार्क्ष औ प्रधान विश्वेदेवोंने आठोंदिशाओंकी रक्षाकेलिये क्षारद्वार धिषण कृष्ण वैराज शंखपाल पर्जन्य और जये आठदिये हैं सात मातृकाओंने सात मरुत् वेदोंने ओंकार औ वषट्कार शिवजी ने विनायक सब नागों ने मिलकर शेष औ वासुकि औ हे रुद्र आपने मोषकनाम अपना गण रथ के साथ रक्षाकेलिये दियाहै ऐसा कोई देवता नहीं जो रथके पीछे न चलै सब इनका सेवन करते हैं इन सूर्य्यनारायण के मण्डलको ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मस्वरूप यज्ञकरनेहारे यज्ञविष्णु भक्तविष्णु शैव शिवस्वरूप औ गणेशकेभक्त गणपतिरूप मानते हैं येसब स्थानके अभिमानी देवता अपने तेजकरके

सूर्य्यनारायणके तेजकी वृद्धिकरते हैं देवता औ ऋषिस्तुति पढ़तेहैं गन्धर्वगातेहैं अप्सरा रथकेआगे नाचतीहैं ग्रामणी रक्षाकरते हैं सर्प्प रथको धारते हैं औ राक्षस रथके पीछे २ चलते हैं बालखिल्य नाम साठहज़ार ऋषि रथको चारों ओर घेरलेते हैं दिवस्पति औ स्वभू रथके आगे भर्ग द-हिनी ओर पद्मज बाईं ओर कुबेर दक्षिण दिशा में वरुण उत्तरदिशा में यमराज आगे वीतिहोत्र औ हरि रथके पीछे रहते हैं रथके पीठमें पृथिवी मध्यमें आकाश रथकीकान्ति में स्वर्ग ध्वजा में दण्ड ध्वजाग्र में धर्म्म पताकामें ऋद्धि वृद्धि श्री और पार्व्वती निवास करती हैं मैनाक पर्व्वत छत्रकादण्ड हिमाचल छत्ररूप होकर सूर्य्य भगवान् के साथरहते हैं इन देवताओंका बल तप तेज योग औ तत्त्व जैसाहै वैसेही सूर्य्यभगवान् तपते हैं येही सब देवता तपते हैं बर्षते हैं जीवोंके अशुभकर्म निवृत्तकरते हैं औ प्रजाको आनन्द देतेहुये सब भूतोंकी रक्षाकेलिये सूर्य्यनारायणके साथ भ्रमण करते हैं अपने किरणोंसे चन्द्रमाकी वृद्धिकर सूर्य्यभगवान् देवताओंका पोषण करते हैं शुक्लपक्षमें सूर्य्य किरणों करके चन्द्रमाकी वृद्धि होतीहै औ कृष्णपक्षमें दे-वता उसको पानकरते हैं अपने किरणों से पृथिवीका रस पीकर सूर्य्यनारायण वृष्टिकरते हैं उससे सब ओषधी औ अनेक प्रकारके अन्न उत्पन्नहोते हैं जिनसे पितर औ म-नुष्यों की तृप्ति होती है एक चक्र रथ में बैठ एक दिनमें सातद्वीप औ समुद्रों करके युक्त पृथिवीके चारों ओर सूर्य्य नारायण भ्रमण करते हैं उस रथ में अति बेगवान् हरे रङ्ग के वेदस्वरूप औ क्षुधा तथा श्रमसे रहित सात अश्व

कल्पके प्रारम्भ में लगाये हुयेही प्रलय तक रथको लिये भ्रमण करेंगे एक बर्षमें तीनसौ साठ भ्रमणहोते हैं बालखिल्य ऋषिस्तुति करते हैं अमरावती नाम इन्द्रकीपुरीमें जब मध्याह्न होय उस समय यमकी संयमिनी पुरी में सूर्योदय बरुणकी सुखानाम नगरीमें अर्द्धरात्रि औ सोमकी विभानामपुरीमें सूर्य्यास्तहोता है संयमिनीमें जब मध्याह्न होय तब सुखामें उदय विभामें अर्द्धरात्रि औ अमरावती में सूर्य्यास्तहोताहै सुखामें जब मध्याह्नहोय उससमयविभा में उदय अमरावतीमें आधीरात्रि औ संयमिनीमें सूर्य्यास्त होता है जिस समय विभानगरी में मध्याह्न होय उस समय अमरावती में सूर्य्योदय संयमिनीमें अर्द्धरात्रि औ सुखानाम वरुणकी नगरी में सूर्य्यास्त होता है इसप्रकार मेरुपर्वत की प्रदक्षिणा करतेहुये सूर्य्यनारायण उदय औ अस्त करते हैं प्रभात से मध्याह्न पर्यन्त सूर्य्य किरणों की वृद्धि औ मध्याह्नसे अस्तपर्यंत ह्रासहोताजाताहै जहां सूर्य्य उदयहोयँ वह पूर्वदिशा औ जहां अस्तहोयँ वह पश्चिम दिक्होती है एकमुहूर्त्तमें भूमि के प्रमाण का तीसवांभाग सूर्य्य चलते हैं दोहज़ारदोसौदो योजन सूर्य्यभगवान् का रथ एकनिमेषमें चलता है सूर्य्यभगवान् के उदयहोतेही इन्द्रपूजा करते हैं मध्याह्नमें यमराज अस्तके समय वरुण औ अर्द्धरात्रिको सोमपूजन करतेहैं विष्णु शिव रुद्र ब्रह्मा अग्नि वायु निर्ऋति ईशान आदि सब देवता कल्याणके अर्थ सूर्य्यभगवान् का आराधन सदा करते हैं॥

उनचासवां अध्याय॥

सूर्य्यभगवान् के गुण, ऋतुओं में इनके अलग २ वर्ण, वर्णोंका फल॥

रुद्रभगवान् कहते हैं कि हे ब्रह्माजी आपने सूर्य्यनारायणका बहुत माहात्म्य वर्णनकिया जिसके सुननेसे हमको बहुत आनन्दमिला अब फिर भी आप उनकाही प्रभाव कथनकरैं यह रुद्रका वचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे रुद्र त्रैलोक्य का मूल सूर्य्य हैं देवता असुर मनुष्य इन्द्र चन्द्र ब्रह्मा विष्णु शिव आदि जितने देवता हैं सबमें इनकाही तेज है अग्नि में आहुति दीहुई सूर्य्यभगवान् को पहुँचती है वे वृष्टि करते हैं वृष्टिसे अन्नहोताहै औ अन्न से प्रजाका जीवनहै सूर्य्यसे जगत्की उत्पत्ति औ सूर्य्यमें ही लयहोताहै ध्यानकरनेहारे इनकाही ध्यान करते हैं मोक्षार्थी पुरुषोंकेलिये ये मोक्षस्वरूप हैं जो सूर्य्यभगवान् न होयँ तो क्षणमुहूर्त्त दिन रात्रि पक्ष मास ऋतु अयुग वर्षयुग आदि कालविभाग न होय कालविभाग न होनेसे जगत् का कोई व्यवहार न चलै ऋतुओं का विभाग न होय फिर फल मूल खेती ओषधी आदि क्योंकर उत्पन्न होयँ औ इनकी उत्पत्ति बिना जीवोंका जीवन किसबिधिहोय इससे इससंसार का मूल सूर्य्यभगवान्हीहैं सूर्य्यभगवान् बहुत तपैं परिवेषहों और भी किसी प्रकार की विकृतिहोय तो वृष्टिहोतीहै बसन्तऋतुमें सूर्य्यभगवान् कपिलवर्ण ग्रीष्म में तप्त सुवर्ण के समान वर्षामें श्वेत शरद्में पाण्डु हेमन्त में ताम्रवर्ण औ शिशिरऋतुमें रक्तवर्णहोतेहैं सूर्य्यभगवान् कृष्णवर्णहोयँ तो जगत्में रोगहोय ताम्रवर्णहोयँ तो सेनापति का नाश पीतवर्णहोने से राजकुमारका मृत्यु श्वेतवर्ण

से राजपुरोहित का ध्वंस चित्र औ धूम्रवर्ण होने से जगत् में चोर औ शस्त्रका भयहोय परन्तु ऐसावर्ण होने के अनन्तर जो वृष्टिहोजाय तो ये अनिष्ट फल नहीं होते॥

पचासवां अध्याय॥

सूर्य्यनारायणके अभिषेकका वर्णन, रथयात्राके प्रथम दिनका कृत्य॥

रुद्र पूछते हैं कि सूर्य्यनारायणकी रथयात्रा किसकाल में औ किस विधिसे करनीचाहिये औ रथयात्रा करनेहारे पुरुषको औ जो रथको खैंचैं रथके साथजायँ रथ के आगे नृत्यकरैं गावैं उनको क्याफल होताहै यह आप लोकहित के लिये वर्णनकरैं यह सुन ब्रह्माजी कहने लगे कि हे रुद्र आपने बहुत उत्तम प्रश्नकिया अबहम इसका वर्णनकरते हैं आप प्रीतिसे श्रवणकरैं सूर्य्य रथयात्रा औ इन्द्रोत्सव ये दोनों जगत्के कल्याणके अर्थ हमने प्रवृत्तकिये हैं येदोनों उत्सव जिस देशमें हों वहां कभी राजचोर दुर्भिक्ष आदि उपद्रव नहींहोते इसलिये उपद्रव शान्तिके लिये ये दोनों उत्सव करनेचाहिये मार्गशिरकी शुक्ल सप्तमीको घृतकरके सूर्य्यनारायण को श्रद्धासे स्नानकरावै वह पुरुष सुवर्ण के विमानमें बैठ अग्निलोक को जाय वहां दिव्य भोगभोगै जो पुरुष शर्करासहित भात मिठाई औ चित्रवर्णका भात सूर्य्यनारायणके अर्पणकरै वह ब्रह्मलोकपावै जो सूर्य्यनारायणके उबटनालगावै वह सूर्य्यलोकमें निवासकरै। पौषशुक्ल सप्तमी को तीर्थों के जल अथवा और पवित्र जलसे वेद मन्त्रोंकरके सूर्य्यनारायणको स्नानकरावै औ प्रयाग पुष्कर कुरुक्षेत्र नैमिष प्रथूदक रुद्रजट शोण गोकर्ण ब्रह्मावर्त्त कुशावर्त्त विल्वक नीलपर्वत गङ्गाद्वार गङ्गासागर कालप्रिया

मित्रवन भाण्डीरवन नक्रतीर्थ रामतीर्थ गङ्गा यमुना सरस्वती सिन्धु चन्द्रभागा नर्मदा बिपाशा तापी वेत्रवती गोदावरी पयोष्णी कृष्णा वेणा शतद्रू पुष्करिणी कौशिकी सरयू आदि सब तीर्थ नदी औ समुद्रोंका उससमय स्मरण करै औ दिव्यआश्रम औ देवस्थानोंको भी ध्यावै इसप्रकार स्नानकराय तीनदिन सातदिन एकपक्ष अथवा महीने भर उसस्नान के स्थानमेंहीं सूर्य्यनारायण को रक्खै औ नित्य भक्तिसे पूजनकरै। माघकृष्ण सप्तमीको पक्कीईंटों से बनीहुई बेदीपर सूर्य्यनारायणको स्थापनकर हवन ब्राह्मण भोजन वेदपाठ औ भांति २ के नृत्य गीत वाद्य आदि उत्सव करावै फिर माघशुक्ल पञ्चमीको एकबार भोजन करै षष्ठी को रात्रिके समय भोजन औ सप्तमी को उपबासकरै हवन ब्राह्मण भोजन आदि कराय सब को दक्षिणा देकर पौराणिक का भलीभांति पूजनकर सुवर्ण के रत्नजटितरथ में सूर्य्यनारायण को विराजमानकरै औ वह रथ उसदिन मन्दिरके आगेही खड़ारहै रात्रिको सब जागरण करैं औ नृत्यहोतारहै दूसरेदिन अर्थात् माघशुक्ल अष्टमीको रथयात्राकरै रथके आगे भांति २ के बाजेबाजैं नृत्य गीत औ वेदध्वनि होतीचलै पहिले रथनगर के उत्तर द्वारपरजाय फिर क्रमसे पूर्व दक्षिण औ पश्चिमद्वारों परभी जाय इस प्रकार रथयात्रा करने से राज्य के सब उपद्रव निवृत्तहोते हैं युद्धमें जयमिलताहै सबप्रजा औ पशु निरोग रहते हैं रथयात्रा करनेहारेकी सन्तान बढ़तीहैं औ रथको खैंचने वाले तथा रथकेसाथ जानेवाले सूर्य्यलोकको जातेहैं॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

रथके अंगोंका वर्णन व नगरके चारद्वारों पर लेजानेका विधान ॥

रुद्रकहते हैं कि हे ब्रह्माजी मन्दिर में स्थापनकरी हुई प्रतिमा को किसप्रकार उठावै औ रथ में स्थापन करै यह हमको बहुत संशयहै क्योंकि उस प्रतिमाकी तो स्थिर प्रतिष्ठा हो रहीहै फि रक्योंकर चलासक्ते हैं यह सन्देह आप निवृत्त कीजिये यहरुद्रका वचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि संबत्सरके अवयवों करके जो रथ प्रथम हमने वर्णनकिया मुख्यतो वहीरथहै उसकोदेख विश्वकर्म्माने सब देवताओं के लिये रथ बनाये विश्वकर्म्माका बनायारथ पूजनकेलिये सूर्य्यभगवान्ने अपनेपुत्र मनुकोदिया मनुने राजाइक्ष्वाकु को दिया तबसे यह रथयात्रा चलीआतीहै सूर्य्यभगवान् तो नित्य आकाशमें भ्रमणकरतेहैं इसलिये उनकी प्रतिमा के चलानेमें कुछ दोषनहीं ब्रह्मा विष्णु शिवआदि देवताओंकी प्रतिमा स्थापनहोनेके अनन्तर न उठानी चाहिये सूर्य्यनारायणकी रथयात्रा प्रतिबर्षकरै सोने चांदी अथवा उत्तम काष्ठका अति सुन्दर औ बहुत दृढ़ रथबनावै उसके बीच प्रतिमाको स्थापनकर उत्तम लक्षणों करकेयुक्त अति सुशील घोड़े रथमें जोड़ै औ उन घोड़ोंको केसरसे रँगकर अनेक भूषण पुष्पमाला चामर आदिसे अलंकृतकरै इस प्रकार रथको तय्यारकर सब देवताओं का पूजनकर ब्राह्मण भोजन करवाय दक्षिणादे दीन अंध कृपण अनाथों को भोजन आदिसे सन्तुष्टकरै किसीको विमुख न जानेदेवै जो क्षुधाकरके पीड़ित कोईविमुखजाय तो पितरोंका अधःपात होताहै इसलिये इस सूर्य्यभगवान् के यज्ञमें भोजन

औ दक्षिणासे सबको सन्तुष्टकरै औ सब देवताओंको इस मन्त्रसे बलिदेवै। बलिंगृह्णंतुमेदेवा आदित्योवसवस्तथा। मरुतोथाश्विनौरुद्रः सुपर्णाःपन्नगाग्रहाः १ असुरायातुधानाश्च रथस्थायेतुदेवताः दिक्पालालोकपालाश्च येचविघ्नविनायकाः २ स्वस्तिकुर्वंतुजगतो येचदिव्यामहर्षयः माविघ्नंमाचमेपाप्मामाचमेपरिपंथिनः सौम्याभवंतुतृप्ताश्च देवाभूतगणास्तथा ३ इन मन्त्रों से बलि देकर वामदेव्य मानस्तोकरथन्तर औ आकृष्णेन इत्यादि ऋचा पढ़ै। फिर पुण्याह वाचनऔ अनेक प्रकारके वाद्योंकाशब्दकर सुन्दर मार्ग्गमें रथचलावै जिसमें धक्का न लगै घोड़े न होयँ तो अच्छे बैल रथमें लगावै अथवा पुरुषही उस रथको खैंचैं तीस अथवा सोलह ब्राह्मण प्रतिमाको मन्दिरसे उठाकर रथमें बड़ीसावधानी से विराजैं औ दोनोंओर सूर्य्यनारायणकी दोनों पत्नियों को स्थापन करैं। सदाचार औ वेदपाठी दो ब्राह्मण प्रतिमाओं के पिछिली ओर बैठैं औ प्रतिमाओंको सम्हालेरहैं सारथीभी चतुरहोय सुवर्ण दण्ड से भूषित छत्र रथके ऊपर लगावै औ अतिसुन्दर रत्नोंसे जड़े सुवर्णदण्ड करकेयुक्त ध्वजा रथपर चढ़ावै जिस में अनेक रंगोंकी सातपताका लगीहों रथकेअग्रभागमें सारथिहोकर ब्राह्मणबैठै शूद्रकभी रथको स्पर्श न करै जो शूद्र रथका स्पर्श करै उसकी संतति नष्टहोजाय ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्योंकोही रथके स्पर्शकरनेका अधिकारहै अपनेस्थान से चलकर पहिले नगरके उत्तरद्वारपर रथजाय वहां एक दिनरहै अनेकप्रकारके नाच तमाशे वेदपाठ पुराणकी कथा औ ब्राह्मण भोजन वहां करावै औ ब्राह्मणही सब उत्सवकरैं

नवमीके दिन रथचलकर पूर्वद्वारपर जाय एकदिनरहै वहां क्षत्रिय उत्सवकरैं तीसरे दिन दक्षिण द्वार पर रथरहै वहां वैश्य पूजन औ उत्सवकरैं चौथेदिन पश्चिमद्वारपररथजावै वहां सब शूद्र उत्सव करैं वहांसे नगरके मध्यमें रथ आवै औ सम्पूर्ण ब्राह्मण पूजन औ उत्सवकरैं उसदिन राजाभी बड़ा उत्सवकरै दीपमाला करावै ब्राह्मणोंको दान देवै औ भोजनकरावै फिर वहांसे अपने मन्दिरमें रथआवै तबसब नगरके लोग मिलकर पूजन औ उत्सव करैं औ एक दिन रात रथमेंही प्रतिमारहै दूसरे दिन रथसे उतार बड़ीधूम-धामसे मन्दिरमें स्थापनकरैं इसप्रकार सप्तमीसे त्रयोदशी पर्य्यन्त रथयात्राहोयऔ चतुर्दशीको अपने स्थानमें स्थापनकरैं इस रथयात्राके करनेसे सब विघ्न निवृत्तहोते हैं॥

बावनवां अध्याय॥

रथके अंग भंग होनेका दुष्टफल उसकी शांति ग्रहशांति॥

रुद्रपूछते हैं कि हे ब्रह्माजी आप फिर रथयात्राका वर्णन करैं इसके सुनने से हमको परम आनन्द प्राप्तहोताहै रथ अपने स्थानसे किसप्रकार चलै औ रथके साथ कौनचलैं यह आप कथनकरैं यह सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे रुद्र रथको धीरे २ सम मार्ग्ग में चलावै जिसमें रथ को धक्का आदि नलगे पहिले मार्ग्गशुद्धिकेलिये प्रतीहार औ दण्डनायक उस मार्ग्गमेंजायँ तिसके पीछे सूर्य्यनारायणकारथ औ उनकेभी पीछे पिंगलमाठर दण्डलेखक आदि सूर्य्य-भगवान्के गणोंके रथचलैं ऐसी युक्तिसे रथको लेजाय कि उसका कोई अंगभंग न होय ईषादण्ड टूटै तो ब्राह्मणोंको भयहोय अक्ष टूटै तो क्षत्रियों को भय तुला भंगहोय तो

वैश्योंको औ शमीके टूटजानेसे क्षत्रियोंको भयहोताहै युग
के भंगसे अनावृष्टि पीठ के भंगसे प्रजा भय रथका चक्र
टूटनेसे परचक्र अर्थात् शत्रुकी सेनाका आगमन ध्वजाके
गिरनेसे राजाकाभंग औ प्रतिमा खण्डित होजानेसे राजा
का मृत्युहोताहै छत्रटूटै तो युवराज को भयहोय जो इनमें
कोईभी उत्पातहोय तो शान्तिकरै औ ब्राह्मणोंको दानदेवै
भोजनकरावे औ रथके ईशानकोण में वेदी अथवा कुण्ड
बनाय घृत औ समिधाओंसे देवता औ ग्रहोंकी प्रसन्नता
के लिये हवनकरै औ इन मन्त्रोंसे आहुति देवै॥ स्वस्त्य
स्त्विहचविप्रेभ्यः स्वस्तिराज्ञस्तथैवच। गोभ्यःस्वस्तिप्रजा
भ्यश्च जगतःशान्तिरस्तुवै १ शन्नोस्तुद्विपदेनित्यं शान्ति
रस्तुचतुष्पदे। शंप्रजाभ्यस्तथैवास्तुशंसदात्मानिचास्तुवै २
भूःशान्तिरस्तुदेवेशभुवःशान्तिस्तथैवच। स्वश्चैवास्तुतथा
शान्तिः सर्वत्रास्तुगतारवेः ३ त्वंदेवजगतःस्रष्टा त्वष्टाचैव
त्वमेवहि। प्रजापालमहेशान शान्तिंकुरुदिवस्पते ४ इन
मन्त्रोंसे हवनकर अपनी जन्मराशिसे दुष्टस्थान में स्थित
ग्रहोंकी प्रीतिके लिये समिधा होमकरै ये समिधा एक २
प्रादेश लम्बी बनावै सूर्य्यकेलिये अर्ककी समिधा चन्द्रके
पलाशकी भौमके खदिरकी बुधके अपामार्गकी बृहस्पति
के पीपलकी शुक्रकेगूलरकी शनैश्चरके शमीकी राहुकेदूर्बा
की औ केतुके हवनके लिये कुशाकी समिधा कल्पना करै
उत्तमगौ शंखलालरंगका बैल सुवर्ण वस्त्र श्वेतघोड़ा काली
गौ लोहका पात्र औ बकरा ये क्रमसे नौ ग्रहोंकी दक्षिणा
है गुड़ औ भात घी औ खीर हविष्य अन्न खीर दहीभात
घृत तिल औ उड़द के बने पक्वान्न मांस औ चित्रवर्ण का

भात और कांजी ये नवग्रहोंके भोजन हैं जिसप्रकार शरीर में कवच पहिनलेनेसे बाण नहीं लगते इसीप्रकार शान्ति करनेसे किसीप्रकारका उपघात नहींहोता अहिंसक जितेन्द्रिय नियममेंस्थित औ न्यायसे धनसम्पादन करनेवाले पुरुषकेऊपर ग्रह सदा अनुग्रहकरते हैं यश धन सन्तानऔ सर्वोपद्रव शान्तिकेलिये सदा ग्रहोंका पूजनकरनाचाहिये सन्तानहीन कन्या सन्तानवाली मृतवत्सा औ खोटीसन्तानवाली स्त्री सन्तानदोष निवृत्तहोनेके लिये जिसका राज्य नष्टहोगयाहो वह राज्यकेलिये रोगीपुरुषरोगशान्तिकेलिये अवश्य ग्रहशान्ति करै सुवर्ण स्फटिक ताम्र चन्दन सुवर्ण चांदी लोहे औ सीसेकी नवग्रहोंकी प्रतिमा बनावै अथवा इनके चित्रही लिखलेवै औ जिसग्रहका जो रंगहो उसीरंग के बस्त्र पुष्प चन्दन बलिआदिदेवै औ गूगलका धूप सबके अर्पणकरै आकृष्णेनरजसाइत्यादिमंत्रोंकरकेएक २ ग्रहके नामसे समिधाघृत शहत औ दहीकरके अट्ठाईस२आहुति देवै औ ब्राह्मणोंको भोजनकराय यथाशक्ति दक्षिणा देवै मनुष्यों का उदय औ सम्पत्तिका नाश ग्रहोंके आधीन है इसलिये ग्रहशांति अवश्यकरनीचाहिये ग्रहोंका जो पूजन करे उसको ग्रहसब प्रकारका सुखदेते हैं औ इनका अपमान करै उसको अनेकभांतिका दुःख मिलताहै यज्ञकरनेहारे सत्यवादी जप होम उपबास आदिमें तत्पर औ धर्मात्मा मनुष्योंको ग्रह पीड़ा नहींहोती इसप्रकार शांतिकर फिर रथको चलावै औ बाक़ीके मार्गमें घुमाय कर अपने स्थानमें पहुँचावै औ वहां पहुँचरथमें स्थित देवताओंका पूजन करै उत्पातहोने पर ग्रहोंकी भांति रथमें स्थित सब

देवताओंका भी पूजनकरै तब सब प्रकारकी शांतिहोय ॥

तिरेपनवां अध्याय ॥

सब देवताओं के बलिद्रव्यका कथन ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हेरुद्र जिन २ देवताओंको जो जो नैवेद्य देना चाहिये वहहम कहतेहैं खीर औ यवागू ब्रह्माजीको कार्त्तिकेयको फल यमराजको मद्य औ मांस इन्द्रको अनेकप्रकारके भक्ष्य भोज्य अग्निको हविष्यअन्न विष्णुको उत्तमअन्न राक्षसोंको मद्यमांस औ भात रेवंतको मास भात प्रेतराजको तिल औ भात अश्विनीकुमारोंको अपूप वसुओंको मांस औ भात पितरोंको घी खीर औ शहत कात्यानीको यवागु लक्ष्मीको दही सरस्वती को त्रिमधुर बरुणको इक्षुरस औ भात खंड औ भात कुवेरको घृत औ तक्र मरुतोंको मातृकाओंको मांस भात दाल सर्वभूतोंको उल्लोपिकानाम पक्वान्न गणपतिको बहुत उत्तम मोदक नैऋतिको शष्कुली बिश्वेदेवोंको सर्व भक्ष्य ऋषियोंको दूध भात नागोंको दूध सूर्य्यभगवान्को नानाप्रकारकी बलि सूर्य्य के बाहनोंको घृत औ सुरा ब्रह्माको घृत रुद्रको तिल भास्करको देवदारु इन्द्रको राजवृक्ष विष्णुको सप्तधान्य वायु को मत्स्य औ भात यक्षोंको अनेक प्रकारके अन्नविकंकत वृक्ष के पुष्पोंकी माला यमको कर्णिकार पुष्प अश्विनीकुमारों को लक्ष्मीको कमल चण्डिकाको चन्दन सरस्वतीको मक्खन विनताको विष अप्सराओंको चमेलीके पुष्प बरुणको अग्नि मंथ वृक्षके फूल नैऋतको फल औ मूल कुवेरको वेलके फल मरुतों को कैथके फल गंधर्वोंको सुगन्ध द्रव्य वसुओंको कर्पूर गणाधिपको देवदारु भूतोंको वहेड़े

पितरों को पिंडमूल गौओं को यव मातृकाओं को अक्षत विघ्नपति को गूगल ऋषियों को पलाश के पुष्प विश्वेदेवोंको मोदक नागों को विष औ सूर्य्यनारायण को सब प्रकार के पुष्प धूप और नैवेद्य देवै इसप्रकार प्रातःकाल औ सायंकाल के समय सबको वलि देकर शान्तिके लिये ब्राह्मणों को तिल देवै अथवा तिलोंका हवन करै औ सब देवताओं को देवदारु का धूप देवै कश्यपके अंगसे तिल उत्पन्न भयेहैं इसलिये परम पवित्र औ देवता तथा पितरों के प्रियहैं तिलोंकरके स्नान करै औ तिलोंका दान हवन औ भोजन करै तो बहुत फलहै इसप्रकार ग्रह औ देवताओंका पूजन कर सूर्य्यभगवान्की आरतीकरै फिरदोनों पत्नियों सहित सूर्य्यनारायणको बेदीके ऊपर स्थापनकर दशादिन पूजाकरै इस दशाहिका पूजासेबहुत फल होताहै इस प्रकार पूजनकर अपनेस्थानपर स्थापन करै॥

चौवनवां अध्याय॥

रथयात्रा का फल॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेरुद्रजी इस प्रकारजो रथयात्राकरै अथवा दूसरेसे करावै वह परार्द्ध बर्षपर्य्यंत सूर्य्यलोकमें निवासकरताहै औ उसकेकुलमें दरिद्री तथा रोगीनहीं होता जोसूर्यभगवान्कोअभ्यंगकेलिये घृत समर्पणकरैवहउत्तम लोकपावै गंगा आदि तीर्थोंसे जललाकर जो स्नानकरावै वह वरुणलोक में निवासकरै जो लालरंग का भात और गुड़ नैवेद्यलगावै वह प्रजापति लोकको जाय जो भक्तिसे सूर्यनारायणको स्नानकराय पूजनकरै वह सूर्यलोकमें निवासकरै जो पुरुष रथपर सूर्यनारायण को चढ़ावै रथके

मार्ग्ग को शुद्धकरै अथवा पुष्प तोरण पताका आदि से अलंकृतकरै वे वायुलोकमें निवासकरैं जो नृत्य गीत आदि करके बड़ाउत्सवकरैं वे सूर्यलोकपावें सूर्यनारायण जब रथ में विराजमानहोयँ उस दिन जो जागरणकरैं वे धन पुत्र आदि से सुखीहोयँ जब रथकीयात्रा उत्तर अथवा दक्षिण दिशाकीओर होय उससमय जो दर्शनकरैं वे धन्यहैं जिस दिन रथयात्राकरै उससे वर्षवेंदिन फिर करनी चाहिये यदि वर्षके अनन्तर यात्रा न बनपड़े तो बारहवेंवर्ष बड़े उत्सव से यात्राकरै बीचमें न करै इसीप्रकार इन्द्रध्वज के उत्सव में भी यदि विघ्नहोजाय तो बारहवेंवर्षमेंहीकरै जो पुरुषरथ-यात्राकरैं वेइन्द्र आदि देवताहोतेहैं औ यात्रामें विघ्नकरने-हारे संदेहनाम राक्षस हैं इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे रुद्र इसीप्रकार बैशाखमेंभी रथयात्राकरै रथमें स्थापनकर प्रथम सूर्यनारायण का अर्च्चन करै पीछे परिवार देवता पूजै सबको बलिदेवै जो सूर्यनारायणका पूजन बिनाकिये और देवता का पूजनकरै वह निष्फल होताहै रथयात्राके समय जो सूर्यनारायण का दर्शनकरैं वे निष्पाप होजाते हैं षष्ठी सप्तमी पूर्णिमा अमावास्या औ रविवारकेदिन दर्शन करनेका बहुत पुण्यहै आषाढ़ कार्त्तिक औ माघकी पूर्णिमा को भी दर्शनका बहुत फलहै ये तीन मास भी रथयात्रा करनेके हैं उससमय जो उपवासकर भक्तिसे पूजनकरै वह उत्तम गतिपावै लोकोंपर अनुग्रह करनेके अर्थ प्रतिमामें स्थितहोकर सूर्य्यनारायण पूजन ग्रहण करते हैं जो पुरुष केश मुँडवाय स्नान जप होम दान आदि करै वह दीक्षित होताहै सूर्य्य भक्त पुरुष अवश्य केश मुँडवाये रहैं जो इस

प्रकार दीक्षितहोकर सूर्य्यनारायणका आराधनकरैं वेपरम गति को प्राप्तहोयँ हे रुद्र यह रथयात्रा का विधान हमने कहाहै इसको जोपढ़ैं अथवा श्रवणकरैं वे सब रोगोंसे मुक्त होयँ औ इसके करनेहारे सूर्य्यलोकमें जायँ॥

पचपनवां अध्याय॥

रथसप्तमी के व्रतका विधान फल औ उद्यापनविधि॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हेरुद्र माघमहीनेके शुक्लपक्षकी षष्ठी को उपवासकरै औ सब उपचारोंसे सूर्य्यनारायणका पूजन करै रात्रिको उनकेआगे शयनकरै सप्तमीको प्रभातहीउठ स्नान कर भक्तिसे पूजन कर ब्राह्मण भोजन करावै वित्त-शाठ्य न करै इस प्रकार एक वर्ष व्रत करके रथयात्रा करै तृतीयाको एकभक्त चतुर्थीको नक्तपंचमीको अयाचित औ षष्ठीको उपवासकर सप्तमीको पारणकरै सुवर्णका रथबनाय उसके बीचताम्र पात्रमें पद्मराग मोती नीलम पन्ना मूंगा हीरा आदिरत्नोंसे जड़ाहुआ पद्म स्थापनकर उसके मध्यमें सूर्य्यनारायण की प्रतिमा को बिराजै ध्वजा पताका पुष्प माला घंटा आदिसे रथको अलंकृत कर आचार्यको देवै जो उपाख्यान सहित सप्तमी कल्पको जानै वह आचार्य होताहै सुवर्णका रथ बनानेका सामर्थ न होयतो चांदीका बनावै ताम्र का अथवा काष्ठकाही रथ बनाय पंचरत्न सुवर्ण रेशमी वस्त्र औ ताम्र पात्र सहित आचार्यके अर्पण कर ब्राह्मण भोजन करावै हे रुद्र यह माघ सप्तमी बहुत उत्तम तिथिहै इस दिन कियाहुआ स्नानदान आदिकर्म्म सहस्रगुण होजाताहै ब्राह्मण इस व्रतकोकरै तो देवताहोय क्षत्रियकरै तो ब्राह्मणहोजाय वैश्यकरै तो क्षत्रिय होय औ

शूद्र इस व्रतके करनेसे वैश्य होजाताहै कन्या इस व्रतको करै तो विद्या विनयआदि गुणोंकरकेयुक्त पतिपावै विधवा इसव्रतकोकरै तो फिर किसीजन्ममें बैधव्य न होय अपुत्रा स्त्री को पुत्रमिलै यह रथसप्तमी का फल औ विधान हमने कहा इसके श्रवण करने से भी ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्तहोते हैं॥

छप्पनवां अध्याय॥

राजा शतानीक की करी सूर्य्य प्रशंसा॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा इतनीकथा कह ब्रह्माजी अपने लोकको गये औ रुद्र भी अपने धाम को जातभये यह रथसप्तमी का विधान हमने वर्णन किया अब आप और क्या श्रवणकिया चाहते हैं यह सुमन्तुमुनिका वचन सुन राजाने कहा कि महाराज सूर्य्यनारायणका प्रभाव मैं कहांतककहूं उनके अनुग्रहसे युधिष्ठिरआदि मेरेपितामहों को सबप्रकारके भोजन देनेहारा पात्र मिला जिससे बन मेंभी ब्राह्मण भोजन करातेरहे उनका माहात्म्य सुनते २ मुझे तृप्तिनहींहोती जिनसे सब जगत् उत्पन्नभया दोनों हाथों से ब्रह्मा विष्णु औ उनके ललाटसे रुद्रकी उत्पत्ति भई उनका प्रभाव कौन वर्णन करसक्ताहै अब मैं यह श्रवणकिया चाहताहूं कि ऐसा मन्त्र स्तोत्र दान स्नान जप पूजन होम व्रत उपवास आदि कौन कर्महै जिसके करने से सूर्य्यभगवान् प्रसन्नहो सब क्लेश निवृत्तकरैं औ संसार सागरसे मुक्तिहोय वहीस्तोत्र मन्त्र रहस्य विद्या पाठ व्रत उत्तमहै जिसमें सूर्य्यनारायणका कीर्त्तनहो वह जिह्वा धन्य है जो सूर्य्यभगवान् की स्तुति करै पूजा करनेहारे हाथ

ध्यानमें तत्पर मन औ सूर्य्यनारायणके गुण श्रवणमें आसक्त कर्ण सफलहैं जोजिह्वा सूर्यनारायणके गुण न गावै वह केवल रोगके तुल्यहै अथवा प्रति जिह्वाहै सूर्याराधनकिये बिना यह शरीर वृथाहै एक बारभी सूर्यनारायणको प्रणाम करे तो संसारसागरका पारपावै रत्नोंका आश्रय मेरुपर्वत आश्चर्योंका आश्रय आकाश तीर्थोंका आश्रय गङ्गा औ सब देवताओंका आश्रय सर्यनारायणहैं ये सबकथा बहुत बार मैंने श्रवणकरी हैं औ देवताभी सूर्यनारायण काही आराधन करते हैं यहभी मैंनेसुनाहै अब मेराभी यह दृढ़ संकल्पहै कि सूर्यभगवान् की उपासना भक्तिसे कर संसार से मुक्त हो जाऊँ॥

सत्तावनवां अध्याय॥

ऋषियोंके प्रति ब्रह्माजीका उपदेश करना॥

यह राजाका वचनसुन सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हे राजा जिसप्रकार ऋषियों को ब्रह्माजी ने सूर्यनारायण के आराधनका विधान उपदेशकियाहै वह हम आपको श्रवण कराते हैं एकसमय सब ऋषियोंने ब्रह्माजीसे प्रार्थना करी कि महाराज सब प्रकारसे चित्तवृत्ति निरोधरूपयोग आपने कैवल्यपद देनेहारा कहा परन्तु वह अनेक जन्म में सिद्ध होताहै इन्द्रियोंको आकर्षण करनेहारे विषय दुर्जय हैं मन किसी प्रकारसे स्थिरही नहीं होता राग द्वेष आदि दोष छूटतेनहीं औ पुरुष सदा अल्पायुष् होते हैं तिसमें कलियुगके मनुष्य तो अतिही अल्पायुषहोंगे इसलिये योग सिद्धिका प्राप्तहोना अति कठिन है ऐसा कोई उपाय आप उपदेश करैं कि बिना परिश्रम संसार से नि

स्तारहोय यह मुनियोंकी प्रार्थना सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हेमुनीश्वरो ऐसाउपाय तो एक सूर्यनारायणका आराधनहै यज्ञ पूजन नमस्कार जप ब्राह्मण भोजनआदिसे उनकी उपासनाकरो औ मन बुद्धिकर्म दृष्टिआदि सबसूर्यनारायणमें तत्परकरो वेही परब्रह्म अक्षर सर्वव्यापी सर्वकर्त्ता अव्यक्तअचिन्त्य औ मोक्षकेदेनेहारेहैंइसलिये आपउनका आराधन कर अपने मनोबांछित फलपाय संसार से मुक्त होजाओ यह ब्रह्माजीसे सुन सबमुनि सूर्यनारायणकी उपासनामें तत्परभये हे राजा संसारके दुःखी जीवोंको सुख देनेहारा सूर्यनारायण के बिना कोईनहीं है इसलिये उठते बैठते चलते सोते भोजन करते सूर्यनारायणकाही स्मरण करो औ भक्तिसे उनके आराधनमें प्रवृत्तहोजावो जिससे जन्म मरण आधि व्याधिसेछुटो जो पुरुष जगत्कर्त्ता नित्य वरद दयालु औ ग्रहोंके स्वामी श्रीसूर्यनारायणके शरणमें प्राप्तहोते हैं वे अवश्य भुक्ति औ मुक्तिपाते हैं ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

तंडीनामक गणके प्रति सूर्य्यनारायणका उपदेश करना ॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा अब हम तण्डीनाम शिवजीके गण औ सूर्यनारायणकासम्बाद कहते हैं पूर्वकालमें तण्डीको ब्रह्महत्या लगगईथी उसको निवृत्तकरने के लिये तण्डीने सूर्यनारायणका बहुतकाल आराधन औ स्तुतिकरी तब प्रसन्नहो सूर्यभगवान् उनके समीप आये औ कहा कि हे तण्डी तुम्हारी भक्तिसे हम बहुत प्रसन्नहैं अपना अभीष्ट वर मांगो तब तण्डीने कहा कि महाराज आपका दर्शनही दुर्लभहै यह होनेसे हमको अतिहर्षभय

औ आप सबके हृदयमें स्थितहैं इससे सबका अभिप्राय जानते हैं हम को ब्रह्महत्या लगी है यह निवृत्त होय औ संसार से उद्धार करने हारा उपाय आप उपदेश करैं कि जिसके आचरणसे जगत्के मनुष्य सुखीहोवैं यह तण्डी का बचनसुन सूर्यभगवान्ने उनको निर्बीज योगका उपदेश किया तब तण्डीनेकहा कि महाराज यह निष्कलयोग अति कठिन है क्योंकि इन्द्रियों को जीतना मन को स्थिर करना अहन्ता औ ममता को त्यागना औ राग द्वेषसे बचना बहुत कष्ट साध्य है ये बातैं कईजन्म अभ्यास करने से प्राप्तहोती हैं इसलिये ऐसाउपाय बतलाइये कि अनायाससेही फल प्राप्तहोय यह तण्डीकी प्रार्थनासुन सूर्यनारायण कहतेभये कि हे गणनाथ जो अनायाससे मुक्तिकी इच्छाहोय तो हमारेमें मनको आसक्तकरो हमारा भक्तिसे यजनकरो हमको नमस्कारकरो हमारी भक्तिकरो औ सब जगत्में हमको व्याप्त समझो तो चित्त चंचल होनेपरभी मनोवांछित फल पाओगे सुवर्ण चांदी तांबा पाषाण काष्ठ आदिसे हमारीप्रतिमाबनवाय अथवा चित्रही लिखवाकर अनेक प्रकारके उपचारों से उसका भक्तिकरके पूजनकरो औ चलते फिरते भोजन करते आगे पीछे ऊपर नीचे उसीका ध्यानकरो औ सुन्दर तीर्थोंके जलसे स्नानकराय गन्ध पुष्प बस्त्र भूषण नानाप्रकारके नैवेद्य औ जो २ पदार्थ तुम को प्रियहों सो सब अर्प्पण करो और जो कभी गान करनेकी इच्छाहोय तो हमारी मूर्त्तिके आगे हमारे गुणानुवाद गाओ कथा श्रवण करनेकी इच्छाहोय तो हमारी कथासुनो इसप्रकार हमारेमें मनको अर्पण करने से

रोग द्वेष आदि नष्ट हुयेबिनाभी परमपदको प्राप्तहोंगे सब कर्म्महमारे अर्पणकरो यह संक्षेपसे हमने क्रियायोग तुमसे कथनकिया इसके आचरणसे सब दोष लाजसे छूट मुक्तिभागीहोगे यह सूर्य्यनारायणका बचन सुन तण्डी ने कहा कि महाराज यह अमृतरूप क्रियायोग आप विस्तार से कथनकरैं क्योंकि आपकेबिना हमको और कौनपुरुष हित उपदेश करैगा औ अतिपवित्र यह परमरहस्य हमकहांसे पावैंगे यहसुन सूर्य्य भगवान् ने कहा कि तुम चिन्ता मत करो यह सम्पूर्ण क्रियायोग विस्तार से ब्रह्माजी तुम को उपदेश करैंगे औ हमारे प्रसादसे तुम ग्रहणकरोगे इतना कह त्रैलोक्यदीप श्रीसूर्य्यनारायण अन्तर्द्धानभये औ तंडी भी ब्रह्माजीके स्थानको जातेभये ॥

उनसठवां अध्याय ॥

तण्डी के प्रति ब्रह्माजी का किया उपदेश ॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक तण्डी ब्रह्मलोकमेंजाय ब्रह्माजीको प्रणामकर कहतेभये कि महाराज हमको सूर्य्यनारायण ने भेजा है आप कृपाकर क्रियायोग हमको उपदेशकरैं कि जिसकोकरके हम शीघ्रही सूर्य्यभगवान्को प्रसन्नकरैं यह तण्डीकी प्रार्त्थनासुन ब्रह्माजीबोले कि हे पुत्र ब्रह्महत्या तो सूर्य्यनारायण का दर्शन करतेही तुम्हारी नष्ट होगई अब जो सूर्य्यनारायण का आराधन करनेकी तुम्हारी इच्छाहै तो प्रथम दीक्षाग्रहणकरो क्योंकि दीक्षाविना उपासना नहींहोती अनेकजन्मके पुण्यसे सूर्य्य में भक्तिहोती है जो पुरुष सूर्य्यनारायणसे द्वेष रक्खैं ब्राह्मण तथा वेदकी निन्दा करैं उनको अवश्य वर्णसं

जानो मायाके प्रभावसे पाखण्डमें अधम पुरुषोंकी प्रवृत्ति होतीहै जब थोड़ासा पाप शेषरहै तब दीक्षाग्रहणकी इच्छा होतीहै इस संसारसागरमें डूबतेहुये मनुष्योंको हाथपकड़ कर उद्धार करनेहारे एक सूर्यनारायणहैं इसलिये हे तण्डी तुम दीक्षाग्रहणकरके सूर्यभगवान्‌की उपासनाकरो जिससे शीघ्रही तुमपर अनुग्रहकरैं यह सुन तण्डीने पूछा कि महाराज कैसे मनुष्य दीक्षाग्रहणके अधिकारीहोतेहैं औदीक्षा ग्रहणकरनेके अनन्तर क्याकरनाचाहिये यह आपअनुग्रह कर वर्णनकरैं तब ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे तण्डी मनवचन कर्मकरके हिंसा न करै सूर्य्यभगवान्‌में भक्तिरक्खै दीक्षायुक्त ब्राह्मणोंको नित्यनमस्कारकरै किसीसे द्रोहनकरै सबदेवता औ सब लोकों को सूर्य्यरूप समझै मनुष्य पक्षी पशु देव वृक्ष पाषाण पिपीलिका आदि जगत्‌के सब जीव पदार्थ औ आत्माको सूर्य्यसे भिन्न न समझै औ मन वचन कर्म करके जीवोंमें पापबुद्धि न रक्खै वह दीक्षा का अधिकारी होताहै जो गति सूर्य्यनारायणके आराधनसे प्राप्तहोती है वह न तो तपसे औ न यज्ञकरनेसे मिलै जो सर्वप्रकारसे सूर्यनारायणका भक्तहो वह धन्यहै उसके अनेक कुलोंका उद्धार होजाताहै जो सूर्यनारायणकी मूर्त्ति स्थापनकरै वह सूर्यलोकमें निवासकरै मन्दिर बनावै तो जितनेबर्ष मन्दिर खड़ारहै उतने हजारबर्ष सूर्यलोकमें आनन्दभोगै जो निष्काम उपासनाकरै वह मुक्तिपावै जोउत्तमलेपन सुन्दरपुष्प औ अति सुगन्ध धूप नित्य सूर्यनारायणके अर्पणकरै वह यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै यज्ञ में बहुत सामग्री चाहिये इसलिये दरिद्र मनुष्य यज्ञ नहींकरसक्के परन्तु भक्तिकरके

दूर्वासेभी सूर्यनारायणका पूजनकरैं तो यज्ञसे भी अधिक फलपावैं हे तण्डी गन्ध पुष्प धूप वस्त्र भूषण भांति २ के भोजन फल जो तुमकोमिलैं औ प्रियहों वहीभक्तिसे सूर्य-नारायणको निवेदनकरो तीर्थके जल दही दूध घृत शहत से स्नानकराओ गीतवाद्य नृत्यस्तुति ब्राह्मण भोजन हवन आदि से भगवान् को प्रसन्नकरो परन्तु सब काम भक्तिसे करो हमने सूर्यनारायणकाही आराधनकरके सृष्टिरची है विष्णु उनके अनुग्रहसे जगत् का पालनकरते हैं औ रुद्र उनकी इच्छासे संहारकरते हैं उनके तेजसेही राशि नक्षत्र औ ग्रह प्रकाशितहैं तुमभी पूजन व्रत उपवास आदि से सूर्यनारायणका आराधनकरो जिससे सब दुःख दूरहोयँ॥

साठवां अध्याय॥

उपवासकी विधि, पूजनका फल, फल सप्तमी व्रतका विधान॥

तंडीपूछतेहैं कि महाराज उपवासकरके सूर्य्यनारायण क्योंकर प्रसन्नहोतेहैं औ उपवास करनेवाले पुरुषोंको कौन कौन पदार्थ त्याज्यहैं औ आराधनमें क्या २ करना चा-हिये यह आप वर्णन करैं यह तण्डीकाबचनसुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे गणाधीश पुष्प आदि करके पूजन करने सेही सूर्य्यनारायण उत्तम फल देते हैं उपवासकरने करके तो क्यों न मनोवांछित फल देवें पापों से उपावृत्त अर्थात् निवृत्तहोकर गुणोंकेसाथ जो निवास करनाहै उसको उप-वासकहते हैं जिसमें सबभोगोंकात्यागहै एकरात्रि दोरात्रि तीनरात्रि अथवा नक्त उपवासकर निष्कामहो मन वचन कर्म्मकरके सूर्य्यनारायणके आराधनमें तत्परहो वह ब्रह्म-लोकपावै सूर्य्यनारायणका आराधन विनाकिये और किसी

से जन्मान्तरमें ब्राह्मण होय अपुत्रा स्त्री पुत्र दुर्भगा सौभाग्य औ कन्या इसव्रतसे उत्तमवर पावै विधवा इसव्रतको करै तो फिर किसी जन्ममें विधवा न होय इस व्रतसे सबफल प्राप्तहोते हैं औ इसमाहात्म्यके पढ़ने तथासुननेसेभी सब कार्य सिद्धहोते हैं॥

इकसठवां अध्याय॥

व्रतके दिन त्याज्य पदार्थ रहस्य सप्तमी का फल॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे तण्डी अब हम रहस्य सप्तमी व्रतका विधान कहते हैं जिस व्रतके करनेसे सात अगले औ सात पिछले कुलोंका उद्धारहोय नियमसे जो यह व्रत करै वहधन पुत्र आरोग्य विद्या बिजय औ धर्मपावै नियम ये हैं कि बृतकेदिन तैलको स्पर्श न करै नील वस्त्र न धारै आमलेसे स्नान न करै औ किसीसे कलह न करै नीलवस्त्र पहिनकर जो सत्कर्म्मकरै वह निष्फल होताहै जो ब्राह्मण एक बार नीलवस्त्र पहिने तो एक उपवास करै औ पंचगव्य पानकरै तब वह शुद्ध होताहै नीलका रंगजो रोम कूप में चलाजाय तो तीन कृच्छ्रचांद्रायण करनेसे शुद्धिहोतीहै जो भूलकरके नीलके काष्ठसे दन्तधावनकरै वह दो कृच्छ्र चान्द्रायण करके शुद्धहोय जहां नील एकबार बोयाजाय वह भूमि बारह बर्षतक अपवित्र रहतीहै यह तो नीलका दोषहै औ सप्तमी को जो तैलका स्पर्श करै उसकी प्रिय भार्य्या नष्टहोजाय इसलिये तेलकोभी स्पर्श न करै व्रतके दिन मांस न खाय मद्य न पीवै चण्डाल औ रजस्वला स्त्री से सम्भाषण न करै किसीसे द्रोह औ क्रूरता न करै गीत न गावै नृत्य न करै बाजा न बजावै शवको न देखै वृथा

हँसै नहीं स्त्रीके साथ शयन न करै द्यूत न खेलै रोदन न करै दिनमें सोवै नहीं शिरसे जूँ न निकालै असत्य न बोलै दूसरे का अनिष्ट चिन्तन न करै किसी जीवको ताड़न न करै अति भोजन गलियोंमें घूमना दम्भ शोक शठता औ क्रोध इन सबका यत्नसे त्यागकरै चैत्रसे इस व्रतका आरम्भकरै सूर्य्य अर्य्यमा मित्र बरुण इन्द्र बिवस्वान् पर्ज्जन्य पूषा भग त्वष्टा औ विष्णु ये बारह सूर्य्य हैं इनका क्रमसे चैत्र आदि महीनोंमें पूजनकरै सप्तमी के दिन भोजक को भोजनकराय घृतसहित पात्र औ एकमाशासुवर्ण देवै औ रक्तबस्त्रभी देवै यदि भोजक न मिलै तो पौराणिक ब्राह्मण कोही भोजनकराय घृतपात्र औ सुवर्णदेवे यह सप्तमी का माहात्म्य हमने वर्णनकिया जिसके श्रवणकरनेसे भी सूर्यलोककी प्राप्तिहोतीहै हे राजाशतानीक इतनाकह ब्रह्माजी अन्तर्द्धानभये औ तण्डीभी सूर्य्यनारायणका आराधनकर अपने मनोबाञ्छित फलको प्राप्तभये ॥

बासठवां अध्याय ॥

शंख औ द्विजका सम्वाद वशिष्ठ औ साम्बका सम्बाद, याज्ञवल्क्य औ ब्रह्माजी का सम्वाद ॥

राजा शतानीक कहते हैं कि हे सुमन्तु मुनि आप और भी सूर्यनारायणका प्रभाव वर्णनकरैं आपका अमृतसमान वचन सुनते २ मुझे तृप्ति नहींहोती यह राजाका वचनसुन सुमन्तु मुनिने कहा कि हे राजा इसविषयमें शंख औ द्विज का सम्वादहै हमआपको श्रवणकराते हैं एक अतिरमणीय आश्रमथा जिसमें वृक्ष फलोंके भारसे झुकरहेथे कहीं मृग अपने शृंगोंसे परस्पर खुजातेथे किसीओर मयूरोंका नृत्य

औ भृंगोंके मधुर ध्वनिका कोलाहल होरहाथा ऐसे मनो-
हर आश्रमके मध्यमें अनेक तपस्वियों करके सेवित शंख
मुनि विराजमानथे उस अवसरमें भोजकोंके कुमार उनके
समीप गये औ विनयसे सबने प्रार्थनाकरी कि महाराज
वेदों में हमको सन्देह है वह आप निवृत्तकरें यह उनकी
प्रार्थनासुन प्रसन्नहो शंखमुनि उनको वेदपढ़ानेलगे एक
दिन वे सब कुमार वेदपढ़तेथे उससमय परमतपस्वी द्विज
नाम मुनि वहां आये शंखमुनिने भी उनका बहुत आदर
सत्कारकिया औ आसनपरबैठाय कुमारोंसे कहा कि भाई
शिष्ट पुरुषके आगमन से अनध्याय होताहै इसलिये तुम
अपना पढ़ना बन्दकरो यह सुनतेही कुमारों ने अपनी २
पुस्तकें बांधलीं द्विजमुनिने शंखसेपूछा कि येबालक किसके
हैं औ क्या पढ़ते हैं यह सुन शंखमुनि बोले कि महाराज ये
भोजकोंके कुमारहैं औ कल्पसूत्रसहित चारोंवेद सूर्यनारा-
यणके पूजन औ हवनका विधान प्रतिष्ठाविधि रथयात्राकी
रीति औ सप्तमी तिथिकाकल्प ये पढ़ते हैं तब द्विजमुनिने
पूछा कि सप्तमी व्रतका क्या विधानहै सूर्य मन्दिरमें गन्ध
पुष्प दीप आदि देनेसे क्या फल होताहै किसव्रत औ दान
से सूर्यभगवान् प्रसन्नहोते हैं औ कौन पुष्प धूप औ बलि
देनेचाहिये यहसब हमको आपकथनकरें औ सूर्यनारायण
का माहात्म्य भी विशेष करके वर्णनकरें यह द्विजमुनि का
वचनसुन शंखमुनि बोले कि महाराज साम्ब औ वशिष्ठका
सम्बाद हम वर्णनकरते हैं एकसमय वशिष्ठजीके आश्रममें
साम्बगये औ उनके चरणोंमें प्रणामकिया वशिष्ठजीने भी
उनका बहुत सत्कार किया औ अपने समीप बैठाकर पूछा

कि हेसाम्ब तुम्हारा सब देह कुष्ठसे फटगयाथा वह क्योंकर अच्छा भया औ यह अति उत्तमरूप औ तथा अधिक तेज किसकर्मके करनेसे पाया यहकहो यह वशिष्ठजीकी आज्ञा पाय विनयसे साम्बने कहा कि महाराज सूर्य्यभगवान् का मैंने आराधनकिया उससेमुझे उन्होंने साक्षात् दर्शनदिये औ उनसे वरभीपाया यहसुन फिर वशिष्ठजीने पूछा किस विधिसे तुमने आराधनकिया औ सूर्य्यनारायणका साक्षात् दर्शन क्योंकर भया तब साम्बने कहा कि महाराज आप प्रीतिसेश्रवणकरें मैं सबवृत्तान्त विस्तार पूर्वकवर्णनकरताहूँ पूर्वकालमें मैंने दुर्वासामुनिसे उपहास्यकिया इसलिये उन ने क्रोधकर मुझे शापदिया कि कुष्ठीहोजा तब मेरे शरीर में कुष्ठरोग हुआ औ मैंने अति व्याकुलहो अपने पिता श्रीकृष्ण भगवान्से कहा कि महाराज दुर्वासामुनिके शाप से मैं कुष्ठरोगकरके बहुत पीड़ित हूँ शरीर मेरा गलता है स्वर दबाजाता है पीड़ासे प्राण निकलते हैं अब आपकी आज्ञापाय प्राणत्यागकिया चाहताहूँ आपभी कृपाकर यह आज्ञा मुझे देवें कि मैं इस दुःखसे छूटूँ यहमेरा दीनवचन सुन पिता ने क्षणमात्र विचारकर कहा कि हे पुत्र धैर्यकर घबरा मत धैर्य त्यागने से रोग अधिक सताताहै भक्तिसे देवताका आराधन करो जिससे सब व्याधि निवृत्तहो यह पिताका वचन सुन मैंने कहा कि महाराज ऐसा कौनदेवता है कि जिसके आराधनसे यहदुष्टरोग निवृत्तहोय आपही बतावैं तब उननेकहा कि हे पुत्र एकसमय याज्ञवल्क्यमुनि ने ब्रह्मलोकमें जाकर ब्रह्माजीको प्रणामकर विनयसे पूछा कि महाराज मोक्षकी इच्छावाला पुरुष किसदेवताका आ-

राधनकरै औ अक्षयस्वर्गकीप्राप्ति किसकी उपासना करने से होय यह विश्व किसने उत्पन्न किया औ किसमें लीन होताहै यह आप वर्णनकरैं यह याज्ञवल्क्य मुनिका प्रश्न सुन ब्रह्माजीने कहा कि आपने बहुत अच्छीबात पूछी यह प्रश्नसुन हम बहुत प्रसन्नभये अब हम तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कथनकरते हैं जो देवता अपने उदयके साथही सब जगत् का अन्धकार हरलेताहै तीनों लोकोंको प्रकाशित करताहै अनादि निधन अव्यय शाश्वत अक्षयकर्म साक्षी सर्वदेवता औ जगत्का स्वामी पितरोंकाभी पिता देवता-ओंकाभी देव जगत्का आधार सृष्टिस्थिति औ संहारकर-नेहारा योगी पुरुष वायुरूपहोकर जिसमें लीन होजाते हैं जिसके हजार किरणोंमें देवता मुनि औ सिद्ध निवासकरते हैं जैसे वृक्षकी शाखाओंमें पक्षी जनक व्यास शुकदेव आ-दि योगी जिसके मण्डलमें प्रविष्टभये हैं वे प्रत्यक्ष देवता सूर्य्यनारायणहैं ब्रह्मा विष्णु शिव आदि देवताओंका नाम मात्र श्रवणमें आताहै सबके दृष्टिगोचर नहींहोते औ सूर्य नारायण सबकोप्रत्यक्ष हैं इसलिये सबदेवताओंसे उत्कृष्ट हैं इसलिये हे याज्ञवल्क्य तुम भी सूर्य्यनारायण को छोड़ और किसीकीउपासना मतकरो इसप्रत्यक्षदेवके आराधन से सबफल प्राप्तहोसक्ते हैं यह ब्रह्माजीका वचनसुन याज्ञ-वल्क्यमुनि बोले कि महाराज आपने बहुत उत्तम उपदेश मुझे किया सूर्य्यनारायण का प्रभाव मैंने पहिलेभी बहुत बार श्रवणकियाहै जिनके दक्षिणअंगसे विष्णु बामसे आप औ ललाट से रुद्र उत्पन्न भये हैं फिर कौन देवता उनकी तुल्यता करसक्ताहै औ उनके गुण किससे वर्णनकियेजायँ

जिनको एकबार प्रणाम करनेसेही मुक्ति मिलतीहै अब मैं उनके आराधन का प्रकार सुनना चाहता हूँ कि जिससे संसारसागर का पारपाऊँ कौनसे ब्रत उपवास दान होम जप आदि करनेसे सूर्य्यनारायण प्रसन्नहोकर समस्तक्लेश हरते हैं यहआप कृपाकर मुझेउपदेशकरैं यह भक्तिसेभरा हुआ याज्ञवल्क्यमुनिका वचनसुन प्रसन्नहो ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे याज्ञवल्क्य जो सूर्य्यनारायणके आराधन का उपाय तुमपूछतेहो वहहम वर्णनकरते हैं एकाग्रचित्तहोकर सुनो आदि अन्त से वर्जित सर्व्वव्यापी परब्रह्म लीला से प्रकृति पुरुषरूपधार संसार उत्पन्न करनेहारा अक्षर सृष्टि के रचनेकेसमय ब्रह्मा पालनके अवसरमें विष्णु औ संहार कालमें रुद्ररूप धारनेहारा औ सब देवोंकरके पूजित सूर्य्य हैं अब हम सूर्य्यनारायण को प्रणामकर उनके आराधन का अति गुप्तक्रम कहते हैं जो हमको सूर्य्यनारायणने प्रसन्नहो अपने मुखसे कहाहै॥

तिरसठवां अध्याय॥

सूर्य्यभगवान् का परब्रह्मरूपसे वर्णन॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे याज्ञवल्क्य एक समय हमने स्तुतिकरके सूर्य्यनारायणसे पूछा कि महाराज वेद औवेद के अंगोंमें आपकाही प्रतिपादन है शाश्वत अज परब्रह्म स्वरूप आपहैं यहजगत् आपमेंस्थितहै चारोंआश्रम आप की अनेक मूर्त्तियोंका पूजनकरते हैं सबके माता पिता औ पूज्य आपहैं फिर आप किस देवता का ध्यान औ पूजन करते हैं यह आप हमारा सन्देह निवृत्तकरैं यह सुन सूर्य्य नारायण हम को कहनेलगे कि हे ब्रह्माजी यह

बातहै परन्तु आप हमारे परमभक्तहैं इसलिये वर्णनकरते हैं जो परमात्मा सब भूतोंमें व्याप्त अचल नित्य सूक्ष्म औ इन्द्रियोंकरके अगम्यहै जिसको क्षेत्रज्ञ पुरुष हिरण्यगर्भ महान् प्रधान बुद्धि आदि अनेक नामों से पुकारते हैं जो निर्गुणहोकर भी अपनी इच्छासे सगुण होजाताहै सबका साक्षीहै आप कोई कर्म्म नहींकरता औ न कर्म्म फल से लिप्तहोताहै जिस परमात्माके हज़ारों शिर नेत्र नासिका कान मुख औ हज़ारोंही हाथ पैरहैं जो सब जगत्को आवरणकरके स्थितहै सब शरीरोंमें एकाकी बिचरताहै शरीर औ शुभ अशुभकर्म्म को क्षेत्रकहते हैं उनके जाननेसे परमात्मा क्षेत्रज्ञ कहाताहै अव्यक्त पुरमें शयनकरने से पुरुष बहुतरूप धारनेसे विश्वरूप औ सर्वोत्तमहोनेकरके महापुरुष कहाताहै वहएकही गुणोंके अनुसार अनेकरूप धारता है जिसप्रकार एकही वायु प्राण अपान आदिरूप धारताहै औ जिसविधि एकही अग्निके स्थान भेदसे अनेक नाम होजाते हैं इसीभांति परमात्माभी अनेकभेदोंसे बहुतरूप धारताहै जिसप्रकार एक दीपसे हज़ारों दीप प्रज्वलितहोजाते हैं इसी विधि एक परमात्मासे सब जगत् उत्पन्नहोताहै जब वह अपनी इच्छा से जगत् का संहार करता है तब एकाकी रहजाताहै जगत्में कोई स्थावर जंगम पदार्थनहीं है जो परमेश्वरसे हीनहो अर्थात् परमात्मा सब में व्याप्त है उस अक्षय अप्रमेय औ सर्वगत परमात्मा से त्रिगुण स्वरूप औ सर्वकारण अव्यक्त उत्पन्नभयाहै जिससेबढ़कर कोई दूसरा नहींहै सम्पूर्ण देवता औ अनेकमतोंमें स्थित सब वर्णाश्रम के मनुष्य उसपरमात्मा का पूजनकर उत्तम

फलको प्राप्तहोतेहैं उसी आत्मस्वरूपपर परमेश्वर का हम ध्यान करतेहैं औ सूर्यरूप अपने आत्माकाही पूजन करते हैं हे याज्ञवल्क्यमुनि यह बात सूर्यभगवान्‌ने अपने मुख से हमको कथनकरी है ॥

चौसठवां अध्याय ॥

अनेकपुष्प चढ़ानेका जुदा२ फल, मंदिर मार्जन औ लेपन करनेका फल, दीप आदिका फल सिद्धार्थ सप्तमी का विधान फल ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे याज्ञवल्क्य पद्मरूप सूर्यभगवान् को कमल पुष्प औ गुग्गुल के धूपसे हम पूजते हैं व्योमरूप सूर्यको चमेलीके पुष्प औ विजयनामक धूपसे शिवजी का पूजन करते हैं औ चक्ररूप सूर्यभगवान् का नीलकमल औ अगुरु धूपसे विष्णुभगवान् यजन करते हैं कस्तूरी सिल्हकनाम सुगन्धि द्रव्य चन्दन अगुरु कपूर नागरमोथा औ शर्करा इन सबको मिलाने से विजय धूपहोता है हमने सूर्यनारायण से पूछा कि कौन २ पुष्प आपको प्रिय हैं तब उनने जो २ बताये उनका हम वर्णन करते हैं मल्लिका पुष्प सूर्यनारायण को अर्पण करने से उत्तम भोगमिलतेहैं श्वेत कमलों से सौभाग्य कुटजपुष्पों से अक्षय ऐश्वर्य्यमन्दार अर्थात् आकके पुष्पोंसे कुष्ठरोग का नाश औ बिल्वपत्रों करके पूजन करने से लक्ष्मी की प्राप्तिहोती है आकके पुष्पों की माला से धन मिलता है वकुलपुष्पों की मालासे कन्या का लाभ पलाशके पुष्पोंसे अरिष्ट निवृत्ति औ अगस्त्य पुष्पोंसे पूजाकरै तो सूर्यनारायण का अनुग्रहहोय करवीरके पुष्प जो सूर्यभगवान्‌के समर्पणकरै वह उनका गणहोय कमलके हजारपुष्प च

तो सूर्यलोकमें निवासकरै उत्तम गंधसे लेपनकरै तो स-
द्गति पावै सूर्यभगवान्‌के मंदिर को जो मार्जनकर गोबरसे
लीपै वह सब रोगोंसे मुक्तहोय औ बहुतसा धनपावै औ
भक्ति करके गेरूसे लेपनकरै तो बहुत लक्ष्मी पावै केवल
मृत्तिकासेही मन्दिरमें लेपनकरै तो अठारहकुष्ठों से मुक्ति
होय सब पुष्पोंमें करवीरकेपुष्प औ सब विलेपनों में रक्त-
चन्दन उत्तमहैं इनसे अधिक कोई वस्तु सूर्यनारायण को
प्रिय नहीं करवीर पुष्पों से जो सूर्यभगवान् का पूजनकरै
वह संसार के सब सुख भोगकर स्वर्गमें बासकरै मन्दिर
में लेपनकर मण्डलबनावै तो सूर्यलोकपावै एक मण्डल
बनावै तो धर्महोय दो मण्डल रचने से आरोग्य तीन से
अविच्छिन्न संतान चारसे लक्ष्मी पांचसे धन औ धान्य
छःसे आयुर्बल औ यश औ सातमण्डल रचनेसे आयुष्
धन पुत्र औ राज्यपावै औ अन्तमें सूर्यलोकको प्राप्तहोय
मंदिरमें घृतका दीपक प्रज्वलितकरै तो नेत्ररोग न होय
महुवे के तेलके दीपसे सौभाग्यमिलै तिल तैल के दीपसे
सूर्यलोक की प्राप्तिहोय पहिले गन्ध पुष्प धूप दीप आदि
उपचारों से पूजनकर भांति २ के नैवेद्य लगावै पुष्पों में
चमेली औ कनेरके पुष्प धूपोंमें विजयधूप गन्धोंमें केसर
लेपोंमें रक्तचन्दन दीपों में घृतदीप औ नैवेद्यों में मोदक
सूर्यनारायण को परमप्रियहैं इनसेही पूजन करनाचाहिये
पूजनके अनन्तर प्रदक्षिणा औ नमस्कारकरके हाथमें सि-
द्धार्थ अर्थात् श्वेत सर्षपका एकदाना औ जललेकर सूर्य-
भगवान् के सम्मुख खड़ाहो अभीष्ट कामना को हृदय में
चिन्तन करता हुआ सिद्धार्थ सहित जलपीजावै परन्तु

दातोंसे स्पर्श नहोय दूसरी सप्तमीको दोदाने श्वेत सर्षपके औ जलपानकरै इसी प्रकार सातवीं सप्तमी पर्यंत एक २ दाना बढ़ाताजाय औ इस मंत्रसे अभिमंत्रण करके पान करै। सिद्धार्थकस्त्वंहिलोकेसर्वत्र श्रूयसे यथा। तथामामपि सिद्धार्थमर्थतः कुरुतांरविः॥ पीछेजप औ हवनकरै औ यह भी विधिहै कि प्रथम सप्तमीको जलके साथ सिद्धार्थ पान करै दूसरीको घृतके साथ आगे शहत दही दूध गोबर औ पंचगव्यके साथक्रमसे सातवींसप्तमी तकपानकरै इसप्रकार जो सर्षप सप्तमीका व्रतकरै वह बहुत धन पुत्र औ ऐश्वर्य पावै उसके सबअर्थ सिद्धहोयँ औ सूर्य्यलोकमें निवासकरै॥

पैंसठवां अध्याय॥

शुभ स्वप्नोंका फल॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे याज्ञवल्क्य अबहम स्वप्नका फल कहतेहैं सप्तमीको उपवासकर विधि पूर्व्वक पूजनजप होम आदि करै औ रात्रिके समय सूर्य्यनारायणका स्मरण करताहुवा कुशकी शय्यापर शयनकरै तब रात्रिको स्वप्नहोता है जो स्वप्नमें सूर्य्यका उदय इन्द्रध्वज औ चन्द्रमाको देखे उसको सब समृद्धि प्राप्तहोयँ शंख माला वीणाश्वेतकमल चामर दर्पण पुत्रकी प्राप्ति देखनेसे औ रुधिरके पान करने औ श्रवणसे ऐश्वर्य्य होय घृत करके प्लुत प्रजापति के दर्शनसे पुत्रकी प्राप्ति होय वृक्षपर चढ़ै अथवा आपने मुख में महिषी गो अथवा सिंहीका दोहनकरैतो ऐश्वर्यपावै जिसकीनाभिसे धनुष् औ बाणनिकलैं उनकरके सिंह अथवा सर्पकोमारै वह लक्ष्मीपावै सुवर्ण चाँदीकेपात्रमें अथवा मलकेपत्रमेंजो खीरखाय उसको बलकीप्राप्तिहोय वृ.

औ युद्धमें जयहोय तो उत्तमहोताहै अग्निको ग्रासकरजाय तो जठराग्निकी वृद्धिहोय अपने अंग प्रज्वलित होयँ औ नाड़ियोंका बेधहोय तो सम्पात्तिमिलै श्वेतवर्णके बस्त्र पुष्प माला अन्न औ पक्षियोंका दर्शन श्रेष्ठ है शरीरमें विष्ठाका लेपकरै शिर औ भुजा अनेक देखपड़ैं अगम्या स्त्रीसे गमनकरै श्लोक पढ़ैतो शुभहै देवता ब्राह्मण आचार्य गुरु वृद्ध तपस्वी स्वप्नमें जो कुछकहदेवें वहसत्यहोता है शिरकट जाय अथवा फूटजाय पैरोंमें बेड़ी परजांयतो राज्य मिलै रोदन करैतो हर्षकी प्राप्तिहोय घोड़ा बैल औ श्वेत हाथीके ऊपर निर्भयहोकर जोचढ़ै वहराज्यपावै राजाको अथवा कमलको देखैतो लाभहोय ग्रह औ ताराओंको ग्रास करै पृथिवीको उलट देवै औ पर्वतों को उखाड़ै तो राज्य पावै पेटसे आंत निकल पड़ै औ उनकरके बृक्षको लपेटै नदी अथवा समुद्रको पान करै पर्वत समुद्र औ नदीका लंघन करै तो बहुत ऐश्वर्यपावै सुन्दरस्त्रीशरीरमें प्रवेशकरै बहुत सी स्त्री आशीर्ब्वाद देवैं शरीरको कृमि भक्षणकरै स्वप्नमें स्वप्नकाज्ञानहोय अभीष्टबात सुनने औ कहनेमें आवै औ मंगलदायक पदार्थोंका दर्शन तथा प्राप्तिहोय तो धन औ आरोग्यकी प्राप्तिहोय जिनस्वप्नोंकाफल राज्य औ ऐश्वर्य की प्राप्तिहै वे स्वप्न रोगी देखै तो रोगसे छूटै इस प्रकार स्वप्न देख प्रभातही स्नान कर राजा ब्राह्मण अथवाभोजकको स्वप्न सुनावै॥

छांछठवां अध्याय॥

सप्तमी व्रतके उद्यापनका विधान औ फल॥

ब्रह्माजीकहतेहैं कि हेयाज्ञवल्क्य सप्तमीकाव्रतकर दूसरे

दिन स्नान पूजन जप हवन आदि करके भोजक पुराणवे-
त्ता औ वेदके जाननेहारे ब्राह्मणों को भोजनकरावै रक्तव-
स्त्र दूधदेनेवालीगो उत्तमभोजन औ जो२ पदार्थ अपने को
प्रियहोवें सब भोजककोदेवै भोजकनमिलै तो पौराणिकको
औ पौराणिक नप्राप्तहोय तौसामवेदके जाननेहारे ब्राह्मण
को सब वस्तुदेवै भोजनभी पहिले भोजकको करावै पीछे
पौराणिक औ वेदपाठियों को करावै इस प्रकार भक्तिसे
सातसप्तमीकरै तो अनन्तसुखपावै औदशअश्वमेधकेफल
को प्राप्तहोय कोई ऐसा कार्यनहीं जो इस व्रतके करने से
सिद्ध न होय कुष्ठ आदि रोग इस व्रतसे ऐसे डरतेहैं जैसे
गरुड़से सर्प व्रत नियम औ तपकरके इसप्रकार सात स-
प्तमी व्रतकरै वह विद्या धन पुत्र भाग्य आरोग्य औ धर्म
पावै औ अन्तमें सूर्य्यलोक को जाय इस विधिको जो श्र-
वणकरै अथवापढ़ै वहभी सूर्यनारायणमें लीनहोजाय यह
पुराण जिन २ देवता औ मुनियोंने सुना वे सब सूर्य्यना-
रायणके भक्तहोगये यह आर्ष आख्यान हमने कहाहै इस
को सूर्य्यभक्तके विना दूसरे पुरुषके आगे न कहना जो पु-
रुष इस आख्यानको सुनै औ जो सुनावै वे दोनों सूर्यलोक
को जायँ रोगी इसको श्रवण करै तो रोगसे मुक्तहोय यह
पढ़कर यात्राकरै तो मार्गमें कोई क्लेश न होय औ यात्रा
सफल होय गर्भिणी स्त्री सुनै तो सुखसे पुत्र जनै वन्ध्या
सुनै तो सन्तानपावै हे याज्ञवल्क्य यह सब कथा सूर्य्यना-
रायणने हमकोकही औ हमने तुमको श्रवणकराईहै अबतुम
भी भक्तिसे सूर्य्यभगवानका आराधनकरो जिससेसर्वपातक
निवृत्तहोवें वह द्वादशात्मा सूर्य्यनारायणही जगत्कामाता

पिता बन्धु औ गुरूहै वह सदा तुम्हारे ऊपरअनुग्रहकरै॥

सरसठवां अध्याय॥

सूर्यनारायणका स्तोत्र औ उसका फल॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे याज्ञवल्क्य जिन नामोंसे सूर्य्य भगवान् प्रसन्नहोते हैं वे नाम हम आपको उपदेश करते हैं। नमःसूर्य्यायनित्याय रवयेऽर्कायभानवे। भास्करायपतङ्गाय मार्त्तण्डायविवस्वते १ आदित्यायादिदेवाय नमस्ते रश्मिमानिने। दिवाकरायदीप्ताय अग्नयेमिहिरायच २ प्रभाकरायमित्राय नमस्तेदितिसम्भवे। नमोगोपतयेनित्यं दिशांचपतयेनमः ३ नमोधात्रेविधात्रेच अर्यम्णेवरुणाय च। पूष्णेभगायमित्राय पर्जन्यायांशवेनमः ४नमोहेमद्युते नित्यं धर्मायतपनायच। हरायहरिताश्वाय विश्वस्यपतये नमः ५ विष्णवेब्रह्मणेनित्यं त्र्यम्बकायतथानमः। नमस्ते सर्वलोकेश नमस्तेसप्तसप्तये ६ एकस्मैहिनमस्तुभ्यमेक चक्ररथायच। ज्योतिषांपतयेनित्यं सर्वप्राणभृतेनमः ७ हिताय सर्वभूतानां शिवायार्त्तिहरायच। नमःपद्मप्रबोधाय नमोद्वादशमूर्त्तये ८ गाधिजायनमस्तुभ्यं नमस्तारासुताय च। धिषणायनमोनित्यं नमःकृष्णायनित्यदा ९ भीमजाय नमस्तुभ्यं पावकायचवैनमः। नमोस्त्वदितिपुत्राय नमोलक्ष्म्यायनित्यशः १०॥ हे याज्ञवल्क्य सृष्टि रचनेके समय सूर्य्यनारायणके ये नाम हमनेकहे हैं जो इनको सायङ्काल औ प्रातःकालपढ़ै वह हमारीभाँति सब मनोबांछित फल पावै इनके पाठसे धर्म अर्थ काम आरोग्य राज्य औ विजयपावै बन्धनमेंहोय तो छुटजाय औ सब पापोंसेमुक्त होजाय यह परम रहस्य हमने कहाहै॥

अरसठवां अध्याय ॥

जम्बूद्वीपमें सूर्यके स्थानोंकाकथन,साम्बके प्रति दुर्वासामुनिकाशाप ॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक इसप्रकार ब्रह्माजी से उपदेश पाय याज्ञवल्क्य मुनिने सूर्य्यभगवान् का आराधनकिया औ सालोक्य मुक्तिपाई इसलिये आप भी सूर्य्यनारायण का आराधनकर परमपद पाओ जो देवताओंकोभी दुर्लभ है यहसुन राजाने पूछा कि महाराज जम्बूद्वीपमें सूर्यनारायणका स्थान कहां है जहां आराधन करनेसे शीघ्रही मनोबांछित फलपावै राजाका वचन सुनि मुनिकहनेलगे कि हे राजा इसद्वीपमें तीन स्थान सूर्य्यनारायणके मुख्यहैं एकइन्द्रबन दूसरा मुंडार औ तीसरा तीनों लोकोंमें प्रसिद्धकाल प्रियनामक स्थान है एकस्थान इस द्वीपमें चन्द्रभागानदी के तटपर औरभी है जिसको साम्ब पुर कहतेहैं जहां साम्बकी भक्तिसे लोकानुग्रह केलिये सूर्यनारायण मित्ररूपसे निवासकरतेहैं औ जो भक्तिसेपूजनकरै उसको ग्रहणकरतेहैं यह सुमन्तुमुनिसेसुनि राजाशतानीकने पूँछा कि महाराज वह साम्ब कौन था औ किसका पुत्र था सूर्यभगवान् ने उसकेऊपर क्योंकर अनुग्रहकिया यह आप कृपाकर वर्णनकरैं यह राजाका वचन सुन सुमंतुमुनि कहनेलगे कि द्वादश आदित्य जगत् में प्रसिद्ध हैं उनमें से विष्णुनाम आदित्य श्रीकृष्णरूपसे जगत्में उत्पन्नभये उनकी जाम्बवतीनाम भार्यासे साम्बनाम पुत्रभया वहपिता के शापसे कुष्ठीहोगया तब सूर्यनारायण का आराधनकर रोगसे मुक्तभया उसीने अपने नामसे नगरबसाय उसमें सूर्यनारायण का स्थापनकियाहै राजाने पूछा कि महाराज

ऐसा कौन अपराध साम्ब से बनपड़ा कि पिताने दारुण शापदिया थोड़े से अपराधपर तौ पिता पुत्रको शापनहीं देता तब सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजा यह वृत्तान्त हम विस्तारसे वर्णनकरते हैं सावधान होकर सुनो एकसमय वसन्तऋतुमें रुद्रकेअवतार दुर्वासामुनि तीनोंलोकमें विचरतेहुये द्वारकामें गये उससमय साम्बने उनको देखा कि जटाधारे हैं शरीर कृशहै नेत्रपिंगलहैं मुख अतिकुरूप है यह देख अपने रूपके अभिमानसे साम्बने दुर्वासा मुनि का अनुकरण अर्थात् नकलकरी उनके मुखकेतुल्य अपना मुखभी विकृत बनाकर उन्हींकीभांति चलनेलगा यह देख औ साम्बको रूप तथा यौवनका अति गर्बजान क्रोधकर कांपतेहुये दुर्वासा मुनिने कहा कि हे साम्ब हमको कुरूप देख औ अपने को अतिरूपवान् जान तैंने हमारा अनुकरण किया इसलिये बहुत शीघ्र तू कुष्ठी होजायगा॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

अपनी रानियोंको औ अपनेपुत्र साम्बको श्रीकृष्णचन्द्रका शाप॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा इसीप्रकार नारदमुनिभी सबऋषियोंको साथले श्रीकृष्णभगवान् के दर्शनकेलिये कभी२द्वारकामें जायाकरते जबनारदजी वहांजातेतबप्रद्युम्नआदि यादवकुमार पाद्यअर्घ्यसे उनकापूजनकरते परन्तु भावीकेबलसे औ रूपकेगर्ब से साम्ब कभी उनकासत्कार नहीं करता सदा अवज्ञाही करता औ खेलमें लगारहता उसका यह अविनयदेख नारदमुनिने अपनेमनमें विचार किया कि यह सदाहमारा अनादरकरताहै इसलिये इसका गर्बदूरकरनाचाहिये यहमनमेंठान श्रीकृष्णभगवान्केसमी

पगये औ उनसे एकांतमेंकहाकि यह आपकापुत्रसाम्ब अ-
तिरूपवान्‌है इसकेतुल्यदूसरापुरुष त्रैलोक्यमेंनहीं इसलिये
आपकी सोलहों हज़ाररानी इसपरमोहितहैं औ दिनरात
इसकी इच्छारखतीहैं यह नारदकी बाणीसुन श्रीकृष्णभग-
वान्‌ने विचारकिया कि स्त्रियोंको कुछविवेक तो होताहीनहीं
है रूपवान्‌पुरुषको देख अवश्य उनकाचित्त चंचलहोजाता
है इसलिये इसबातका निश्चयकर व्यभिचारदोषसे स्त्रियों
की रक्षाकरनी चाहिये यह मनमें विचार नारदमुनिसे कहा
कि आपके वचनका हमको निश्चय क्योंकरहोय तब नारद
जीने कहा कि अच्छा हमकभी निश्चय करादेवेंगे इतनाकह
वहांसे चलदिये कुछकालके अनन्तर फिर द्वारकामें आये
तब सब ऋतुओंके पुष्पोंकरके अलंकृत कमलोंसे परिपूर्ण
वापियों करके शोभायमान अनेकउत्तम पक्षियों के मधुर
शब्दोंसे मनोहररैवतक पर्वतकेबनमें अपनी सबरानियोंस-
मेत श्रीकृष्णचंद्र बनविहारकरतेथे बनविहारकेअनंतरजल
क्रीड़ाकरी पीछे मनोहर वृक्षोंकेनीचेबैठ अतिरूपवती औ
अनेक उत्तम२ वस्त्रभूषणोंसे अलंकृत अपनी रानियों समेत
मदिरा पान करनेलगे उसउत्तम मदिराके पानसे सब स्त्री
मत्तहोगईं इसअवसरमें नारदजीने साम्बसे कहा कि तुम
को श्रीकृष्णचन्द्र बुलातेहैं यहां वृथाक्योंबैठेहो यह नारद
जीसे सुन साम्ब श्रीकृष्णभगवान्‌के समीप गया औ प्र-
णामकर सन्मुखखड़ा भया परन्तु नारदका छल न समझा
उन सब स्त्रियों ने भी साम्बको उस अवस्थामें देखा औ
उसकारूप औ यौवन देख उनका चित्त चंचलहुआ मद्य
पानसे लज्जा नहीं रहती औ रूपवान पुरुषको देख

की योनिमें छेदन होताहै उत्तम वारुणी का पान स्वादिष्ट
मांस का भोजन मनोहर सुगन्धिद्रव्य का शरीरमें लगाना
औ अच्छे २ वस्त्र भूषण पहिनना इनसबसे कामका उद्दी-
पन होता है इसलिये जो पुरुष स्त्री का पातिव्रत्यचाहै तो
मदिरापान से उसको बचावै इस अवसर में साम्ब को प-
हिले भेज पीछे नारदमुनि भी वहां आये नारदको देख
मदसे विह्वलहुई वे स्त्री सब उठीं औ मुनिको प्रणामकिया
श्रीकृष्ण भगवान् ने भी देखा कि साम्बको देख सब का
वीर्यस्खलितहुआ है औ वस्त्रोंको भेदनकर उनकेआसनों
पर गिराहै यह देख श्रीकृष्णभगवान्ने शापदिया कि तु
म्हाराचित्त हमको छोड़ दूसरे पुरुषमें आसक्तहुआ इस
लिये तुमको पतिलोक की औ स्वर्गकी प्राप्ति न होगी औ
अन्तमें चोरोंकेबश पड़ोगी सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हे राजा
उसीशापसे श्रीकृष्णभगवान् के वैकुण्ठजाने के अनन्तर
उन सब स्त्रियों को अर्जुन के देखते २ चोर हरलेगये औ
उनमें जो रुक्मिणी सत्यभामा जाम्बवती आदि दृढ़ चि-
त्तथीं वे इसशापसेबचीं इसप्रकार सबस्त्रियोंको शापदेकर
साम्बकोभी शापदिया कि तेरा अतिरूप देख इनको क्षोभ
हुआ इसलिये तू कुष्ठीहोजा यह पिताका वचन सुन हँसकर
साम्बनेकहा कि महाराज मेरा तो कुछ दोष नहीं मेराचित्त
तो स्थिरहै इसी अवसरमें दुर्वासामुनि का भी साम्ब को
शापहुआ औ साम्बनेही फिर भी दुर्वासासे छेड़करी तब
उनके शापसे लोहका मूसल उत्पन्नभया जिससे सब या-
दववंश का क्षयहुआ इसलिये बुद्धिमान् पुरुष देवता गुरू
ब्राह्मण आदिकी अवज्ञा न करैं सदा इनके आगे नम्रही

रहैं हे राजा दो श्लोक ब्रह्माजीने महादेवजीके सम्मुखपढ़े थे क्या वे आपने नहीं सुनेहैं ॥ योधर्मशीलोधृतिमानरोषो विद्याविनीतोनपरोपतापी। स्वदारतुष्टः परदारवर्ज्जीन तस्यलोके भयमस्तिकिंचित् १ नतथाशशीनसलिलं न चन्दनंनैवशीतलाछाया प्रह्लादयंतिपुरुषं यथाहितामधुर भाषिणीवाणी२ अर्थ जो पुरुष धर्मात्माधैर्य्यवान् क्रोधरहित विद्याविनीत दूसरे को संताप नहीं देनेहारा अपनीस्त्री से संतुष्ट औ परनारी से विमुख हो उसको जगत्में कुछ भी भयनहीं होतीहै पुरुषों को चन्द्रमा चन्दन शीतलजल औ ठंढीछायासे भी ऐसा आह्लाद नहीं होता जैसा हित औ मीठे वचन सुनने से होताहै हे राजा इसप्रकार श्रीकृष्ण-चन्द्र के औ दुर्वासामुनि के शापसे साम्ब को कुष्ठ भया औ फिर भी सूर्यनारायण का आराधन कर रूप औ आ-रोग्य साम्बने पाया तबही अपने नामका नगरबसाय सू-र्यभगवान् का स्थापन किया ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

सूर्यनारायण की द्वादश मूर्त्तियों का वर्णन ॥

राजाशतानीकपूछतेहैं कि महाराज जो चन्द्रभागानदीके तटपर साम्बने सूर्यनारायणको स्थापन किया तो वह स्थान प्राचीन न ठहरा फिर आपउसका इतना माहात्म्य क्योंकर कहतेहैं यहराजाका संदेह सुनसुमन्तुमुनिने कहा किहेराजा स्थान तो सूर्यनारायणका वहांसनातनहै साम्बनेपीछेस्थापन किया है इसका हम विस्तारसे वर्णनकरते हैं प्रीतिसे सुनौ इस स्थानमें परब्रह्मस्वरूप जगत्के स्वामी श्रीसूर्य्यनारा-

यण ने मित्ररूपसे तप कियाहै औ सब देवता तथा मनुष्योंको सिरजकर आपभी बारह रूपधार अदितिके गर्भ से उत्पन्नभये इसीसे आदित्यकहाये इन्द्र धाता पर्जन्य पूषा त्वष्टा अर्यमा भग बिवस्वान् अंशु विष्णु बरुण औ मित्र ये बारह सूर्य्यभगवान्की मूर्त्ति हैं इनने सब जगत् व्याप्त कररक्खाहै इनमें से पहिली इन्द्र नामक मूर्त्ति देवराज में स्थित है औ सबदैत्य दानवोंका संहारकरतीहै दूसरीधाता नामक मूर्त्ति प्रजापतिमें स्थितहोकर सृष्टिरचतीहै तीसरी पर्जन्यनाममूर्त्ति किरणोंमें स्थितहोकर अमृतबर्षतीहै चौथी पूषानाम मूर्त्ति मंत्रोंमें स्थितहोकर प्रजाओं का पोषण करतीहै पांचवीं त्वष्टानाम मूर्त्ति बनस्पति औ ओषधियों में स्थितहै छठीमूर्त्ति प्रजाका सम्बरण करनेके लिये पुरों में स्थितहै सातवीं भगनाम मूर्त्ति पृथिवीमें औ पृथिवीके धर्म्मों में स्थितहै आठवीं बिवस्वान् नाम मूर्त्ति अग्नि में स्थितहै औ जगत्का नेत्ररूपहै नवीं अंशुनामकमूर्त्ति सूर्य में स्थितहै औ जगत्का आप्यायन करतीहै दशवीं विष्णु नामक मूर्त्ति दैत्योंका नाशकरनेकेलिये सदा अवतारलेती है ग्यारहवीं वरुणनाम मूर्त्ति जगत्का जीवन करतीहै औ समुद्रमें उसका निवासहै इसीसे समुद्रको वरुणालय कहते हैं औ बारहवीं मित्र नामक मूर्त्ति लोकोंपर अनुग्रह करने के अर्थ चन्द्रभागा नदीके तटपर बिराजमानहै यहां सूर्य्य नारायणने वायु भक्षण करके तप कियाहै मित्ररूपसे यहां स्थितहै इससे इस स्थान को मित्रपदभी कहते हैं यहांहीं साम्बने सूर्य्यनारायणका आराधनकर मनोबाञ्छित फल पायाहै जो पुरुष भक्तिसे सूर्य्यनारायणको प्रणामकरै औ

नक्ति से उनके आराधन में प्रवृत्तहों वे सूर्य्यलोक में नि-
वास करते हैं ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

नारदजीके प्रति साम्बका प्रश्न ॥

राजा शतानीक पूछते हैं कि हे सुमन्तुमुनि साम्बको सूर्य नारायणका आराधन किसने बताया औ शापके अनन्तर साम्बने अपने पिता श्रीकृष्णचन्द्रसे क्या कहा यह आप कथनकरैं यहसुन सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हे राजा शापके अनन्तर साम्बने अपने पितासे कहा कि महाराज आपके बुलानेसे मैं यहां आया औ कुछ मैंने अपराध भी नहीं किया फिर आपने ऐसा घोरशाप मुझे किसलिये दिया अब आप मेरे ऊपर अनुग्रहकरैं कि इस बिपत्तिसे छूटूं यह साम्बका दीन वचन सुन औ साम्बको निरपराध जान श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि हे पुत्र भयासो भया अब तुम सूर्य्यनारायणका आराधनकरो जिससे यह तुम्हारा क्लेश निवृत्तहोय हमने यहभीजाना कि नारदजीने क्रोधकरके तुमको यहां भेजाहै अब तुम नारदजी को प्रसन्नकर उनसेही सूर्य्यनारायण के आराधनका विधानसीखो वेभी अनुग्रहकर तुमको सिखावैंगे यह पिता का वचन सुन अति बिकल औ शोकातुर हुआ साम्ब नारदमुनिके ढूंढ़नेमेंलगा एक दिन नारदजी द्वारकामें श्रीकृष्णभगवान् के मिलनेको आये तव साम्बने जाय नम्रतासे उनके चरणोंपर प्रणामकिया औ हाथजोड़ प्रार्थनाकरी कि महाराज आप ऐसा उपाय मुझे उपदेश करैं कि जिससे मेराशरीर आरोग्यहोय औ यह दुःखमिटे यह सुन नारदजीने कहा कि सब देवता जिसका पूजन औ

स्तुति करतेहैं उसका तुमभी पूजनकरो तब तुम्हारा रोग निवृत्तहोय तब साम्बने पूछा कि महाराज देवता किसका पूजन औ स्तुतिकरते हैं आपहीकहैं किमैं उसीकेशरणजाऊँ यहपिताकीशापाग्निमुझेदग्धकरेडालतीहै ऐसाकौनदेवता हैजोकरुणाकरके इसाबिपत्तिसेमुझेछुटावै यहसाम्बकाअति दीन वचन सुन नारदजी बोले कि सब देवताओं के पूज्य स्तुत्य औ बन्दनीय सूर्यनारायण हैं हे सांब अब हम सूर्य नारायणका प्रभाव वर्णन करते हैं॥

बहत्तरवां अध्याय॥

नारदका कहाहुआ सूर्यनारायण का प्रभाव, साम्बकाप्रश्न॥

नारदजी कहतेहैं कि हेसांब किसीसमय हम सब लोकों में विचरतेहुये सूर्यलोकमें पहुंचे वहांदेखा कि देवता गंधर्व नाग यक्ष राक्षस औ अप्सरा सूर्यनारायणकी सेवामें तत्पर होरहे हैं गंधर्व गाते हैं अप्सरा नृत्य कररहीहैं राक्षस यक्ष औ नाग शस्त्र धारणकिये रक्षाके लिये खड़े हैं ऋग्वेद यजुर्वेद औ सामवेद शरीरधारे स्तुति कररहे हैं तीनोंसंध्या मूर्त्तिधारणकर हाथोंमें बज्र औ बाण लिये सूर्यनारायणके ओर पास खड़ी हैं पहिली संध्या रक्तवर्णहै मध्यसंध्या चंद्र के तुल्य श्वेतवर्ण औ तीसरी संध्याका वर्ण भौमग्रहके समानहै आदित्य बसुरुद्र मरुत् अश्विनीकुमार आदि सब देवता तीनकाल उनका पूजन करते हैं ऋषि स्तुति पढ़ते हैं इन्द्र सदा जय शब्द करते रहते हैं अंबुजाकार सूर्य भगवान्को प्रभात होतेही ब्रह्माजी पूजते हैं चक्ररूपको मध्याह्नमें विष्णुभगवान् और आकाशरूपको सायंकाल के समय रुद्र भगवान् यजनकरते हैं गरुड़का बड़ाभाई अरुण

उनका सारथी है कालके अवयवोंसे उनका रथ बनाहै हरे रंगके छन्दोंरूप सातघोड़े उस रथमें लगे हैं राज्ञी औ निक्षुभा नामक दो भार्या सूर्यनारायणके दोनों ओर बैठी हैं और भी देवता हाथजोड़े चारोंओर खड़े हैं पिंगल लेखक कल्माषपक्षी माठर दण्डनायक आदि गण आगे पीछे सेवा में स्थितहैं ब्रह्मा आदि सबदेवता औ ग्रह स्तुति कररहे हैं ऐसा प्रभाव सूर्यनारायणका हमने देखा इससे जाना कि वेही सब देवताओंके पूज्य हैं इसलिये हेसांब तुमभी उनकी शरणमें जाओ यह नारदजीका वचन सुन सांबने पूछा कि महाराज भलीभांति मैं श्रवण किया चाहताहूं कि सूर्यनारायण सर्वगत क्योंकर हैं उनके किरण कितने हैं मूर्त्ति कै हैं राज्ञी औ निक्षुभा नाम उनकी भार्या कौनहैं पिंगल लेखक औ दण्डनायक क्या काम करते हैं कल्माषपक्षी कौन है यह सब शास्त्रके अनुसार ठीक२ वर्णनकरें जिससे मैंभी सूर्यनारायणका प्रभाव जान उनके शरणागत होजाऊं॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

नारदकृत प्रकृति पुरुष वर्णन॥

नारदजी कहते हैं कि हेसांब अब हम विस्तारपूर्वक सूर्य नारायणका वर्णन करते हैं तुम प्रीतिसे श्रवण करो जगत् का कारण सदसदात्मकहै जिसको अव्यक्त प्रधान औ प्रकृतिभी कहते हैं गन्धवर्ण रससे हीनशब्द स्पर्शादि रहित अनाद्यंत अज सूक्ष्म अनाकार औ अविज्ञेय पुरुषहै उसने यह सब जगत् व्याप्त कररक्खा है वह पुरुष जो २ इच्छा करता है सो सो सब अव्यक्तसे उत्पन्न होता है वही पुरुष सृष्टिके समय चतुर्मुख ब्रह्मा बनताहै प्रलयके समय काल

रूप औ पालनके समय विष्णुरूप ग्रहण करताहै ये तीन अवस्था तीनगुणोंके अनुकूल पुरुषकी हैं वही हिरण्यगर्भ है सबके आदिमें होने से आदित्य न उत्पन्न होने से अज महान् होनेसे महादेव लोकका अधीशहोनेसे ईश्वर बृहत् होनेसे ब्रह्मा उत्पन्न होनेसे भव प्रजाके पालनसे प्रजापति पुरमें शयन करने से पुरुष किसी से भी न उत्पन्न होने से स्वयंभू औ हिरण्य अर्थात् सुवर्ण के अण्डमें रहने से हिरण्यगर्भ वही परमात्मा कहाता है जल का नाम नार है नारमें निवास करनेसे नारायण कहाताहै अरु यह शीघ्रता वाचक अव्ययहै समुद्ररूपहोजानेसे जलोंमें शीघ्रता नहीं रहती इसीसे उनको नारकहते हैं प्रलयके समय सब स्थावर जंगम नष्ट होजातेहैं सम्पूर्ण जगत् एकार्णव होजाता है तब वह पुरुष नारायणरूपसे उस समुद्रमें शयनकरता है सहस्रशिरों करके युक्त सहस्रभुजा सहस्रही नेत्र चरण औ मुखों करके युत वह पुरुषहै वही देवताओं में प्रथम देवता औ जगत्की रक्षा करनेहाराहै॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

सूर्यभगवान्कीउत्पत्ति,किरणोंका वर्णन और सर्वव्यापकत्व कथन॥

नारदजी कहते हैं कि हे साम्ब हजार युगकी अपनी रात्रि बिताय कर प्रभातहोतेही सृष्टि रचनेकी इच्छा उस पुरुषको भई तब उसने जलमें मग्नहुई भूमिको बराहरूप धार उद्धारकिया औ ब्रह्माबन सृष्टिरचनेलगा पहिले अपने तुल्य औ अत्यन्त सौम्य दशपुत्र मनसे उत्पन्नकिये भृगु अंगिरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु मरीचि दक्ष वशिष्ठ औ प्रचेता ये दश ब्रह्माजी के मानस पुत्रभये मरीचि के पुत्र

कश्यप भये दक्षकी कन्या अदिति कश्यपको विवाही उस-
से एक अण्डा उत्पन्न भया जिससे द्वादशात्मा श्रीसूर्य्य-
नारायण निकले नवहज़ार योजन सूर्य्य मण्डलका व्यास
अर्थात् विस्तारहै औ सत्ताईस हज़ार योजन परिधि अ-
र्थात् परिणाह है जिस भाँति कदम्बका पुष्प चारोंओरके
सरों से व्याप्तहोताहै इसीप्रकार सूर्य्यमण्डल किरणोंकरके
व्याप्त है वह सहस्रशीर्षापुरुष जिसको परमात्मा कहते
हैं इस मण्डलके मध्यमें स्थित है वह अपने हज़ार कि-
रणों करके नदी समुद्र ह्रद कूप आदि से जलको आक-
र्षण करता है सूर्यकी प्रभा रात्रिके समय अग्निमें प्रवेश
करती है इसीसे रात्रि में अग्नि दूरसेही प्रकाशित देख
पड़ता है सूर्योदयके समय वह प्रभा सूर्यमें चली जातीहै
प्रकाश औ उष्णता ये दोनों सूर्यमें औ अग्निमेंभी हैं इस
प्रकार सूर्य औ अग्नि रात दिनमें परस्पर आप्यायन क-
रते हैं किरण गो रश्मि गभस्ति अभीषु उस्र वसु मरीचि
नाड़ी दीधिति मयूख भानु करपाद इत्यादि किरणोंके नाम
हैं एक हजारकिरण सूर्यनारायणके हैं उनमें चारसौ किरण
वृष्टि करते हैं उनका नाम चन्दन है वे किरण अमृत स्व-
रूप औ श्वेतवर्ण हैं तीनसौ किरण हिमको बर्षते हैं उनका
नाम चन्द्रहै औ पीतवर्णहैं बाकी तीनसौ किरण प्रचण्डधूप
की वृष्टिकरते हैं वर्षा औ शरद् ऋतुमें चन्दन नाम किरण
वृष्टि करते हैं हेमन्त औ शिशिरमें चन्द्रनामक तीनसौकि-
रण हिम अर्थात् वर्फ बरसते हैं बाकी तीनसौ किरण व-
सन्त औ ग्रीष्ममें तपते हैं ओषधियों में बल स्वधा में
स्वधा औ अमृतमें अमृत सूर्य्यनारायण देते हैं यह द्वाद-

शात्मा औ काल स्वरूप सूर्यनारायण तीनलोकमें तपते हैं ब्रह्मा विष्णु औ शिव इनहींके रूपहैं ऋक्यजुः औसामभी येहीहैं प्रातःकाल ऋग्वेद स्तुति करताहै मध्याह्न में यजुर्वेद औ मध्याह्नके अनन्तर सामवेद स्तुतिमें प्रवृत्त होताहै ब्रह्मा विष्णु औ शिव इनका नित्य पूजनकरते हैं जिसप्रकार वायु सर्वगतहै इसीविधि सूर्यकिरण भी सर्व व्यापकहैं तीनसौ किरण भूर्लोकको प्रकाशितकरते हैं औ तीनतीनसौही बाकी दोनों लोकों को द्योतित करते हैं चन्द्रमा ग्रह नक्षत्र औ तारागणमें सूर्य्यनारायणकाही प्रकाशहै. सूर्यनारायणके हजार किरणों में सात किरण मुख्यहैं सुषुम्ण हरिकेश विश्वकर्मा सूर्य्य विष्णु सम औ सर्वबन्धु ये उन सातोंके नामहैं यह सम्पूर्ण जगत् सूर्यनारायणका रूपहै इन्द्रआदि देवता इनसे उत्पन्न भये हैं जगत्में सम्पूर्ण तेज इनकाहै अग्निमें दीहुई आहुति सूर्य्यनारायण में प्राप्तहोती है उससे वृष्टि वृष्टिसे अन्न औ अन्नसे प्रजाका पालन होताहै जगत्की सृष्टि औ संहार सूर्य्यनारायणसे होताहै ध्यान करनेवालोंके लिये ध्यान रूप औ मोक्षार्थी पुरुषों के लिये मोक्ष स्वरूपयेही हैं क्षण मुहूर्त्त दिन पक्ष मास ऋतु अयन संवत्सर औ युगों की कल्पना सूर्यनारायणके बिना नहीं होसक्ती औ कालके नियम विनाअग्निहोत्र आदि कर्म नहीं होसक्के ऋतु बिभाग बिना पुष्प फल औ मूलोंकी उत्पत्ति नहींहोती जगत्में सब ब्यवहार नष्टहोजाते यज्ञ न होनेसे स्वर्गमें देवताभी नहीं रहसक्के इससे यही जानो कि भूर्लोक औ स्वर्गकी सब ब्यवस्था सूर्य्यनारायण के होनेसेही ठीक रहतीहै जब सूर्य्य बहुत

तपै अथवा मण्डलके चारों ओर परिवेषहोय तब वृष्टि होती है सूर्य्यभगवान् के बारह नाम हैं आदित्य सविता सूर्य मिहिर अर्क प्रतापन मार्तण्ड भास्कर भानु चित्रभानु दिवाकर औ रवि ये बारहनाम हैं विष्णु धाता भग पूषा मित्र इन्द्र वरुण अर्यमा विवस्वान् अंशुमान् त्वष्टा औ पर्जन्य ये बारह आदित्य हैं चैत्र आदि बारह महीनों में ये तपतेहैं चैत्रमें विष्णु बैशाखमें अर्यमा ज्येष्ठमें बिवस्वान् आषाढ़ में अंशुमान् श्रावण में पर्जन्य भाद्रपद में वरुण आश्विन में इन्द्र कार्त्तिक में धाता मार्गशीर्षमें मित्र पौष में पूषा माघमें भग औ फाल्गुन मासमें त्वष्टानामक आ-दित्य तपता है विष्णु नामक आदित्य बारह सौ किरणों करके तपते हैं अर्यमा औ वरुण तेरह सौ किरणों करके बिवस्वान् औ पर्जन्य चौदहसौ किरणों करके अंशुमान् पांचसौ किरणों करके इन्द्र बारह सौ किरणों करके धाता ग्यारहसौ किरणोंकरके मित्र औ भगसाढ़ेदशसौ किरणों करके पूषा हजार किरणोंकरके औ त्वष्टा नामक आदित्य ग्यारहसौ किरणोंकरके तपताहै उत्तरायणमें सूर्य्य किरण वृद्धिको प्राप्तहोते हैं औ दक्षिणायन में घटतेजाते हैं इस प्रकार सूर्य्यकिरण लोकोपकार में प्रवृत्तहैं कोईपुरुष ब्रह्मा को कोई विष्णु को औ कोई शिवको जगत्कर्त्ता कहते हैं परन्तु वे इनकारूप हैं जिसप्रकार स्फटिक में अनेक रंग प्रविष्टहोनेसे वह अनेकवर्णका होजाताहै जिसभांति एकही मेघ आकाशमें अनेक रूपका होजाताहै जैसे आकाश में एकप्रकारका जल गिरिके भूमिकेसंसर्गसे अनेकस्वादु का होजाताहै जिसप्रकार एकही अग्निके स्थानभेदसे अनेक

नाम होजाते हैं इसी प्रकार एक सूर्यनारायणही गुणों के वशहोकर ब्रह्मा विष्णु शिव आदि अनेकरूप धारते हैं इस लिये इनमेंहीभक्ति करनीचाहिये आकाशमें जलमें अग्नि में पवन में औ सब प्रकारके स्थावर जंगम रूपजगत् में सूर्यनारायण व्याप्तहोरहे हैं इसप्रकार जो सूर्यनारायण को जानै वहरोग औ पापोंसे बहुत शीघ्र छुटता है पापीपुरुष की सूर्यनारायण में भक्ति नहींहोती है हे साम्ब तुभी सूर्य-नारायण का आराधनकर जिससे यह व्याधि निवृत्तहोय हे साम्ब जैसे ब्रह्मा औ शिव सूर्यनारायणका रूप हैं इसी प्रकार तेरे पिता श्रीकृष्णचन्द्र भी उनकाही रूप हैं॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

सूर्यनारायण की दो भार्या औ सन्तानोंका वर्णन॥

सुमन्तु मुनि कहते हैं कि हे राजा इतना सुन साम्बने नारदजी से कहा कि महाराज आपने सूर्यनारायणका ऐसा माहात्म्य वर्णन किया जिससे मेरे हृदयमें दृढ़भक्ति उत्पन्न होगई अब आप राज्ञी निक्षुभा दण्डी औ पिंगल आदिका वर्णनकरैं यह साम्बका वचन सुन नारदजी कहनेलगे कि हे साम्ब सूर्यभगवान् की दोभार्य्या हमने कही एक राज्ञी दूसरी निक्षुभा उनमें राज्ञी द्यौः अर्थात् आकाशको कहते हैं औ निक्षुभा पृथिवीका नामहै श्रावण कृष्ण सप्तमी को द्यौःके साथ औ माघकृष्ण सप्तमीको निक्षुभाके संग सूर्य-नारायण का संयोग होताहै तब इन दोनों के गर्भ होताहै द्यौः के गर्भसे जल उत्पन्न होताहै औ भूमिके गर्भसे जगत् के कल्याण के अर्थ अनेक प्रकार के सस्य अर्थात् खेती उपजते हैं सस्य को देख अति हर्षसे ब्राह्मण हवन करते

हैं स्वाहाकार स्वधाकारसे देवता औ पितरोंकी तृप्तिहोती है अवये दोनों जिसकी कन्या हैं औ इनके जो सन्तानहैं उनका हम वर्णन करते हैं ब्रह्माके पुत्र मरीचि मरीचि के कश्यप कश्यप के हिरण्यकशिपु हिरण्यकशिपु के प्रह्लाद औ प्रह्लाद के विरोचननाम पुत्र भया बिरोचनकी भगिनी विश्वकर्माको विवाहीगई जिसकी कन्या संज्ञा भई मरीचिकी कन्या सुरूपानाम अङ्गिराऋषिको बिवाही जिससे बृहस्पति उत्पन्न भये बृहस्पतिकी ब्रह्मवादिनी भगिनी आठवें वसुप्रभासे विवाहीगई जिसका पुत्र सबशिल्प जाननेहारा विश्वकर्मा भया उसीका नाम त्वष्टाहै विश्वकर्मा की कन्या संज्ञाको राज्ञीकहते हैं औ उसको द्यौः औ सुरेणुभी कहते हैं उसी संज्ञाकी छायाका नाम निक्षुभा है सूर्य्यभगवान् की भार्यासंज्ञा नामक वड़ी रूपवती औ पतिव्रता थी परन्तु सूर्य्यनारायण मनुष्यरूपसे उसके समीप नहींजातेथे औ अति तेजसे व्याप्त वह सूर्यनारायणका रूप सुन्दर न था इसलिये संज्ञाको नहीं रुचताथा संज्ञामें तीन सन्तानभये परन्तु वह सूर्य्यनारायणके तेजसे व्याकुल हो अपने पिता के घर चलीगई औ हज़ार वर्षतक वहांरही परन्तु जब पिताने पतिके घर जानेके लिये वहुतकहा तब उत्तर कुरु को चलीगई औ घोड़ीका रूपधार तृणचरके अपनाकालक्षेपकरने लगी सूर्य्य नारायणके समीप संज्ञाकेरूपसेछाया रहतीथी सूर्यभगवान् उसको संज्ञाही जानतेथे उसमेंभी दोपुत्र औ एक कन्या उत्पन्नभई श्रुतश्रवा औ श्रुतकर्म्मा ये दो छायाके पुत्रभये औ तपती नाम कन्याभई श्रुतश्रवा तो सावर्णि मनुहुवा औ श्रुतकर्म्मा शनैश्चर नामक ग्रह

भया संज्ञाजिसप्रकार अपने सन्तानों पर स्नेह करतीथी वैसा छायाने न किया इसबातको संज्ञाके ज्येष्ठपुत्र मनुने तो सहा परन्तु छोटा पुत्र यम न सहार सका जबछायाने बहुतही क्लेशदिया तब क्रोधसे बालकपनसे औ भावी के बलसे यमने अपनी माताको भर्त्सनकिया औ मारने को चरण उठाया यहदेख क्रोधकर छायाने यमको शापदिया कि हेदुष्ट यह तेराचरण गिरपड़े माताके शापसे यम व्याकुलहो पिताके समीपगये औ सब वृत्तान्त कहा कि महाराज यह माता हमसे स्नेह नहींकरती मैंने भूलसे अथवा बालकपनसे केवल चरणउठायाथा परन्तु माताने मुझेघोर शापदिया अब मेरे चरणकी रक्षा आपहीकरैं यह पुत्रका वचनसुन सूर्य्यनारायणने कहा कि हे पुत्र इसमें कुछबड़ा कारणहोगा कि अति धर्मात्मा तुझको माताके ऊपरक्रोध आया सब शापोंका प्रतिघातहै परन्तु माताका दियाशाप कभी अन्यथा नहीं होसकता पर तेरेस्नेहसे कुछ उपाय करते हैं तेरे चरण के मांसको लेकर कृमि भूमि पर जायँ इससे माताका शापभी सत्यहो औ तेरे चरणकी रक्षाभी होजायगी सुमन्तुमुनिकहते हैं कि हे राजा इसप्रकार पुत्र का आश्वासनकर सूर्य्यनारायणने छायासे कहा कि इनमें तुमस्नेह क्योंनहीं करती माताको सब सन्तान समान मानने चाहियें यह सुनिकैभी छायाने कुछउत्तर न दिया तब सूर्य्यनारायण क्रोधकर शापदेने को उद्यतभये छाया ने पतिको अति क्रुद्ध देख भयसे सब वृत्तान्त कहदिया इसी अवसरमें विश्वकर्मा वहां आये सूर्य्यनारायण ने अपने श्वशुरको क्रोधयुक्त देख मीठेवचनोंसे उनका क्रोध शांतकर

आसन पर बैठाया तब विश्वकर्माने कहा कि हमारी पुत्री संज्ञा तुम्हारे प्रचण्ड तेज से ब्याकुलहो बनको चलीगई औ तुम्हारा रूप उत्तम होने के लिये बनमें तप करती है हमको ब्रह्माजीकी आज्ञाहै कि तुम्हारारूप उत्तम बनादेवें यदि तुम्हारी भी रुचिहोय तो हम इसकार्य में प्रवृत्तहोयँ यह श्वशुरका वचन सूर्यनारायण ने अंगीकार किया तब शाकद्वीप में सूर्यनारायण को भ्रमि अर्थात् खरादपर चढ़ाय विश्वकर्माने उनका प्रचण्डतेज छीलडाला औ उत्तम रूप बनादिया सूर्यनारायण ने भी योग बलसे जाना कि हमारी भार्या घोड़ीके रूपसे उत्तरकुरुमें रहतीहै यह जान आपभी अश्वका रूप धार उसके समीपगये औ मैथुनके लिये प्रवृत्तभये परन्तु संज्ञाने इनको परपुरुष जान इनका वीर्य नासिकामें धारणकिया उससे देवताओंकेवैद्य अश्विनीकुमार उत्पन्नभये नासत्य औ दस्र ये उनके नामहैं इसके अनन्तर सूर्यनारायण ने अपना वास्तवरूप धारण किया जिसको देख संज्ञा बहुत प्रसन्न भई औ सूर्यनारायण से संगकिया तब रेवन्तनाम पुत्र सूर्यभगवान्के समान रूपवान् उत्पन्न भया उसने सूर्यनारायण के आठवें घोड़े को चढ़नेकेलिये लेलिया औ उसपर चढ़केकुदाताहुवा चढ़ता था इसीसे उसकानाम रेवन्तहुआ क्योंकि रेवृधातुप्लवगति अर्थात् कूदके चलना इस अर्थमें है सूर्यनारायण ने दण्डनायक औ पिंगलको आज्ञादी कि हमारा आठवां अश्व रेवन्तसे लेआओ परन्तु बलसे मतलाना कोई छिद्र पाके हरलेना यह आज्ञापाय दोनों रेवन्तके पासगये औ बहुत कालतक वहांरहे परन्तु कोई छिद्र न मिला कि अश्व

हरैं सदा रेवन्तको सावधानहीदेख मनु यम यमुना सावर्णि शनैश्चर तपती दो अश्विनीकुमार औ रेवन्त ये सूर्यनारायणके सन्तानभये संज्ञा का नाम राज्ञी है औ छाया को निक्षुभा कहते हैं राजृधातु दीप्ति अर्थ में है जिससे राज्ञी शब्द बनताहै सबभूतोंसे अधिक दीप्ति होनेसे सूर्यनारायण राजा कहाते हैं राजाकी भार्याहोनेसेभी संज्ञाको राज्ञी कहते हैं क्षुभसंचलने धातुहै उससे नि उपसर्ग लगकर निक्षुभा शब्द बनता है सब मनुष्यों को अति पीड़ित देख यमने धर्मसे सबका अनुरंजनाकिया इससे धर्मराज कहाया औ अपने शुद्धकर्मके प्रभावसे पितरोंका स्वामी औ लोकपाल यमराज बना आजकल जो मनु वर्त्तमान हैं इनके वंशमें विष्णु भगवान् का अवतारहुआ यमकी बहिन यमुनानदी भई सावर्णिआठवें मनुहोंगे औ यमके बड़ेभ्रातामनु आज कल राज्य करते हैं औ सावर्णि मेरु पर्वतके पृष्ठपर तपकर रहे हैं सावर्णिके भ्राता शनैश्चर ग्रहबने औ उनकी बहिन तपती नदीभई जो बिन्ध्याचलसे निकल पश्चिम समुद्रमें जाय मिलीहै औ जिसमें स्नानकरनेसे बहुत पुण्य होताहै सौम्यानदीसे तपतीका संगम औ गंगासे यमुनाका संगम होताहै अश्विनीकुमार देवताओंके वैद्यबने जिनकी विद्या से भूमिपरभी वैद्य अपना निर्बाह करते हैं रेवन्तनाम अपने पुत्रको सूर्यनारायणने सबअश्वोंका स्वामीबनाया रेवन्तका पूजनकर जो मार्गमेंजाय उसको क्लेश नहींहोता विश्वकर्मा ने सूर्यनारायण की आज्ञासे उनके तेजकरके भोजक को बनाया जो सूर्यनारायणकी पूजा करनेवाला भया जो सूर्य भगवान् के सन्तानों की इसउत्पत्ति को सुनै वह सब पापों

से मुक्तहो सूर्यलोक में बहुत कालपर्यन्त निवासकर चक्रवर्त्ती राजा होय ॥

बिहत्तरवां अध्याय ॥

सूर्यकोप्रणाम,प्रदक्षिणादिकरनेकाफल,अर्बावसुब्राह्मणकाइतिहास॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक इसप्रकार सूर्य्यनारायण का प्रभाव सुन साम्ब ने नारदजी से फिर पूछा कि महाराज सूर्य्यनारायण के पूजन से क्या फल होता है उनकेनिमित्त दानदेनेसे किस उत्तमफलकी प्राप्ति होती है प्रणाम करने से औ उनके मन्दिरमें गीत वाद्य आदि उत्सवों से क्या पुण्य होता है यह आप कृपाकर वर्णन करैं जिससे मैंभी इस क्लेश करके पीड़ित हुआ २ सूर्यनारायण का दृढ़ भक्तिसे आराधनकरूं यह साम्ब की प्रार्थना सुन नारदजी कहनेलगे कि हे साम्ब यह बात दिण्डीने ब्रह्माजीसेभी पूँछीथी उननेदिण्डीकेप्रति जो कहा वह हम वर्णन करतेहैं दिण्डीके प्रश्नके अनन्तर ब्रह्माजी कहने लगे कि हे दिण्डी सूर्यभगवान् के पूजन स्तुति जप उत्सव बलि उपवास आदि करनेसे मनोवांछित फलपाता है सूर्यभगवान् को प्रणाम करनेके अर्थ भूमिपर शिरका स्पर्श होतेही सब पातक दूरहोजाते हैं जो भक्तिसे सूर्यनारायणकी प्रदक्षिणाकरै उसको सप्तद्वीपवती भूमिकी प्रदक्षिणा का फल होताहै औ वह पुरुष सब रोगोंसे मुक्तहो अन्तमें सूर्यलोकको प्राप्तहोता है परन्तु जूता निकालकर प्रदक्षिणा करनी चाहिये जो पुरुष जूता पहिने सूर्य मन्दिर में प्रवेशकरैं वे असिपत्र वन नामक घोर नरकमें पड़ते हैं जो षष्ठी अथवा सप्तमीके दिन एकाहार अथवा उपवास

कर सूर्यनारायण का भक्तिसे पूजनकरै वह सूर्यलोकमें नि-वासकरै कृष्णपक्षकी सप्तमीको उपवासकर जितेन्द्रियहो कमल करवीर रक्तचन्दन केसर उत्तमजल औ मोदकआदि भांति २ के नैवेद्योंसे सूर्य्यनारायणका अर्चनकरै वह सूर्य-लोकको प्राप्तहोय शुक्लपक्षकी सप्तमीको सब श्वेत पदार्थों से सूर्य्यनारायणका यजनकरै चमेलीकेफूल श्वेत कमल खीरआदि उनके अर्पणकरै वह सब पापोंसे मुक्तहोयकांति में चन्द्रमाकेतुल्यहोजाय औ अन्तमें हंसयुक्तविमानमेंबैठ सूर्य्यलोक को जाय यह ब्रह्माजीके मुखसे श्रवणकर फिर दिण्डीने कहा कि महाराज आप विस्तारसे सप्तमीकल्प का बर्णनकरैं कि मैंभी सप्तमीका उपवासकर सूर्य्यनारायण के शरणमें प्राप्तहोजाऊँ यह दिण्डीका बचनसुन ब्रह्माजी बोले कि हे दिण्डी बहुत उत्तम वार्त्ता तुमने पूँछी सप्तमी कल्पका हम वर्णनकरते हैं एक समय सूर्य्यनारायण ध्यान करतेथे उस अवसर में अरुणने कहा कि महाराज आप बैठे क्या ध्यान करते हैं आपके ध्यानकरने से दिनही पूरा नहींहोता इसकाकारण मुझेकहैं औ आपको ध्यान करना होय तो चलते २ करैं यहसुन सूर्य्यभगवान् कहनेलगे कि हे अरुण अर्वावसुनामक ब्राह्मण पुत्रकेअर्त्थ हमारा आ-राधन करताहै परन्तु वह विधि नहीं जानता कि जिसके करनेसे हम प्रसन्नहोकर पुत्रदेते हैं वह सप्तमीकल्प नामक बिधि हमतुमको उपदेश करते हैं औ तुमजाकर उसब्राह्मण को बताओ जिसके करनेसे वह अपना मनोबांछित फल पावै उस बिधिके करनेसे हम बहुत पुत्र देते हैं यह कहकर सुर्य्यनारायण ने अपने सारथि अरुणको सप्तमी कल्पका

उपदेश किया अरुणने सूर्य्यभगवान् की आज्ञानुसारजाय ब्राह्मण को बताया ब्राह्मणने उस सप्तमी कल्पकी बिधिको किया जिससे बहुतसे पुत्र धन आरोग्य औ सम्पत्तिपाई औ अन्त समय बिमान में बैठ सूर्य्यलोक को गया ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

बिजयासप्तमी का विधान ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी जया बिजया जयन्ती अपराजिता महाजया नन्दा औ भद्रा ये सात सप्तमी हैं शुक्ल पक्षकी सप्तमीको आदित्यबारहोय तो उस सप्तमीको बिजया सप्तमी कहते हैं उन दिन किया हुआ स्नान दान होम उपवास पूजन आदि सत्कर्म्म अनन्त फल देता है पंचमी के दिन एक भक्त षष्ठीको नक्त सप्तमी को उपवास औ अष्टमीके दिन व्रत पारणकरै यह कई आचार्य्यों का मत है परन्तु हमारे मतसे चतुर्थी को एक भक्त पंचमी को नक्त षष्ठीको उपवास औ सप्तमीको पारणकरै षष्ठीके दिन उपवासकरै गन्ध पुष्प आदि उपचारोंसे सूर्य्यनारायणका पूजनकरै औ गायत्रीसूक्त त्र्यक्षरमन्त्र महाश्वेता अथवा षडक्षर मन्त्र जपताहुआ सूर्य्यनारायणके सम्मुख शयन करै सप्तमीके दिन प्रभातही उठ स्नानकर सूर्य्यनारायण का पूजनकरै औ हवनकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय दक्षिणादेवै औ अपूपआदि भांति २ पकान्न घृत खीरआदि नैवेद्य सूर्य्यनारायण को निवेदनकरै करवीरके पुष्प कुंकुम लेपन औ विजय धूपके अर्प्पण से सूर्य्यनारायण प्रसन्न होतेहैं यह विजय सप्तमी का विधानहै इस व्रतके करनेसे सब पातक नष्ट होजाते हैं इस दिन कियाहुआ दान हवन

देवता औ पितरों का पूजन अक्षय होताहै हे दिण्डी यह विजय सप्तमी पुण्य तिथिहै इसके माहात्म्य श्रवण करने से भी धन यश औ आयुष् की वृद्धि होतीहै॥

अठहत्तरवां अध्याय॥

बारहप्रकारके आदित्यवारोंका कथन व कल्प॥

दिण्डी पूछते हैं कि हे ब्रह्माजी जो आदित्यवारके दिन सूर्य्यनारायण का भक्तिसे पूजन करते हैं औ स्नान दान आदि करते हैं उनको क्याफल होताहै जिस बारके संयोग से सप्तमीतिथि विजयाकहाई उसका माहात्म्य आपकृपा कर वर्णनकरैं यहसुन ब्रह्माजी बोले कि हे दिण्डी जो पुरुष आदित्यबार को श्राद्धकरैं वे सातजन्म पर्य्यन्त आरोग्य होतेहैं जो नक्तव्रत करैं औ आदित्यहृदय का पाठकरैं वे रोगसे मुक्तहोयँ औ सूर्य्यलोक में निवासकरैं जो उपवास कर महाश्वेता मन्त्रको जपैं वे मनोवांछित फल पावैं दिन रात्रि नक्त अथवा त्रिरात्रि के नियमसे जो महाश्वेता को जपैं वे अपना अभीष्टसिद्ध करैं आदित्यबारके दिन महाश्वेता औ षडक्षर मन्त्रके जपनेसे निःसन्देह सूर्य्यलोककी प्राप्तिहोतीहै सूर्य्यनारायण के बारहबारहैं नन्द भद्र सौम्य कामद पुत्रद जय जयन्त विजय आदित्याभिमुख हृदयरोगहा औ महाश्वेताप्रिय येउनकेनामहैं माघशुक्ल षष्ठीको जो बारहोय उसकी नन्द संज्ञाहै उस दिन नक्तव्रतकर घृत से सूर्य्यनारायणको स्नानकराय श्वेतचन्दन अगस्ति के पुष्प गूगल धूप औ अपूप आदि नैवेद्य चढ़ावै औ ब्राह्मण को अपूप देकर आप भी मौनसे भोजन करै तारादर्शन पर्य्यंत नक्तव्रत होताहै सेर पक्के गेहूँ अथवा जौ के आटे

में घृत औ गुड़ मिलाय अपूप बनावै औ सूर्य्यनारायण को नैवेद्य लगाय (आदित्यतेजसोत्पन्नं राज्ञीकरविनिर्मितम्। श्रेयसेममविप्रत्वं प्रतीच्छापूपमुत्तमम् १) यह मन्त्र पढ़ ब्राह्मणको देवै ब्राह्मण भी उस अपूपको ले (कामदं सुखदंधर्म्यंधनदंपुत्रदंतथा। सदातुभ्यंप्रयच्छामि मण्डकं भास्करप्रियम्) यह मन्त्रपढ़ यजमानकोदेवै ये दोनोंग्रहण करने औ देनेके मन्त्र हैं यह नन्दवारका बिधान मनुष्योंके कल्याणके अर्थ कहाहै जो इसवारको इस विधिसे सूर्य्यनारायण का पूजनकरै वह सूर्य्यलोक पावै उसकी सन्तान का क्षय न होय औ उसके वंशमें दारिद्य औ रोग भी न होयँ सूर्यलोकसे आय राजाहोय इस बिधानके पढ़ने अथवा श्रवणकरनेसेभी कल्याणहोताहैऔलक्ष्मीमिलतीहै॥

उनासीवां अध्याय॥

भद्रवारका विधान औ फल॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी भाद्रकृष्ण षष्ठीके दिन जो बार होय उसका नाम भद्रहै उसदिन जो नक्तव्रत अथवा उपवासकरै वह हंसयुक्त विमानमें बैठ सूर्य्यलोकको जावै श्वेत चन्दन मालती के पुष्प विजयधूप औ खीरका नैवेद्य इनसे मध्याह्न के समय सूर्य्यनारायण का पूजनकर ब्राह्मण भोजन कराय यथाशक्ति दक्षिणा देकर आपभी मौनमे भोजनकरै खीर घृत औ गुड़ इनका भोजनकरै इस विधि से भद्रवार को अंधकारहारी श्रीसूर्य्यनारायण का अर्चनकरै वह धन पुत्रआदि सब वस्तुपावै औ अन्तमें सूर्य्यलोक को जावै हे दिण्डी यह भद्रवार का विधान ह-

मने कहाहै जिसके पढ़ने औ श्रवण करनेसे भी सब पाप निवृत्त होते हैं ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

सौम्यबार का विधान ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी रोहिणी नक्षत्रयुक्त आदित्यबार होय उसको सौम्यबार कहते हैं उसदिन किया हुआ स्नान दान जप होम पूजनआदि अक्षय होताहै जो इस दिन नक्तव्रत कर रक्तचन्दन रक्तकमल सुगन्ध धूप पायस आदि नैवेद्य से सूर्य्यनारायण का पूजन करै औ ब्राह्मणों को पायस भोजन कराय आपभी भोजनकरै इस बिधिसे जो सूर्य्यनारायण का पूजन सौम्यबारको करै वह उत्तम कांतिधन पुत्र औ आरोग्य पावै बहुत कालसंसार सुखभोग सब पापोंसे छुट सूर्य्य लोकमें निवासकरै ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

कामदबार का विधान ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठीको जो बार होय वह कामद कहाता है उसदिन जो भक्ति औ श्रद्धासे सूर्य्यनारायण का पूजनकरै वह सब पातकों से मुक्तहो सूर्य्यलोकमें निवास करै उसदिन उपवास अथवा नक्तव्रत कर रक्तचन्दन करबीर के पुष्प घृतका धूप औ सुगन्धि युक्त कसार का नैवेद्य इनसे सूर्य्यनारायण का अर्चनकरै इस बिधिसे पूजनकरै तो सब मनोबांछित फल पावै इस व्रतके करने से विद्याकामनावाले को विद्या पुत्र कामनावाले को पुत्र धनकी इच्छावाले को धन औ आरोग्यकी चाह होय तो आरोग्य मिलताहै इसदिन सूर्य्य-

नारायण का अर्चन करनेसे सब कामना प्राप्तहोतीहै इसी से इसका नाम कामदहै पूर्वोक्त रीतिसे इस दिनभी जोसूर्य नारायण को अपूप अर्पणकरै वह इन्द्र के समान ऐश्वर्य पावै औ सूर्य्यलोकमें निवास करै ॥

बयासीवां अध्याय ॥

पुत्रदवार का विधान ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी जिस रविवार को हस्त नक्षत्र होय वह पुत्रद कहाता है उसदिन उपवासकरै औ श्राद्ध करके विचले पिण्ड को प्राशनकरै औ भाँति २ के उपचारों से सूर्य्यनारायण का पूजनकर महाश्वेता मंत्रको जपता हुआ भूमिमें सूर्य्यनारायणके सम्मुखही शयनकरै प्रभात उठ स्नान कर सूर्य्यभगवान् का अर्चन कर रक्त चन्दन औ करवीरके पुष्प जलमें मिलाय अर्घ्यदेवै फिर पांच ब्राह्मणों को बुलाय उनमें दिव्य दो ब्राह्मणोंको भग संज्ञक मान विधिसे पार्वण श्राद्धकरै श्राद्धको समाप्त कर मध्यम पिण्ड को (सएवपिण्डोदेवेशयोभीष्टस्तवसर्वदा। अश्नामिपश्यतस्तुभ्यंयेनमेसन्ततिर्भवेत् ॥ प्रसादात्तवदे-वस्य इतिमेभावितंमनः) इसमंत्रसे भक्षण कर जाय इस विधानके करनेसे सूर्य्यनारायण अवश्यपुत्रदेते हैं इस व्रत के करनेसे धन धान्य सुवर्ण सुख औ आरोग्यभी मिलता है औ सूर्य्यलोक की प्राप्ति भी होतीहै परन्तु विशेषकरके पुत्रप्राप्ति इसव्रतका फलहै इसीसे इसको पुत्रदकहते हैं ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

जयवार औ जयन्तवारका विधान ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी दक्षिणायन के दिन जो

बार होय उसकानाम जयवार है उस दिन किया हुआ उ-
पवास स्नान दान जपआदि सत्कर्म सौगुणा फल देताहै
इस लिये सूर्य्यनारायण की प्रीति के लिये उस दिन नक्त
आदि व्रतकर भक्तिसे सूर्यनारायण का पूजनकरै। उत्तरा-
यणके दिन जो वार होय उसको जयन्त कहते हैं इसदिन
किया हुआ स्नान दानादि सहस्रगुण होजाता है उसदिन
उपबासकर घृत दूध औ इक्षुरससे सूर्यनारायणको स्नान
कराय केसरका चन्दन चढ़ावै औ गूगलका धूपदे मोदक
नैवेद्य लगावै पीछे तिलों से हवन कर यथाशक्ति ब्राह्मण
भोजन कराय आपभी व्रत पारणकरै इस व्रतके करने से
मनोबांछित फलपावै औ सूर्यनारायण का प्रियहोय॥

चौरासीवां अध्याय॥

विजयबारका विधान॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी शुक्लपक्ष की रोहिणी न-
क्षत्रयुक्त सप्तमी तिथिको जो बारहोय वह विजय कहाता
है उसदिन किया हुवा पुण्य कर्म कोटिगुण होजाताहै इस
दिन नक्तव्रत अथवा उपवास कर भक्तिसे सूर्यनारायणका
पूजनकर जप हवनआदिकरै औ यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन
करावै इसव्रतकेकरनेसे सप्तद्वीपवती पृथिवीका राजाहोय॥

पचासीवां अध्याय॥

आदित्याभिमुखबार का विधान॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी माघ कृष्ण सप्तमीको
जो बारहोय उसको आदित्याभिमुख कहते हैं उसदिन प्र-
भातही स्नान कर गन्ध पुष्पादि उपचारोंसे सूर्यनारायण
का पूजनकरै औ स्तंभके सहारे सूर्यके सम्मुख मुख कर

महाश्वेता मन्त्र को जपताहुआ सायङ्काल पर्यंत खड़ारहै वह स्तंभ रक्तचन्दनके काष्ठका चारहाथ लम्बा सीधा औ चिकनाहोना चाहिये इसप्रकार व्रतकर ब्राह्मण भोजनक- राय दक्षिणादे आपभी मौनसे भोजनकरै इस व्रतको जो पुरुष करैं उनको धन धान्य पुत्र आरोग्य औ लक्ष्मी सू- र्य्यनारायणके अनुग्रहसे प्राप्त होते हैं॥

छियासीवां अध्याय॥

हृदय नाम वार का विधान॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी संक्रांतिके दिनजो रविवार होय उसकी संज्ञाहृदयहै उसदिन नक्तव्रतकरै औ मन्दिर में जाय सूर्यनारायणके सन्मुखखड़ाहोकर आदित्यहृदय के आठ पाठकरै अथवा सायंकाल पर्यन्त सूर्य्यनारायण का ध्यान करतारहै फिर सूर्यास्तके अनंतरघरमें आयब्राह्मण भोजन कराय मौनसे आपभी क्षीर भोजनकरै औ सूर्यना- रायण का स्मरण करताहुआ भूमिपर सोवै इसव्रतकोकरै औ भक्ति श्रद्धासे सूर्यनारायण का अर्चनकरै तो हृदयके सब अभीष्ट सिद्धहोयँ औ कांति तथा यशकीवृद्धि होय॥

सत्तासीवां अध्याय॥

रोगहा वार का विधान॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे दिंडी जिस आदित्यवार को पू- र्वाफाल्गुनीनक्षत्रहो उसको रोगहा कहते हैं इसदिन गन्ध पुष्पआदि उपचारोंसे जो सूर्य्यनारायणका पूजन करै वह सब रोगोंसे मुक्तहोय। आकके पत्रोंका दोना बनाय उस में आकके फूल तोड़कर लावै औ रात्रिको सूर्य्यनारायण के सन्मुख उनको रक्खै औ प्रभात उठ उनसे पूजनकर एक

पुष्प आपभी प्राशनकरै औ क्षीर भोजनकर व्रत समाप्तकरै व्रतकेदिन भूमिशयनकरै औयथाशक्तिब्राह्मणभोजनकराय दक्षिणा देवै इसबिधिसेजो सूर्य्यनारायण का आराधनकरै वह सब रोगोंसे मुक्तहोय औ अन्तमेंसूर्यलोकमेंनिवासकरै॥

अट्ठासीवां अध्याय॥

महाश्वेत प्रियवार का विधान आदित्यवार कल्प समाप्ति॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी सूर्य्यग्रहण के दिन जो रविवार होय उसको महाश्वेतप्रिय अथवा खखोल्कप्रिय कहते हैं उसदिन उपवासकर पवित्रहो गन्ध पुष्पादि उपचारोंसे भक्तिकरके सूर्य्यनारायणका पूजनकरै औ महाश्वेता मन्त्र अथवा खखोल्कमन्त्रका जपकरै पाहिले खखोल का पूजनकर महाश्वेता का पूजन करै पीछे सूर्य्यनाराय को पूजै महाश्वेता को स्थापन कर गन्ध पुष्प आदि से पूज उसके सन्मुख सूर्य्यनारायण का पूजन आदिकरै औ स्नानकर घृत सहित तिलों का हवन करै ग्रहणके समय महाश्वेता मन्त्रकाजपकरै औ ग्रहण मोक्षहोनेके अनन्तर स्नानकर महाश्वेता खखोल्क औ सूर्य्यनारायण का पूजन कर ब्राह्मणोंसे पुराण श्रवणकर उनको भोजनकराय यथा शक्ति दक्षिणादेकर आप भी मौनसे भोजनकरै इस दिन किये हुये स्नान दान जप होम आदि कर्म अनन्त फल को देते हैं इसलिये सूर्य्यनारायण की प्रीति के अर्थ इस दिन दानआदि सत्कर्म्म करने चाहिये इस व्रतके करनेसे धर्म्म यश सन्तान औ धनकी वृद्धि होतीहै औ सूर्य्यनारायण प्रसन्नहोते हैं उसदिन अपूप का दान करनेसे गोदान तुल्य फल होताहै हे दिण्डी ये बारह बार सूर्य्यनारायणके

हमने वर्णनकिये इनको जो पुरुषपढ़ै अथवा सुनै वह सूर्य्य-नारायण का प्रियहोय औ जो इन व्रतोंको करै वह धर्म्म अर्थ काम सन्तान आरोग्य तेज कांति औ स्थिर लक्ष्मी पावै औ बहुतकाल संसारके सुखभोगकर अन्त में शिव-लोकको जाय ॥

नवासीवां अध्याय ॥

सूर्य्यनारायणको अनेकउपचार औपदार्थ अर्पणकरनेका अलग २ फल

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी जो पुरुष सब सत्कर्म सूर्य्य नारायण की प्रीतिके लिये करते हैं उनके कुलमें रोगी औ दरिद्री नहीं उत्पन्न होतेहैं। सूर्य्यभगवान्‌के मन्दिरमें जो गोबरसे लेपन करै वह बहुत शीघ्र सब पापोंसे छुटजाता है श्वेतरक्त अथवा पीली मृत्तिका से जो लेपन करै वह मनोवांछित फल पावै। अनेक प्रकार के पुष्प जो सूर्य्य-नारायणके अर्पणकरै वरतसे वह अभीष्टफलपावै। जो घृत अथवा तैलसे मंदिर में दीपक प्रज्वलित करै वह करोड़ों दीपकोंकरके आवृतहो सूर्य्यलोकको जाय। जो सूर्य्यनारा-यण की प्रीतिके अर्थ चतुष्पथ तीर्थ देवालय आदि में दीपक रक्खै वह उत्तम रूपपावै। जो चन्दन केसर अगरु कपूर कस्तूरी आदि का उबटना बनाय सूर्य्यनारायण के अंगमें लगावै वह करोड़ों वर्ष स्वर्ग में विहारकर भूमि पर चक्रवर्त्ती राजा होय। चन्दन औ केसर सहित तीर्थ जलसे जो सूर्य्यनारायण को अर्घ्यदेवै वह अपने पुत्र पौत्र स्त्री आदि सहित स्वर्ग में वास करै। कमल पुष्पों करके पूजनकरै तो उत्तम अप्सराओं के साथ करोड़ों वर्ष स्वर्ग में विहार करै। गूगल औ घृत का धूप देवै तो सब पातक

निवृत्त होयँ। औ एक पक्ष इस धूपको देवै तो घोर ब्रह्महत्या से भी छूटै वर्षभर इसी धूपके देने से अश्वमेध का फल होताहै। सिह्लकनाम सुगन्ध द्रव्यके धूपसे स्वर्गकी प्राप्ति होतीहै। कपूर औ अगरु का धूप देवै तो राजसूय यज्ञका फल पावै। पूर्वाह्न में सूर्य्यनारायण का पूजनकरै तौ सौ कपिला गोदान का फल होय। मध्याह्नमें पूजनकरै तो गोदान औभूमिदानका फल प्राप्तहोवै। अपराह्नमेंपूजन करै तो हज़ार गोदानकाफलहोवै। अर्द्धरात्रिकेसमय पूजन करै तो जातिस्मर होय औ उत्तम कुलमें जन्म पावै। प्रभातही पूजनकरै तो स्वर्गको जाय इसप्रकार सब समयों में जो पुरुष अर्क पुष्पों करके सूर्यनारायणका अर्चनकरै वह सूर्यलोकमें स्थान पावै। दोनों अयन संक्रांति दोनों विषुव संक्रांति ग्रहण औ षडशीति मुखनाम संक्रांति के दिन जो सूर्यनारायणका अर्चनकरैं वे उत्तमगतिको प्राप्त होते हैं। जो पुरुष सोते उठतेही सूर्यनारायणको प्रणाम करैं वे उत्तम फलके भागी होते हैं कृसर अपूप मांस औ मोदकों करके सूर्यनारायणको बलिदेवै तो सबकार्य सिद्धि होयँ। मोदक पायस मधु मांस औ आसवके देने से सूर्य भगवान् बहुतही प्रसन्न होते हैं। घृतसे स्नानकरावै तो सदा स्निग्धहोय। मांससे तर्पणकरै तो उसी क्षण पापसे छुटै। सूर्योदयके समय घृतसे स्नानकरावै तो लाख गोदान का फलपावै। मांस औ दुग्धसे तर्पणकरै तो पुंडरीक नाम यज्ञका फलहोय। इक्षुरससे स्नानकरावै तो अश्वमेधयज्ञ का फलपावै। दुग्ध देनहारी एक उत्तम गौ सूर्यनारायणके अर्पणकरै तो स्थिर लक्ष्मीपावै औ अन्तसमय देवलोक

को जावे। गौके शरीरमें जितने रोमहोयँ उनसेभी अधिक वर्षस्वर्गमें निवासकरै। सौ गौ देवे तो राजसूय यज्ञका फल औ हजार गौ सूर्यनारायणके अर्पण करनेसे अश्वमेधका फल होताहै गूगल देवदारु औ घृत इनका धूपदेवे तो उत्तम गति पावे। घृतका धूप देवताओंको स्वभावसेही सदा प्रियहै। भेरी वंशी आदि वाद्य जो सूर्यनारायणके मंदिर में बजवावैं वे सूर्यलोक पाते हैं। भक्तिसे जो पुरुष चक्र सूर्यनारायणके अर्पण करै तीर्थका जल औ उत्तम अन्न निवेदनकरै वह सैकरों उत्तम नारियों करके युक्त विमानमें बैठ बहुतकाल विहारकरै औ भूमिपर आय धर्म्मात्माराजा होय। छत्र ध्वजा पताका वितान चामर औ सुवर्णके दंड जो सूर्यनारायणके अर्पण भक्तिसे करै वह किंकिणी जाल करके भूषित विमानमें बैठ सूर्यलोकमें जाय अप्सराओं का पति होय फिर मनुष्यलोकमें आय चक्रवर्त्ती राजाहोय। वस्त्र औ भूषण सूर्यनारायणको चढ़ावै तौ प्रलयकाल पर्यंत सूर्यलोकमें रहै। गाने बजाने औ नृत्य करके जो जागरणकरै वह अप्सरा औ गन्धर्वोंके साथ चिरकाल विहार करै। गन्धपुष्प आदिसे सूर्यनारायणका पूजनकर अनेक प्रकारके स्तोत्रोंसे जो भक्ति करके स्तुतिकरैं वे परमपदको प्राप्तहोयँ। सूर्यनारायणके गायक पाठक चारण वंदीआदि सब स्वर्गको जाते हैं। बैल अथवा घोड़ों करके युक्त सुवर्ण का जड़ाऊ रथ अथवा चांदीकाही सूर्यनारायणके समर्पण करै वह अति प्रकाशवान् विमानमें बैठ स्वर्गमें जाय देवताओंके समूहमें क्रीड़ाकरै। जो काष्ठकाही रथबनावै वह भी देदीप्यमान विमानमें बैठ सूर्यलोकको जावै। जो पुरु-

वर्षभर अथवा छही महीने सूर्य्यनारायणकी यात्रा करैं वे ध्यानी अथवा योगी जिस गतिको प्राप्त होते हैं उसी उत्तम गतिको प्राप्त होयँ औ जन्म मरण से छुटैं। जो सूर्य नारायणके रथको खैंचैं वे जन्म२ में आरोग्य औ धनवान् होयँ। जो पुरुष सूर्यनारायणकी रथयात्रा करते हैं वे देवता हैं औ सूर्यनारायणके परमप्रिय हैं। औ जो पुरुष क्रोधसे अथवा मोहसे रथयात्राका भंगकरैं उन पापियोंको मंदेह नामक राक्षसजानो। धनधान्य सुवर्ण औ अनेक प्रकारके वस्त्र जो सूर्यनारायणको चढ़ावैं वे परमगतिको प्राप्त होते हैं हाथी घोड़े भैंस औ गौ जो पुरुष सूर्यनारायणको अर्पण करैं वे हजारगुणा पावैं। औ अश्वमेधयज्ञका फल उनको होय। खेतीकरके युक्त भूमिदेवै तो इक्कीसपीढ़ीकाउद्धारकरै। ग्राम अथवा फलपुष्प आदिसे परिपूर्ण बाग जो सूर्यनारायणके चढ़ावै वह उत्तम विमान में बैठ सूर्यलोक में जाय अप्सराओंकेसाथ क्रीड़ाकरै। सूर्यभगवान्को प्रणामकरने से मन बचन औ कर्मकरके कियेहुये सबपाप नष्टहोजाते हैं। आर्त्त रोगी दरिद्री दुःखी जो पुरुष सूर्यनारायणके शरणमें जाय वह सब क्लेशों से छुटै। सूर्य्यनारायण का एक दिन पूजन करनेसे जो फल प्राप्तहोताहै वह उत्तमफल सौयज्ञ के करनेसेभी नहीं मिलता। सूर्य्यभगवान् के मन्दिर में प्रेक्षणक अर्थात् तमाशा करावै तो राजसूय यज्ञका फल पावै। उत्तम वेश्याओंका समूह जो सूर्य्यनारायणके अर्पण करै वह सूर्य्यलोकको जावै। भारत का पुस्तक चढ़ावै तो सब पापोंसे छुट विष्णुलोक में निवास करै रामायण चढ़ावै तो बाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहोकर शिवलोक को जाय।

भविष्यपुराण अथवा साम्बपुराण सूर्य्यनारायणके अर्पण करै तो राजसूय औ अश्वमेधका फल पावै। ग्रीष्मऋतु में सूर्य्यनारायण के मंदिर में जो प्रपा अर्थात् जलशाला बनावै औ शीतकालमें शीत निवारण वस्त्र वहां रक्खै वह अश्वमेधका फल पावै औ स्वर्ग्ग में निवासकरै सूर्य्यनारायण के सम्मुख इतिहास पुराणआदि बचवावै वह हज़ार अश्वमेध के फलको प्राप्तहोताहै। इतिहास औ पुराण की कथासे अधिक कोई पदार्थ सूर्य्यनारायण को प्रिय नहीं है इसलिये इनके मन्दिर में अवश्य पुराण बचवावै अथवा आप बांचै॥

नब्बेवां अध्याय॥

वैश्य व ब्राह्मणकी कथा, सूर्य मन्दिर पुराण बांचने का फल॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे दिंडी हम तुमको एक इतिहास सुनाते हैं प्रीतिसे सुनो। एकसमय कुमार हमारे समीप आये हमने भी उनको आदरसे आसनपर बैठाय कुशल प्रश्न पूछ यहभी पूछा कि आपकहांसे आयेहो तब कुमार कहनेलगे कि महाराज आजहम सूर्यलोकमेंगयेथे वहां हम ने भक्तिसे सूर्यनारायणका पूजनकिया औ प्रदक्षिणाकर प्रणामकरा औ उनकी आज्ञासे आसनपर बैठे इसीअवसरमें रत्नोंके जड़ाऊ विमान में बैठा हुआ अति तेजस्वी एक पुरुष वहां आया उसको देख सूर्य्यनारायण अपने सिंहासनसे उठे औ उसका दहिना हाथ पकड़ बड़ेआदर से आसन पर बैठाय अर्घ्यदे प्रीतिसे स्वागत प्रश्नकरते भये औ प्रीतिसे यह भी उस पुरुषसे कहा कि तुम हमारे परमप्रियहो अब प्रलयपर्य्यन्त हमारे समीपही रहो फिर

ब्रह्मलोकको जाओगे। सूर्य्यनारायण उस पुरुषका आदर करही रहेथे कि बिमान में बैठाहुआ एक और पुरुष आया उसका भी पहिली भांति सूर्य्य नारायण ने बहुत आदर सत्कार किया यह देख हमको बहुत आश्चर्य्य हुआ तब हमने सूर्य्यनारायणसे पूछा कि महाराज ये दोनों कौन हैं इनने ऐसा क्या उत्तम कर्म कियाहै कि आपने अपनेहाथ इन दोनों का पूजन किया। यह देख हमको बड़ा आश्चर्य हुआहै क्योंकि ब्रह्म विष्णु औ शिव सदा आपका अर्चन करते हैं औ आपने इनका पूजन किया यह बड़े आश्चर्य की बातहै कौन ऐसा उत्तमकर्म इनदोनोंने किया कि जिसका यह फलहै आप कृपाकर हमको कहैं॥

यह सुन सूर्यभगवान् कहनेलगे कि आपने बहुत अच्छी बातपूछीहमइसकावर्णनकरतेहैंआपश्रवणकरो। हमारेवंश केराजाओंकी राजधानी अयोध्यानामनगरीहै उसमेंधनपाल नाम एकवैश्यथा उसने एक बहुतउत्तम हमारा मन्दिर बनायाऔ ब्राह्मणों के समूह का पूजनकर पौराणिक आचार्य्यको बुलाय पुस्तकका औ आचार्यका भक्तिसे अर्चन कर यहप्रार्थनाकरी कि महाराज आपसूर्यनारायणकेसन्मुख पुराणबांचैं जिससे ये चारों वर्णकेमनुष्य श्रवणकरैं औ मेरे ऊपरभी सूर्यनारायणका अनुग्रहहो। यह कहकर सौ मोहर आचार्यको समर्पणकर प्रार्थना करी कि महाराज आप प्रीतिसे कथाबांचैं बर्षके अनंतर आपका और भी पूजन करूंगा यह सुन आचार्य्य प्रसन्नहो कथा कहने लगे परन्तु छःमहीनेके अनंतर वैश्यकादेहांत होगया वहीवैश्य यह पुरुषहै जो पहिले आयाहै हमने इसकेलानेको बिमान

भेजाथा हे कुमार गन्ध पुष्प आदि उपचारोंसे पूजनकरने करके हमारी वैसी प्रसन्नता नहीं होती जैसी पुराण कथा बँचवायेसे होतीहै गौ सुवर्ण वस्त्र भूषण हाथी घोड़े ग्राम नगर आदि हमारे अर्पणकरै तौभी पुराण कथा बिना हम प्रसन्न नहींहोते हे कुमार बहुत कहांतककहैं पुराण कथासे अधिक हमारी प्रीति करनेहारा कोई कर्म नहींहैजो दूसरे विमानमें पुरुषआया यह भी उसीनगरमें ब्राह्मण था एक दिन यह कथा श्रवण करने हमारे मन्दिरमें गया वहां जाय इसने भक्तिसे पौराणिक का पूजनकर प्रदक्षिणा करी औ एक मासा सुवर्ण कथा पर चढ़ाया औ कथा श्रवणकर बहुत प्रसन्न भया केवल इसी कर्मकेफलसे यहां प्राप्त भया औ हमने अपने हाथ इसका पूजन किया हे कुमार भक्ति से जो पौराणिकका पूजनकरै उसने ब्रह्मा विष्णु शिव आदि सब देवताओं का पूजन किया जो पौराणिकको पूजनकर भोजन करावै उसको पंद्रहवर्षतक करेहुये हमारे पूजनका फल प्राप्त होताहै यम यमुना तपती शनैश्चर मनु आदि हमारे संतानभी हमको ऐसे प्रियनहीं हैं जैसा पुराण बांचने वाला पुरुषप्रियहै एकबारपौराणिकका पूजन करनेसे दोसौ वर्ष पर्यंत हमको तृप्ति रहतीहै केवल हमारीही तृप्ति नहीं होती इन्द्रआदि देवता भी तृप्त होजाते हैं क्योंकि पौराणिक सब देवताओं का प्रीति पात्रहै उसके प्रसन्न होनेसे सब देवता प्रसन्नहोते हैं हे ब्रह्माजी यह बात सूर्य्यनारायण के मुखसे श्रवणकर बड़े आश्चर्य्यसे आपके पास आये हैं अब आप हमारासन्देह निवृत्तकरैं कि क्या पुराण श्रवणका ठीक ऐसाही फलहै हे दिंडी यह सुन हमने कुमार से कहा

कि तुम धन्यहो कि ऐसा सत्कर्म्म करनेहारेपुरुषोंका दर्शन किया औ सूर्य्यनारायण के मुखसे उनकी प्रशंसा श्रवण करी हे कुमार सूर्य्यनारायण ने जो कथनकिया सब यथार्थ है उसमें कभी भ्रांति मतकरो हे कुमार हमने अपने पंचम मुखसे इतिहास औ पुराणरचे हैं हमको चारों वेदोंसे भी पुराण औ इतिहास अधिक प्रियहैं क्योंकि वेदोंका अर्थ गूढ़ है औ ये सब स्फुटार्थ हैं धर्म अर्थ काम औ मोक्षका इनमें विस्तारसे वर्णनहै जो इनको श्रवणकरै वह अवश्य परम पद पाताहै औ पौराणिकको दक्षिणादेवै तो बहुतही फलहै जैसे देवताओं में इन्द्र औ शस्त्रोंमें वज्र सर्वोत्तमहै इसीप्रकार मनुष्यों में पुराण बांचनेवाला श्रेष्ठहै। जोपौराणिकका पूजन भक्तिसे करै उसको सम्पूर्ण जगत्के पूजन का फल प्राप्तहोताहै मनुजीने भी कहाहै कि पौराणिक के समान और कोई पात्र नहींहै ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी इसप्रकार हमारे मुखसे सुन प्रसन्नहो कुमार अपने धाम को गये हे दिंडी सूर्य्यनारायण के मन्दिरमें जो पुराणश्रवण करै वह परम गति को प्राप्तहोताहै॥

इक्यानबेका अध्याय॥

सूर्यनारायणको स्नानआदि करानेका फल॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेदिंडी जो पुरुष प्रदक्षिणाकर भूमि पर मस्तकरख सूर्यनारायणको प्रणामकरै वह उत्तम गति पाताहै जूतापहिने जोपुरुष सूर्यमंदिरमेंजाय वहअंधतामिस्रनाम घोरनरकमें पड़ताहै मूत्र विष्ठा अथवा थूकजो सूर्यनारायणके मंदिरमें डालते हैं वेभी नरकमेंपड़ते हैं घृत दूध शहत इक्षुरस औ उत्तमजल जो सूर्यनारायणके स्नानके

लिये देवैं वे उत्तमगतिपावैं स्नानकेसमय जो सूर्यनारायण का दर्शनकरैं वे अश्वमेधके फलको प्राप्तहोय शिवलोकको जातेहैं जो भक्तिसेस्नानकरावैं वे अश्वमेध औ राजसूयके फलकोप्राप्त होयँ परन्तु ऐसे स्थानमें स्नानकरानाचाहिये जहां स्नानकेजलको कोई उल्लंघन न करै इसजलके उल्लंघनकरने से अशुभहोता है अर्थात् लंघनकरनेहारा पुरुष नरकमें पड़ताहै घृतसे स्नान करावै तो ब्रह्मलोकको, शहत से स्नानकरावै तो वरुणलोक को, जलसे स्नानकरावै तो देवलोकको, इक्षुरससे स्नानकरावै तो वायुलोकको औ सब द्रव्यों से स्नानकरावै तो सूर्य्यलोकको प्राप्तहोताहै ॥

बानबेका अध्याय ॥

जयासप्तमीका विधान औ फल ॥

दिंडी पूछतेहैं कि महाराज आपने सातसप्तमीकही उन में एकका तो विस्तारसे वर्णनकिया औ बाकी छःसप्तमियों का विधान नहीं कहा इसलिये कृपाकर आप उनका भी वर्णन कीजिये जिनके उपवास करनेसे सूर्य्यलोककी प्राप्ति होय यह दिंडीका वचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे दिंडी शुक्लपक्षकी जिससप्तमीको हस्तनक्षत्रहोय उसकोजयासप्तमी कहते हैं उसदिन कियाहुआ स्नान, दान, जप, होम, पूजन आदिकर्म सब सौगुणा होजाताहै यह सप्तमी सूर्य्यनारायण को बहुत प्रियहै इसके उपवाससे धन, यश, पुत्र औ सब मनोवांछित फल प्राप्तहोते हैं जयासप्तमी से व्रतका आरम्भ कर चार २ महीनेमें पारण करै इसप्रकार एक वर्षमें तीन पारण होते हैं पहिले पारण में करवीरके पुष्पचढ़ाय कमार

का नैवेद्य लगावै औ ब्राह्मणों को भी कसारही भोजन करावै पंचमीको एक भक्त षष्ठीको नक्त औ सप्तमी को उपवास कर अष्टमी को पारणकरै इसव्रतको अर्क के काष्ठसे दन्तधावनकर श्वेत सरसों का उबटना लगाय स्नानकरै औ गोबरका प्राशन करै यह प्रथम पारण का विधान है दूसरे पारणमें चमेलीकेपुष्प श्वेतचन्दन विजयधूप पायस नैवेद्य औ भांति २ के उपचारों से सूर्य्यनारायणका पूजन करै औ ब्राह्मण भोजनकराय आप भी मौन से खीर का भोजनकरै औ यहकहै कि देवदेव श्रीसूर्य्यनारायण मुझ पर प्रसन्नहोयँ इसपारणमें खदिरके काष्ठसे दन्तधावन औ पंचगव्यका प्राशनकरै तीसरे पारणमें श्वेत चन्दन अगस्तिपुष्प औ भांति २ के नैवेद्योंसे पूजनकरै इस पारणको कुशाके जलका प्राशन औ बदरी काष्ठका दन्तधावनकरै वर्षके अन्तमें सूर्य्यनारायणका बड़ा पूजन करै औ नाच तमाशा आदि उत्सव करावै गौ भूमि औसुवर्णआदि दान देकर ब्राह्मणोंको प्रसन्नकरै औ वस्त्र भूषण आदिसे पौराणिकका पूजनकर सूर्य्यनारायणके सम्मुखखड़ाहो यहश्लोकपढ़ै कि (देवदेवजगन्नाथ सर्वरोगार्त्तिनाशन। ग्रहेशलोकतपनविकर्त्तनभयापह॥ कृतेयंदेवदेवेशजयानामेतिसप्तमी। मयातवप्रसादेन धन्यापापहराशिवा) यह पढ़ बारम्बार प्रणामकरै हे डिंडी इसविधिसे जो सप्तमी व्रतकरै उसका स्नान आदि कर्म्म सौगुणा होजाता है इस व्रतके करनेहारा पुरुष धन धान्य पुत्र आयुष औ आरोग्य पाता है औ बहुतकाल सूर्य्यलोक में निवास कर वहां उत्तमभोग भोग भूमिपर आय चक्रवर्त्ती राजाहोय चिरकाल पर्य्यन्त

निष्कंटक राज्य करताहै हे दिण्डी इसमाहात्म्यके श्रवण सेभी वहुत फल होताहै ॥

तिरानबेका अध्याय ॥

जयन्ती सप्तमीका विधान औ फल ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी माघ शुक्ल सप्तमी का नाम जयंती है उसका यह विधानहै कि पंचमीको एकभक्त षष्ठीको नक्त औ सप्तमीको उपवासकर अष्टमी को पारण करै इस व्रतमें चार पारण होते हैं प्रथम पारणमें केसरका चन्दन, वकपुष्प, मोदक,नैवेद्य औ घृतका धूप इनसे सूर्य-नारायणका पूजनकरै ब्राह्मणोंको मोदक औ वहुत उत्तम भात भोजन करावै औ आप पंचगव्य प्राशनकरै इस प्रथम पारणके करनेसे अश्वमेधका फलहोताहै दूसरे पारण में कमलके पुष्प रक्तचन्दन, गुग्गुलु, धूप और गुड़के अपूप ये सूर्य्यनारायणके समर्पणकरै औ ब्राह्मणोंकोभी गुड़के अपूप भोजन करावै आप गोवरका प्राशनकरै इस पारण के करनेसे राजसूययज्ञका फल होताहै तीसरे पारणमें रक्त चन्दन,मालतीपुष्प,विजयधूप औ गुड़के अपूप नैवेद्य इन से सूर्य्यनारायणका अर्चनकर ब्राह्मणोंकोभी अपूपही भोजन करावै औ कुशोदक प्राशनकरै इसके करनेसे राजसूय औ अश्वमेधका फल प्राप्त होताहै चौथेपारणमें रक्तचंदन रक्तकरवीरके पुष्प, अमृतधूप औ पायस नैवेद्य इन करके पूजनकरै औ पंचगव्य प्राशनकरै चन्दन, अगर, मोथा, कस्तूरी औ सिह्लक ये समभागलेकर धूपवनावै उसको अमृतधूप कहते हैं चारोंपारणोंमें चित्रभानु भानु, आदित्य औ भास्कर इन नामोंसे क्रम करके पूजनकरै इस विधिसे

का नैवेद्य लगावै औ ब्राह्मणों को भी कसारही भोजन करावै पंचमीको एक भक्त षष्ठीको नक्त औ सप्तमी को उपवास कर अष्टमी को पारणकरै इसव्रतको अर्क के काष्ठसे दन्तधावनकर श्वेत सरसों का उबटना लगाय स्नानकरै औ गोबरका प्राशन करै यह प्रथम पारण का विधान है दूसरे पारणमें चमेलीकेपुष्प श्वेतचन्दन विजयधूप पायस नैवेद्य औ भांति २ के उपचारों से सूर्य्यनारायणका पूजन करै औ ब्राह्मण भोजनकराय आप भी मौन से खीर का भोजनकरै औ यहकहै कि देवदेव श्रीसूर्य्यनारायण मुझ पर प्रसन्नहोयँ इसपारणमें खदिरके काष्ठसे दन्तधावन औ पंचगव्यका प्राशनकरै तीसरे पारणमें श्वेत चन्दन अगस्तिपुष्प औ भांति २ के नैवेद्योंसे पूजनकरै इस पारणको कुशाके जलका प्राशन औ बदरी काष्ठका दन्तधावनकरै वर्षके अन्तमें सूर्य्यनारायणका बड़ा पूजन करै औ नाच तमाशा आदि उत्सव करावै गौ भूमि औसुवर्णआदि दान देकर ब्राह्मणोंको प्रसन्नकरै औ वस्त्र भूषण आदिसे पौराणिकका पूजनकर सूर्य्यनारायणके सम्मुखखड़ाहो यहश्लोकपढ़ै कि (देवदेवजगन्नाथ सर्वरोगार्त्तिनाशन। ग्रहेशलोक तपनविकर्त्तनभयापह॥ कृतेयंदेवदेवेशजयानामेतिसप्तमी। मयातवप्रसादेन धन्यापापहराशिवा) यह पढ़ बारम्बार प्रणामकरै हे दिंडी इसविधिसे जो सप्तमी व्रतकरै उसका स्नान आदि कर्म्म सौगुणा होजाता है इस व्रतके करने हारा पुरुष धन धान्य पुत्र आयुष औ आरोग्य पाता है औ बहुतकाल सूर्य्यलोक में निवास कर वहां उत्तमभोग भोग भूमिपर आय चक्रवर्त्ती राजाहोय चिरकाल पर्य्यन्त

निष्कंटक राज्य करताहै हे दिण्डी इसमाहात्म्यके श्रवण सेभी बहुत फल होताहै ॥

तिरानबेका अध्याय ॥

जयन्ती सप्तमीका विधान औ फल ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी माघ शुक्ल सप्तमी का नाम जयंती है उसका यह विधानहै कि पंचमीको एकभक्त षष्ठीको नक्त औ सप्तमीको उपवासकर अष्टमी को पारण करै इस व्रतमें चार पारण होते हैं प्रथम पारणमें केसरका चन्दन, वकपुष्प, मोदक,नैवेद्य औ घृतका धूप इनसे सूर्य-नारायणका पूजनकरै ब्राह्मणोंको मोदक औ बहुत उत्तम भात भोजन करावै औ आप पंचगव्य प्राशनकरै इस प्रथम पारणके करनेसे अश्वमेधका फलहोताहै दूसरे पारण में कमलके पुष्प रक्तचन्दन, गुग्गुलु, धूप और गुड़के अपूप ये सूर्य्यनारायणके समर्पणकरै औ ब्राह्मणोंकोभी गुड़के अपूप भोजन करावै आप गोबरका प्राशनकरै इस पारण के करनेसे राजसूययज्ञका फल होताहै तीसरे पारणमें रक्त चन्दन,मालतीपुष्प,बिजयधूप औ गुड़के अपूप नैवेद्य इन से सूर्य्यनारायणका अर्चनकर ब्राह्मणोंकोभी अपूपही भोजन करावै औ कुशोदक प्राशनकरै इसके करनेसे राजसूय औ अश्वमेधका फल प्राप्त होताहै चौथे पारणमें रक्तचंदन रक्तकरवीरके पुष्प, अमृतधूप औ पायस नैवेद्य इन करके पूजनकरै औ पंचगव्य प्राशनकरै चन्दन, अगर, मोथा, कस्तूरी औ सिह्लक ये समभागलेकर धूपबनावे उसको अमृतधूप कहते हैं चारोंपारणोंमें चित्रभानु भानु, आदित्य औ भास्कर इन नामोंसे क्रम करके पूजनकरै इस विधिसे

इस तिथिको जो सूर्य्यनारायणका पूजनकरै वह परमपद को प्राप्तहोताहै इस ब्रतके करनेसे पुत्र,धन, आरोग्य औ यशकी प्राप्ति होती है वर्ष पूरा होने पर बड़ा उत्सव करै ब्राह्मण भोजन करावै वस्त्र भूषण आदिसे पौराणिक का पूजनकरै औ यह श्लोक पढ़ सर्य्यनारायणकी प्रार्थनाकरै कि (धर्मकार्येषुदेवेश अर्थकार्येषुनित्यशः। कामकार्येषुसर्वेषु जयोभवतुसर्वदा १) इस विधिसे जो इसब्रतको करै वह सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम विमानमें बैठ सूर्य्यलोकको जाय औ सूर्य्यके समान तेजस्वी होय॥

चौरानबे का अध्याय॥

अपराजितासप्तमी का विधान॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिण्डी भाद्रशुक्ल सप्तमीको अपराजिता कहते हैं चतुर्थीको एक भक्त पंचमीको नक्त षष्ठी को उपवास औ सप्तमीको पारणकरै इस ब्रतमें चारपारण कहे हैं प्रथम पारणमें रक्तचन्दन, करवीर पुष्प, गूगल का धूप औ गुड़के अपूपोंका नैवेद्य इनसे सूर्य्यनारायणका पूजनकरै औ गुड़के अपूपही ब्राह्मणोंको भोजनकरावै दूसरे पारणमें केसरका चन्दन,श्वेत पुष्प,सिह्लकका धूप औ शाली का भात नैवेद्य सूर्य्यनारायणके अर्पणकरै तीसरे पारणमें अगुरुका चन्दन रक्तकमल,अनन्तधूप,गुड़के अपूप,नैवेद्य इनसे पूजनकरै चन्दनग्रंथि,पर्ण,अगुरु,सिह्लक,शर्करा,कपूर औ मोथा इनको समभाग मिलाकर अनन्त धूपबनता है यही विधि चतुर्थपारणकी है चारोंपारणों में भग, अंशुमान,अर्यमा औ सविता इनका क्रमसे पूजनकरै औ गोमूत्र पंचगव्य घृत औ गरमजल चारों पारणों में प्राशन

करै इस विधिसे जो इस सप्तमीव्रतको करै वह शत्रुओंमें कभी पराजय न पावै औ धर्म अर्थ तथा काम को पाय सूर्य्यलोकमें जावै वर्ष पूरा होनेपर ब्राह्मण भोजन कराय पौराणिकका पूजनकरै और रक्तवर्णकी ध्वजा सूर्य्यनारायणके मंदिरपर चढ़ावै इस व्रतको जो पुरुषकरै वह सदा युद्धमें जयपावै औ अन्तसमय उत्तम विमानमें बैठ सूर्य्यलोकको जावै ॥ पंचानबेका अध्याय ॥

महाजया सप्तमी का बिधान ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे दिंडी जिस सप्तमीको संक्रांति होय उसको महाजया सप्तमी कहते हैं उसदिनकियाहुआ स्नान,दान,जप,होम पूजन आदि कर्म्मकोटि गुणितहोजाता है इस तिथिको जो घृतकरके सूर्य्यनारायण को स्नानकरावै वह अश्वमेध का फल पाय स्वर्ग में निवासकरता है जो भक्तिसे दुग्ध करके स्नानकरावै वह सब पापोंसे छुट सूर्य्यलोकको जाय औ अनेक प्रकारके उपचारों से पूजनकर भांति२ के नैवेद्यलगावै वह किंकिणी जालकरके युक्त सुवर्ण के बिमानमेंबैठ सूर्य्यलोकमें प्राप्तहोय वहांसे आय सूर्य्य के समान तेजस्वी औ चन्द्रके सम कांतिमान होकर बहुत काल धर्म्मसे राज्यकरै हे दिंडी इसव्रतको भक्तिसेकरै तो स्थिरलक्ष्मीपावै औ अन्तसमयसूर्य्यनारायणमेंलीनहोय॥

छियानबेका अध्याय ॥

नन्दा सप्तमी का विधान ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे दिण्डी मार्गशीर्ष महीनेके शुक्लपक्षकी सप्तमी नन्दाकहातीहै पंचमीकेदिन एकभक्त षष्ठी को नक्त सप्तमीको उपवास और अष्टमीको पारणकरै इस

व्रतके भी तीन पारणहैं प्रथमपारणमें सुगन्ध, चन्दन,मालतीपुष्प, कर्पूर औ अगुरुकाधूप दहीभात औ शर्कराका नैवेद्य इनसे सूर्य्यनारायणका पूजनकरै औ ब्राह्मणोंको भी दहीभात औ खाँड़ भोजन कराय आप भोजनकरै दूसरे पारणमें रक्तचंदन, पलाशपुष्प, यक्षनामक धूप औ खाँड़ से वेष्टित पक्वान्न नैवेद्य इनसे सूर्य्यनारायण का पूजनकरै कपूर, चन्दन, कूट, अगुरु, सिह्लक, ग्रन्थिपर्णि, कस्तूरी, केसर, गृंजन और हरड़ इनके समभाग मिलाने से यक्ष धूप बनताहै ब्राह्मणोंको भोजनकराय आपभी मौनसे भोजनकरै तीसरेपारणमें चन्दन,नीलकमल,प्रबोधनाम धूप औ खीर खाँड़के नैवेद्यसे सूर्य्यनारायण का पूजनकर ब्राह्मणभोजन करावै कालाअगुरु, सिह्लक, बाला, कस्तूरी, चन्दन, तगर, मोथा औ खाँड़ इनसे प्रबोध धूपबनता है तीनोंपारणोंमें विष्णु भग धाता इनका क्रमसे अर्चन करै इस विधिसे जोपुरुष नंदासप्तमीका व्रतकर पारणकरै वह पुत्रधन विद्यायश आदि अपने मनोवाञ्छित फलपाताहै औ बहुतकाल नंदनबनमें अप्सराओं के साथविहारकर सूर्य्य भगवान् में लीनहोता है इस माहात्म्य के श्रवण करने से भी स्वर्गकी प्राप्तिहोती है ॥

सत्तानबे का अध्याय ॥

भद्रासप्तमी का विधान ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे दिण्डी जिसशुक्लपक्षकी सप्तमी को हस्तनक्षत्रहोय वह भद्रासप्तमी कहाती है उसदिन उपवासकर सूर्य्यनारायण को स्नानकरावै औ चन्दन से लेपनकर करवीर आदि पुष्पचढ़ावै गुड़सहित गेहूंके आटे

का भद्रबनावैउसके चारोंशृङ्गोंमें हीरा मोती पद्मराग औ पन्नालगाय सूर्य्यनारायणके सन्मुख स्थापनकरै औ उस के ऊपर यथाशक्ति सुबर्णभीधरै चतुर्थीकोएकभक्त पंचमी को नक्त षष्ठीको अयाचित औ सप्तमीको उपवासकरै उप-वासके दिन पाखंडी, कुकर्मी, दांभिक आदि पुरुषों से सं-भाषण न करै औ दिनमें न सोवे भक्तिसेसूर्यनारायण का पूजनकर वहभद्रब्राह्मणको देवै इसबिधिसे जोउपवासकर भद्रकादानकरै वह सबमनोबांछितफलपावै यहसुनदिंडीने पूछा कि महाराज यह भद्र कौनपदार्थ है क्योंकर बनताहै औ इसके दानसे क्याफलहोताहै यह आपबर्णन करैं तब ब्रह्माजीबोले किहेदिंडीयहव्योमभद्रनामक सूर्य्यनारायण का चिह्न है इसके दानसे सबपाप निवृत्तहोते हैं औ सूर्य्य नारायणकीप्रसन्नता होतीहै गेहूँकाआटा घृत श्वेतशर्करा इलायची दालचीनी तजपत्र नागकेसर औ दाख खोपरा आदिमेवा इन सबको मिलाय बहुत स्वादिष्ट औ सुगन्ध भद्रबनावै उसकेचारोंशृङ्गोंमेंहीराआदि चाररत्न औमध्यमें इन्द्रनीललगाय सूर्य्यभगवान्के प्रीत्यर्थ पौराणिकअथवा भोजककोदेवै इसप्रकार जो भद्रका दानकरै वह सबप्रकार के भद्र अर्थात् कल्याणपावै औ बहुतकाल सूर्य्यलोकमें निवासकर ब्रह्मलोकको जाय फिर भूमिपर आय चक्रवर्त्ती राजा होय हे दिण्डी इस भद्रसप्तमी का जो उपवास करैं अथवा जो इस माहात्म्यकोही पढ़ैं औ सुनैं वे सबकल्याण के भागीहोतेहैं औ अन्त में उत्तम गति पाते हैं॥

इतनीकथा सुनाय सुमन्तुमुनिबोले कि हे राजाशतानीक इसप्रकार ब्रह्माजी ने दिण्डीके प्रति जो सप्तमी माह

कहाथा वही हमने आपको श्रवणकराया। सप्तमी ब्रतको ग्रहणकर पारण किये बिना जो पुरुष त्यागदे वह आरूढ़ पतित अर्थात् ऊँचेस्थानपर चढ़ गिरनेवाला होताहै इस-लिये उद्यापन कियेबिन इसब्रतको नत्यागै जो भक्तिसे इस ब्रतकोकर उद्यापन करे वह अश्वमेध का फलपाताहै॥

अट्ठानबेका अध्याय॥

तिथिस्वामी औ नक्षत्र स्वामियों के पूजन का फल॥

सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हे राजा सब तिथि सूर्य्यनारायण कीही हैं परन्तु उनमें सप्तमी सबसे प्रियाहै जैसे पुरुषकी बहुत सी भार्याओं में एक पर अधिक प्रीति होती है यह सुन शतानीक ने पूछा कि महाराज सब तिथियोंके सूर्य्य-नारायणस्वामीहैं फिर सप्तमीकोही उनका याग क्यों करते हैं यहराजाका प्रश्नसुन सुमन्तु मुनिने कहा कि हे राजायह बात विष्णु भगवान्ने ब्रह्माजीसे भी पूछीथी तब ब्रह्माजी हँसकर कहने लगे कि महाराज सूर्य्यनारायणने सब तिथि देवताओं को बांटदीं केवल सप्तमी अपने लिये रक्खीजो तिथि जिस देवताकोदी वही उसका स्वामी कहाया औ उस तिथिको पूजन करनेसे वरप्रदहुआ। भगवान्ने पूछा कि कौन २ तिथि किस२ देवताकोदी कि जिसदिनपूजन करनेसे वहबरदायक होताहै तब ब्रह्माजीने कहा कि महा-राज प्रतिपदा अग्निको, द्वितीया हमको, तृतीया यक्षराज को, चतुर्थी गणेशको, पंचमी नागराज को, षष्ठी कार्त्तिकेय कोदी औ सप्तमी अपने लिये रक्खी अष्टमी रुद्रको नवमी दुर्गाको, दशमी यमराजको, एकादशी विश्वेदेवोंको, द्वादशी आपको, त्रयोदशी कामदेवको, चतुर्दशी शिवजीको, पूर्णिमा

चन्द्रमाको औ अमावास्या पितरोंको दी ये तिथि चन्द्रमा की कलाहैं कृष्णपक्षमें देवता इनको पान करजाते हैं औ शुक्लपक्ष में फिर उत्पन्नहोती हैं सोलहवीं कला अक्षय है चन्द्रमाका क्षय औ वृद्धि सूर्य्यनारायण करते हैं इसलिये चन्द्रमाके भी स्वामी वेही हैं जिस तिथिमें पूजन करने से जो देवता प्रसन्नहोकर जो फल देताहै उसका हम संक्षेप से वर्णन करते हैं प्रतिपदाके दिन अग्निमें घृत आदिका हवनकरे तो धनधान्य पावे द्वितीया को हमारा पूजन कर ब्रह्मचारियोंको भोजनकरावे तो सब विद्याओंकापारगामी होय तृतीया को कुबेर का पूजनकरै तो व्यापार में बहुत लाभहोय औ धनाढ्य होजाय चतुर्थीको गणेशका अर्चन करै तो सबकार्य्य निर्विघ्न सिद्धहोयँ औ शत्रुओं को विघ्न होय पंचमीके दिन नाग पूजा करै तो विषकाभय न होय औ स्त्री पुत्र तथा धनभी पावै षष्ठीको कार्त्तिकेयका अर्चन करै तो बुद्धिरूप आयुष् औ कीर्त्तिकी वृद्धिहोय सप्तमीको सूर्य्यनारायण का पूजनकरै तो मनोवाञ्छित फलपावै अ-ष्टमीके दिन शिवका पूजनकरै तो स्थिर लक्ष्मी पावै औ संसार पाशकोकाटनेहारा ज्ञानप्राप्तहोय जिससे जन्ममरण का भय छूटै नवमीके दिन भगवती का पूजनकरै तो सब प्रकारके कष्टोंसेछूटै औ युद्ध तथा विवादमें जयपावै दशमी के दिन यमराज का पूजनकरै तो मृत्युरोग और नरक का भय नहोय एकादशीको विश्वेदेवोंका पूजनकरै तो सन्तान धन धान्य पशु औ भूमि पावै द्वादशी के दिन आप का पूजनकरै तो विजयपावै औ जगत्पूज्यहोय त्रयोदशी को कामदेव का अर्चनकरै तो उत्तमरूप पावै चतुर्दशीके दिन

शिवजीको पूजै तो बहुतसे पुत्र धन औ ऐश्वर्य्यपावै पूर्ण-
मासीको चन्द्रमाकापूजनकरै तो बहुत मनुष्योंकाअधिपति
बनै औ उसकेसबकाम पूर्णहोयँ अमावास्याके दिन पितरों
को पिण्डदेवै तो सन्तान धन औ आयुष्की वृद्धिहोय यह
तो केवल पूजन का फल है और जो उपवास जप हवन
आदिकरै औ मूलमन्त्र तथा अंगमन्त्रोंकरके भक्तिसे पूजन
करै तो बहुतही फलपावै परन्तु पूजनआदिमें बित्तशाठ्य
न करै बहुतसे घृत दही दूध शहत औ समिधाओंसे हवन
करै औ शान्तचित्त होकर मन्त्र जपै तब पूराफल होताहै
देवताकी उपासनासे मनुष्य इस जन्ममें सुखीरहताहै औ
परलोकमें उपास्य देवताके समीप बहुतकाल निवासकर
उत्तम जन्मपाय उसीदेवताका भक्तहोताहै। यह तो तिथि-
यों का पूजन कहा इसीप्रकार नक्षत्रोंके भी देवता हैं जिस
नक्षत्रमें चन्द्रमाहोय वह उसदिनका नक्षत्रहोताहै उसमें
उसके देवताका पूजनकरै जैसे अश्विनी नक्षत्रमें अश्विनी-
कुमारोंको पूजै तो दीर्घआयुषपावै भरणी में गन्ध कृष्ण-
वर्णके पुष्प औ नैवेद्यआदि उपचारोंसे यमराजका पूजन
करै तो अपमृत्युसेबचै कृत्तिकामें रक्तपुष्प औ घृतआदिके
होमसे अग्निका पूजनकरै तो बहुत सम्पत्तिमिलै रोहिणी
में प्रजापतिकी अर्थात् हमारी पूजा करै तो सन्तान औ
पशुओंकी वृद्धिहोय मृगशीर्ष में चन्द्रका पूजनकरै तो धन
औ आरोग्य पावै आर्द्रा नक्षत्र में शिवजी का अर्चनकरै
औ श्वेत कमलआदि पुष्पचढ़ावै तो विजय यश सन्तान
औ धन पावै औ देहत्यागके अनन्तर देवताहोय पुनर्वसु
में भक्तिसे अदितिका पूजनकरै तो वह माताकी भांतिरक्षा

करती है पुष्य में पीत पुष्पों करके बृहस्पति का पूजन करै तो धन सन्तान आदि की वृद्धिहोय श्लेषामें नागों का पूजनकर दुग्धआदि से उनका तर्पण करै औ अनेक प्रकार मीठेपक्वान्न नागोंको नैवेद्यलगावै तो बिषआदिका भय कभी न होय मघामें हव्य कव्य आदि करके पितरों का पूजनकरै तो धन धान्य उत्तम सेवक पुत्र औ पशुपावै पूर्वाफाल्गुनी में भगनाम आदित्यका पूजनकरै तो संग्राम में जयहोय उत्तराफाल्गुनीमें जो कन्या अर्यमाका अर्चन करै वह उत्तमपतिपावै औ पुरुष अर्चनकरै तो रूप औ धनकरके युक्त भार्य्यामिलै हस्तमें सब प्रकारके पुष्पों से सूर्य्यनारायणका अर्चनकरै तो बहुत धन मिलै चित्रा में त्वष्टाका अर्चनकरै तो राज्यपावै स्वाति में पवन को पूजै तो सम्पत्तिमिलै बिशाखामें इन्द्र औ अग्नि का पूजनकरै तो धनधान्य औ तेजकी प्राप्तिहोय अनुराधामें रक्तपुष्पों करके मित्रका अर्चन करै तो सबका प्रियहोय ज्येष्ठा में इन्द्रका अर्चनकरै तो धन पुष्टि औ उत्तम गुण पावै मूल में देवता पितर औ निर्ऋतिका पूजनकरै तो शरीर औ मानस सन्ताप से छूटै पूर्वाषाढ़ा में जलका पूजन करै तो आरोग्य पावै उत्तराषाढ़ा में पुष्प आदि करके विश्वेदेवों का पूजन करै तो मनोबाञ्छित फल पावै श्रवण में श्वेत पीत और नील पुष्पों करके भक्ति से आप का अर्च्चन करै तो लक्ष्मी और युद्धमें विजय पावै धनिष्ठा में गन्ध पुष्प आदिसे वसुओं का पूजनकरै तो महाभयभी निवृत्त होय शतभिषामें रोगी पुरुष बरुण का पूजनकरै तो आ- रोग्यहोय औ आरोग्य पुरुष करै तो बहुत ऐश्

पूर्व्वाभाद्रपदामें शुद्ध स्फटिकके समान अजैकपाद नामक रुद्रका पूजनकरै तो मुक्तिपावै इसमें कुछसंदेह नहीं उत्तराभाद्रपदामें अहिर्बुध्न्यनाम रुद्रको पूजै तो सब प्रकारकी शान्ति होय रेवतीमें भक्तिसे पूषाका पूजनकरै तो पुष्टि शान्ति धृति संपति औ संततिपावै ये हमने संक्षेपसे नक्षत्र यज्ञकहे हैं इनको अपने वित्तानुसार भक्तिसेकरै तो सब फलपावै जिस नक्षत्रमें यात्रा अथवा और कोई कर्म करना हो पहिले उस नक्षत्रका याग करै पीछे वह कर्म्मकरै तो कभी निष्फल न होय औ याग करनेका सामर्थ्य न होय तो उस देवताके मंत्र का जपहीकरलेवै कालचक्रमें सूर्य्यनारायणका पूजनकरै तो मुक्तिपावै क्योंकि नक्षत्रचन्द्रमा तिथि अथवा संपूर्ण जगत् सूर्य्यनारायणके आधीनहै जगत्में ऐसा कोई पदार्थनहीं जो सूर्य्याराधनसे न मिलै हे भगवन् आपभी भक्तिसे सूर्य्यनारायणका आराधनकरैं यज्ञ पूजन नमस्कार शुश्रूषा उपवास औ ब्राह्मणभोजन आदिकरके सूर्य्यनारायणका आराधनकरतेहैं वे सब पापों से छूट सूर्य्यलोकको जातेहैं ॥

निनानबेका अध्याय॥

सूर्य्यनारायण की उपासना की आवश्यकता ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे बिष्णु भगवन् जो बहुत दृढ़ मन्दिर सूर्य्यनारायणकी प्रीतिकेलियेबनावै वहअपनेसात पुरुषोंसहित सूर्य्यलोकमें निवासकरताहै जो पुरुष उत्तम पुष्प सुगन्ध धूपदीप औ नैवेद्यसूर्य्यनारायणके अर्पणकरै उसको यज्ञका फलप्राप्तहोताहै यज्ञमेंबहुतधनचाहिये इसलिये धनहीनमनुष्य दूर्वाकेअंकुरोंकरके भी सूर्य्यनारायण

का पूजनकरैंतो यज्ञके फलकोप्राप्त होयँ उत्तम २ भूषण रक्तवर्णके वस्त्र भांति २ के भक्ष्य भोज्य सूर्यनारायण को निवेदनकरै तीर्थकेजल घृत शहददूध आदिसेस्नानकरावै तो ऐसेलोकमें निवासकरै जहां घृत दुग्ध आदिकेतलाव भरेहों। हे भगवन् सूर्यनारायणका आराधनकर सतहत्तर पुरुष तो बिदेह राजके औ पचास पुरुष हैहयके मुक्तिको प्राप्तभये इसलिये सूर्यनारायणकी अवश्यउपासना करनी चाहिये यह सुन बिष्णुभगवान्ने पूछा किहे ब्रह्माजी उपवास करनेसे किसप्रकार सूर्यनारायण प्रसन्नहोते हैं उपवासमें त्याज्य क्या २ है औ सूर्यनारायण का आराधन केसबिधि करनाचाहिये यह आप वर्णनकरैं। यह भगवान् का बचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि महाराज गन्ध पुष्प आदि उपचारोंसे पूजनकरै तो सूर्यनारायण अनुग्रह करते हैं फिर उपवास करने हारे पर तो बहुतही प्रसन्न क्यों न होयँ पापोंसे निवृत्तहोकर गुणोंके साथ जो निवासउसका नाम उपवास है एकरात्र द्विरात्र अथवा त्रिरात्र उपवास कर सूर्य्यनारायण का ध्यान करै औ निष्काम हो भक्तिसे पूजन जप आदिकरै तो मुक्ति पावै सूर्यनारायणके आराधन बिना सद्गति नहींप्राप्तहोती जिसपुरुषका चित्तविषयोंमें आसक्तहो औ सूर्यनारायणके आराधनमें अनेक विकल्पकरै वह कभी उत्तमगति नहीं पाता जो संसार से मुक्त होनेकी इच्छाहोय तो सूर्यनारायणका आराधन करै पुष्प न मिलैं तो वृक्ष के कोमल पत्र औ दूर्व्वाके अंकुरों सेही पूजन करै पूजन आदि में भक्तिही प्रधान है भक्ति से फल होताहै सूर्य्यनारायण के मन्दिर को जो पुरुष व-

भीतर से मार्जन करै वह बाहिर भीतर से निष्पापहोजाय सूर्य भगवान् को एक बार प्रणाम करै तो दश अश्व-मेध का फल होय परन्तु दश अश्वमेध करनेहारा फिरभ संसारमें जन्मलेताहै औ सूर्यनारायणको प्रणामकरनेहार फिर जन्म नहीं लेता सूर्यनारायणका आराधनकर रुः भगवान् ब्रह्महत्यासे छूटे हमको यह पद उनकेही अनुग्रह से प्राप्तभया चारों बर्ण औ आश्रमोंके पूज्य सूर्यनारायण हैं उनकेही आराधनसे सब प्रकारके मनोरथ सिद्ध होतेहै औ उत्तम गति मिलतीहै ॥

सौवां अध्याय ॥

फाल्गुनशुक्ल सप्तमी के उपवास का बिधान ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे बिष्णु भगवन् अबहम उपवासों का बर्णन करतेहैं जिनके करनेसे मनोवांछित फल प्राप्तहो-तेहैं। फाल्गुनशुक्ल सप्तमीको उपवासकर सूर्यनारायणका पूजनकरै औ चलनेमें गिरनेमें छींकनेमेंहोलि इससूर्यनारा-यणके नामका उच्चारण [illegible] भर इसी नामको ज[illegible]
पाखंडी पतित औ प्राप[illegible] भाषण न करै औ[illegible]
पूजनके अन्त[illegible] के सन्मुख यह[illegible]
श्लोकपढ़ै (हं[illegible] सारा[illegible]
र्णवमग्नानांत्रा[illegible] पू[illegible]
जन करै औ हंस[illegible] ख[illegible]
औ ज्येष्ठमें भी इस[illegible]
आषाढ़ आदि चा[illegible]
तंड नाम का जप[illegible]
लोकमें प्राप्तहोय का[illegible]

का प्राशनकरै औ भास्कर नामका जप करै वहभी सूर्य्य-लोकमें चिरकाल निवासकरै प्रतिमास ब्राह्मणों को दान देवै औ प्रति चतुर्मास की समाप्ति पर पौराणिकका पूजन कर पुराण श्रवणकरै प्रथम चार मासके ब्रतकरनेसे उत्तम भोग मिलते हैं दूसरेसे इन्द्रके समान ऐश्वर्य्य औ तीसरे चातुर्मास्य के उपवाससे सूर्य्यलोक की प्राप्तिहोय । इस सप्तमी ब्रत को जो पुरुष अथवा स्त्री करै वह उत्तम गति को प्राप्तहोय यह तिथि धन्यहै पाप हरनेमें समर्थ है औ सूर्य्यनारायण के आराधन योग्य है इसका माहात्म्य भी पढ़ने औ सुननेसे सब पाप निवृत्तहोते हैं औ त्रिवर्ग की प्राप्ति होती है ॥

एकसौ एकका अध्याय ॥

सप्तमीब्रतके उद्यापन का विधान औ फल ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे बिष्णुजी फाल्गुनशुक्ल सप्तमी को उपवासकर अष्टमीको पारणकरै अष्टमीकेदिन प्रभातही उठ स्नानकर भक्तिसे सूर्य्यनारायण का पूजनकरै औ सूर्य्यनारायण की प्रीतिके लिये अग्निमें घृतसे हवनकरै औ ब्राह्मणोंको भोजनकराय दक्षिणादे इन मंत्रोंसे सूर्य्य-नारायण की प्रार्थनाकरै कि (यमाराध्यपुरादेवी सावित्री काममापवै । समांददातुदेवेशः सर्वान्कामान्विभावसुः १ यमाराध्यादितिःप्राप्तासर्वान्कामान्यथेप्सितान् ।सददात्वखिलान्कामान्प्रसन्नोमेदिवस्पतिः २ भ्रष्टराज्यस्तुदेवेन्द्रो यमाराध्यदिवस्पतिम् । कामात्थमाप्तवान्राज्यं समे कामंप्रयच्छतु ३) इन श्लोकोंसे प्रार्थनाकर पूजा समाप्त करै औ हविष्य अन्न भोजनकरै फाल्गुन आदि चारमास

भीतर से मार्जन करै वह बाहिर भीतरसे निष्पापहोजाय सूर्य्य भगवान् को एक बार प्रणाम करै तो दश अश्व मेध का फल होय परन्तु दश अश्वमेध करनेहारा फिरभी संसारमें जन्मलेताहै औ सूर्यनारायणको प्रणामकरनेहारा फिर जन्म नहीं लेता सूर्य्यनारायणका आराधनकर रुद्र भगवान् ब्रह्महत्यासे छूटे हमको यह पद उनकेही अनुग्रह से प्राप्तभया चारों बर्ण औ आश्रमोंके पूज्य सूर्य्यनारायण हैं उनकेही आराधनसे सब प्रकारके मनोरथ सिद्ध होतेहैं औ उत्तम गति मिलतीहै॥

सौवां अध्याय॥

फाल्गुनशुक्ल सप्तमी के उपवास का बिधान॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे बिष्णु भगवन् अबहम उपवासें का बर्णन करतेहैं जिनके करनेसे मनोवांछित फल प्राप्तहोतेहैं। फाल्गुनशुक्ल सप्तमीको उपवासकर सूर्यनारायणका पूजनकरै औ चलनेमें गिरनेमें छीकनेमेंहोलि इससूर्यनारायणके नामका उच्चारणकरै औ दिनभर इसी नामको जपै पाखंडी पतित औ पापीपुरुषोंकेसाथ संभाषण न करै औ पूजनके अन्तमें हाथ जोड़ सूर्यनारायण के सन्मुख यह श्लोकपढ़ै (हंसहंसकृपालुस्त्वमगतीनांगतिर्भव। संसारार्णवमग्नानांत्राताभवदिवाकर) पूर्वाह्नमेंही स्नानकर पूजन करै औ हंस २ इस नाम का स्मरणकरै चैत्र बैशाख औ ज्येष्ठमें भी इसीबिधिसे पूजनकरै तो सत्यलोकको जाय आषाढ़ आदि चारमहीने भी इसीरीति से अर्चनकर मार्तंड नाम का जपकरै औ गोमूत्रका प्राशनकरै तो सूर्य्यलोकमें प्राप्तहोय कार्त्तिक आदि चारमास पूजनकर दुग्ध

का प्राशनकरै औ भास्कर नामका जप करै वहभी सूर्य्य-
लोकमें चिरकाल निवासकरै प्रतिमास ब्राह्मणों को दान
देवै औ प्रति चतुर्मास की समाप्ति पर पौराणिकका पूजन
कर पुराण श्रवणकरै प्रथम चार मासके ब्रतकरनेसे उत्तम
भोग मिलते हैं दूसरेसे इन्द्रके समान ऐश्वर्य्य औ तीसरे
चातुर्मास्य के उपवाससे सूर्य्यलोक की प्राप्तिहोय । इस
सप्तमी ब्रत को जो पुरुष अथवा स्त्री करै वह उत्तम गति
को प्राप्तहोय यह तिथि धन्यहै पाप हरनेमें समर्थ है औ
सूर्य्यनारायण के आराधन योग्य है इसका माहात्म्य भी
पढ़ने औ सुननेसे सब पाप निवृत्तहोते हैं औ त्रिवर्ग की
प्राप्ति होती है ॥

एकसौ एकका अध्याय ॥

सप्तमीब्रतके उद्यापन का विधान औ फल ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी फाल्गुनशुक्ल सप्तमी
को उपवासकर अष्टमीको पारणाकरै अष्टमीकेदिन प्रभात-
ही उठ स्नानकर भक्तिसे सूर्य्यनारायण का पूजनकरै औ
सूर्य्यनारायण की प्रीतिके लिये अग्निमें घृतसे हवनकरै
औ ब्राह्मणोंको भोजनकराय दक्षिणादे इन मंत्रोंसे सूर्य्य-
नारायण की प्रार्थनाकरै कि (यमाराध्यपुरादेवी सावित्री
काममापवै । समांददातुदेवेशः सर्वान्कामान्विभावसुः १
यमाराध्यादितिःप्राप्तासर्वान्कामान्यथेप्सितान् ।सदद्दा-
त्वखिलान्कामान्प्रसन्नोमेदिवस्पतिः २ भ्रष्टराज्यस्तुदेवे-
न्द्रो यमाराध्यदिवस्पतिम् । कामात्र्थमाप्तवान्राज्यं समे
कामंप्रयच्छतु ३) इन श्लोकोंसे प्रार्थनाकर पूजा समाप्त
करै औ हविष्य अन्न भोजनकरै फाल्गुन आदि चारमास

में करवीरके पुष्प अगुरु धूप औ खण्डसे वेष्टित पक्वान्नका नैवेद्य इनसे सूर्य्यनारायण का पूजन करै औ गोशृङ्ग का जल प्राशनकरै आषाढ़ आदि चार महीनों में चमेली के पुष्प गूगल का धूप औ पायस नैवेद्य इनकरके पूजनकरै और कुशोदक प्राशन करै आप भी पायस भोजन करै कार्त्तिक आदि चार मासमें रक्तकमल महांग धूप कसार नैवेद्य इन करके सूर्य्यनारायण का पूजनकरै औ गोमूत्र प्राशन करै औ प्रतिमास ब्राह्मणों को दक्षिणा देवै कपूर चन्दन नागरमोथा अगुरु रक्तचन्दन कस्तूरी सिह्लक औ शर्करा इनकेसमभाग मिलानेसे महांगधूपबनताहै यहधूप सूर्य्यनारायणको बहुतप्रियहै प्रत्येकपारणमें भक्तिसे पूजन करै क्योंकि सूर्य्यनारायणभक्तिसेही प्रसन्नहोतेहैं औ प्रसन्न होकर अभीष्ट सिद्धकरतेहैं यहसप्तमीव्रतकाविधानहैजिस-के करनेसे सब पदार्थमिलते हैं इस व्रतकेकरनेसे इन्द्रको त्रैलोक्यका राज्य सावित्री औ आदितिके पुत्र शुक्रको ज्ञान धौम्य मुनिको वेद आपको लक्ष्मी औ हमको सृष्टिरचने का सामर्थ्य प्राप्तहुआ इस व्रतको ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री आदि कोईकरै वह अपना मनोवांछित फलपावै इस व्रतकेकरनेसे पुत्र धन और आरोग्य मिलताहै इस व्रतके करनेहारा मनुष्य जन्मांतरमें भी अपुत्र निर्धन औ रोगी नहींहोता औ स्त्री योनिमेंभी नहींहोता औ सुवर्णके विमान में बैठ इन्द्रलोकमें जायबहुत कालवहां निवासकर भूमिपर आय प्रतापी राजा होताहै॥

एकसौ दोका अध्याय ॥

पापनाशिनी सप्तमी का विधान ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे विष्णुजी फिरभी हम तिथियोंका माहात्म्य कहतेहैं जो सूर्य्यनारायणने ऋषियोंके प्रतिकहा है जया बिजया जयंती औ अतिजया ये तिथि औ उत्तरायणकी संक्रांति ये काल सूर्य्यनारायण के पूजनमें उत्तमहैं इनमें एक बार पूजनकरनेसे बर्षदिन करीहुई पूजाका फल प्राप्तहोताहै यहसुन विष्णुजीने पूछा किजयाबिजया आदि तिथियोंका आपबर्णनकरैं तब ब्रह्माजी कहनेलगे कि जब शुक्लसप्तमीको हस्तनक्षत्रहोय वह जया सप्तमीहोतीहै उस दिन पूजनकरै तो सातजन्मोंमें किये पापोंसे छुटैजो उपवासकरै वह सब पापोंसे मुक्तहोय सूर्य्यलोकको जावै उस दिनका कियाहुआ दान हवन आदिकर्म्म अक्षय होताहै उसदिनसूर्य्यनारायणके सन्मुख श्रद्धासे जिसवेदका एक मंत्र पढ़ै उस संपूर्ण वेदके पाठकाफल प्राप्तहोय जिसप्रकार आकाशमें ताराप्रकाशितहोरहे हैं इसीभांति इसव्रत के करनेहारा देदीप्यमानहोय औ बहुतकाल उत्तम लोकों में निवासकर भूमिपर जन्म ले राजा होय ॥

एकसौतीनका अध्याय ॥

पदद्वय व्रतका कथन ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी लोकोंके हितके लिये सुमेरु रूपपादपीठपर दो पदसूर्य्यनारायणने स्थापन किये हैं उत्तरायण रूप वामपादको हम औ आपपूजते हैं औ दक्षिणायनरूपदक्षिणचरणका इन्द्र औ रुद्र पूजनकरतेहैं सूर्य्यनारायणका आराधन वही मनुष्यकरसकताहै जिस

पर उनका अनुग्रहहोय उत्तरायण के दिन स्नानकर घृत दुग्ध आदिसे सूर्य्यनारायणको स्नानकरावै औ अनुलेपन धूप नैवेद्य बस्त्र भूषणआदिसे सूर्य्यनारायणका अर्चनकर ब्राह्मणभोजनकरावै उस दिनसे पदद्वयव्रतकाग्रहणकरै औ सर्वकालमें चित्रभानुका स्मरणकरै जबतक उत्तरायणहोय तबतक इसीनामकास्मरणकरतारहै औ नित्यइनश्लोकोंसे प्रार्थनाकरै (यावज्जीववधंकश्चिद्ज्ञानतोज्ञानतोपिवा।करिष्येहंतदाचैव कीर्त्तयिष्यामितंप्रभुम् १ यदावक्ष्येऽनृतंकिंचिद्यदावक्ष्यामिदुर्वचः।अज्ञानादथवाज्ञानात्कीर्त्तयिष्येहतंप्रभुम् २ षण्मासानेकजापोमे चित्रभानुमयःपरम्।तंस्मरन्मरणेयाति यांगतिंसास्तुमेगतिः ३ षण्मासाभ्यन्तरेमृत्युःपदेतस्मिन्भवेन्मम। तन्मयाभास्करस्येह स्वयमात्मानिवेदितः ४ परमार्थमयंब्रह्म चित्रभानुमयंपरम्। यमन्तेसंस्मरन्याति समेभानुःपरागतिः ५ यदिप्रातस्तथासायं मध्यह्नेवाम्रियाम्यहम्। षण्मासाभ्यन्तरेन्यासं कृतंव्रतमतोमया६ तथाकुरुजगन्नाथसर्वलोकपरायण। चित्रभानोयथानन्या त्वत्तोभवतिमेगतिः७)इसप्रकार दक्षिणायन के आरम्भपर्यन्त पूजनके अन्तमें नित्य प्रार्थना करै इस विधि व्रत समाप्त कर ब्राह्मण भोजन करावै औ भक्तिसे पुराण श्रवणकर पौराणिक का वस्त्र भूषण सुवर्ण आदिसे पूजन करै इस पद द्वय नामक व्रत करनेसे सब पाप दूरहोतेहैं औ वह पुरुष उत्तरायणमें देहत्याग उत्तम गतिको प्राप्त होताहै जो अनशन व्रतके करनेसे मिलतीहै औ सूर्य्यनारायणके चरणद्वय के पूजनका फल मिलता है यह सूर्य्यनारायणने अपने मुखसे शूरकेप्रतिकहाहै॥

एकसौचौथा अध्याय॥

सर्वाप्ति सप्तमीका विधान॥

ब्रह्माजीकहतेहैं कि माघमासकी कृष्णसप्तमीको सर्वाप्ति सप्तमी कहते हैं उस दिन व्रत करने से सब कामना सिद्ध होती हैं माघ आदि छमासकी संक्रांतियोंको मार्त्तण्ड अर्क चित्रभानु विभावसु भग औ हंस इनका पूजनकरै औ क्रम से प्रतिमास इनकाही स्मरणकरै छमास पर्यन्त तिलों से स्नान औ तिलही प्राशनकरै फिर श्रावणआदि छमहीनों में पंचगव्यसे स्नान औ पंचगव्यका प्राशनकरै प्रतिमास भक्ति से सूर्य्यनारायण का पूजन कर यथाशक्ति दक्षिणा ब्राह्मणोंको देवै औ उपवास के पारणमें तैल औ क्षार से रहित भोजन रात्रिको करै इसविधि जो उपवास करै औ भक्तिसे सूर्य्यनारायण का अर्चनकरै वह सब उत्तम फल पावै इसव्रतके करनेसे सब पदार्थ मिलते हैं इसीसे इसका नाम सर्वाप्तिसप्तमी है आप भी इस व्रतसे सूर्य्यनारायण का आराधन करैं जिसप्रकार पूर्वकाल में गणों के स्वामी दिण्डी ने किया था॥

एकसौ पाचवां अध्याय॥

मार्तण्ड सप्तमी का विधान॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी पौषशुक्ल सप्तमी को मार्तण्ड सप्तमी कहते हैं उस दिन भक्तिसे सूर्य्यनारायण का पूजनकर मार्तण्ड इसनामका जपकरै पाखण्डी पातकी आदिसे सम्भाषण न करै औ गौके दुग्ध दधिआदि केवल भोजनकरै ब्राह्मणोंको दक्षिणादेवै इसीप्रकार दूसरे दिन व्रत करै औ मार्त्तण्ड नामका सर्वकाल स्मरण करै

गौओंको भोजनदेवै पांचसुवर्णशृंगीगौ औ एक उत्तम वृष इनके दान करनेसे जो फल होताहै वही इस व्रतसे प्राप्त होय इस व्रतको करनेहारा सूर्य्यलोक में जाताहै इस व्रत को करनेवाले अब तकभी आकाशमें प्रकाशित देखपड़ते हैं इसलिये आपभी इस व्रतको करें॥

एकसौछठा अध्याय॥

अनन्तसप्तमी का विधान॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी भाद्रशुक्लसप्तमी अनन्तसप्तमी कहातीहै उस दिन उपवासकर गन्ध पुष्प धूप आदिकरके सूर्य्यनारायणका पूजनकरै ब्राह्मणोंको दक्षिणा दे रात्रिके समय हविष्य भोजनकरै औ पाखण्डादिकों से भाषण न करै सर्वकालमें आदित्य नामका स्मरणकरै इस प्रकार बारह महीने पर्य्यन्त व्रतकरै अन्तमें सूर्य्यनारायण का पूजनकर व्रतकाउद्यापनकरै औ पुराणसुनै इसप्रकार जो इसव्रतकोकरै वह भूमिपर सबउत्तमभोगभोगकर सूर्य-लोकको जाय औ स्त्री इसव्रतकोकरै तो स्वर्गमें बासकरै॥

एकसौ सातवां अध्याय॥

अभ्यंगसप्तमीका विधान॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी श्रावणशुक्ल सप्तमी को अभ्यङ्ग सप्तमी कहते हैं उस दिन उपवासकर सूर्य्य-नारायण को अभ्यंग करावे अभ्यंग के समय भांति २ के बाजे बजैं ब्राह्मण वेद पढ़ैं जिस प्रकार और देवताओं को श्रावण में पवित्रार्पण करते हैं इसीभांति सूर्य्यनारायणको अभ्यंगार्पण होता है इसप्रकारअभ्यंगकराय बड़ा उत्सव करै औ ब्राह्मण भोजनकराय रात्रिकेसमयआपभी भोजन

करै इसबिधिसे बारह महीने उपवास कर अन्तमें पारण करै औ ब्राह्मणों को यथा शक्ति दक्षिणा देवै इस ब्रतको करनेवालापुरुष दिव्यबिमानमें बैठसूर्य्यलोककोजाताहै॥

एकसौ आठवां अध्याय॥

त्रिप्राप्ति सप्तमी का बिधान॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे बिष्णुजी भक्तिसे जलमात्र करके भी सूर्य्यनारायणका पूजनकरै तो दुर्लभफल भी प्राप्तहोते हैं पुष्प फल जल आदि किसी पदार्थके देनेसे सूर्य्यनारायण प्रसन्ननहीं होते केवल शुद्धहृदयसे उनका आराधन करनेसेही प्रसन्नहोतेहैं रागद्वेष आदिसे रहित हृदय असत्यआदिसे अदूषित बाणी औ हिंसावर्जित कर्म सूर्य्य नारायणके आराधनयोग्यहैं रागादि दोषोंको करके दूषित हृदयमें सूर्य्यनारायणका निवासनहींहोता जैसे कर्दमयुक्त जलमें हंसनहींरहता असत्य आदियुक्त बाणी सूर्य्यनारायणकी स्तुतिकेयोग्यनहींहोती जैसे मेघसे ढकीहुई चन्द्रमा की कला अंधकारहरणेके योग्यनहीं हिंसादूषित कर्मसे कोई जीव प्रसन्ननहीं होता फिर सूर्य्यनारायण तो क्योंकर प्रसन्नहोसकेहैं कुटिलचित्तपुरुष सर्वस्वभी सूर्य्यनारायणके अर्पण करदेवै तौभी वे सन्तुष्ट नहीं होते इस लिये सदा शुद्धहृदय से आराधन करना चाहिये यहसुनविष्णु भगवान् ने ब्रह्माजी से कहा कि उत्तम कुलमें जन्म आरोग्य औ ऐश्वर्य्य येतीनोंपदार्थ जिसकर्मके करनेसे प्राप्त होयँ उसका आप वर्णन करैं यह भगवान् का वचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि महाराज मार्गशीर्षसप्तमीको जब हस्तनक्षत्र औ रविवार होय उसदिन उपवास कर गन्ध

पुष्प धूप बलि आदि से सूर्य्यनारायण का पूजन करै एक वर्ष व्रतकर तिल, धान, जौ, सुवर्ण, जलके पात्र, अन्न, पान, छत्र, दुग्ध, गुड़, बताशे, वस्त्र आदि ब्राह्मणोंको दानदेवै औ सूर्य्यनारायण का अर्चन कर गोमूत्र, जल, घृत, कच्चाशाक दूर्वा, दही, धान्य तिल, यव, सूर्य्यकिरणोंकरके तपाहुआ जल, औ क्षीर इनका क्रमसे प्राशनकरै इसव्रतके करने से उत्तमकुल में जन्म आरोग्य सुख औ ऐश्वर्य्य पावै ॥

एकसौ नवां अध्याय ॥

मन्दिर बनवाने का फल, सूर्य्यभक्तोंका प्रभाव ॥

विष्णु भगवान् पूछते हैं कि हे ब्रह्माजी सूर्य्यनारायण का मन्दिर बनावै मूर्त्ति स्थापनकरै भक्तिसे सब उपचारों करके पूजनकरै तो किसफलको प्राप्तहोताहै यह आपवर्णन करैं यहसुन ब्रह्माजीकहनेलगे कि आपने बहुतउत्तमबात पूछी अब आप एकाग्रचित्तहोकर श्रवणकरैं सूर्य्यनारायण का मन्दिर जो पुरुष बनावै उसके सौकुल पिछले औ सौ अगले सूर्य्यलोक को जाते हैं मन्दिर बनाने का आरम्भ करतेही सात जन्म के पाप कटजाते हैं उत्तम स्थान में जो मन्दिर बनावै वह अक्षय स्वर्ग्ग पास पाताहै जितने दिन मन्दिर की ईंट बनी रहैं उतने हज़ार वर्ष स्वर्ग्ग में रहताहै लक्षणयुक्त मूर्त्ति बनावै तो सूर्य्यलोक में निवास करै जो भक्ति से प्रतिमा स्थापन करै वह अपने अगले पिछले सबकुलों का उद्धारकरै जितनेकल्पके आदिसेकुल व्यतीतभये औ कल्पांततक जितनेहोंगे वेसबप्रतिष्ठाकरते ही उत्तमगतिके भागी होजातेहैं यमराज सदाअपने दूतों से यहकहाकरते हैं कि भूमिपरकोईपुरुष तुम्हारीआज्ञाभंग

न करेगा केवल सूर्यभक्तों से तुम बचतेरहना जिसको सूर्य नारायणका पूजन जप स्तुति नामस्मरण आदिकरते देखो उससे दूररहो वे यहांनहीं आवैंगेजो नित्य नैमित्तिक उत्सव करतेहों उनकी ओर देखना भी नहीं क्योंकि वे हमारे पिता केभक्तहैं जो मन्दिरमें मार्जन अथवा उपलेपनकरैं उनकी तीन पीढ़ी छोड़ना जो मन्दिर बनवावै उनके सौ कुलोंकी ओर दृष्टि भीमत करनाजो प्रतिमा स्थापनकरैं उनके सब कुल त्यागनाकोई तुम्हारी आज्ञाभंग न करैगा केवल पिता के भक्तोंसेबचना इतनायमराजने अपनेकिंकरोंको शासन भी करदिया तो भी प्रमादसे सूर्यनारायणकेपरम भक्त सत्रा-जितको जायघेरा परन्तु उसके तेजसे मूर्च्छित हो भूमिपर सबदूत गिरे जैसे बज्रके प्रहारसे पर्वत यह मन्दिर आदि बनाने का फल हमने संक्षेपसे बर्णन कियाहै सूर्य्यनारायण के यज्ञकरै तो सब पापोंसे मुक्तहो मनोबांछितफल पावै ॥

एकसौदसवां अध्याय ॥

घृत औ दुग्धसे सूर्य्यनारायणको अभिषेक करने का फल ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि स्थापित प्रतिमा का पूजन करने से सब कार्य सिद्धहोतेहैं जो घृतसे प्रतिमाको स्नान करावै वह अनन्त फल पाताहै सेरभर घृतसे स्नान कराने करके सौ गोदानका फलहोताहै चार सेर घृतसे स्नान करावै तो सप्तद्वीपवती भूमिकेदानकाफलपावै प्रतिमासमें शुक्लाष्टमी केदिन सूर्य्यनारायणको घृतसे स्नानकरावै तो सब पापों सेछूटै सप्तमी अथवा षष्ठीको गोघृतसे स्नानकरावै तो सब पातक दूरहोयँ संध्या समय स्नानकरावै तो ज्ञात अज्ञात सब पाप दूर होयँ सर्वयज्ञरूप सूर्य्यनारायण हैं औ सब

हव्यों में उत्तम घृत है इस लिये उन दोनोंका संगम होतेही सब पाप बिलायजाते हैं दुग्धसे स्नानकरावै तो ऐसेलोक में निवासकरै जहां दूधकी नदी बहतीहै औ सरोवर खीर से भरे हैं दुग्धसे स्नान करावै तो सात जन्म पर्यंत सुखी आरोग्य और रूपवान् होय जिस प्रकार दुग्ध निर्मल होताहै इसी प्रकार दुग्धसे स्नानकरानेकरके निर्मलज्ञान की प्रीति होतीहै घृत औ दुग्धके स्नानसे सूर्य्यनारायण बहुत प्रसन्न होतेहैं औ तुष्टिपुष्टि सम्पूर्ण मनुष्योंकी प्रीति उस मनुष्यको मिलतीहै जो घृत औ दुग्धसे स्नानकरावै॥

एकसौग्यारहवां अध्याय॥

कौशल्या औ गौतमी की कथा पूजाके योग्य पुष्पों का कथन॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे बिष्णुजी कौशल्या औ गौतमी का सम्बाद जो पूर्व कालमें हुआ था वह हम वर्णन करते हैं स्वर्ग में गौतमी ब्राह्मणी ने कौशल्या से पूछा कि हे कौशल्ये स्वर्ग में देव देवांगना सिद्ध सिद्धपत्नी आदि बहुत हैं परन्तु न तो उनके शरीर में ऐसा उत्तम गन्ध जैसा तुम्हारे देह में है न ऐसी कान्ति न ऐसा रूप औ न उनके धारण किये हुये वस्त्र भूषण ऐसे शोभित होते हैं जैसे तुम दोनों स्त्री पुरुष को सजते हैं औ तुम्हारा चित्त भी अतिनिर्मलहै देवताओं की भांति ईर्षा आदि दोषोंसेदूषितनहीं यहकौनसे तप ब्रत दान अथवा होमका फलहै तुम वर्णनकरो यह गौतमीका बचनसुन कौशल्या बोली कि हे गौतमि हम दोनोंने भक्तिसे सूर्य्यनारायणका आराधन किया है सुगन्धयुक्त तीर्थ जलों से हमने सूर्य्य-नारायण को स्नानकराया उससे देवताओं से भी अधिक

कांति पाई औ मनमें प्रसन्नता सौम्यता औ शरीर सुख
उसी का फल है हम सबको प्रिय हैं यह घृतसे सूर्य्यना-
रायण को स्नानकराने का फल है जो बस्त्र भूषण रत्न अ-
नुलेपनआदि हमदोनोंको प्रियहोते वेसब हम सूर्य्यनारा-
यणके अर्पणकरते इसीसे शरीरमें यह उत्तमसुगन्धपाया
हमने स्वर्ग्गकी कामनासे सूर्य्यनारायणका आराधनकिया
इससे हम दोनों स्वर्ग्गसुख भोगते हैं जो पुरुष निष्काम
सूर्यनारायणकी उपासनाकरते हैं वे मुक्तिपाते हैं इतनीकथा
सुनाय ब्रह्माजी बोले कि हे विष्णुजी सूर्यनारायण के आ-
राधनसे सब पदार्थ मिलते हैं जो बस्तु अपनेको प्रियहो
वही सूर्यनारायण के अर्पण करै विजयधूप आदि भाँति२
के धूप अनेक प्रकारके गन्ध उत्तम नैवेद्य सूर्यनारायणको
अर्पणकरै मालती मल्लिका जूही अतिमुक्तक पाटला कर-
वीर जपा कुब्जककर्णिकार कुरंटक चम्पक बाण कुन्द अशो-
क तिलक लोध्र बकपुष्प अगस्त्य किंशुक औ कमलआदि
पुष्प सूर्यनारायण के अर्प्पणकरै बिल्वपत्र शमीपत्र भृङ्ग-
राजकेपत्र तमालपत्र तुलसी कालीतुलसी केतकीके पुष्प
औ पत्र नीलकमल श्वेतकमल गुंजाकेपुष्प धतूरेकेपुष्प औ
अनेकप्रकारके सुगन्धपुष्प सूर्यनारायण को चढ़ावै परन्तु
कुटजपुष्प शाल्मलिपुष्प औरभी जो गन्धरहितपुष्पहोयँ वे
सूर्य्यनारायण पर न चढ़ावै उनके चढ़ानेसे भय रोग औ
दारिद्र्य होताहै जो पुष्प उत्तम गन्ध और रङ्गकरकेयुक्तहों
और जिनका निषेध न हो वे सूर्य्यनारायण के अर्प्पणकरै
कपूर अगुरु मुरा जटामासी आदि उत्तम धूप भांति २ के
वस्त्र अनेक प्रकारके नैवेद्य पकेहुयेफल सुवर्ण चांदी मोती

हीरे औरभी जो २ पदार्थ अपनेको प्रियहों सब भक्तिसे सूर्यनारायण को अर्पण करै ॥

एकसौ बारहवां अध्याय ॥

राजा सत्राजित की कथा क्रम व्रतका विधान ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णु जी ययातिके बंशमें सत्राजित नाम एक बड़ाप्रतापी राजाभया औ सप्तद्वीपवती पृथिवी का राज्यकरता भया उसके राज्य में पुराण जानने वाले यों कहते थे कि जहां तक सूर्य का उदय औ अस्त होता है वहां तक सत्राजित काही राज्यहै उसके राज्य में अन्यायी असक्त अदाता औ पापीपुरुष कोई नहींथा उस राजाकी स्वभावसेही सूर्य्यनारायण में परमभक्तिथी राजा काऐश्वर्य देख सबमनुष्योंको बिस्मयहोताथा औ राजाभी निरन्तर इसीचिन्तामेंथा कि ऐसा कौनउपायहोय जिससे यह ऐश्वर्य दूसरे जन्ममें भी पाऊँ जब बिचार करते २ कुछ निश्चय नहुआ तब अर्वावसुआदि धर्म्मज्ञ औशास्त्र वेत्ता ब्राह्मणोंको बुलाय भली भांति उनका पूजनकर आसनपरबैठाय प्रार्थना करताभया कि महाराज जो आपका मेरेऊपर अनुग्रहहोय तो जो मैं पूछताहूँ वह आप कथन करैं यह राजा का वचनसुन ब्राह्मणों ने कहा कि महाराज जो आपके हृदयमें सन्देहहोय वह पूछिये हम निवृत्तकरेंगे हमारा आपने सदा पालनपोषणकियाहै ब्राह्मण सन्तुष्ट होयँ तो विद्यापढ़ैं धर्मके सन्देहहरैं अधर्म से निवारणकरैं औ हित उपदेश देवैं यहही ब्राह्मणोंका काम है आप की जो इच्छाहोय सो पूछिये इसी अवसरमें राजा से उसकी रानी बिमलमतिने कहा कि महाराज मेराभी एक सन्देह

इन महात्माओंसे पूछिये आपके सन्देह तो कईप्रकार से निवृत्त होसक्तेहैं परन्तु मैं केवल अन्तःपुरमें रहतीहूँ मेरा सन्देह आप प्रथम निवृत्त करादीजिये यह सुन राजा ने कहा कि हे प्रिये कहो क्या पूछनाचाहतीहो प्रथम तुम्हारा भी सन्देह पूछैंगे तब रानी बोली कि महाराज मुझे यह सन्देह है कि पहिले भी बहुत राजा भये हैं परन्तु आपके समान किसीका ऐश्वर्य्य नहीं भया यह कौनसे कर्म्म का फल है औ मैंने कौन उत्तम कर्म्म कियाथा जिससे आप की रानीभई यहआप मुझे पूछदीजिये यहभार्याका वचन सुन राजा बहुतप्रसन्नभया औकहनेलगा कि हे प्रिये मेरे मनकी बाततुमने जानी मैंभी यही इनमहात्माओंसे पूछना चाहताहूँ यह रानीसे कह विनयसे मुनियों को पूछताभया कि यहआपकथनकरैं कि मैं पूर्वजन्ममें कौनथा औ क्याकर्म किया तथा इस हमारी रानीनेक्या उत्तम कर्मकिये हममें परस्पर अति प्रीतिहै सब राजमेरे बशहैं द्रव्यका अंतही नहीं अप्रतिहत बलहै औ शरीर सदा आरोग्य रहता है इसमेरी भार्याके समान कोई नारी रूपवती नहीं औ मेरे तेजको कोई नहीं सहसकता ये सब किस कर्म के फल हैं आप त्रिकालज्ञ हैं इसलिये कथन करैं यह सुन सब ब्रा- ह्मणोंने सूर्य्यनारायणके परमभक्त परावसुसेकहा कि आप इनका सन्देह निवृत्त करैं परावसुभी सब ब्राह्मणों की स- म्मतिसे राजाके प्रति कथन करनेलगे कि महाराज आप पूर्व जन्ममें बड़े हिंसक औ निर्दय शूद्रथे तबभी यहरानी तुम्हारीही भार्याथी औ ऐसी पतिव्रताथी कि तुम्हारे क्रूर वचनों करके पीड़ित होकरभी सदा तुम्हारी शुश्रूषा में

रहती परन्तु तुम्हारी अति क्रूरता देख सम्पूर्ण बन्धुतुमसे अलग होगये औ पिता पितामह का संचय किया हुआ धनभी निबड़गया तब तुमने खेतीकरी परन्तु ईश्वर की इच्छासे वहभी निष्फलभई तब तुम अतिदीन हो औरों की सेवा करने में प्रवृत्त भये तुम तो अपनी स्त्रीका त्याग करना बहुत चाहतेथे परन्तु उसने तुम्हारा संग न छोड़ा तब तुम दोनों कान्यकुब्ज देशमेंजाय सूर्य्यनारायणके मन्दिर में सेवा करनेलगे वहां नित्य मार्जन उपलेपन जल छिड़कना आदि काम तुम दोनों करते औ मन्दिर में पुराणकी कथा होती वहभी श्रवण करते तुम्हारी स्त्रीने अपने पिताकी दीहुई अँगूठी कथापर चढ़ाई सब काल तुम्हारे मन में यही चिन्ता रहती कि यह मन्दिर स्वच्छरहै औ बहुतकाल स्थिररहै इसभाँति तुम दोनों निष्काम हो सूर्य्यनारायणकी सेवाकरते औ जो मिलता उसीसे निर्बाह करलेते एक समय बड़ी सेना सहित कुबलाश्व राजा वहां आया उसकी सम्पत्ति औ हज़ारों उत्तम२ रानी देख तुम दोनों कीभी राजाबनने की इच्छाभई औ थोड़ेकालके अनन्तर तुम्हारा देहान्तभया उस सूर्य्यनारायण की सेवाके औ पुराण श्रवणके प्रभावसे तुमराजा औ तुम्हारी स्त्री रानी भई अब जो आपको जन्मान्तरमें भी ऐश्वर्य की इच्छाहोय तो सूर्य्यनारायण का भक्तिसे आराधनकरो गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य वस्त्र भूषण औरभी जो पदार्थ अपने को प्रियहों सब सूर्यनारायणके समर्पणकरो औ उनके मन्दिरों में मार्जन उपलेपन आदि करायाकरो उत्तम दिनों में उपवास कर रात्रिको जागरण करो औ नृत्य गीत वाद्य

से बड़ा उत्सव कराओ पुराण इतिहास आदि की कथा श्रवण करो सूर्यभगवान्के सन्मुख वेद पाठ कराओ इन कर्मोंके करनेसे प्रसन्नहो सूर्यनारायण अभीष्ट फल देते हैं पुष्प नैवेद्य रत्न सुवर्ण आदिसे सूर्यनारायण प्रसन्न नहीं होते केवल भक्तिसे सन्तुष्टहोते हैं देखो तुमने भक्तिसे मन्दिरमें केवल मार्जन आदि किया औ तुम्हारी स्त्रीने एक अंगुलीयक पौराणिक को दिया उससे इतना ऐश्वर्यपाया अब जो तुम भक्तिसे सूर्यनारायण का आराधन करो औ सब उपचारों से पूजनकरो तो इन्द्रसेभी अधिक ऐश्वर्य पावो अब आप अपनी रानीसहित सूर्यनारायणके आराधनमें यत्नसे प्रवृत्तहो इससे सब मनबांछितफलपाओगे। ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी यह वृत्तान्तसुन राजा बहुत हर्षित हुआ औ अति विनयसे परावसुके प्रति कहनेलगा कि महाराज जैसा इन्द्रपद पायके अथवा अमर होके पुरुषको आनन्द होताहै वैसा आनन्द आपके वचन श्रवण कर हमको भया अज्ञान रूप अन्धकारमें आपका वचन हमारे लिये दीपकभया हम दोनों सम्पत्तिके नाश की सम्भावना कर बहुत ब्याकुल रहते थे परन्तु आपने सब सम्पत्तियों का बीज बतादिया यहभी हमनेजाना कि भक्तिमान् दरिद्रभी सूर्यनारायणको प्रसन्न करसक्ताहै औ भक्ति हीन धनवान् परभी उनका अनुग्रह नहीं होता चाहे जितनेरत्नसुवर्णआदि निवेदनकरै अब आप सूर्यभगवान् के आराधनका प्रकार हमको उपदेश करैं जिसके करनेसे शीघ्रही उनका अनुग्रहहो यह राजाका वचनसुन परावसु बोले कि हे राजन् अब हम सूर्य्यनारायणके आरा-

बिधान कहतेहैं जिसके करनेसे स्त्री पुरुष संसारसागरका पारपावैं कार्त्तिक मासमें नित्य सूर्य्यनारायणका पूजनकर ब्राह्मणको भोजनकराय आप एकबार भोजनकरै तो पूर्व अवस्थामें कियेहुये ज्ञात अज्ञात पापोंसे छूटै इसीप्रकार जो स्त्री अथवा पुरुष मार्गशीर्षमें एक भक्त ब्रतकरैं वे मध्य अवस्थामें किये पातकोंसे मुक्तहोयँ औ पौषमासमें भी इसी बिधिसे एकभक्तकरै तो वृद्धावस्थामें किये पापदूरहोयँ इस त्रिमासिक ब्रतको जोपुरुष अथवा स्त्री करैं वे सूर्य्यनारायणके कृपापात्रहों औ सबपापोंसे छूटैं दूसरे बर्ष इसीभांति त्रिमासिक ब्रतकरै तो सब उपपातक निवृत्त होयँ औ तीसरे बर्ष इस ब्रतकोकरै तो सब महापातक कटैं औ मनोबांछित फलपावै यह ब्रत तीनमासमेंहोताहै तीन बर्ष तक करतेहैं औ तीनों अवस्थाओंके तीन प्रकारके पातक हरता है इससे इस सर्बपापहरब्रतको त्रिक्रमकरतेहैं यह परावसुकाबचनसुन राजाने कहा कि महाराज ब्रतका बिधान तो हमने सुना परन्तु भोजन कौनसे ब्राह्मणको देना यह आप कृपाकरकहैं यह सुन परावसु बोले कि हे राजा पौराणिक ब्राह्मणको देनाचाहिये इसबिषयमें अरुणके प्रति जो सूर्य्यनारायणने कहा वह हम आपको कहतेहैं एक समय उदयाचल पर अरुण ने सूर्य्यनारायण से पूछा कि महाराज कौन २ पुष्प नैवेद्य बस्त्र आदि आपको प्रियहैं औ कौन से ब्राह्मणके पूजनसे आपप्रसन्न होतेहैं यह आप कृपाकर बर्णनकरैं इस प्रकार अरुणकी प्रार्थना सुन सूर्यनारायण कहने लगे कि हे अरुण करबीरके पुष्प रक्तचन्दन गुग्गुल अथवा घृत का धूप मोदक नैवेद्य ये हमको प्रिय हैं औ

भोजक हमारा पूजनकरै तो हम बहुत प्रसन्नहोते हैं औ हमारी प्रीतिके अर्थ पौराणिक को दान देवै उसीका पूजन करै तो हमारी प्रसन्नता होतीहै गीत वाद्य पूजन आदिसे वैसी तृप्ति हमारी नहींहोती जैसी पुराण श्रवणसे होतीहै इसलिये सदा पौराणिकका पूजनकर इतिहास पुराणआदि सुनै औ भोजकसे पूजनकरावै ॥

एकसौतेरहवां अध्याय ॥

भोजक की उत्पत्ति औ उसके लक्षण ॥

अरुण पूछते हैं कि महाराज यह भोजक कौनहै किस का पुत्रहै औ इसने ऐसा कौन उत्तम कर्म किया कि ब्राह्मणआदि वर्णोंको छोड़ इसपर आपका इतना अनुग्रह भया यह आप कृपाकर वर्णनकरैं यह सुन सूर्य्यनारायण बोले कि हे अरुण तुमने वहुत अच्छा प्रश्न किया अब हमजो कथन करतेहैं वह सावधान होकर श्रवणकरो ब्राह्मणं आदि वर्ण अपने २ घरोंमें हमारा अर्च्चन करते हैं मन्दिरोंमें नहींपूजते औ मन्दिरोंमें वृत्तिकेलिये जो ब्राह्मण पूजनकरैं वे देवल कहातेहैं इसलिये अपनेतेजसे भोजक कोहमने उत्पन्नकिया कि जो सर्वत्र हमारा पूजनकरै भोजक हमको अति प्रियहै इससे सदा इसका सत्कारकरना चाहिये पूर्वकालमें शाकद्वीपके स्वामी प्रियव्रत राजाके पुत्र ने शाकद्वीप में विमान के समान हमारा मन्दिर वनाया औ उसमें स्थापनके लिये सब लक्षणों करके युक्त सुवर्ण की प्रतिमा वनवाय चिंतनकरने लगा कि मन्दिर औ सूर्य नारायण की प्रतिमा ये दोनोंही वहुत उत्तम वने परन्तु अब प्रतिष्ठा कौन करावै ऐसा कोई योग्यपुरुष नहीं

पड़ता इसप्रकार चिन्ताकरते करते हमारे शरणमें आया हमने भी अपने भक्तको चिन्ताग्रस्त देख प्रत्यक्ष दर्शन दिये औ उससे पूछा कि हे राजा किस चिन्तासे व्याकुल होरहेहो शीघ्र हमको कहो कि दुष्कर कार्य्यभी तुम्हारा सिद्धकरैं तुम हमारे परमभक्तहो तब राजा बोला कि महाराज मैंने भक्तिसे आप का मन्दिर बनाया औ सुवर्ण की सुन्दर प्रतिमा निर्माणकराई परन्तु इसद्वीपमें ब्राह्मण तो हैं नहीं क्षत्रिय आदि तीनवर्ण हैं वे आपकी प्रतिष्ठा करा नहीं सक्के इससे मुझे बहुतचिन्ता होरहीहै अबआप जो आज्ञाकरैं वहकरीजाय राजाकी यहबातसुन सूर्य्यनारायण ने कहा कि ठीकहै इस द्वीपमें तीनही वर्णहैं वेप्रतिष्ठा नहीं करासक्के औ हमारे पूजनकेभी अधिकारी नहीं यहवचन राजाको कह हमने विचारकिया विचार करतेही श्वेतवर्ण के आठपुरुष वेद पढ़तेहुये हमारे शरीरसे निकले ललाटसे दो, वक्षस्स्थलसे दो, किरणों से दो, औ हमारेचरणोंसे दो इसभाँति आठपुरुष उत्पन्नभये वे सब कषायवस्त्र पहिनेथे औ हाथों में कमलकेपुष्प औ करंडधारेथे वे सब हाथजोड़ हमसे प्रार्थना करनेलगे कि हे पिता हम आप के पुत्र हैं आप आज्ञाकीजिये किसकार्यके लिये हमको उत्पन्नकिया है यह सुन हमने उन आठोंसे कहा कि तुम सब इसराजा का वचन करो यह कह राजासे हमने कहा कि हे राजन् ये हमारेपुत्र प्रतिष्ठा करावैंगे मन्दिरकी प्रतिष्ठाकर वहमन्दिर इनको अर्पणकरदो ये सदा हमारा पूजन कियाकरैंगे परन्तु देकर फिर इनसे हरण मतकरना हमारे निमित्त जो धन, धान्य, गृह, भूमि, ग्राम, बाग, नगरआदि मन्दिरमें अर्पण

करो उस सबके स्वामी इन हमारे पुत्र भोजकोंको बनाओ जिस भांति पिताके द्रव्यका अधिकारी पुत्र होताहै ऐसेही हमारे धनके अधिकारी भोजकहैं ब्राह्मणआदि वर्ण नहीं यह हमारी आज्ञापाय राजाने वैसाही किया औ भोजकों से प्रतिष्ठा कराय वह मन्दिर उनके अर्पण किया हे अरुण इसप्रकार हमने भोजक उत्पन्नकिये हमारी प्रीतिके अर्थ जो देनाहोय वह भोजककोदेवै परन्तु भोजकका धन कभी न हरै जो द्वेषसे लोभसे अथवा प्रमादसेहरै तो अन्धतामिस्रनाम नरकमें जाय हमारे सब धनका स्वामी भोजक है परन्तु भोजकमें भी ये लक्षण होने चाहिये कि पहिले वेदपढ़ै विवाहकरै नित्य त्रिकाल स्नान करै दिन रात्रि में पांचबार हमारा पूजन करै वेद ब्राह्मण औ देवता इनकी कभी निन्दा नकरै हमारे नैवेद्य बिना कोई पदार्थ भोजन न करै शूद्रका उच्छिष्ट औ शूद्रके घर जाय कभी भोजन नकरै परन्तु जो शूद्र अपने घर आय देजावे तो उसका अन्न लेनेमें कुछ दोषभी नहीं होता नित्य हमारे सन्मुख शंख बजावै छःमहीने पुराण सुननेसे जोप्रीति हमकोहोती है वहएकवार शंखध्वनि श्रवणकरनेसे होजातीहै इसलिये भोजक नित्य शंखबजावे अभोज्य पदार्थ नहींभक्षणकरते इससे भोजक कहाते हैं औ नित्य हमको भोजन कराते हैं इससे भी उनको भोजक कहतेहैं भोजक सदा अव्यंगको धारण करै अव्यंग बिना भोजक अशुचि होताहै जो भोजक अव्यंग धारे बिना हम को भोजन करावै उसकी संतति नष्ट होजाती है औ हमारी प्रसन्नता भी नहींहोती भोजक शिर मुंड़वाये रहै परन्तु दाढ़ी न मुंड़वावै पट्टी

दिन नक्तव्रतकर सप्तमीको उपवासकरै औ संक्रांतिकाभी व्रतकरै तीनकाल हमारे सन्मुख गायत्री जपै परन्तु पूजन के समय बस्त्रसे अपनामुख लपेट लेवै और मौनसे पूजन करै क्रोध का त्याग करै हमारा निर्माल्य शूद्र औ बैश्या को न देवै जो लोभ अथवा कामसे देवै तो नरकको जाय हमारे निर्माल्य धारण करने के ब्राह्मण आदि तीन वर्ण अधिकारी हैं लोभादि से हमको विना चढ़ाये पुष्प जो पहिलेही किसी को देदेवै वह हमाराशत्रु है सदा हमारा नैवेद्य भोजनकरै वह नैवेद्य भोजकको शुद्ध करनेके लिये पंचगव्यके समानहै हमारे चढ़ाहुआ गन्ध पुष्प बस्त्र भूषण आदि बेचै नहीं औ बेश्याआदि कोभी न देवै हमारे स्नानके जल औ निर्माल्यको उल्लंघन न करै करै तो नरकमें पड़ै हमारेकोघृत दुग्ध जल आदि से ऐसी युक्ति करके स्नान करावै कि उसको कोई उल्लंघनकरै नहीं औ श्वानभी न खाय सदा पवित्र रहै एकबार भोजनकरै औ क्रोध अमङ्गल वाक्य औ अशुभ कर्म को त्यागै ऐसे लक्षणों करकेयुक्त भोजक हमको प्रियहै उसका सदासत्कार करना चाहिये जो भोजक की वृत्तिको हरै हम क्रोध कर उसके कुलका संहार करते हैं हे अरुण पौराणिक भी हम को तुम्हारे तुल्य प्रियहै औ हमारे मन्दिर में मार्जन उपलेपन आदि करनेहारा पुरुषभी हमारा प्रीतिपात्रहै इतना कह परावसु बोले कि हे राजा इसप्रकार अरुणको उपदेश कर सूर्य्यनारायण आकाशमें भ्रमण करनेलगे औ अरुण भी सुनके बहुत प्रसन्न भया हे राजा पौराणिक ब्राह्मण सूर्यनारायण को बहुत प्रिय हैं इसलिये पौराणिक कोही

दानदेना चाहिये ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी परावसु के मुखसे यहकथा श्रवण कर राजा सत्राजित औ उसकी रानी विमलमति बहुत हर्षितभये पृथिवीपर जहां जहां सूर्य्यनारायणके मन्दिरथे सबमें मार्जन औ उपलेपन करानेलगे सब मन्दिरोंमें कथा करनेको पौराणिक बैठादिये औ बहुत दक्षिणादे पौराणिकों को प्रसन्न किया भांति २ के उपचारोंसे भक्तिकरके सूर्य्यनारायणका नित्यपूजनकरनेलगे इसप्रकार राजा औ रानी सूर्य्यनारायण का आराधनकर मनोवांछित फल पाते भये॥

एकसौ चौदहवां अध्याय॥

भद्रनाम ब्राह्मण की कथा, सूर्य्य के मन्दिरमें दीपदानका फल॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे बिष्णुजी सूर्य्यनारायणके मंदिर में दीप प्रज्वलितकरै तो यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै कार्त्तिकमासमें तो दीपकका बहुतही फलहै हे भगवन् भद्र नाम ब्राह्मणकी कथाहमकहतेहैं आपश्रवणकरैं माहिष्मती नाम नगरीमें एक नागशर्म्मा नाम ब्राह्मणथा उसके सौ पुत्र भये जिनमें सबसे छोटेकानाम भद्र था वह भद्र सदा सूर्य्यनारायणके मन्दिरमेंजाय दीपक जलाया करता एक समय उसके सब बड़े भाइयों ने कहा कि हे भद्र एक बात हम पूछते हैं तुम कथनकरो तब भद्रबोला कि आप सब मेरे पिताके समानहैं आपके प्रश्न का उत्तर मैं क्योंकर देसकताहूं परन्तु आप पूछैंजो मुझे बिदित होगा तो कहूंगा तब उसके भाइयों ने पूछा कि हम नित्यदेखते हैं कि तुम पुष्प धूप नैवेद्य आदि कभी सूर्यनारायणके अर्पणनहीं करते और ब्राह्मणभोजन भी कभी नहीं कराते केवल

औ रात मन्दिरमें जाय सूर्य्यनारायण के सम्मुख दीपक जलाते रहतेहो इसमेंक्या कारणहै यह तुम बर्णन करो यह अपने भ्राताओंका बचनसुन भद्र कहने लगा कि हे भ्राताओ जो आपने यही पूछा तो श्रवणकीजिये इक्ष्वाकुनाम राजाके पुरोहित बशिष्ठजी ने सरयू नदी के तटपर सूर्य्य नारायण का मन्दिर बनाया औ नित्यवहां गन्धपुष्पादि उपचारोंसे सूर्य्यनारायण का अर्चन करते औ दीपक प्रज्वलित करते बिशेषकर कार्तिक मासमें दीपोत्सव किया करते एक समय रात्रिको सूर्यनारायणके मन्दिर का दीपक शांतहोगया मैं भी पूर्बजन्ममें अनेककुष्ठआदि दुष्टरोगोंसे पीड़ितहो उसीमन्दिरकेसमीप पड़ारहता औ जो कुछमिल जाता उससे अपना पेट भरलेता वहांके निवासीभी मुझै रोगी औ दीन जान भोजन देदेते एकदिन मेरी यह दुष्ट बुद्धिभई कि रात्रिके समय सूर्यनारायणके भूषणहरलूं इसी बिचारमें देखतारहा जब वे सब भोजक निद्राबश भये तब मंदिरमें धीरे२घुसा वहांदेखा कि दीपक शांतहोगयाहै तब मैंने अग्नि जलाय दीप प्रज्वलित किया औ उसमें घृत डाल सूर्यनारायणके भूषण उतारने लगा इस अवसरमें वे भोजक जाग उठे औ मुझैहाथमें दीवा लिये देखा देखतेही आकर पकड़लिया मैं भीभयभीतहो बिलाप करने लगा औ उनके चरणोंपर गिरा मेरी दीनता पर उनको दया आई औ मुझै छोड़ दिया परन्तु वहां राजपुरुष सब यहचरित्र देखतेथे उन्होंने मुझै फिर बांधा औ पूछनेलगे कि रे दुष्ट दीपक हाथमें लेकर मन्दिर में तू क्यों घुसा यह कह मुझै ताड़न करनेलगे रोगकी ब्यथासे भयसे औ उन-

के ताड़न करनेसे मेरे प्राण उसी समय जातेरहे प्राण मुक्त होतेही सूर्यनारायणके गण बिमानमें बैठाय मुझे सूर्यलोक को लेगये वहां मैंने एककल्प पर्यंत बहुत सुख भोगा औ फिर उत्तम कुलमें जन्म पाय तुम्हारा भ्राता भया यह कार्तिक मासमें सूर्यनारायणके मन्दिरमें दीपक जलानेकाफल है मैंने दुष्टबुद्धि करके भूषण हरनेके लिये दीपक जलाया उससे यह उत्तम फल पाया कि कुष्ठीशूद्र होकरभी इस उत्तम ब्राह्मणकुलमें मेरा जन्म भया वेदशास्त्र पढ़े औ जातिस्मर भया दुष्टबुद्धिसेभी दीप जलाने का यह फल देख अब मैं नित्यभक्तिसे सूर्य्यनारायणके सम्मुख दीपजलाता हूँ हे भाइयो आपके पूछने से यह मैंने दीपदानका संक्षेप से फलकहा इतनीकथा सुनाय ब्रह्माजीबोले कि हे विष्णु जी यह दीपका प्रभाव भद्रने अपने भ्राताओं को सुनाया जो पुरुष सूर्यनारायणके नाम जपताहुआ मन्दिरमें दीपदानकरै वह आरोग्य धन बुद्धि सन्तानपावै औ जातिस्मर होय षष्ठी अथवा सप्तमी को जो दीपदान करै वह दिव्य विमानमें बैठ सूर्य्यलोक को जाय इसलिये सूर्य्यनारायण के मन्दिरमें भक्तिसे दीप प्रज्वलितकरै प्रज्वलित दीपोंको अस्तव्यस्त न करै औ उनका तेलभी न हरै दीपक हरने हारा पुरुष अंधमूषक होताहै इसकारण कल्याणकी इच्छा वाला पुरुष दीप प्रज्वलित करै हरै नहीं ॥

एकसौ पन्द्रहवां अध्याय ॥

यमदूत औ नारकीय जीवोंका संवाद, मंदिरसे दीपक हरनेकादोष ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी घोर नरक में पड़ेहुये भूखे अतिदुःखी औ विलाप करतहुये जीवोंको एक समय

यमदूतने कहा कि रे मूढ़ो अब विलाप करनेसे क्याहोताहै पहिलेही क्यों न समझे कि बुरे कर्मोंका आगे फलभोगना पड़ैगा हजारों जन्म लेकर एकबार मनुष्य जन्म मिलता है उसमें मनुष्य अपना हित नहीं करते पुत्र स्त्री धन घर क्षेत्र आदिमें आसक्तहो अनेक दुष्कर्म करते हैं यह नहीं जानते कि सूर्य्य चन्द्र काल आत्मा ये मनुष्यके सब शुभ अशुभ कर्मको जानते हैं यह मोहकी महिमा देखो कि पुत्र स्त्री रूप नरकमें आसक्तहो अपना हितभूलजाते हैं सूर्य्य नारायण का नाम लेनेमें कुछ दाम नहीं लगते मन्दिरमें दीप जलादेने में कुछ अधिक परिश्रम नहीं पड़ता परन्तु इतनाभी किसीसे नहींहोसक्ता अब रोदन औ विलाप करनेसे क्या होताहै जैसा कर्मकिया वैसा फलपाया फिर पाप कर्ममे बुद्धिमतकरना जो अज्ञानसे पाप कर्म बनभी पड़े तो सूर्य्यनारायणके आराधनसे उसका फल नष्ट होजाता है यह यमदूतका बचन सुन नरकके जीव बोले कि हे यमदूत हमने कौन ऐसा कर्मकिया जिससे हमको इसदारुण नरक में बास करना पड़ा तब यमदूतने कहा कि तुमने सूर्यनारायणके मन्दिर से दीपहरण किये उसीसे तुमयह नरक दुःख भोगते हो फिर ऐसा कभी मतकरना ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेविष्णुजी यह दीपदान औ दीपहरणकाफल वर्णन कियाहै दीपदान करनेका तो सर्वत्रही उत्तम फलहै परन्तु सूर्यनारायणके मन्दिर में विशेष फलहै जो जगत्में मूक अन्ध बधिर बिवेकहीन रोगी दरिद्री देखपड़तेहैं उन सबने साधुजनोंके प्रज्वलित कियेहुये दीप सूर्यनारायण के मन्दिर से हरणकिये हैं॥

एकसौ सोलहवां अध्याय ॥

वैवस्वतके लक्षण औ सूर्यनारायणकी महिमा ॥

विष्णुभगवान् पूछते हैं कि हेब्रह्माजी सब मनुष्य विष रोग ग्रह औ भांति२ के उपद्रवोंसे पीड़ित होतेहैं इसलिये आप कोई ऐसा उपाय कथनकरैं कि जिससे जीवोंकोरोग आदिकी बाधा न होय यहसुन ब्रह्माजी बोले कि हे विष्णु जी जो पुरुषव्रत उपवास आदि करके सूर्य्यनारायण का आराधनकरतेहैं उनको रोगआदि नहीं सताते जो सूर्य्यनारायणसे विमुखहैं वेही भांति २ के उपद्रवों से पीड़ित होतेहैं सूर्य्यनारायण के भक्तपर सब ग्रह सौम्यदृष्टि रखते हैं कोई उसका धर्षणनहीं करसकता रोगसमीपनहीं आते परन्तु सूर्य्यनारायणका अनुग्रह उसी पुरुषपर होताहै जो सब जीवोंको अपनेसमान मानै औ भक्तिसे उनका आराधन करै ब्रह्माजी का यह बचनसुन बिष्णुजी ने पूछा कि महाराज पहिलेसे तो सूर्य्यनारायण का आराधन किया न हो औ रोगआदिकरके पीडित होजाय वह उस कष्टसे क्योंकर छुटै यह आप बर्णनकरैं हमभी सूर्य्यनारायणका आराधन भक्तिसे किया चाहतेहैं यह सुन ब्रह्माजी ने कहा कि हे भगवन् जो आप सूर्य्यनारायण का आराधन किया चाहते हो तो पहिले वैवस्वत होजाओ वैवस्वत हुये बिना सूर्य्यनारायण की उपासना नहीं होती मनुष्योंके पाप जब क्षीणहोते २ थोड़ेशेष रहजायँ तब सूर्य्यनारायण औ ब्राह्मणोंमें भक्ति होतीहै जिससे पुरुष मुक्तिपाताहै अब आप भी वैवस्वतहो सूर्य्यनारायण का आराधन करैं भगवान् ने पूछा कि हे ब्रह्माजी वैवस्वतोंका क्यालक्षणहै औ

को क्या करना चाहिये यह आप कहैं तब ब्रह्माजी कहने लगे कि हे बिष्णुजी मन बचन कर्म्म करके सूर्यनारायण का भक्तहो औ जीवहिंसा कभी न करै ब्राह्मण देवता भोजक इनको नित्य नमस्कारकरै पराया धन न हरै देवता मनुष्य पशु पक्षि पिपीलिका वृक्ष पाषाण काष्ठ भूमि जल आकाश दिशा इन सबमें सूर्यनारायणको व्याप्तसमझै औ अपनेको भी सूर्यनारायण से भिन्न न समझै वह वैवस्वत होताहै जो जीवोंमें दुष्टभाव रक्खै वहकभी वैवस्वत नहीं होसक्ता न किसीसे प्रीति औ न किसीसे बैर जो पुरुष रक्खै निष्कामहो भक्तिसेसूर्यनारायणका आराधन करै वह वैवस्वत कहाताहै जिस उत्तमगतिको वैवस्वत प्राप्त होताहै वह योगी औ बड़े २ तपस्वियों कोभी दुर्लभहै जो सबप्रकारसे सूर्यभगवान्‌का दृढ़भक्तहै वह धन्यहै वहनीच कुलमें भी उत्पन्न होय तौभीउत्तमही होताहै भक्तिसे आराधनकरने करकेही सूर्यनारायणका अनुग्रह होताहै बाहर के आडंबरसे कुछप्रयोजन नहीं सूर्यनारायणके दक्षिण किरणसे हमउत्पन्न हुयेहैं औ उनकेही अनुग्रहसे सृष्टि रचते हैं आपभी उनके बामाकिरण से उत्पन्नहो उनकी इच्छासे ही सृष्टिका पालन औ दैत्योंका संहार करतेहो इसीभांति रुद्र इन्द्र चन्द्र वरुण पवन अग्नि आदि सब देव सूर्यनारायणसे उत्पन्नहो उनकी आज्ञानुसार अपने २ कार्य में प्रवृत्त होरहे हैं इसलिये हे भगवन् आप भी उपवास पूजन जप आदिसे सूर्यनारायणका आराधन करो सुमन्तु मुनि कहतेहैं कि हे राजाशतानीक यह ब्रह्माजी का वचन सुन बिष्णु भगवान् सूर्यनारायण का आराधन करने को

शाकद्वीप में गये वहां जाय भांति २ के उपचारोंसे सूर्य-नारायण का पूजन किया औ नानाप्रकार के भक्ष्यभोज्यों से भोजकों को संतुष्टकिया इसप्रकार बहुत काल सूर्यना-रायण का आराधनकर उनके अनुग्रहसे सब देवताओंमें श्रेष्ठ भये हे राजन् आपभी सूर्यनारायण का आराधनकरो जिससे सब तुम्हारे मनोरथ सिद्धहोयँ इस ब्रह्माजी औ विष्णुजीकेसंबादको जो श्रवणकरै वहभी सबमनोबांछित फल पावै औ अंतसमय सुवर्णके बिमानमें बैठ गोलोक को जाय औ वहां देवता गन्धर्ब औ अप्सराओं के साथ बिहारकरै॥

एकसौ सत्रहवा अध्याय॥

सूर्यनारायण के उत्तम रूप बनाने की कथा औ उनकी स्तुति॥

राजा शतानीक पूछतेहैं कि हे सुमन्तुमुनि आपने सूर्य भगवान् के तेज न्यूनकर उत्तमरूप निर्माण करने का सं-क्षेपसेवर्णनकिया अबआप बिस्तारसे बर्णन कीजिये यह राजाका बचनसुन सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हे राजन् जब सूर्यनारायणकी भार्यासंज्ञा अपने पिताके घरको चलीगई तब सूर्यभगवान्ने विचार किया कि हमारे तेजसेब्याकुल हो हमारी पत्नी चलीगई औ हमारा उत्तम रूप होने के अर्थ तप करतीहै इससे उसकामनोरथ सिद्ध होनेके लिये हम विश्वकर्मासे अपना रूप उत्तम बनवावैं सूर्यनारायण यह विचार करतेही थे कि वहां ब्रह्माजी आये औ सूर्य्य नारायणसेकहा कि आप सबदेवताओंमें मुख्यहैं औसब जगत् आपने व्याप्त कर रक्खाहै अब आप अपने श्वशुर विश्वकर्मासे उत्तम रूप बनवालेवें यह कहकर विश्वकर्मा से ब्रह्माजीने कहा कि तुम सूर्य्यनारायण का सुन्दर रूप

बनाओ यह ब्रह्माजी की आज्ञा पाय खराद पर चढ़ाय धीरे २ विश्वकर्मा सूर्यनारायण का रूप सुधारने लगे उस समय ब्रह्मा इन्द्र विश्वामित्र आदि ऋषि स्तुतिपढ़नेलगे (स्वस्तितेस्तुजगन्नाथदेववर्यदिवाकर। शांतिस्त्वंसर्वलोकानांदेवदेवदिवाकर १ त्वन्नाथमोक्षिणांमोक्षोध्येयश्चध्यायिनामपि। त्वंगतिःसर्वभूतानां त्वयिसर्वंप्रतिष्ठितम् २ शंप्रजाभ्योस्तुदेवेश शंनोस्तुजगतःपते। त्वत्तोभवतिवैनित्यं जगत्संलीयतेत्वयि ३ त्वमेकस्त्वंद्विधाचैव त्रिधाचैवनसंशयः। त्वयाविनाजगन्मूढं त्वयैकेनप्रबोधितम् ४) इस स्तुतिसे ऋषि स्तुति करतेभये औ विद्याधर यक्ष राक्षस नाग सब हाथजोड़ बारम्बार प्रणामकर स्तुति करते थे हाहा हूहू नारद तुम्बरु आदि गन्धर्व षड्ज मध्यम गान्धार आदि स्वर तीनिग्राम मूर्च्छना औ तान सहित राग गानेलगेविश्वाची घृताची उर्वशी तिलोत्तमा मेनका सहजन्याआदि अप्सरा हावभावसहित नृत्य करनेलगीं वेणु वीणा मृदंग पणव दुन्दुभि पटह आदि बाजे बजने का आरम्भ हुआ गन्धर्वोंके गानसे अप्सराओं के नृत्यसे औ अनेकप्रकार के बाजोंके शब्दसे बहुत कोलाहलभया सबदेवता मस्तक पर अंजलिबांध प्रणाम करनेलगे इसप्रकार सब देवता गधर्वआदिके कोलाहल में विश्वकर्मा धीरे२ सूर्यनारायण का तेज छीलनेलगे हे राजा इसकथाको जोभक्तिसे श्रवण करै वह सूर्य्यलोकमें प्राप्त होता है॥

एकसौ अठारहवां अध्याय॥

सूर्यनारायणकी स्तुति, औ उनके परिवार देवताओं का वर्णन॥

राजा शतानीक कहते हैं कि हे सुमन्तुमुनि इस सूर्य्य-

नारायण की कथा सुनते २ मुझे तृप्ति नहींहोती इसलिये फिरभी सूर्यनारायण केही गुण आप वर्णन करैं यह राजा का बचन सुन सुमन्तु मुनि बोले कि हे राजा ब्रह्माजी ने जो ऋषियों के प्रति सूर्य्यनारायण की कथा कही उसका हम वर्णन करते हैं जिसके सुनतेही सबपाप कटजायँ एक समय सूर्य्यभगवान् के प्रचण्ड तेजसे सन्तप्त हो ऋषियों ने ब्रह्माजी से पूछा कि महाराज यह अग्नि के तुल्य दाह करनेवाला तेज पुञ्ज आकाश में कौन है यह हम जानना चाहते हैं आप कृपाकर वर्णनकरैं ऋषियोंका प्रश्न सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो प्रलय के समय जब सब स्थावर जंगम नष्ट होगये औ सर्बत्र अन्धकार व्याप्तहोरहाथा उससमय पहिले बुद्धि उत्पन्न भई बुद्धि से अहंकार अहंकार से महाभूत महाभूतों से अण्ड उत्पन्न हुआ जिसमें सात लोक औ सात समुद्रों सहित पृथिवी स्थितहै उसी अण्डमें हम विष्णुजी औ शिवजी स्थितथे परन्तु सब अन्धकारसे व्याकुलथे तब परमेश्वरका ध्यान करनेलगे ध्यानकरनेसे अन्धकार को हरनेहारा एक तेज उत्पन्न भया उसको देख हम स्तुति करने लगे कि (ओं आदिदेवोसिदेवाना मैश्वर्य्याच्चत्वमीश्वरः। आदिकर्त्तासि भूतानां देवदेवःसनातनः १ जीवनंसर्वसत्वानां देवगन्धर्व रक्षसाम्। मुनिकिन्नरसिद्धाना मुरगाप्सरसांतथा २ त्वं ब्रह्मात्वंमहादेव स्त्वंविष्णुस्त्वंप्रजापतिः। वायुरिंद्रश्चसोम श्चविवस्वान्वरुणस्तथा ३ त्वंकालःसृष्टिकर्त्ताच भर्त्ताहर्त्ता विभुस्तथा। भूतादिर्भूर्भुवःस्वश्च महर्ज्जनस्तपस्तथा४ प्रदीप्तदीपनंनित्यंसर्वलोकप्रकाशकम्। दुर्निरीक्ष्यंसुरेंद्रा

यद्रूपंतस्यतेनमः ५ सुरसिद्धगणैर्जुष्टंभृग्वत्रिपुलहादिभिः। शुभ्रंपरममृत्युग्र यद्रूपंतस्यतेनमः ६ वेद्यंवेदविदान्नित्यं सर्व्वज्ञानसमान्वितम्। सर्वदेवाधिदेवंचयद्रूपंतस्यतेनमः ७ पंचतीर्थस्थितंयच्च दशैकादशएवच । अर्द्धमासमतिक्रम्य स्थितंयत्सूर्य्यमंडलम् ८ तस्मैरूपायतेदेवप्रणेमुःसर्वदेवता। विश्वकृद्विश्वरूपंच बैखानससुरार्चितम् ९ विश्वस्थितमचिन्त्यंच यद्रूपंतस्यतेनमः । परंयज्ञात्परंदेवात्सत्यलोकात्परं दिवः १० त्वरक्रमेतियःख्यातस्तस्मादपिपरंपरात्। परमात्मेतिविख्यातंतद्रूपंतस्यतेनमः ११ अविज्ञेयमचिंत्यंचअध्यात्मगतमव्ययम्।अनादिनिधनंचैवयद्रूपंतस्यतेनमः १२ नमोनमःकारणकारणाय नमोनमःपापबिमोचनाय। नमोनमोवन्दितवन्दिताय नमोनमोरोगविमोचनाय १३ नमोनमः सर्व्ववरप्रदाय नमोनमः सर्व्वसुखप्रदाय। नमोनमो ज्ञाननिधेसदैव नमोनमःपंचदशात्मकाय १४) इति॥ इसप्रकार हमारी स्तुति रूप वाणीसुन वह तैजस रूप बड़े मधुर वचनसे बोला कि हे देवताओ वरमांगो तब हम सब बोले कि हे प्रभो आपके इसप्रचण्ड रूपको कोई देखनहीं सक्ता इसलिये आप सौम्यरूप धारण करें यह देवताओं की प्रार्थनासुन सब लोकोंको सुखदेनेहारा उत्तमरूपधारा सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हे राजा शतानीक सांख्ययोग आदि शास्त्र सूर्य्यनारायणसेही उत्पन्नभये हैं मोक्षकी इच्छावाले पुरुष इनकाही ध्यान करते हैं सूर्य्यनारायणके ध्यानसेबड़े२ पाप निवृत्त होजाते हैं अग्निहोत्र वेद पाठ औ बहुत दक्षिणा करके युक्त यज्ञ सूर्य्यभक्ति की सोलहवीं कलाकेभी समान नहीं फल देते हैं तीर्थोंकेभी तीर्थ मंगलोंके भी मं-

गल औ पवित्रोंके भी पवित्र करनेहारे श्रीसूर्य्यनारायणहैं इनका जो आराधनकरैं वे सब पापों से छुट सूर्य्यलोकको जाते हैं जिसप्रकार पतिव्रता स्त्रीको पतिकी सेवा अवश्य करनीचाहिये इसीभांति सब लोकों को सूर्य्यनारायण की उपासना अवश्य कर्त्तव्यहै राजा शतानीक पूछते हैं कि हे सुमन्तुमुनि सूर्य्यनारायणकारूप सुन्दरकरनेके लिये प्रथम किसने कहा यह आप वर्णनकरैं तब सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हे राजा एक समय ब्रह्मलोकमें जाय ऋषियों ने ब्रह्माजीसे प्रार्थनाकरी कि महाराज अदितिकेपुत्र सूर्य्यनारायण आकाशमें अतिप्रचण्ड तेजसे तपरहेहैं इससे सबलोक नाशको प्राप्तहोनेलगे हम भी अति पीड़ित होरहे हैं औ आपके आसनका कमलभी सूखाजाताहै कोई सुखी नहीं इसलिये आप ऐसाउपाय करैं कि यह तेज शान्तहोय यह ऋषियोंकी प्रार्थनासुन ब्रह्माजी बोले कि हेमुनीश्वरो आप सब देवताओं सहित सूर्यनारायणकेही शरणमेंजायँ जिससे कल्याण होय यह ब्रह्माजी की आज्ञा पाय सब देवता औ ऋषि सूर्यभगवान्के शरणमेंप्राप्तहो स्तुतिकरनेलगे॥

(सदांधमूकान्वधिरान्सकुष्ठान् दद्रुव्रणाद्यैर्विविधैर्गदैर्हृतान् । करोषितानेवपुनर्नवानहो अतोमहाकारुणिकायते नमः १ यदौदरंज्योतिरनिन्धनंमहद्यदप्सुतेजोयदपीहचक्षुषि । तवैवतद्रूपमनेकधास्थितं मुरद्विषःसागरतोयवासिनः २ प्रचण्डपाशासिपरश्वधायुधाःसमुत्थितास्तेतुसुपापचेतसः । विप्रैस्तुसन्ध्यांजलिनासमाहताप्रयांतिनाशंतवदेवदर्शनात् ३ वेदोभवांस्तीर्थफलंसमस्तंयज्ञेषुनित्यंभगवानवस्थितः । दमोभवान्नात्रविचारमस्ति तथासमःशांति

करोनराणाम् ४ नमोनमस्त्रिभुवनभूतलावन क्रतुक्रियाशत फलसंप्रदायिने।शुभाशुभप्रतिहतकर्मसाक्षिणेसहस्त्रसद्दीध तयेनमोनमः ५ प्रसक्तसप्ताश्वयुंजेक्षमामयेधुरैकरश्मिग्रथिते नमोनमः। सवालखिल्याप्सरकिन्नरोरगैः ससिद्धगन्धर्वपि शाचपन्नगैः ६ सयक्षरक्षोगणगुह्यकोत्तमैःस्तुतःसदादेवन मोनमोस्तुते । यच्चापिलोकेतपउच्यतेनरैः तत्तेमहातेजउ शंतिपण्डिताः ७ यतोरसान्संक्षिपसेशरीरिणांगभस्तिभि र्हिमकुलकालसन्निभैः। जगच्चसंशोषयसेसदेव यतोसिलो केजगतांविभुस्त्वम् ८) यह देवताओं के मुखसेस्तुति सुन प्रसन्नहो सूर्यनारायण ने कहा कि हे देवताओ बर मांगो तबदेवताओं ने यहीबरमांगा कि आपके तेजकोबिश्वकर्मा न्यूनकरैंयह आपआज्ञादेवैं सूर्यनारायणने देवताओंकी प्रार्थना स्वीकार करी औ बिश्वकर्मा ने उनके तेज को छीललिया उसी तेजसे बिष्णुभगवान् का चक्र औ देवताओंने शूल शक्ति गदा बज्र बाण परशुआदि आयुधबनाये इस देवताओंके किये स्तोत्र को जो तीनकाल पढ़ै वह रोगों करके पीड़ित नहीं होता औ पुत्र धन बल ऐश्वर्य दीर्घ आयुष् औ बिजय पाता है सूर्य्यनारायण का तेज सौम्य होजाने से औ उत्तम २ आयुध मिलने से देवता अति मुदित हो फिरभी सूर्य्यनारायण की स्तुतिमें प्रवृत्त भये (ओंनमस्तेऋचरूपाय सामरूपायतेनमः। नमो यजुःस्वरूपायअथर्वांगिरसेनमः १ ज्ञानैकधामभूतायनिर्द्धू ततमसेनमः।शुद्धज्योतिस्वरूपाय निस्तत्वायामलात्मने२ नमोखिलजगद्व्याप्ति स्वरूपायात्ममूर्त्तये । सर्वकारणभू ताय निष्ठायैज्ञानचेतसाम् ३ नमस्तेसूर्यरूपाय प्रकाशा

लक्षरूपिणे। भाष्करायमहेशाय सर्वांतर्यामिनेनमः ४ त्वंसर्व मेतद्भगवन् जगद्वैभ्रमतात्वया । भ्रमत्याविद्ध्वमखिलं ब्रह्माण्डंसचराचरम् ५ त्वदंशुभिरिदंसर्वं संस्पृष्टंजायतेशुचि। क्रियतेत्वत्करस्पर्शात् जलादीनांपवित्रता ६ होमदानादिकोधर्मो नोपकारायजायते। तावद्यावन्नसंयोगि जगदेतत्त्वदंशुभिः ७ प्रातर्होमंप्रशस्तंहि उदितेत्वयिजायते। अस्तंगते तथासायं त्वयिहोमः प्रशस्यते ८ ऋचस्सकलपान्येतानियजूंष्येतानिचान्यतः। सकलानिचसामानितपत्वेदंजगत्सदा ९ ऋङ्मयस्त्वंजगन्नाथ त्वमेवचयजुर्मयः। यतस्साममयश्चैव ततोनाथत्रयीमयः १० त्वमेवब्रह्मणोरूपंपरंचापरमेवच । मूर्त्तामूर्त्ततथास्थूल सूक्ष्मरूपतयास्थितम् ११ निमेषकाष्ठादिमयं कालरूपंक्षयात्मकम्। प्रसीदस्वेच्छयारूपंस्वतेजोमयमादिश १२ इसप्रकार देवताओं की स्तुतिसुन बहुत प्रसन्नहो सूर्य्यनारायण अभीष्ट वर देतेभये देवताओंने परस्पर विचार किया कि दैत्यवरों से दर्पित होरहे हैं वे अवश्य सूर्यनारायणको हरनेकायत्नकरेंगे इसलिये हमको इनके चारोंओर रहना चाहिये यह विचारकर दंडनायक का रूपधार स्वामिकार्त्तिकेय सूर्य्यनारायणके बाईं ओर स्थितभये दंडनायक को सूर्यनारायणने आज्ञादी कि तुम जीवोंके शुभाशुभ कर्म लिखो पिंगल रूपसे दहिनी ओर अग्नि औ दोनों पार्श्वों में अश्विनीकुमार स्थित भये। राज्ञ औ श्रौष दो द्वारपालहैं राज्ञ कार्त्तिकेय का अवतार औ श्रौष रुद्रका अवतारहै ये दोनों द्वारपालधर्म औ अर्थ करके युक्त प्रथम द्वारपररहते हैं दूसरे द्वारपर कल्माष औ पक्षी ये दो द्वारपालहैं कल्माष यमराज हैं औ पक्षी गरुड़

हैं ये दोनों दक्षिण दिशामें हैं कुबेर और बिनायक उत्तरमें दिण्डी औ रेवन्त पूर्वमें हैं दिण्डी रुद्रकारूपहै औ रेवन्त सूर्य्यनारायण का पुत्र है ये सब देवता दैत्यों को मारनेके लिये सूर्य्यनारायण के चारों ओर स्थितहैं ये सब सुरूप कुरूप अल्प रूप औ स्वेच्छ रूप हैं औ अनेक प्रकारके आयुध धारे हैं औ चारों वेद उत्तम रूपधार चारों ओर सूर्य्यनारायणके स्थितहैं ॥

एकसौ उन्नीसवां अध्याय ॥

सूर्यनारायणके आयुधव्योमका लक्षण, ग्रह औ लोकों का वर्णन ॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक अब हम सूर्यनारायणके मुख्य आयुध व्योमका लक्षण कहते हैं वह व्योम सर्व देवमय है चार शृंगोंकरके युक्तहै औ सुवर्णका बनाहै जिस प्रकार वरुण का पाश ब्रह्माका हुंकार विष्णु का चक्र रुद्रका त्रिशूल औ इन्द्र का वज्र आयुध है इसी भांति सूर्य्यनारायण का आयुध व्योमहै उसव्योममें ग्यारह रुद्र बारह आदित्य तेरह विश्वेदेव आठ वसु दो अश्विनीकुमार ये सब अपनी २ कला करके स्थितहैं हर शर्व त्र्यंबक वृषाकपि शम्भु कपर्दी रेवत अपराजित अजैकपाद अहिर्बुध्न्य औ भर्ग ये ग्यारह रुद्र हैं ध्रुव धर सोम नल अनल आप प्रत्यूष औ प्रभास ये आठ वसुहैं नासत्य औ दस्र ये दो अश्विनीकुमार हैं क्रतु दक्षस्रुव सह्यकाल काम धृति कुरु शक्र मात्र अवमान ऋभु औ असह्य ये विश्वेदेवहैं इसीप्रकार साध्य तुषित मरुत आदि देवताहैं इनमें आदित्य औ मरुत कश्यपकेपुत्रहैं विश्वेदेव वसु औ साध्य ये धर्मके पुत्रहैं धर्मका पुत्र तीसरावसु सोमहै औ ब्रह्माका

पुत्र धर्महै स्वयम्भुव स्वारोचिष उत्तम तामस रैवत चाक्षुष ये छः मनुतो व्यतीत होगये हैं औ सातवां वैवस्वत मनु वर्त्तमान है औ अर्क सावर्णि ब्रह्मसावर्णि रुद्रसावर्णि धर्म सावर्णि दक्षसावर्णि रौच्य औ भौत्य ये सात मनु आगे होंगे। अब हम चौदह इन्द्रों के नाम कहते हैं विस्वभुक विपति विभु प्रभुशिखी मनोजव ये व्यतीत होगये ओज-स्वी नाम इन्द्रवर्त्तमानहै औ बलि अद्भुत त्रिदिव सुशांति सुकीर्त्ति ऋतधामा औ दिवस्पति ये सातइन्द्र आगे होंगे कश्यप अत्रि वशिष्ठ भरद्वाज गौतम विश्वामित्र औ जम-दग्नि ये सप्तर्षि हैं प्रवह अवह उद्वह सम्वह बिवह परिवह औ परावह ये सात मरुतहैं और्व अग्नि का नाम शुचि वैद्युत अग्निकानाम पावक औ अरणिसे उत्पन्नहुये अग्नि का पवमान नामहै ये तीन अग्निहैं अग्नियोंके पुत्र पौत्र उञ्चासहैं औ मरुतभी उञ्चासही हैं सम्वत्सर परिवत्सर इद्वत्सर अर्थवत्सर औ वत्सर ये पांच सम्वत्सर हैं। औ ब्रह्माजीके पुत्रहैं। सूर्य्य सोम भौम बुध गुरु शुक्र शनि राहु औ केतु ये नवग्रह हैं जगत् का भाव अभाव सदा सूचन करते हैं। इनमें सूर्य्य औ चन्द्र मण्डल ग्रह भौमादि पांच तारा ग्रह औ राहु केतु छाया ग्रह कहाते हैं। सूर्य्य कश्यप के पुत्रहैं सोम धर्म्मके भौम महादेवजीके बुध चन्द्रके गुरु औ शुक्र प्रजापतिके शनि सूर्यके राहु सिंहिकाके औ केतु ब्रह्माजी के पुत्रहैं सब ग्रहों के नीचे सूर्य्यनारायण भ्रमण करते हैं उनसे ऊपर चन्द्र चन्द्रसे ऊपर नक्षत्र मण्डल न-क्षत्र मण्डलके ऊपर बुध बुधके ऊपर शुक्र शुक्रके ऊपर भौम भौमके ऊपर गुरु गुरुके ऊपर शनि औ शनि के ऊपर

सप्तऋषि भ्रमण करते हैं राहु सूर्यमण्डल में रहता है औ कभी चन्द्रमण्डलमें चलाजाताहै औ केतु सदा चन्द्रमण्डलमेंही रहता है नौ हजार योजन सूर्य्यमण्डल का ब्यास है औ इससे त्रिगुण परिधिहै इससे दूना अर्थात् अठारह हजार योजन चन्द्रमा का ब्यासहै चन्द्र मण्डलसे द्विगुण बिस्तार नक्षत्रोंकाहै नक्षत्रोंके बिस्तारमें चतुर्थांश न्यूनकरें तो बृहस्पति का ब्यास होताहै उसमें चौथाई घटाने से शुक्र औ भौम का प्रमाण सिद्ध होताहै इनके ब्यासमें भी चौथा भाग घटानेसे बुधका व्यास होजाताहै बुधकेसमान छोटे नक्षत्रहैं सूर्य्यमण्डलके प्रमाण राहुहै औ केतुका प्रमाण नियत नहीं औ उसकी गतिका भी निश्चय नहीं। पृथ्वी को भूलोक कहते हैं अंतरिक्षको भुवलोक त्रिदिवको स्वर्लोक कहते हैं भूलोकका स्वामी अग्नि है भुवर्लोकका वायु औ स्वर्लोकका प्रभु सूर्य्य है गन्धर्व अप्सरा गुह्यक औ राक्षसभूलोकमेंरहते हैं मरुतभुवर्लोकमेंरहतेहैं औ रुद्र अश्विनीकुमार आदित्यवसु औ देवगणस्वर्लोकमें निवास करते हैं चौथा महर्लोक है जिसमें प्रजापतियों सहित कल्पवासी रहते हैं पांचवें जनलोक में ऋभु सनत्कुमार आदिक ऋषि औ भूमिदान करनेहारे मनुष्य बसते हैं छठवें तपोलोकमेंऋषिरहतेहैं औ सातवें सत्यलोकमेंवे पुरुषरहतेहैं जोजन्म मरणसे छुटजाते हैं औ पुराण बांचने वाले तथा श्रवण करनेवाले भी उसीलोकको जातेहैं भूमि से लाख योजन ऊंचा सूर्य्य मंडलहै औ सात कोटि योजन दूरध्रुवहै तेईसलाख योजन तीनोंलोकोंकी ऊँचाईहै औध्रुवसे ऊपर दूनी २ ऊँचाई करके बाकी चार लोकहैं

देवदानव गन्धर्व यक्षराक्षस नाग भूत औ विद्याधरये आठ देव योनिहैं इस प्रकार इसव्योममें सातलोक स्थितहैं मरुत पितर मेघ अग्निग्रह औ आठों देव योनि तथा मूर्त औ अमूर्तसब देवता इसी व्योममें स्थितहैं इसलिये जो भक्ति औ श्रद्धासेव्योम का पूजनकरै उसको सब देवताओं केपूजनकाफल प्राप्तहोताहै औ सूर्य्यलोकको जाताहै इस लिये अपने कल्याण के अर्थ सदा व्योमका पूजन करै॥

एकसौ बीसवां अध्याय ॥

मेरु पर्वत का वर्णन ॥

सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हे राजाशतानीक आकाश खवियत् व्योम अंतरीक्ष नभ अंबर पुष्कर गगन मेरु बिपुल आप छिद्र शून्य तम इत्यादि सबनाम व्योमके हैं। लवण क्षीर दही घृत इक्षुरसमद्य औ मीठाजल इनके सात समुद्र हैं हिमवान् हेमकूट निषध नील श्वेत औ शृङ्गवान् ये छ वर्षपर्वतहैं औ इनकेमध्यमें सुमेरुस्थितहै मेरुकेऊपर आठों दिक्पालोंकी अपनी२ दिशामें पुरीहैं पृथिवीमें लोकालोक पर्वतहै सबलोक ब्रह्मांडके भीतरहैं ब्रह्मांडके बाहिर चारों ओर जलहै अग्नि करके वेष्टितहै अग्नि वायु करके वायु आकाश करके आकाश भूतादिकरके औ भूतादि महत्तत्त्व करके महत्तत्त्व प्रकृतिकरके प्रकृतिपुरुषकरके औ पुरुष ईश्वर करके आवृतहै वह सम्पूर्ण जगत्को आवरण करनेवाला ईश्वर सूर्य्यनारायणही है भूः भुवः स्वः महः जनः तपः औ सत्य येसातऊपरके लोकहैं औ तल सुतल पाताल तलातल अतल वितल औ रसातलये सातलोक भूमिके नीचे हैं ये सब पहिली भांति ईश्वर करके आवृत हैं पृथ्वीके मध्यमें

सप्तऋषि भ्रमण करते हैं राहु सूर्यमण्डल में रहता है औ कभी चन्द्रमण्डलमें चलाजाताहै औ केतु सदा चन्द्रमण्ड-लमेंही रहता है नौ हजार योजन सूर्यमण्डल का व्यास है औ इससे त्रिगुण परिधिहै इससे दूना अर्थात् अठारह हजार योजन चन्द्रमा का व्यासहै चन्द्र मण्डलसे द्विगुण बिस्तार नक्षत्रोंकाहै नक्षत्रोंके बिस्तारमें चतुर्थांश न्यूनकरै तो बृहस्पति का व्यास होताहै उसमें चौथाई घटाने से शुक्र औ भौम का प्रमाण सिद्ध होताहै इनके व्यासमें भी चौथा भाग घटानेसे बुधका व्यास होजाताहै बुधकेसमान छोटे नक्षत्रहैं सूर्यमण्डलके प्रमाण राहुहै औ केतुका प्र-माण नियत नहीं औ उसकी गतिका भी निश्चय नहीं। पृथ्वी को भूलोक कहते हैं अंतरिक्षको भुवलोक त्रिदिवको स्वर्लोक कहते हैं भूलोकका स्वामी अग्नि है भुवर्लोकका वायु औ स्वर्लोकका प्रभु सूर्य्य है गन्धर्व अप्सरा गुह्यक औ राक्षसभूलोकमेंरहते हैं मरुतभुवर्लोकमेंरहतेहैं औ रुद्र अश्विनीकुमार आदित्यवसु औ देवगणस्वर्लोकमें निवा-स करते हैं चौथा महर्लोक है जिसमें प्रजापतियों सहित कल्पवासी रहते हैं पांचवें जनलोक में ऋभु सनत्कुमार आदिक ऋषि औ भूमिदान करनेहारे मनुष्य बसते हैं छठवें तपोलोकमेंऋषिरहतेहैं औ सातवें सत्यलोकमेंवे पु-रुषरहतेहैं जोजन्म मरणसे छुटजाते हैं औ पुराण बांचने वाले तथा श्रवण करनेवाले भी उसीलोकको जातेहैं भूमि से लाख योजन ऊंचा सूर्य्य मंडलहै औ सात कोटि यो-जन दूरध्रुवहै तईसलाख योजन तीनोंलोकोंकी ऊँचाईहै औध्रुवसे ऊपर दूनी २ ऊँचाई करके बाकी चार लोकहैं

देवदानव गन्धर्ब यक्षराक्षस नाग भूत औ विद्याधरये आठ देव योनिहैं इस प्रकार इसब्योममें सातलोक स्थितहैं मरुत पितर मेघ अग्निग्रह औ आठों देव योनि तथा मूर्त औ अमूर्तसब देवता इसी ब्योममें स्थितहैं इसलिये जो भक्ति औ श्रद्धासेब्योम का पूजनकरै उसको सब देवताओं केपूजनकाफल प्राप्तहोताहै औ सूर्य्यलोकको जाताहै इस लिये अपने कल्याण के अर्थ सदा ब्योमका पूजन करै॥

एकसौ बीसवां अध्याय॥

मेरु पर्बत का बर्णन॥

सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हे राजाशतानीक आकाश खवियत् व्योम अंतरीक्ष नभ अंबर पुष्कर गगन मेरु बिपुल आप छिद्र शून्य तम इत्यादि सबनाम व्योमके हैं। लवण क्षीर दही घृत इक्षुरसमद्य औ मीठाजल इनके सात समुद्र हैं हिमवान् हेमकूट निषध नील श्वेत औ शृङ्गवान् ये छ वर्षपर्बतहैं औ इनकेमध्यमें सुमेरुस्थितहै मेरुकेऊपर आठों दिक्पालोंकी अपनी२ दिशामें पुरीहैं पृथिवीमें लोकालोक पर्बतहै सबलोक ब्रह्मांडके भीतरहैं ब्रह्मांडके बाहिर चारों ओर जलहै अग्नि करके वेष्टितहै अग्नि बायु करके बायु आकाश करके आकाश भूतादिकरके औ भूतादि महत्तत्त्व करके महत्तत्त्वप्रकृतिकरके प्रकृतिपुरुषकरके औ पुरुष ईश्वर करके आवृतहै वह सम्पूर्ण जगत्को आवरण करनेवाला ईश्वर सूर्य्यनारायणही है भूः भुवः स्वः महः जनः तपः औ सत्य येसातऊपरके लोकहैं औ तल सुतल पाताल तलातल अतल वितल औ रसातलये सातलोक भूमिके नीचे हैं ये सब पहिली भांति ईश्वर करके आवृत हैं पृथ्वीके मध्यमें

सिद्ध गन्धर्ब देवताआदि करके सेवित चतुरस्र सुबर्णका बनाहुआ चारशृंगोंकरकेयुक्त सुमेरु पर्बतहै उसकी उँचाई चौरासीहजारयोजनहै औसोलहहजारयोजन भूमिमेंगड़ा है इसप्रकार मिलकर एकलाखयोजन मेरुपर्वतगिनाजाता है अट्ठाईसहजारयोजनचौड़ा औछप्पनहजारयोजनलम्बा मेरुपर्बतहै उसकासौमनसनामपहिलाशृंगसुबर्णकाहै ज्योतिष्कनाम दूसराशृंग पद्मरागमणिसे बनाहै तीसराचित्र नामशृङ्गसर्बधातुमयहै औचौथाचन्द्रौजशनामशृङ्गचांदी काहै सौमनसनाम पहिलेशृङ्गमें सूर्यनारायणकाउदयहोता है तबसबलोक देखते हैं उसीकानामउदयाचलहै उत्तरायण में सौमनसशृंगमें दक्षिणायनमें ज्योतिष्क शृंग में औ मेष तुलासंक्रांतियोंमें मध्यके दोशृंगोंमें सूर्य्यनारायणका उदय होताहै उस पर्बतके ईशानकोणमें इन्द्र औ बिष्णु अग्नि कोणमें अग्नि नैर्ऋत्यकोण में पितर वायव्यमें मरुत औ मध्यमें साक्षात् ब्रह्मा निवासकरते हैं इसीको व्योमकहते हैं जहां सूर्य्यनारायण आप निवास करते हैं इस प्रकार सर्ब देवमय औ सर्बलोकमय व्योम है एकशृंगपर सूर्य्य दूसरे पर हेलि तीसरेपर धननाथ औ चौथेशृंगपर सोमस्थितहै मध्यमें ब्रह्मा विष्णु औ शिवनिवासकरतेहैं औ उनहीं शृंगों में विधुक्षय गोपति शांडिली सुत यम विरूपाक्ष वरुण इन्द्र दशवलआदि देवता निवासकरतेहैं मध्यमेंब्रह्मा औ अधोभागमें अनन्त की स्थिति है यह व्योम अथवा मेरु सर्ब धर्ममय औ सर्बदेवमयहै इसके चारोंशृंग धर्म आदि चार पुरुषार्थ अथवा ऋग्वेद आदि चारोंवेदहैं॥

एकसौ इक्कीसवां अध्याय ॥

साम्बकृत सूर्य्यनारायण का आराधन और स्तुति ॥

राजा शतानीक पूछते हैं कि साम्ब ने किसप्रकार सूर्य्य नारायण का आराधन किया औ उस दारुण रोगसे क्योंकर छुटा यह आप कृपाकर बर्णन कीजिये यह राजा का वचनसुन सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजन् आपने बहुत उत्तम कथा पूछी इसको हम विस्तार से बर्णन करते हैं जिसके सुनतेही सब पाप दूरहोजायँ नारदजी के मुख से सूर्य्य नारायण का माहात्म्य सुन अपने पिता श्रीकृष्णचन्द्र के समीपजाय साम्बने प्रार्थनाकरी कि महाराज रोगने मुझे दबालियाहै औ औषधोंसेकुछशांति नहींहोती अब आप आज्ञादेवें कि मैं बन में जाय सूर्य्यनारायण का आराधन कर इस दुःखसे छूटूँ यह पुत्रका वचनसुन प्रसन्नहो श्रीकृष्णभगवान् ने आज्ञादी साम्बभी पिताकी आज्ञा पातेही चन्द्रभागानदी के तटपर जगत्प्रसिद्ध मित्रबन नामसूर्य्यक्षेत्रमें जाय तप करनेलगा औ उपवासकर सूर्य्यनारायण के आराधनमें प्रवृत्तहोगया ऐसा तप किया कि शरीर में अस्थिमात्र रहगई नित्य मंत्रका जपकरता औ इस स्तोत्र करके सूर्य्यनारायण की स्तुति करता (यदेतन्मण्डलंशुक्लं दिव्यंचाजरमव्ययम् । युक्तंमनोजवैरश्वैर्हरितैर्ब्रह्मवादिभिः १ आदिरेषहिभूतानामादित्यइतिसंज्ञितः । त्रैलोक्यचक्षुरेषोत्र परमात्माप्रजापतिः २यएषमण्डलेह्यस्मिन् पुरुषोदीप्यतेमहान् । एषविष्णुरचिन्त्यात्मा ब्रह्माचैवपितामहः ३ रुद्रोमहेन्द्रोवरुण आकाशपृथिवीजलम् । वायुःशशाङ्कः पर्जन्यो धनाध्यक्षोविभावसुः४यएषमण्डलेह्यस्मिन् पुरुषो

प्रकाशते। सहस्त्ररश्मिःसूर्य्योयं द्वादशात्मादिवाकरः ५ य
एषमण्डलेह्यस्मिन् पुरुषोदीप्यतेमहान्। एषसाक्षान्महादे
वोवृत्तकुम्भनिभःशुभः६ कालोह्येषमहायोगी निरोधोत्पत्ति
लक्षणः।यएषमण्डलेह्यस्मिन् तेजोभिःपूरयन्महीन्७भास
तेह्यव्यवच्छिन्नो धाताह्यमृतलक्षणः।नातःपरतरंकिंचित्ते
जसाविद्यतेक्वचित् ८पुष्णातिसर्वभूतानि एषएवसुधामृतैः
अंत्यजान्म्लेच्छजातीयान् तिर्य्यग्योनिगतानपि ९ का
ण्यात्सर्वभूतानि पासिदेवविभावसो। श्वित्रिकुष्ठ्यंधवधि
रान् जडांपंगुलकांस्तथा १० प्रपन्नवत्सलोदेवो नीरुजःकु
रुषेभवान्। दद्रुमण्डलमग्नांश्च निर्धनान्पुरुषांस्तथा ११
प्रत्यक्षदर्शीत्वंदेव समुद्धरासिलीलया। कामेशक्तिस्तवस्तो
तु मार्तोहंरोगपीड़ितः १२ स्तूयतेत्वंसदादेव ब्रह्मविष्णु
शिवादिभिः। महेन्द्रसिद्धगन्धर्वै रप्सरोभिःसगुह्यकैः १३
स्तुतिभिःकिंपवित्राभि रन्याभिर्वामहेश्वरा यस्यतेऋग्यजु
साम्नांत्रितयंमण्डलेस्थितम् १४ ध्यानिनांत्वंपरंध्यानं मो
क्षद्वारंचमोक्षिणाम्। अनन्ततेजसाक्षोभ्यश्चाचिन्त्याव्यक्त
निष्कल १५ यन्मयाव्याहृतंकिंचित् स्तोत्रेस्मिन्जगतःपते
आर्तिभाक्तिंचविज्ञायतत्सर्वंक्षंतुमर्हसि १६ इसप्रकार सां
से स्तुतिसुन अति प्रसन्न हो सूर्यनारायणने प्रत्यक्ष दर्शन
देकर कहा कि हे सांब बर मांग हम तेरे तपसे बहुत प्र
सन्न भये हैं तब सांबने कहा कि महाराज आपके चरणोंमें
दृढ़ भक्ति होय यहीबर चाहताहूं सूर्यनारायण ने कहा कि
यह तो होहीगी परन्तु और भी बरमांगो तब फिर सांबने
कहा कि महाराज जो आपकी यही इच्छाहै तो यहमेरे शरीर
का कलंक निवृत्त होजाय तब सूर्य्यनारायणने कहा कि

ऐसाही होय यह करतेही सांबका दिव्यरूप औ उत्तमस्वर होगया फिर भी सूर्यनारायण ने कहा कि हे सांब हम प्रसन्न होके और भी बरदेते हैं कि यह नगर तुम्हारेनामसे प्रसिद्धहोगा औ लोकमें तुम्हारी अक्षयकीर्त्ति होगी और हम तुमको नित्य स्वप्न में दर्शन देंगे अब तुम इस चन्द्रभागा नदीके तटपर हमारी प्रतिमा स्थापन करो इतना कह सूर्य्यनारायण अन्तर्द्धान भये हे राजा इस साम्ब के किये स्तोत्र को जोपढ़ै वह राज्य धन आरोग्य पावै और साम्बकी भांति सूर्य्यनारायण का प्रीतिपात्रहो सूर्य्यलोक को जाय ॥

एकसौ बाईसवां अध्याय ॥

सूर्यनारायण का एकविंशति नामात्म स्तोत्र ॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजाशतानीक तपकरनेकेसमय सांब सहस्रनामसे स्तुति किया करताथा तब स्वप्नमें सूर्य्यनारायण ने कहा कि हे साम्ब सहस्रनाम से हमारी स्तुति करनेकी कुछ अपेक्षा नहीं हम अत्यंत गुह्य पवित्र और शुभ अपने नाम तुमको बतातेहैं जिनके पाठकरनेसे सहस्रनामके पाठकाफलहोय (ओंविकर्त्तनोविवस्वांश्चमार्तंडो भास्करोरविः। लोकप्रकाशकःश्रीमान्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः १ लोकसाक्षीत्रिलोकेशःकर्ताहर्तातमिस्रहा। तपनस्तापनश्चैवशुचिःसप्ताश्ववाहनः २ गभस्तिहस्तोब्रह्माचसर्वदेवनमस्कृतः) यह इक्कीस नामकाहमारास्तोत्रत्रैलोक्यमें प्रसिद्ध है जो दोनों संध्याओंमें इसस्तोत्रको पढ़ै वह सब पापोंसे छुटै और धन संतानआरोग्यआदि जो पदार्थ चाहै वही मिलै इतना सांबको उपदेशकर सूर्य्यनारायण अन्तर्द्धान भये सांब भी इस स्तवराजकेपाठसे अभीष्टफलको प्राप्त

भया और भी जो पुरुष भक्तिसे इसस्तोत्रका पाठकरै वह सब रोगोंसे छुटै ॥

एकसौ तेईसवां अध्याय ॥

चंद्रभागानदीसे सांबको सूर्यनारायणकी प्रतिमाप्राप्तहोनेकावृत्तान्त॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक इस प्रकार सूर्यनारायण से वरपाय साम्ब अति हर्षित हुआ एकदिन तपस्वियोंके साथ पहिली भाँति चन्द्रभागा नदीपर स्नान करनेगया वहां स्नानकर मण्डल बनाय सूर्यनारायण क भक्तिसे पूजन किया औ मनमें विचार करनेलगा कि सूर्यनारायण की कैसी प्रतिमा स्थापन करूं यह बिचारकर तेही नदीमें देखा कि अति प्रकाशवती एक प्रतिमा बही चलीआतीहै प्रतिमा देखतेही साम्बको निश्चयहुआ कि यह अवश्य सूर्य्यनारायणकी प्रतिमाहै और उनकीइच्छा से मेरे दृष्टिगोचरहुई यह मनमें बिचार नदीसे उसप्रतिम को बाहर निकाललाया वही प्रतिमा साम्बने मित्रवन मे विधिपूर्वक स्थापनकरी एकदिन साम्बने प्रतिमासेही पूछा कि महाराज यह आपकी प्रतिमा किसने बनाई है आप कृपाकर मुझसे कहैं यह सुन प्रतिमा बोली कि हे साम्ब पूर्वकाल में हमारा रूप प्रचण्ड तेजकरके युक्तथा उससे व्याकुलहो सबदेवताओंने हमसेप्रार्थनाकरी कि आप इस रूपको सौम्यकीजिये नहींतो सबलोक दग्धहोजायँगे देवताओंकी प्रार्थना हमने स्वीकारकरी औ शाकद्वीपमें जाय विश्वकर्मासे अपना तेज छिलवा डाला उसी विश्वकर्माने कल्पवृक्षके काष्ठसे यह हमारी सुलक्षण प्रतिमाबनाई औ अब तुम्हारी इच्छा पूरीकरनेके लिये हमारी आज्ञानुसार

विश्वकर्मानेही नदीमेंबहाईहै साम्ब यहहमाराक्षेत्र तुम्हारे नामसे प्रसिद्धहोगा मध्याह्नके पूर्वमुण्डारक्षेत्र में मध्याह्नके समय कालप्रिय में औ मध्याह्नके अनन्तर इस स्थान में हमारा सान्निध्यहोगा इन तीनोंकालोंमें क्रमसे ब्रह्मा विष्णु औ शिव सदा हमारा पूजनकरते हैं यह सूर्यनारायण की प्रतिमाके मुखसे सुन साम्ब अति हर्षितहुआ ॥

एकसौ चौबीसवां अध्याय ॥

प्रासाद योग्य भूमिका कथन प्रासाद का सामान्य लक्षण औ मेरु आदि बीस प्रासादों के विशेष लक्षण भूमि हरीक्षा अंग देवताओंके स्थापन का प्रकार ॥

राजा शतानीक पूछते हैं कि हे सुमन्तुमुनि साम्ब ने सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा किसविधि करी औ प्रासाद कैसा बनाया यह आप वर्णनकरें यह राजाका वचन सुन सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजा प्रतिमा मिलनेके अनन्तर साम्ब ने नारदजीका स्मरण किया स्मरण करतेही नारदजी वहां आये उनका पूजन सत्कार आदि कर आसन पर बैठाय साम्बने पूछा कि महाराज सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा किस विधानसे करनी चाहिये औ प्रतिष्ठासे क्या फल होता है यह आप कृपाकर कहें। तब नारदजी बोले कि हे साम्ब पहिले तो उत्तम प्रासाद बनानाचाहिये पीछे उसमें मूर्त्ति स्थापन होताहै साम्बने फिर पूछा कि महाराज प्रासादका क्या लक्षणहै औ कैसी भूमिमें बनानाचाहिये यहभी आप कथन करें यह साम्बका प्रश्नसुन नारदजी कहनेलगे कि हे साम्ब पहिले तो उत्तम जलाशय बनावै उसके तट पर सुन्दर बाग लगाय बागके मध्यमें प्रासाद बनाय उ-

देवत का स्थापनकरै अथवा उत्तम जनोंकरकेयुक्त नगरमें प्रासाद बनावै इष्ट अर्थात् यज्ञादि औ पूर्त्त अर्थात् कूप तटाक आदि इन दोनों कर्म्मों के फलकी इच्छा होय तो देवता स्थापनकरै जल औ सुन्दर सघन वृक्षों कर के युक्त रमणीयस्थानोंमें अवश्य देवतानिवासकरतेहैं कमलोंकरके आच्छादित हंस कारण्डव क्रौञ्च चक्रवाक आदि पक्षियों करकेशोभित तटमें पक्षियोंके बिहार योग्य शीतल औ सघन छायायुक्त वृक्षोंकरके भूषित सरोवरोंमेंउत्तम २ नदियोंके तटोंमें पर्वतोंके निर्भरोंके समीप सदादेवता बिहारकरतेहैं ब्राह्मण आदिवर्णोंकेलिये जैसी भूमि घरबनानेकेलियेकहीहै वैसीही भूमिमें देव प्रासादभी बनावै घरकी भांति देवालय में चतुष्षष्टिपदका वास्तुरचै मध्यमें द्वार रक्खै बिस्तारसे द्विगुण प्रासादकी उँचाई होतीहै औ उँचाईकी तिहाई प्रासादकी कटि अर्थात् मध्यभागहोताहै बिस्तारके आधे में गर्भमन्दिर औ आधे में भित्तिबनतीहै गर्भकीचौथाईकेतुल्य चौड़ा औ उससेदूनाऊंचाद्वार होता है बिस्तारकी चौथाईकेतुल्य द्वारशाखाबनावै औ द्वारशाखाओंके नीचले चतुर्थांशमें प्रतीहारकी मूर्ति बनाय बाकी द्वारशाखामें भांति २ के बेल बूटे पक्षी आदि बनादेवै द्वारशाखाके अष्टमांशके तुल्य पिंडिका अर्थात् नीचेकी चौकी सहित प्रतिमा बनावै उसमें एक भाग पिंडिका औ दो भाग प्रतिमा बनती है मेरु मन्दर कैलास बिमान नन्दन समुद्र पद्म गरुड़ नन्दिवर्द्धन कुंजर गृहराज वृष हंस सर्वतोभद्र घट सिंह वृत्त चतुष्कोण षडस्र अष्टास्र ये बीसभांति के प्रासाद होतेहैं हे सांब अब तुम इनके लक्षण सुनो नौ

आठ छः अथवातीन अश्रियों करके युक्तबारह भूमिका अर्थात् खंडका चार द्वारों करके शोभित तीसहाथ बिस्तार करके युक्त मेरु प्रासाद होता है तीस हाथ बिस्तार में दश भूमिका का मन्दर प्रासाद होता है अठाईस हाथ बिस्तार में औ आठ खंडका प्रासाद कैलास कहाता है सुन्दरजाली भरोखोंसे शोभित सात खंडका औ इक्कीस हाथके बिस्तारमें बिमान प्रासाद होताहै छःभूमिका करके संयुक्त बत्तीस हाथ विस्तार में नन्दन प्रासाद बनता है और समुद्र प्रासाद बर्तुल होताहै और पद्मप्रासाद पद्मके आकार आठहाथ विस्तारमें होताहै उसमें एक शृंग औ एकही भूमिका होतीहै गरुड़प्रासाद गरुड़के आकारहोता है नन्दिवर्द्धनप्रासाद साठहाथके विस्तारमें सात भूमिका करकेयुक्त औ बीस अश्रियोंकरके युक्त होताहै सोलहहाथ ऊँचा औ हाथी की पीठके आकार कुंजरप्रासाद होताहै सोलहहाथके विस्तार में तीन चन्द्रशालाओं करके युक्त गृहराजनामप्रासाद बनताहै बारहहाथके विस्तारमें चारों ओर बर्तुल एकभूमिका औ एकशृंगकरकेयुक्त वृष प्रासाद होताहै हंस प्रासाद हंसके आकार आठहाथ विस्तार में होताहै चारद्वार बहुतसे शिखर औ अनेक चन्द्रशालाओं करके युक्त छब्बीसहाथ विस्तार में पांच खण्डका प्रासाद सर्बतोभद्र कहाताहै बारह हाथके विस्तार में सिंहाक्रान्त नाम प्रासाद सिंहके आकार होताहै बाकी प्रासाद नामके सदृश रूपवाले होतेहैं मयासुर के मत में एक २ भूमिका एकसौ आठ अंगुलकी होतीहै विश्वकर्म्माके मतमें साढ़े तीनहाथकी भूमिका औ स्थपित अर्थात् कारीगरोंके मत

में प्रत्येक भूमिका सौ २ अंगुल की होतीहै भूमिका कुछ न्यून रहजाय तो उसके ऊपर कपोत पालिका बनादेने से पूरीहोजातीहै साम्ब पूछतेहैं कि हे नारदजी येबीसप्रासाद आपने कहे इनमें सूर्य्यनारायण के लिये कौनसा प्रासाद बनवाना योग्य है औ नगर में प्रासाद बनावै तो कौनसी दिशामें बनावै यह आप कृपाकर वर्णनकरैं यह सुन नारद जी कहने लगे कि हे साम्ब नगर के मध्यमें अथवा पूर्व्व द्वारकेसमीप भूमिकी परीक्षाकर उसमें प्रासादबनावै सुन्दर वर्ण रस औ गन्धकरके युक्त स्निग्धभूमि अच्छी होतीहै कंकर तुष केश अस्थि अङ्गार आदि जिस भूमिसे निकलै वह प्रासाद योग्य नहीं जिस भूमिको ताड़न करनेसे मेघ अथवा दुन्दुभीके शब्दकेसमानशब्दहोय औ जिसभूमिमें सबप्रकारकेबीज ऊगआवैं यहभूमि उत्तमहोतीहै शुक्ल रक्त पीत औ कृष्ण वर्ण की भूमि क्रम से ब्राह्मण आदि वर्णों के लिये श्रेष्ठ है इसप्रकार भूमिकी परीक्षाकर उत्तम भूमि जान उसमें चारहाथ लम्बा चौड़ा चतुरस्र चौका लगाय एक हाथ लम्बा चौड़ा औ दश अंगुल गहरा एक गढ़ा खोदे औ उस गढ़ेको फिर उसीमृत्तिका से भरे जो गढ़ेसे निकलीहो जो गढ़ा भरजाय औ कुछ मृत्तिका शेषरहे तो वह भूमि उत्तम होतीहै मृत्तिका न बढ़ै औ घटै भी नहीं तो मध्यम औ मृत्तिका न्यून होजाय गढ़ा न भरै वहभूमि अच्छी नहीं होती सूर्य्यनारायण का मन्दिर पूर्व्वाभिमुख बनाना चाहिये औ पूर्व्वकी ओर द्वाररखने का स्थान न होय तो पश्चिमाभिमुख बनावै परन्तु मुख्य तो पूर्व्वाभिमुखही है उसमें स्थानों की कल्पना इसप्रकार करै कि

मुख्य मन्दिरसे दक्षिण ओर सूर्य्यनारायण का स्नान गृह औ उत्तरकी ओर अग्निहोत्र शाला बनावै शिवजी औ मातृका इनकामन्दिर उत्तराभिमुख बनावै पश्चिमकीओर ब्रह्मा उत्तरको विष्णु दाहिनी ओर निक्षुभा औ बायें ओर राज्ञीका स्थापनकरै दक्षिणभागमें पिंगल बामभागमें दण्ड-नायक और सूर्य्यनारायणके सम्मुख श्री और महाश्वेता का स्थापन होताहै देव गृहके बाहर अश्वनी कुमारों का स्थानबनावै दूसरीकक्षामें राज्ञ औ श्रौष तीसरीमें कल्माष औ पक्षी दक्षिणमें माठर उत्तर में कुबेर औ कुबेरसे उत्तर रेवन्त औ विनायक स्थापन करै अथवा जिस दिशा में उत्तम स्थान हो वहांही स्थापन करै बाम दक्षिण में दो मण्डल अर्घ्य देने के लिये बनावै उदय के समय दक्षिण मण्डलमें औ अस्तके समय बाम मण्डलमें सूर्य्यनारायण को अर्घ्य देवै औ चक्राकार पीठकेऊपर स्नानगृहमेंचार कलशोंकरके सूर्यनारायणकी प्रतिमाको स्नानकरावै स्नान के समय शंखआदि वाद्य बजें तीसरे मण्डलमें सूर्यनारायण का पूजनकरै सूर्य्यनारायण के सन्मुख खड़ा हुआ दिण्डी स्थापन करै सूर्यनारायण के सन्मुख समीपही व्योम का स्थान बनावै जिसका हमने प्रथम वर्णन कियाहै मध्याह्न के समय वहां सूर्यनारायण को अर्घ्यदेवै अथवा मध्याह्न के अर्घ्यकेलिये चक्रनामक तीसरा मण्डलबनालेवै पहिले स्नान करायपीछे अर्घ्यदेवै औ सूर्यनारायण के समीपही पुराण बांचनेका स्थान बनावै यह क्रमसे देवताओंकेस्था-पनका विधानहै गृहराज औ सर्वतोभद्र ये दोप्रासाद सू-र्यनारायणको अति प्रियहैं इसलिये येही बनाने चहियें॥

एकसौ पचीसवां अध्याय ॥

सात प्रकारकी प्रतिमा प्रतिमा बनाने के योग्यवृक्ष उन वृक्षों के काटने का विधान ॥

नारदजीकहते हैं कि हेसाम्ब अब हमविस्तारसे प्रतिमा का विधान कहते हैं सब देवताओं की प्रतिमा औ विशेष करके सूर्य्यनारायण की सातप्रकार की होती है सुवर्ण की चांदीकी ताम्रकी पाषाणकी मृत्तिकाकी काष्ठकी औ चित्र में लिखीहुई इन सातप्रकारकी प्रतिमाओं में काष्ठकी प्रतिमाका विधान हम कहते हैं ज्योतिषियों से उत्तममुहूर्त्त पूछ उस मुहूर्त्तमें बहुत उत्सवकर अच्छे शकुनदेख बनमें जाय वहां प्रतिमाके लिये वृक्ष देखै दुग्धयुक्त वृक्ष दुर्बल वृक्ष चतुष्पथ देवस्थान वल्मीक श्मशान चैत्य आश्रम आदिमें लगेहुये वृक्ष पुत्रक वृक्ष अर्थात् जो वृक्ष किसी अपुत्र मनुष्यने अपना पुत्रकरके लगायाहोय जिनमें कोटर बहुत होयँ औ बहुत पक्षी रहते होवें वृक्ष शस्त्र वायु अग्नि बिजुली हाथीआदि करके दूषित वृक्ष एक दोशाखा वाले वृक्ष औ जिनका अग्र सूखगयाहो ऐसेवृक्ष प्रतिमा बनानेके योग्य नहींहोते महुवा देवदारु राजवृक्ष चन्दन विल्व अंवाड़ा खदिर अंजन निम्ब श्रीपर्ण पनस सरल अर्जुन औ रक्तचन्दन ये वृक्ष प्रतिमाके लिये उत्तमहैं महुवा आदि दो२वृक्ष क्रमसे चारों वर्णों के लिये श्रेष्ठहैं औ निम्बआदि छःवृक्ष सर्व साधारणहैं देवदारु चन्दन शमी औ महुवा ब्राह्मणोंके लिये निम्ब पीपल खदिर औ विल्व क्षत्रियोंके अर्थ अर्जुन खदिर रक्तचन्दन औ स्यन्दन वैश्यों के लिये औ तेंदू नागकेसर सर्ज अंजन आम्र औ शाल ये

वृक्ष शूद्रोंके लियेप्रतिमा बनानेके अर्थ उत्तमहैं इनवृक्षोंके काष्ठसे प्रतिमा अथवा लिंगबनाय स्थापनकरै शुचिएकांत सम केश अंगार कण्टक आदिसे रहित औ पूर्व तथा उत्तर को झुकीहुई भूमिमें जो वृक्षउत्पन्नहुआहो जो वृक्ष सुन्दर शाखा पत्र पुष्प फलोंकरकेयुक्तहो सीधाहो औ जिसमें व्रण न होय ऐसा वृक्षउत्तम होताहै जो आपही टूटपड़े खड़ा २ सूखजाय औ जिसमें मधुमक्षिका शहतका छत्ता लगावै वह वृक्ष शुभ नहींहोता कातिक आदि आठ महीनों में उत्तम मुहूर्त्तदेख वृक्षग्रहणकरै वृक्षकेनीचे चारों ओर चौकालगाय स्नानकर सुन्दर श्वेत नयेवस्त्र धारणकर गन्ध पुष्पमाला धूप बलि आदिसे वृक्षका पूजनकर हवन करै औ भूर्भुवः स्वः इस मन्त्रसे वृक्षका पूजनकरै पूजनकर इन श्लोकोंसे वृक्षको सान्त्वन करै (वृक्षलोकस्यशांत्यर्थंगच्छदेवालयं शुभम्। देवत्वंयास्यसेतत्रछेददाहविवर्जितः १ कालेधूप प्रदानेनसपुष्पैर्बलिकर्मभिः। लोकास्त्वांपूजयिष्यंतिततो यास्यसिनिर्वृतिम् २) इन श्लोकोंकोपढ़ धूप माल्यआदि से कुठारका पूजनकर वृक्षकेसमीपरक्खै औ कुठारका शिर पूर्वकी ओर करै फिर मोदक खीर भात दही मांस भाँति २ के पुष्प धूप दीप आदिसे देवतापितर राक्षसपिशाच नाग असुर गण बिनायक आदिको रात्रिके समय बलि देकर वृक्षका पूजनकरै औ वृक्षकोस्पर्शकर ये श्लोकपढ़ै (अर्चार्थ ममुकस्यत्वंदेवस्यपरिकीर्त्तितः। नमस्तेवृक्षपूजेयंविधिवत्प्र तिगृह्यताम् १ यानीहभूतानिवसंतितानिबालिंगृहीत्वाविधि वत्प्रयुक्तम्। अन्यत्रवासंपरिकल्पयंतु कल्याणदाःसन्तुन मोस्तुतेभ्यः) इसप्रकार प्रार्थनाकर शयनकरै प्रभात उठ

स्नानकर वृक्षका पूजनकरै औ ब्राह्मण तथा भोजकों को दक्षिणादेकर स्वस्तिवाचनकराय उस वृक्षको कटवावै पूर्व ईशान औ उत्तरकीओरकटकर वृक्षगिरै तो अच्छाहोताहै बाकी पांचदिशाअशुभहैं इनमेंभी वायव्य औ पश्चिम मध्यमहैं पहिले वृक्षकीशाखाकटवाय पीछे वृक्षको ऐसीरीति सेकाटै कि पूर्वादि दिशाओंमें गिरै जो वृक्षगिरतेही दोटूक होजाय अथवा उससे शहत घी तेल रुधिर आदि स्रवै वह वृक्ष ग्रहण न करना चाहिये कुठार का प्रहार करतेही जो वृक्षमें पीत वर्णका मण्डल पड़जाय तो उसवृक्ष में गोधा होतीहै कालामण्डलहोय तो सर्प पुण्ड्रवर्णहोय तो पाषाण कपिणवर्ण होय तो पल्वी शुक्ल वर्ण होय तो जल औ मंजीठ के समान रक्तवर्ण मण्डल पड़जाय तो उस वृक्ष में कृमि होते हैं ये दोषजिस वृक्षमें न होयँ उसको ग्रहणकरै काटने के अनन्तर थोड़े कालतक पत्तोंसे वृक्षको ढकदेवै पीछे प्रतिमा बनवावै॥

एकसौ छब्बीसवां अध्याय॥

प्रतिमा बनानेका प्रकार, प्रतिमाके शुभ अशुभ लक्षण॥

नारदजी कहते हैं कि हे साम्ब एक हाथकी तीनहाथ की साढ़ेतीन हाथ अथवा प्रासाद औ द्वार के अनुसार जितना प्रमाणआवै उतनी लम्बी प्रतिमा बनावै एकहाथ की प्रतिमा सौम्य होती है दो हाथकी धन धान्य देतीहै तीन हाथकी प्रतिमासे सब काम सिद्धिहोते हैं और साढ़े तीन हाथ लम्बी प्रतिमा स्थापन करीजाय तो सुभिक्षक्षेम औ आरोग्य होताहै जो प्रतिमा अग्रमें मध्यमें औ मूल में समहो उस को गान्धर्वी कहते हैं वह प्रतिमा धन औ

ग्रन्य देनेहारी है देवालय के द्वारका जितना विस्तार हो उसके अष्टांशके समान प्रतिमा बनावै उसमेंभी एकभाग पिण्डिका छोड़ दोभागमें प्रतिमा बनतीहै अपने चौरासी अंगुलकी प्रतिमा उत्तमहोतीहै उसमें बारह अंगुललम्बा औ चौड़ा प्रतिमाका मुखबनताहै मुखकीतिहाई ठोढ़ी औ बाक़ी ललाट औ नासिका होतीहै नासिकाके तुल्य कान बनते हैं दोदो अंगुलके नेत्र औ इसकी तिहाईमें नेत्र की तारा औ ताराकी तिहाईमें दृष्टि बनतीहै ललाट औ मस्तककी ऊँचाई समानही होती है मस्तक का विस्तार बत्तीस अंगुल होता है नासिका के तुल्य ग्रीवाहोती है औ मुखके समान हृदयका अन्तर बनताहै मुखके तुल्य नाभि औ उसके अनन्तर शिश्न बनाया जाता है ऊरूके ऊपर कटि बनतीहै बाहु औ प्रबाहु तथा ऊरु औ जंघा समान बनाई जातीहैं गुल्फ अर्थात् टँकनेकेनीचे चारअंगुल ऊँचे पाद बनते हैं पादोंकी चौड़ाई छःअंगुल होती है औ पैरों के अँगूठे तीन तीन अंगुल लम्बेहोतेहैं औ अँगूठोंके समानही तर्जनीहोतीहैं बाक़ी तीनअंगुली क्रमसे छोटी बनतीहैं औ नखभी क्रमसे छोटेहोतेजाते हैं पैरकी लम्बाई चौदह अंगुलहोतीहै इन लक्षणों करकेयुक्त प्रतिमा पूजन के योग्य होतीहै कन्धे छाती ऊरु भ्रू ललाट नासिका औ कपोल ये अवश्य ऊँचेहोने चाहिये बिशाल नेत्र कमलके समान मुख रक्तवर्णओष्ठ रत्नजटित मुकुटसे भूषित मस्तक मणिकुण्डल कटक अंगदहार आदि भूषणोंसेशोभित अव्यंग धारेहुये हाथोंमें कमल और सुदर्शमालालिये अति मनोहर सूर्यनारायणकी प्रतिमा बनावै ऐसी मूर्त्ति प्रजामें

कल्याण करनेहारी होती है प्रतिमाका कोई अंग अधिक होय तो राजभय होताहै न्यूनहोय तो रोग भीति पेटबड़ा होयतो क्षुधाका भय औ कृशप्रतिमा होयतो दारिद्र्यहोता है प्रतिमामें क्षतहोय तो शस्त्र भयहोय फूटी प्रतिमा होय तो मृत्यु दहिनी ओर भुकीहोय तो आयुष्का क्षय बाईं ओर भुकीहोय तो पत्नीसे बियोगहोताहै इसलिये सुन्दर और सीधी सूर्यनारायणकी प्रतिमाबनावै प्रतिमाकी दृष्टि ऊपरको होय तो स्थापनकरनेवाला अन्धा होजाय नीचे दृष्टिहोय तो चिन्ता होय यह सब प्रतिमाओं का शुभाशुभ फल हमने कहाहै कमण्डलु धारे कमलासन पर बैठे चार मुखों करके युक्त ब्रह्माजी की प्रतिमा बनावै स्वामिकार्त्तिकेयकी मूर्त्ति कुमार स्वरूप हाथमें बर्छी लिये बहुत सुन्दर बनानीचाहिये औ उनके ध्वजामें मयूरका चिह्नहोताहै चार दन्तों करकेयुक्त शुक्लवर्ण के ऐरावत नाम हाथी पर आरूढ़ बज्र हाथ में लिये ऐसी प्रतिमा इन्द्रकी बनवावै प्रतिमा जिस प्रकार सुन्दर औ सुलक्षण होय वैसे बनवानी चाहिये॥

एकसौ सत्ताईसवां अध्याय॥

सूर्यनारायण का सर्वदेवमयत्व प्रतिपादन॥

नारदजी कहते हैं कि हे साम्ब इसप्रकार प्रतिमा बनाय ईशान कोणमें चार तोरण पल्लव पुष्पमाला पताका आदिसे अलंकृत अधिवासन मण्डप बनावै काष्ठकी प्रतिमा आयुष् औ धनदेतीहै मृत्तिकाकी प्रतिमा सर्वलोकों का हितकरतीहै मणिमयी प्रतिमा क्षेम औ सुभिक्षकरनेहारीहै सुवर्णकी पुष्टि चांदीकी कीर्त्ति ताम्रकी सन्तान औ

पाषाणकी प्रतिमा भूमिदेतीहै शकुनकरके उपहत प्रतिमा प्रधान पुरुषको मारतीहै इसलिये सर्वदेव मय श्रीसूर्यना-रायणकी प्रतिमा उत्तम शकुनसे बनावै साम्ब पूछतेहैं कि हे नारदजी सूर्य्यनारायण सर्व देवमय क्योंकरहैं यह आप कृपाकर वर्णनकीजिये तब नारदजी कहनेलगे कि हेसाम्ब इस भाँति सूर्य्यनारायण सर्व देवमय हैं कि बुध औ भौम उनकेनेत्रोंमेंस्थितहैं ललाटमेंरुद्र ब्रह्माशिरमें कण्ठमेंविष्णु नक्षत्र औ ग्रह दांतोंमें धर्म औ अधर्म ओष्ठोंमें सरस्वती जिह्वामें दिशा बिदिशा कर्णोंमें ब्रह्मा औ इन्द्र तालुमें बा-रहों आदित्य भ्रूमध्य में सब ऋषि रोमकूपों में समुद्र पेट में यक्ष किन्नर गन्धर्व पिशाच दानव राक्षस ये सब हृदय में नदी बाहुओं में नाग कक्षाओंमें मेरुपर्वत पीठमें धर्म-राज नाभिमें पृथिवी कटिमें सृष्टि लिंगमें अश्विनीकुमार जानुओंमें पर्वत ऊरुओंमें सातपाताल अलकोंमेंबन औ समुद्रों करके युक्त भूमण्डल चरणों में औ कालाग्नि रुद्र सूर्यनारायण के दन्तोंमें स्थित हैं इस प्रकार सूर्यनारायण सर्व देवमयहैं सूर्यनारायण से सब जगत् व्याप्तहै जिसप्र-कार वायु से क्योंकि वायुभी सूर्यनारायण के अङ्गमेंही र-हताहै हे साम्ब यह परमज्ञान हमने तुमको कहा है अब जिस प्रकार ब्रह्माजीने पूर्वकालमें प्रतिमा स्थापन कहाहै वह हम कहते हैं ॥

एकसौ अट्ठाईसवां अध्याय ॥

प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त औ मण्डप बनाने का विधान ॥

नारदजी कहतेहैं कि हेसाम्ब प्रतिपदा द्वितीया चतुर्थी पंचमी दशमी त्रयोदशी पूर्णिमा ये तिथि सोम बुध गुरु

औ शुक्र ये बार औ तीनों उत्तरा रेवती अश्विनी रोहिणी हस्त पुनर्वसु पुष्य श्रवण औ भरणी ये नक्षत्र सूर्यप्रतिष्ठा के लिये उत्तम हैं तुष केश पाषाण अस्थि अंगार आदि शोधनकर दशहाथलम्बाचौड़ा अतिमनोहर मण्डपबनाय उसमें चारहाथकी वेदीरचै नदी संगमसे रेतालाय उसमें बिछावे औ मण्डपको भलीभांति गोबरसे लीपकर पूर्वदिशामें चतुरस्र दक्षिण में अर्द्धचन्द्र पश्चिम में वर्तुल औ उत्तरमें पद्माकार कुण्ड बनावै बड़ पीपल गूलर बिल्व पलास शमी अथवा चन्दनके पांच २ हाथके तोरण बनावै शुक्ल वस्त्र पुष्प माला कुशा आदिसे प्रत्येक तोरण को भूषित कर अग्नि मीले इत्यादि मन्त्र से पूर्वदिशामें तोरण खड़ा करै। अग्नि आयाहि इत्यादि मन्त्रसे दक्षिणा में इषे त्वोर्जेत्वा इत्यादि मन्त्रसे पश्चिममें औ शन्नोदेवी इत्यादि मन्त्र से मण्डपके उत्तरकी ओर तोरण स्थापनकरै स्वच्छ जलसे परिपूर्ण चन्दन वस्त्र औ पुष्प मालाओं से भूषित औ सुवर्णयुक्त कलश आजिघ्र इत्यादि मन्त्रसे स्थापनकरै सुन्दर चित्रवर्णके दुपट्टोंसे मण्डपके स्तम्भ वेष्टितकरै कलशों के ऊपर यव अथवा धानों से भरे मृत्तिकाके शराव रक्खै ध्वजा दर्पण पताका चामर वितान आदिसे मण्डप को अलंकृतकर शंख भेरी घण्टा आदिके शब्द वेदध्वनि औ जय शब्दोंकरके बड़ा उत्सवकरै मण्डपके मध्य भूषित वेदीके ऊपर कुशाबिछाय पुष्पोंसे ढककर प्रतिमाको रक्खै औ मण्डपके आठों दिशाओंमें क्रमसे पीत रक्त नील कृष्ण श्वेतकृष्ण हरी औ चित्रवर्णकी आठपताका दिक्पालोंकी प्रीतिके अर्थ लगावै पंचरंगोंसे वेदीको अलंकृत कर उस

पर पूर्वाग्र औ उत्तराग्र कुशा बिछावै वहां उत्तम बिछौने औ दो तकियों करकेयुक्त एक शय्या भी स्थापन करै औ भांति२के भक्ष्यभोज्य मण्डप में रक्खै एकउत्तम छत्रवहां स्थापनकरै औ विचित्रदीपमालासे मंडपको अलंकृतकरै॥

एकसौ उनतीसवां अध्याय॥

प्रतिष्ठा समय सूर्यके स्नान कराने की विधि व आचार्य के लक्षण॥

नारदजी कहते हैं कि हेसाम्ब अब हम सूर्य्यनारायण के स्नानका विधान कहते हैं वेदपाठी शौच आचारमेंनिष्ठ शास्त्र जाननेहारा औ सूर्य्यनारायण का परम भक्त ब्राह्मण अथवा भोजक स्नानकरावै स्नानगृहमें एक हाथ लम्बा चौड़ा औ ऊंचा पीठ बिछाय हाथी गाड़ी अथवा रथ इन पर प्रतिमा को रख प्रासादसे स्नानगृहमें लाय उस पीठ पर रक्खै रस्तेमें वेदध्वनि औ भांति भांतिके वाजोंके शब्द होते आवैं फिर समुद्र गङ्गा यमुना सरस्वती चन्द्रभागा सिंधु पुष्कर आदि जो तीर्थ नदी सरोवर औ पर्वतोंके झरनेहैं उनका जल लाकर सूर्य्यनारायण को स्नान करावै आठ ब्राह्मण औ आठ भोजक सुवर्णके कलशोंसे स्नान करावैं स्नानके जलमें रत्न सुवर्ण गन्ध सर्वबीज सर्वौषध ब्राह्मी सुवर्चला मोथा बिष्णुक्रांता शतावरि दूर्वा शंखपुष्पी हलदी प्रियंगु इत्यादि सब ओषधी डालै औ कलशोंके मुखपर बड़ पीपल आम्र औ शिरीषके कोमल पल्लव रक्खै इसभांति गायत्री मंत्रसे अभिमंत्रित सोलह कलशों से सूर्य्यनारायणको स्नान करावै सुवर्णके कलश न होयँ तो चांदी तांबे अथवा मृत्तिकाके कलशोंसेही स्नान करावै फिर पक्की ईंटोंसे बनीहुई वेदीकेऊपर कुशाबिछाय उसपर

मूर्त्तिस्थापनकर अभिषेककरै औ अभिषेकके समय ये मंत्र पढ़ै (देवास्त्वामभिषिंचन्तु ब्रह्मविष्णुशिवादयः। व्योमगंगाम्बुपूर्णेनकलशेन सुरोत्तम १ मरुतश्चाभिषिंचन्तु भक्तिमन्तोदिवस्पते। मेघतोयाभिपूर्णेनद्वितीयकलशेनतु२ सारस्वतेनपूर्णेन कलशेनसुरोत्तम। विद्याधराभिषिंचन्तु तृतीयकलशेनतु३ शक्राद्याश्चाभिषिंचन्तु लोकपालाःसुरोत्तम सागरोदकपूर्णेन चतुर्थकलशेनतु ४ वारिणापरिपूर्णेन पद्मरेणुसुगंधिना। पंचमेनाभिषिंचन्तु नागास्त्वांकलशेनतु ५ हिमवद्धेमकूटाद्या अभिषिंचन्तुचाचलाः नैर्झतोदकपूर्णेन षष्ठेनकलशेनतु ६ सर्वतीर्थाम्बुपूर्णेन पद्मरेणु सुगंधिना सप्तमेनाभिषिंचन्तु ऋषयःसप्तखचराः ७ वसवश्चाभिषिंचन्तु कलशेनाष्टमेनवै। अष्टमंगलयुक्तेन देवदेवनमोस्तुते८) ये मंत्र पढ़ वैदिकमंत्रभी पढ़ैसमुद्रंगच्छ। इमंमेगंगेसमुद्रज्योतिः इत्यादि मंत्र पढ़ सिनीवाली इस मंत्र से वल्मीक की मृत्तिका औ शमी उदुंबर पीपल पलाश बड़ इन पांच वृक्षों का कषाय यज्ञायज्ञाति मंत्र करके मूर्त्तिपर चढ़ाय पंचगव्य बनावै गायत्री से गोमूत्र गन्धद्वारा इस मंत्रसे गोबर आप्यायस्व इसमंत्रसे दूध दधि क्राव्ण इस मंत्र से दही तेजोसि इस मंत्र से घृत औ देवस्यत्वा इस मन्त्र से कुशोदक लेकर ताम्र के नये पात्र में पंचगव्य बनाय सूर्यनारायणको स्नान करावै या ओषधी इस मन्त्र से ओषधी स्नान कराय द्विपदा मन्त्रसे उबटना लगावै मानस्तोके इस मन्त्रसे शिरः स्नानकराय विष्णोरराट इस मन्त्र से गन्धयुक्त जलकरके औ जातवेदसे इस मन्त्र से शुद्ध औ छनेहुये नदीके जलसे स्नान करावै औ (एह्येहि

भगवन्भानो लोकानुग्रहकारक। यज्ञभागंप्रगृह्यत्वमर्क देवनमोऽस्तुते) इस मन्त्र से सूर्य्यनारायण का आवाहन कर सुवर्णके पात्रसे इदंविष्णुर्विचक्रमे इस मन्त्रकर सूर्य्य नारायण को अर्घ्य देवै पहिले मृत्तिका के कलशसे पीछे ताम्रकलशसे औ फिर सुवर्ण के कलशसे अभिषेक करै फिर सम्पूर्ण तीर्थोदक औ सर्वौषध करकेयुक्त शंख सूर्य्य-नारायण के मस्तक पर घुमाय उसके जलसे स्नानकरावै पीछे पुष्प औ धूपदेकर क्रमसे जल दूध घृत शहत औ इक्षुरसकरके स्नानकरावै इसरीतिसे जो पुरुष स्नानकरावै वह अग्निष्टोम गोमेध ज्योतिष्टोम वाजपेय राजसूय औ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै जोपुरुष केवल स्नान के समय सूर्यनारायण का दर्शनहीकरै वहभी इनका आधा फलपावै परन्तु ऐसे स्थानमें स्नानकरावै कि स्नानके जल को कोई लंघन न करै औ स्नानके दही दूधको कुत्ता काक आदि निदिन्त जीव भक्षण न करैं इस विधि स्नानकराय आचमस्व यह पद कहकर वर्द्धिनी नामक पात्रसे प्रतिमा के आगे तीन जल धारादेवै फिर वेदोसि इस मन्त्रकरके प्रतिमाको पोंछ बृहस्पते इस मन्त्रसे दो वस्त्र पहिनावै युंजान इस मन्त्र से गोरोचन औ रक्त चन्दन चढ़ाय येन-श्रियं इस मन्त्रसे पुष्पमाला पहिनावै धूरसि इस मन्त्रसे धूपदेवै दीर्घायुष्ट्वाय इसमन्त्र करके आरती करै समिद्धां-जनं इस मन्त्रसे अंजन लगावै इस स्नानके विधान करने केलिये जैसे ब्राह्मण औ भोजकचाहिये उनके हम लक्षण कहते हैं जिसके सब अङ्ग पूरेहोयँ कोई न्यून अधिक न शास्त्र जानताहो सुन्दर कुलीन श्रद्धावान् औ

देशमें उत्पन्न हुवाहो गुरुभक्त जितेन्द्रिय तत्त्ववेत्ता औ सौर शास्त्रका जानने वालाहो इनलक्षणों करकेयुक्त ब्राह्मण सूर्यनारायण का स्नान औ प्रतिष्ठा करावै औ हीनांग अधिकांग वामन अतिकृष्ण अतिगौर चार्वाक दुर्मुखवाचाल शूद्रका शिष्य शूद्रान्नभोजी अशुचि रोगी बालक वृद्ध कुष्ठ योगी काणा दुर्बुद्धि संकीर्णजाति अन्ध खल्वाट विकलेन्द्रिय अविनीत दुरात्मा पंगु नासिका कर्णआदिसे रहित नक्षत्र सूची जीविकाके अर्थ विद्या पढ़ानेवाला जो ब्राह्मण होय उससे कभी प्रतिष्ठा न करावै पहिले परीक्षाकरके आचार्य्य बनाना चाहिये॥

एकसौ तीसवां अध्याय॥

सूर्यनारायणके अधिवासन औ प्रतिष्ठाकरने का विधान औ फल॥

नारदजी कहते हैं कि हे साम्ब अब हम अधिवासन कहते हैं। पवित्र भूमि में लेपन देकर पांच रंगों से बहुत सुन्दर मण्डलरचै औ पताका ध्वज तोरण छत्र पुष्पमाला आदिसे उसको भूषितकर मण्डल में कुशा बिछाय सूर्य्यनारायण की मूर्त्ति वहां स्थापनकर अर्घ्य पाद्य आचमन मधुपर्क धूप दीप आदिसे पूजनकर अव्यंग पहिनावै जिस भांति और देवताओं को पवित्रार्पण होताहै इसी प्रकार प्रतिवर्ष श्रावणमासमें नया अव्यंगबनाय सूर्य्यनारायण को अर्पणकरै उनका यही पवित्रकहै नयाअव्यंग समर्पण करनेके समय ब्राह्मण भोजन भी करावै प्रतिमाको सुगन्ध द्रव्योंसे लेपनकर पुष्पमाला चढ़ाय शम्भवाय इसमन्त्रसे शय्याके ऊपर शयनकराय विश्वतश्चक्षुः इस मन्त्रकरके सकलीकरणकरै जोन्यास अपनेदेहमेंकरै वही प्रतिमामेंभी

करै इसकोसकलीकरणकहते हैं। ओंहंखंखखोल्कायस्वाहा यह मूलमंत्रहै इसमें त्र्यक्षरमंत्रमिलानेसेसाक्षात्सूर्यस्वरूप द्वादशाक्षर मन्त्रहोताहै इसकेवर्णोंको क्रमसे मस्तक नासिका ललाट उदर कण्ठ हृदय दक्षिणभुज बामभुज औ कुक्षि इन नौअङ्गोंमें न्यासकरै। ह्रांह्रींसः यह त्र्यक्षरमन्त्रहै इसके मिलनेसे द्वादशाक्षरमन्त्रहोताहै क्रमसे इनबारहवर्णोंके ये रंगहैं अग्निवर्ण शुभ्रवर्ण अंजनवर्ण तरुणादित्यवर्ण सुवर्ण वर्ण श्वेतपद्मके समानवर्ण चमेलीके पुष्पकेतुल्य वर्ण हिम अथवा कुन्द पुष्पके सदृशवर्ण अमृतवर्ण विद्युत्वर्ण पीत वर्ण औ क्षीरवर्ण इन वर्णों का इसप्रकार ध्यानकर सूर्य्यनारायणकी प्रतिमाको शय्याके ऊपर शयनकराय हवनकरै सूर्य्यकान्तिमणिसे अथवा अरणीसे अग्निउत्पन्नकरकुंडों में स्थापन करै फिर पूर्वके कुण्ड में वह्वृच दक्षिण के में माध्यन्दिन उत्तर केमें आश्वलायन पश्चिममें कठशाखाध्यायी औ मध्यके कुण्ड में भोजक हवनकरै शमी पलाश उदुम्बर औ अपामार्गकी समिधाओंसे हवनकरै अग्निमूर्द्धा इस मंत्र से कुण्डका प्रोक्षण आदि करै अग्निरुत इत्यादि मन्त्रसे अग्निका गर्भाधान संस्कारकर मूलमन्त्र से एकसहस्र आहुति दे सीमन्त औ पुंसवन करै प्राणाय स्वाहा इस मन्त्रसे जातकर्मनमःस्वाहा इस मन्त्र से नाम कर्म ब्रह्मयज्ञं इस मन्त्रसे निष्क्रमण अन्नप्राशन मन्त्र से अन्नप्राशन ज्येष्ठमग्ने इस मन्त्र से चौड़व्रत मन्त्र करके व्रतबन्धआकृष्णेन इस मन्त्रसे समावर्त्तन औ पत्नीपंच इस मन्त्रसे अग्नि का बिवाह नामक संस्कार करै औ प्रत्येक संस्कारमें महाव्याहृतियोंसे आहुतिदेवै औ हवनके

में सब देवताओं को बलि देवै इस भांति पांच दिन तीन दिन अथवा एकही रात्रि प्रतिमाका अधिवासनकरै देवागारके ईशानकोणमें उत्तम स्थानकेबीच कुशाबिछाय वहां शय्यारक्खै दहिनेभाग में निक्षुभा वामभाग में राज्ञी औ पादों के समीप दण्डनायक औ पिंगलको महाश्वेता मन्त्र से स्थापनकरै उस रात्रिमें सूर्य्यनारायणके समीप जागरण करै बन्दी चारण आदि स्तुतिपढ़ें गीत नृत्यआदि उत्सव होतारहै प्रभात होतेही प्रतिमाको बोधनकरै औ ब्राह्मण तथा भोजकोंको हविष्यअन्न भोजनकराय दक्षिणादे प्रसन्न करै फिर मन्दिरके गर्भ गृहमें पिंडिकाके ऊपर सातअश्वों करके युक्त सुवर्ण का रथ स्थापन कर सूर्य्यनारायण को अर्घ्यदे उत्तममुहूर्त्त औ स्थिरलग्नमें प्रतिमा स्थापनकरै प्रतिमाका मुख नीचे अथवा ऊपरको न होजाय सीधारहै सूर्यनारायणकीप्रतिमाकेदहिने औबायेंराज्ञी औनिक्षुभाकी प्रतिमा स्थापनकरै फिर मोदक पायस उत्लापिका शष्कुली आदिसे दश दिक्पालोंको क्रमसे इनमन्त्रोंकरके बलिदेवै इन्द्रायदेवपतये वलिनेवज्रधारिणे। शतयज्ञाधिपेतस्मै पूर्वे इन्द्रायवैनमः १ अग्नयेरक्तनेत्राय ज्वालामालार्चितायच। शक्तिहस्तायतीब्राय नमोवैकृष्णवर्त्मने २ दण्डहस्तायकृष्णाय महिषध्वजवाहिने। सूर्य्यपुत्रायदेवाय धर्मराजायवैनमः ३ नैऋत्योखड्गहस्ताय नीललोहितकायच। सर्व्वरक्षोधिपायेह विरूपायनमोनमः ४ वारुण्यांपाशहस्ताय झषारूढासितायच। निम्नगापतयेवीर वरुणायचवैनमः ५ प्राणात्मकायधूम्राय शशागायानिलायच। ध्वजहस्तायभीमाय नमोगन्धवहायच ६ गदाहस्तायसोमाय शुष्मिणेन

गतायच। गारुत्मतप्रभायाथ सोमराजायवैनमः ७ गणा
धिपतयेदेव नीलकण्ठायशूलिने। विरूपाक्षायरुद्राय त्रैलो
क्यपतयेनमः ८ सर्वनागाधिराजाय श्वेतवर्णायभोगिने।
सहस्रशिरसेनित्यमनन्तायनमोनमः ९ चतुर्मुखायदेवाय
पद्मासनगतायच। कृष्णाजिननिषङ्गाय नमोलम्बोदराय
च १० इन मन्त्रोंसे दशदिक्पालों को बलिदेकर सूर्य्यना-
रायणका पूजनकरै पीछे ब्राह्मण औ भोजकोंको भोजनकरा-
यदक्षिणादेवै दक्षिणा दियेबिना यह सूर्य्यनारायणका यज्ञ
सफल नहींहोता इसविधिसे जो प्रतिमा स्थापनकरीजाय
वह देशकी वृद्धि करनेवाली होतीहै औ उसमें सदा सूर्य्य-
नारायणका सांनिध्य रहताहै चारोंवर्णोंमें जो सूर्य्यनारायण
का स्थापन करै वह संसार से मुक्ति पाताहै जे पुरुषभक्ति
से सूर्य्यनारायण का अधिवासन देखैं वे सात जन्म तक
आरोग्य होतेहैं जो तीनदिन उत्सवमें रहैं औ गन्ध पुष्प
आदिसे सूर्य्यनारायण का पूजनकरैं वे सूर्य्यलोकको जाते
हैं प्रतिष्ठा को जो भक्तिसे देखै वह गोलोक में निवासकरै
सूर्यनारायण की प्रतिमा स्थापन करने से दश अश्वमेध
औ सौ वाजपेय का फल प्राप्तहोता है। ध्रुवाद्योश्चध्रुवा
भूमिर्ध्रुवंविश्वमिदंजगत्। ध्रुवसेयजमानस्य तथात्वंध्रुव
तांव्रज॥ इस मन्त्रसे प्रतिमा स्थापनकरै सूर्यनारायणके
पूजनसे जो फल मिलता है वह सौ यज्ञ करने करके भी
नहीं प्राप्तहोता जो पुरुष जन्मभर पाप करतारहै औ अन्त
में सूर्यनारायणके आराधनमें तत्पर होजाय वह सबपापों
से छूट सूर्यलोकमें निवासकरता है मन्दिरकी ईंट जबतक
चूर्ण होयँ तब तक मन्दिर बनाने वाला पुरुष

भोगता है औ प्राचीन मन्दिर का उद्धार करने से इससे भी अधिक फल प्राप्त होताहै जो पुरुष उत्तम मन्दिर बनाय बिधिसे प्रतिमा स्थापन करै वह संसारके सब सुख भोग सौ कल्प पर्यंत गोलोकमें निवासकरै॥

एकसौ इकतीसवां अध्याय॥

सब देवताओं की प्रतिष्ठा का साधारण बिधान औ फल॥

नारदजी कहते हैं कि हे साम्ब जो पुरुष देवताओं के प्रासाद बनाते हैं उनको परलोक में तो उत्तमफल मिलताही है परन्तु इस लोकमें भी उनकी कीर्ति सर्वत्र व्याप्त होजाती है यहहमने सूर्य्यनारायण की प्रतिष्ठा का बिधान कहाहै अब हम सर्वदेव प्रतिष्ठा की साधारण बिधि कहतेहैं। प्रतिमाको पहिले स्नान कराय उत्तम बस्त्र पहिनाय गन्ध पुष्प आदिसे पूजनकर उत्तम शय्याके ऊपर सुला देवे औ उसरात्रिमें नृत्य गीत आदि उत्सवसे जागरणकरे दूसरे दिन पूजनकर मन्दिरकी प्रदक्षिणा कराय शुभ लग्न में पिण्डिकाके ऊपर प्रतिमाको स्थापनकरै फिर देवताओं को बलिदेकर ब्राह्मण भोजनकरावै पीछेस्थापन करनेवाले आचार्य ज्योतिषी औ स्थपति अर्थात्कारीगर इनको भूषण वस्त्र देकर सन्तुष्ट करै इस बिधिसे देवप्रतिष्ठा करने वाला पुरुष दोनोंलोकों में सुखी होताहै बिष्णुके भागवत सूर्यके मग अर्थात् भोजक शिवजीके भस्म रुद्राक्ष धारने वाले ब्राह्मणमातृकाओंके मातृशासन जाननेहारे ब्रह्माके वैदिकब्राह्मण जिनकेश्वेताम्बर बुद्धकेरक्ताम्बरइत्यादिऔर भी जो जिस देवताके भक्तहोवें उसकी प्रतिष्ठाकरावें। यह सामान्यप्रतिष्ठा बिधानहमने कहाहै इसको जो बिधिसेकरै

अथवा देखै वह सब मनोवांछित फलपाय ब्रह्मलोकको जावै सूर्यनारायण का भक्तिसे स्थापनकर उनके आगे पुराणकी कथाकहवावे औ भलीभांतिसे स्थापक अर्थात् आचार्य्य औ पौराणिक का वस्त्र भूषण आदिसे पूजनकरै और देवताओंके मंदिरोंमें भी पुराण बांचनेका बहुत फलहै पुराण कथासुन सब देवता प्रसन्न होते हैं ॥

एकसौ बत्तीसवां अध्याय ॥

ध्वजारोपण का विधान औ फल ॥

नारदजी कहते हैं कि हे साम्ब हम अब ध्वजारोपणका विधान कहते हैं जो ब्रह्माजीने कहाहै। पूर्वकालमें देवता औ असुरों का घोर संग्राम हुआ उसमें देवताओं ने अपने २ रथोंके ऊपर चिह्न कल्पनाकिये वेही ध्वजहैं लक्ष्म चिह्न ध्वज केतु इत्यादि ध्वजके नामहैं अब ध्वजका लक्षण कहते हैं प्रासादका जितना व्यासहोय उतना लम्बा सीधा औ व्रणरहित ध्वजाका बांस चाहिये अथवा चार आठ दश सोलह यद्वा बीसहाथ लम्बा ध्वजदंड होय बीस हाथसे अधिक न होय पांच सात आदि विषम हस्तका न होय चार अंगुल उसकी मोटाईहोय बहुत मोटा अथवा बहुत पतला न होय औ दृढ़भीहोय टेढ़ाहोयतो पुत्रनाश व्रणयुक्त होय तो धननाश बिषम हस्तहोय तो रोग प्राप्ति औ प्रमाणसे अधिक लम्बा ध्वजाका बांस होय तो सब प्रकार की हानि करै दो हाथके बांसकी संज्ञा जयहै चार हाथका बांस जयंत कहाताहै छःहाथका जैत्र आठ हाथ का शत्रुहंता दशहाथका जयावह बारह हाथका नन्द चौदह हाथका उपनन्द सोलहहाथका इन्द्र अठारह हाथका

उपेंद्र औ बीस हाथका बांस आनन्दकहाताहै ये दशभेद बांसके हैं ध्वज दंडमें लटकती हुई पताका बनावै वह पताका दश प्रकार की होतीहै अंगुर पल्लव स्कन्ध शाखा पताका कदली केतु लक्ष्मी जय औ ध्वज ये उनकेनामहैं अब इनके लक्षण कहतेहैं दो अंगुलकी पताका अंगुरचार अंगुलकी पल्लव छः अंगुलकी स्कंध आठअंगुलकीशाखा ग्यारह अंगुल की पताका चौदहअंगुलकी कदली सोलह अंगुलकीकेतु अठारहअंगुलकी लक्ष्मी बीसअंगुलकीजय औ चौबीस अंगुलकी पताका ध्वज कहाती है देवागारके पहिले कलशतक मार्जनकरै वह पताका अंगुरा कहातीहै दूसरे कलश तक पहुंचे वह पल्लव औ मन्दिर के तृतीय भाग पर्यंत मार्जनकरै वह स्कन्ध नामक पताका होती है गज मेष महिष कबन्ध वृषहरिण बृक औ नग ये आठ भूमिमें छोड़ेहुये ध्वजके स्थानहैं पूर्व आदि दिशाओं में ध्वजकी कल्पनाकरै शुक्ल बस्त्रकी चित्रवर्ण औ मनोहर पताका बनावै औ ध्वजकेऊपर देवताके सूचनकरनेहारा चिह्न सुवर्ण अथवा चांदीका बनावै बिष्णुके ध्वजपर गरुड़ शिवजीकेध्वजपरवृष ब्रह्माजीके पद्म सूर्यके ब्योम इन्द्र केहस्ती दुर्गाके सिंह महादेवीके गोधा रेवंतके अश्वबरुण के कच्छप वायुके हरिण अग्निके मेष औ गणपतिके ध्वज के ऊपर कक्षाका चिह्न बनावै जिस देवका जो बाहनहोय वही ध्वजपर बनावै बिष्णुके ध्वजका दंड सुबर्णका औ पताका पीतबर्णकी होनीचाहिये शिवका ध्वज दंड चांदीका औ वृषके समीप श्वेतबर्ण की पताका ब्रह्माका ध्वजदंड तांबेका औ कमलकेसमीप पद्मबर्णा पताका सूर्य्यनारायण

के सुवर्ण का ध्वजदण्ड औ व्योम के नीचे पञ्चरंगी प-
ताका जिसमें किंकिणी लगीहोयँ इन्द्रके सुवर्ण का ध्वज
दंड औ हस्तीके समीप अनेकबर्णकी पताका यमकेलोह
का ध्वजदंड औ महिषके समीप कृष्णबर्ण की पताका न-
भोधिपतिके चांदीका ध्वजदंड औ हंसके समीप शुक्लबर्ण
की पताका कुबेरके मणिमय ध्वजदण्ड औ मनुष्य पादके
समीप रक्तबर्ण की पताका बलदेवके चांदी का ध्वजदण्ड
औ तालबृक्षके नीचे श्वेतबर्ण पताका कामदेवके ध्वज में
त्रिलोह का दण्ड औ मकरके समीप रक्तबर्ण की पताका
कार्तिकेय के त्रिलोहका ध्वजदण्ड औ मयूरके समीप चि-
त्रबर्ण पताका गणपतिकेताम्रका ध्वजदण्ड औ हस्तिदन्त
तथा कक्षके समीप शुक्लवर्णकी पताका मातृकाओं के पी-
तलकाध्वजदंड औ अनेकबर्णकी बहुतसीपताका रेवन्तके
पीतलका ध्वजदण्ड औ अश्वकेसमीप रक्तवर्णकीपताका
चामुण्डाके लोहकाध्वजदण्ड औ मुण्डमालाकेसमीप नील
वर्ण का ध्वज गौरीके ताम्रका ध्वजदण्ड औ इन्द्रगोप के
समान अति रक्तबर्णपताका अग्निकेसुवर्णकादंड औ मेष
के समीप अनेकबर्णकी पताका वायुके लोहका दण्ड औ
हरिण के समीप कृष्णवर्णकी पताका औ भगवतीके ध्वज
का दण्ड सर्व धातुमय बनाय उसके ऊपर सिंहके समीप
तीनरंगकी पताकाचढ़ावै इसरीतिसे पहिले ध्वज बनाकर
उसका अधिवासन करै लक्षण युक्त वेदी बनाय कलश
स्थापन कर सर्व्वौषध जलसे ध्वज को स्नानकराय वेदीके
मध्यमें खड़ाकर सबउपचारोंसे उसकापूजनकर पुष्पमाला
पहिनाय दिग्पालोंको बलिदेकर एकरात्रि अधिवासनकरै

दूसरेदिन ब्राह्मण भोजनकराय शुभमुहूर्त्तमें स्वस्तिवाचन आदि मंगल कर्मकर ध्वजको मन्दिरके ऊपर चढ़ावै उस समय अनेक प्रकारके बाजे बजैं औ ब्राह्मण वेदध्वनिकरैं इसप्रकारसे जो ध्वजचढ़ावै उसकी सम्पत्ति नित्यबढ़तीहै जिस मन्दिरपर ध्वज न होय उस मन्दिरमें असुर निवास करते हैं इसलिये ध्वजहीन मन्दिर न रक्खै ध्वजके चढ़ाने के समय यह मन्त्र पढ़ै। ओंएह्येहि भगवन्देवदेवेशखगवाहन। श्रीकरश्रीनिवासेश जैत्रजैत्रोपशोभित १ व्योमरूप महारूपधर्मात्मंस्त्वंचतुर्गते। सान्निध्यं कुरुदण्डेस्मिन्साक्षीवध्रुवतांव्रज २ कुरुवृद्धिंसदाकर्तुः प्रासादस्यार्कवल्लभ। ओं एह्येहिभगवन्ईश्वरविनिर्मित उपरिचर वायुमार्गानुसारिन् श्रीनिवासरिपुध्वंसक पक्षिनिलयसर्वदेवप्रियसर्वदाशांतिस्वस्त्ययनंकुरु सर्वविघ्नान्यपहर सान्निध्यंकुरुनमः। इस मन्त्रसे ध्वजदण्डको छिद्रमेंप्रवेशकरै औ पूर्व्वाभिमुखहोकर दण्डके ऊपर पताका चढ़ावै चढ़ातेही वह पताकाजिस दिशाको लटकै उसी दिशाके स्वामिके लोकमें ध्वजारोपण करने वाला पुरुष आनन्दपूर्वक चिरकाल पर्यंत निवास करै ध्वजारोपण करनेसे सब मनोरथ सिद्धहोतेहैं औअन्त में सूर्यलोक की प्राप्तिहोती है॥

एकसौ तेंतीसवां अध्याय॥

नारदजी की आज्ञासे साम्बका गौरमुखके समीप गमन देवलककी निंदा मगोंकी उत्पत्ति शाकद्वीपसे मगों का लाना॥

साम्ब कहते हैं कि हेनारदजी आपके अनुग्रहसे सूर्यनारायण का मुझे प्रत्यक्ष दर्शन हुआ औ उत्तम रूपभी पाया परन्तु एक चिन्ता मुझे बहुत है कि इस मूर्त्ति का

पूजन औ रक्षा कौनकरैगा यह आप मुझे बतावैं जिससे मेरी चिन्ता निवृत्त होय यह सुन नारदजी ने कहा कि हे साम्ब ब्राह्मण तो कोई इस कामको स्वीकार न करैगा क्योंकि जो ब्राह्मण देवधनसे अपना निर्वाह करते हैं वेदेवल कहाते हैं औ शूद्रकी भांति पंक्तिबाह्यहोते हैं औ देवधनसे कोई ब्राह्मीक्रिया नहीं होसक्ती जो पुरुष देवधन औ ब्राह्मण धनको लोभसे ग्रहणकरते हैं वे नरकमें पड़ते हैं औ वहां उनको गृध्रोंका उच्छिष्टभोजन मिलताहै इसलिये कोई ब्राह्मणदेवताका पूजकनहीं बननाचाहता अब तुम सूर्यनारायणसेही पूछो कि जो उनका पूजन विधि से कियाकरै अथवा उग्रसेन राजाके पुरोहितसे कहो जो कदाचित् इस कामको स्वीकार करें यह नारदजीका वाक्य सुन साम्ब उग्रसेनके पुरोहित गौरमुखके घरगये गौरमुख भी स्नान सन्ध्याकर अपने घरमें स्वस्थ बैठेथे साम्ब ने प्रणामकर अपना अभिप्राय उनसे प्रकट किया कि महाराज मैंने एक सूर्य्यनारायण का प्रासाद बनाया है उसमें पत्नी सहित सूर्य्यनारायण की प्रतिमा स्थापन करीहै औ अपने नामसे नगर बसायाहै अब मेरी यह प्रार्थनाहै कि आप इस सबको ग्रहण करैं यहसाम्बका बचनसुन गौरमुख बोले कि हे साम्ब हम ब्राह्मणहैं औ आप राजा हो जो यह प्रतिग्रह हम आपसे ग्रहणकरैं तो हमारा ब्राह्मणत्व नष्टहोजाय औ शूद्रके तुल्य देवलक बनजायँ जन्मान्तर में राक्षस बनैं औ तुमको भी केवल पापही प्राप्तहोय देवलक जिस पंक्तिमें बैठ भोजन करै वह पंक्ति अपवित्र होजातीहै औ कृच्छ्रचान्द्रायण कियेविना शुद्ध नहींहोती

देवलक जिसके यज्ञोपवीत आदि संस्कारकरै उसके पितर अधोगतिको प्राप्तहोते हैं और सब प्रतिग्रह तो ब्राह्मण ग्रहणकरते हैं परन्तु देवप्रतिग्रह ब्राह्मणको कभी न लेना चाहिये साम्बने कहा कि महाराज कोईब्राह्मण इसको स्वीकार न करैगा तो फिर मैं किसको यहदानदेकर अपनीचिंता निवृत्तकरूं औ सूर्य्यनारायणका पूजन कौन करै यह सुन गौरमुखने कहा कि हे साम्ब यह दान तुम मगकोदो वही देवपूजाका अधिकारीहै तब साम्बने पूछा कि महाराज मग कौन है कहां रहताहै किसका पुत्रहै औ इसका क्या आचार है यह आप कृपाकर कथनकरैं तब गौरमुख कहने लगे कि हे साम्ब मग सूर्य्यनारायण का पुत्रहै एकसमय निक्षुभा को शापभया तब ऋजिह्व नाम ऋषि की कन्या हो निक्षुभाने जन्मलिया वहअपने घरमें पिताकी आज्ञा से अग्निकी सेवा किया करती एक दिन उसको सूर्य्यनारायणने देखा उसका उत्तमरूप औ यौवन देख सूर्य्यनारायण कामबश होगये औ बिचारकर अग्निमें प्रवेश किया वह कन्या अग्निकी प्रदक्षिणा करतीथी उससमय अग्नि से प्रकटहो सूर्य्यनारायणने उस कन्या का हाथपकड़लिया औ क्रोधकर कहाकितैंनेहमको उल्लंघनाकिया यह वेदकी बिधिनहींहै अब हम तेरे में पुत्र उत्पन्न करैंगे इतनाकह उसमें जलगंडनामक पुत्र उत्पन्नकियामग अग्निजातिके द्विजातिसोमजातिके औ भोजक आदित्यजातिके हैं मगों का मिहिर गोत्र औ ब्रह्मव्रतहै उसमें पुत्र उत्पन्नकर सूर्यनारायण अंतर्द्धान भये यह बात ऋजिह्व मुनिने जानी तब अपनी कन्याको शापदिया कि तैंने अपनी चंचलता

से पुत्र उत्पन्न किया इसलिये यह अपूज्यहोगा यह पिता का शापसुन बहुतव्याकुल भई औ अग्निरूप सूर्य्यनारायणका स्मरण किया स्मरणकरतेही सूर्य्यनारायण प्रत्यक्ष भये तब उनसे कहा कि महाराज इस आपके पुत्रको मेरे पिताने शापदेदियाहै कि यह अपूज्यहोगा अब आप ऐसा अनुग्रहकरैं कि यह पूज्यहोय तब गंभीरबाणीसे सूर्य्यभगवान् बोले कि हे प्रिये तुम्हारा पिताबड़ा तपस्वी है इसलिये उनका शाप अन्यथा नहीं होसकता परन्तु तुम्हारे पुत्रके बंशमें वेदपढ़ैंगे औ हमारे परमभक्तहोंगे सदा हमारा औ तुम्हारा पूजनकरैंगे मग इनकी संज्ञाहोगी ये सब महात्मा ब्रह्मवादी बेदके तत्त्वको जाननेवाले औ हमारे ध्यान में परायणहोंगे दाढ़ी औ अव्यंगसदा धारणकरैंगेजो मग बिधिसे हीन मंत्रबर्जित औ श्रद्धा बिनाभी हमारा पूजन करैंगे वेभी हमारे लोकमें निवासकरैंगे ये हमारे बंशके मग महात्मा औ वेदवेदांगों के पारगामी होंगे इसप्रकार अपनी प्रियाको आश्वासनकर सूर्य्यभगवान् अन्तर्द्धान भये औ निक्षुभाभी परमहर्षको प्राप्तभई हे साम्ब इसप्रकार येमग सूर्य्यनारायणसे निक्षुभामें उत्पन्नभयेहैं वेहीइस प्रतिग्रह को ग्रहणकर सूर्य्यनारायण का पूजनकरैंगे यह गौरमुखका वाक्य सुन साम्बने पूछा कि महाराज वे कहां रहतेहैं आपमुझे बतावें तो मैं अभी उनको लेआऊं तब गौरमुखने कहा कि यह तो हमकोभी ज्ञाननहीं कि वे किस द्वीपमें बसते हैं यह बात सूर्य्यनारायणही जानते हैं इसलिये तुम उनके शरणमें प्राप्तहो यह गौरमुखका वचनसुन सूर्य्यनारायण की प्रतिमासे साम्बनेप्रार्थनाकरी कि महा-

राज आपका पूजनकौन करेगा यह आपकृपाकरकहैं तब प्रतिमा बोली कि हे साम्ब जंबूद्वीपमें तो कोई हमारे पूजनका अधिकारी है नहीं शाकद्वीपसे हमारे पूजन करनेके अर्थ मगोंको लाओ जंबूद्वीपके अनन्तर शाकद्वीपहै उसमें भी चारवर्णबसतेहैं मग मगस मानस औ मन्दगइनमें मग ब्राह्मणों के तुल्य मगस क्षत्रियोंके सदृश मानस बैश्यों के समान औ मन्दग शूद्र सरीखे हैं इनमें किसी प्रकारका संकरनहीं है सबसुख पूर्वक अलग २ बसते हैं वे बिश्वकर्मा ने हमारे तेजसेरचे हैं उनको सरहस्य वेद हमने पढ़ायेहैं औ बेदोक्त बिधानसे वे हमाराही आराधन करते हैं सदा अव्यंग धारेरहते औ सिद्ध गन्धर्वआदि कभी उसद्वीपमें आय उनकेसाथ क्रीड़ाकरतेहैं जंबूद्वीपमें हम बिष्णुरूपसे पूजेजातेहैं शाल्मलिद्वीपमें शक्ररूपसे क्रौंचद्वीपमें भगरूपसे प्लक्षद्वीपमें भानुरूपसे शाकद्वीपमें दिवाकररूपसे पुष्करद्वीपमें ब्रह्माके रूपसे औ कुशद्वीपमें महेश्वर रूपसे हमारा पूजन होताहै हे साम्ब अब तुम गरुड़पर चढ़ शाकद्वीपमें जाओ औ हमारे पूजनकेलिये शीघ्र मगोंको लेआओ यह सूर्यनारायणकी आज्ञापाय द्वारकामेंजाय साम्बने सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनेपिता श्रीकृष्णचन्द्रसेकहा औ उनकी आज्ञा से गरुड़के ऊपरचढ़ शीघ्रही शाकद्वीपमें जायपहुँचा वहां देखा कि बड़ेतेजस्वी महात्मा मग सूर्य्यनारायणके आराधनमें तत्पर हैं साम्ब ने उनको प्रणामकर प्रदक्षिणाकरी औ कुशलप्रश्नके अनन्तर उनसे कहा कि आपसबधन्य हैं जो निरन्तर सूर्य्यनारायण की सेवा में आसक्त हैं श्रीकृष्णभगवानूका मैं पुत्रहूँ साम्ब मेरानामहै औ मैंनेचन्द्र-

भागा नदी के तटपर सूर्य्यनारायण की प्रतिमा स्थापन करी है औ सूर्य्यनारायण की आज्ञासेही उनके पूजनके अर्थ आपको जम्बूद्वीपमें लेजाने के लिये यहां आया हूँ मेरी यह प्रार्थनाहै कि आप कृपाकर जम्बूद्वीपमेंचलैं यह साम्ब का बचन सुन मगोंने कहा कि हे साम्ब यह बात हमको सूर्य्यनारायण ने पहिलेही कहदी है यहां मगों के अठारह कुलहैं वे तुम्हारे साथ जायँगे यह सुन साम्ब बहुत प्रसन्नभया औ उन अठारहकुलोंके कुमारोंको गरुड़ पर बैठाय वहांसेचला औ मित्रबनमेंपहुँचा सूर्यनारायण भी मगों को देख बहुत प्रसन्नभये औ साम्बसे कहा कि अब ये हमारा पूजनकियाकरैंगे तुमकुछ चिंतामतकरना ॥

एकसौ चौतीसवां अध्याय ॥

मगोंके ज्ञानका वर्णन औ उनके बिवाहों का कथन ॥

सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हे राजा इसप्रकार शाकद्वीपसे भोजकोंको लाय धनधान्यसेपूर्ण वह साम्बपुर उनअठारह कुलोंको देदिया औ वे सबभी सूर्य्यनारायणकी शुश्रूषामें प्रवृत्तभये साम्बभी सूर्यनारायणको औ मगों को प्रणाम कर अति हर्षित हो द्वारकामें आया औ भोज़वंशियों से मगों के लिये कन्याओं की याचना करी भोजवंशियों ने अपनी २ कन्या अलंकृत कर साम्ब को दीं साम्ब ने वे सब कन्या सूर्यनारायण के मन्दिर में भेजदीं औ आपभी वहां जाय सूर्यनारायण से पूछा कि मगोंका क्या ज्ञान है यह आप मुझेबतावैं तब सूर्य्यनारायणने कहा कि हे सांब नारदमुनि से पूछो वे कहैंगे सूर्य्यनारायण की आज्ञा पाय नारदजीके पास जाय साम्बने सब वृत्तान्त कहा नारदजी

बोले कि हे साम्ब हमतो मगोंका ज्ञान नहीं जानते परन्तु व्यासजीसे तुम पूछो वे तुमसे सब ज्ञान कहदेंगे यह सुन साम्ब वेदव्यासजी के आश्रममें गया औ प्रणामकर उन से प्रार्थना करी कि महाराज शाकद्वीप से अठारह मगोंके कुमार मैं लायाहूँ औ वे सब सूर्यनारायणका अर्चन करते हैं परन्तु मुझे बहुत संशय है कि ये सूर्यभगवान्के पूजक क्योंभये मग और भोजकमें क्या भेदहै इनका ज्ञान क्या है मौनव्रत इनके लिये क्यों है ये वर्चार्च क्यों कहाते हैं अव्यंग क्या वस्तु है जिसको मगधारते हैं वेद कैसे पढ़ते हैं यज्ञ किसविधि करते हैं पंचबेला इनकी कौनहै यह सब आप वर्णनकरैं जिससे मेरा सन्देह निवृत्तहोय यह साम्ब का बचन सुन वेदव्यासजी कहने लगे कि हे साम्ब यह बात है तो दुर्ज्ञेय परन्तु सूर्यनारायण के अनुग्रहसे हमारे स्मरणमें आगई इसलिये हम वर्णन करतेहैं ये सब ज्ञानी होके कर्मयोगमें प्रवृत्तहो रहे हैं विपर्यस्त वेदसे सूर्यनारायणको गाते हैं इसलिये इनकी संज्ञा मगहै ब्रह्माजी पवन औ बड़े २ तपस्वी ऋषि कूर्च अर्थात् दाढ़ी रखते हैं इस लिये मगभी सदा कूर्च धारण करते हैं सब मुनि मौन से भोजन करते हैं औ ये मगभी शाकद्वीपके मुनिहैं इसलिये मौनसे ये भी भोजन करतेहैं वर्चनाम सूर्यकाहै उनका अर्चन करनेसे ये वर्चार्चकहाये भोजकन्याओंमें उत्पन्न होने से भोजक कहावेंगे ब्राह्मणोंके लिये ऋग्वेद यजुर्वेद साम वेद औ अथर्वणवेद ब्रह्माजीने कहे येहीचारों वेद विपरीत कर वद विश्ववद वीवद औ आंगिरस इन नामों से मगों केलिये कहेहैं इनके पढ़नेसे मगवेदवेत्ता कहाये शेष नामक

महानाग सब लोकोंके सुखके अर्थ सूर्य्य रथमेंबैठ किरणों के साथ वर्षताहै उसका निर्मोक अर्थात् कंचुक सूर्यनारायण धारते हैं उसकी संज्ञा अमाहक औ अव्यंग हैं यज्ञोपवीतके समय ब्राह्मण यज्ञोपवीत धारतेहैं उससमयमगों को अमाहक धारना चाहिये ब्राह्मणोंकेलिये जिस प्रकार गायत्री है उसी विधि मगों के लिये महाव्याहृति पूर्वक आदित्य मन्त्रहै अमाहकके बिना कभी मग भोजन न करैं औ मृतक शरीर तथा रजस्वला स्त्री को स्पर्शभी न करैं जिसप्रकार वेदोक्त विधिसे सौत्रामणी आदि यज्ञों में ब्राह्मण सुरापान करते हैं इसीभांति मगभी मन्त्रोंसे संस्कार कियेहुये मद्यको हविमानकर पानकरते हैं औ ब्राह्मणोंके तुल्य यज्ञ अग्निहोत्र आदि कर्म करते हैं औ इन को भी सबविधि निषेध ब्राह्मणों के तुल्यही हैं दो बेर दण्डनायक को औ तीनों सन्ध्याओं में सूर्य्यनारायण को धूप देना चाहिये ये पांच धूपके काल हैं ॥

एकसौ पैंतीसवां अध्याय ॥

मगों के विवाह औ सन्तान का वर्णन ॥

साम्ब कहते हैं कि हे वेदव्यासजी मैंने अपने समीप बैठाय उन भोजककुमारों को कहा कि तुम अपना वृत्त कहो तब उनमें से एक बुद्धिमान् कुमार कहनेलगा कि हे साम्ब येअठारह कुमार तुम लायेहो इनमें दश तो मग हैं बाकी आठ मन्दग अर्थात् शूद्रहैं यहसुन मैंने मगोंके दश कुमारों को तो दश भोजकन्यादीं औ मन्दगों को आठ कन्या शकोंकी ब्याहीं औ उनको उस नगर में सुखपूर्वक बसाया उनमें मगोंके पुत्र जो भोजकन्याओंमें उत्पन्नभये

वे भोजक कहाये औ ब्राह्मणों के समानभये औ मन्दगों के पुत्र जो शक कन्याओंमें जन्मे मन्दगही रहे परन्तु सूर्यनारायणके परिचारक येभी भये वे सबमग अव्यंगधारते हैं इतनाकह साम्बने पूछा कि हेव्यासजी यहअव्यंग क्या पदार्थहै क्योंकर बनताहै औ इसके धारणसे क्या फलहै यह आप कृपाकर वर्णनकरैं सुमन्तुमुनि कहतेहैं कि हेराजा यह साम्ब का वचनसुन व्यासजी बोले कि हे साम्ब हम अव्यंगका लक्षण कहते हैं तुम प्रीतिसे सुनो ॥

एकसौ छत्तीसवां अध्याय ॥

अव्यंग का लक्षण औ माहात्म्य ॥

व्यासजीकहते हैं कि हे साम्ब देवता ऋषि नाग गंधर्व अप्सरा यक्ष औ राक्षस ऋतु क्रमसे सूर्यनारायणके रथके साथ रहते हैं वासुकि नाम नागसे वह रथबँधाहै एकसमय वासुकिका कंचुक उतरकर गिरा उसको अरुणने उठाकर सूर्यनारायण को निवेदन किया सूर्यनारायण ने भी अति सुन्दर वासुकिका कंचुक देख सुवर्ण औ रत्नों से शोभित कर अपने मध्यभाग में धारण किया औ अपने भक्तों को भी धारणकरनेकी आज्ञादी उसदिनसे सूर्य पूजक उसका अनुकरण अव्यंग बनाय धारनेलगे उसके धारण से भोजक पवित्र होजाताहै औ उसपर सूर्यनारायण का अनुग्रह भी होता है जो भोजक इसको न धारे वह अशुचि होता है औ सूर्यनारायणके पूजनका अधिकारी भी नहीं होता जो अव्यंगधारे बिना सूर्य्यनारायण का पूजन करै वह नरकको जाताहै औ संतति तथा आरोग्यसेभी हीन रहता है इसलिये अव्यंग धारेबिना कभी सूर्य्यनारायण

का पूजन न करै वह अव्यंग सर्पके निर्मोककी भांति बीच से पोलारक्खै औ कर्पासके सूत्रका बनावै एकसौ बत्तीस अंगुलकाउत्तम एकसौबीसकामध्यम औ एकसौआठ अंगुलका निकृष्टहोताहै इससे छोटानहींबनानाचाहिये यज्ञोपवीतकीभांति अष्टमबर्षमें अव्यंग धारणहोताहै भोजकों के लिये यह मुख्य संस्कारहै इसके धारणसे सबक्रियाओं का अधिकारी होजाताहै अव्यंग अमाहक पठितांग औ सार ये सब नाम अव्यंगके हैं यह अव्यंग सर्व्वदेवमय सर्व्ववेदमय औ सर्व्वलोकमयहै इसके मूलमें ब्रह्मा मध्य में बिष्णु औ अग्रमें शिव निवास करतेहैं इसी भांति ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद तो मूलमध्य अग्रमें रहते हैं औ अथर्व्वण ग्रंथिमें निवास करताहै पृथिवी जल तेज बायु आकाश औ भूर्लोक आदि सप्तलोक अव्यंगमें निवासकरतेहैं सूर्य्य भक्तभोजक सर्व्वकालमें अव्यंग को धारै केवल मैथुन के समय औ सूतकमें अव्यंग धारण का निषेधहै॥

एकसौ सैंतीसवां अध्याय॥

सूर्य्यनारायण को अर्घ्य औ धूपदेने का विधान उनके मंत्र औ फल॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा इस प्रकार व्यासजीसे भोजक ज्ञानसुन उनको प्रणामकर नारदजी के पास साम्ब आया उनको सब वृत्तांत सुनाय यह पूछता भया कि हे नारदजी सूर्य्यनारायणको स्नान अर्घ्य आचमन औ धूप भोजकक्योंकर समर्पण करैं यह आप कृपाकर वर्णन कीजिये यह साम्ब का बचन सुन नारदजी बोले कि हे साम्ब जो तुमने पूछाइसको हम कहते हैं तुम प्रीतिसे सुनो प्रथम शरीर में तीन बार मृत्तिका लगाय नदी - ।

स्नानकर शुद्धवस्त्र गायत्री मंत्र करके पहिन पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठकर आचमनकरै निर्मल जलसे तीन आचमनकर तीनवेर मार्जन औ अभ्युक्षण करै आचमन किये बिना जो क्रियाकरै वह निष्फल होती है औ बिना आचमन पुरुष शुचिनहीं होता वेदमें कहाहै कि देवता औ पितर शुचिकोही चाहते हैं आचमनकर देवालय में जाय आसन पर बैठ प्राणायाम कर अनेक प्रकारके पुष्पोंसे सूर्य्यनारायणका पूजनकरै औ गूगलका धूपदेकर। ओं ब्रतेन नित्यंब्रतिनोबर्द्धयन्तु देवामनुष्याः पितरश्च सर्वे। तस्यादित्यस्यशरणमहंप्रपद्येयस्तेजसाप्रथममावि भाति। इसमन्त्रसे प्रतिमाके मस्तकपर पुष्पांजलिदेवै धूप कीपांच बेलाहैं प्रभात जिस समय तारे देख पड़तेहोयँ उस समय दण्डनायकको धूपदेवै प्रदोष के समय राज्ञीको औ तीनों सन्ध्याओं में सूर्य्यनारायण को धूपदेनाचाहिये अर्द्धोदितआकाशके मध्यमें स्थित औ अर्द्धास्त जिस समय सूर्य्यमण्डल होय वेही समय पूजाके हैं पूर्वाह्नमें मिहिर को मध्याह्नमें ज्वलनको औ मध्याहनके अनन्तर बरुण को अर्घ्य देवै रक्तचन्दन पद्म करबीर कुंकुमआदि जलमें मिलाय ताम्रके पात्रसे सूर्य्यनारायणको अर्घ्य देवै अर्घ्य पात्र हाथमें उठाय दोनों जानुपर बैठ पहिले यह मंत्रपढ़ै (एहिसूर्यसहस्रांशो तेजोराशेजगत्पते। अनुकंपांहिमेकृत्वा अर्घ्यंगृह्णदिवाकर) पीछे अर्घ्य देवै अर्घ्य देकर आदित्यहृदय का पाठकर यहमन्त्र जपै। ओं नमोभगवते आदित्याय वरिष्ठाय वरेण्याय ब्रह्मणे लोककर्त्रे ईशानाय पुराणाय पुराणपुरुषाय सामाय ऋग्यजुरथर्वाय ओं भूःओंभुवः

ओंस्वः ओंमहः ओंजनः ओंतपः ओंसत्यं ब्राह्मणे आदित्यायनमः । इस प्रकार अर्घ्यदान कर तीनों कालोंमें इन मंत्रोंसे धूपदेवै । ओं त्वमेको रुद्राणां वसूनांचपुरातनो देवानांगीर्भिरभिष्टुतः शाश्वतो दिवि । इसमन्त्रसे पूर्वाह्ण में । ओंनमोभगवतेज्वालामालाकुलाय तद्विष्णोःपरमं पदं सदापश्यन्तिसूरयः । दिवीवचक्षुराततम् । इस मन्त्र से मध्याह्नमें । ओंनमोवरुणायआकृष्णेनरजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यंच । हिरण्मयेनसवितारथेनदेवो याति भुवनानिपश्यन् । इस मन्त्रसे सायङ्कालके समय धूपदेवै फिर गर्भगृहमें जाय प्रतिमाको ओंमिहिरायनमः इसमन्त्र करकेधूपदेकर निक्षुभायैनमःराज्ञैनमःदण्डनायकायनमःपिंगलायनमःराज्ञायनमःश्रौषायनमःकल्माषायनमः गरुत्मतेनमःदिंडिनेनमःरेवन्तायनमःईश्वरायनमःव्योमायनमः विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः रुद्रेभ्योनमः पितृभ्योनमः ऋषिभ्यो नमःसाध्येभ्योनमः ओंब्रह्मण्डपतये आदित्याय पुरुषेस्व रूपायनमोनमः ओंअनेकांताय अन्तेरूपायनमः । वासुकितक्षककर्कोटक शंखकुलिकपद्मेभ्यो नागराजेभ्योनमः । तल सुतल पाताल रसातल विशालादिभ्योनमः । दैत्य दानव पिशाचेभ्योनमः मातृभ्योनमः ग्रहेभ्योनमः मुण्डकायनमः माठरायनमः विनायकायनमः इनमन्त्रोंसे सबदेवताओं को धूपदेकर सूर्य्यनारायणकी प्रार्थनाकरै कि (अर्चितस्त्वंयथाशक्त्या मयाभक्त्याविभावसो । ऐहिकामुष्मिकींनाथ कार्यसिद्धिंददस्वमे । तीनकालस्नानकर जो इस विधिसे पूजन करै औ धूपदेवै वह अश्वमेधके फल को प्राप्तहोय औ धन पुत्र आरोग्य पाय अन्तमें सूर्य्यलोक

को जाय बिधिपूर्बक करनेसेही सर्वकार्य सिद्धिहोतेहैं इसलिये बिधिका उल्लंघन न करै उत्तम पुष्प न मिलैं तो पत्रोंसेही पूजनकरै धूपही देवै भक्तिसे जलमात्रही सूर्य्यनारायणके अर्पणकरै यह भी न होसके तो प्रणामही करै प्रणाम करनेमें भी असमर्थ होय तो मानसी पूजाकरै यह बिधिद्रव्यके अभावमें कही है द्रव्यहोय तो सब उपचारोंसे पूजन करना चाहिये पीछे जो मन्त्र कहे हैं उनके उच्चारणमात्र सेही धूपदानका फलहोताहै मुखको बस्त्रसे बांध सूर्य्यनारायण का अर्चन करै जो पूजनके समय प्रतिमाको श्वास बायु लगजाय तो अनिष्ट होताहै इसलिये भलीभांति मुखबांध पूजन करै जो सूर्य्यनारायण का पूजन भक्तिसे देखैं वे भी अश्वमेधकाफलपाय सूर्यलोक को जाते हैं औ जो धूपदानके समय दर्शनकरैं वे उत्तम गति पाते हैं॥

एकसौ अड़तीसवां अध्याय॥

मगों की प्रशंसा सूर्यमण्डल का बर्णन॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजाशतानीक एक दिन व्यासजी श्रीकृष्ण भगवान्‌के दर्शनकेलिये द्वारकामें आये श्रीकृष्णचन्द्र नेभी अपने हाथसे उनको पाद्य अर्घ्य आचमन आदिदे आसन परबैठाय प्रणाम किया औ कुशल प्रश्नके अनन्तर कहा कि हे व्यासजी शाकद्वीपमें से साम्ब जिन भोजकोंकोलायाहै वे बहुत उत्तमहैं सदा सूर्य्यनारायणके आराधनमें प्रवृत्त रहते हैं औ सदाचारहैं उनको देख हमको भी परम हर्ष हुआहै सूर्य्यनारायणके अनुग्रह बिना मोक्ष नहीं मिलता औ भोजकोंके आराधन बिना सूर्य्यनारायणका अनुग्रह नहीं होता यह हमारे मनका।

निश्चय है यह श्रीकृष्ण भगवान् का बचन सुन वेद-व्यास जी कहने लगे कि हे भगवन् आप जैसा कहते हैं वैसाही है ये भोजक धन्यहैं जो अनन्य भक्त सूर्यनारायणके हैं ये सब कर्मनिष्ठ औ ज्ञानी हैं सदा पुष्पफल अन्न औषधआदि सूर्यनारायण के अर्पण करते हैं औ उनकी प्रीतिकेलिये घृतकाहवनकरते हैं ये सब सूर्यनारायणकीतेजसीकलामें लीनहोंगे सूर्यनारायणकी प्रथमकला अग्निमें स्थितहै जिससेसर्वकर्मोंका साधनहोताहै दूसरी प्रकाशिका कला आकाशमें स्थितहै औ तीसरी कला सूर्यमण्डलमेंहै यहमण्डलवेदत्रय स्वरूपहै इसमण्डलकेमध्यमें सदसदात्मक वहपरमात्मा स्थितहै वह क्षर औ अक्षर तथा सूक्ष्म औ स्थूलहै निष्कल औ सकल ये दो उसके भेदहैं तत्वोंकरके सहित औ सबभूतोंमें स्थित वह परमात्मा सकल कहाताहै औ तत्वहीनहोय तो निष्कलतृण गुल्मलता वृक्ष सिंह वृक हाथी पक्षी देवता सिद्ध मनुष्य जलजन्तु आदि सबमें वह व्याप्त होरहाहै। जबवह दूसरी कलामें स्थितहोता है तो वृष्टि आदि करताहै औ कालात्मा कहाताहै तीसरी तैजसकला में स्थित होकर अपने भक्तों को मोक्षदेता है जिस मोक्षपदमें प्राप्तहोने वाले कभी नहीं शोचते ओंकार में वह परमात्मा स्थितहै ओंकारकी साढ़ेतीन मात्राहैं उनमें अर्द्धमात्रारूप मकार का जो ध्यानकरते हैं उनको सदसदात्मक ज्ञान होताहै पचीस तत्त्वों में स्थित सूर्यनारायण का रूप मकारहै मकारके ध्यानकरनेसे ये मग कहातेहैं औ धूप माल्यआदिसे सूर्यनारायणका पूजनकर भांतिभांतिके पदार्थ उनको भोजनकरातेहैं इससे इनकीभोजकसंज्ञाहै॥

एकसौ उनतालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजी प्रति व्यास जी का कहा मग ज्ञान, योगका बर्णन॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे व्यासजी भोजकोंकी सब ज्ञानोपलब्धि आप बर्णनकरैं हमको श्रवणकरने में बड़ा कौतुकहै यह भगवान्का वचन सुन व्यासजी कहने लगे कि हे श्रीकृष्णजी यह शरीररूप एक मन्दिरहै जिस में अस्थियोंकी थूणीलगीहैं चर्म औ स्नायुओंसे यह बँधा है रुधिर औ मांससे लिपाहै मूत्र विष्ठाआदि दुर्गन्धपदार्थोंसे परिपूर्णहै जरा शोक औ रोग इसमें निवास करतेहैं इस मन्दिरमें बुद्धिमान् पुरुष कभी आसक्त नहींहोते विरक्त पुरुषों के ये चिह्न हैं कि वृक्षोंके मूलमें एकाकी रहना उत्तमवस्त्र नहींपहिनना पत्र कपाल आदिमें भोजनकरना औ सबजीवोंको समदृष्टिसेदेखना तिलोंमें तैल गौओं में घृत औ काष्ठमें अग्नि जिसप्रकार स्थित है इसी भांति परमेश्वर भी गुप्तरूपसे सब पदार्थोंमें स्थितहै पहिले चंचल चित्तको बशमें करके बुद्धि औ इन्द्रियोंको ऐसारोकै जिस भांति पिंजरेमें पक्षियोंको रोकते हैं इन्द्रिय निरोध से इसशरीरकी ऐसी तृप्ति होती है जैसी अमृतधारासे होय प्राणायामसे दोष धारणासेपापप्रत्याहारसे संसर्ग औध्यान करकेअनीश्वर गुण निवृत्तहोतेहैं अग्निमें धौंकनेसे जिस प्रकार धातुओंके दोष दग्ध होजाते हैं इसीप्रकार शरीरके दोष प्राणायामसे दग्ध होते हैं पहिले चित्त शुद्धिके लिये यत्न करना चाहिये चित्तशुद्धि होने से शुभाशुभ कर्म का ज्ञान होताहै तब शुभाशुभ कर्मोंसे छुट निर्द्वन्द्व निर्ममनिष्परिग्रह औ निरहंकारहो मुक्तिको प्राप्तहोता है पूर्वाह्णमें

रक्तवर्ण ऋग्वेद स्वरूप सूर्यनारायणका राजसरूप होता है मध्याह्नमें यजुर्वेदस्वरूप शुक्लवर्ण सात्विकरूप औ सायंकाल में कृष्णवर्ण तामस सामवेद स्वरूप सूर्यनारायण का रूप होता है इन तीनों से भिन्न ज्योतिःस्वरूप सूक्ष्म औ निरंजन चौथा रूप है जिसको वेदवेत्ता प्रतिपादन करते हैं पद्मासनसे बैठ सुषुम्णा में चित्तको स्थिरकर प्रणव से पूरक कुंभक औ रेचक ये तीन प्राणायाम कर पादांगुष्ठके अग्रसे लेकर मस्तक पर्यंत ध्यानकरै नाभिमें अग्नि का हृदय में चन्द्रका औ मस्तकमें अग्निशिखाका ध्यान कर इन सबसे ऊपर सूर्यमण्डलका ध्यान करै यह स्थान चतुर्थ है औ मोक्षार्थी पुरुषों को अवश्य जानना चाहिये ऋषिलोग सूर्यनारायणके इसी तुरीयस्थानमें मन को लीनकर मुक्त भये हैं औ मगभी इसी स्थानका ध्यान कर मुक्तिभागी होते हैं इतनाकह व्यासजी बोले कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ज्ञान करके युक्त यह मगों का चरित हमने आप को श्रवण कराया इसको जो जाने वह उत्तम गति पाताहै यह ज्ञान श्रद्धावान् पुरुषको देनाचाहिये नास्तिक इसका अधिकारी नहीं है सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा श्रीकृष्णचन्द्रको यह भोजक ज्ञान सुनाय श्रीवेदव्यासजी अपने आश्रमको गये जो बदरीके समीप गंगा के तटपर है औ त्रैलोक्यमें प्रसिद्ध है॥

एकसौ चालीसवां अध्याय॥

आदित्यहृदय स्तोत्र॥

राजा शतानीक पूछते हैं कि हे सुमन्तुमुनि उदय होते हुये सूर्यनारायण का क्योंकर उपस्थानकरै यह आपकृपा

कर वर्णन करैं यह राजा का प्रश्न सुन सुमन्तुमुनि बोले कि हेराजा यही बात भारत युद्धमें कुरुक्षेत्रके बीच अर्जुन ने श्रीकृष्णचन्द्रसे पूछीथी वह हम वर्णन करते हैं बड़ेवि- नय से अर्जुन ने श्रीकृष्णचन्द्रसे कहा कि धर्मशास्त्रों का रहस्य अति गुप्त ज्ञान आपके मुखसे श्रवण किया अब आप सूर्यनारायण का स्तुति रूप न्यास कहें मैं आपको भक्तिसे पूछता हूँ यह अर्जुनका वचन सुन श्रीकृष्णभग- वान् बोले कि हे पार्थ तुम ने बहुत उत्तम औ गुप्त बात पूछीहै यह हमने इन्द्र आदि देवताओं के पछनेपरभी न कही परन्तु तुम हमारे परम भक्त हो इसलिये कहते हैं प्रीतिसे सुनो सब प्रकारके मंगल देनेहारा सर्व पापों का निवर्त्तक रोग औ शत्रुओं का संहार करनेहारा धन पुत्र औ विजय देने हारा आदित्यहृदय स्तोत्र हम कहते हैं जिसके श्रवणमात्रसे सब पाप कटजातेहैं औ जो आदि- त्यहृदय तीनों लोकोंमें विख्यात तथा भुक्ति मुक्ति प्रद है प्रभात उठ सूर्यनारायण का स्मरण कर उनका नमस्कार करै तो अनेक प्रकार के विघ्न दूर होजायँ औ जो पुरुष सूर्यनारायण का आवाहन कर आदित्यहृदय का पाठकरै वह दारिद्र्य औ कुष्ठ आदि महारोगोंसे छुट उत्तम सिद्धि पावै हे अर्जुन वह आदित्यहृदय स्तोत्र हम कहते हैं जो अति गुप्तहै तुम भक्तिसे श्रवण करो॥

ॐमस्यश्रीआदित्यहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीकृष्णऋषि रनुष्टुप्छन्दः सूर्योदेवताहरितहयरथंदिवाकरं घृणिरिति वीजम्। ओंनमोभगवतेजितवैश्वानरजातवेदइतिशक्तिः ओंनमोभगवतेआदित्याय इतिकीलकम्। श्रीसूर्यनारा

यणप्रीत्यर्थे जपेविनियोगः ओंह्रांअंगुष्ठाभ्यांनमः ओंह्रीं तर्जनीभ्यांनमः। ओंह्रूंमध्यमाभ्यांनमः ओंह्रैंअनामिकाभ्यांनमः। ओंह्रौंकनिष्ठिकाभ्यांनमः। ओंह्रःकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः। इतिकरन्यासः। एवंहृदयादिन्यासः। अथध्यानम्। भास्वद्रत्नाढ्यमौलिःस्फुरदधररुचारंजितश्चारुकेशो भास्वान्योदिव्यतेजाःकरकमलयुतःस्वर्णवर्णप्रभाभिः। विश्वाकाशावकाशोग्रहगणसहितोभातियश्चोदयाद्रौ सर्वानन्दप्रदाताहरिहरनमितः पातुमांविश्वचक्षुः १ पूर्वमष्टदलंपद्मं प्रणवादिप्रतिष्ठितम्। मायाबीजंदलाष्टाग्रे यन्त्रमुद्धारयेदिति २ आदित्यंभास्करंभानुं रविंसूर्यंदिवाकरम्। मार्तण्डंतपनंचेति दलेष्वष्टसुयोजयेत् ३ दीप्तासूक्ष्माजयाभद्राविभूतिर्विमलातथा। अमोघाविद्युताचेति मध्येश्रीःसर्वतोमुखी ४ सर्वज्ञःसर्वगश्चैव सर्वकारणदेवता। सर्वेशःसर्वहृदयस्तं नमामिविभावसुम् ५ सर्वात्मासर्वकर्त्ताच सृष्टिजीवनपालकः। हितःस्वर्गापवर्गश्च भास्करेशनमोस्तुते ६ नमोनमस्तेस्तुसदाविभावसो सर्वात्मनेसप्तहयायभानवे। अनन्तशक्तेर्मणिभूषणाय ददस्वभुक्तिंममसुक्तिमव्ययाम् ७ अर्कंतुमूर्द्धिनविन्यस्य ललाटेतुरविंन्यसेत्। विन्यसेन्नेत्रयोःसूर्यं कर्णयोश्चादिवाकरम् ८ नासिकायांन्यसेद्भानुं मुखेवैभास्करंन्यसेत्।पर्जन्यमोष्ठयोश्चैव तीक्ष्णंजिह्वान्तरेन्यसेत् ९ सुवर्णरेतसंकण्ठे स्कन्धयोस्तिग्मतेजसम्। बाह्वोस्तुपूषणंचैव मित्रंवैपृष्ठतोन्यसेत् १० वरुणंदक्षिणेहस्ते त्वष्टारंवामतःकरे। हस्तावुष्णकरःपातु हृदयंपातुभानुमान् ११ उदरेतुयमंविद्यादादित्यंनाभिमण्डले। कट्यांतुविन्यसेद्धंसं रुद्रमूर्वोस्तुविन्यसेत् १२ जान्वोस्तुगोपतिंन्यस्य

सवितारंतुजंघयोः। पादयोश्चविवस्वन्तं गुल्फयोश्चदि
वाकरम् १३ वाह्यतस्तुतमोध्वंसं भगमभ्यन्तरेन्यसेत्।
सर्वांगेषुसहस्रांशुं दिग्विदिक्षुभगंन्यसेत् १४ एषआदि
त्यविन्यासो देवानामपिदुर्लभः। इमंभक्त्यान्यसेत्पार्थ स
यातिपरमांगतिम् १५ कामक्रोधकृतात्पापान्मुच्यतेनात्र
संशयः। सर्पादपिभयंनैव संग्रामेषुपार्थिष्वपि १६ रिपुसं
घट्टकालेषुतथाचोरसमागमे। त्रिसन्ध्यंजपतोन्यासंमहापा
तकनाशनम् १७ विस्फोटकसमुत्पन्नंतीव्रज्वरसमुद्भवम्।
शिरोरोगंनेत्ररोगंसर्वव्याधिविनाशनम् १८ कुष्ठव्याधिस्त
थादद्रुरोगाश्चविविधाश्चये। जपमानस्यनश्यन्तिशृणु
भक्त्यातदर्जुन १९ आदित्योमंत्रसंयुक्त आदित्योभुव
नेश्वरः। आदित्यान्नापरोदेवोह्यादित्यपरमेश्वरः २०
आदित्यमर्चयेद्ब्रह्माशिवआदित्यमर्चयेत्। यदादित्यम
यंतेजो ममतेजस्तदर्जुन २१ आदित्यंमन्त्रसंयुक्तमा
दित्यंभुवनेश्वरम्। आदित्यंयेप्रपश्यन्ति मांपश्यन्ति
नसंशयः २२ त्रिसन्ध्यमर्चयेत्सूर्यंस्मरेद्भक्त्यातुयोनरः।
नसपश्यतिदारिद्र्यं जन्मजन्मनिचार्जुन २३ एतत्तेकथितं
पार्थआदित्यहृदयंमया। शृण्वंमुक्तः सपापेभ्यः सूर्य्यलोके
महीयते २४ नमोभगवतेतुभ्यमादित्यायनमोनमः। आ
दित्यःसवितासूर्य्यः खगःपूषागभस्तिमान् २५ सुवर्णः
स्फटिकोभानुः स्फुरितोविश्वतापनः। रविर्विश्वोमहातेजा
सुवर्णःसुप्रबोधकः २६ हिरण्यगर्भस्त्रिशिरास्तपनोभास्क
रोरविः। मार्तण्डोगोपतिः श्रीमान्कृतज्ञश्चप्रतापवान् २७
तमिस्रहाभगोहंसोनासत्यश्चतमोनदः। शुद्धोविरोचनःके
शीसहस्रांशुर्महाप्रभुः २८ विवस्वान्पूषणोमृत्युर्मिहिरोज

मदग्निजित् । धर्मरश्मिःपतंगश्चशरण्योमित्रहातपः २९
दुर्विज्ञेयगतिः शूरस्तेजोराशिर्महायशाः । शंभुश्चित्रांगद
स्सौम्योहव्यकव्यप्रदायकः३० अंशुमानुत्तमोदेवऋग्यजुः
सामएवच । हरिदश्वस्तमोदारः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ३१
अग्निगर्भोदितेः पुत्रः शम्भुस्तिमिरनाशनः । पूषाविश्व
म्भरोमित्रः सुवर्णःसुप्रतापवान् ३२ आतपीमण्डलीभास्वा
नूतपनः सर्वतापनः । कृतविश्वोमहातेजा सर्वरत्नमयोद्भवः
३३ अक्षरश्चक्षरश्चैवप्रभाकरविभाकरौ । चन्द्रश्चन्द्राङ्ग
दःसौम्यो हव्यकव्यप्रदायकः ३४ अङ्गारकोङ्गदोगस्त्यो
रक्ताङ्गश्चाङ्गवर्द्धनः । बुद्धोबुद्धासनोबुद्धिर्बुद्धात्माबुद्धिवर्द्धनः
३५ बृहद्भानुर्बृहद्भासोबृहद्धामाबृहस्पतिः । शुक्रस्त्वंशुक्ररे
तास्त्वंशुक्राङ्गःशुक्रभूषणः ३६ शनिमान्शनिरूपस्त्वंश
नैर्गच्छसिसर्वदा । अनादिरादिरादित्यस्तेजोराशिर्महातपः
३७अनादिरादिरूपस्त्वमादित्योदिक्पतिर्यमः । भानुमान्
भानुरूपस्त्वंस्वर्भानुर्भानुर्दीप्तिमान् ३८धूमकेतुर्महाकेतुःस
र्वकेतुरनुत्तमः । तिमिरावरणः शम्भुः स्रष्टामार्तंडएवच ३९
नमः पूर्वायगिरयेपश्चिमायनमोनमः । नमोत्तरायगिरयेद
क्षिणायनमोनमः ४० नमोनमःसहस्रांशो ह्यादित्यायनमो
नमः । नमःपद्मप्रबोधाय नमस्तेद्वादशात्मने४१ नमोविश्व
प्रबोधायनमोभ्राजिष्णुजिष्णवे । ज्योतिषेचनमस्तुभ्यंज्ञाना
र्कायनमोनमः४२प्रदीप्तायप्रगल्भाययुगान्तायनमोनमः ।
नमस्तेहोतृपतयेपृथिवीपतयेनमः ४३ नमोङ्कारवषट्कार
सर्वयज्ञनमोस्तुते । ऋग्वेदाययजुर्वेदसामवेदनमोस्तुते४४
नमोहाटकवर्णाय भास्करायनमोनमः । जयायजयभद्राय
हरिदश्वायतेनमः ४५ दिव्यायदिव्यरूपाय ग्रहाणां ये

नमः। नमस्तेंशुचर्येनित्यं नमःकुरुकुलात्मने४६नमस्त्रैलो
क्यनाथाय भूतानांपतयेनमः। नमःकैवल्यनाथाय नमस्ते
दिव्यचक्षुषे ४७ त्वंज्योतिस्त्वंद्युतिर्ब्रह्मा त्वंविष्णुस्त्वंप्रजा
पतिः। त्वमेवरुद्रोरुद्रात्मा वायुरग्निस्त्वमेवच ४८ योज
नानांसहस्रेद्वे द्वेशतेद्वेचयोजने। एकेननिमिषार्द्धेन क्रममा
णनमोस्तुते ४९ नवयोजनलक्षाणि सहस्राद्विशतानिच।
यावद्घटीप्रमाणेन क्रममाणनमोस्तुते ५० अग्रतश्चनम
स्तुभ्यंपृष्ठतश्चसदानमः। पार्श्वतश्चनमस्तुभ्यं नमस्तेचा
स्तुसर्वदा ५१ नमःसुरारिहन्त्रेच सोमसूर्याग्निचक्षुषे। नमो
दिव्यायव्योमाय सर्वतंत्रमयायच ५२ नमोवेदांतवेद्यायसर्व
कर्मादिसाक्षिणे। नमोहरितवर्णाय सुवर्णायनमोनमः ५३
अरुणोमाघमासेतु सूर्योवैफाल्गुनेतथा। चैत्रेमासेतुगोविंदो
भानुर्वैशाखतापनः ५४ ज्येष्ठमासेतपेदिंद्र आषाढेतपतेरविः
गभस्तिःश्रावणेमासेयमोभाद्रपदेतथा ५५ इषेसुवर्णरेता
श्चकार्त्तिकेचदिवाकरः। मार्गशीर्षेतपेन्मित्रःपौषेविष्णुःस
नातनः ५६ पुरुषस्त्वधिकेमासे नित्यमेवप्रतापयेत्। इत्येते
द्वादशादित्याः काश्यपेयाःप्रकीर्त्तिताः ५७ उग्ररूपामहात्मा
नस्तपन्तेविश्वरूपिणः। धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रस्फुटाहेत
वोनृप ५८ सर्वपापहरंचैवमादित्यंसंप्रपजयेत्। एकधाद
शधाचैवशतधाचसहस्रधा ५९ तपन्तेविश्वरूपेणसृजन्ति
संहरंतिच। एकविष्णुःशिवश्चैव ब्रह्माचैवप्रजापतिः ६०
महेन्द्रश्चैवकालश्च यमोवरुणएवच। नक्षत्रग्रहताराणा
मधिपोविश्वतापनः ६१ वायुरग्निर्धनाध्यक्षो भूतकर्त्तास्व
यंप्रभुः। एषदेवोहिदेवानां सर्वमाप्यायतेजगत् ६२ एष
कर्त्ताहिभूतानां संहर्त्तारक्षकस्तथा। एषलोकानुलोकाश्च

सप्तद्वीपाश्चसागराः ६३ एषपाताललोकस्थो दैत्यदानव राक्षसाः। एषधाताविधाताच बीजंक्षेत्रंप्रजापतिः ६४ एष एवप्रजानित्यं सवर्द्धयतिरश्मिभिः। एषयज्ञःस्वधास्वाहा ह्रीःश्रीश्चपुरुषोत्तमः ६५ एषभूतात्मकोदेवः सूक्ष्मोऽव्यक्तः सनातनः। ईश्वरःसर्वभूतानां परमेष्ठीप्रजापतिः ६६ काला त्मासर्वभूतात्मा वेदात्माविश्वतोमुखः। जन्ममृत्युजराव्या धिसंसारभयनाशनः ६७ दारिद्र्यव्यसनध्वंसी श्रीमान्देवो दिवाकरः। विकर्त्तनोविवस्वांश्च मार्तण्डोभास्करोरविः ६८ लोकप्रकाशकःश्रीमां लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः। लोकसाक्षीत्रिलो केशः कर्त्ताहर्त्तातमिस्रहा ६९ तपनस्तापनश्चैव शुचिःस प्ताश्ववाहनः। गभस्तिहस्तोब्रह्मण्यः सर्वदेवनमस्कृतः ७० इत्येतैर्नामभिःपार्थ आदित्यंस्तौतिनित्यशः। प्रातरुत्थाय कौन्तेय तस्यरोगभयंनहि ७१ पातकान्मुच्यतेपार्थ व्याधि भ्यश्चनसंशयः। एकसन्ध्यंद्विसन्ध्यंवा सर्वपापैःप्रमुच्यते ७२ त्रिसन्ध्यंजपमानस्तु पश्येच्चपरमंपदम्। यदह्नाकुरुते पापं तदह्नाप्रतिमुच्यते ७३ यद्रात्र्याकुरुतेपापं तद्रात्र्याप्र तिमुच्यते। दद्रुस्फोटककुष्ठानि मंडलानिविचर्चिका ७४ सर्व्वव्याधिमहारोग भूतबाधास्तथैवच। शाकिनीडाकिनी चैव महारोगभयंकुतः ७५ येचान्येदुष्टरोगाश्च ज्वराती सारकादयः। जपमानस्यनश्यन्ति जीवेच्चशरदांशतम ७६ संवत्सरेणमरणं यदातस्यध्रुवंभवेत्। अशीर्षांपश्यतिच्छा यामहोरात्रंधनंजय ७७ यस्त्विदंपठतेभक्त्या वारेभानोर्म हात्मनः। प्रातःस्नानेकृतेपार्थ एकाग्रकृतमानसः ७८ सुव र्णचक्षुर्भवति नचान्धस्तुप्रजायते। पुत्रवान्धनसम्पन्नो जायतेचारुजःसुखी ७९ सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्रविजयी

भवेत्। आदित्यहृदयंपुण्यं सूर्य्यनामविभूषितं ८० श्रुत्वा
च निखिलंपार्थ सर्वपापैःप्रमुच्यते। अतःपरतरंनास्ति सि
द्धिकामस्यपाण्डव ८१ एतज्जपस्वकौन्तेय येनश्रेयोह्यवा
प्स्यसि। आदित्यहृदयंपुण्यं यःपठेत्सुसमाहितः ८२ भ्रूण
हामुच्यतेपापात् कृतघ्नोब्रह्मघातकः। गोघ्नःसुरापीदुर्भोजी
दुष्प्रतिग्रहकारकः ८३ पातकानिचसर्वाणि दहत्येवनसं
शयः। यइदंशृणुयान्नित्यं जपेद्वापिसमाहितः८४सर्वपापवि
शुद्धात्मा सूर्य्यलोकेमहीयते। अपुत्रोलभतेपुत्रान्निर्धनोधन
माप्नुयात्८५रोगीचमुच्यतेरोगाद्भक्त्यायःपठतेसदायस्त्वा
दित्यदिनेपार्थनाभिमात्रजलेस्थितः ८६ उदयाचलमारू
ढंभास्करंप्रणतःस्थितः। जपतेमानवोभक्त्याशृणुयाद्वापिभ
क्तितः८७सयातिपरमंस्थानंयत्रदेवोदिवाकरः। अमित्रदम
नंपार्थयदाकर्तुंसमारभेत्८८तदाप्रतिकृतिंकृत्वा शत्रोश्चर
णपांशुभिः। आक्रम्यवामपादेन आदित्यहृदयंजपेत् ८९
एतन्मन्त्रंममाहूयसर्वसिद्धिकरंपरम्। ओंह्रींमालीढंस्वाहा॥
ओंह्रींनिलीढंस्वाहा। ओंह्रींमालीढंस्वाहा। इतिमन्त्रःत्रिभि
श्चरोगीभवतिज्वरीभवतिपंचभिः। जपैस्तुसप्तभिःपार्थरा
क्षसींतनुमाविशेत्९० राक्षसेनाभिभूतस्यविकारान्शृणुपां
डव। गीयतेनृत्यतेनघ्नआस्फोटयातिधावति ९१ शिवारुतं
चकुरुतेहसतेक्रन्दतेपुनः। एवंसंपीड्यतेपार्थयद्यपिस्यान्म
हेश्वरः९२ किंपुनर्मानुषःकश्चिच्छौचाचारविवर्जितः। पीडि
तस्यनसंदेहोज्वरोभवतिदारुणः ९३ यदाचानुग्रहंतस्यक
र्तुमिच्छेच्छुभंकरम्। तदासलिलमादाय जपेन्मन्त्रमिमंबु
धः ९४ नमोभगवतेतुभ्यमादित्यायनमोनमः। जयायजय
भद्रायहरिदश्वायतेनमः९५ स्नापयेत्तेनमन्त्रेण शुभंभवति

नान्यथा । अन्यथाचभवेद्दोषो नश्यतेनात्रसंशयः ९६
स्तवस्तेनिखिलःप्रोक्तः पूजांचैवनिबोधमे । उपलिप्तेशुचौ
देशे नियतोवाग्यतःशुचिः ९७ वृत्तंवाचतुरस्रंवालिप्तभूमौ
लिखेद्बुधः । त्रिधातत्रालिखेत्पद्ममष्टपत्रंसकर्णिकम् ९८
पूर्वपत्रेलिखेत्सूर्य्यमाग्नेय्यान्तुरविंन्यसेत् । याम्यांचैवविव
स्वन्तंनैर्ऋत्यांतुभगंन्यसेत् ९९ प्रतीच्यांवरुणंविंद्याद्वाय
व्यांमित्रमेवचा।आदित्यमुत्तरेपत्रेईशान्यांसूर्य्यमेवच १००
मध्येतुभास्करंविंद्यात्क्रमेणैवंसमर्चयेत् । अतःपरतरंना
स्तिसिद्धिकामस्यपांडव १०१ महातेजःसमुद्यन्तंप्रणमेत्सु
कृतांजलिः । सकेसराणिपद्मानिकरवीराणिचार्जुन १०२
तिलतन्दुलयुक्तानिकुशगन्धोदकानिच । रक्तचन्दनमिश्रा
णिकृत्वावैताम्रभाजने १०३ धृत्वाशिरसितत्पात्रंजानुभ्यां
धरणींस्पृशन् ।मन्त्रपूतंगुडाकेश चार्घ्यंदद्याद्गभस्तये१०४
ओंह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः सूर्य्यमूर्तयेस्वाहा । नमोस्तुसूर्याय सहस्र
भानवेनमोस्तुवैश्वानरजातवेदसे । त्वमेवचार्घ्यंप्रतिगृह्ण
देवदेवाधिदेवायनमोनमस्ते १०५ नमोभगवतेतुभ्यंनमस्ते
जातवेदसे । दत्तमर्घ्यंमयाभानोत्वंगृहाणनमोस्तुते१०६ ए
हिसूर्य्यसहस्रांशोतेजोराशेजगत्पते।अनुकंपयमांभक्त्यागृ
हाणार्घ्यंदिवाकर १०७ सर्वदेवाधिदेवायआधिव्याधिविना
शिने । ममेप्सितंफलंदेहिप्रसीदपरमेश्वर १०८ सर्वसंकट
दारिद्र्यशत्रून्नाशयनाशय । सर्वलोकेषुविश्वात्मन्सर्वात्मन्स
र्वदर्शक १०९ नमोभगवतेसूर्य्यकुष्ठरोगान्विखंडय । आयु
रारोग्यमैश्वर्यंदेहिदेवनमोस्तुते११० आदित्यंचशिवंविंद्या
च्छिवमादित्यरूपिणम् । उभयोरन्तरंनास्तिआदित्यस्य
शिवस्यच १११ उदयेब्रह्मणोरूपंमध्याह्नेतुमहेश्वरः ।

अस्तमानेस्वयंविष्णुस्त्रयीमूर्तिर्दिवाकरः ११२ जयोजय
श्चविजयोजितप्राणोजितश्रमः। मनोजवोजितक्रोधोवाजि
नः सप्तकीर्तिताः ११३ हरितहयरथंदिवाकरंकनकमयाम्बु
जरेणुपिंजरम् । प्रतिदिनमुदयेनवंनवं शरणमुपैमिहिरण्य
रेतसम् ११४ नतंव्यालाः प्रबाधन्तेनव्याधिभ्योभयंभवेत्।
ननागेभ्योभयंचैवनचभूतभयंक्वचित् ११५ अग्निशस्त्रभयं
नास्तिपार्थिवेभ्यस्तथैवच । दुर्गतिंतरतेघोरांप्रजांचलभते
पशून् ११६ सिद्धिकामोलभेत्सिद्धिंकन्याकामस्तुकन्यकाम्।
एतत्पठस्वकौन्तेय भक्तियुक्तेनचेतसा ११७ अश्वमेधस
हस्रस्यवाजपेयशतस्यच। कन्याकोटिसहस्रस्यदत्तस्यफल
माप्नुयात् ११८ इदमादित्यहृदयं योधीतेसततंनरः। सर्व
पापविशुद्धात्मासूर्य्यलोकेमहीयते ११९ नास्त्यादित्यसमो
देवोनास्त्यादित्यसमागतिः । प्रत्यक्षोभगवान्विष्णुर्येनवि
श्वंप्रतिष्ठितम् १२० गवांशतसहस्रस्यसम्यग्दत्तस्ययत्फ
लम्। तत्फलंलभतेविद्वान्शान्तात्मास्तौतियोरविम् १२१
योधीतेसूर्यहृदयंसकलंसफलंलभेत्। अष्टानांब्राह्मणानांचले
खयित्वासमर्पयेत् १२२ ब्रह्मलोकेऋषीणांचजायतेमानुषो
पिवा । जातिस्मरत्वमाप्नोति शुद्धात्मानात्रसंशयः १२३
अजायलोकत्रयपावनायभूतात्मनेगोपतयेवृषाय। सूर्यायस
र्वप्रलयान्तकायनमोमहाकारुणिकोत्तमाय १२४ विवस्वते
ज्ञानभृतान्तरात्मनेजगत्प्रदीपायजगद्धितैषिणे । स्वयंभुवे
दीप्तसहस्रचक्षुषेसुरोत्तमायामिततेजसेनमः १२५ सुरैरने
कैःपरिसेविताय हिरण्यगर्भायहिरण्मयाय। महात्मनेमो
क्षपदायनित्यंनमोस्तुतेवासरकारणाय १२६ आदित्यश्चा
र्चितोदेवआदित्यः परमंपदम्। आदित्योमातृकारूप आ

दित्योवाङ्मयंजगत् १२७ आदित्यंपश्यतेभक्त्यामांपश्य
तिध्रुवंनरः ।नादित्यंपश्यतेयस्तुनसपश्यतिमांनरः १२८ न
मः सवित्रेजगदेकचक्षुषेजगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ।त्रयी
मयायत्रिगुणात्मधारिणे विरंचिनारायणशंकरात्मने १२९
यस्योदयेनेहजगत्प्रबुध्यतेप्रवर्त्ततेचाखिलकर्मसिद्धये ।ब्रह्मे
द्रनारायणरुद्रवंदितः सनःसदायच्छतुमङ्गलंरविः १३०
नमोस्तुसूर्यायसहस्त्ररश्मयेसहस्त्रशाखान्वितसम्भवात्मने।
सहस्त्रयोगोद्भवभावभागिने सहस्त्रसंख्यायुगधारिणेनमः
१३१यन्मण्डलंदीप्तिकरंविशालंरत्नप्रभंतीव्रमनादिरूपम्।
दारिद्र्यदुःखक्षयकारणंच पुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् १३२
यन्मण्डलंदेवगणैःसुपूजितं विप्रैस्तुतंभावनमुक्तिकोविदम्।
तंदेवदेवंप्रणमामिसूर्य्यं पुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् १३३
यन्मण्डलंज्ञानघनंत्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यंत्रिगुणात्मरूपम् ।
समस्ततेजोमयदिव्यरूपंपुनातु० १३४ यन्मण्डलंगूढमति
प्रबोधंधर्मस्यवृद्धिंकुरुतेजनानाम्। यत्सर्वपापक्षयकारणंच
पुनातु० १३५ यन्मण्डलंव्याधिविनाशदक्षंयदृग्यजुःसाम
सुसम्प्रगीतम् ।प्रकाशितंयेनचभूर्भुवःस्वःपुनातु० १३६
यन्मण्डलंवेदविदोवदंति गायन्तियच्चारणसिद्धसंघाः ।
यद्योगिनोयोगजुषांचसंघाःपुनातु०१३७यन्मण्डलंसर्वज
नेषुपूजितं ज्योतिश्चकुर्यादिहमर्त्यलोके।यत्कालकालाद्यम
नादिरूपंपुनातु०१३८यन्मण्डलंविष्णुचतुर्मुखाख्यंयदक्ष
रंपापहरंजनानाम्।यत्कालकल्पक्षयकारणंचपुनातु० १३९
यन्मण्डलंविश्वसृजंप्रसिद्धमुत्पत्तिरक्षाप्रलयप्रगल्भम् । य
स्मिन्जगत्संहरतेखिलंचपुनातु० १४० यन्मंडलंसर्वगत
स्यविष्णोरात्मापरंधामविशुद्धतत्त्वम्।सूक्ष्मान्तरैर्योगपथा

नुगम्यंपुनातु० १४१ यन्मण्डलंवेदविदोपगीतं यद्योगिनां योगपथानुगम्यम्। तंसर्वदेवंप्रणमामिसूर्यं पुनातुमांतत्स वितुर्वरेण्यम् १४२ ध्येयःसदासवितृमण्डलमध्यवर्तीनारा यणः सरसिजासनसन्निविष्टः। केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटीहारीहिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः १४३ सशंखचक्रं रविमण्डलस्थितं कुशेशयाक्रान्तमनन्तमच्युतम्। भजामि बुद्ध्यातपनीयमूर्तिंसुरोत्तमंचित्रविभूषणोज्वलम् १४४ एवं ब्रह्मादयोदेवाऋषयश्चतपोधनाः। कीर्तयन्तिसुरश्रेष्ठं देवं नारायणंविभुम् १४५ वेदवेदाङ्गशारीरंदिव्यदीप्तिकरंपरम्। रक्षोघ्नंरक्तवर्णंचसृष्टिसंहारकारकम् १४६ एकचक्रोरथो यस्यादिव्यःकनकभूषितः। समेभवतुसुप्रीतःपद्महस्तोदिवा करः १४७ आदित्यःप्रथमंनामद्वितीयंतुदिवाकरः। तृतीयं भास्करंप्रोक्तंचतुर्थंतुप्रभाकरः १४८ पंचमंतुसहस्रांशुःषष्ठं चैवत्रिलोचनः।सप्तमंहरिदश्वश्च अष्टमन्तुविभावसुः १४९ नवमंदिनकृत्प्रोक्तंदशमंद्वादशात्मकः। एकादशंत्रयीमूर्त्ति र्द्वादशंसूर्यएवच १५० द्वादशादित्यनामानि प्रातःकाले पठेन्नरः। दुःस्वप्ननाशनंचैवसर्वदुःखंचनश्यति १५१ दद्रु कुष्ठहरंचैवदारिद्र्यंहरतेध्रुवम्। सर्वसम्पत्प्रदंचैवसर्वकाम प्रवर्द्धनम् १५२ यःपठेत्प्रातरुत्थायभक्त्यानित्यमिदंनरः। सौख्यमायुस्तथारोग्यंलभतेमोक्षमेवच १५३ अग्निमीले नमस्तुभ्य मिषेत्वर्जेस्वरूपिणे। अग्नेआयाहिवीतस्त्वंनम स्तेज्योतिषांपते १५४ शन्नोदेवीनमस्तुभ्यं जगच्चक्षुर्नमोस्तु ते।पंचमायोपवेदाय नमस्तुभ्यंनमोनमः १५५ पद्मासनःपद्म करः पद्मगर्भसमद्युतिः। सप्ताश्वरथसंयुक्तो द्विभुजःस्यात् सदारविः १५६ आदित्यस्यनमस्कारंयेकुर्वन्तिदिनेदिने।

जन्मान्तरसहस्रेषुदारिद्र्यंनोपजायते १५७ उदयगिरिमुपेतं भास्करंपद्महस्तंनिखिलभुवननेत्रंदिव्यरत्नोपमेयं। तिमिर करिमृगेन्द्रंबोधकंपद्मिनीनां सुरवरमभिवन्दे सुन्दरंविश्व वंद्यम् १५८ ॥ इतिश्री आदित्यहृदयस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

एकसौ इकतालीसवां अध्याय ॥

आगेहोनेवाले राजाओंका वर्णन औ उनके राज्यका समय ॥

राजाशतानीक कहते हैं कि हेसुमन्तुमुनि आपकेमुखारविंदसे सूर्यभगवान्‌केगुणानुवाद औ परमपवित्रआदित्य हृदयस्तोत्र श्रवणकिया जिससे चित्तको अत्यन्तआनन्द भया अबआप कृपाकरयहवर्णनकरैं कि कलियुगमेंकौन २ राजाहोंगे औ कितने२वर्ष राज्यकरैंगे आप श्रीवेदव्यास जीकेशिष्य औ त्रिकालज्ञहैं यहराजाकाप्रश्न सुन सूतजी बोले कि हे राजा शतानीक आपने बहुत उत्तम प्रश्नकिया अब हम कलियुगकेराजाओंका वर्णनकरते हैं आपप्रीतिसे श्रवणकरैं कलियुगकीसंध्यासेलेकर परीक्षितआदि तुम्हारे वंशके राजा इक्ष्वाकु वंशके राजा औ मागध वंशके राजा एकसहस्रबर्षतक राज्य करैंगे इनतीनों वंशोंके राजाओंके अनन्तर प्रद्योत नामक पांच राजा एकसौ अड़तीस वर्ष राज्य करैंगे पीछे शिशुनाग आदि दशराजा तीनसौसाठ वर्षपर्यन्त राज्यभोगैंगे यहांतकतोधर्मात्माराजाहोंगे इनके अनन्तर शूद्रीके गर्भसे उत्पन्न नन्दनामराजा होगा औ उसके आठपुत्र सौवर्ष पर्यन्त राज्यकरैंगे नन्दके पुत्रोंको राज्य के अयोग्यजान कोई ब्राह्मण उनको राज्यसिंहासन से उतार मौर्यवंशके चन्द्रगुप्तको राज्य देगा तब एकसौ सैंतीस वर्ष पर्यन्त मौर्यों के दश राजा राज्य करैंगे

अनन्तर शुंगनामक दशराजा एकसौदश बर्ष तक राज्य करैंगे अन्त में कण्व औ जिसका दूसरा नाम वसुदेव है वह राज्यके लोभसे अपने स्वामी शुंगकोमार आप राजा बनैगा तीनसौपैंतालीस बर्ष पर्य्यन्त इसीके घराने में राज्य रहेगा अन्त में इनकोभी इनका सेवक एक शूद्र मारकर कुछ काल आप राज्य करेगा पीछे उसी आन्ध्रशूद्रके वंश के तीसराजा चारसौछप्पन बर्ष पर्य्यन्त कलियुगमें राजा होंगे इनके अनन्तर आभीर नाम सातराजा सौबर्ष तक भूमि का भोगकरैंगे इनके बाद गर्दभ नामक दश राजा अट्ठानबे बर्ष राज्य के स्वामी होंगे फिर कंकनाम सोलह राजा दोसौबर्षराज्यकरैंगे फिर बिक्रमादित्यनाम उज्जयिनीमें राजाहोगा जो करोडोंम्लेच्छोंकोमार धर्म्मस्थापनकर एकसौपैंतीसबर्ष राज्यकरैगा इसके अनन्तर सौबर्षपर्य्यंत बड़ाप्रतापी शालिबाहननामराजा राज्यकरैगा इसकेअनंतर आठयवन औ सोलहतुरुष्क साढ़ेतीनसौबर्ष राज्यकरैंगे पीछे गुरुण्डनाम दशराजा एकसौसोलह बर्ष पर्य्यन्त राज्य भोगकरैंगे पीछे मौननामक ग्यारहराजा तीनसौबर्ष भूमि को भोगैंगे इनके अनन्तर किलकिला में भूतनन्द आदि राजा एकसौपांचबर्ष राज्यकरैंगे इतनेतो कलियुग में चक्रवर्त्ती राजाहोंगे पीछे खण्डराज्यहोजायगा अर्थात् एक २ देशके जुदे २ राजा होजायँगे उन भूतनन्द नामक राजाओं के तेरह पुत्र बाह्लिक राजा होंगे सातराजा कोशल देशमें होंगे इनके अनन्तर वैदूरपति नैषध राजा होंगे पीछे विश्वस्फुजित राजा अति क्रोधी औ दुष्टहोगा वह सब वर्णों को म्लेच्छप्राय करदेगा सिन्धु के तीर में

कश्मीर में औ कांची आदि देशों में म्लेच्छों का राज्य होजायगा ये सब राजा बड़े क्रोधी अल्पायुष् औ अल्प-सत्वहोंगे औ अपनी प्रजाको भक्षण करैंगे इस भांतिका राज्य चारसौबारहबर्ष रहैगा इसप्रकार जब धर्म्मका ना-शहोनेलगेगा तब पश्चिम देश में बड़ा ब्रह्मज्ञानी एक राजर्षि उत्पन्न होगा उसकी आज्ञानुसार सब राजा राज्य करैंगे कलियुगमेंभी धर्म्म की वृद्धि औ म्लेच्छोंका नाश वह करैगा उसके अनन्तर बड़े प्रतापी औ प्रजाका रक्षण करनेहारे गौरमुख नाम राजा होंगे जिनके राज्य की ब-हुत शीघ्र वृद्धि होजायगी सब राजा उनको कर देंगे वे एकसौ अस्सी वर्ष नीतिशास्त्र के अनुसार राज्यकर प-श्चिम देशके मनुष्यों के हाथ अभाव को प्राप्तहोंगे जब वेदमें औ ब्राह्मणों में शुद्धता होगी तब धर्म्म के विरोधी म्लेच्छों को राजा जीतेंगे औ प्रजा के पालन करने हारे हजारों राजा होंगे वे सब साढ़े तीनसौ वर्ष राज्य करैंगे कुछ काल के अनन्तर उनके वंशमें बड़ाधर्मात्मा औ प्र-तापी विजयनामराजा होगा जिसके वंश में साढ़ेपांचसौ वर्ष राज्य रहैगा इनके अनन्तर रोहितक नाम नगर में नागार्ज्जुन राजा बड़ा प्रतापी उत्पन्न होगा उसके वंश में उत्पन्न राजा एकहज़ार वर्ष पर्यन्त राज्य करैंगे फिर राजा बलिनामक होगा जिसके घराने में ग्यारहसौ वर्ष राज्य रहैगा इसके अनन्तर शूद्र म्लेच्छ आदि राजाहोंगे सब जगत् म्लेच्छ होजायगा धर्म कहीं नहीं रहेगा तब विष्णु भगवान्का कल्किनाम अवतार होगा वह अपने अश्व पर चढ़ सब म्लेच्छों का संहार कर धर्म्म का स्थापनक-

अनन्तर शुंगनामक दशराजा एकसौदश वर्ष तक राज्य करैंगे अन्त में कण्व औ जिसका दूसरा नाम बसुदेव है वह राज्यके लोभसे अपने स्वामी शुंगकोमार आप राजा बनैगा तीनसौपैंतालीस बर्ष पर्यन्त इसीके घराने में राज्य रहेगा अन्त में इनकोभी इनका सेवक एक शूद्र मारकर कुछ काल आप राज्य करेगा पीछे उसी आन्ध्रशूद्रके वंश के तीसराजा चारसौछप्पन बर्ष पर्यन्त कलियुगमें राजा होंगे इनके अनन्तर आभीर नाम सातराजा सौबर्ष तक भूमि का भोगकरैंगे इनके बाद गर्दभ नामक दश राजा अट्ठानबे बर्ष राज्य के स्वामी होंगे फिर कंकनाम सोलह राजा दोसौबर्षराज्यकरैंगे फिर बिक्रमादित्यनाम उज्जयिनीमें राजाहोगा जो करोडोंम्लेच्छोंकोमार धर्मस्थापनकर एकसौपैंतीसबर्ष राज्यकरैगा इसके अनन्तर सौबर्षपर्यंत बड़ाप्रतापी शालिबाहननामराजा राज्यकरैगा इसकेअनंतर आठयवन औ सोलहतुरुष्क साढ़ेतीनसौबर्ष राज्यकरैंगे पीछे गुरुण्डनाम दशराजा एकसौसोलह बर्ष पर्यन्त राज्य भोगकरैंगे पीछे मौननामक ग्यारहराजा तीनसौबर्ष भूमि को भोगैंगे इनके अनन्तर किलकिला में भूतनन्द आदि राजा एकसौपांचबर्ष राज्यकरैंगे इतनेतो कलियुग में चक्रवर्त्ती राजाहोंगे पीछे खण्डराज्यहोजायगा अर्थात् एक २ देशके जुदे २ राजा होजायँगे उन भूतनन्द नामक राजाओं के तेरह पुत्र बाह्लिक राजा होंगे सातराजा कोशल देशमें होंगे इनके अनन्तर वैदूरपति नैषध राजा होंगे पीछे विश्वस्फूर्जित राजा अति क्रोधी औ दुष्टहोगा वह सब वर्णों को म्लेच्छप्राय करदेगा सिन्धु के तीर में

कश्मीर में औ कांची आदि देशों में म्लेच्छों का राज्य होजायगा ये सब राजा बड़े क्रोधी अल्पायुष् औ अल्पसत्वहोंगे औ अपनी प्रजाको भक्षण करैंगे इस भांतिका राज्य चारसौबारहबर्ष रहैगा इसप्रकार जब धर्म्मका नाशहोनेलगेगा तब पश्चिम देश में बड़ा ब्रह्मज्ञानी एक राजर्षि उत्पन्न होगा उसकी आज्ञानुसार सब राजा राज्य करैंगे कलियुगमेंभी धर्म्म की वृद्धि औ म्लेच्छोंका नाश वह करैगा उसके अनन्तर बड़े प्रतापी औ प्रजाका रक्षण करनेहारे गौरमुख नाम राजा होंगे जिनके राज्य की बहुत शीघ्र वृद्धि होजायगी सब राजा उनको कर देंगे वे एकसौ अस्सी बर्ष नीतिशास्त्र के अनुसार राज्यकर पश्चिम देशके मनुष्यों के हाथ अभाव को प्राप्तहोंगे जब वेदमें औ ब्राह्मणों में शुद्धता होगी तब धर्म्म के विरोधी म्लेच्छों को राजा जीतेंगे औ प्रजा के पालन करने हारे हजारों राजा होंगे वे सब साढ़े तीनसौ बर्ष राज्य करैंगे कुछ काल के अनन्तर उनके बंशमें बड़ाधर्मात्मा औ प्रतापी विजयनामराजा होगा जिसके बंश में साढ़पांचसौ बर्ष राज्य रहैगा इनके अनन्तर रोहितक नाम नगर में नागार्ज्जुन राजा बड़ा प्रतापी उत्पन्न होगा उसके बंश में उत्पन्न राजा एकहज़ार बर्ष पर्यन्त राज्य करेंगे फिर राजा बलिनामक होगा जिसके घराने में ग्यारहसौ बर्ष राज्य रहैगा इसके अनन्तर शूद्र म्लेच्छ आदि राजाहोंगे सब जगत् म्लेच्छ होजायगा धर्म कहीं नहीं रहेगा तब बिष्णु भगवान्का कल्किनाम अवतार होगा वह अपने अश्व पर चढ़ सब म्लेच्छों का संहार कर धर्म्म का स्थापनक-

रैगा तब फिर सत्ययुगकी प्रवृत्ति होगी इतनाकह सुमन्तु मुनि बोले कि हे राजन् यह हमने कलियुग में होनेवाले राजाओंका संक्षेपसेबर्णनकिया अब तुम और क्याश्रवण किया चाहतेहो वह कथन कीजिये ॥

श्रीभविष्यपुराणका पूर्व्वार्द्धसमाप्तभया ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

भविष्यपुराण भाषा ॥

उत्तरार्द्ध ॥

पहिला अध्याय ॥

श्लोक ॥

नमोस्तुवासुदेवायसशार्ङ्गायसकेतवे। सगदायसचक्राय सश्रीकायनमोनमः १ नमःशिवायसौम्यायसगणायससून वेसवृषव्यालशूलायसकपालायसेन्दवे २ शिवंध्यात्वाहरिं स्तुत्वाप्रणम्यपरमेष्ठिनम्। चित्रभानुंसुभानुंच नत्वाग्रन्थ मुदीरयेत् ३ ॥

राजा शतानीक कहते हैं कि हे मुनिसत्तम सुमन्तुमुनि आपके अमृतसे भी मधुर बचन सुनते सुनते मुझे तृप्ति नहीं होती अब आप और भी कोई उत्तम बिषय बर्णन कीजिये जिससे चित्तको हर्ष होय औ पुण्यकी प्राप्तिभी होय यह राजाका बचन सुन सुमन्तुमुनि बोले कि हे राजन् तुम श्रवणकरानें के पात्रहो औ श्रद्धासे सुनतेहो इसलिये फिरभी हम प्राचीन वृत्तांतका बर्णन करते हैं तुम्हारे बड़े प्रपितामह राजा युधिष्ठिर को जब राज्याभिषेक भया उस समय राजाको देखनेके लिये श्रीबेदव्यास आदि महर्षि वहांआये मार्कंडेय माण्डव्य शाण्डिल्य शाकटायन गौतम गालव गार्ग्य ऋष्यश्रृङ्ग पराशर परशुराम भरद्वाज भृगु भागुरि उत्तङ्क शंख लिखित शौनक पुलस्त्य पुलह दाल्भ्य

बृहदश्व लोमश नारद पर्वत रैभ्य जह्नु बसु परावसुआदि बड़े २ तपस्वी औ बेद वेदांग के पारगामी ऋषीश्वरोंको देख श्रीकृष्ण धौम्य औ भीमसेनआदि अपने भाइयों सहित राजा युधिष्ठिर सिंहासनसे उठे औ सब मुनीश्वरों को प्रणामकर आसनोंपर बैठाय अर्घ्य पाद्य आचमनआदि से उनका पूजनकरतेभये इस प्रकार सबका सत्कार कर बिनयसे नम्रहो राजायुधिष्ठिर श्रीवेदव्यासजी के प्रति कहनेलगे कि महाराज आपके अनुग्रहसे हमने निष्कण्टक राज्यपाया औ अपने शत्रु दुर्योधनकोमारा परन्तु अपने इष्टमित्र बंधुआदिबिना यहराज्यहमको सुखनहींदेता जिस प्रकार रोगी पुरुषको भोगबनमें रहनेके समय कन्द मूल से निर्बाह कर जैसा सुख हमको प्राप्त होताथा वैसा अब सब बन्धुओंको मार राज्य मिलनेसे नहीं होता जो हमारे गुरु बन्धु बिपत्तिमें रक्षाकरनेहारे भीष्मपितामह थे उनको हमने राज्यके लोभसे मारदिया इससे अधिक कौन दुष्कर्म होगा अविवेकमदसे अन्ध हम होरहे हैं औ हमारामन पाप रूप कर्दम से लिप्त होरहाहै उसको आप अपनी वाणी रूप निर्मल नदी प्रबाहसे क्षालन कीजिये। आपने पुराणों का संस्कार किया वेद बिभक्ति करे अब आप बुद्धिरूप दीपकसे धर्म का सर्वस्वहमको दिखावें ये सब धर्म के रक्षण करनेहारे मुनि आये हैं औ अपने नेत्र भ्रमरों करके आपके मुखकमल को पान कर रहे हैं अर्थशास्त्र धर्मशास्त्र औ मोक्षशास्त्र भीष्मपितामहसे श्रवण किये अब उनके स्वर्ग गमनके अनन्तर श्रीकृष्ण औ आप हमको उत्तम उपदेश करने वाले हैं औ इन सब मुनीश्वरों

को भी यह निश्चयहै कि युधिष्ठिर को व्यासजी अवश्य बिशेष धर्मों का उपदेश करेंगे इसलिये आप सबका मनोरथ सफल कीजिये यह राजा का बचन सुन व्यासजी बोले कि हे राजन् जो कुछधर्मका उपदेश आपको करनाथा सो सब हमनें भीष्मजीने मार्कंडेयने धौम्यने औ लोमशने किया औ तुमभी धर्मज्ञ गुणवान् औ बुद्धिमान् पुरुषोंके सम्मतहो धर्म अधर्मके निश्चयमें कोईबस्तु आपको अज्ञातनहीं अब जगत्का सृष्टिस्थिति संहार करनेहारे श्रीकृष्णभगवान् के सन्मुख धर्मका उपदेश करनेको किसकी जिह्वा प्रवृत्तहोसकतीहै इसलिये येही तुमको धर्मउपदेश करेंगे इतनाकहपांडवोंसे पूजनग्रहणकरव्यासजी तो अपने तपोबन को गये औ शान्तचित्त सबमुनीश्वर श्रीकृष्ण भगवान् के मुखकी ओर देखनेलगे कि ये क्याकहते हैं ॥

दूसरा अध्याय ॥

सृष्टिकी उत्पत्ति और भूगोल का बर्णन ॥

राजायुधिष्ठिर श्रीकृष्णभगवान्से पूछतेहैं कि यह जगत् किसमें स्थितहै कहां से उत्पन्न होताहै किस में लय को प्राप्तहोताहै औ इसका हेतु क्याहै पृथिवी पर कितने द्वीप कितने समुद्र औ कितने कुलाचलहैं पृथिवी का प्रमाण कितनाहै औ भुवनकितने हैं यह आप बर्णनकरें। यहप्रश्न सुन श्रीकृष्ण कहने लगे कि हे महाराज आपने जो पूछा सो पुराण का बिषयहै परन्तु हमने भी संसार में बिचरते हुये सुनाहै औ अनुभव किया है अब निर्गुण अज बिश्वरूप परमेश्वर को प्रणामकर हम उस बिषयका बर्णन करते हैं यह बात याज्ञवल्क्यमुनि ने सूर्य्यनारायण से पूछी थी

उनको सूर्य्यनारायणने जो उत्तरदिया वहहमने भी श्रवण किया वही आपको सुनातेहैं वह एक परमेश्वर सब प्राणियों में स्थितहै औ जलमें चन्द्रके प्रतिबिम्बोंकी भांति अनेक रूपसे देखपड़ता है ब्रह्मा विष्णु औ शिव ये तीनों सनातन देव एक परमात्माके स्वरूपहैं केवल इनमें नाम का औ क्रिया का भेद है वास्तवमें कुछभेद नहीं प्रक्रिया अनुषङ्ग उपोद्घात औ उपसंहार ये चार पाद वर्णनीय विषय के होते हैं यह जो विषय आपने पूछा बहुत बड़ा है परन्तु हम संक्षेपसे वर्णन करते हैं पुरुष करके अधिष्ठित प्रकृतिसे महत्तत्त्व उत्पन्न होता है महत्तत्त्व से त्रिगुण अहंकार अहंकार से पांच तन्मात्रा तन्मात्राओं से पांच महाभूत औ भूतों से चराचर जगत् उत्पन्न होता है प्रलयके समय स्थावर जंगम सब नष्टहोगये केवलजलहीसर्वत्र व्याप्तथा उसमें भूतात्मक अण्ड उत्पन्न हुआ कुछ कालके अनन्तर उसके दो खण्डहुये उनमें एकखण्ड भूमि औ दूसरा खण्ड आकाश भया अण्डके बीच जो उल्व अर्थात् जरायुथा उससे मेरु आदि पर्वत बने औ धमनी अर्थात् नाड़ी नदी रूपभईं मेरुपर्वत सोलहहजार योजन तो भूमिके भीतर है औ चौरासी हजार योजन भूमिके ऊपर है औ मेरुके मस्तक का विस्तार बत्तीस हजार योजन है भूमितो कमलरूपहै औ मेरु पर्वत कर्णिका है उसअण्डसे आदि देव आदित्य उत्पन्नभया जो प्रातःकालब्रह्मा मध्याह्न में विष्णु औ सायङ्काल में रुद्र रूपसे स्थित होताहै वह त्रयीमय एक आदित्य देवही तीनरूप धारता है ब्रह्मा से मरीचि अत्रि अंगिरा पुलस्त्य पुलह

क्रतु भृगु वशिष्ठ औ नारद ये नौ मानस पुत्र उत्पन्नभये पुराणोंमें इनकोभी ब्रह्माही कहते हैं दक्षप्रजापति के पुत्र जब क्षीणहोगये तब उनने कन्या उत्पन्नकरी जिनमें से दश कन्या धर्मको तेरह कश्यप को सत्ताईस चन्द्रमा को दो बहुपुत्रको दो कृशाश्वको चार अरिष्टनेमिको एकभृगु को औ एक शिवजीको दी जिनसे चराचर जगत् उत्पन्न भया मेरुपर्वतके तीनों शृंगोंपर ब्रह्मा विष्णु शिवकी पुरी हैं औ पूर्वआदि आठो दिशाओं में इन्द्रादि दिक्पालोंकी नगरीहैं हिमवान् हेमकूट निषध मेरु नील श्वेत औ शृंग-वान् ये सातजम्बूद्वीप में कुलपर्वतहैं जम्बूद्वीपका प्रमाण लक्षयोजन है औ उसमें नौवर्ष हैं जम्बू शाक कुश क्रौंच शाल्मलि प्लक्ष पुष्कर ये सातद्वीपहैं औ सातों समुद्रों क-रके वेष्टितहैं क्षारजल दुग्ध इक्षुरस सुरादही घृत औस्वादु जल इनके सातसमुद्रहैं सातोसमुद्र औ सातोद्वीप एकसे एक द्विगुणहैं भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनलोक तपोलोक औ सत्यलोक ये देवताओं के निवास स्थान सातलोकहैं महातल भूमितल सुतल निस्तल तल रसा-तल औ तलातल ये सातपातालहैं इनमें हिरण्याक्षआदि दानव औ वासुकिआदि नाग निवास करते हैं स्वायंभुव स्वारोचिष उत्तम तामस रैवत औ चाक्षुष ये छः मनु व्य-तीत होगये औ वैवस्वतमनु अब वर्त्तमानहै जिसके पुत्र पौत्रों ने यह पृथिवी व्याप्त कर रक्खी है बारह आदित्य आठ वसु ग्यारह रुद्र औ दो अश्विनीकुमार ये तेतीस देवता वैवस्वत मन्वन्तरमें कहे हैं विप्रचित्तिसे दैत्य औ हिरण्याक्षसे सब दानव उत्पन्नभये हैं द्वीप औ समुद्रोंकरके

युक्त भूमिका प्रमाण पचास कोटि योजन है औ नावकी भांति यह भूमिजलपर तरतीहै परन्तु गलती नहीं इसके चारोंओर लोकालोक पर्वतहै वहांतक सूर्यका प्रकाश पहुँचताहै उससे आगे अंधकार है जिसको सूर्यआदि भी नहीं निवृत्तकरसकते नैमित्तिक प्राकृत आत्यंतिक औनित्य यह चारभेद प्रलयके हैं यह संसार जिससे उत्पन्नहोताहै प्रलयकेसमय उसी में लीनहोजाता है ऋतुकेऊपर जिस भांति वृक्षोंकेपुष्प फलआदि आपही उत्पन्न होते हैं उसी भांति संसार भी अपने समय पर उत्पन्न होता है हिंस्र अहिंस्र मृदु क्रूर धर्म अधर्म सत्य असत्यआदि कर्मोंकरके भावितजीव अनेक योनियोंमें प्राप्तहोते हैं भूमिजलकरके जलतेजकरके तेजवायुकरके औ वायुआकाशकरके वेष्टित है आकाश अहंकारकरके अहंकार महत्तत्त्वकरके महत्तत्त्व प्रकृतिकरके औ प्रकृति उसअविनाशी पुरुषकरकेपरिवृत्त है इसभांतिके हजारों अण्ड उत्पन्नहोते हैं औ नाशकोप्राप्त होतेहैं यह सुर नर किन्नर नागआदिकरकेयुक्त जगत् नारायणके उदरमेंस्थित हैं शुद्धबुद्धि पुरुष इसको भीतर बाहिर से देखतेहैं परन्तु परमात्माकी मायाको कोईनहींजानता।

तीसरा अध्याय ॥

नारदजी को बिष्णुमाया का दिखाना ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्ण वह बिष्णुभगवान् की माया कैसीहै जो सब जगत्कोव्यामोह करतीहै उसका आप बर्णन कीजिये यह सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज एकसमय नारदमुनि श्वेतद्वीप में नारायण के दर्शन को गये वहां नारायण के दर्शनकर

उनको प्रसन्न देख नारदमुनिने प्रार्थनाकरी कि महाराज आपकी मायाकैसी है औ कहां रहतीहै आप उसका रूप मुझे दिखावैं यहनारद का बचनसुन बिष्णु भगवान् ने हँसके कहा कि हे नारद मायाको देखकरक्या करोगे और जो कुछ तुम्हारी इच्छाहोय सो मांगो तब फिर नारदजी ने यही कहा कि महाराज आप कृपाकर अपनी मायाही हम को दिखावैं और किसी बरकी हमको इच्छा नहीं इस प्रकार नारद का आग्रहदेख बिष्णु भगवान्ने कहा बहुत अच्छा आप हमारी माया देखिये यहकह नारदकी अंगुली पकड़ श्वेतद्वीपसे चले मार्गमें आय भगवान्ने वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारा कि शिखा यज्ञोपवीत कमण्डलु मृगचर्म धारे कुशाके पवित्र हाथोंमें पहिने वेदका पाठ करने लगे औ अपना नाम यज्ञशर्मा रक्खा यह रूप धार नारदसहित जंबूद्वीप में पहुंचे वेत्रवती नदी के तटपर शोभित बिदिशानाम नगरीमेंगये उस नगरमें धनधान्य करके समृद्ध बड़ा उद्यमी पशुपालन में तत्पर बहुत खेती करनेवाला शीरभद्रनामक एक वैश्यथा पहिले दोनों उसीके घरगये उसनेभी देखा कि कोई दोब्राह्मणहैं इनकाआदरकरना चाहिये यहबिचारकरउनका आसन आदिसे सत्कारकिया औ बोला कि हमारा अन्नजो आपको रुचै तो भोजनकीजिये तब हँसकर वृद्ध ब्राह्मणरूप भगवान् बोले कि तुम्हारे बहुत पुत्रपौत्र होयँ सब खेती औ व्यापारमें तत्पररहैं औ नित्य तुम्हारेपशु औ खेतीकी वृद्धिहोययह हमारा आशीर्बादहै इतनाकह वहांसे दोनों चले मार्गमें गंगाके तट पर ढिक्कानाम गांवमें गोस्वामीनाम ब्राह्मण रहताथा उस

क समीप पहुंचे वहभी अपने खेतकी चिंतामें लगरहा था उसको भगवान्ने कहा कि हमबहुतदूरसे आयेहैं औ तुम्हारे अतिथि हैं हमको भोजन करावो यह उनका वचन सुन दोनोंको संगले ब्राह्मण अपने घरआया वहां अपनी पत्नीसे कहा कि ये दो अतिथि हैं इनकी भलीभांति भोजनआदिसें शुश्रूषाकरो उसने भी पतिकी आज्ञानुसार दोनों को स्नानकराय भोजनकराया भोजनकर रात्रिको सुखपूर्वक उत्तमशय्यापर सोये ब्राह्मण भी उनकी सेवामें रहा प्रभात उठ भगवान्ने ब्राह्मणसे कहा कि हमतुम्हारे घरमें बहुतसुखसे रहे अबजाते हैं परमेश्वरकरे कितुम्हारी खेती निष्फलहोय औ संतान भी न बढ़ैइतनाकह वहां से चलदिये मार्गमें नारदने पूछा कि महाराज बैश्यने कुछ शुश्रूषा न करी जिसको तौ आपने उत्तम बरादिया औ इस ब्राह्मण ने इतनी सेवाकर यह शापरूपआशीर्वाद पाया इसमें क्याहेतुहै यहसुन भगवान् बोले कि हे नारद बर्ष भर मत्स्य पकड़नेवाले को जितना पाप होताहै उतना एक दिन हलजोतने से होता है इसीसे खेतीकरने वाला नरकको जाताहै वह शीरभद्र बैश्य अपनेपुत्रपौत्रों सहित इसी कार्य्य में तत्परहै औ घोर नरक में जायगा इसीसे हमने उसके घरमें विश्राम न किया औ भोजनभी न किया औ इस ब्राह्मण के घरमें भोजन किया औ ऐसा आशीर्वाद दिया कि जिससे संसार जालमें न फँसै औ मुक्तिपावै इसप्रकार बातचीत करतेहुये दोनों कान्यकुब्ज के समीप पहुँचे वहां एक अतिरमणीय सरोवर देखा उस सरोवर की शोभा देख प्रसन्नहो भगवान् ने नारदसे कहा

कि हे नारद यह उत्तम तीर्थ है औ आज पुण्यतिथि है इसलिये तुम स्नानकरो पीछे वशिष्ठजीके नामसे प्रसिद्ध श्रीमहोदय नाम इस नगरमें प्रवेश करेंगे इतनाकह भगवान् उस सरोवर में झटपट एक गोतालगाय बाहिर निकलआये औ नारदजीभी स्नान करनेको सरोवरमें प्रविष्ट भये स्नानकर जब बाहिरआये तो एक अतिरूपवती स्त्री बनगये जिसके बड़े २ नेत्र चन्द्रसा मुख कामदेवके पाशों केसमानकर्णदर्पण से कपोल तिल पुष्पके समान नासिका कामधनुष से भ्रू हीरे से दांत मूँगाके तुल्य अतिरक्त वर्ण अधर मयूर के कलाप के समान केशपाश शंखकी भांति तीन रेखाओं करके शोभित कण्ठ माधवी लताकी भांति कोमल औ सरल जिसकेभुज रक्तवर्णके नख औ पतली २ अँगुलियोंसे शोभित कमलसे भी कोमल औ अरुण जिसके हस्तपीन ऊँचे कठोर गोल अविरलश्लक्षण कलशके समान जिसके स्तन मानो चक्रवाकों का जोड़ाहोय मुष्टिग्राह्य जिसका मध्य अतिगम्भीर औ वर्त्तुल जिसकीनाभि तीन वलियों करके भूषित जिसका उदर अति सुन्दर जिसकी रोमावली कामदेवका निवासस्थान अतिविस्तीर्ण जिसका नितम्ब नितम्बके मध्यमें अति शोभित जिसके कुकुन्दर अर्थात् नितम्ब कूप कदली स्तम्बके समान जिसके ऊरु सीधी रोम रहित औ कोमल जिसकी जांघ दोनों गुल्फ अर्थात् टंकने जिसके अतिगूढ़ रक्तवर्ण की अंगुली औ सुन्दर नखोंसे भूषित रक्तकमलके समान जिसके चरण जो भलीभांति भूमिपर टिकजाय इसप्रकार सब उत्तम लक्षणों करके युक्त जगत्को व्यामोह करनेवाली अति रूपवतीस्त्री

सरोवरसे निकली जिसप्रकार समुद्रसे लक्ष्मी उसकोदेख भगवान् तो अन्तर्द्धानभये औ वह स्त्रीभी यूथच्युत हरिणी की भांति इधरउधर भयभीतहो देखनेलगी इसी अवसर में अपनी सेना साथलिये राजातालध्वज वहां आया औ उस नारीको देख कामातुरहो चिन्तन करनेलगा कि यह स्त्री कौनहै कोई देवांगना है कि अप्सरा है इसका रूपही देख मूर्च्छा होतीहै इतना विचार कर राजाने उससे पूछा कि हे बाले तू कौनहै औ इसस्थानमें कहांसे आई है यह राजाका वचनसुन उसने कहा कि महाराज मैं माता पिता से हीन औ निराश्रयहूँ बिवाह भी मेरा नहीं भयाहै अब आपके शरणहूँ यहसुनतेही प्रसन्नहो राजाने उसको अपने पीछेघोड़ेपर चढ़ालिया औ अपनी राजधानीमें लाकर विधि पूर्वक उससे बिवाहकिया बिवाहके अनन्तर महलोंमें उपव- नोंमें सरोवरोंके तीरोंपर पर्वतके शृंगोंपर नदी समुद्र आदि के तटोंपर ऊँचे २ प्रासादोंपर उस उत्तम स्त्रीके साथ राजा बिहारकरनेलगा इसप्रकार बिहारकरते २ एकदिनकी भांति बारहबर्ष बीतगये तेरहवेंबर्ष में उसको गर्भरहा औ समय पराहोनेपर एक अलाबु अर्थात् तूँबा उत्पन्नभया जिसमें सैकड़ों छोटे २ बालकथे वे सब घृत कुण्डोंमें छोड़गये औ थोड़े दिनोंमेंही बड़े पराक्रमी हृष्टपुष्टहोगये उनसबके बिवाह भये औ पुत्र पौत्रोंकी बहुत वृद्धि भई वे सब अहंकारी पर- स्पर बिरोधी औ राज्यकी कामनावाले थे कुछ कालके अ- नन्तर राज्य के लोभ से कौरव पाण्डवों की भांति उनका परस्पर युद्धहुआ औ यादवों के तुल्य सबके सब नष्टहो- गये इस प्रकार अपने कुलका संहार देख वह स्त्री शिर

औ छातीपीट २ विलाप करनेलगी औ मूर्च्छितहो भूमि पर गिरी औ राजाभी शोकसे अतिपीड़ितहो रोदनकरता था इस अवसर में ब्राह्मण का वेषधार देवताओं सहित विष्णुभगवान् आये औ राजारानीको उपदेश करनेलगे कि तुमदोनों शोककर बहुतरोदन मतकरो यह विष्णुमाया ऐसेहीहै सैकड़ों चक्रवर्ती औ हजारों इन्द्र दीपककीभांति कालरूप प्रचण्डपवनने नष्टकरदिये जोपुरुष समुद्रसुखाने को भूमि पीसकर चूर्णकरडालने को पर्वत पीठपर उठाने को समर्थभये वेभी समयपाय कालके कराल मुखमेंगये त्रिकूटपर्वत जिसकादुर्ग अर्थात् किला समुद्र उसकीखाई लंकाराजधानी राक्षस जिसकेयोधा वहसबशास्त्र औ वेद जाननेहारा रावणभी न रहा युद्धमें घरमें पर्वतपर समुद्रमें चाहे जहांजाय जो भावी है वहीहोता है पातालमें जाय इन्द्रलोकमें प्रवेशकरै मेरु पर्वतपर चढ़जाय मन्त्रऔषध शस्त्रआदि करके चाहेजितनी अपनी रक्षाकरै परन्तु जो होनाहोताहै वह होताहीहै इसमें कुछ सन्देहनहीं मनुष्यों को भाग्यानुसार जो कुछ शुभअशुभ प्राप्तहोना होता है वहअवश्यही होताहै हजारों उपायकरो परन्तु भावीकिसी प्रकार नहींटलसक्ती कोई आंसूटपकाय रोताहै कोई बड़ी प्रसन्नतासे नाचताहै कोई हृदयको हरनेहारा गीतगाताहै कोई धनकेलिये अनेक प्रकारके जालरचता है इसभांति यह संसार एक प्रकारका नाटकहै औ सब जीव अनेक रूप धारनेवाले नटहैं इतना उपदेशकर उस रानीका हाथ पकड़ भगवानने कहा कि विष्णुमाया देखली ८
स्नानकर अपने पुत्रपौत्रोंका और्ध्व दैहिककरो २

उसीपुण्यतीर्थ में उसको स्नानकराया स्नान करतेही स्त्री-
रूपछोड नारदमुनि अपने रूपको धारण करतेभये राजा
नेभी अपनेमन्त्री औ पुरोहितों सहित देखा कि जटाधारे
यज्ञोपवीत पहिने दण्ड कमण्डलु हाथोंमें लिये खड़ाउँओं
परचढ़े बड़े तेजस्वी एकमुनिहैं मेरी रानीनहीं उसीसमय
भगवान् नारदका हाथपकड़ वहां से आकाशमार्ग करके
चले औ क्षणमात्र में श्वेतद्वीप पहुँचे औ नारदसे कहा
कि हे देवर्षि हमारीमाया देखी नारदजीनेभी हँसकर उन-
को प्रणामकिया औ भगवान्‌की आज्ञापाय तीनोंलोकोंमें
बिचरनेलगे इतनी कथासुनाय श्रीकृष्णबोले कि महाराज
यह विष्णुमायाका हमने संक्षेपसे वर्णन कियाहै इसमाया
के प्रभावसे संसारकेजीव पुत्र कलत्र धनआदिमें आसक्त
होकर कोई रोते हैं कोई हँसते हैं कोई गाते हैं औ अनेक
प्रकारकी चेष्टा करते हैं ॥

चौथा अध्याय ॥

संसार के दोषों का वर्णन ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र यह जीव
कौनसे कर्मसे देवता मनुष्य औ पशुआदि योनिमें जन्म
लेता है औ अतिदारुण गर्भवास का क्लेश कैसे सहता है
गर्भमें क्याखाताहै स्वरूप औ धनवान् किसकर्मसेहोताहै
औ पंडितपुत्रवान् त्यागीहोकरभी अल्पायुष् क्योंहोजाता
है सुखपूर्वक क्योंकर मरणहोताहै औ शुभाशुभ कर्मकाभोग
किसप्रकार जीवकरताहै यह आप विस्तारसेवर्णनकरैं यह
राजाकाप्रश्नसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि महाराज
उत्तम कर्मसे देवयोनि मिश्रकर्मसे मनुष्ययोनि औ केवल

अशुभ कर्मसे तिर्यक्योनिमें जीव जन्मलेताहै इस धर्मअ-
धर्मके निश्चयकेलिये श्रुतिहीप्रमाणहै पापसेपापयोनि औ
पुण्यसे पुण्ययोनिप्राप्तहोतीहै ऋतुकालमें निर्दोषशुक्र वायु
करके प्रेरित शोणितकेसाथ एकताको प्राप्तहोताहै शुक्रके
साथही कर्मोंकरके प्रेरित जीव भी योनिमें प्रविष्ट होता है
एकदिनमें वह शुक्र शोणित मिलकर कललबनताहै पांच
रात्रिमें कलल बुद्बुदरूप होजाता है सात रात्रिमें बुद्बुद
की मांसपेशी बनतीहै चौदह दिनमें वह मांसपेशी मांस औ
रुधिरसे व्याप्तहोकर दृढहोजातीहै पचीसदिनमें उसपेशीमें
अंकुर निकलते हैं महीने में उस अंकुरों के पांच २ भाग
होजाते हैं औ चारमास में वेही अंकुरों के भाग अंगुली
बनजाते हैं पांचमहीनोंमें मुख नासिका औ कर्ण बनते हैं
छःमहीनेमें दन्तपंक्ति नख औ कर्णोंके छिद्र बनते हैं सात
महीने में गुदालिंग अथवा योनि औ नाभि बनते हैं औ
अंगोंमें संकोचभी होताहै आठ महीनेमें अंग प्रत्यंग सब
सम्पूर्ण होजाते हैं औ शिरमें केशभी आजाते हैं माता के
भोजन का रस नाभिके द्वारा बालकके शरीर में पहुँचताहै
उसीसे उसकापोषणहोताहै गर्भमेंस्थितजीव सबसुखदुःख
समझताहै औ यह बिचार करताहै कि मैं अनेक योनियों
में जन्मा औ बारम्बार मृत्यु वश भया अब जन्महोतेही
फिर संसार बन्धनमें प्राप्तहूँगा इस प्रकार अनेक बिचार
करताहुआ औ मोक्षका उपाय सोचता हुआ जीव अति
दुःखी गर्भमें रहताहै पहाड़के नीचेदबजानेसे जितनाक्लेश
जीवको होयउतना जरायुसे वेष्टित होनेकरके होताहै समुद्र
में डूबनेसे जो दुःखहोय वही दुःख गर्भके जलमें भीगनेसे

होताहै तप्तलोह स्तंभसे बांधनेमें जीव जो क्लेशपाताहै वही गर्भ में जठराग्नि के ताप से होताहै तपाईहुई सूचियों से वेधने करके जो व्यथाहोतीहै उससे आठगुणी अधिकगर्भ में जीवको होतीहै गर्भवास से अधिक कोई दुःख जीवोंके लिये नहीं है गर्भवास से कोटिगुण अधिक क्लेश जन्मते समय योनियन्त्रके पीड़नसे होता है उस दुःख से मूर्च्छा होजातीहै सूतिमारुतकी प्रेरणासे गर्भके बाहिर निकलताहै जिसप्रकार कोल्हूमें पीड़न करनेसे तिल निस्सारहोजाते हैं इसीप्रकार शरीरभी योनियन्त्रके पीड़नसे निःसत्त्वहोजाता है मुखरूप जिसका द्वारहै दोनोंओष्ठ कपाटहैं सब इन्द्रिय गवाक्ष अर्थात् जाली झरोखे हैं दन्त जिह्वा गल बात पित्त कफ जरा शोककाम क्रोध तृष्णा राग द्वेष आदि जिसमें उपकरणहैं ऐसायह देहरूप अनित्य गेह नित्य आत्मा का निवास स्थानहै शुक्र शोणितके संयोगसे शरीर उत्पन्न होताहै औ नित्यही मूत्र विष्ठा आदिसे भरा रहताहै इसलिये अत्यन्त अपवित्र है जिसप्रकार विष्ठा से भराहुआ घट बाहिरके धोनेसे शुद्ध नहींहोता इसीभांति यह देहभी स्नान आदिसे शुचि नहीं होसक्ता पंचगव्य आदि शुचि पदार्थ जिसके संगसे अशुचिहोजातेहैं उससे अधिक और कौन पदार्थ अशुचिहोगा उत्तम भोजन पान आदि देहके संसर्गसे मलरूप होजाते हैं फिर देहकी अपवित्रता क्या वर्णनकरैं बाहिरसे चाहेजितना देहको शुद्धकरो परन्तु भीतर तो कफ मूत्र विष्ठा आदि भरेही रहेंगे चाहे जितने सुगन्ध देह में लगावो परन्तु कभी इस देहका मालिन्य दूर नहींहोता यह आश्चर्य्य है कि सब मनुष्य अपनेदेह

का दुर्गन्ध सूँघकर नित्य अपना मल मूत्र देख कर औ नासिका का मल निकालकर भी इस देहसे विरक्त नहीं होते औ उनको देहमें घृणा नहीं उत्पन्नहोती मोहकाबड़ा प्रभावहै कि शरीरके दोषदेखकर औ इसकादुर्गंध सूँघकरभी इससे ग्लानिनहींहोती जन्महोतेही बाहरका पवनलगनेसे सबपूर्वजन्मका स्मरणजातारहताहै औजीव संसारकेव्यव- हारमें आसक्तहो अनेक दुष्कर्म करते हैं औ अपनेको तथा परमेश्वरको भूलजातेहैं आंखोंकेहोते नहींदेखते बुद्धिकेहोते भलाबुरा नहींसमझते सूधेमार्गमेंभी उनकेपैर खिसलते हैं यह सब मोहमहिमाहै दिव्यदर्शी महर्षियों ने यहगर्भका वृत्तांत प्रकटकियाहै इसको सुनकर भी मनुष्योंको वैराग्य नहीं उत्पन्नहोता औ अपना कल्याण नहींकरते यहबड़ा- ही आश्चर्यहै बाल्यावस्थामेंभी केवलदुःखहीहै कि बालक अपना अभिप्रायनहीं कहसक्ता औ जो चाहै वहकामनहीं करनेपाता इससे नित्यब्याकुलरहताहै दांत ऊगने के स- मय बालक बहुत क्लेशभोगते हैं औ भांति २ के रोग औ बालग्रह उनको सताते हैं क्षुधा तृषासे पीड़ितहो रोदन करते हैं मोहसे बालक बिष्ठा आदि भी भक्षण करलेते हैं फिर कर्णवेध के समय दुःखहोताहै अक्षरारम्भके अवसर में गुरुसेबड़ाही त्रासहोताहै माता पिता ताड़नकरतेहैं युवा- वस्थामें भी सुखनहीं अनेकप्रकार की ईर्षा मनमें उपजती हैं कामदेव सताताहै रात्रिको निद्रा नहींआती औ धनकी चिंतासे दिनमेंभी चैननहीं पड़ता स्त्री से संग करके वीर्य- पात करनेमें कुछ बिशेष सुखनहीं इतनाही सुखहै जितना पकेहुये गंड अर्थात् गूमड़के फूटजानेसे होताहै अथवा

मूत्र बिष्ठाआदित्याग करनेसेहोताहै इससे अधिक नहीं बिचारकरो तो सबदोषोंके निवासस्थान अतिअशुचिनारी के देहमें कोई बस्तुसुखदेनेहारी नहीं है अपमानने सन्मान बियोगने प्रियसंगम औ बुढ़ापे ने यौबन नष्ट किया अब सुख काहेसेहोय जो पुरुष युवावस्थामें नारियोंको अति प्रियहोता है वही जब बूढ़ाहोजाय शरीरकांपनेलगे सब अंग जर्जरहोजायँ तब किसीकोभला नहींलगता इतनी दुर्दशादेखकरभी पुरुषोंको वैराग्यनहीं उपजताबुढ़ापे में दुराचार पुत्रपौत्र आदि अवज्ञाकरतेहैं तब अत्यन्त दुःख होताहै बुढ़ापेमें कोई कर्म नहीं सिद्ध होसक्ता इसलिये युवावस्थामेंही अपना हित साधनकरै बात पित्त आदि के बैषम्य अर्थात् न्यून अधिक होनेसे अनेकरोगहोते हैं औ यह शरीर रोगोंकाघरहै फिरसुख कैसेहोय एकसौएक मृत्यु इसदेहकेहैं उनमें एक तो कालमृत्युहै बाकी सौमृत्यु आगंतुक अर्थात् अकालमृत्यु हैं आगंतुकमृत्यु जप होम औषध आदिसे टल भी जातेहैं परन्तु कालमृत्यु का कोई उपायनहीं अनेक प्रकारके रोग सर्प शस्त्र बिष क्रोधआदि आगंतुकमृत्युके द्वारहैं जब कालमृत्यु आयपहुंचे तब धन्वंतरि भी कुछनहीं करसक्के औ औषध तन्त्र मन्त्र तप दान रसायन योग आदि भी रक्षानहीं करसक्के मृत्युके समान कोईदुःख जीवोंको नहीं है पुत्र स्त्री मित्र राज्य ऐश्वर्य धनआदि सबसे मृत्यु बियोग करादेताहै औ बड़े २ बैरभी मृत्युसे निवृत्तहोते हैं सौवर्ष का आयुष् पुरुषकाहै परन्तु कोई अस्सी कोई सत्तर और प्रायःसाठ बर्ष मनुष्य जीतेहैं औ बहुतसे साठसेपहिलेही मृत्युबशहोतेहैं जितना

मनुष्यका आयुषहोय उसकेआधेको तो रात्रि हरलेती है बीसबर्ष बाल्य औ बुढ़ापेमें वृथाबीतते हैं यौवन अवस्था में अनेक प्रकार की चिन्ता औ कामकी व्यथा रहती है इसलिये वह समय भी निरर्थकही जाताहै इसभांति यह आयुष् समाप्त होजाताहै औ मृत्यु आय पहुँचताहै मरण के समय जो दुःखहोताहै उसकी कोई उपमा नहीं देसक्के हे माता हे पिता अरेभाई इसभांति पुकारतेहुये को मृत्यु ग्रसलेताहै जैसे मेंडकको कालासर्प्प व्याधिसे पीड़ित खाटपरपड़ा इधर उधर हाथ पैर पटकताहै लम्बे सांस लेता है खाटसेभूमिपर औ कभी भूमिसे खाटपर जाताहै परन्तु कहीं चैननहीं पड़ता कंठमें घुर २ शब्द होने लगताहै मुख सूखताजाताहै शरीर मूत्र बिष्ठाआदिसे लिप्तहोजाता है बाणीबन्ध होजातीहै पड़ा २ चिन्ता करताहै कि मेरेधनको कौन भोगैगा औ मेरेकुटुम्बकी रक्षा कौनकरैगा इसप्रकार अनेकयातना भोगकर मनुष्यमरताहै औ इसदेहसे निकलतेही जीव दूसरे देहमें प्रबिष्ट होजाताहै मरणसे अधिक दुःखविवेकी पुरुषोंको याचन अर्थात्मांगनेसे होताहै देखो विष्णुभगवान् भी बलिको याचना करने से वामनहोगये फिर और तो ऐसा कौनहै जो याचना करनेसे लाघवको न प्राप्तहोय आदि अन्त औ मध्यमें दुःखहीहै बहुतखाओ तो दुःख थोड़ाखाओ तो दुःख किसीसमयभी सुखनहीं है क्षुधा सब रोगोंमें प्रबलहै औ इसका औषधं अन्नहै इसलिये अन्नभी सुख का साधन नहीं प्रभात उठतेही मूत्र विष्ठाआदिकी बाधा मध्याह्नमें क्षुधा तृषाकीपीड़ा औ पेट भरनेपर कामकी व्यथाहोती है रात्रिको निद्रा दुःखदेती है

धनके सम्पादनमें दुःख सम्पादित धनकी रक्षा करने में दुःख फिर उसके ब्ययकरने में अतिदुःख होता है इससे धनभी सुखदायकनहीं चोर जल अग्नि राजा औ यक्ष इनसे सदा धनवानों को भय रहताहै जिसप्रकार मांसको आकाशमें फेंको तो पक्षीभूमिपर श्वानआदिजीव औ जल में फेंको तो मत्स्य खाजाते हैं इसीप्रकार धनवान्‌कोभी सर्वत्र भक्षणकरते हैं सम्पादन के समय दुःख सम्पत्तिके समय मोह औ नाश होजानेपर सन्ताप धनसेहोताहै इस लिये किसीकालमेंभी धन सुखका साधननहीं हेमन्तऋतु में शीतकादुःख ग्रीष्ममें दारुणसन्तापका औ बर्षाऋतुमें बर्षा का दुःखहोता है इसलिये कालभी सुखदायक नहीं बिबाहमें दुःख स्त्री गर्भवतीहोय तब दुःख प्रसवके समय दुःख औ पतिके विदेश गमनमें दुःख सन्तानके दांत नेत्र आदिके दुखनेसे दुःख इसभांति स्त्रीभी सदा ब्याकुल र-हतीहै कुटुम्बियों को ये चिन्ता रहतीहैं कि गौ नष्टहोगई खेती सूखगई भृत्य चलागया घरमें पाहुनआया स्त्री के अभी सन्तानभई है इसकेलिये रसोई कौन बनावैगा इ-त्यादि हजारोंचिन्ता कुटुम्बियों के लगी हैं जिनसे उनके शील श्रुत बुद्धि औ सम्पूर्णगुण नष्टहोतेजातेहैं जिसभांति कच्चेघड़े में जलघड़ेसहित नष्टहोता है इसीभांति गुणोंस-हित देह कुटुम्बी मनुष्यका नाशको प्राप्तहोताहै राज्यभी सुखका हेतुनहीं जहां नित्य सन्धि विग्रहकी चिन्ता लगी रहै औ पुत्रसे भी भय बनारहै वहां सुखका लेशभी नहीं अपनी जातिसे सबको भय होता है जिसप्रकार एकमांस खंडके अभिलाषी श्वानोंको परस्पर भयरहताहै इसभांति

संसारमें कोई सुखी नहीं ऐसा कोई राजा नहीं जो सबको जीत सुखसे राज्यकरै एकको दूसरेसेभयरहताहीहै इतना कह श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे महाराज यह कर्ममय शरीर जन्मसेलेकर दुःखीहै जो पुरुष जितेन्द्रिय औ ब्रत उपवासआदिमें तत्पररहतेहैं वे जन्मांतरमेंसुखीहोते हैं ॥

पांचवां अध्याय ॥

महापातक पातक आदिका वर्णन ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अधम कर्म करनेसेजीव घोरनरकमें गिरते हैं औ अनेक प्रकारकी यातना भोगते हैं उस अधम कर्मकोही पाप औ अधर्म कहते हैं चित्तवृत्तिकेभेदसे अधर्मके भेदजानने चाहिये स्थूल सूक्ष्म अतिसूक्ष्मआदि भेदोंकरके करोड़ों प्रकारके पाप हैं परन्तु हम बड़े २ पापोंका संक्षेपसे वर्णनकरते हैं परस्त्रीका चिन्तन परधन हरण की इच्छा दूसरे का अनिष्ट चिन्तन औ अकार्य में अभिनिवेश ये चार मानस पापहैं असत्य अप्रिय परनिन्दा औ पैशुन्य अर्थात् चुगली ये चार वाचिक पाप हैं अभक्ष्य भक्षण हिंसा मिथ्या कामसेवन औ परधन हरण ये चार पापकायिक हैं इनकर्मोंके करनेसे नरकप्राप्तिहोती है औ जो पुरुषविष्णुभगवान्से द्वेषरखते हैं वेभी घोर नरक में पड़ते हैं ब्रह्महत्या सुरापान सुवर्ण की चोरी औ गुरुस्त्रीगमन ये चार महापातक हैं इन पातक करनेवालों का संसर्गी मनुष्य पांचवां महापातकी गिनाजाताहै ये सब नरकको जातेहैं जो कुल्न ब्राह्मण को आशा देकर पीछे क्रोधसे लोभसे द्वेष से अथवा भयसे निराश करदेते हैं उनको ब्रह्महत्याका पापहोताहै जो विद्या

के बलसे ब्राह्मणोंका तिरस्कारकरै वहभी ब्रह्महाहै जो अ-
पनी मिथ्या स्तुतिकरके अपने गुणोंका उत्कर्ष दिखावै अ-
गुरुओंके प्रतिकूलहो वह ब्रह्महाहै क्षुधा तृषासे व्याकु-
ब्राह्मण भोजनकरनेलगे उससमय जो विघ्नकरै वह ब्रह्मह-
है पिशुन सब लोकों के छिद्र ढूँढ़नेहारा औ क्रूरपुरुष भ-
ब्रह्मघ्नके समानहै तृषाकरके पीड़ित गौ जलपीनेलगे उस
समय जो विघ्नकरै वह ब्रह्महत्याका भागीहोताहै दूसरेप-
जो मिथ्यादोष आरोपणकरै औ क्रोधीहोय वह ब्रह्महाहै
देवता ब्राह्मण औ गौओं की जो वृत्ति हरै वह ब्रह्महा है
ब्राह्मण का न्यायोपार्जित धन हरै तो ब्रह्महत्या के स-
मान पापहोय अग्निहोत्र का त्याग माता पिता का त्याग
झूठीसाक्षी मित्रद्रोह गौओंके मार्गमें बनमें औ ग्रामआ-
दिमें अग्नि लगादेना ये सब घोरपाप सुरापानके समानहैं
स्त्री हाथी घोड़ा गौ भूमि चांदी रत्न ओषधी चन्दन अगुरु
कपूर कस्तूरी रेशमीकपड़ा इनसबका चोरना सुवर्णस्तेय
के तुल्यहै वरयोग्य कन्याका बिवाह नकरना पुत्र मित्रआ-
दि स्त्री भगिनी कुमारी नीचस्त्री औ दूसरे वर्णकी स्त्री इन
के साथ संग करना गुरु स्त्रीगमनकेसमान है महापातकोंके
तुल्य ये सबपातककहाते हैं। अब उपपातकोंका वर्णनकरते
हैं। ब्राह्मण को कोई पदार्थ देना कहकर फिर नहीं देन
ब्राह्मणका धनहरना अत्यंतअहंकार अतिक्रोध दांभिकत्व
कृतघ्नता कृपणता विषयोंमें अतिआसक्ति सत्पुरुषोंसे द्वेष
परस्त्री हरण कुमारीगमन आश्रमआदि को पीड़ादेना स्त्री
पुत्र आदिका बेचना तीर्थयात्रा ब्रत उपवास यज्ञआदिका
फल विक्रयकरना स्त्रीधनसे निर्वाहकरना स्त्री की रक्षा न

करना मद्यपान करनेहारी स्त्रीसे संगकरना ऋणलेकर न देना निन्दित धनका ग्रहणकरना विषदेना मारण उच्चाटन विद्वेषणआदि अभिचार कर्मकरना मूल्यलेकर पढ़ाना औ पढ़ना सबबस्तु भक्षणकरना देवता अग्नि साधु गौ ब्राह्मण राजा औ पतिव्रताकी निन्दाकरना दुःशीलता नास्तिकता रजस्वला पशुस्त्री औ नीचस्त्रीसे मैथुनकरना सबकाल में मैथुनकरना स्त्री पुत्र मित्र आदिकी प्रीतिमें विघ्नकरदेना प्रतिज्ञा भंगकरना तलावबन्ध रास्ता पुल आदिको तोड़ देना एकपंक्तिमें भोजनका भेदकरना ये सब उपपातक हैं इन पापोंके करनेहारे पुरुषोंका जो संसर्गकरैं वेभी पातकी होतेहैं परस्त्रीको दूषितकरनेहारे परद्रव्य हरनेहारे ब्राह्मणों को अनेकप्रकारोंसे दुःखदेनेवाले सुरापान करनेवाले द्विज होकर शूद्रकी सेवामें तत्पर गोष्ठ जल अग्नि रथ्या अर्थात् गली औ वृक्षकी छाया इनको नाशकरनेहारे झूठा पत्र लिखनेवाले झूठे साक्षी धनुष शस्त्र औ शय्याबेचने वाले पशु दमनकरनेहारे अर्थात् बैलबधिया करनेहारे स्वामी भृत्य औ गुरुसेद्रोह करनेहारे मायावी शठ भार्या पुत्र मित्र बालक वृद्ध दुर्बल रोगी भृत्य अतिथि बंधुआदि को भूखामारनेवाले एकाकी मीठाभोजन करनेवाले बैलों के साथ गौकोभी जोतनेवाले बकरी भेड़ भैंसआदिसे जीविका करनेवाले औ शस्त्रसे वृत्तिकरके निर्बाह करनेहारे नरकको जातेहैं जो अपने आश्रममें आये भूखे प्यासे औ थकेहुये अतिथिका सत्कार नहींकरते औ बालक वृद्ध अनाथ विकल दीन रोगी दुर्बलआदिपर दयानहीं करते वे नरकगामीहोते हैं शिल्पी सुनार वैद्यआदिभी नरकके अ-

धिकारीहैं जोब्राह्मण राजासे दानलेते हैं वे नरकको जाते हैं परदारगामी औ चोरको जोपापहोत्ताहै वहीरक्षानकरनेवाले राजाकोहोताहै औ उससेभी अधिक उसब्राह्मणको पातक लगताहै जो राजप्रतिग्रह ग्रहणकरै घी तेल अन्न पान मधु मांस सुरागुड़ क्षार इक्षु शाक दही मूल फल तृण काष्ठ पुष्प पत्र औषध कांस्यपात्र जूता छतुरी शकट आसन शय्या तांबा सीसा रांग कांसी कर्पास बाद्य घरके उपकरण औरभी छोटीमोटी बस्तु जो पुरुष किसीकीहरैं वे सबनरकको जाते हैं सरसोंके समानभी पराई बस्तु चोरै तो नरक में अवश्य ही पड़ै इसभांतिके पापकरनेहारे मनुष्योंको मरणकेअनन्तर यमदूत नरकमें लेजातेहैं औ यमराज उनकोदंडदेता है औ जो पुरुष भूलसे पाप करते हैं उनको गुरु शासन करके प्रायश्चित्त करादेताहै इसलिये वे नरकनहीं देखते औ परदारगामी तथा चोर आदिको राजादंडदेताहै औ जो गुप्त पापीहोय तो यमही शासन करताहै प्रथमतोइन पापोंसे बचै औ जो कभी भूलसे बनभी पड़ै तो प्रायश्चित्त कर देवै जो पुरुष मन बचन कर्मसे पापकरैं दूसरेसे करावैं अथवा पाप करतेहुये पुरुषों का अनुमोदन करैं वे सब नरक को जाते हैं ये पापकेभेद संक्षेपसे वर्णन किये हैं इस भांति हज़ारों प्रकारके पाप और भी हैं मन बचन और शरीर से अनेक प्रकारके पाप करनेहारे नरक में पड़ते हैं औ यमयातना भोगते हैं औ जो पुरुष उत्तम कर्म्म करते हैं वे स्वर्गमें सुखसे आनन्द भोगते हैं ॥

छठा अध्याय ॥

शुभाशुभ कर्मोंके फल औ नरकों का वर्णन ॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि महाराज इनपापोंके करनेसे जीव घोरनरकोंको जाते हैं यमराजकी सभामें सबके शुभ अशुभकर्मोंका बिचार चित्रगुप्त आदिकरते हैं औ कर्मानुसार फलभोगनापड़ताहै इसलिये सदा शुभ कर्महीं करने चाहिये किये कर्म्म का बिना भोग किसी प्रकार क्षयनहीं होता। अब पुण्य कर्मोंके फलकाबर्णनकरतेहैं। जो ब्राह्मणों को जूता अथवा काठकी खड़ाऊं पहिनावे वह उत्तम बिमानमें बैठकर यमलोकको जाताहै बागलगानेहारे कुआं बावड़ी तलाव आदि बनवाने वाले उत्तम बिमानों पर बैठ ठंढी २ छायामें जाते हैं देवता गुरु अग्नि ब्राह्मण माता पिता आदिकी शुश्रूषा करनेहारे बड़े सत्कारपूर्वक उत्तम बिमानमें आरूढ़हो गमन करते हैं दीपदान करनेहारे प्रकाशमें जाते हैं अन्न औषधी आदि देनेहारे सुखपूर्वक जाते हैं बाहन दान करनेहारोंको पैरोंसे नहीं चलनापड़ता भूमिदानकरने वाले सब भांति सुखसे जाते हैं अन्नदान से खातेपीते सुखसे बिमानमें बैठजाते हैं सब दानोंमें अन्न दान उत्तमहै जिससे शीघ्रही प्रसन्नता होजाय तीनों लोकों का जीवन अन्नहै इसलिये अन्नदानके समान कोई दाननहीं अन्न बाहन गौ बस्त्र भूमि शय्या छत्र औ आसन इन आठोंका दान परलोकमें हितप्रद है परन्तु इन सबमें अन्नदान प्रधानहै धर्म करनेहारे सुखपूर्वक यमलोक में जाते हैं औ पापी अनेक प्रकारके दुःख भोगते वहां पहुँचते हैं इसलिये सदा धर्म्महीं करना चाहिये छियासी

हजारयोजन जाकर यमराजके नगरमें पहुँचतेहैं पुण्यात्मा-ओंको यहीमार्ग थोड़ासा जानपड़ताहै औ पापियोंके लिये बहुत लम्बा होजाता है पापीजिसमार्ग में चलते हैं उसमें तीखेकांटे कंकर रेता कीचड़ गढ़े औ तरवारकी धारके स-मान तीक्ष्ण पत्थरपड़े हैं औ लोहेकी सुई बिखरी हैं कहीं उस मार्गमें अग्नि लगाहै कहीं सिंह वृक व्याघ्र मक्षिका सर्प वृश्चिकआदि दुष्टजन्तु उसमें फिरते हैं किसी ओर मस्त हाथी तीखे सींगोंवाले मतवाले बैल औ पर्वताकार बन महिष घूमते हैं जिनको देखतेही प्राणमुक्त होजायँ कहीं डाकिनी शाकिनी रोग और बड़ेक्रूर राक्षस क्रीड़ाकर रहे हैं उस मार्ग में कहीं छाया और जल नहीं है इसप्र-कारके भयङ्कर मार्ग में यमदूत पापियों को लोहकी शृं-खलासे पैरोंको बांध घसीटतेहुये लेजातेहैं उनपापियोंकी उस समय यह दशा रहतीहै कि एकाएकी पराधीन मित्र बन्धु आदि से रहित अपने कर्मोंको शोचतेहुये औ रोते हुये वस्त्रहीन भूख प्यासके मारे कण्ठ तालु ओष्ठ सूखेजाते हैं भयभीत औ यमदूत उनको बारबार तर्जनकरते हैं औ पैरोंमें अथवा चोटीमें सांकलसे बांध खैंचते लेजातेहैं उन में कईयों को अधोमुख औ कईयों को ऊर्द्ध्वमुख करके खींचते हैं कईयों का पिछली ओर दोनों भुजा बांधकर लेजाते हैं कोई रोतेहुये अति दुःखी चोरकीभांति बँधेहुये जातेहैं यमदूत अपने शस्त्रोंसे किसीकी नाककाटतेहैं किसी के कान किसीकी आंखफोड़ते हैं औ उनके अंगोंको तीखे शस्त्रोंसे छीलते हैं औ रुधिरकी धार उनकी देहसे बहती है इसप्रकार दुःखभोगते २ यमलोकमें पहुँचते हैं पुण्यकरने

वाले उत्तम मार्गसे सुखपूर्वक यमलोक में पहुँच सौम्य स्वरूप यमराजका दर्शन करते हैं औ यमराज भी उनका बहुत आदरकर कहते हैं कि हे महात्माओ आपने दिव्य सुखकी प्राप्तिकेलिये बहुत पुण्यकियाहै इसलिये इसउत्तम बिमानपर चढ़ स्वर्गको जायँ औ दिव्य अप्सराओं से विहारकरैं बहुतकालस्वर्गमें उत्तमभोग भोगकरपुण्यकेक्षय होनेपर यहांआय जो कुछ तुमने थोड़ापाप कियाहै उसका फल भोगलेना वही यमराज पापी पुरुषोंको अतिभयंकर देखपड़ताहै कि ऊपरकोखड़े जिसकेकेश लम्बीदाढ़ीनीलांजन के पर्वत समान,जिसका अति क्रूररूप अठारहों भुजों में भांति २ के शस्त्रलिये क्रोधसे जिसका ओष्ठ फरकरहा है मस्तकमें भृकुटी चढ़रहीहै रक्तवर्णकी पुष्पमाला औवस्त्र धारण कियेहैं मानों अभी सब सृष्टिको ग्रास करलेता है यमराजके समीपही कालाग्निकेसमान क्रूर कृष्णवर्णमृत्यु विराजमान है औ काल कृतांत औ मारी महामारीनामक कालकी दोशक्ति तथा अनेकप्रकारकेरूपधारणाकिये सम्पूर्ण रोग वहां बैठेहैं औ सबोंनेशक्ति शूल अंकुश पाश चक्र खड्ग वज्र दण्डआदि शस्त्र हाथोंमें धाररक्खेहैं औ कृष्णवर्ण भयंकर बड़े बलवान् औ नानाविधि शस्त्र अस्त्र हाथों में लिये हजारों यमदूत चारों ओर खड़े हैं पापीजीव इस रूपमें स्थित यमराजको देखते हैं औ यमराज के समीप बैठेहुये चित्रगुप्त उनको भर्त्सन करके कहते हैं कि अरे तुमने ऐसेबुरेकर्म क्योंकिये तुमने परायाधनहरा रूपके गर्व से परस्त्रियोंका धर्षणाकिया और भी अनेकप्रकारके पातक उपपातक तुमने किये अब अपने कर्मका फल भोग करो

कोई तुम्हारी रक्षा नहीं करसक्ता इसीप्रकार राजाओं को चित्रगुप्त कहते हैं कि अरे राजाओ तुमने थोड़ेदिन राज्य पाकर इतना दुष्कर्म क्योंकिया राज्यलोभसे दीन प्रजाको पीड़नकिया औ अन्यायमें प्रवृत्तरहे अनेकप्रकारके विषयों में आसक्त होकर बहुत पापकिये अब वह राज्य औ रानी राजकुमार आदि काम न आवेंगे जिनकेलिये इतनीभारी पापकी गठरीबांधी वे सब वहांहींरहे औ तुम एकाकी यहां आये अब तुम्हारा वह बल औ पराक्रम कहांहै जिससे अनाथ प्रजाको सताते थे अब यमदूत तुमको दण्डदें इसभांति राजाओंको तर्जनकर चित्रगुप्त यमदूतोंको आज्ञा देतेहैं कि इनको लेजाकर नरकोंकी अग्निमें डालो इतनी आज्ञा पातेही राजाके दोनोंपैरपकड़ घुमाकर अति बेगसे यमदूत तप्तशिलापर फेंकते हैं औ कोई दूत दौड़कर उसके मस्तकमें ताड़न करते हैं तब वह मूर्च्छित होजाताहै कुछ कालके अनन्तर जब उसकी मूर्च्छा खुलती है तब नरक को लेजाते हैं सातवें पातालमें घोरअन्धकारके बीच अति दारुण अट्ठाईसकरोड़ नरक हैं जिनमें पापीजीव यातना भोगतेहैं वहां यमदूत उनको ऊंचे२वृक्षों की शाखाओं में टांग देते हैं औ सैकड़ों मन लोह उनके पैरों में बांधते हैं उसबोझसे उनका शरीर टूटनेलगताहै औ अपने अशुभ कर्मों को याद करकर रोते औ चिल्लाते हैं औ तपाये हुये कांटों करके युक्त लोह दण्ड से औ कशा अर्थात् चाबुकों से यमदूत उनको ताड़न करते हैं जब उनके देहोंमें घाव पड़जायँ तब उनमें क्षार लगाते हैं कभी उनको उतार खौलतेहुये तेलके कड़ाह में डालते हैं वहांसे निकाल बिष्ठाके

कूपमें उनको डुबोते हैं जिनमें कीड़े काटकाट खाते हैं फिर मेदरुधिर पूय आदिके कुंडोंमें उनको पटकते हैं जहांलोहे की चोंचवाले काक औ श्वान आदिजीव उनका मांस नोच २ खाते हैं कभी उनकोतीक्ष्ण शूलोंमें पिरोतेहैं अ-भक्ष्य भक्षण औ मिथ्या भाषण करनेवाली जिह्वाकोबहुत दंडमिलताहै उस जिह्वाको खैंच २ यमदूत आधकोश लंबी बढ़ालेते हैं औ उसके ऊपर अतितीक्ष्ण हलजोतते हैं जो पुरुष माता पिता औ गुरुको कठोरबचनबोलते हैं उनके मुखमें बज्रकीजोंकें लगाई जाती हैं औ जोंकोंके ब्रणोंमें खार भरते हैं और फिर उनके मुखमें औटता हुवा तेल डालते हैं औ उनके मुख में बिष्ठा भरते हैं सुवर्ण चोराने वाले औ परद्रव्यापहारी कंटकों से व्याप्त तपेहुवे लोहके शाल्मलि वृक्षसे बांधेजाते हैं औ पीठके ऊपर लोहके मु-द्गरों से ताड़नकरते हैं औ कभी बड़े कठोर औ तीखेकरो-तसेशिरसेलेकर पैर तक उनको चीरते हैं औ उनका मांस उनकोही खिलाते हैं जो अतिथि को अन्न जल बिनादिये उसके सम्मुखही आप भोजन करते हैं वे इक्षुकी भांति कोल्हूमें पेलेजाते हैं असितालनामक बनमें लेजाकर उन-को खण्ड खण्ड करते हैं इसभांति अनेक क्लेश भोगने पर भी उनके प्राण नहीं निकलते रौरव औ महारौरव नाम नरकमें अत्यंतपीड़ादेतेहैं तपेहुये लोहेकेकील पापियोंके पैर हाथ छाती पार्श्व मुख मस्तक नेत्र नाक कान आदिमेंठोकते हैं गरमबालूमेंडालकर चनेकीभांति भूनतेहैं जिस २ परनारी के साथ संगकियाहो उस आकारकी तप्तलोहे की नारी से आलिंगन करातेहैं औ परपुरुषगामिनी स्त्रीको तप्तलोहपु-

रुषसे लिपटाते हैं औ कहते हैं कि हे दुष्टे जिसप्रकार तैंने निजपतिको त्याग परपुरुषको आलिंगन किया उसीविधि इस लोहपुरुषको भी आलिंगनकर यहांसे जल्दी न छुटैगी कभी पापियों कोलोहेके कुंभमें डालऊपरसे ढक चूल्हे पर चढ़ाय मंदी२ आंचसेपकाते हैं किसीसमय ऊखलमें डाल मूसलसे कूटतेहैं कभी अंधकूपमें ऊपरसे पटकते हैं क्षारके कूपोंमेंडालते हैं भ्रमर आदि कीटोंसे कटाते हैं जिससे सब शरीर जर्जर होजाताहै दोनों टांग ग्रीवापर चढ़ादेते हैं औ दोनों भुजा पिछली ओर लौटाकर दृढ़बांधदेते हैं औ लोह के तीक्ष्णकंटक भ्रमरोंसे कटाते हैं मानी औ क्रोधीपुरुष के शरीरको तप्तशिलाके ऊपर चन्दनकी भांति घिसते हैं करीष औ तुषकी अग्निमें दग्धकरते हैं संपूर्ण देहको कीडोंसेखिलाते हैं जो पुरुष शिवालय बागवापी कूप मठ आदि कोनष्टकरते हैं उनको तप्तकुंडमें कंठतक डुबोकर नीचे अग्निदेते हैं जोमैथुन आदिअनेकप्रकारके पापकरते हैं उनको अनेकप्रकारके यंत्रोंसे पीड़न करते हैं औ जब तक चन्द्रसूर्य्यरहैं तबतक नरककी अग्निमेंपड़े जलते हैं जो गुरुनिंदाश्रवणकरते हैं उनके कर्णोंको दंडमिलताहै इसी प्रकार जिस २ इन्द्रियसे पापकरै वह २ इन्द्रिय कष्ट पाती है जो पुरुष परस्त्रीको हाथसे स्पर्श करते हैं उनका हाथ सूचियोंसे बेधाजाताहै औ संपूर्णशरीरमें घावकरकेक्षारसे लेपनकरतेहैं जो स्निग्धदृष्टिसे परस्त्रीको देखतेहैं उनकेनेत्र सूचियोंसे पूरितकियेजाते हैं जो देवता अग्नि गुरु ब्राह्मण आदिका पूजन विनाकिये भोजनकरते हैं उनके मुखमें तपे हुये लोहके कील भरते हैं जो देवतापर बिना चढ़ाये पुष्प

को सूंघते हैं औ अपने मस्तकपर धारते हैं उनके नासिका औ शिरमें लोहके शंकुगाड़ेजाते हैं जो मूढ़ शिवभक्त औ शाश्वत शिवधर्मकी निन्दाकरते हैं उनकी छाती कण्ठ जिह्वा दन्त संधिआदि में लोहशंकुगाड़ेजाते हैं औ क्षार तप्ततैल गलायाहुआ ताम्र उनके ऊपर डालते हैं इस भांति सम्पूर्ण नरकोंमें यातना भोगतेहैं जो पुरुष परद्रव्य हरें शिवके उपकरण चोरैं औ चोरी करनेके अभिप्रायसे जायँ उनके हाथ पैर लोहेके घनोंसे चूर्णकियेजाते हैं औ क्षार ताम्र तैलआदिसे उनको दग्धकरते हैं जो शिवालय आदिके समीप मूत्र अथवा विष्ठाकरतेहैं उनके वृषण औ लिंग सूचियों से बेधकर लोहके मुद्गरोंसे चूर्णकरते हैं औ कण्टकयुक्त तपायाहुआ लोहदण्ड उनकी गुदामें देकर शिरमें निकालते हैं औ गुदाआदिको क्षारआदिसे पूरित करतेहैं सब इन्द्रियोंका प्रवर्तकमनहै इसलिये इन्द्रियोंको दुःखहोनेसे मनको दण्डमिलजाताहै जो पुरुषधनवान्हो-करभी दाननहीं देते औ घरमें प्राप्तअतिथिका सत्कारनहीं करते उनके हाथ पांवबांध लोहेके तोरणमें लटकादेते हैं औ हाथपांवोंके तलोंमें लोहके कील ठोंकते हैं औ उनके वृषणोंमें लोहका भार लटकादेतेहैं लोहकी चोंचवालेपक्षी औ तीक्ष्णमुख कीटोंसे उनको कटाते हैं औ उनके शरीर से तिल प्रमाण मांस काटकर उनको नित्य खानेके लिये देतेहैं इसप्रकारकी अनेक घोर यातना पापीपुरुष सम्पूर्ण नरकोंमें भोगते हैं जिसका सौबर्षमेंभी वर्णन नहींहोसक्ता अनेकभांतिकी दारुण व्यथा भोगते हैं परन्तु प्राण नहीं जाते और भी इनसेअधिक दारुण यातनाहैं जिनका यहां

वर्णन नहीं किया मृदुचित्त पुरुष उनको सुनकरही मरतेहैं इसकारण उनको नहीं कहा पापी आपही वहांजाय उनका अनुभव करते हैं पुत्र मित्र स्त्री आदिकेलिये अनेकप्रकार के पापकरते हैं परन्तु उस समय कोई सहाय नहीं करता केवल एकाकी दुःख भोगताहै औ प्रलय पर्यन्त नरक में पड़ासड़ताहै महापातकी पुरुष आचन्द्रतारकनरकमें पीड़ा भोगतेहैं इससे आधेकाल पर्यन्त चौदह नरकोंमें पातकी निवास करते हैं औ इससेभी अर्द्धसमय उपपातकी नरक में रहते हैं बुद्धिमान् मनुष्य जीवनको चंचल जानकर भी पाप न करै पापसे अवश्यही नरक भोगना पड़ताहै पाप का फल दुःखहै औ नरकसे अधिक कहीं दुःख नहीं बड़ा आश्चर्यहै कि मनुष्य पापकर्म्म में तत्पर होते हैं औ यह कभी नहीं शोचते कि मरणके अनन्तर हमारी क्यागति होगी पापीमनुष्य नरकवासके अनन्तर फिर भूमिपर जन्म लेतेहैं औ वृक्ष आदि अनेकप्रकारके स्थावर बनतेहैं पीछे कीट पतंग पक्षी पशुआदि अनेक योनियोंमें जन्मलेतेहुवे अतिदुर्लभ मनुष्यजन्मपातेहैं मनुष्यजन्मपाकर ऐसाकर्म करनाचाहिये जिससे नरक न देखनापड़े धर्मसेमनुष्यजन्म मिलताहै मनुष्यजन्मपाकर उसधर्मकी वृद्धिकरनीचाहिये वृद्धि नहोसके तो उतनाही बनायरक्खे मूलमेंभी घाटा न होनेदे जिससे नरकभोगनापड़े मनुष्यजन्मपाकरभी ब्राह्म-णहोना बहुत दुर्लभहै औ सब देशोंमें यह देश उत्तम है बहुतपुण्यसे भारतवर्षमें जन्महोताहै इसदेशमें जन्मपाकर जो अपने कल्याणकेअर्थ पुण्यकरै वही बुद्धिमान्है स्वर्ग भोग भूमिहै औ यहकर्मभूमिहै यहां जो कर्मकरोगे वहीस्वर्ग

में भोगोगे जबतक यहशरीर स्वस्थरहै तबतक जोकुछपुण्य बनपड़ै सोठीकहै फिर कुछभीनहींहोसक्ता दिनरात्रिकेबहाने से नित्यएक२ टुकड़ा आयुष्काखण्डित होताजाताहै तौभी मनुष्योंके बोधनहींहोता कि एकदिन मृत्युभीआयपहुँचैगा यहतो किसीको निश्चय हैही नहीं कि किसका मृत्यु किस समयमेंहोगाफिर मनुष्य को क्योंकरधैर्यहोय औ सुखमिलै यह जानते हैं कि एकदिन इससब सामग्रीको छोड़ अकेले चलेजायँगे फिर अपने हाथसेही सत्पात्रोंको क्योंनहींबांट देते इस पुरुषकेलिये दानही पाथेय अर्थात् रस्तेकेलिये भोजन है जो दान करते हैं वे सुखपूर्वक जाते हैं औ दान हीन मार्ग में अनेक दुःखपाते भूखे मरतेजाते हैं इन सब बातोंको विचार पुण्यही करनाचाहिये औ पापसे सदा बचनाचाहिये जोपुरुष अनेकप्रकारके पापकरकेभी शिवजी केशरणमें प्राप्तहोजाते हैं वेभी नरक नहींदेखते परन्तुकिये हुये पातकों का फल भोगने के लिये शिवजीकी आज्ञासे कुछकाल प्रेतोंके राजाबनते हैं पीछेसद्गति को प्राप्तहोते हैं जो सत्पुरुष सर्वप्रकारसे श्रीसदाशिवकेशरणमें प्राप्तहैं वे कभी पाप करके लिप्त नहीं होते जैसे पद्मपत्र जलकरके इसलिये द्वन्द्वसे छुटभक्तिसे श्रीशंकरका आराधनकरै पंच महापातक करनेसे चिरकाल नरकवास होताहै इसलिये इनसे सदाबचै औ किसीभांति काभी पाप न करै ॥

सातवां अध्याय ॥

शकटव्रतका माहात्म्य ॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज यह जो हमने अति गंभीर नरक समुद्र वर्णनकिया यह व्रतउपवासरूपनौका

सेतरजाताहै अतिदुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर ऐसा कर्म करै जिससे पश्चात्ताप न करना पड़ै जिसकी यहां व्रत उपवास आदि की कीर्ति बनीहै वह परलोकमें सुख भोगता है व्रत करनेवाले पुरुष सदासुखी होते हैं इसलिये व्रत अवश्य करनेचाहिये इसमेंएक प्राचीन इतिहासहम वर्णन करते हैं योग सिद्धकरके संसिद्धकोई एकसिद्ध अति भयंकर बिकृत रूपधार भूमिपर विचरताथा कि जिसके लम्बे ओष्ठ टूटेदांत पिंगल नेत्र चपटेकान फटा मुख लम्बापेट टेढ़ेपैर और भी संपूर्ण अंग कुरूप थे उसको मूलजालिक नाम ब्राह्मणनेदेखा औपूछा कि आप स्वर्गसेकबआये औ किस प्रयोजनसे यहां आगमनभया आपने देवताओंके चित्त को मोहन करनेहारी और स्वर्गके भूषण रम्भा को देखा कि नहीं अब आप स्वर्गमें जायँ तो रम्भासे कहना कि अवन्तिपुरी का निवासी ब्राह्मण तुमको कुशल पूछता था यह ब्राह्मणका बचनसुन सिद्धने चकितहो पूछा कि हे ब्राह्मण तुमने हमको क्योंकर पहिचाना तब ब्राह्मणनेकहा कि महाराज कुरूपपुरुषों का एक दो अंग विकृतहोता है औ आपके सबअंगटेढ़े औ विकृतहैं इसीसे मैंने अनुमान किया कि ये अपनारूप गुप्तकिये कोई स्वर्गके निवासी सिद्धहैं यह ब्राह्मणका वचनसुनतेही सिद्ध वहां से अन्तर्धानभया औ कईदिनोंके अनन्तर फिर ब्राह्मणके समीप आया औ उससे कहा कि हे ब्राह्मण हम स्वर्गमें गये औ इन्द्रकी सभामें जब नृत्यहोचुका उसके अनन्तर एकांतमें रंभासेतुम्हारा संदेशकहा परन्तुरम्भाने यहकहा कि मैंउस ब्राह्मणको नहीं जानती यहां तो उसीकानाम जानतेहैं जो

निर्मल विद्या पौरुषदान तपयश अथवा व्रतआदि करके युक्तहोय औ उसकानाम स्वर्गभरमें चिरकाल स्थिररहता है यह सिद्धके मुखसे रंभाका वचन सुन ब्राह्मणने कहा कि हम शकट व्रत नियमसे करते हैं आप रंभासे कहदीजिये यह सुनतेही फिर सिद्ध अंतर्द्धान भया औ स्वर्गमें जाकर रंभासे ब्राह्मणका संदेशकहा औ उसके गुणबर्णन किये तब रंभा प्रसन्नहोकर कहने लगी कि हे सिद्ध महाकाल बनके निवासीउस शकट ब्रह्मचारीको मैं जानतीहूं दर्शन से संभाषणसे एकत्र निवाससे औ उपकार करनेसे मनुष्यों का परस्पर स्नेह होताहै परन्तु मुझे उस ब्राह्मण का द- र्शन संभाषण आदि एक भी नहीं हुआ केवल नाम श्रवण सेहीं इतना स्नेह होगयाहै इतना सिद्धसे कह इन्द्रके स- मीप जाय रंभाने ब्राह्मणके व्रत आदिकाकरना औ अपने ऊपर अनुरक्तहोना बर्णन किया इन्द्रने भी प्रसन्नहो रंभा से पूछ उत्तम बिमानमें बैठाय दिव्यबस्त्र भूषण आदिसे अलंकृत कर उस ब्राह्मणको स्वर्गमें बुलाया औ बड़ा स- त्कार ब्राह्मणका करके रम्भाको उसके अधीनकरदिया वह ब्राह्मण भी अपनीप्रिया रम्भाकोपाय चिरकाल दिव्यभोग भोगताभया यहशकटव्रतकामाहात्म्य हमने संक्षेपसेबर्णन कियाहै राज्य लक्ष्मी उत्तमलोक मनोवांछित फल आदि कोई पदार्थ जगत्में दृढ़ व्रत पुरुषके लिये दुर्लभ नहीं हैं इसलिये सदा व्रतमें तत्पर रहना चाहिये॥

आठवां अध्याय॥

तिलकव्रतका बिधान औ माहात्म्य॥

राजा युधिष्ठिरपूछते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र ब्रह्मा विष्णु

शिव गौरीगणपति दुर्गासोम अग्नि सूर्य्यआदि देवताओं
के व्रतशास्त्रोंमें वर्णन कियेहैं जिनके करनेसे भोग औ मोक्ष
मिलतेहैं उन व्रतोंको आप प्रतिपदादि क्रमसे वर्णन करैं
औ जिस देवता की जो तिथिहै औ उस तिथिको जो क
रनाचाहिये वहभी आप कथनकरैं यह राजाका प्रश्नसु
श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज बसंत ऋतुके
आरम्भ में जो शुक्लप्रतिप्रदाहोतीहै उसदिन नदी अथवा
तलावमें स्त्री अथवा पुरुष स्नानकर देवता औ पितरोंका
तर्पणकरैं पीछे घरमेंआय पिष्टअर्थात् आटे से पुरुषाका
संवत्सर की मूर्ति लिखकर चन्दनपुष्प धूप दीप नैवेद्य
आदि उपचारोंसे पूजनकरै औ ऋतु तथा मासोंके नाम
तनाममन्त्रों से पूजन औ प्रणामकर यहमन्त्रपढ़ै। ओंसं
वत्सरोसिपरिवत्सरोसितइद्वत्सरोसिइत्सरोसिउषस्ते कल्प
तामहोरात्रस्तेकल्पतामर्द्धमासास्तेकल्पन्तामृतवस्ते कल्प
तांवत्सरस्तेकल्पताम्। यहमन्त्र पढ़बस्त्रसे उसको वेष्टित
करै पीछे फल पुष्प मोदक आदि नैवेद्य चढ़ाय हाथ जोड़
प्रार्थनाकरैं कि हेभगवन् आपकेअनुग्रहसे सुखपूर्वक वर्ष
ब्यतीतहोय यहकहकरयथाशक्ति ब्राह्मणकोदक्षिणादेवैऔ
उसीदिनसे ललाटकोनित्य चन्दनकेतिलकसे अलंकृतकरै
इसप्रकारस्त्री अथवा पुरुष इस व्रतकोकरै तो उत्तम भोग
पावै औ भूत प्रेत पिशाचग्रह डाकिनी औ शत्रुउसके म
स्तकमेंतिलकदेखतेही पराङ्मुखहोजाते हैं अब हम एक
इतिहासबर्णन करते हैं पूर्वकालमें शत्रुंजयनाम एक राजा
था औ चित्रलेखा नाम उसकी रानीथी उनके बहुतअव
स्था बीतने पर एक पुत्रहुआ जिसके जन्मसे उनको बहुत

आनन्द प्राप्तहुआ वह रानी सदा संबत्सरव्रतकिया करती औ नित्यही मस्तक में तिलक देती कुछ काल के अनन्तर राजाको प्रबल ज्वर होगया औ वह बालकभी रोगाक्रान्त हुआ तब रानी अति शोकाकुलभई औ दिन रातउनके समीप बैठी रहती परन्तु उन दोनोंको वह बातज्वर औ शिरोव्यथा इतनीबढ़ी कि मरणासन्न होगये औ यमदूत उनके लेजानेको आपहुंचे परन्तु देखाकि उनके समीप तिलक लगाये चित्रलेखा रानी बैठी है उसको देखतेही उलटे लौटे भीतर तिलकके प्रभावसे नहीं प्रवेश करसके यमदूतों के लौटतेही राजा औ राजकुमार आरोग्य होनेलगे औ थोड़ेही कालमें प्रसन्न होगये औ चिरकाल तक राज्य किया हे महाराज यह परम उत्तम व्रत पूर्वकालमें श्रीशिवजी महाराजने हमको उपदेश किया औ हमने आपको सुनाया यह तिलक व्रत सकल अरिष्ट को हरने हाराहै इसव्रतको जो भक्तिसेकरै वह चिरकाल पर्यंत संसारके सुख भोग अन्तमें स्वर्ग को जाताहै ॥

नवां अध्याय ॥

अशोक व्रतका माहात्म्य औ बिधान ॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि महाराज आश्विन शुक्लप्रतिपदा को गन्ध पुष्प धूपदीप सप्तधान्यफल नालिकेल दाड़िम पूरी लड्डु आदि अनेकप्रकारके नैवेद्यसे अशोकवृक्षका पूजनकरै तो कभी शोकको प्राप्त न होय औ (पितृभ्रातृपतिश्वश्रूश्वशुराणांतथैवच। अशोकशोकशमनोभवसर्वत्रनःकुले) इसमन्त्रसे श्रद्धाकरके अर्घ्यदेवै औ वस्त्र से अशोकवृक्ष को वेष्टितकर पताकाओं से अलंकृतकरै इस व्रतको

भक्तिसेकरै वह दमयन्ती स्वाहा वेदवती औ सतीकीभां
अपने पतिकी अतिप्रियाहोय बन गमनके समय सीता
मार्गमें अशोकवृक्ष देखा औ भक्तिसे गन्ध पुष्प धूप दी
नैवेद्य तिल अक्षतआदिसे उसका पूजन कर यह प्रार्थन
करी कि हे रक्ताशोक मेरा वृद्ध श्वशुर राजा दशरथचिर
कालजीवै मेरापति लक्ष्मणआदि देवर औ कौशल्या चि
रंजीवहोयँ इतनी प्रार्थनाकर अशोककी प्रदक्षिणादे सीता
बनकोगई जो स्त्री तिल अक्षत जौ गेहूँ घृतआदिसे अ-
शोकका पूजनकर यह मन्त्रपढ़ै (महावृक्षंमहाशाखं मक
रध्वजमन्दिरम्। प्रार्थयेत्वांमहाभागं वनोपवनभूषणम्)
पीछे प्रणाम औ प्रदक्षिणाकर ब्राह्मणको दक्षिणादे अपनी
सखियों सहित घरकोजाय वह स्त्री चिरकाल तक अपने
पतिकेसहित संसारकेसुखभोग अंतमें गौरीलोकमेंनिवास
करै यह अशोकव्रत सबप्रकारकेशोक औ रोगहरनेहाराहै॥

दशवां अध्याय॥

करवीरव्रतका विधान औ माहात्म्य॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज ज्येष्ठ मासकी शुक्ल
प्रतिपदाको सूर्योदयके समय बागमें जाय करवीर वृक्षका
पूजन करै लालसूत्रसे वृक्षको वेष्टित कर गन्ध पुष्प धूप
दीप नैवेद्य सप्तधान्य नालिकेर नारंगी औरभी भांति २
के फलोंसे पूजनकर इस मन्त्रसे प्रार्थनाकरै। करवीराम्बि
कावास नमस्तेभानुवल्लभ। मौलिमण्डलसद्रत्ननमस्ते
केशवाश्रय॥ इसभांति प्रार्थना कर ब्राह्मणको दक्षिणादे
वृक्षकी प्रदक्षिणाकर घरकोजाय इस व्रतको सूर्यनारायण
की प्रसन्नताकेलिये अरुन्धती सावित्री सरस्वती गायत्री

ंगा दमयंती औ सत्यभामाआदि औरभी स्त्रियोंने किया है इसव्रतको जो भक्तिसेकरै वह अनेक प्रकारके सुखभोग कर अन्तमें सूर्यलोकको जाता है ॥

ग्यारहवा अध्याय ॥

कोकिल व्रतका विधान औ माहात्म्य ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र पतिव्रता स्त्रियोंका पतिके साथ जिस व्रतके करनेसे अत्यंत स्नेह रहै वह व्रत आप कथनकीजिये यहसुन श्रीकृष्ण बोले कि हे महाराज यमुनाके तटपर मथुरानाम नगरहै उसमें पूर्वसमय रामचन्द्रका भ्राता शत्रुघ्न नाम राजाथा उसकी रानी कीर्त्तिमाला नाम बड़ी पतिव्रता थी उसने एकदिन अपने कुलगुरु वशिष्ठमुनि से प्रार्थना करी कि महाराज कोई ऐसा व्रतबतावैं जिससे सौभाग्यकी वृद्धिहोय तब वशिष्ठजी कहनेलगे कि हे कीर्त्तिमाले आषाढ़की पूर्णिमासीको सायंकालकेसमय यहसंकल्पकरै कि श्रावणमास भर नित्य स्नान रात्रिके समय भोजन औ भूमि में शयन करूँगी औ ब्रह्मचर्य्य से रहूँगी इसभांति स्त्री अथवा पुरुष संकल्प कर प्रभात उठ सब सामग्री ले नदी तलाव आदिपर जाय दन्तधावनकर सुगन्धयुक्त तिल औ आमलाका उबटनालगाय विधिसेस्नानकरै इसप्रकार आठ दिन स्नानकरै पीछे सर्वौषधियों का उबटनालगाय आठ दिन स्नानकरै शेषदिनों में बचा औ मुलहठीका उबटना मलकर नहावे स्नानकर सूर्य्यभगवान्‌का ध्यानकर संध्या औ तर्पण करै पीछे तिल पिष्टकरके कोकिला पक्षी लिखै औ रक्त चन्दन चम्पा के पुष्प पत्र धूप दीप नैवेद्य ति-

चावल दूर्वा आदिसे पूजनकर इस मन्त्रसे प्रार्थनाकरै। तिलाःस्नेहंतिलाःसौख्यंत्रिवर्णंतिलकप्रिये। सौभाग्यद्रव्य पुत्रांश्च देहिमेकोकिलेनमः॥ इसप्रकार पूजन कर घरमें आय भोजनकरै इसविधिसे एकमासब्रतकर अन्तमें तिल पिष्टकी कोकिलाबनाय उसके सुवर्णकेनेत्रलगाय ताम्रपात्र में स्थापन कर वस्त्र धान्य गुड़ औ दक्षिणा सहित श्वश्रू श्वशुर दैवज्ञ पुरोहित अथवा और किसी ब्राह्मणको देवै इसविधिसे जो कोकिलाब्रत करै वह सात जन्मतक सौभाग्य-वतीहोय औ अन्तमें उत्तम विमानपर चढ़ गौरीलोकको जाय इसविधि वशिष्ठजी से सुन कीर्त्तिमाला ने ब्रतकिया औ मनोबांछित फल पाया और भी जो स्त्री इसब्रत को भक्तिसेकरै वह सौभाग्यपावै औ जो पुरुष तिल पिष्ट से कोकिलाबनाय ताम्रपात्रमें स्थापनकर ब्राह्मण को देवैं वे बहुत कालतक नन्दनबनमें विहारकर मनुष्यलोकमें जन्म लेतेहैं तब अत्यन्त मधुरस्वरवाले होतेहैं॥

बारहवां अध्याय॥

बृहद्ब्रतका विधान औ फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अब हम सब पा हरनेहारा एकब्रत कहते हैं जो सुर असुर औ मुनियोंको दुर्लभहै आश्विन मासकी समाप्तिके दिन उपवासकर रा के समय घृत औ पायसभोजनकरै दूसरे दिन प्रभात उ पवित्रहो आचमनकर बिल्वके काष्ठका दन्तधावनकरै पी इस मन्त्र से महादेवजी की प्रार्थनाकरै। अहंदेवब्रतमि कर्त्तुमिच्छामिशाश्वतम्। तवाज्ञयामहादेव यथानिर्वहते रु। फिर नियमकर सोलहबर्ष पर्यन्त प्रतिपदाको ब्रतक

मार्ग्गशीर्षकी प्रतिपदाको महादेव का स्मरण करताहुआ उपवासकरै औ स्नानकर भक्तिसे शिवपूजनकरै औ रात्रि के समय दीपकजलाय शिवजीको निवेदन करै शिवभक्त सपत्नीक सोलह ब्राह्मणोंका वस्त्र भूषणआदिसे पूजनकर भोजनकरावै अथवा आठदम्पतीका पूजनकरै जो सामर्थ्य नहोय तो एकही जोड़ेका पूजनकरै व्रतकर रात्रिको निराहारही भूमिमें शयनकरै सूर्य्योदय होतेही स्नानकर सब सामग्रीले शिवालयमेंजाय वहां शिवजीको अभ्यंगकराय पंचगव्य से स्नानकरावै फिर क्रमसे दूध घृत दही शहत इक्षुरस तिलोदक औ गरम जलसे स्नानकरावै पीछे कर्पूर चन्दन आदिका लेपकर कमल आदि उत्तम पुष्प चढ़ावै औ दो वस्त्र पताका धूपदीप घण्टा भांति२ के नैवेद्य महादेवजीके अर्पणकर विधिसे हवनकरै पीछे घरमेंआय पंचगव्यका प्राशनकर अपने सब बन्धुओंके साथ भोजनकरै इसविधानको धनवान्हो चाहैनिर्धन सामर्थ्यके अनुसार करै औ श्रद्धारक्खै कार्त्तिककी प्रतिपदासे लेकर प्रतिमास इसीविधिसे व्रतकरै औ आरम्भके विधानसेही पारणकरै दूसरेवर्षमें पूर्णिमाको नक्तव्रतकरके प्रतिपदा औ द्वितीया को उपवासकरै औ प्रतिमास दोदोउपवास करताजाय औ पहिलीभांतिशिवजीकापूजनकर सुवर्णशृंगी रौप्यखुरीघंटा औकांस्यके दोहनपात्रसहित उत्तमगौ महादेवजीकेनिमित्त शिवभक्त ब्राह्मणकोदेवै पीछे सोलह ब्राह्मणोंका विधिसे पूजनकर वस्त्र भूषण छत्र जूता दंडआदि उनकोदेकर उनकी पत्नियोंका भी वस्त्र भूषण आदिसे पूजनकर उत्तम भोजन करावै और भी यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय दक्षिणादे

दीन अन्ध अनाथ आदिको भोजनदेवै यहव्रतसबप्रकार के पापहरनेहाराहै औ भूःभुवःस्वः आदि लोकों में अनेक प्रकारके उत्तमभोगदेताहै चारोंवर्णोंकेलिये यह व्रत स्वर्ग की सीढ़ीहै जो धनपाकर इसव्रतको न करै वह मूढ़बुद्धिहै धन आयुष् रूप सौभाग्यआदि इसव्रतके करनेसे मिलते हैं प्रतिमास उपवासकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै औ अन्तमें आरम्भके विधानसे समाप्तकरै वर्षभरसे न्यून भी व्रत श्रद्धासे करै तौ भी सम्पूर्णफलको प्राप्तहोताहै जो इस विधानको पढ़ै अथवा सुनै वह उत्तम फल पावै औ जो पुरुष सोलहवर्ष इस व्रतको भक्तिसे करते हैं वे सूर्य्य मण्डल को भेदनकर शिवजीके चरणोंमें प्राप्तहोते हैं॥

तेरहवां अध्याय॥

भद्रव्रतका फल औ विधान, यमद्वितीया का विधान॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्ण जातिस्मरहोना अत्यन्त दुर्लभहै आप यहकथनकरैं कि ऋषियोंके वरदान से देवताओंके सेवनसे अथवा तीर्थ स्नान होम जप तप व्रत आदिके करनेसे जातिस्मरता प्राप्तहोसक्ती है किनहीं औ कोई व्रत ऐसाहोय जिसके करनेहारा जातिस्मरहोय वह आपवर्णन करैं। यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज चारभद्रों का उपवास करने से मनुष्य जातिस्मरहोताहै पूर्वकालमें यमुनाकेतटपर शुभोदयनाम वैश्यने यहव्रत कियाथा वह इसके प्रभावसे स्वर्णष्ठीवी नामक सृंजयराजाका पुत्रहुआ औ जातिस्मरभया उसको चोरोंने मारडाला फिर नारदजी के प्रभावसे जिया औ व्रतके प्रभावसे अपने सम्पूर्ण पूर्व वृत्तांतको जानता

या राजा पूछते हैं कि स्वर्णष्ठीवी क्यों कहाया औ चोरों
ा उसको क्योंमारा औ फिर क्योंकर सजीवभया यह आप
र्णनकीजिये यहप्रश्न सुन श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि महा-
ाज कुशावती नगरी में सृंजय नाम राजा था एक दिन
ारद औ पर्वत दोनों मुनि राजाके पासगये उसी समय
ूढ़गुल्फा उन्नत कुचोंकरके युक्त कमललोचना लम्बे औ
ृष्ण केशोंवाली अतिरूपवती युवती राजकन्या वहां आई
उसकोदेख पर्वतने कहा कि इस तरुणीका क्या उत्तमरूप
है औ लावण्यकी कैसी भलकहै कि जिसमें अंगभी स्फुट
नहीं देखपड़ते इसभांति उसपर मोहितहो राजासे पर्वत-
मुनिने पूछा कि यह हमारे मनको हरनेहारी कौनहै राजा
ने कहा कि हे पर्वतमुनि यह मेरी कन्याहै इसी अवसरमें
नारदबोले कि हे राजन् यह अपनीकन्या हमको देदीजिये
औ जो दुर्लभ वर आपको चाहिये हमसे लीजिये राजाने
प्रसन्नहो कहा कि हे नारदजी ऐसा पुत्र चाहताहूँ कि वह
जहां मूत्रपुरीष आदित्यागे औ जिसस्थानमें निष्ठीवनकरै
वहां उत्तम सुवर्ण बनजाय नारदने कहा कि ऐसाही पुत्र
तुम्हारे उत्पन्नहोगा तब राजाने अभीष्ट बरपाय अपनी
कन्याको वस्त्र भूषण आदि पहिनाय नारदजी से विवाह
दिया नारदजीभी ऐसी रूपवती युवतीसे बिवाहकर बहुत
प्रसन्नभये परन्तु पर्वतमुनि क्रोधसे लालनेत्रकर नारदजी
को कहनेलगे कि हे नारद पहिले इसकन्यासे विवाह क-
रनेकी हमने इच्छाकरी औ तुमने बीचमें बलात्कार से
अपना विवाहकरलिया इसलिये तुम्हारा स्वर्गमें गमन न
होगा औ इस राजाके जो पुत्रहोगा वह भी चोरोंके हाथ

माराजायगा यह सुन नारदजी बोले कि हे पर्वत तू मूर्खहै तैंने वृद्धोंका सेवन नहीं किया जिससे हमको शापदेताहै यह तो कन्याथी इसपर किसीका स्वत्व नहीं माता पिता जिसको देदेवैं वही इसका स्वामी है हे पर्वत तैंने मूढ़ता से हमको शाप दिया इसलिये तेराभी गमन स्वर्ग में न होगा और जो राजपुत्र को चोर मारडालैंगे तो हम यम-लोकसेभी उसको लेआवेंगे इसभांति परस्पर शापदेकर दोनों मुनि अपने आश्रमकोगये औ सातवेंमहीने में राजा के पुत्रहुआ वह अतिरूपवान् औ जातिस्मरहुआ जहां वह मत्र पुरीष श्लेष्मआदि त्यागता वहीं सुवर्णहोजाता इसलिये राजाने उसकानाम स्वर्णष्ठीवीरक्खा वह राजपुत्र सब जीवोंकी बोली समझताथा राजानेभी पुत्रके प्रभाव से अनन्त धनपाय राजसूयआदि यज्ञकिये दानदियेकूप तड़ाग देवालय आदि बनवाये औ बहुतसी सेना रक्खी इसी अवसर से राजपुत्रकी ख्याति सुन लोभवश होकर चोर उसको उठालेगये जब उसके देहमेंकहीं स्वर्ण न देखा तब मारकर जंगल में फेंकगये राजाभी पुत्रको मरादेख अतिदुःखीहो विलाप करनेलगा तब नारदजी वहांआये औ प्राचीन राजाओंके अनेक इतिहास सुनाकर राजाका शोक दूरकिया औ यमलोकमें जाय राजपुत्र को लेआये राजाभी पुत्रकोपाय अतिप्रसन्नभया औ नारदजीसे पूछने लगा कि महाराज यह बालक स्वर्णष्ठीवी किस कर्मके प्र-भावसेभया औ जातिस्मर काहेसे है तब नारदजीने कहा कि हे राजाचतुर्भद्र व्रतइसनेकियाहै यह सब उसीका फल है इतनाकह नारदजी अपने आश्रमकोगये श्रीकृष्णचन्द्र

कहते हैं कि हे महाराज इसव्रत के करनेसे उत्तम कुलमें जन्मलेकर दाता धनवान् रूपवान् जातिस्मर औ दीर्घायुष् होताहै चारभद्र इस व्रतके चारपादहैं मार्गशीर्षमें पहिला फाल्गुन में दूसरा ज्येष्ठ में तीसरा औ भाद्र में चतुर्थभद्र होताहै फाल्गुनशुक्ल आदि तीनमास त्रिपुष्करनाम भद्र-रूप औ लक्ष्मी देनेहाराहै ज्येष्ठशुक्लआदि तीनमहीने विराम नामक भद्र सत्य औ शौर्यदायक है भाद्रशुक्ल आदि तीनमास निरंगनाम भद्र बहुतविद्या देनेहाराहै औ मार्गशुक्लआदि तीनमास समाननामक भद्र सब कामना देने-हाराहै यह भद्रव्रत सब स्त्री पुरुषोंको करनाचाहिये राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र भद्रों का विधान आप विस्तारसे कथनकरें यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्ण कहनेलगे कि महाराज यह अतिगुप्त विधान हमने किसी से नहींकहाहै अब आपको श्रवणकराते हैं सावधान हो-कर सुनिये । मार्गशीर्षके शुक्लपक्षमें द्वितीया तृतीया चतुर्थी औ पंचमी इनचार तिथियोंको एक भक्तकरै पहिले द्वितीया को मध्याह्नके समय गोबर मृत्तिकाआदि लेकर स्नानकरै अब हम सब मन्त्र कहते हैं इन मन्त्रों के अधिकारी ब्राह्मणआदि चारोंवर्ण हैं केवल संकीर्ण अर्थात् वर्णसंकरोंको इनका अधिकार नहीं है औ जो विधवास्त्री अपने आचार में स्थितहो वहभी इन मनमन्त्रों की अधिकारिणीहै नदी तलाव वापी कूप औ घरमें स्नानकरने से दशांश २ फल स्नानसे होता है अर्थात् नदीस्नानके फलका दशांश फल तलावमें स्नानकरनेसे होता है इसी भांति औरभी जानो प्रथमही (त्वंमृदेवंदितादेवैः सत्वखै-

देवघातिभिः । ममापिवंदिताभक्त्या ममांगंत्रिमलंकुरु)
इस मन्त्रसे मृत्तिका लेकर शरीरमें लगाय जलके समीप
जाय श्वेत सर्षप तिल वच औ सर्वौषधिका उबटना ल-
गाय जलमें मण्डलालिख ये मन्त्र पठनकरै (त्वमादिः
सर्वदेवानां जगतांचजगन्मय। भूतानांवीरुधानांच रसानां
पतयेनमः १ गङ्गासागरगंतोयं पुष्करंनर्मदातथा। यमुना
सन्निहत्याच सान्निध्यंकुरुतांसदा २) ये मन्त्रपढ़ स्नान
कर शुद्धवस्त्रपहिन सन्ध्या औ तर्पणकर घरमें आय नि-
यमपूर्वक रहै औ चन्द्रोदय पर्यन्त किसीसे सम्भाषण न
करै इसीभांति तृतीया आदि तिथियोंमेंभी स्नानकर नि-
यमसेरहै औ क्रमसे चार तिथियोंमें कृष्ण अच्युत अनंत
औ हृषीकेश इन नामों से भगवान्‌का पूजन भक्तिसे करै
पहिले दिन भगवान् के चरणारविन्द का पूजनकरै दूसरे
दिन नाभिका तीसरे दिन बक्षःस्थलका औ चतुर्थ दिनमें
नारायणके मस्तक का पूजन बिधिसेंकरै उत्तम पुष्प धूप
दीप नैवेद्य आदिसे भक्तिकरके पूजनकरै औ रात्रिको जब
चंद्रोदय होय उससमय शशी चन्द्र शशांक औ इन्दु इन
नामोंसे क्रमकरके चन्द्रमाको अर्घ्यदेवै चन्दन अगरु औ
कपूर अर्घ्यमें डालै चन्द्रमाने ब्रह्महत्याकरीथी उसहत्याको
छःभागकरके वृक्ष जल नदी भूमि अग्नि औ ब्राह्मणों में
बांटदिया औ उसी हत्या की निवृत्तिके लिये अर्घ्य देतेहैं
यह भद्रब्रतका बिधानहै द्वितीयाके दिन प्रेत अर्थात् पित-
रोंका संचार भयाहै इसलिये द्वितीया को प्रेतसंचरा कहते
हैं अग्निष्वात्त वर्हिषद आज्यपसोमप ये सब पितरहैं जो
इनका श्रद्धासे पूजनकरै उसकी ये भी सब प्रकारसे रक्षा

करते हैं कार्तिक शुक्ल द्वितीयाके दिन यमुनाने यमराजको भोजन करायाहै औ उसीदिन नरकके जीव बन्धनसे छुटेहैं औ यमराजके नगरमें बड़ा उत्सव हुआहै इसलिये इसका नाम यमद्वितीयाहै उसदिन अपनेघरमें भोजन न करे बहिनके घरजाय प्रीतिसे भोजनकरै दानदेवै औ वस्त्रभूषण आदि देकर भगिनियों को प्रसन्नकरै अपनी सगी बहिन न होय तो पिताके भाईकी कन्या मातुलकी पुत्री मौसी अथवा बुवा की बेटी ये भी बहिन हैं इनके हाथसे भोजन करै उसदिन यमुनाने यमराजको प्रीतिसे भोजन करायाहै इसकारण जो पुरुष यमद्वितीया को बहिनके हाथ भोजन करै वह धन यश आयुष् धर्म औ अपरिमित सुख पाताहै इतनाकह श्रीकृष्ण भगवान्‌ने कहा कि महाराज यह भद्रों का बिधान औ यमद्वितीयाका बिधान अति रहस्य हमने आपको श्रवण कराया अब आप क्या सुनना चाहतेहैं ॥

चौदहवां अध्याय ॥

अशून्य शयन ब्रतका बिधान औ फल ॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र आपने कहा कि सबधर्मों का साधन गृहस्थाश्रम है वह गृहस्थाश्रम स्त्री औ पुरुषसे होताहै पत्नी हीन पुरुष औ पुरुषहीन नारी धर्म्म आदि साधन करने को समर्थ नहीं होते इसलिये आप ऐसा कोई ब्रत कथनकरैं जिसके करनेसे स्त्री बिधवा न होय औ पुरुष पत्नीहीन न होय यह राजाका बचनसुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज अशून्य शयन नामक ब्रत द्वितीयातिथिको होताहै उसके करनेसे स्त्री बिधवा नहींहोय औ पुरुष पत्नी हीन नहीं होता उस

को विष्णुभगवान् लक्ष्मी सहित शयन करते हैं उसदिन उपवास नक्त अथवा अयाचित व्रतकरना चाहिये श्रावण कृष्ण द्वितीया को नदी अथवा तड़ागमें स्नानकर देवता औ पितरों का तर्पण करै पीछे मृत्तिकाका चतुरस्र एक स्थंडिल बनाय उसके ऊपर लक्ष्मी सहित भगवान् का आवाहन कर गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य औ अनेक प्रकार के ऋतु फलों से पूजन कर हाथ जोड़ भक्तिसे इस भांति प्रार्थनाकरै (श्रीवत्सधारिन्श्रीकांत श्रीधरश्रीपतेऽच्युत। गार्हस्थ्यंमाप्रणाशंमे यातुधर्मार्थकामदम्॥ अन्वयोमाप्रणश्येत माप्रणश्यन्तुदेवताः। पितरोमाप्रणश्यन्तुमत्तोदाम्पत्यसम्भवाः॥ लक्ष्म्यानशून्यंशयनंकदाचित्त्वकेशव। शय्याममाप्यशून्यास्तु तथाजन्मनिजन्मनि॥ इनमन्त्रोंसे प्रार्थनाकर चन्द्रोदयके समय पंचगव्य प्राशनकरै औ ब्राह्मणको यथाशक्ति दक्षिणा देवै इसविधि से चारमासपर्यन्त कृष्णपक्षकी द्वितीया को व्रत औ नारायण का पूजनकरै कार्त्तिकमासकी द्वितीया को लक्ष्मीनारायण की स्वर्ण की मूर्ति बनाय उत्तम शय्यापर स्थापनकर भक्ति से पूजनकर सबसामग्री औ जलपूर्णकलशसहित सत्पात्र ब्राह्मण को देकर ब्राह्मण भोजनकरावे व्रतके दिन दधि अक्षत मूल फल पुष्प जलआदि सुवर्ण के पात्रमें रख इस मन्त्रकरके चन्द्रमा को अर्घ्य देवै। गगनाङ्गनसम्भूत दुग्धाब्धिमथनोद्भव। भाभासितदिगन्तस्त्व निशाकरनमोस्तुते। इसविधिसे जो पुरुष चारमास व्रतकरै उसको स्त्री वियोग कभी नहीं होता औ सब प्रकारका ऐश्वर्य्य प्राप्त होताहै औ जो स्त्री भक्तिसे इसव्रतको करै वह तीनजन्म

तक विधवा औ दुर्भगा नहींहोती यह अशून्यशयन द्विती-
याका बृत सब कामना औ उत्तमभोग देनेहाराहै इसलिये
अवश्यही करना चाहिये ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

गोत्रिरात्र ब्रतका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज भाद्रशुक्ल तृतीयाको प्रति वर्ष गोपद नाम बृत श्रद्धासे करै स्त्री अथवा पुरुष पहिले स्नानकर दधि अक्षत औ पुष्पमाला आदिसे गो का पूजनकर उसके शृंग आदि सब अंगों को भूषितकरै औ दिनभरकी तृप्तिके योग्य भोजन गोको देवै औ आप भी तैल औ लवणआदि क्षारसेरहित अग्निपर बिना सिद्ध किया भोजन करै औ वनको जातीहुई तथा वनसे आती हुई गोकापूजनकरै इसभांति तीनदिन बृतरक्खै औ नित्य गो पूजनकरै इस बृतके करनेहारा सौभाग्य रूप लावण्य धनधान्य यश सन्तानआदि सब पदार्थपाताहै औ उसका घर नित्य गो औ बछड़ोंसे पूर्णरहताहै औ मरणके अनन्तर दिव्यरूपधार दिव्यभूषण वस्त्र माला आदिसे अलंकृतहो विमानमें बैठ स्वर्गको जाताहै वहां दिव्य सौयुग निवासकर विष्णुलोकमें प्राप्तहो भगवान्का पार्षदहोताहै जो इस गोत्रिरात्र बृतको करै गौओंको पूजै गोविन्द को प्रणामकरै गोरस आदि भोजनकरै औ नियमसे रहै वह अपने मनोवाञ्छित फल पाताहै ॥

सोलहवां अध्याय ॥

हरकाली ब्रतका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज भाद्रशुक्ल तृतीयाको

सब प्रकारके धान्य एकत्रकर उनपर हरकाली भगवतीकी मूर्त्ति स्थापनकर गन्ध पुष्प धूप दीप मोदक आदि नैवेद्य औ भांति २ के उपचारोंसे पूजनकर रात्रिके समय गीत नृत्यआदि उत्सवकर जागरणकरै प्रभातहोतेही सुवासिनी स्त्री उस मूर्त्तिको बड़े उत्सव से लेजाकर जलमें विसर्जन करै इतना सुन राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्ण हरकालीनाम भगवतीका क्योंकरभया औ हरकालीका पूजन करनेसे स्त्रियोंको क्याफल प्राप्तहोताहै यह आप वर्णनकरौ श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि महाराज दक्षप्रजापतिकीकन्या कालीनामथी औ उसका वर्णभी नीलकमल के समानथा वह शिवजी को बिवाही। शिवजी भी विवाह के अनन्तर कालीभगवती के साथ विहार करनेलगे एकसमय विष्णुजी सहित श्रीसदाशिव अपनी सभाके मण्डपमें विराजमानथे उसी अवसर में हास्यकरके शिवजी ने कालीभगवतीको बुलाया कि हे प्रिये हे गौरि यहां आओ यह शिवजी का वक्रवाक्य सुन भगवती को बहुत क्रोधहुआ औ रोदन करनेलगीं कि शिवजीने हमारा कृष्णवर्णदेख हास्य करके हमको गौरीकहाहै इसलिये इसदेहको हमप्रज्वलित अग्नि में हवन करदेंगी यह मनमें बिचार अपने देहकी हरितबर्ण कान्तिको शाद्वल अर्थात् हरीदूर्वायुक्त स्थलमें त्याग अपना देह अग्निमें हवनकिया औ हिमालय की पुत्रीगौरीनामहोकर शिवजीके बामांगमें निवासकिया उसी दिनसे जगत्पूज्य श्रीभगवतीका नाम हरकालीभया पूजन इस मन्त्रसे करनाचाहिये (हरकर्मसमुत्पन्ने हरकालिहरप्रिये। मन्त्रदैवतमूर्त्तिस्थे प्रणमामिनमोनमः। बिसर्जन इस

मन्त्रसेकरै (अर्चितासिमयाभक्त्या गच्छदेविसुरालयम्। हरकालिमहागौरि पुनरागमनंत्वया) इस विधिसे प्रतिवर्ष जो स्त्री अथवा पुरुष ब्रतकरै वह आरोग्य दीर्घआयुष् सौभाग्य पुत्रपौत्र धन बल ऐश्वर्यआदि पाताहै औ सौवर्षतक संसारका सुख भोगकर शिवलोकमें प्राप्तहोताहै वहां वीरभद्र महाकाल नन्दीश्वर विनायकआदि शिवजीके गण उसकी आज्ञामें रहते हैं जो स्त्री भक्तिसे इस हरकाली ब्रत कोकरतीहैं औ रात्रिकेसमय गीत वाद्य नृत्यसे जागरणकर बड़ाउत्सव करती हैं वे पतिकी अतिप्रिया होती हैं॥

सत्रहवां अध्याय॥

ललिता तृतीया ब्रतका विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप द्वादश मासिकब्रतक हैं जिसके करने से सब उत्तम फल प्राप्तहोयँ औ प्रत्येक मासका विधान कहैं। यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि महाराज हम प्राचीन वृत्तान्तकहते हैं आप श्रवणकीजिये। एक समय अनेक प्रकारके पुष्पफलयुक्त वृक्षोंसे शोभित आम्र चंपक अशोक कदम्ब बकुलआदिके पुष्पोंपर विहार करते भ्रमरों से शब्दायमान मयूर राजहंस मृग हाथी सिंह बानरआदि जीवों करकेयुक्त गन्धर्व यक्ष किन्नर सिद्ध तपस्वी नाग आदिकों करके सेवित कैलासपर्वतमें सबदेवता औ गणों करके पूजित श्रीसदाशिव विराजमानथे उससमय अति विनयसे पार्वतीजी ने प्रार्थनाकरी कि महाराज ऐसा ब्रत आप कथनकरैं जिसके करनेसे सौभाग्य धन सुख पुत्र

रूप लक्ष्मी औ स्वर्गकी प्राप्तिहोय औ दीर्घ आयुष् तथा आरोग्यभीमिलै यह पार्वतीजीका वचन सुन हँसकरशिव जी बोले कि हे प्रिये ऐसा कौनपदार्थहै जो आपको दुर्लभ है कि जिसकीप्राप्तिके लिये व्रतपूछतीहौ तब पार्वतीजीने कहा कि महाराज मुझे तो आपके अनुग्रहसे तीनलोकके सब उत्तम पदार्थ प्राप्तहीहैं परन्तु संसारमें अनेक स्त्री मेरा आराधन करती हैं कोई पुत्रकेलिये कोई पतिकेलिये कोई सौभाग्यके अर्थ कोई सासुकरके पीडित अपनादुःखदूर होनेकेलिये औ कोईरूपलावण्यकी प्राप्तिकेहेतु मेराभक्तिसे सेवन करतीहैं औ मेरे शरणमें प्राप्तहोतीहैं जिसप्रकारवे अपना २ अभीष्ट अनायाससे पावैं वह उपाय आप कथनकीजिये उनके अर्थही मेराप्रश्नहै यहपार्वतीजीका वचन सुन शिवजी कहनेलगे कि माघशुक्ल तृतीयाको प्रभातउठ शौचकर हाथपांव औ मुखधोकर दन्तधावनकर व्रतके नियम ग्रहणकरै औ मध्याह्नके समय तिल औ आमलक लगाय स्नानकर शुद्धवस्त्र पहिन गन्ध पुष्प धूप दीप कर्पूर कुंकुम औ भांति २ के नैवेद्यों से भक्तवत्सला श्रीभगवतीका पूजनकरै पीछे ताम्रपात्रमें जल अक्षत औ सुवर्ण डालकर पात्र को हाथमें उठाय अपने अभीष्ट को मनमें ध्यान करताहुआ ये मन्त्रपढ़ै (ब्रह्मावर्त्तसमाख्याता ब्रह्मयोनिविनिर्मिता। भद्रेश्वरीततोदेवी ललिताशंकरप्रिया १ गंगाद्वारेहरंप्राप्तागंगाजलपवित्रता। सौभाग्यारोग्यपुत्रार्थमर्थार्थंजनवल्लभे२ अजातघटिकांभद्रेप्रतीच्छस्यनमोनमः) ये पढ़ भगवतीको अर्घ्यदेवै औ आचमन कर रात्रिके समय भूमिमें कुशाकी शय्यापर सोवै दूसरे

दिन प्रभातउठ स्नानकर विधिसे भगवतीका पूजनकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय आपभी मौनसे भोजनकरै इसभांति प्रथममासमें कालिका भगवतीका पूजनकरै द्वितीयमासमें पार्वतीका तृतीयमें शंकरप्रियाका चतुर्थमें भवानीका पांचवेंमें गौरीका छठेमें दक्षपुत्रीका सातवेंमें मेनाकीका आठवेंमें ललिताका नवममेंसाध्वी का दशवें में सौभाग्यदायिनीका ग्यारहवेंमें उमाका औ बारहवेंमहीने में गौरी का पूजन करे औ बारहोंमहीनोंमें क्रम से कुशोदक दुग्ध घृत गोमूत्र गोबरफल निंब बचा मुलहटी बिल्वपत्र पंचगव्य औ शाक इनको प्राशन करे इसप्रकार बारहमास का ब्रतकर श्रद्धासे भगवतीका पूजनकरै औ इनमन्त्रोंसेप्रार्थना भी करै (ओंकारपूर्वकेदेवि नमस्कारांत दीपिते। एभिस्तुपूजितामंत्रैस्तुष्यसि ब्राह्मणप्रिये। तुष्टा त्वमीप्सितान्कामान्ददासिप्रीतिपूर्वकम्) ब्रतसमाप्त होने पर बेदपाठी ब्राह्मण को भार्या सहितबुलाय दोनोंका शिव पार्वती बुद्धि से पूजनकर प्रीतिसे भोजन कराय दक्षिणा बस्त्र भूषणआदिदेकर उनको सन्तुष्ट करै ब्राह्मणको शुक्ल बस्त्र औ ब्राह्मणी को रक्तबस्त्र देवै इस ब्रत को जो स्त्री भक्तिसेकरै वह अपने पतिसहित दिब्यलोकमें प्राप्तहो दश हजार बर्ष उत्तम भोग भोगतेहैं औ मनुष्यलोकमें जन्मले फिर भी दोनों दंपतीही होतेहैं औ आरोग्य धन बिद्या संतान आदि सब उत्तम पदार्थ उनको प्राप्त होते हैं औ उस स्त्री के सदा भर्ता अधीन रहताहै औ वह स्त्री पतिको प्राणोंसे भी अधिक प्रियहोती है औ उत्तम रूप लावण्य औ सौभाग्य पाती है औ जन्मांतर में राजा की रानी हो

भूमिका भोग करतीहै इसललितावृतके विधानको जो सुने वह भी सब उत्तम फल पावै॥

अठारहवां अध्याय॥

अवियोग तृतीया व्रतका विधान औ फल॥

युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जिसव्रतके करने से स्त्री पति करके वियुक्त न होय अन्त में शिवलोक में वासपावै औ जन्मान्तर में भी विधवा न होय ऐसा व्रत आप वर्णनकरैं यह राजाका बचनसुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज यही बात पार्वतीजी ने शिव जीसे औ अरुंधतीने बशिष्ठजीसे पूछी थी उनने जो कहा वही हम आपको श्रवण कराते हैं। मार्गशीर्ष मास की शुक्लद्वितीया को आचमन कर शिव औ पार्वती को दण्ड प्रणामकरै पीछे गूलरके काष्ठसे दन्तधावनकर स्नान करै औ शालिपिष्ठसे शिव पार्वती की प्रतिमा बनाय उत्तम पात्रमें स्थापनकर बिधिपूर्वक उनका पूजन करै औ रात्रिके समय खीरका भोजनकरै शिव पार्वती का स्मरण करता हुआ भूमिपर शयनकरै प्रभात उठ दक्षिणा सहित वह प्रतिमा आचार्यकोदे उत्तम भोजनसे शिवभक्त ब्राह्मणों को सन्तुष्टकरै औ यथाशक्ति दंपति पूजन भी करै इसभांति प्रतिमास व्रतकर पूजनकरै अब हम बारहमहीनों के नाम पूजनके अर्थ कहते हैं पौषमासमें गिरीश औ पार्वती का पूजन कर पंचगव्य का प्राशनकरै माघ में भव औ भवानीका पूजन करै फाल्गुनमें महादेव औ उमाका अर्चन करै चैत्रमें शङ्कर औ ललिताकायजनकरै बैशाखमें स्थाणु औ लोलनेत्राका पूजनकरै ज्येष्ठमें रुद्र औ रुद्राणीका पु

जनकरै आषाढ़ में पशुपति औ सती का पूजनकरै श्रावण में श्रीकंठ औ सुतारा का पूजनकरै भाद्रमें भीम औ काल रात्रिका यजन करै आश्विनमें शिव औ दुर्गाका पूजनकरै औ कार्तिकमासमें ईशान औ शिवा देवी का भक्तिसे अर्चन करै इन नामोंसे बिना पूजन किये व्रतसिद्धि नहींहोती औ बारहमासमें क्रमकरके इनपुष्पोंसे अर्चनकरै नीलोत्पल करवीर किंशुक चमेली कदम्ब द्रोणमालती वक अगस्त्य कमल कुमुद औ बिल्वपत्र प्रतिमास में नित्य इन पुष्पों करके पूजनकरै बर्षसमाप्तिमें शिवपूजाकरै सुबर्णका कमल दो बस्त्र ध्वजा दीपक औ भांति २ के नैवेद्य शिवजी के अर्प्पण कर आरती करै औ यथाशक्ति ब्राह्मण मिथुनोंका पूजनकर सुवर्ण की शिव पार्वतीकी मूर्त्ति बनाय ताम्रपात्र में स्थापन कर उसी पात्र में चौंसठमोती चौंसठमूंगा औ चौंसठ पुखराजधर पात्रकोबस्त्र से ढक आचार्यके अर्पण करै ब्रती ब्राह्मण औ दम्पती इनसबको सुवर्ण औ वस्त्रदेवै अड़तालीस जलपूर्ण कलश छत्र जूता औ सुवर्ण ब्राह्मणों को बांटै औ दीन अन्ध कृपणोंको अन्न देवै किसीको उस दिन बिमुख न जानेदेवै इतना करनेका समर्थ न होय तो कुछ न्यूनकरै परन्तु वित्तशाठ्य न करै इस ब्रतके करने से रूप सौभाग्य धन आयुष पुत्र औ शिवलोककी प्राप्तिहोती है इष्ट वियोग कभी नहीं होता जो पतिब्रता इस ब्रत को करै वह कभी पति पुत्र सौभाग्य औ धनसे वियुक्त नहीं होती औ शिवलोकमें निवास करतीहै ॥

उन्नीसवां अध्याय॥

उमामहेश्वर ब्रतका विधान औ फल॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हेकृष्णचन्द्र किसब्रतकेकरने से नारियोंको बहुतसे पुत्र पौत्र सुवर्ण वस्त्र औ सौभाग्य मिलताहै यह आप वर्णनकरैं यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णबोले कि हे महाराज सब ब्रतोंमें उत्तमब्रत हम वर्णन करतेहैं जिसके करनेसे स्त्रियोंको बहुत सन्तान दास दासी भूषण वस्त्र औ सौभाग्य प्राप्तहोय यहउमामाहेश्वरब्रत अप्सरा विद्याधरी किन्नरी ऋषि कन्या रम्भा सीता अहल्या रोहिणी दमयन्ती तारा अनसूया आदि सब स्त्रियों ने किया है औ सब उत्तम स्त्री करती हैं मनुष्यलोक में दुर्भगा औ कुरूपा स्त्रियों के हितके लिये पार्वतीजी ने इस ब्रतका प्रचार किया है मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया को नियम पूर्व्वक स्त्री उपवास करै औ स्नानकर शिवजी के वामांग में निवास करनेवाली श्रीललिता भगवती का पूजन करै प्रभातउठ नदी में स्नानकर शिव पार्वतीका ध्यान करती हुई यह मन्त्र पढ़ै (नमोनमस्तेदेवेश उमादेहार्द्धधारक। नमोदेविनमस्तेस्तु हरकायार्द्धवासिनि) फिर घरमें आय दक्षिणभागमें शिवजीकी मूर्त्ति औ बामभागमें पार्वतीकी मूर्त्तिस्थापनकर गन्ध पुष्प गुग्गुल धूप दीप औ घृत पक्व नैवेद्यसे भक्तिपूर्व्वक पूजनकर तिल औ घृतसे हवनकराय अपने देहकी शुद्धिकेलिये पंचगव्य प्राशनकरै इसभांति बारह महीने पूजनकर प्रसन्न चित्तहो ब्रतका उद्यापनकरै चांदीकी शिवमूर्त्ति औ सुवर्णकी पार्वतीकी मूर्त्ति बनवाय दोनोंको चांदीके वृषकेऊपर स्थापनकर सबवस्त्र औ भू

षणों से अलंकृत करै चन्दन श्वेतपुष्प श्वेतवस्त्रआदि से शिवजीका औ कुंकुम रक्तपुष्पआदिसे पार्वतीजीका पूजन करै पीछे शिवभक्तवेदपाठी औ शांतचित्त ब्राह्मणोंकोभोजन कराय सबको दक्षिणादे प्रदक्षिणाकर यह मन्त्रपढ़ै (उमामहेश्वरौदेवौसर्वसत्त्वपितामहौ । व्रतेनानेनसम्प्रीतौभवेतां ममसर्वदा) इसभांति प्रार्थनाकर जितक्रोधहो व्रतसमाप्त करै इसव्रत को जो स्त्री भक्तिसे करै वह शिवजीके समीप एक कल्प निवासकरै औ किन्नरी अप्सरा विद्याधरीआदि उसकी सेवामें रहैं फिर मनुष्यलोकमें उत्तम कुलके बीच जन्मलेकर रूप यौवन पुत्र आदि सब पदार्थ पाय बहुत काल अपने पतिकेसाथ संसारके सुखभोग अन्तमें शिव सायुज्यपातीहै चांदी औ सुवर्णकी शिव पार्वतीकी प्रतिमा बनाय चांदीके वृषपर स्थापनकर उत्तम वस्त्र भूषणोंसेअ-लंकृतकर भक्तिसेपूजाकरै पीछे ब्राह्मणकोदेवे वहनारीकभी बिधवा नहींहोती औ पुत्र धन आदि सब पदार्थ पातीहै॥

बीसवां अध्याय ॥

सौभाग्यशयन व्रतका बिधान औ फल ॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि हे महाराज अबहम सौभाग्यशयन नाम व्रत कहतेहैं जो पुराणोंमें प्रसिद्धहै प्रलयके समय सब लोकदग्धहोगये तबसबकासौभाग्य इकट्ठाहोकर बैकुण्ठमें विष्णु भगवान् के बक्षस्स्थलमें स्थित हुआ फिर जबसृष्टि भई तबआधा सौभाग्य तो ब्रह्माकेपुत्रदक्ष प्रजापतिने पान करलिया जिससे उनका रूप औ लावण्य अधिकभया औ आधेसे इक्षुताल निष्पाव क्षीर कुसुंभ कुंकुम चन्दन लवण ये आठ पदार्थ उत्पन्न भये इनकानाम सौ ।

ष्टकहै दक्ष प्रजापतिनेजो सौभाग्य पान किया उससे सती नाम कन्या उत्पन्न भई सबलोकमें उसका सौंदर्य्य अधिक भया इसीसे उसकानामललिता भया वह त्रैलोक्य सुन्दरी कन्या शिवजीकोबिवाही उसजगन्माताके आराधनसेभुक्ति मुक्ति औ स्वर्गका राज्यभी मिलताहै इतनासुन राजा युधिष्ठिर पूछतेभये कि भगवतीके आराधन का क्याबिधान है आप जगत्के कल्याणके अर्थ वर्णन करैं तब श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि महाराज चैत्रमास की शुक्ल तृतीया को ललिता भगवती का शिव जीके साथ बिवाह हुआहै उसदिन पूर्व्वाह्न में तिलोंसे स्नानकर गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य भांतिभांति के फल गोघृत औ गन्धोदक करके भक्ति से शिव पार्वती का पूजन करै फिर पाटला औ शम्भुका चरणोंमें पूजनकरै त्रियुगा औ शिवका गुल्फों में औ भद्रा सहित ईश्वरका मस्तक पर गंधमाल्य आदि से पूजनकरै ये सब प्रणवादि नमोंतनाम मन्त्रहै इसभांति पूजनकर सौभाग्याष्टक का निवेदनकरै औ रात्रिको भूमि पर सोवे प्रभात उठ स्नानकर ब्राह्मणदंपती का पूजनकर दोधरण अर्थात् छमासे सुबर्ण औ सौभाग्याष्टक ब्राह्मण को देवै औ यह कहै कि ललिता देवी प्रसन्नहोय इस भांति एक बर्ष पर्यंत प्रतिमास की तृतीया को पूजनकरै औ चैत्र आदि बारह महीनोंमें गोशृंगजल गोबर मंदार पुष्प बिल्वपत्र दही कुशोदक दूध घृत गोमत्र घी कृष्ण तिल औ पंचगव्य का प्राशन करै औ ललिता बिजया रुद्राभवानी कुमुदा शिवा सुदेबी गौरी मंगला कमला सती औ उमा इननामोंको दान कालमें क्रमसेबारहमहीनों में

ञ्चारणकरै मल्लिका अशोक कमल उत्पल मालती कु-
ज करबीर बाण अम्लान कुंकुम सिंदुवार औ जपा ये
ारह महीनोंमें पूजाके लिये क्रमसे पुष्प कहे हैं इनमें जो
ाप्तहोय उसीसे भगवतीका पूजन करै परन्तु करबीर पुष्प
दा भगवतीको प्रियहै इसभांति एकबर्ष ब्रतकरके उत्तम
ाय्या बनवाय उसके ऊपर तीन पल सुवर्ण की उमा महे-
वरकी प्रतिमा स्थापनकर ब्राह्मणकोदेवै औ उसके साथ
कउत्तम गौभी देवै और भी बस्त्रभूषण गौदाक्षिणा आदि
 यथाशक्ति दंपतिपूजनकरै बित्तशाठ्य न करै इसब्रतके
रने से सब कामना सिद्ध होती हैं औ परलोकमें भी सुख
ी प्राप्तिहोती सौभाग्य आरोग्यरूप आयुष् बस्त्रभूषण
आदिका तीनसौजन्म तक बियोग नहीं होता जो इसब्रत
ो बारह बर्ष करै वह तीन अयुत कल्पपर्यन्त स्वर्ग में
हे जो स्त्री पुरुष कुमारी इस सौभाग्य शयननाम ब्रतको
भक्तिसे करै अथवा इसके माहात्म्यको सुनै वह दिव्यदेह
ार स्वर्गकोजाय यह ब्रत कामदेवने शशाविन्दुने औरभी
कई देवताओंने कियाहै औ सबको करना चाहिये ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

अनन्तफलदा तृतीयाका विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि सौभाग्य आरोग्यआदि फल देनेहारा औ शत्रुओं का क्षयकारक भुक्ति मुक्ति प्रद कोई ब्रत आप औरभी वर्णनकरैं यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे महाराज जो ब्रत विष्णु भगवान्ने लक्ष्मीजीको कहाहै वह हम आपको कथनकरतेहैं आप सावधानहो श्रवणकीजिये बैशाख भाद्र अथवा मा-

र्गशीर्षकी शुक्ल तृतीयाको श्वेत सरसोंका उबटन लगाय स्नानकर गोरोचन मोथा गोमूत्र दही गोबर औ चन्दन इन सबको मिलाय मस्तकमें तिलक करै यह तिलक सौभाग्य औ आरोग्य करनेहारा है औ ललिता भगवती को अतिप्रियहै प्रतिमासकी तृतीयाको सौभाग्यवती स्त्री रक्तवस्त्र पहिन कर विधवा पीतवस्त्र औ कुमारी शुक्लवस्त्र पहिन पूजनकरै पहिले पंचगव्यकरके औ केवलदुग्धकरके भगवतीको अर्घ्य देकर मधु औ गन्धोदक से स्नानकराय श्वेतपुष्प औ अनेकप्रकारकेफल चढ़ावै धनियां मुलहटी लवण गुड़ दुग्ध घृत अक्षत औ तिलोंकरके अर्घ्यदेवै पीछे वरदायैनमः शिवप्रियायैनमः अशोकायैनमः भवान्यैनमः गौर्यैनमः त्रिनेत्रायैनमः तुष्ट्यैनमः पुष्ट्यैनमः सृष्ट्यैनमः कात्यायन्यैनमः श्रियेनमः रंभायैनमः ललितायैनमः वासुदेव्यै नमः इनमन्त्रोंसेक्रमपूर्वक भगवतीकेचरण गुल्फ जंघा जानु हृदय लोचन ललाट औ शिरका पूजनकर अपनेअग्रभाग में द्वादशदल कमल लिखै पीछे वाम भागमें गौरीदक्षिण में भवानी औ मध्यमें रुद्राणी पश्चिमसे सौम्या मदनवासिनी पाटला उग्राउमास्वाहा स्वधा तुष्टि मंगला कुमुदा सती औ रुद्राणी इनका द्वादशदलोंमें पूजनकर कर्णिकाके ऊपर ललिताका पूजनकरै अनेकप्रकारके उपचारों से पूजनकर नमस्कारकरै पीछे सुवासिनीको स्नानआदि कराय उसकेशिरमेंसिंदूर पातनकर रक्तचंदन पुष्प रक्तवस्त्र भूषण आदि से उसका पूजन करै भाद्र आदि बारह महीनों में उत्पल बन्धूक कमल कुन्द कुंकुम सिंदुवार चमेली मल्लिका अशोक पाटला चम्पक कदम्ब इनपुष्पों से क्रमपूर्वक

जन करै गोमूत्र गोबर दुग्ध दही घृत कुशोदक गाश्रृं-
ोदक जल पुष्प तिलपिष्ट पंचगव्य औ बिल्व इनका
ारहमहीनों में प्राशनकरै प्रत्येक तृतीया को इसी विधि
पूजन करै ब्राह्मण औ ब्राह्मणी को शिव पार्व्वती मा-
भोजन कराय वस्त्र भूषण आदि से उनका पूजन करै
ुरुषको पीतवस्त्र औ स्त्रीको रक्तवस्त्र पहिनावै और भी
ौबीस अथवा बारहमिथुन अर्थात् स्त्री पुरुषके जोड़ोंका
ूजनकर गुरुका पूजनकरै जो गुरुपूजन न करैं उनकी सब
क्रिया निष्फलहोती हैं इस भगवतीके पूजनमें वित्तशाठ्य
हींकरना चाहिये गर्भिणी सूतिका औ रोगिणी स्त्री दूसरे
े पूजनकरावैं औ आप भक्तिसे देखैं इस अनन्त फलदा
ृतीयाका ब्रत जो भक्तिसे करै वह सौकोटि कल्प पर्य्यन्त
शिवजीके समीप निवासकरै धनहीनभी तीनबर्ष इसब्रत
को करै औ पत्र पुष्प जो मिलैं उनसेही भक्तिकरके पूजन
करै वहभी सम्पूर्ण फलपाताहै जो स्त्री इसब्रतके विधान
को श्रवणकरै वहभी किन्नरी विद्याधरीआदि करके सेवित
पार्वतीके समीप निवास करै ॥

बाईसवां अध्याय॥

रसकल्याणिनी तृतीया का विधान औ फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अब हम रसकल्या-
णिनी नाम तृतीयाका बिधान कहते हैं माघशुक्ल तृतीया
को प्रभातही गोदुग्ध औ तिलोंकरके स्नानकर शहत औ
इक्षुरस करके भगवतीको स्नानकराय चमेली अथवा कुं-
कुमकरके पूजनकरै पहिले दक्षिणओरके अंगोंकी पूजाकर

वामभागके अंगपूजै ललितायैनमः इसमन्त्र करके पाद गुल्फ जंघा जानुका पूजनकरै श्रियेनमः इसकरके अंगुलियोंका मदतालसायैनमः इस मन्त्रकरके कटिका कुमुदायैनमः इसमन्त्रकरके ग्रीवाका माधव्यै नमः इसकरके भुज औ भुजाग्रका कमलायैनमः इसकरके मुखका रुद्राण्यैनमः इसकरके भ्रू औ ललाटका विश्ववासिन्यै नमः इस करके मुकुटका कान्त्यैनमः इससे अलकोंका मदनायैनमः इससे ललाटका मोहिन्यैनमः इसकरके भ्रूका चक्रधारिण्यैनमः इसकरके नेत्रोंका पुष्ट्यैनमः इसकरके मुखका उत्कण्ठिन्यै नमः इस करके कण्ठका अतायै नमः इसकरके कन्धरा का रम्भायैनमः इसकरके वामभुजा का विशोकायैनमः इसकरके हाथका मन्मथायैनमः इसकरके हृदयका पाटलायैनमः इस करके उदर का सुरतवासिन्यै नमः इसकरके कटिका चम्पकश्रियैनमः इसकरके ऊरुका गौर्यैनमः इसकरके गुल्फका गायत्र्यैनमः इसकरके शिरका पूजनकर (ओंनमोभवान्यैकामिन्यै वासुदेव्यैजगच्छ्रियै। आनन्दायैनन्दनायैरुद्रायैचनमोनमः) इसमन्त्रसे प्रार्थना कर ब्राह्मण दम्पतीका पूजन करावै इसीविधिसे प्रतिमास पूजनकरै औ माघआदि महीनोंमें क्रमसे लवण गुड़ नवान्न मधुपानक जीरा क्षीर दही घृत शाक धनियां औ शर्करा इनको त्यागै अर्थात् भक्षण न करै औ प्रतिमास एक पात्र इन पदार्थोंका भर ब्राह्मणको दक्षिणासहित देवै औ माघ में पूजन के अन्तमें कुमुदा प्रीयताम् यह कहै इसीभांति फाल्गुन आदि महीनोंमें माधवी गौरी रंभा भद्रा जया शिवा उमा शची सती मंगला रतिलालसा का नामग्रहण करै

पंचगव्यका सर्वत्र प्राशनकरै औ उपवासकरै जो सामर्थ्य न होय तो नक्तव्रतही करै फिर माघमास आवै तबशर्करा पूर्ण पात्रके ऊपर सुवर्णकी पार्वतीकी मूर्तिस्थापनकर वस्त्र भूषण रत्न आदिसे अलंकृतकर गोमिथुन अर्थात् एकबैल औ एक गो सहित ब्राह्मणको देवै इसबिधिसे जो ब्रतकरै वह तत्क्षण सब पापोंसे मुक्तहोजाता है औ हजार जन्मतक दुःखी नहींहोता हजार अग्निष्टोम यज्ञका फल पाताहै जो स्त्री कुमारी बिधवा आदिभी इसब्रतको करै तो सबप्रकार के उत्तम फल पावै जो इसबिधान को सुनै अथवा ब्रत करनेकेलिये औरोंको उपदेश करै वहभी सब पापोंसे मुक्त हो पार्वती लोकमें निवास करताहै ॥

तेईसवां अध्याय ॥

आर्द्रानन्दकरी तृतीया का बिधान औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराजअबहम आर्द्रानन्दकरी तृतीयाका बिधान बर्णन करते हैं जब कभी आषाढ़ शुक्ल तृतीयाको रोहिणी अथवा मृगशिरा नक्षत्रहोय उस दिनसे इसब्रत का आरम्भ करै कुशा औ गन्धोदककरके स्नानकर श्वेतचन्दन श्वेतमाला औ श्वेत वस्त्र पहिन उत्तम सिंहासन पर शिव पार्व्वती की प्रतिमा स्थापन कर रक्तचन्दन रक्तपुष्प आदिसे पूजनकरै पीछे वासुदेव्यैनमः शोकविनाशिन्यै० रंभायै० आदित्यै० माधव्यै० आनन्दकारिण्यै० उत्कंठिन्यै० उत्पलधारिण्यै० परिरंभिण्यै० विभासिन्यै० श्रुतिस्मृतिरूपायै० मदनवासिन्यै० रतिप्रियायै० इन्द्राण्यै० स्वाहायै नमः इनमन्त्रोंसे भ० औ शंकरायनमः आनन्दायनमः शिवाय ० ८९

ने ० शंभवाय ० इन्दुधारिणे ० नीलकंठाय ० रुद्राय ० नृत्यशीलाय० विषमाक्षाय० विश्ववक्त्राय० विश्वधाम्ने० तांडवेशाय० हव्यवाहाय० पंचाशिरायनमः इनमन्त्रोंसे शिवके पाद जंघा ऊरु कटि नाभि स्तन कंठ हाथ भुजा मुख नेत्र भ्रू ललाट औ मुकुट इन अंगोंका क्रमसे पूजनकर यहमन्त्र पढ़ै (विश्वकायौ विश्वमुखौ विश्वपादकरौशिवौ प्रसन्नवदनौवंदेपार्वतीपरमेश्वरौ) इसबिधिसे पूजनकरमूर्तियोंके आगे अनेकप्रकारके कमल शंख स्वस्तिक चक्र वर्द्धमान आदिके चित्र पंचरंगसे लिखै गोमूत्र गोवर क्षीर दही घृत कुशोदक गोशृंगोदक बिल्वपत्रकूट युक्त जल उशीर अर्थात् खसका जल यवचूर्ण का जल औ तिलोदकका क्रमसे मार्गशीर्ष आदि महीनों में प्राशनकरै परन्तु यह प्राशन प्रतिपक्ष की द्वितीया को कर शयन करै सर्वत्र पूजा के लिये शुक्लपुष्प श्रेष्ठहैं औ दानकालमें यह मन्त्र पढ़ै (गौरीमेप्रीयतां नित्यमघनाशंचमंगलम्। सौभाग्य-मस्तुललिता शर्वाणीसर्वसिद्धये) बर्षके अन्तमें लवण गुड़ चन्दन दो श्वेतबस्त्र इक्षु औ भांति २ के फलों सहित सुवर्ण की शिव पार्वती की प्रतिमा सपत्नीक ब्राह्मणको देवै औ गौरीमेप्रीयताम् यह कहै इस आर्द्रानन्दकरी तृतीयाको ब्रत करनेहारा पुरुष शिवलोकमें निवासकरता है औ इसलोकमेंभी धन आयुष् आरोग्य ऐश्वर्य औ सुख पाताहै औ कभी उसको शोकनहीं होता प्रतिपक्षमें इस ब्रतकोकरै औ विधिसे पूजनकरै तो रुद्राणी लोकमें प्राप्त होय जो इस विधानको सुनै अथवा सुनावै वहभी गन्धर्वों करके पूजित इन्द्रलोकमें निवासकरै जो स्त्री इस ब्रत को

करैं वे संसारके सबसुख भोग अन्तमें अपने पतिसहित गौरीलोकमें निवास करती हैं॥

चौबीसवां अध्याय॥

चैत्रभाद्र औ माघशुक्ल तृतीया का विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिरकहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र चैत्र भाद्र औ माघकी तृतीया रूप सौभाग्य औ पुत्र देनेहारी हैं उनका आपने वर्णन क्यों न किया क्या हम भक्तिरहित हैं अथवा वेदमार्गका उल्लंघन करनेहारे हैं कि सब जगत् में प्रसिद्ध व्रत आपने हमसे गुप्तरक्खे यह सुनश्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे महाराज आप धर्मार्थमें कुशलहैं औ सर्वज्ञहैं जो आपकी उन व्रतोंकेही श्रवण करनेकी इच्छा होय तो सुनिये आपसे उत्तम श्रोता कौनमिलैगा। जया विजया नाम पार्वतीजीकी सखी हैं उनको एकसमय मुनि कन्याओंने पूछा कि दोनों तुम भगवतीकी परिचारिका हो यहबताओ किकिसदिन किन उपचारों औ मन्त्रोंसे पूजन करने करके पार्वती भगवती सन्तुष्टहोती हैं यहसुन जया बोली किहे मुनिकन्याओ सुनो सबकामना सिद्धकरनेहारा व्रत मैं वर्णन करतीहूं चैत्रशुक्ल तृतीयाको प्रभात उठदन्तधावनकर व्रतके नियम ग्रहणकरै कुंकुम सिंदूर रक्तवस्त्र ताम्बूलआदि सौभाग्यवतीके चिह्नधार भक्तिसे पूजनकरै पहिले अतिसुन्दर मण्डपबनाय उसके मध्यमें एकमनोहर वेदी रच एकहाथ प्रमाणकाकुण्डबनावे पीछे स्नानकर उत्तमवस्त्र पहिन मण्डपमें जाय ब्राह्मणद्वारा सबकर्म करावै देवता औ पितरोंका अर्चनकर आठनामों करके भगव का पूजन करै कुंकुम कर्पूर अगरु चन्दनआदि ले

गाय अनेक प्रकारके सुगन्ध युक्त पुष्प चढ़ाय धूप दीप आदि उपचार समर्पणकरै पार्वती ललिता गौरी गान्धारी शांकरी शिवा उमा औ सती ये आठनामहैं लड्डू अपूप आदि बहुत भांतिके घृतपक्क नैवेद्य औ दाड़िम नालिकेर आमलक कूष्मांड कर्कटी बीजपूर आदिफल निवेदनकरै औ शंख तूर्य मृदङ्ग आदिकेशब्द औ उत्तम गीतसे उत्सव करै इसभांति भक्तिसे पार्वतीजी का पूजनकर प्रदोषके समय नये मृत्तिका के घटोंमें जललाकर उससे स्नानकर पूर्वोक्त बिधिसे फिर भगवती का अर्च्चन कर गीला वस्त्र पहिने और भगवतीके सम्मुख पद्मासनपर बैठकर सम्पूर्ण रात्रिको ब्यतीत करै प्रतिप्रहर में पूजन और घृत युक्त तिलोंसे हवनकरै उससमयकोई स्त्री गावैंकोई हर्षसे नृत्य करैं कोई भक्तिसे भगवतीके गुण वर्णनकरैं नृत्यकरकेशिवजी गीतकरके पार्वतीजी औ भक्तिसे सब देवताबशहोतेहैं ताम्बूल कुंकुम औ उत्तम २ पुष्प सुवासिनी स्त्री भगवती को अर्पण करैं उस रात्रि को जागरण का उत्सवहोय औ नट वेश्याआदिके तमाशाभी होयँ इसभांति प्रसन्नता से रात्रि बिताय प्रभातही स्नानकर पार्वतीका पूजनकर तुला के ऊपर चढ़ै गुड़ लवण कुंकुम कर्पूर अगुरु चन्दनआदि द्रव्यों से यथाशक्ति तुलै विशेषकरके लवणकी तुलाकरै इसविधिसे जो नारी ब्रत औ तुलादानकरै वह अपनेपति सहित इन्द्रलोक में निवासकर ब्रह्मलोक में और वहां से शिवलोक में प्राप्तहोयँ और इस लोकमेंभी रूप सौभाग्य सन्तान धनआदि पावै उसके वंशमें दुर्भगा कन्या और दुर्विनीत पुत्र कभी उत्पन्न न होय औ उसके घरमेंदारिद्र

ोग शोक आदि नहींहोते जो कन्या इस व्रत को करै औ
वस्त्रभूषण आदिसे वाचक ब्राह्मणका पूजनकरै वो अभीष्ट
वरपाय संसारका सुखभोगै माघमासमें उत्तममणियोंकरके
चैत्रमें विचित्र पुष्पोंकरके औ भाद्रमें भांति२के सस्योंकरके
इसी बिधानसे पतिव्रता नारी भगवतीका पूजनकरती हैं॥

पच्चीसवां अध्याय॥

अनन्तादि तृतीयाका विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र शुक्लपक्षकी तृतीया तो बहुतहैं परन्तु अनन्तादि तृतीयाव्रतका आप वर्णनकरैं औ प्रतिमासके नाम औ प्राशनभी कहैं यहसुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज यह आनन्तर्य व्रत ब्रह्मा बिष्णु शिव आदि देवताओंनेभी नहींकहा गुप्त रक्खा उसको हम बर्णन करते हैं इसव्रतका आरम्भ मार्गशीर्षसे करै द्वितीयाकेदिन नक्तव्रतकर तृतीयाको उपवास करै गन्ध पुष्प आदिसे उमादेवी का पूजनकर शर्करा औ पूरीका नैवेद्यलगाय आपभी दही प्राशनकर रात्रिको शयन करै औ प्रभातउठ ब्राह्मण दम्पती को भोजनकरावै इस विधिसे जो नारी व्रतकरै वह सम्पूर्ण अश्वमेध के फलको पातीहै मार्गकृष्ण तृतीयाको कात्यायनीका पूजनकर नारिकेल नैवेद्यलगाय क्षीरप्राशनकर काम क्रोधत्याग रात्रिको शयनकरै प्रभात उठ दम्पति पूजनकरै तो गोमेध यज्ञके फलकोपावै पौषकृष्ण तृतीयाको गौरीका पूजनकर लड्डू नैवेद्यलगाय घृत प्राशनकर शयनकरै औ प्रभातउठ मिथुन पूजनकरै तो नरमेध यज्ञका फलपावै माघशुक्ल तृतीयाको सुरनायकाका पूजनकर खण्डके पक्वान्न नैवेद्यलगाय

दककाप्राशनकरसोवै औ मिथुनको मिष्टान्न भोजन करावै तो तीर्थयात्राका फलपावै माघकृष्ण तृतीयाको स्कन्दमाता का पूजनकर अपूप नैवेद्यलगावै औ पंचगव्य प्राशन कर देवीके आगे शयनकर दूसरेदिन भक्तिसे दम्पति पूजाकरै तो कन्यादान का फल पावै आषाढ़मासमें सतीका पूजन कर दही औ सत्तू नैवेद्य लगावै औ गोशृंग जल प्राशन कर सोवै औ मिथुन पूजा करै तो भूमिदानका फल पावै आषाढ़कृष्ण तृतीयाको कूष्मांडीका पूजनकर गुड़ औ घृत सहित सत्तू नैवेद्य लगाय कुशोदक प्राशन कर सोवै औ मिथुन पूजाकरै तो गोसहस्र दानकाफल प्राप्तहोय श्रावण में चन्द्रघण्टाका पूजनकर कुल्माष अर्थात् घुँघुनी नैवेद्य लगाय पुष्पोदक प्राशनकर सोवै औ दम्पतीका पूजनकरै तो अभयदानका फलहोय श्रावणकृष्ण तृतीयाको रुद्राणी का पूजनकर सक्तुपिण्ड नैवेद्यलगाय पिण्याक अर्थात् खलका प्राशनकर सोवै औ ब्राह्मण मिथुनपूजे तो इष्टापूर्त्त का फलपावै भाद्रशुक्लमें कमलालया का पूजनकर कांस्य पात्रमें मांसको रख नैवेद्यलगावै औ गन्धोदकका प्राशन कर सोवै प्रभात मिथुन पूजाकरै तो उत्तमलोक पावै भाद्र कृष्ण तृतीयाको दुर्गाका पूजनकर गुड़युक्त पिष्ट औ फल नैवेद्यलगाय गोमूत्र प्राशनकर सोवै औ मिथुन पूजा करै तो अन्नदानका फल प्राप्तहोय आश्विन में नारायणी का पूजनकर खण्डके पक्वान्न नैवेद्य लगावै चन्दन प्राशनकर सोवै औ मिथुन पूजनकरै तो अग्निहोत्रका फलपावै कार्त्तिक तृतीयाको स्वाहाका पूजनकरै औ घीखण्डयुक्त खीर नैवेद्यलगाय कुसुम्भबीज प्राशनकर सोवै औ मिथुन पूजा

करै तो गवाह्निकका फलपावै कार्त्तिककृष्ण तृतीयाको चंडी का पूजन कर गुड़युक्त उत्तमभात नैवेद्यलगावै औ कुंकुम प्राशनकर रात्रिकोसोवै औ मिथुन पूजनकरै तो एकभक्तका फलपावै फिर मार्गकृष्ण तृतीयाको गुरुकी आज्ञापाय शास्त्र की रीतिसे नवनाभमंडललिखकर सुवर्णकी शिवपार्वतीकी प्रतिमा बनावै उन प्रतिमाओंके नेत्रोंमें मोती औ नीलम जड़ै ओष्ठोंमें प्रवालअर्थात्मूंगा औ कानोंमें रत्नकुंडलपहि-नावै शिवजीको सुबर्णके यज्ञोपवीत औ पार्बतीजीको मो-तियोंकेहारसे अलंकृतकर श्वेत औ रक्त बस्त्रपहिनावैपीछे गन्ध पुष्प धूपआदि उपचारोंसे पूजनकर मंडलमें पूजाकर होमकरै औ अपराजिता भगवतीका भी अर्चनकरै औ मु-स्तक अर्थात् नागरमोथा प्राशनकर रात्रिको जागरण औ गीत नृत्यआदि उत्सवकरै प्रभात होतेही उत्तमशय्या औ तकियों करकेयुक्त पलंग बिछाय उसपर मण्डल बनाय म-ण्डलमें शिव पार्वतीकी प्रतिमा स्थापन करै औ वितान ध्वज माला किंकिणी दर्पणआदिसे मण्डपको शोभितकरै पीछे शिव पार्वतीका पूजनकर यथाशक्ति ब्राह्मण दंपतियों को भोजन कराय ताम्बूल औ दक्षिणा देवै औ लालरङ्ग की सुशील सुन्दर सुवर्ण शृंगी रौप्यखुरी कांस्यके दोहन पात्रसहित घण्टासे अलंकृत बस्त्रसे ढकीहुई बहुतदूधदेने हारी सबत्सा गो जूता खड़ाऊँ छतुरी अनेकप्रकारके भक्ष्य पदार्थ औ दक्षिणागुरुके अर्पणकरै औ शिवपार्वतीके आगे प्रणामकरगुरुके चरणोंमेंभी नमस्कारकरै इसभांति इसव्रत कोसमाप्तकरै जोस्त्री अथवा पुरुष इसव्रतकोकरै वहदिव्य विमानमें बैठ गन्धर्वलोक यक्षलोक औ देवलोकमें जाताहै

वहां बहुतकाल उत्तमभोग भोगकर भूमिपर जन्मलेवै औ बड़ाप्रतापीराजाहोय वहस्त्री उसकी पटरानीहोयजिसभांति शिवजीके साथ पार्वती इन्द्रकेसाथ शची बशिष्ठकेसाथअरुन्धती विष्णुकेसाथ लक्ष्मी औ ब्रह्माकेसाथ सदासावित्री रहतीहैं इसीभांति वह नारीभी जन्म२में अपनेपतिकेसाथ सुखभोगै इस ब्रतको करनेहारी नारी कभी पतिसे बियुक्त नहींहोती औ पुत्रपौत्रआदि सब बस्तुपाती है यह आनन्तर्य ब्रत हमने अति गोप्य आपको कहा आपनेभी भक्त औ विनीत को यह ब्रत कहना इस अनंतादि तृतीया को जोस्त्री भक्तिसे करती हैं वे किसीकालमेंभी पति पुत्र बन्धु धन औ सौभाग्यसे वियुक्त नहींरहती हैं॥

छब्बीसवां अध्याय॥

अक्षय तृतीया का फल औ विधान॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज बहुत कहनेसे क्याफल है केवल बैशाखशुक्ल तृतीयाकाही आप माहात्म्य श्रवण करैं उसदिन स्नान दान तप होम स्वाध्याय तर्पणआदि जो कर्मकरो सब अक्षयहोताहै सत्ययुगका आरम्भ इसी दिन हुआहै इससे युगादि तृतीयाभी इसको कहते हैं शाकल नगरमें प्रिय औ सत्य बोलनेहारा देव ब्राह्मणपूजक औ धर्मात्माधर्मनामक एकबणिकथा उसनेएकदिनकथा श्रवणकिया कि रोहिणी नक्षत्र औ बुधबार करकेयुक्त बैशाख शुक्लतृतीयाको जो दानदेवै वह अक्षय होता है यह सुन उसने अक्षयतृतीयाके दिन गंगा में पितरोंका तर्पण किया औ जलके भरे घट अन्न सत्तू दही चणे गेहूँ गुड़ खांड़आदि इक्षुविकार औ सुवर्ण ब्राह्मणोंको दिया उसकी

भार्या निषेधभी करती परन्तु वह अक्षय तृतीयाको अवश्य-
ही दान करता कुछ कालके अनन्तर उसका देहान्तभया
तब वह कुशावतीनाम नगरीमें जन्मले वहांका राजाबना
उसके ऐश्वर्य औ धनका अन्तनहींथा बड़ी२ दक्षिणावाले
यज्ञकिये ब्राह्मणोंको गौ भूमि सुवर्णआदि दिन राति देता
रहता परन्तु उसके धनकाक्षय न भया यह अक्षयतृतीया
को जो उसने प्रथमजन्ममें दान दियाथा उसका फल है हे
महाराज इसतृतीयाका फल अक्षयहै अब हम इसकावि-
धान वर्णनकरते हैं सब रस अन्न शहतकरकेयुक्त जलकुंभ
पितरोंकी तृप्तिकेलिये ब्राह्मणोंको देवै औ भांति २केफल
छत्र जूताआदि ग्रीष्मऋतुमें उपयुक्त सामग्री अन्न गो भूमि
सुवर्ण वस्त्र आदि जोजो पदार्थ अपनेको प्रिय औ उत्तम
होयँ सब ब्राह्मणों को देनेचाहियें यह अति रहस्य हमने
आपसे कथनकियाहै इसतिथिको कियेहुये कर्मका क्षयनहीं
होता इसलियेइसकानाम मुनियोंनेअक्षयतृतीयारक्खाहै॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

अंगारक चतुर्थीका विधान औ फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज परमगुह्य आपश्रवण
कीजिये जो हमने बनमेंभी आपको पूर्व समयमें नहीं कहा
वह अब कहते हैं शिव पार्वतीके रतिके समय एक रुधिर
विन्दु भूमिपर गिरा उसको बड़ेयत्नसे भूमिने धारण किया
उसीसे भौमनामक कुमार उत्पन्न भया शिवजीके अंगसे
उत्पन्नभया इससे अंगारक कहाया सौभाग्य सुख आदि
देनेसे उसकानाम मंगलरक्खा चतुर्थीके दिन जो स्त्री अ-
थवा पुरुष इसका पूजनकरैं वे रूप धन औ सौभाग्यपा-

हैं अब हम स्नान होम आदि सहित इस व्रतका विधान कहते हैं पहिले संकल्पकर (त्वंमृदेविहितापूर्वं कृष्णेनोद्धरताकिल। तेनमेदहपापौघं यन्मयापूर्वसंचितम्) इस मन्त्र से जलमें स्थित मृत्तिका ग्रहण करै औ यह मन्त्र पढ़ता हुआ सूर्य्यनारायण को दिखावै (आदित्यरश्मिसंतप्तांगंगाजलविलोलिताम्। तामिमांशिरसिप्रोक्ष्ये पूर्वंसर्वांगसंधिषु) पीछे मृत्तिकाको सर्वांगमें लगाकर (त्वमापोयोनिः सर्वेषां दैत्यदानवराक्षसाम्। स्वेदजोद्भिजयोनीनां रसानां पतयेनमः॥ स्नातोहंसर्वतीर्थेषु सर्वप्रस्रवणेषुच। नदीषुदेवखादेषु सुस्नातंतेषुमेभवेत्) इन मन्त्रोंको पढ़ स्नानकरै (त्वंदूर्वेमृतजन्मासिसर्वदेवैश्चबन्दिता। बन्दिताद्दहतत्सर्वं यन्मयादुष्कृतंकृतम्) इसमन्त्रसे दूर्वाको स्पर्शकरै (अक्षिस्पन्दंभुजस्पन्दंदुःस्वप्नंदुर्विनीतकम्। शत्रूणांचसमुत्थानमश्वत्थंशमयस्वमे) इस मन्त्रसे अश्वत्थ को स्पर्शकरै (सर्वदेवमयेदेवि देवतैस्त्वंसुपूजिता। तस्मात्स्पृशामिबंदामि बन्दितापापहाभव) इसमन्त्रको पढ़ गौको स्पर्शकर प्रदक्षिणाकरै तो सम्पूर्ण पृथिवीकी प्रदक्षिणाका फलपावै पीछे घरमेंआय हाथपांवधोय आचमनकर भौमका पूजन कर(शर्वायशर्वपुत्राय पार्व्वत्यागोसुतायच। कुजायलोहितांगाय ग्रहेशांगारकायच) इस मन्त्र करके खादिरकी समिधा घृत दुग्ध तिल यव और भी अनेकप्रकारके भक्ष्य भोज्योंसे हवनकरै इस भांतिसे हवनकर रत्न सुवर्ण कृष्ण अगुरु चन्दन अथवा और किसी उत्तम काष्ठ की भौम प्रतिमा बनाय सुवर्णके चांदीके अथवा गुड़ सहित ताम्रके पात्रमें स्थापनकर रक्तचन्दन रक्तपुष्प धूप दीप नैवेद्य

फल औ रक्तवस्त्रकरके भक्तिसे भौमकापूजनकरै कईमनुष्य मृत्तिकाके पात्रमें स्थापनकरके भी पूजन करते हैं इसविधि पूजाकर आठ पुष्पांजलि देवै ॥ ओंअंगारकायनमः शिरसि ओंकुजायनमः बदने ओंभौमायनमः स्कन्धयोः ओंमंगलाय नमः उरसि ओंक्रूरायनमः कट्याम् ओंआरायनमः जंघयोः ओंलोहितांगायनमः गुल्फयोः ओंमहीनन्दनायनमः पाद योः इन आठ मन्त्रोंसे आठोंअंगोंमें पुष्पांजलिदेकर घृत गुग्गुल सहित अगुरुका धूपदेकर पूर्वोक्तरीतिसे हवनकरै पीछे भोजन वस्त्र औ दक्षिणासहित वह मूर्त्ति ब्राह्मणको देवै इस कर्ममें वित्तशाठ्य न करै फिर (सर्वौषधिरसोपेते सर्वदासर्वदायिनि। अचले भोक्तुकामोहं तद्भुक्तमसृतंभवेत्) यह मन्त्र पढ़ भूमिपर अन्नरख आपभी भोजनकरै इतना सुन राजा युधिष्ठिरबोले कि हे श्रीकृष्णचन्द्र भौमंबार युक्त चतुर्थीको नक्तब्रत करनेसे क्या फलहोताहै यह भी आप बर्णनकरैं श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज धन-हीन पुरुष इस अंगारक चतुर्थीका ब्रतकर भक्तिसे भौमका पूजनकरै तो अवश्यही धनपावै औ धनवान् इसविधानसे पूजनकरै कि उत्तममंडप बनाय उसके मध्यमें वेदीके ऊपर बीसपल सुवर्णकेपात्रमें दशपल अथवा पांचपल सुवर्णकी भौमकी मूर्त्ति स्थापनकर गन्धपुष्प आदि उपचारों करके भक्तिसे पूजनकरै इसप्रकार जो पूजनकरै वह देहके अन्त में दिव्य बिमानपर चढ़ दिव्यनारियों करके सेवित देव-लोक को जाता है वहां छत्तीस चतुर्युग पर्यन्त निवासकर पृथ्वीपर जन्मले वडा प्रतापी औ दानी राजा होताहै औ जो स्त्री इसपूजनको करै वह रूप सौभाग्य पुत्र पौत्रआदि

युक्त होकर चिरकाल अपने पतिके साथ भोग करै और अन्तमें स्वर्गबास पावै हे महाराज यह देवताओं को भी दुर्ल्लभ अंगारक चतुर्थी का रहस्य आप को कहा है इस चतुर्थीको जो देवपूजन पितरों को पिण्डदान औ भक्तिसे भौमका पूजनकरैं वे सब उत्तमफल पाते हैं ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

गणपतिकरकेउपद्रुतपुरुषकेलक्षणऔगणपतिकेअभिषेककाविधान॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र मनुष्य कार्य्योंका आरंभ करते हैं परन्तु वे कार्य प्रायः सिद्ध नहीं होते बीचमेंही विघ्नहोजाता है इसमें क्या कारणहै आप कथन करैं यहराजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज शिवजी ने औ ब्रह्माजी ने लोकों के कार्य सिद्धके अर्त्थ बिनायक को नियुक्तकियाहै औ गणों का स्वामी बनाया बिनायक करके उपद्रुत अर्त्थात् जिस पर बिनायक का कोपहोय उस पुरुषका हमलक्षण बर्णन करते हैं आप सुनैं बिनायक करके उपसृष्ट पुरुष स्वप्नमें तैलके बीचडूबताहै मुंडेमूंड़के औ कषाय बस्त्रधारी पुरुषों को देखता है ऊंट गर्दभ श्वान आदि जीवों पर चढ़ता है चाण्डालों के साथ गमन करता है चलता हुआ अपने पीछे किसी दूसरे को आते देखताहै उदास रहताहै बिन कारण दुःखी होताहै राक्षसों करके वेष्टित अपनेको देखताहै करबीरकी माला पहिनताहै गणपति करके उपद्रुत राजा राज्यनहींपाता कुमारीको पतिनहीं मिलता गर्भिणी के सन्तान नहींहोती श्रोत्रिय आचार्य्यत्व को नहीं प्राप्त होता शिष्य अध्ययन नहीं करता व्यापारीको लाभ नहीं

होता औ खेती करनेहारे की खेतीनिष्फल होती है इस दोषके निवृत्त करनेके अर्थ श्वेत सरसों का उपटना लगाय पूर्व्वाह्न में सर्व्वौषधि औ सर्व्व गन्धसे शिरको धोय स्नानकरै इसप्रकार गुरुवार युक्त शुक्ल चतुर्थी को स्नान कर उत्तम आसन पर बैठ चारोंवेद जाननेहारे ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराय शिव पार्व्वती स्कन्द भौम राहु औ गणेश का पूजनकरै अश्वस्थान गजस्थान बल्मीक नदी-संगम औ ह्रदसे मृत्तिका लाकर कुम्भमेंडालै औ गोरोचन तथा गुग्गुलभी उस जलमेंडालै पीछे लाल बैलको चर्म बिछाय उसपर सिंहासन रख उसपर गणपति स्थापनकर इनमन्त्रोंसे अभिषेक करै (ओंसहस्राक्षंशताधार मृषभिः पापहस्ततः। तेनत्वामभिषिंचामि पावमानाःपुनन्तुते १ भगन्तेवरुणोराजा भगमिंद्रोवृहस्पतिः। भगंसूर्य्यश्चवा युश्चभगंसप्तर्षयोविदुः २ यत्तेकेशेषुदौर्भाग्यंसीमंतेयच्चमूर्द्धनि। ललाटेकर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नन्तुसर्वदा ३) इस प्रकार अभिषेक कर चतुष्पथमें कुशाबिछाय उसकेऊपर चावल भात मांस पुष्पगंध तीन प्रकारकी सुरा मूली पूरी अपूप खीर दही फल पत्र मोदक आदिरख सितसमित शाल्कंटकट औ सपुत्र कूष्माण्डको स्वाहान्त नाममन्त्रसे वलिदेवै पीछेनमस्कारकर इनका बिसर्जनकरै फिर बिना-यककी माता श्रीजगदम्बाको दूर्वा औ सर्षपयुक्त अर्घ्य देकर पुष्पांजलि देवै यह सब कर्म शुक्ल वस्त्र शुक्ल गन्ध औ शुक्ल पुष्पमालासे अलंकृतहोकरकरै इसभांतिपूजन आदिकर ब्राह्मण भोजन कराय दो वस्त्र औ दक्षिणा गुरु को देवै इस विधिसे विनायक औ ग्रहों का पूजन करै तो

सबकार्य सिद्धहोयँ विघ्ननिवृत्तहोयँ लक्ष्मी प्राप्तहोय इसी भांति सूर्य्यनारायणका पूजन करनेसेभी सबफल प्राप्त होते हैं यहविनायकके अभिषेकका विधान हमने कहाहै जोपुरुष इसको भक्तिसे करैं उनके सब अभीष्टकार्य सिद्धहोते हैं औ सम्पूर्ण विघ्नभी निवृत्त होते हैं॥

उनतीसवां अध्याय॥

विघ्नविनायक चतुर्थीका विधान औ फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अब हम ऐसा व्रत कहतेहैं जिसके करनेसे सबविघ्न निवृत्तहोयँ फाल्गुनमास की चतुर्थीको यह व्रत ग्रहणकरै नक्तव्रत रखकर तिलोंसे पारणकरै तिलोंका हवनकरै औ तिलही ब्राह्मणको देवै शूरायस्वाहा वीरायस्वाहा गजाननायस्वाहा लम्बोदराय स्वाहा एकदंष्ट्रायस्वाहा इन मन्त्रोंसे पूजन औ हवनकरै इसप्रकार चारमहीने व्रतकर सोनेकी गणपतिकी मूर्त्तिब-नाय पूजाकर ब्राह्मणको देवै औ खीरकेभरे चार ताम्रपात्र औ एक तिलपूर्णपात्र भी गणपतिकेसाथ देवै धनहीनहोय तो मृत्तिकाकेही पात्रदेवै औ चांदीकी प्रतिमाबनावै इस प्रकार जो व्रतकरै वह सब विघ्नोंसे मुक्तहोताहै औ अन्त में रुद्रपुरको जाताहै यह वराहभगवान्‌का वचनहै जो च-तुर्थीकेदिन केवल कृष्णतिलोंसेभी गणनाथका अर्चनकरै उसके सबविघ्न दूरहोते हैं॥

तीसवां अध्याय॥

शांति व्रतका विधान औ फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं अब हम शान्तिव्रत कहते हैं जिसके करनेसे गृहस्थोंको सब प्रकारकी शान्तिहोय कार्त्तिकशुक्ल

पंचमीसे लेकरएकवर्ष पर्यन्त अम्ल अर्थात् खटाई न खाय औ नक्तव्रतकर शेषनागके ऊपर स्थित भगवान्का पूजन करै पीछे अनन्तायनमः (पादौ) धृतराष्ट्रायनमः(कटिम्) तक्षकायनमः (उदरम्) कर्कोटकायनमः (उरः) पद्मायनमः (कर्णौ) महापद्मायनमः (भुजौ) शंखपालायनमः (वक्षः) कुलिकायनमः(शिरः)इनमन्त्रों से इन २ अङ्गों में भगवान्के पूजनकरै पीछे मौनसे भगवान्को दुग्धकर के स्नानकराय दुग्ध औ तिलोंका हवनकरै बर्षपूराहोने पर सुवर्णकी नारायण प्रतिमा औ शेषनाग बनवाय उनकापूजनकर ब्राह्मणको देवै औ सवत्सागौ पायससेपूर्ण कांस्य पात्र दोवस्त्र औ सुवर्णभी ब्राह्मणकोदेवै पीछे ब्राह्मण भोजनकराय व्रत समाप्तकरै इसव्रतको जो करै उसके सब प्रकारकी शान्तिहोय औ नागोंका भयभी कभी न होय ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

सरस्वती व्रतका विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि मधुरवाणी विद्यामें अति कुशलता सौभाग्य दीर्घआयुष् औ स्त्री पुरुषका अवियोग कौनसे व्रतके करनेसे होताहै यह आप कथनकरैं यहराजा का प्रश्नसुन श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे महाराज बहुत उत्तम बात आपने पूछी अब हम सारस्वत व्रतकाविधान कहते हैं जिसके कीर्त्तन मात्रसेभी सरस्वती प्रसन्नहोतीहैं पंचमी आदित्यबारके दिनसे व्रतका आरम्भकरै उसदिन भक्तिसे स्वस्तिवाचन कराय गायत्रीका पूजनकरै शुक्लगंध शुक्लमाला औ श्वेत वस्त्रआदिसे पूजाकर हाथजोड़ (यथा नदेविभगवान्ब्रह्मालोकपितामहः। त्वांपरित्यज्यसंतिष्ठेत्त

थाभववरप्रदा॥ वेदशास्त्राणिसर्वाणिनृत्यगीतादिकंचयत्। नहीनंचत्वयादेवितथामेसन्तुसिद्धयः॥ लक्ष्मीमेधावरातुष्टिर्गौरीपुष्टिःप्रभावती। एताभिःपाहितनुभिरष्टभिर्मांसरस्वति) इनमन्त्रोंसे प्रार्थनाकरै औ गायत्रीका ऐसाध्यान करै कि श्वेतबस्त्रपहिने वीणा अक्षमाला कमण्डलु औ पुस्तक चारों भुजाओंमेंधारे सब भूषणोंसे भूषित है इस विधि पूजनकर मौनसे रात्रिको भोजनकरै औ प्रत्येक पंचमीको सुवासिनी का पूजनकर सेरभर चावल घृतपात्र दुग्ध औ सुवर्ण उसको देवै औ यह कहै कि (गायत्रीप्रीयताम्) सायङ्कालके समय मौनसे रहै इस भांति तेरह महीने ब्रतकरै पीछे श्वेतभात औ दही आदि से ब्राह्मण भोजनकराय दोश्वेतवस्त्र सवत्सागौ चन्दन तन्दुलआदि ब्राह्मणकोदेवै औ गुरुका पूजनकरै वित्तशाठ्य न करै इस विधिसे जोपुरुष सारस्वत ब्रतकरै वहविद्वान् धनवान् कवि औ मधुरकण्ठहोताहै औ तीनअयुत कल्पपर्यन्त ब्रह्मलोकमें निवासकरताहै जो इस ब्रतके माहात्म्यको पढ़ै अथवा सुनै वह इतनाकाल विद्याधरलोकमें रहता है औ स्त्री भी इस ब्रतको करनेसे सब फल पाती हैं॥

बत्तीसवां अध्याय॥

नागपंचमी के ब्रतका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराज पंचमीतिथि नागोंको प्रियहै उसदिन नागलोकमें बड़ा उत्सवहोताहै जो उस दिन नागोंकापूजनकरै उसको वासुकि तक्षककालिय मणिभद्र धृतराष्ट्र ऐरावत कर्कोटक धनंजय आदि नाग अभय देतेहैं औ पंचमीके दिन जो दुग्धसे नागोंको स्नान करावै

उसके कुलमें सर्पभय नहींहोता माताके शापसे नागदग्ध होनेलगे तब दुग्धसे उनकी दाहशान्तिभई इसीसे उनको दुग्धस्नान प्रियहै इतना सुन राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र माताने नागोंको क्यों शापदिया औ शाप मोक्ष क्योंकरहुआ राजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज समुद्र मथनके समय अति शुक्लवर्ण उच्चैःश्रवानाम अश्व निकला उसको देख गरुड़की माता विनताने अपनी सपत्नी नागोंकीमाता कद्रूसेकहा कि देखो यह अश्व कैसा श्वेत है तब कद्रू बोली कि श्वेत तो नहीं मुझे कृष्ण देखपड़ताहै विनताने कहा कि जो तू इसअश्व में एक बालभी कृष्ण दिखलादेवै तोमैं तेरीदासी होजाऊँ औ मैं तुझे श्वेत दिखादूँ तो तू मेरी दासीहोजा इसप्रकार प्रणकरके दोनों अपने २ स्थानको गईं कद्रूने अपने पुत्र नागोंको बुलाकर कहा कि तुम कृष्णवर्णके बालहोकर अश्वके शरीरमें स्थित होजाओ जिससे मैं विनताको दासी बनाऊँ यह माताका वचनसुन नागबोले कि हे माता यह अधर्म्म हम नहींकरते यह पुत्रोंका वचनसुन क्रोधकर कद्रू ने शाप दिया कि जनमेजय राजा सर्पयज्ञ करैगा उसमें तुम दग्धहोजाओगे यह माताका शापसुन दुःखसे वासुकि नाग मूर्च्छित होगया तब उसको सांत्वनकर ब्रह्माजी ने कहा कि हे वासुकि शोकमतकर हमारा वचनसुन यह जरत्कारु नाम तेरी बहिन है इसको बड़े तपस्वी जरत्कारु मुनिको विवाहदेना इनसे आस्तीकनामक पुत्रउत्पन्नहोगा वह राजा जनमेजयको अपने वचनोंसे प्रसन्नकर सर्पोंको भयदेनेहारे यज्ञको निवारणकरैगा इसलिये अतिरूपवती

यह अपनी भागिनी जरत्कारु मुनिको दो और भी जोकुव मुनि कहैं उसको बिनाबिचारे अंगीकारकरो इसी में तुम्हारा कल्याण है यह ब्रह्माजी का वचनसुन नाग बड़े हर्ष को प्राप्तभये यह ब्रह्माजी का वरदान पञ्चमी तिथि को भया औ आस्तीक ने भी सर्पसत्र पञ्चमी को निवारण किया इसकारण पंचमी नागों को अतिप्रियभई पंचमीके दिन नागों का पूजनकरै पीछे ब्राह्मण भोजनकराय आप भी अपने मित्र बन्धु भृत्य आदि सहित भोजनकरै प्रथम मधुर भोजनकरै इस ब्रतको करनेहारा पुरुष मरनेके अनन्तर विमानमें बैठ नागलोक को जाताहै वहां बहुत काल सुखभोगकर पांचजन्मतक बड़ाप्रतापी आधिव्याधिरहित सब संपत्तियों करके युक्तराजा होताहै इसलिये घृतदुग्ध आदिकरके अवश्य नागोंका पूजन करना चाहिये इतना सुन राजा युधिष्ठिर पूछतेभये कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जिसको सर्प काटै औ वह मृत्युबश होजाय फिर किस गतिको प्राप्तहोताहै यह आप कथनकरैं। तब श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि महाराज वह पुरुष नीचे जाय निर्बिष सर्प होताहै फिर राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि जिसके माता पिता भ्राता बहिन पुत्र कन्या आदि कोई सर्पके काटनेसे मृत हुयेहों वह उनके उद्धारके लिये कौन उपाय करै यह आप कहैं। यह राजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज भाद्रशुक्ल पंचमीसेब्रतका आरम्भकरै चतुर्थी के दिन एकभक्तकर पंचमी को नक्तब्रत करै औ नागों का पूजन करै सुवर्ण अथवा चांदी का पंचफणयुक्त नागबनाय करबीर कमल चमेली आदि पुष्प धूप भांति २ के

नैवेद्यों से उसको पूजै पीछे घृत पायस औ मोदक ब्राह्मण को भोजन करावै इसबिधि प्रतिमास की शुक्लपंचमी को व्रत करै औ अनन्त वासुकि शंख पद्म कंवल कर्कोटक अश्वतर धृतराष्ट्र शंखपाल कालिय तक्षक औ पिङ्गल इनका बारह महीनों में क्रमसे पूजनकरै बर्षभर व्रत करके ब्राह्मण भोजन करावै औ इतिहासवेत्ता को सुबर्ण का नाग बस्त्र औ सवत्सा गौ देकर ब्रत समाप्तकरै। इसब्रत को जो करै उसके बंशमें जो सर्प दष्ट होकर मृत हुआहो वह सद्गतिको प्राप्त होता है जो इस बिधान को केवल श्रवणही करै उसके भी कुटुंबमें सर्प भीति नहीं होती औ जो पुरुष भाद्रशुक्ल पंचमी को रंगसे कृष्णवर्ण के नाग लिखकर गन्ध पुष्प घृत गुग्गुल के धूप औ पायस आदि नैवेद्य से उनकापूजन करते हैं उनके ऊपर तक्षक आदि नाग प्रसन्नहोतेहैं औ उनके कुलमें सर्पका भय नहींहोता आश्विनिकी पंचमीको कुशाके नागबनाय इन्द्राणीसहित उनका पूजनकरै घृत जल औ दुग्धकरके उनको स्नान कराय दुग्ध औ गोधूमसे बने पक्वान्नका नैवेद्य लगावै औ नक्तब्रतकरै उसके ऊपर शेष आदिमहानाग प्रसन्नहोकर सब प्रकारकी शान्ति करतेहैं औ उत्तमलोकको प्राप्तहोता है यह पंचमीकल्प हमने वर्णन किया जहां यह पढ़ाजाय वहां सर्पभय नहीं होता ॥

तैंतीसवां अध्याय ॥

श्री पंचमीके ब्रतका विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ब्रत होम तप जप नमस्कारआदि जिसकर्मके करनेसे स्थिरलक्ष्मी

प्राप्तहोय उसका आप वर्णनकरैं। यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज प्रथम भृगुमुनि की कन्या लक्ष्मीभई औ विष्णुभगवान्ने उसकमललोचना गजगामिनी भामिनीको अतिरूपवतीदेख अपनेसाथ उसका बिवाह किया वह भी भगवान् को बरपाय अपने को कृतार्थ मानतीभई औ सम्पूर्णजगत् लक्ष्मीके कटाक्ष पातसे आनंदित होता भया प्रजामें क्षेम औ सुभिक्षरहने लगासबउपद्रव शान्तहोगये ब्राह्मण हवनकरनेलगे देवता हवि भोजन करतेथे राजा चारों बर्णोंका पालन प्रसन्नता पूर्वक करतेथे देवता बड़े बड़े आनन्दमें थे यहदेख बिरोचन आदि दैत्य लक्ष्मी प्राप्तिके लिये तप करनेलगे औ अति उत्तम आचरण औ धर्ममें प्रवृत्त भये कुछकालके अनन्तर देवताओं को लक्ष्मीका मद होगया औ शौच आचार सब त्याग दिया तब देवताओं को सत्य शील आदिसे हीन देख लक्ष्मी दैत्योंके समीप चलीगई औ देवता श्रीहीनभये परन्तु लक्ष्मीके प्राप्तहोतेही दैत्योंको भी बड़ा गर्व हुआ कहनेलगे कि हमहीं देवताहैं हम यज्ञ हैं हम ब्राह्मणहैं सम्पूर्ण जगत् हमारा रूपहै ब्रह्मा विष्णु इन्द्र चंद्र आदि हमहैं इसप्रकार अति अहङ्कार युक्तहो नानाप्रकारके अनर्थ करनेलगे। तबलक्ष्मी व्याकुलहोकर दैत्योंकोभी त्याग क्षीरसागरमें प्रवेशकरतीभई क्षीरसागर में लक्ष्मी के प्रवेशकरजाने से सारा जगत् श्रीहीन अति मलीन होगया उससमय इन्द्रने वृहस्पतिको पूछा कि महाराज कोई ऐसा व्रतबतावैं जिसके करनेसे लक्ष्मी प्राप्त होय औ फिर त्याग न करै अपने इष्टमित्रोंके उपभोग में

आवै लक्ष्मीपायकरभी कन्याकी भांति उसका पालन न करना पड़े क्योंकि जिस लक्ष्मीको अपने मित्र बन्धु भृत्य आदि न भोगें वह वृथाहै यह इन्द्रका वचनसुन बृहस्पति कहनेलगे कि हेइन्द्र यह अतिगुप्त श्रीपंचमीका व्रत आप को हम उपदेश करतेहैं जो हमने आजतक किसीको नहीं बताया इसव्रतको तुमकरो तो तुम्हारा अभीष्ट सिद्धहोय इतनाकह बृहस्पतिने सरहस्य श्रीपंचमी व्रतका विधान इन्द्रको उपदेशकिया इन्द्र उस व्रतको करनेलगा औ सब देवता दैत्य दानव गन्धर्व यक्ष राक्षस सिद्ध विद्याधर नाग ब्राह्मण औ ऋषिभी इन्द्रको व्रत करतेदेख व्रतकरनेलगे कोई सात्विकभावसे कोई राजससे औ कोई तामस भाव से व्रत करतेथे कुछकालकेअनन्तर व्रत समाप्तकर उत्तम बल औ तेजपाकर सबने विचारकिया कि समुद्रको मथन कर लक्ष्मी औ अमृत को ग्रहण करें यह विचार परस्पर कर मन्दरपर्वत को मथान औ वासुकिनाग को नेताव-नाय समुद्र मथनकरनेलगे मथन करते २ पहिले अतिउ-ज्ज्वल चन्द्रमानिकला पीछे थोड़ेकालके अनन्तर लक्ष्मी का प्रादुर्भावभया लक्ष्मीके कटाक्ष परतेही सब देवता औ दैत्य अपने२स्वरूपको प्राप्तहो परमआनन्दको प्राप्तभये इन्द्र ने राजसभाव से व्रतकियाथा इसलिये त्रिभुवनका राज्य पाया औ दैत्योंने तामस भावसेकिया इसलिये ऐ-श्वर्यपाकरभी ऐश्वर्यहीन होगये हे महाराज इसभांति इस व्रतके प्रभावसे श्रीहीन जगत् फिर श्रीयुक्त हुआ इतना सुन राजायुधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णचन्द्र यहव्रत किस विधिसेकियाजाताहै औ कबसे इसका प्रारम्भहोता है

आप वर्णन करैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज मार्गशीर्षकी शुक्ल पंचमीको यह ब्रत करना चाहिये पहिले प्रभात उठ शौच दन्तधावन आदिकर ब्रतके नियम धारणकरै पीछे नदीपरजाय अथवा अपने घरमेंही स्नानकर दोवस्त्रधार देवता औ पितरोंका पूजन तर्पणकर घरमेंआय लक्ष्मीका पूजनकरै पहिले सुवर्ण चांदी ताम्र काष्ठ अथवा चित्रपटमेंही लक्ष्मीकीमूर्त्ति बनावै कमलके ऊपर बिराजमान हाथोंमें कमल पुष्प धारणकिये सब भूषणों से अलंकृत कमललोचना औ दिग्गज जिसको सुवर्णके कलशोंसे स्नानकरारहेहैं इसध्यान की मूर्त्ति बनाय सब उपचारों से पूजनकर। चपलायैनमः इस मन्त्रकरके पादोंका चंचलायैनमः इसकरके जानुओं का कमलवासिन्यै० इसकरके कटिका देव्यैनमः इसकरके नाभिका मन्मथवासिन्यै० इसकरके स्तनोंका ललितायै० इसकरके दोनों भुजाओंका उत्कण्ठिण्यै० इसकरके कण्ठका मध्याय० इसकरकेमुखका औ श्रियेनमः इसमन्त्रकरकेशिर का पूजनकर भक्तिसे नैवेद्य औ भांति २केफल निवेदनकरै पीछेपुष्प औ कुंकुमआादि से सुवासिनीका पूजनकर मधुर भोजन उसको करायप्रणामकर विसर्जनकरै सेरभरचावल औ घृतका पात्र ब्राह्मणको देकर(श्रीशः प्रीयताम्)यहकहै इसभांति पूजनकर मौनसे भोजनकरै प्रतिमास यहब्रतकरै औ श्रीलक्ष्मी कमलासम्पत् उमानारायणी पद्माधृतिस्थिति पुष्टिऋद्धिसिद्धि इनका बारहमहीनोंमें क्रमसे पूजन औ कीर्त्तनकरै बारहवें महीनेकी पंचमीको वस्त्रसे उत्तममण्डप बनाय गन्ध पुष्पआदिसे अलंकृतकर उसके मध्यमें सब

उपकरणों सहित लक्ष्मीकी मूर्ति स्थापनकरै आठ मोती रेशमीवस्त्र सप्तधातु सप्तधान्य खड़ाऊँ जूता छतरी अनेक प्रकारके पात्र औ भांति २ के भोजन वहां स्थापन कर विधिसे लक्ष्मीका पूजनकरै पीछेवेदवेत्ता कुटुम्बी औ सदाचार ब्राह्मणको सवत्सा गौसहित यहसब सामग्रीदेवै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय सबको दक्षिणादेवै। इस विधिसे जो श्रीपंचमीका व्रतकरै वह अपने इक्कीस कुल सहित लक्ष्मीलोक में निवासकरै जो सभर्तृका स्त्री इस व्रतकोकरै वहरूप सन्तान औ धनपावै तथा पतिकीअति प्रियाबनीरहै जो भक्तिसे पंचमी का व्रतकर भृगुकी पुत्री औ विष्णुभगवान् की प्रिया श्रीलक्ष्मीजी का भक्तिसे पूजनकरते हैं वे संसार में चिरकाल तक राज्य आदि सुख भोगकर अन्तमें विष्णुलोकके वीच निवास करते हैं॥

चौंतीसवां अध्याय॥

विशोकषष्ठी व्रत का विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपके मुखसे पंचमीका विधानसुन चित्त बहुत प्रसन्नहुआ अब आप षष्ठीका विधान वर्णन कीजिये जिसके करने से सब कामना प्राप्तहोयँ यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज हम विशोकषष्ठीका विधान कहतेहैं जिसके उपवास करनेसे मनुष्य को शोक नहीं होता मार्गशुक्ल पंचमीको प्रभातउठदन्तधावनकर स्नानआदि करै औ ब्रह्मचर्यसे रहै दूसरेदिन स्नानआदि कर सुवर्ण का कमलबनवाय उसको सूर्य्यनारायण का स्वरूप मान रक्तचन्दन रक्तकरवीर पुष्प औ रक्तवर्णके दोवस्त्र धूपदीप

आपं वर्णन करैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज मार्गशीर्षकी शुक्ल पंचमीको यह व्रत करना चाहिये पहिले प्रभात उठ शौच दन्तधावन आदिकर व्रतके नियम धारणकरै पीछे नदीपरजाय अथवा अपने घरमेंही स्नानकर दोवस्त्रधार देवता औ पितरोंका पूजन तर्पणकर घरमें आय लक्ष्मीका पूजनकरै पहिले सुवर्ण चांदी ताम्र काष्ठ अथवा चित्रपटमेंही लक्ष्मीकीमूर्त्ति बनावै कमलके ऊपर बिराजमान हाथोंमें कमल पुष्प धारणकिये सब भूषणों से अलंकृत कमललोचना औ दिग्गज जिसको सुवर्णके कलशोंसे स्नानकरारहेहैं इसध्यान की मूर्त्ति बनाय सब उपचारों से पूजनकर। चपलायैनमः इस मन्त्रकरके पादोंका चंचलायैनमः इसकरके जानुओं का कमलवासिन्यै० इसकरके कटिका देव्यैनमः इसकरके नाभिका मन्मथवासिन्यै० इसकरके स्तनोंका ललितायै० इसकरके दोनों भुजाओंका उत्कण्ठिण्यै०इसकरके कण्ठका मध्याय०इसकरकेमुखका औ श्रियेनमः इसमन्त्रकरकेशिर का पूजनकर भक्तिसे नैवेद्य औ भांति २केफल निवेदनकरै पीछेपुष्प औ कुंकुमआदि से सुवासिनीका पूजनकर मधुर भोजन उसको करायप्रणामकर विसर्जनकरै सेरभरचावल औ घृतका पात्र ब्राह्मणको देकर(श्रीशः प्रीयताम्)यहकहै इसभांति पूजनकर मौनसे भोजनकरै प्रतिमास यहव्रतकरै औ श्रीलक्ष्मी कमलासम्पत् उमानारायणी पद्माधृतिस्थिति पुष्टिऋद्धिसिद्धि इनका बारहमहीनोंमें क्रमसे पूजन औ कीर्त्तनकरै बारहवें महीनेकी पंचमीको वस्त्रसे उत्तममण्डप बनाय गन्ध पुष्पआदिसे अलंकृतकर उसके मध्यमें सब

उपकरणों सहित लक्ष्मीकी मूर्त्ति स्थापनकरै आठ मोती रेशमीवस्त्र सप्तधातु सप्तधान्य खड़ाऊँ जूता छतरी अनेक प्रकारके पात्र औ भांति २ के भोजन वहां स्थापन कर विधिसे लक्ष्मीका पूजनकरै पीछेवेदवेत्ता कुटुम्बी औ सदाचार ब्राह्मणको सवत्सा गौसहित यहसब सामग्रीदेवै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय सबको दक्षिणादेवै । इस विधिसे जो श्रीपंचमीका व्रतकरै वह अपने इक्कीस कुल सहित लक्ष्मीलोक में निवासकरै जो सभर्तृका स्त्री इस व्रतकोकरै वहरूप सन्तान औ धनपावै तथा पतिकीअति प्रियाबनीरहै जो भक्तिसे पंचमी का व्रतकर भृगुकी पुत्री औ विष्णुभगवान् की प्रिया श्रीलक्ष्मीजी का भक्तिसे पूजनकरते हैं वे संसार में चिरकाल तक राज्य आदि सुख भोगकर अन्तमें विष्णुलोकके बीच निवास करते हैं ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

विशोकषष्ठी व्रत का विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपके मुखसे पंचमीका विधानसुन चित्त बहुत प्रसन्नहुआ अब आप षष्ठीका विधान वर्णन कीजिये जिसके करने से सब कामना प्राप्तहोयँ यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज हम विशोकषष्ठीका विधान कहतेहैं जिसके उपवास करनेसे मनुष्य को शोक नहीं होता मार्गशुक्ल पंचमीको प्रभातउठ दन्तधावनकर स्नानआदि करै औ ब्रह्मचर्यसे रहै दूसरे दिन स्नानआदि कर सुवर्ण का कमलबनवाय उसको सूर्य्यनारायण का स्वरूप मान रक्तचन्दन रक्तकरवीर पुष्प औ रक्तवर्णके दोवस्त्र धूपदीप

नैवेद्य आदिसे पूजन कर हाथ जोड़ (यथाविशोकभवने त्वमेवादित्यसर्वदा । विशोकंकुरुमांदेव भक्तंजन्मनिजन्मनि) इस मन्त्रसे प्रार्थनाकरै इसविधि पूजनकर ब्राह्मण भोजनकराय गोमूत्र प्राशनकरै औ गुड़ अन्न उत्तम दो वस्त्र औ सुवर्ण ब्राह्मणको देकर सप्तमीको तैल औ लवण रहित भोजनमौनसेकरै औ पुराण श्रवणभीकरै इसभांति एकबर्ष पर्य्यंतदोनों पक्षोंकी षष्ठीकाव्रतकरअन्तमें शुक्लषष्ठी को सुवर्णकमलयुक्त कलश उत्तमशय्या औ कपिलागौ ब्राह्मणको देवै इसमें वित्तशाठ्य न करै इसविधिसे जो व्रतकरै वह करोड़ों जन्मतक स्वर्गमें निवासकरताहै किसीकामना से इसव्रतकोकरै तो वहकामना सिद्ध होती है औ निष्काम होकर करै तो मोक्ष प्राप्तिहोय जो इसरोगबिनाशिनी षष्ठी का एकबार भी उपवासकरै वह कभी दुःखी नहींहोता औ चन्द्रलोकमें निवास करताहै॥

पैंतीसवां अध्याय॥

कमलषष्ठी का बिधान औ फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज और भी हम कमल षष्ठी नामव्रत का बिधानकहते हैं जिसका उपवास करने से पुत्र प्राप्ति औ ऐश्वर्य वृद्धि होय मार्गशुक्ल पंचमी को नियत व्रत होकर षष्ठीको उपवासकरै औ सुवर्णकाकमल दो वस्त्र खीर औ खंड ब्राह्मणको देवै इसी भांति एकवर्ष पर्य्यंत प्रतिषष्ठीको उपोषणकरै औ भानु अर्क रवि ब्रह्मा सूर्य्य शुक्र हरि शिव श्रीमान् विभावसु त्वष्टा वरुण इन बारह नामों से क्रमकरके बारह महीनों में पूजनकरै औ भानुर्मेप्रीयताम् इत्यादि वाक्य प्रतिमास दान औ पूजन

के अन्तमें उच्चारण करै ब्रतके अन्तमें ब्राह्मण मिथुनकी पूजाकर वस्त्र भूषण शर्करा पूर्णकलश औ सुवर्णका कमल ब्राह्मणको देकर (यथानविफलाकामास्त्वद्भक्तानांसदारवे। तथानन्तफलावाप्तिरस्तुजन्मनिजन्मनि) यहमन्त्रपढ़ ब्रत समाप्तकरै जो इस पद्म षष्ठीके ब्रतकोकरै वह सब पापोंसे मुक्तहोकर सूर्य्यलोकमें निवास करताहै औ उसके इक्कीस कूल सद्गतिको प्राप्तहोतेहैं सुरापान आदि महापातक औ बड़े २ रोग इसब्रतके करनेसे निवृत्त होते हैं ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

मंदारषष्ठी का बिधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम सब पाप हरनेहारी औ सर्ब कामप्रद मंदारषष्ठी का विधान कहतेहैं माघ शुक्ल पंचमीको स्वल्प भोजनकर नियमसेरहै औ षष्ठीको उपवासकरै ब्राह्मणोंका पूजनकर मन्दार अर्थात् आकका पुष्पप्राशनकर रात्रिको शयनकरै प्रभात उठ स्नानआदिकर ताम्रपात्रमें कालेतिलोंकरकेअष्टदल कमल बनाय उसमें सुवर्णकी पद्महस्त सूर्य्यनारायणकी मूर्तिस्थापनकर अर्कपुष्पोंसे औ गन्धआदि उपचारोंसे पूजनकर पूर्वआदिदलोंमें भास्करायनमःसूर्य्याय० अर्काय०यज्ञाय० सुधाम्ने० चन्द्रभानवे० कृष्णाय० आनंदायनमः इनमंत्रों करके अर्कपुष्पोंसेपूजनकरमध्यमें (सर्वात्मनेपुरुषायनमः) इसमन्त्रसे पूजनकरै इसप्रकार सब उपचार वस्त्र भूषण आदिसे पूजनकरै बर्षके अन्तमें यहीमूर्ति पात्रकलशके ऊपर स्थापनकर वस्त्र सुवर्ण औ गौ सहित ब्राह्मणको देवै औ यहमन्त्र पढै (नमोमन्दारनाथाय मन्दारभवनायच ।

त्वंरवेतारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात्) इस बिधिसेजो मन्दारषष्ठी का ब्रतकरै वह सब पापोंसे मुक्तहोकर सुखपूर्वक एककल्पस्वर्गमें निवास करताहै औ अर्कपुष्पोंसे सूर्य्यनारायण का पूजनकरै तो सूर्य्यलोकमें निवासकरै जो इस बिधानको पढ़ै अथवा सुनै वह सब पापोंसे मुक्तहोय मंदार षष्ठीके दिन तिल रचित कमलकी कर्णिकामें मन्दार पुष्पों से सूर्य्यनारायण का पूजन करने करके जोफल प्राप्तहोता है वह गौ भूमि सुवर्ण तिल पर्वत आदि के दानकरने से भी नहीं मिलता ॥

सैंतीसवा अध्याय ॥

ललिताषष्ठी का विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज भाद्र महीने की शुक्ल षष्ठीको रूप सौभाग्य औ सन्तान कामना वाली स्त्री नदी पर जाय स्नानकर वहांसे बांसके पात्रमें बालूरेत लेकर घरमें आय भगवतीका पूजनकरै उसी पात्रमें तपोबन निवासिनी ललिता गौरीका ध्यानकर सब उपचारोंसे पूजनकरै पीछे चम्पक करबीर तमाल मालती नीलोत्पल-केतकी औ तगरपुष्प इनमें प्रत्येककी आठ २ पुष्पांजलि (ललिताललितादेवीसौभाग्यारोग्यदायिनी। यासौभाग्य समुत्पन्नातस्यैदेव्यैनमोनमः) इसमन्त्रसे देवै इसभांति पूजनकर भांति २ के पक्वान्न कूष्माण्डककड़ी ककोड़े बृंताक बिल्व करंज आदि फल भगवती के आगेरक्खै औ धूप दीप बस्त्रभूषण आदिभी समर्पणकरै इसविधिसे पूजनकर रात्रिको जागरणकर गीत नृत्यआदि उत्सव करावै चार पहर सावधानहोकर जागै जो स्त्री इसरात्रिको नेत्रनिमी-

लनकरै वह दुर्भगा औ बंध्याहोय इसप्रकार जागरणकर सप्तमी को गीत वाद्य सहित मूर्तिको नदीको लेजाय वहां पूजनकर पूजासामग्री ब्राह्मण को देवै औ बालुकामयी मूर्तिको नदीमें बिसर्जनकरै पीछे घरमें आय हवनकर देवता पितर औ मनुष्यों का पूजनकर कुमारिका औ पन्द्रह ब्राह्मणों को अनेक प्रकारके भक्ष्य भोज्योंसे सन्तुष्टकर दक्षिणा देवै औ (ललिताप्रीतियुक्तास्तु) यह वाक्य कहकर उनका बिसर्जन करै इसललिता षष्ठीके ब्रतको जो पुरुष अथवा स्त्री करै उसको संसारमें कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं है इस ब्रतके करनेहारे बहुत कालपर्य्यन्त गौरीलोक में निवास करते हैं॥

अठतीसवां अध्याय॥

कुमारषष्ठीका विधान औ फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज मार्गशीर्ष मासकी षष्ठीपापहरा औ अतिकल्याण करनेहारीहै उस दिन कार्त्तिकेय ने तारकासुर का बध किया है इसलिये वह षष्ठी स्वामिकार्त्तिकेयको बहुतप्रियहै उसदिन कियाहुआ स्नान दानआदि कर्म अक्षयहोताहै दक्षिणदेशमें स्थित कार्त्तिकेयका जो उस तिथिको दर्शनकरै वह ब्रह्महत्यादि पापों से छुटताहै उस दिन उपवासकर कुमारस्वामी के दक्षिण मस्तकपर (चन्द्रमण्डलसम्भूता तवरूपंचबिभ्रती। कुमारगंगाधारेयं पतितातवमस्तके) इस मन्त्रसे धारा पातन करै इस भांति स्नानकराय सूर्य्यनारायणका पहिले पूजन कर पीछे (देवसेनापतेस्कन्द कार्त्तिकेयभवोद्भव। कुमारगुहगांगेय शक्तिहस्तनमोस्तुते) इसमन्त्रसे पुष्प धूप नैवेद्य

आदि उपचारों से कार्त्तिकेय का पूजनकरै दक्षिण देशके फल औ मलयका चन्दनभी चढ़ावे पीछे स्वामिकार्त्तिकेय के परमप्रिय छाग कुक्कुट औ मयूर इनका प्रत्यक्ष पूजन करे अथवा सुवर्णके बनाकरपूजै औ कार्त्तिकेयके समीपही कृत्तिकाशकट की पूजाकरै पीछे पूर्वोक्तनामोंकरके तिलोंसे हवनकर एकफल भक्षणकर भूमिमें कुशाकी शय्याके ऊपर शयनकरै नालिकेर मातुलुंग नारंगी पनस जम्बीर दाड़िम द्राक्षा आम्र विल्व आमलक ककड़ी औ केला ये फलक्रम से बारह महीनों में भक्षणकरै ये न मिलें तो जो उसकाल में प्राप्तहोय वही एक फलखालेवै प्रभातही प्रत्यक्ष छाग औ कुक्कुट अथवा सुवर्णके बनवाकर ब्राह्मण को देवै औ (सेनानीप्रीयताम्) यह वाक्य कहै। सेनानीशरसम्भूत क्रौंचारि षण्मुख गुह गांगेय कार्त्तिकेय स्वामी बालग्रह छागप्रिय शक्तिधर औ कुमार इनका बारह महीनोंमें क्रम से पूजनकरै और इन नामों के अन्तमें (प्रीयताम्) यह पद लगाय पूजाके अन्तमें उच्चारणकरै पीछे ब्राह्मण को भोजनकराय आपभी मौनसे भोजनकरै वर्ष समाप्तहोनेपर वस्त्र भूषणआदि से कार्त्तिकेय का पूजनकरै होम करै औ सब सामग्री ब्राह्मणको देवै इसविधिसे जो पुरुष अथवा स्त्री व्रतकरैं वे सब उत्तम फल पाय इन्द्रलोक में निवास करते हैं कार्त्तिकेयका सदा पूजन करना चाहिये राजाओं के लिये तो कार्त्तिकेय से अधिक कोई देवतापूज्य नहीं है जो राजा कार्त्तिकेयका पूजनकर युद्धमेंजाय वह अवश्यही जयपावै जो षष्ठी को नक्तव्रतकरै वह कार्त्तिकेयके लोकमें निवास करताहै दक्षिण दिशामेंजाय जो भक्तिसे कार्त्तिकेय

का दर्शन औ पूजनकरै वह शिवलोकको जाताहै जो सदा कार्त्तिकेय का आराधनकरै वह बहुतकाल स्वर्ग सुखभोग भूमिपर जन्मले चक्रवर्त्ती राजाका सेनापति होताहै॥

उनतालीसवां अध्याय॥

विजयसप्तमी का विधान औ फल॥

राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र सप्तमीका क्या विधानहै उसका आप वर्णनकरैं आपके मधुरबचन सुन-ते २ हमको तृप्तिनहींहोती यह राजाका वचनसुन श्रीकृ-ष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज शुक्लपक्षकी सप्तमी जो आदित्यवारयुक्तहोय उसको विजयासप्तमी कहतेहैं उस दिन कियाहुआ स्नान दान जप होम उपवास आदिकर्म अनन्तफलदायकहोताहै उसदिन जो फलपुष्पआदिकरके सूर्य्यनारायणकी प्रदक्षिणाकरै वहसर्वगुणयुक्त पुत्र पाताहै पहिली प्रदक्षिणा नालिकेरों करके दूसरी वीजपूरों करके तीसरी नारंगों करके चौथी कदलीफलों करके पांचवीं कू-ष्माण्डोंकरके छठी पकेहुये तिन्दुक फलोंकरके औ सातवीं वृन्ताकोंकरकेकरै अथवा अष्टोत्तरशत प्रदक्षिणाकरै मोती लालनीलम पन्ना हीरा गोमेद औ वैदूर्य करके प्रदक्षिणा करै औरभी जो उस कालमें फलमिलैं उनकरके प्रदक्षिणा देवै फल से प्रदक्षिणा करने करके फलप्राप्त होताहै प्रद-क्षिणाके वीचबैठे नहीं न किसीको स्पर्शकरै औ न किसीसे सम्भाषणकरै एकाग्रचित्तहो प्रदक्षिणा करनेसे सूर्य्यभग-वान् प्रसन्नहोतेहैं गौकेघृतसे वसुधारा देवै औ किंकिणी युक्त ध्वज तथा श्वेत छत्र चढ़ावै पीछे गन्ध पुष्प धूप नै-वेद्यआदि उपचारोंसे पूजनकर (भानोभास्करमार्तण्डच

एडरश्मेदिवाकर आरोग्यमायुविजयं पुत्रंदेहिनमोस्तुते) यह मन्त्रपढ़ क्षमापनकरावै उपवास नक्त अथवा आया-चित व्रतकरै इसभांति आदित्यवार युक्त सात सप्तमी व्रतकरके सूर्य्यभगवान् का पूजनकर षड़क्षर मन्त्रकरके अष्टोत्तरशत हवनकरै सुवर्णकी सूर्यप्रतिमा सुवर्ण पात्रमें स्थापन कर रक्तवस्त्र गौ औ दक्षिणासहित (ॐभास्कर यशस्करसमीहितार्थप्रदोभवनमोनमः) इस मन्त्रसे ब्राह्मणको देवै। औरभी दान श्राद्ध पितृतर्प्पण आदि कर्म करै जो राजा जयकी इच्छाकर इस तिथिको यात्राकरै वह अवश्यही जयपावै इसीसे इसकानाम विजयसप्तमीहै इस व्रतको करनेहारा पुरुष संसारके सब सुखभोग सूर्यलोक में निवासकरताहै औ फिर भूमिपर जन्मलेकर दानी भोगी विद्वान् दीर्घायुष् नीरोग सुखी औ बड़ा प्रतापी राजा होताहै औ स्त्रीभी इस व्रतकोकरै तो सब उत्तमफलपाती है यह विजयसप्तमी स्वर्गमें बास अभीष्ट कामनाकी सिद्धि औ विजयदेतीहै औ मुनिलोगभी इसको ढूँढ़ते हैं सूर्य्य-भक्तों को तो इसका व्रत अवश्य करना चाहिये॥

चालीसवां अध्याय॥

आदित्य मण्डकदानका विधान॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अब हम आदित्य मण्डकनाम दानका विधान कहते हैं जिसके करनेसे सब अशुभ दूरहोताहै यवचूर्ण अथवा गोधूम चूर्णमें गुड़ औ गौकोघृत मिलाकर सूर्यमण्डलके समान अतिसुन्दर अ-पूप बनावै फिर सूर्य्यभगवान् का पूजनकर उनके आगे रक्तचन्दनका मण्डललिख उसके ऊपर वह मण्डकधर पीछे

ब्राह्मणको बुलाय उसका पूजनकर (आदित्यतेजसोत्पन्नं राज्ञीकरविनिर्मितम्। श्रेयसेममविप्रत्वं प्रतीच्छांकुरुसुव्रत) यह मन्त्रपढ़ रक्तवस्त्र औ दक्षिणासहित वह अपूप ब्राह्मणको देवै ब्राह्मणभी उसका ग्रहणकर (कामदंधनदं धर्म्यं पुत्रदंसुखदंतव। आदित्यप्रीतयेदत्तं प्रतिगृह्णामिमण्डकम्) यह मन्त्रपढ़ै इसप्रकार विजयसप्तमीको मण्डक दानकरै औ सामर्थ्यहोय तो नित्यही सूर्यनारायणकीप्रीति के लिये मण्डकदेवै इसविधि जो मण्डक दानकरै वह सूर्यनारायणके अनुग्रहसे राजा होताहै॥

इकतालीसवां अध्याय॥

वर्ज्यसप्तमी का विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि औरभी सप्तमी व्रत आप कहैं जिसके करनेसे सब मनोरथ सिद्धहोयँ यह राजा का वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज उत्तरायण व्यतीत होनेके अनन्तर शुक्लपक्षमें आदित्यवार को सप्तमीव्रत ग्रहणकरै औ व्रीह अर्थात् धान तिल यव उड़द मूँग गेहूँ मांस मद्य मैथुन कांस्यपात्र तैलाभ्यंग अञ्जन औ शिलापर पिसीहुई वस्तु इनसबका षष्ठीको त्याग करै औ देवता मुनि पितर इन सबका तर्पणकर सूर्य्यनारायण का पूजनकरै औ घृतयुक्त तिल औ यवका हवन कर सूर्य्यनारायण का ध्यान करताहुआ भूमिपर सोवै ये तेरह द्रव्यों को षष्ठीके दिन त्याग केवल चणे दूसरे दिन प्राशन करै इस विधि जो एक वर्ष व्रतकरै तो सब मनोवांछित फल पावै॥

बयालीसवां अध्याय॥

कुक्कुटी ब्रत का फल औ बिधान॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज एकसमय लोमश ऋषि मथुरामें आये वहांहमारेमाता पिताने उनका भक्तिसे पूजनकिया मुनिभी प्रसन्नहो अनेकप्रकारकी कथा कहने लगे उसी प्रसंगमें हमारीमातासे कहा कि हे देवकि कंसने तेरे बहुतबालक मारदिये इसलिये तू मृतवत्साहोकर अति दुःख भागिनीहोगई चन्द्रमुखीभी प्रथम तेरीभांतिमृतबत्साथी परन्तु पीछे ब्रतकेप्रभावसे जीवत्पुत्राभई यह मुनि का बचनसुन देवकीनेपूछा कि महाराज चन्द्रमुखी कौनथी औ क्या ब्रत उसने कियाथा जिससेउसके संतानजीनेलगे आप कृपाकर मुझेभी वह ब्रतबतावैं तबलोमश मुनिकहनेलगे कि हे देवकिअयोध्याकाराजा नहुषथा उसकीरानी चन्द्रमुखीथी औ राजाकेपुरोहितकी भार्य्यासेरानीकी बहुत प्रीति थी एकदिन वे दोनों सरयूपर स्नान करनेगईं उस समय और भी बहुत सी नगरकी नारी वहां नहाने आईं थीं उन सब नारियोंने स्नानकर मण्डलबनाय उसमें शिव पार्बती की प्रतिमा लिख गन्ध पुष्प अक्षत आदिसे उनका भक्ति पूर्बक पूजन किया पीछे यथाबिधि प्रणामकर अपने२ घरको सब नगरकी नारीजानेलगीं तब उनको रानी औ पुरोहितानी ने पूछा कि हे नारियो तुमने यह किसका पूजन किया तब वे स्त्री बोलीं कि शिवपार्वतीका हमनेपूजन किया है औ शिवजीको आत्मा निवेदनकर यह सुवर्ण सूत्र हाथ में धारण कियाहै जब तक प्राणरहैंगे तब तक इसको धारे रहैंगी औ शिव पार्बती का पूजन किया करैंगी यहसुन वे

दोनोंभी उसब्रतको धारणकरती भईं परन्तु उनमें चन्द्र-
प्रभा ब्रतको भूलगई औ सूत्रभी न बांधा इसलिये वह मर-
नेके अनंतर बानरी भई औ पुरोहितानी ने ब्रतका उद्या-
पननहीं किया इसलिये वह मरकर कुक्कुटीबनी वहांभी उन
दोनोंकी मैत्री रही फिर कुछकालके अनंतर दोनों मृत्युबश
भईं उनमें चन्द्रप्रभा पृथ्वीशनाम राजाकी मुख्यरानी औ
पुरोहितानी उसीराजाके पुरोहितकी भार्याहुई रानीका नाम
ईश्वरी औ पुरोहित स्त्री का नाम भूषणाथा भूषणा जाति-
स्मरा औ उत्तम पुत्रोंकरके युक्तभई ईश्वरीके बहुत काल
में एकपुत्र उत्पन्नभया वहभी रोगीथा इसीसे थोड़ेकालके
अनन्तर मरगया तबभूषणा उसको आश्वासन करनेआई
उसके बहुतसे पुत्र देख ईश्वरीके मनमें बड़ी ईर्षाभई औ
कुछ कालके अनंतर ईश्वरीने भूषणाके पुत्र मरवाडाले प-
रन्तु शिवजी के अनुग्रहसे वे मरकर भी फिर जीउठे तब
ईश्वरीने भूषणासे कहा कि हे सखि तैंने ऐसा कौन पुण्य
कियाहै जिससे मरेहुये भी तेरेपुत्र फिर जी उठते हैं औ
बहुतसे चिरंजीव पुत्रतेरे उत्पन्नभये सदा तू भूषण पहिने
अति शोभित रहती है यह सुन भूषणा कहनेलगी कि हे
सखिभाद्रमासकी सप्तमीको स्नानकर मण्डल बनाय उसमें
शिव पार्व्वती का पूजनकरै औ शिवको आत्मनिवेदन का
सूत्र हाथमें धारणकर अथवा चांदीसोनेकी अँगूठी बनाय
अँगुलीमें पहिने उसदिन उपवासकरै पीछे ब्रतका उद्यापन
करै तब शिव पार्वतीका मण्डलमें पूजनकर वह अँगूठी ताम्र
के पात्रमें धर ब्राह्मणको देवै औ यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन
करावै इसब्रतके करने से सब पदार्थ प्राप्तहोते हैं हेसखि

यहव्रततुमने औ मैंने साथहीकियाथा परन्तु प्रमादकरतुमने छोड़दिया इसीसेतुम्हारे सन्ताननष्टहोतेहैं औराज्यपाकर भी दुःखीरहतीहो मैंने यहव्रत भक्तिसे पालनकिया इससे मैं सबप्रकार सुखीहूँ केवलव्रतोद्यापन मैंने नहींकिया इसलिये एक जन्ममुझेकुक्कुटी बननापड़ा हेसखि अबमैं तुमको अपने व्रतका आधा फल देतीहूँ तुम ग्रहणकरो जिससे सबदुःख दूरहोयँ इतनाकह भूषणाने आधा व्रतका फल ईश्वरीको दिया तब उसके दीर्घायुष् बहुतपुत्र उत्पन्नभये औ सबप्रकारका सुख प्राप्तहुआ इतनाकह लोमशमुनि बोले कि हे देवकि तूभी इसव्रतको करै तो सन्तान स्थिररहै औ त्रिलोकका स्वामी तेरापुत्रहोय इतनाकह लोमशमुनि अपने आश्रमको जातेभये इतनी कथा सुनाय श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज यह प्रसंगसे हमने व्रतका माहात्म्य कहाहै जो स्त्री इस कुक्कुटीव्रतको करें उनको कभी सन्तान का वियोग न होय औ अन्तमें शिवलोक में प्राप्त होयँ॥

तेंतालिसवां अध्याय॥

सप्तमी कल्पका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम सप्तमी कल्पका वर्णनकरते हैं आप प्रीतिसे श्रवण कीजिये माघमहीनेकी शुक्लसप्तमी को अहोरात्र व्रतका संकल्पकर वरुणका पूजनकरै औ अष्टमीके दिन तिल पिष्ट गुड़ औ भात ब्राह्मणोंको भोजन करावै तो अग्निष्टोमयज्ञका फल पावै फाल्गुन शुक्लसप्तमी को सूर्य्यका पूजनकरै तो वाजपेय यज्ञका फल प्राप्तहोय चैत्रमें देवांसुका पूजनकरै तो महादानका फलपावै वैशाखमें भानुका पूजनकरै तो अ-

भयदान का फल प्राप्तहोय ज्येष्ठमें इन्द्रका पूजनकरनेसे अतिदुर्लभ वाजपेययज्ञका फल मिलताहै आषाढ़सप्तमी को दिवाकरका पूजनकर बहु सुवर्णयज्ञका फल प्राप्तहोता है श्रावणमें लोलार्कका पूजनकरै तो सौत्रामणी यज्ञ का फलपावै भाद्रमें शुचिका पूजनकरै तो तुलादान का फल पावै आश्विनमें सविताका पूजनकरनेसे सहस्रगोदानका फल मिलताहै कार्त्तिकमें सप्ताश्वको पूजै तो पौंडरीकयज्ञ का फलपावै मार्गमें रविका पूजनकरनेसे दशराजसूययज्ञ का फल प्राप्तहोताहै पौषमें भास्करका पूजनकरै तो नर-मेध यज्ञका फलपावै इसभांति एकबर्ष ब्रत औ पूजनकर उद्यापनकरै सुन्दर भूमिपर एकहाथ दोहाथ अथवा चार हाथ रक्तचन्दनका मण्डल बनाय उसमें सिंदूर औ गेरू का सूर्य्यमण्डल रक्तचन्दन करवीर कमलआदि रक्तपुष्प औ अनेक प्रकारके नैवेद्यों से पूजनकर जलपूर्ण दशक-लश स्थापनकरै फिर अग्निसंस्कार कर तिल घृत गुड़ औ आककी समिधावोंसे आकृष्णेन इत्यादि वैदिकमन्त्र करके एकहजार आहुतिदेवै पीछे द्वादश ब्राह्मणोंको रक्त वस्त्र एक २ सवत्सागौ छतरी जूता दक्षिणा औ भोजनदे-कर क्षमापन करावै पीछे आपभी मौनसे भोजनकरै इस विधिसे जो सप्तमी ब्रतकरै वह नीरोग रूपवान् औ दी-र्घायुष्होता है सप्तमीके दिन उपवासकर सूर्यनारायण का जो पुरुष दर्शनकरै वह सब पापोंसे मुक्तहो सूर्यलोकमें निवासकरताहै यह सप्तमीब्रत अशुभका नाशकर शरीरा-रोग्य औ सूर्य्यलोकमें वासदेनेहाराहै जो भक्तिसे इसब्रत को कर सूर्य्यनारायणका पूजनकरैं वे पुरुष सदा आरोग्य

औ सुखीरहतहैं औ अन्तमें सूर्य्यलोकमें जाय सूर्यनारायणके गण बनते हैं॥

चवालीसवां अध्याय॥

कल्याण सप्तमीका विधान औ फल॥

राजायुधिष्ठिरपूछते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र औरभी कोई ब्रत स्वर्गआरोग्य औ सबप्रकारके सुख देनेहाराकथनकरैं यहराजाकाप्रश्नसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज जिसशुक्लसप्तमी को आदित्यवारहोय उसको विजया सप्तमीकहतेहैं उसदिन प्रभातही गोदुग्धसे स्नानकर शुक्ल वस्त्र धार अक्षतोंकरके अतिसुन्दर कर्णिका युक्त अष्टदल कमललिखै पीछे पूर्बादि आठोंदलोंमें क्रमसे तपनायनमः मार्तण्डायनमः।विवस्वतेनमः। भगायनमः। वरुणायनमः। भास्करायनमः।अरुणायनमः। रवयेनमः। इन मन्त्रोंकरके पूजनकर कर्णिकामें परमात्मनेनमः। इसमन्त्रसे सब उपचारोंकरके पूजनकर शुक्लवस्त्र फल भक्ष्य पुष्पमाला अनुलेपन गुड़ औ लवण करके नमस्कारान्त नाम मन्त्रों से स्थंडिलके ऊपर पूजाकरै पीछे व्याहृति होमकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय सुवर्णसहित तिलपात्र गुरुकी भेंटकरै पीछे आपभी पायस भोजनकरै इसभांति एकबर्ष यह ब्रत कर सूर्य्यनारायणका पूजनकरै औ जलका कुम्भ घृतपात्र सुवर्ण बस्त्र भूषण औ सवत्सागौ दरिद्री ब्राह्मण को देवै जो इस कल्याणसप्तमी ब्रतकोकरै अथवा इसके माहात्म्य को पढ़ै औ सुनै वह सब पापों से मुक्तहो सूर्य्य लोक में निवास करता है॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

शर्करासप्तमीका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम शर्करा सप्तमीका विधानकहते हैं जिसके करनेसे आयुष् आरोग्य औ ऐश्वर्य्यकी प्राप्तिहोतीहै वैशाखशुक्ल सप्तमीको प्रभात ही तिलोंसे स्नानकर शुक्ल वस्त्र पहिन स्थण्डिल के ऊपर कुंकुमकरके कर्णिकासाहित अष्टदल कमललिखकर पवित्रे नमः इस मन्त्रकरके शर्करा पात्र सहित जलपूर्ण कलश स्थापनकरै उस कलश को रक्तवस्त्र माला आदिसे अलंकृतकर (विश्ववेदमयोयस्माद्वेदकर्त्तेतिचोच्यते । त्वमेवा मृतसर्वस्वं गतःपाहिसनातन) इस मन्त्रसे उसका पूजन करै फिर सूर्य्यसूक्तका जप करताहुआ दिन रात्रि व्यतीत करै अष्टमीके दिन प्रभातउठ स्नानआदि नित्य क्रियाकर सूर्य्यनारायणका पूजनकरै पीछे वह सब सामग्री वेदवेत्ता ब्राह्मणको देकर शर्करा घृत औ पायस करके यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय आपभी तैल लवण रहित भोजन मौनपूर्वक करै इसभांति प्रतिमास व्रतकरके वर्ष पूराहोने पर उत्तमशय्या दुग्धदेनेहारीगौ शर्करा पूर्णघट सबगृहस्थ के उपकरणोंयुक्त घर औ हजार निष्कसे एक निष्कपर्यन्त सुवर्णका बनाहुआ अश्व सामर्थ्यानुसार ब्राह्मण को देवै इसमेंकभीवित्तशाठ्य न करै सूर्य्यभगवान्के मुखसे अमृत पानकरने के समय जो अमृत बिन्दुगिरे उनसे शालीदुग्ध औ इक्षु उत्पन्नभयेहैं औ शर्कराइक्षुकासारहै इसलियेहव्य कव्यमें प्रशस्त औ सूर्य्यनारायणको अति प्रिय अमृतरूप शर्कराहै यहशर्करासप्तमीव्रत अश्वमेधकेफलकोदेनेहाराहै

औ संतानकीवृद्धि इसव्रतसे होतीहै इसव्रतका करनेहारा एककल्पस्वर्गमें निवासकर मोक्षको प्राप्तहोताहै॥

छियालीसवां अध्याय॥

अचलासप्तमीको स्नानका माहात्म्य औ विधान॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपने सब उत्तम फल देनेहारा माघस्नानका विधान कहाथा परन्तु जो प्रातःस्नान करनेको समर्थनहो वह क्याकरै नारीअति सुकुमारी होतीहैं वे किसभांति माघस्नानका कष्ट सहसकैं इसलिये आपकोई ऐसा उपायबतावैं कि थोड़ेसे परिश्रमसे नारियोंको रूपसौभाग्यसंतान औ अनन्त पुण्य प्राप्तहोय। यह राजाकाप्रश्नसुन श्रीकृष्णचन्द्रबोले कि हेमहाराजहम अचलासप्तमीका अतिगोप्यविधान कहतेहैं जिसके करने से सब उत्तमफल प्राप्तहोतेहैं राजा सगरके अति रूपवती चन्द्रमती नाम वेश्याथीजिसका मनोहररूप देखकामदेव भी कामातुरहोजाय एकदिन वह वेश्या प्रभातही बैठी २ संसार की अनवास्थिति का चिंतनकरनेलगी कि देखो यह संसार सागर कैसा भयंकरहै जिसमें डूबतेहुये जीवजन्म मृत्युजराआदिजल जंतुओं करके पीड़ित किसीभांति पार नहींपाते कालरूप अग्नि सबको पकाताहै धर्मकामअर्थसे रहित जो दिन बीतजाते हैं वे वृथाहैं औ फिरआते भी नहीं पुत्र घर क्षेत्र धन आदिकी चिंतामें आयुष् पूराहोजाताहै औ मृत्युआदबाताहै। इसभांतिअनेक प्रकारके संकल्पबिकल्पकरती चन्द्रमती वेश्यावाशिष्ठजीके आश्रममें गई वहांवशिष्ठजीको प्रणामकर हाथजोड़ प्रार्थनाकरनेलगी कि महाराजमैंने न तो दानदियान तप जप व्रत उपवास

आदिकिये औ न शिवबिष्णु आदि किसी देवताका आराधन किया अब मैं संसारसे भीतहो आपके शरणमें आईहूं कोई व्रत आप मुझे उपदेशकरैं जिससे मेरा उद्धारहो यह उसका दीन बचनसुन परम दयालु बशिष्ठमुनि कहनेलगे कि हे बरानने माघशुक्ल सप्तमीको स्नानकरो जिससे रूप सौभाग्य सद्गति आदि सबफल प्राप्तहोयँ षष्ठीके दिन एकभक्त कर सप्तमीको प्रभातही जलके तटपर जाय वहां दीपदान कर स्नान करो पीछेयथाशक्ति ब्राह्मणको दानदो इससे तुम्हारा कल्याण होगा यह बशिष्ठजीका बचनसुन अपने स्थानमें आय सब स्नानदानआदि बिधिपूर्बक करतीभई उस स्नानके प्रभावसे बहुतदिन संसार सुखभोगदेह त्यागनेकेअनन्तर इन्द्रकी मुख्यरानी शची बनी यहअचला सप्तमीको स्नानका फलहै इतनासुन राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अचलासप्तमीका माहात्म्यतोसुना अब स्नान बिधान सुनना चाहतेहैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज षष्ठीके दिन एकभक्तकर सूर्य्यनारायण का पूजनकरै सप्तमीको प्रभातहीउठ नदी सरोवर तलाव आदिपर जाकर स्नानकरै जबतक कोई पशुपक्षी जलको न हिलावै तबतकही स्नानकरनेका फल है सुबर्ण चांदी कांस्य अथवा ताम्रके पात्रमें कुसुंभकी रँगीहुई बत्ती औ तिलों का तेल डाल दीपक प्रज्वालितकर शिरपरधर हृदयमें सूर्य्यनारायणकाध्यान करताहुआ (नमस्तेरुद्ररूपायरसानांपतयेनमः वरुणायनमस्तेस्तुहरिवासनमोस्तुते) यहमन्त्रपढ़ै पीछेस्नानकरदेवता औ पितरों का तर्पणकरै औ चन्दनसे कर्णिका सहित अष्टदलकमल लिखकर उस

के मध्यमें शिवपार्वतीका औ पूर्वआदि आठों दलोंमें क्रम से रविवैश्वानर विवस्वान् भास्कर सविताअर्क सहस्र कि-रण औ सर्वात्माका पूजनकरै इननामोंके आदिमें प्रणव औ अन्तमेंनमः पदलगाकर पूजै इसभांति पुष्प धूप दीप नैवेद्य बस्त्र आदिसे भास्कर का पूजनकर (स्वस्थानंगम्यताम्) इसवाक्यकोउच्चारणकर बिसर्जनकरै पीछेताम्रके अथवा मृत्तिकाके पात्रमेंगुड़ औ घृतसहित तिलचूर्ण औ सुवर्णका बना ताम्रक रखकर रक्त बस्त्रसेढक (आदित्यस्य प्रसादेन प्रातःस्नानफलेनच। दुष्टदौर्भाग्य दुःखेभ्योमया दत्तंतुताम्रकम्) यह मन्त्रपढ़ बिधिपूर्वक वह पात्र ब्रा-ह्मणको देवै औ(खखोल्कः प्रीयताम्) यहबाक्यकहै पीछे गुरुको बस्त्र तिल गौ औ दक्षिणादेकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकरायव्रत समाप्तकरै यहअचला सप्तमीका व्रतरूप सौभाग्य औ सब प्रकारके उत्तमफल देनेहाराहै जो पुरुष इसबिधिसे अचलासप्तमी को स्नानकरै वह संपूर्ण माघ स्नानका फलपाताहै जो इस माहात्म्यको भक्तिसे पढ़ैसुनै औ लोगोंको इसका उपदेशकरै वह उत्तमलोकको जाय॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

बुधाष्टमीका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान्कहतेहैं किहेमहाराज अब हमबुधाष्टमी का विधान कहते हैं जिसके करनेहारा कभी नरक नहीं देखता सत्ययुगके आदिमें इलनामक एकराजा भया वह एकदिन मृगयामें हरिणकेपीछे लगाहुआ हिमालय पर्वत के समीप एक बनमें पहुँचा उस बनमें प्रवेशकरतेही स्त्री बनगया वह वन शिवजीने पार्वतीजीके साथ विहारकरने

के लिये बनायाथा औ यही शिवजीकी आज्ञाथी कि जो पुरुष इसबनमें प्रवेशकरै वह तत्क्षण स्त्री बनजाय इसकारणसे राजाइल नारीहोगया औ वनमें विचरनेलगा उसी समय उसको चन्द्रकेपुत्र बुधने देखा औ उसके उत्तमरूप पर मोहितहो अपनी भार्या बनाय उसमें पुत्र उत्पन्नकिया जिसकानाम पुरूरवाभया उसीसे चन्द्रबंशका आरंभभया जिसदिनबुधनेबिवाहकिया उसदिनबुधाष्टमीथी इसीसेयह जगत्में पूज्यभई उर्मिलानाम मिथिलादेशमें एक स्त्री थी वह विपत्तिकरके बहुत पीड़ितभई तब अपने बालक औ कन्या को साथलेकर अवन्तिदेश को गई वहां जाय एक ब्राह्मणके घरमें सेवाकर अपनानिर्वाह करनेलगी पीसनेके समय थोड़ेसेगेहूँ चोरकर क्षुधासेपीड़ित अपने दोनोंबालकोंकोदेती कुछकालकेअनन्तर उसकीकन्या तरुणअवस्था को प्राप्तभई जिसकानाम श्यामलाथा उसको रूपवतीदेख धर्मराजने अपनी भार्य्याबनाया औ उसकी माता उर्मिला मृत्युवशभई यमराजने अपनी प्रियासे कहा कि और सब काम तुम करना परन्तु ये सातस्थान जिनके ताले बन्दहैं इनमें कभीमतजाना उसनेभीकहा कि बहुत अच्छा परन्तु मनमें सन्देह उत्पन्न होगया एकदिन धर्मराज तो किसी कार्यमें व्यग्रथे श्यामलाने एक मकान का ताला खोलकर देखा तो उसकीमाता उर्मिला को अति भयङ्कर यमदूत बांध २ कर तप्ततैलके कड़ाहमें बार २ डालते हैं लज्जित होकर वह ताला बन्दकिया दूसराखोल देखा तो वहांभी उसकी माताको शिलाकेऊपर लोढ़ीसे चटनीकीभांति यमदूत पीसरहे हैं औ वह चिल्लातीहै इसीभांति तीसरे में

उसकी माताके मस्तकमें लोहकेकील ठोकते हैं चौथे में अति भयंकर श्वान उसको भक्षण कररहे हैं पांचवेंमें लोहे के संदंशसे उसको पीड़ित करते हैं छठमें कोल्हूके बीच इक्षुकी भांति पेलीजाती है औ सातवें स्थान का ताला खोलदेखा तो वहांभी उसकी माताको हजारोंकृमि भक्षण कररहेहैं औ वहराधरुधिरआदिसे व्याप्तहोरहीहै यहदेख श्यामलाने बिचार किया कि मेरीमाताने ऐसा कौन पाप किया जिससे इस दारुण गतिको प्राप्तभई यह शोचकर सब वृत्तान्त अपनेपति धर्मराजसे कहा धर्मराजबोले कि हे प्रिये इसीलिये हमने कहा था कि ये सात ताले मत खोलना नहीं तो तुमको पश्चात्तापहोगा तुम्हारी माताने संतानके स्नेहसे ब्राह्मणके गेहूँचोरे तुमक्या नहींजानतीहो यह सब उसीकर्मका फलहै ब्राह्मणका धन प्रणयसे भक्षण करै तोभी सातकुल अधोगतिको प्राप्तहोते हैं औ चोरकर खाय तब तो जबतक चन्द्रसूर्य्यरहैं तबतक नरकसे उद्धार नहींहोता जो गोधूम इसने चुराये थे वेही कृमि बनकर इसको भक्षणकरते हैं यह यमराज का वचन सुन श्यामला बोली कि महाराज यह सब मैं जानती हूँ परन्तु अब आप ऐसा कोई उपाय बतावैं जिससे मेरीमाता का नरक से उद्धारहोय यह उसका कथनसुन कुछकाल बिचार कर यमराजने कहा कि हे प्रिये सातजन्म पूर्वतैने बुधाष्टमीका व्रत कियाथा जो उसका फल तू अपनी माता को देवै तो यह इस संकट से छुटै यह सुनतेही श्यामला ने स्नानकर अपने व्रतकाफल माताकोदिया वह उसकी माताभी उसी क्षण दिव्यदेहधार विमानमें बैठ अपने पतिसहित स्वर्ग

कोगई औ आजतक स्वर्ग सुखभोगती है इतनी कथासुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्ण बुधाष्टमी व्रतका क्या बिधानहै तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि महाराज जब शुक्लपक्ष की अष्टमीको बुधबारहोय उसदिन एकभक्त व्रत करनाचाहिये पूर्वाह्णमें नदीआदिमें स्नानकरनयापात्र जल से भर भोजन औ दक्षिणा सहित ब्राह्मणको देवै आठ बुधाष्टमी का व्रतकरै औ आठोंमें क्रमसे ये आठ पक्वान्न भक्षणकरै मोदक गुणक घेवर बटक कसारसोमलक अपूप औ आठवीं अष्टमीको पूरीमिठाईआदि अनेक पदार्थ भोजनकरै अपने इष्टमित्रोंके साथ बैठकर भोजनकरै औ बुधाष्टमीकीकथा भी सुनै बुधकीमूर्तिबनाय पूजनकरै वहमूर्ति एकमाशे सुबर्णकी बनावै औ गन्ध पुष्प नैवेद्य बस्त्र दक्षिणा आदिसे उसका अर्चनकर (ओंबुधोयंप्रतिगृह्णातुद्रव्यस्थो त्रबुधःस्वयम् । दीयतेवुधराजेन्द्र तुष्यतांमे बुधोत्तमः) यह मंत्रपढ़ ब्राह्मणको सबसामग्री सहितबुधकी मूर्त्तिदेवै ब्राह्मण भी मूर्तिलेकर यह मन्त्रपढ़े (दुर्बुद्धिबोधन्दुरितं नाशयित्वाचवोबुधः। सौख्यसौमनस्यो नित्यंकरोतुशशिनंदनः) इसविधिसे जोबुधाष्टमीकाव्रतकरै वहसातजन्मपर्यंतजातिस्मरहोय औ धनधान्य पुत्रपौत्र दीर्घायुष् ऐश्वर्य्य आदि संसारके सब पदार्थ पाय अन्तसमय नारायणका स्मरण करताहुआ तीर्थपर प्राणत्यागताहै औ प्रलयपर्यन्त स्वर्ग में निवासकरताहै जो इसबिधानको श्रवणकरै वहभी ब्रह्महत्यादि पापोंसे छुटता है यह अतिगुप्त बुधाष्टमी बिधान हमने कहाहै जो यह व्रतकरै औ पक्वान्नपात्र सहित बुधकी मूर्त्ति ब्राह्मणकोदेवै वह्व कभी यमलोक नहीं देखता ॥

अठतालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजन्माष्टमी का विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आप जन्माष्टमी व्रतका बिधान कथनकरैं यह सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज मथुरामें जब कंसमारागया उस समय औ उसी रंग बाटस्थानमें जहां मल्लयुद्ध हुआ था औ कुकुर अंधक वृष्णिआदि सब बैठे थे देवकी हमको आलिंगनकर स्नेहसे रोदनकरनेलगी औ बसुदेवजी भी गद्गदबाणीहो हमको औ बलदेवजीको आलिंगनकरकहने लगे कि आज हमारा जन्मसफलभया जो दोनों पुत्रोंको कुशलयुक्त देखते हैं इस भांति हमारे माता पिताको अति हर्षित देखसबमनुष्यवहां एकत्रभये औ कहनेलगे कि हे श्रीकृष्ण आपने बड़ाकाम किया जो इसदुष्ट कंसकोमारा हम सब इससे बहुत पीड़ितथे अब आप यह कृपाकर कहैं कि किसदिन आपदेवकी के गर्भसे उत्पन्नभयेहो हम सब उसदिन बड़ा उत्सव किया करैंगे उस समय हमारे पिताने भी कहा कि अपना जन्मदिन इनको बतादो तब हमनेमथुरानिवासी जनोंको जन्माष्टमीका व्रतकथनाकिया सिंह राशिपर सूर्य्य औवृषराशिपर चन्द्रमाथा उस भाद्रकृष्ण अष्टमी अर्द्धरात्रके समय रोहिणी नक्षत्र में हमारा जन्मभया। यहव्रत सब बर्णोंको करना चाहिये प्रथम यह व्रत मथुरामें प्रसिद्धभया पीछे और लोकोंमें इसकीख्याति भई उसीदिन भगवतीकाभी बड़ाउत्सव करनाचाहियेइतनासुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब इस व्रतका आपविधान वर्णनकीजिये जिसके करनेसे जगत्के

प्रभु आपप्रसन्नहोतेहैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज इसएकव्रतकेही करनेसे सातजन्मकेपाप निवृत्त होजातेहैं पहिलेदिन दन्तधावन आदिकर व्रतकोनियम ग्रहणकरै पीछे व्रतकेदिन मध्याह्नमें स्नानकर देवकीका सूतिकागृहबनावै गोकुलकी भांतिगोपगोपी गौ आदिसे अलंकृतकर खड्ग छाग मुशलआदि रक्षाकेलिये द्वारपररक्खै षष्ठीदेवीका स्थापनकरै इसभांति यथाशक्ति उस सूतिका गृहको भूषितकर बीचमें पर्यंकके ऊपर सोतीहुई हमारे सहित देवकी की प्रतिमा स्थापनकरै प्रतिमा आठप्रकार की होतीहैं सुवर्णकी चांदीकी ताम्रकी पित्तलकीमृत्तिकाकी मणिकी रंगसे लिखीहुई औ मनोमयी इनमेंसे सर्व लक्षण युक्त कोईप्रतिमा बनायस्थापनकरै औ स्तनपान करतेहुये बालस्वरूप नीलकमलके समान वर्णहमारी प्रतिमादेवकी के समीप पलँग के ऊपर स्थापन करै बाहिर खड्ग चर्म धारणकिये वसुदेवकी मूर्त्तिबनावै औ कन्या जन्मती हुई यशोदाभी वहां बनावै औ ऊपरको देवता ग्रह नाग विद्याधरआदिकी मूर्त्तिरचै वसुदेव कश्यपका अवतारहैं देवकी अदितिका बलदेवजी शेषनागका नन्दगोप दक्षप्रजापतिका यशोदा दितिका औ गर्गमुनि ब्रह्माजीका अवतारहैं वहांनाचती गातीहुई अप्सराऔ गन्धर्वबनावैऔ एकओर कालियनागको यमुनाके ह्रदमें स्थापन करै इस भांति अति रमणीय नवसूतिका देवीका स्थापनकर भक्ति से गन्ध पुष्प धूप बीजपूर सुपारी नारंगी पनस आदिजो फल उसदेश में प्राप्तहोयँ उन सबसे पूजनकर (गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृतावेणुवीणानिनादैर्भृङ्गारादर्शकुम्भ

प्रवरकरतलैःकिन्नरैर्गीयमाना। पर्य्यंकेसाभिसुप्तामुदिततर मनाः पुत्रिणी सम्यगास्ते सादेवीदेवमाताजयतिसुवदना देवकी कान्तरूपा) यहश्लोकपढ़े। औ यह ध्यानकरै कि कमलवासिनी लक्ष्मी देवकीके चरण दबारहीहै। ओं श्रियै नमः देवक्यैनमःवसुदेवायनमःबलदेवायनमः नन्दायनमः यशोदायैनमः इत्यादिनाम मन्त्रोंसे सबका अलग २ पूजन करै पीछे (अनर्घ्यंवामनंसौरिंवैकुण्ठंपुरुषोत्तमम्। वासुदेवं हृषीकेशंमाधवंमधुसूदनम् १ वाराहंपुंडरीकाक्षं नृसिंहंदैत्य सूदनम्। दामोदरंपद्मनाभं केशवंगरुडध्वजम् २ गोविंदम च्युतंकृष्णमनंतमपराजितम्। अधोक्षजंजगद्बीजं सर्ग स्थित्यंतकारणम् ३ अनादिनिधनंविष्णुंत्रैलोक्येशंत्रिविक्र मम्। नारायणंचतुर्बाहुंशंखचक्रगदाधरम् ४ पीतांबरधरंनि त्यंवनमालाविभूषणम्। श्रीवत्सांकंजगत्सेतुंश्रीधरंश्रीपतिं हरिम्। योगेश्वरंचयोगीशं गोविन्दम्प्रणतोस्म्यहम् ५) इसमन्त्रसे हमारी मूर्तिको स्नानकरावै (यज्ञेश्वराययज्ञाय यज्ञपतयेगोविन्दायनमः) इसमन्त्रसे अर्घ्य चन्दन धूप दीप अर्पणकरै (विश्वेश्वरायविश्वसंभवाय विश्वपतये गोविन्दायनमः) इसमन्त्रसे नैवेद्य चढ़ावै (धर्मेश्वराय धर्मसंभवाय धर्मपतये गोविन्दायनमः) यह मन्त्र पढ़ क्षमापन करावै। इस भांति पूजनकर स्थंडिल के ऊपर रोहिणी सहित चन्द्रमा बसुदेव देवकी नन्द यशोदा औ बलदेवजी का पूजनकरै तो सबपापों से मुक्तहोजाय च- न्द्रोदय के समय (क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यंशशांकेशरोहिण्यासहितोमम) इसमन्त्रसे च- न्द्रमाको अर्घ्यदेकर घृतकी बसुधाराकरै औ षष्ठी देवीका

पूजनकर उसीक्षण हमारानामकरण आदिकरै नवमीकेदिन हमारे उत्सवके समान भगवती का उत्सवकरै पीछे यथा-शक्ति ब्राह्मणोंको भोजनकराय उनको सुवर्ण वस्त्रगौ आदि देकर संतुष्टकरै औ यह वाक्यकहै कि (श्रीकृष्णोमेप्रीय-ताम्) औ ये मन्त्रभी पढ़ै (यंदेवंदेवकीदेवी वसुदेवोप्य जीजनत्। भौमस्यब्रह्मणोगुप्त्यै तस्मैब्रह्मात्मनेनमः॥ सुज न्मवासुदेवाय गोब्राह्मणहितायच। जगद्धितायकृष्णायगो विन्दायनमोनमः। शांतिरस्तुशिवंचास्तु) यहपढ़ब्राह्मणोंको विसर्जनकरै इसप्रकार हमारेभक्त पुरुष अथवा स्त्री जोइस उत्सवको प्रतिबर्ष करैं व सन्तान आरोग्य धनधान्य दीर्घ आयुष् औ राज्यपातेहैं जिसदेशमें यह उत्सव कियाजाय वहां पर चक्रव्याधि औ अवृष्टि आदिका कभी भयनहीं होता जिस घरमें पुत्रयुक्त देवकी लिखकर पूजीजाय वहां बालकका मृत्यु गर्भपात वैधव्य दौर्भाग्य औ कलह नहीं होता जो एक वारभी इसव्रतकोकरै वहभी विष्णुलोकको प्राप्तहोताहै इस ब्रतके करनेहारे संसार के सब सुख भोग विष्णुलोकमें निवास करते हैं॥

उनचासवां अध्याय॥

दूर्वाष्टमीका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं हे महाराज भाद्रशुक्ल अष्टमीको दूर्वाष्टमीका व्रत जो पुरुषकरै उसका वंश कभी क्षय नहीं होता दूर्वाके अंकुरोंकी भांति दिन २ बढ़ता जाताहै राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं किहे श्रीकृष्णचन्द्र यहदूर्वा कहांसे उत्पन्न हुई चिरायुष् क्योंकर भई औ लोकमें वंद्य औ पूज्य क्यों है यह आप वर्णनकरैं यह राजाकाप्रश्नसुन ?।...

वान् कहनेलगे कि हे महाराज देवताओं ने जब क्षीरसागर मथनकिया उससमय विष्णुभगवान्‌ने अपनीपीठ पर मन्दराचलको धारणकिया उसकी रगड़से भगवान् के जो रोम उखड़कर जलमें गिरे उनसे दूर्बा उत्पन्नभई उस दूर्बापर देवताओंने अमृतके कुम्भ रक्खे उनसे जो अमृत बिन्दुगिरे उनके स्पर्श से यह अजर औ अमर भई औ देवताओंने गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य खर्जूर नालिकेर द्राक्षा कपित्थलकुच नारंग बीजपूर दाड़िम दही अक्षत माला आदिमे (त्वंदूर्वेमृतजन्मासि वन्दितासिसुरासुरैः। सौभाग्यसन्ततिंदत्वा सर्वकार्यकरीभव १ यथाशाखाप्रशाखाभिर्विस्तृतासिमहीतले। तथाममापिदेहित्व त्वामजरामरतां सदा) इन मन्त्रोंकरके दूर्वाका पूजनकियाहै सब देवपत्नी स्वाहा गौरी संज्ञा श्रीवेदवती दमयन्ती सीता सुकेशी घृताची रम्भा मिश्रकेशी देवयोनि कामकन्दला मेनका उर्वशीआदि सबस्त्रियोंने दूर्वाकापूजनकर अपना२ अभीष्ट फल पायाहै और भी जो नारी स्नानकर शुद्ध वस्त्र पहिन दूर्वाका पूजनकर तिल पिष्ट गोधूम सप्तधान्य आदि का दानकर ब्राह्मण भोजनकरावैं औ श्रद्धासे इस व्रतकोकरैं वे पुत्र पौत्र सौभाग्य धनआदि सब पदार्थपाय बहुतकाल संसार सुखभोग अन्तमें अपने पतिसहित स्वर्गको जाती हैं औ प्रलयपर्यंत वहांही निवास करती हैं॥

पचासवां अध्याय॥

प्रतिमासकी कृष्णाष्टमीका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम कृष्णाष्टमीकाविधान वर्णनकरते हैं मार्गशीर्ष मासकी कृष्णाष्टमी

को उपवास के नियम धारणकर ब्रह्मचारी औ जितक्रोध
हो गुरुकी आज्ञानुसार उपवासकरै मध्याह्नके अनन्तर नदी
आदिमें स्नानकर गन्ध उत्तमपुष्प गुग्गुल धूप दीप अनेक
प्रकारके नैवेद्य ताम्बूल आदि उपचारों से शिवलिंग का
पूजनकर कृष्णतिलोंका हवनकरै मार्ग्ग मासमें शंकर का
पूजनकरै औ गोमूत्र प्राशन कर भूमिपर सोवै तो अति
रात्रि यज्ञका फलपावै पौषकृष्णाष्टमीको शंभुका पूजनकर
घृतप्राशनकरै तो वाजपेय यज्ञकाफलपावै माघकृष्णाष्टमी
को महेश्वरका पूजनकर गोदुग्धप्राशनकरै तो आठ गो-
मेधयज्ञ का फलप्राप्तहो या फाल्गुनमें महादेवका पूजन
कर तिल प्राशनकरै तो आठराजसूयका फलपावै चैत्रमें
स्थाणुका पूजन करै औ यवप्राशन करै तो अश्वमेध का
फलमिलै वैशाखमें शिवका पूजनकर रात्रिके समयकुशोदक
प्राशनकरै तो दशनरमेध यज्ञोंकाफलपावै ज्येष्ठमें पशुपति
का पूजनकर गोशृंगजल प्राशन करै तो लक्ष गोदानका
फल प्राप्तहोय आषाढ़में उग्रका पूजनकर गोमय प्राशन
करै तो अयुतवर्ष से भी अधिक रुद्रलोक में निवास करै
श्रावणकृष्णाष्टमीको शर्वका पूजनकर रात्रिके समय दूर्वा
प्राशनकरै तो बहु सुवर्ण यज्ञकाफल पाता है भाद्रमें त्र्य-
म्बकका पूजनकर बिल्वपत्रका प्राशनकरै तो तीनवर्ष दी-
क्षित होनेकाफलपावै आश्विन में भवका यजनकर तन्दु-
लोदक प्राशनकरै तो दश पौण्डरीक यज्ञोंका फलमिलै
कार्त्तिककृष्णाष्टमी को रुद्रका भक्तिसे अर्चनकर दहीप्रा-
शनकरै तो अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्तहोय इसप्रकार
बारह महीने शिवपूजनकर अन्तमें शिवभक्त ब्राह्मणोंको

घृत शर्करायुक्त पायस भोजन करावै औ सुवर्ण वस्त्र आदि उनको देकर प्रसन्नकरै औ कृष्ण तिल पूर्ण बारह कलश छत्र जूता वस्त्र आदि बारह ब्राह्मणोंको देकर दुग्धदेनेहारी सवत्सा एक कृष्णवर्ण गौ महादेवजीकी भेटकरै इसकृष्णाष्टमी व्रत को जो एकवर्ष निरन्तरकरै वह सबपापोंसे मुक्तहो उत्तम ऐश्वर्यपाय सौवर्ष पर्यन्त संसारके सुखआनन्दसे भोगताहै इसव्रतके करनेसे इन्द्र चन्द्र ब्रह्मा विष्णु आदि देवता उत्तम २ पदोंको प्राप्तभये हैं जो पुरुष अथवा स्त्री इसव्रतको भक्तिसेकरै वह अप्सराओंसहित उत्तमविमानमेंबैठ देवताओंकरके स्तूयमान शिवलोकको जाताहै वहांहीं तीन अयुत कल्प पर्यन्त निवासकरता है औ जो इस व्रतके माहात्म्यको सुनै वह सब पापोंसे मुक्तहोताहै भक्तिसे कृष्णाष्टमी व्रतकर पूर्वोक्तरीतिसे शिवपूजन औ प्राशन कर तिल औ अन्न सहित कृष्णवर्णके कलश ब्राह्मणोंको देवै तो अवश्यही शिवलोक को जाय॥

इक्यावनवां अध्याय॥

दत्तात्रेय औ कार्त्तवीर्य की कथा अनघाष्टमीका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज ब्रह्माजीके पुत्र अत्रिऋषिभये जिनकी पत्नी अनसूयाथीं उनके पुत्र बड़े तपस्वी विष्णुका अवतारदत्तात्रेय नामहुये जिनको अनघभी कहते हैं उनकी पत्नी लक्ष्मी का अवतारथी उसका नाम अनघाथा उनके आठपुत्र बड़े तपस्वी औ ब्रह्मवेत्ता भये दत्तात्रेय योगी बिन्ध्याचलके बीच अपने आश्रममें योगसाधन करतेथे इसी समय जम्भनामक दैत्यने ब्रह्माजी से वरपाय बड़ीसेना साथले इन्द्रकी पुरी अमरावती

को ज़ायघेरा औ दिव्य सौ वर्षतक युद्धहुआ अन्तमें देवता व्याकुलहो नगरछोड़ भागे तब गदा मुद्गर पट्टिश शतघ्नी बाण खड्गआदि अनेकप्रकारके शस्त्रधारे वृष महिष शरभ सिंह व्याघ्र वानर गैंड़े हाथीआदि बाहनों पर चढ़ेहुये बड़े पराक्रमी जम्भआदि दैत्यभी देवताओं के पीछे लगे देवता भयभीत हुये २ दत्तात्रेयके आश्रम में पहुँचे दत्तमुनिने उनको अभय दिया औ अपने शरणमें रक्खाइतनेमें गर्जते औ शस्त्रोंकी वृष्टिकरते दैत्यभी वहां पहुँचे औ घोर शब्दसे परस्पर कहनेलगे कि इसब्राह्मण को बांधलो औ इसके आश्रम वृक्षोंको उखाड़कर फेंकदो यह सुन दत्तात्रेयने क्रोधकर दैत्योंको देखा देखतेही सब दैत्य निस्तेज औ पराक्रम हीनहोगये तब देवताओंने उनको जीता औ स्वर्गका राज्यपाया तबसे दत्तात्रेयकाप्रभाव लोकमें प्रसिद्धभया दिव्य तीनहजार वर्ष पर्य्यन्त दत्तात्रेय योगीने अपनी पत्नी सहित तपकिया इतने काल में सब लोकोंपर अनेक उपकार किये यह सब वृत्तान्त मार्ग कृष्णाष्टमीको हुआथा दत्तात्रेय जब योगाभ्यास करते थे उस समय माहिष्मती नगरीका राजा कार्त्तवीर्यार्जुन एकाकी रहकर दिन रात दत्तात्रेयकी सेवा करताथा जब दत्तात्रेयका नियम सम्पूर्णहुआ तब प्रसन्नहो कार्त्तवीर्यसे कहा कि वरमांग तैंने वहुतकाल सेवाकरी इससे हम सन्तुष्टहैं तब कार्त्तवीर्यने प्रथम यह वर मांगा कि महाराज मेरे हजार भुजा होयँ दूसरा यह कि संपूर्ण पृथिवी का राज्यमिलें तीसरे यह कि धर्म से राज्यमिलै औ धर्म से ही मैं पालनकरूं चौथा यह वर कि युद्धमें सदाजयहोय

दत्तात्रेयने ये सबबर उसकोदिये वहभी बरकेप्रभावसे सब राजाओं को जीत चक्रवर्त्तीबना सातोंद्वीपोंमें उसने दश हजार यज्ञकिये सब यज्ञोंमें सुवर्ण की बेदी औ यूप बनेथे प्रत्येक यज्ञमें अपरिमित धन ब्राह्मणोंको दिया देवता गन्धर्व अप्सराआदि सदाउसके यज्ञोंमें वर्त्तमान रहतेथे और नारदमुनि तो उसकी महिमा योंगातेथे कि कार्तबीर्य के तुल्य यज्ञदान तप पराक्रम औ शास्त्रमें न तो कोईराजा पहिलेहुआ औ न आगेहोगा खड्गचर्म धनुषबाण धारे सब प्रजाकी रक्षाके लिये कार्तबीर्य आप घूमता रहताथा उसके राज्यमें अधर्म दुराचार शोकनहींथे औ किसी का धनभी नष्टनहींहोताथा दुष्टोंको वह आपदंडदेता पचासी हजारबर्ष कार्तबीर्यने धर्मराज्यकिया औ प्रजाको परिपूर्ण सुखदिया वह हजारभुजाओंकरके ऐसाशोभितहोता जिस भांति अपने सहस्राकिरणों करके सूर्य्यशोभितहोयँ नर्मदा नदीमें बर्षाऋतुकेसमय जबकार्तबीर्य क्रीड़ाकरतातब नर्मदाका प्रवाह उलटा चलनेलगता मत्तहोकर समुद्रमें जब बिहार करनेकेलिये प्रवेशकरता उस समय समुद्रका जल बेलाके बाहिरहोजाता औ पातालमें नाग औ असुरत्रासको प्राप्तहोते हजार २ भुजाओंसे जब धनुषकी ज्याका शब्द करता तबऐसा प्रतीतहोता मानोंप्रलयकालके मेघगर्जते हैं अथवा हजारों बज्रपात एकबार होतेहैं एकसमय कार्त्तवीर्य्य लंकासे रावणको पकड़ लाया औ अपने कारागार में कैद करादिया तब पुलस्त्य मुनि ने आय बड़ी दीनता दिखाय रावण को छुटाया किसी समय अग्नि ने कार्त्तवीर्य्यसे भिक्षामांगी तब कार्त्तवीर्य्यने सप्तद्वीपवती पृथिवी

भिक्षामें देदी इससे अग्निप्रसन्नहो अद्यापिउसकेकुंडमेंनि-
वासकरताहै अनघमुनिके प्रसादसे यहसबप्रभावकार्त्तवीर्य
काभयाकार्तवीर्यनेअनघाष्टमीव्रतलोकमें प्रवृत्तकियाअघ
नाम पापकाहै पापहरने से इसकानाम अनघा भया दत्ता-
त्रेयमुनिको भी योगकेप्रभावसे अणिमा लघिमा प्राप्ति प्रा-
काम्य महिमा ईशित्व वशित्व औ कामावसायिता ये आठ
ऐश्वर्य प्राप्तभये इतनी कथासुन राजायुधिष्ठिर पूछते भये
कि किस तिथिकाव्रत कार्तवीर्यने कियाथा औ किस विधा-
नसे किया यह आपकथनकरैं तब श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे
कि हे महाराज कार्तवीर्य ने अनघाष्टमी व्रतकरके सब
अभीष्ट पाया अनघाष्टमीका यहविधानहै कि मार्ग शीर्ष
कृष्णाष्टमीको कुशाका अनघमुनि औ बहुत पुत्रों सहित
उनकी पत्नी अनघा बनाय स्थंडिलकेऊपर स्थापन कर
स्नान कराय गन्ध आदि उपचारोंसे (इदंविष्णुर्विचक्रमे)
इत्यादि वैदिकमंत्रोंकरके उनका पूजनकरै अनघको विष्णु
रूप अनघाको लक्ष्मीरूप औ उनके पुत्रोंको प्रद्युम्नादि
रूपसे भावनाकर पूजनकरै उसकालमें जोफलमिलें वे सब
चढ़ावै औ धूप दीप अनेकप्रकार के नैवेद्य निवेदन करै
पीछे यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय आपभी अपने मित्र
बन्धुओं सहित भोजनकरै रात्रिके समय जागरणकर बड़ा
उत्सवकरै नवमीकेदिन प्रभातहीनदीमें उनकाविसर्जनकरै
इसव्रतकोग्रहणकर त्यागनकरै प्रतिवर्षश्रद्धासे यहदत्तात्रेय
मुनिका उत्सवकरै तो सब पापदूरहोंय कुटुम्बकी वृद्धिहोय
विष्णु भगवान् प्रसन्न होयँ औ सातजन्मतक आरोग्य
रहै जो पुरुष भक्तिसे इसव्रतको करैं वे कार्त्तवीर्यकी भांति

ऐश्वर्य्य पाते हैं औ अन्तमें विष्णुलोक को जाते हैं॥

बावनवां अध्याय॥

सोमाष्टमी औ अर्काष्टमी का विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराजहम औरभी व्रतकहतेहैं जिसके करनेसे सबप्रकारके कल्याण औ शिवलोक की प्राप्तिहोय सोमबार युक्त अष्टमी जिसदिन होय उस दिन हरिहरकापूजनकरै ऐसी प्रतिमास्थापनकरै जिसका दक्षिण भाग शिवरूप औ वामभाग विष्णुरूप होय पीछे पञ्चामृतआदिसे विधिपूर्वक स्नानकराय कर्पूरयुक्त चन्दन का दक्षिणभागमें औ तुरुष्क नामसुगन्धि द्रव्ययुक्त कुंकुम का वामभागमें लेपन करै शिवके ऊपर नीलम औविष्णु के ऊपर मोती चढ़ावै श्वेतरक्तपुष्पचढ़ाय घृत पक्व नैवेद्य लगावै औ पचीस दीपकोंकरके आरतीकरै औ निराहार रहै दूसरेदिन पूजनकर घृतयुक्त तिलोंका हवनकर व्रती औ ब्राह्मणों को भोजन करावै औ यथाशक्ति मिथुन पूजा करै एकबर्ष इसभांति व्रतकर अन्तमें पूर्वोक्त रीतिसे पूजन कर श्वेत पीतवस्त्र वितान पताका घण्टा धूपदानी दीप वृक्ष औरभी पूजनके उपकरण ब्राह्मणोंको देवै औ यथा शक्ति ब्राह्मण भोजनकरावै चतुरस्र मण्डलमें शिवका औ त्रिकोण मण्डल में पार्वतीका पूजनकर वस्त्र भूषण भोजन आदिसे ब्राह्मण दम्पतीका पूजनकर पचीस दीपकोंसे धीरे २ नीराजन करै इसविधिसे पांचवर्ष अथवा भक्तिसे एकहीबर्ष व्रतकरै वह विष्णुलोक औ शिवलोकमें निवास कर मोक्षको प्राप्तहोताहै औ जो पुरुष जन्मभर इस व्रत को करै वह तो साक्षात् विष्णु स्वरूपही होजाताहै आपदा

दुःख शोक ज्वर ग्रह आदि कभी उसके समीप नहीं आते इतना विधान कह श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि महाराज इसी भांति आदित्यवार युक्त अष्टमी को भी व्रत होता है उसदिन दक्षिणभागमें शिव औ बामभागमें पार्वती का अर्चनकरै शिवजीपर मोती औ पार्वतीजीपर पद्मराग चढ़ावै औ रत्न न मिलै तो सुवर्णही निवेदनकरै चन्दन औ कुंकुम का लेपन शुक्ल औ रक्तपुष्प औ वस्त्र घृतपक्क नैवेद्य आदिसे पूजनकरै बाकी सब विधान पूर्वव्रतकी भांति है परन्तु इसव्रतका पारण गोघृतसे करनाचाहिये व्रतके अन्तमें पूर्वरीतिसे उद्यापनकरै इसव्रतका करनेहारा सूर्यादिलोकोंमें उत्तमभोग भोगकर शिवलोकमें प्राप्त हो जन्म मरणसे रहितहोताहै इसव्रतको जो करै वहप्रतापी अदीन जनप्रिय नीरोग धनवान् पुत्रवान् औ सुखीहोताहै ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

श्रीवृक्षनौमी का विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज देवता औ दैत्यों ने जब समुद्र मथनकिया उस समय समुद्रसे लक्ष्मी निकली लक्ष्मीको देख सबकी इच्छाभई कि हमहीं इसकोलें इसलिये देवता औ दैत्योंका युद्धहोनेलगा लक्ष्मीभी श्रांत हो बिल्ववृक्षके नीचे बैठगई विष्णुभगवान्ने सबको जीत आप लक्ष्मीको ग्रहणकिया बिल्ववृक्षके नीचे लक्ष्मीबैठी इसलिये बिल्ववृक्षको श्रीवृक्ष कहते हैं भाद्रशुक्लनवमीको सूर्योदयके समय अनेक प्रकारके पुष्प गन्धवस्त्र फलतिल पिष्टमाला आदिसे (श्रीनिवासनमस्तेस्तु श्रीवृक्षशिववल्लभ । ममाभिलषितंकृत्वासर्वविघ्नहरोभव) इसमन्त्रकरके

विल्ववृक्षका पूजनकरै पीछे ब्राह्मण भोजनकराय आपभी तैल लवण रहित बिना अग्निके सिद्धकिया भोजन दही पुष्प फलआदि भूमिपर रख भोजनकरै इसभांति जो भक्ति से श्रीवृक्षका पूजनकरै वह अवश्यही सबसम्पत्तिपाताहै॥

चौवनवां अध्याय॥

ध्वज नवमी का विधान औ फल नवदुर्गास्तोत्र॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि हेमहाराज महिषासुरको भगवती ने मारदिया इसबैरसे दैत्योंने देवताओंके साथ बहुत संग्राम किये औ भगवती ने भी धर्मकी रक्षाके लिये नाना रूप धार दैत्योंको मारा तब महिषासुरके पुत्र रक्तासुरने साठिहजारबर्ष पर्यन्त घोर तपकर ब्रह्माजीको प्रसन्नकिया औ उनसे बरपाय दैत्योंको इकट्ठाकर इन्द्रकेसाथ युद्धकरने अमरावतीमें गया देवताओंने भी देखा कि दैत्यों की सेना युद्धके लिये आईहै तब सब एकत्रहो इन्द्रको आगे कर युद्धके लिये निकले औ युद्धहोनेलगा रुधिरकी नदी बहनेलगीं औ देवता दैत्य कट २ करगिरनेलगे तब रक्तासुर कोपकरके देवताओं से युद्ध करनेलगा औ ऐसायुद्ध किया कि देवतारणको छोड़भगे औ रक्तासुरनेअमरावतीमें अपना राज्यजमाया देवता भी कटक्षत्रापुरीमें गये जहां चामुंडा औ नवदुर्गासहित भगवती निवासकरती है महालक्ष्मी नंदा क्षेमकरी शिवदूती महारुण्डा भ्रामरी चंद्रमंगला रेवती औ हर सिद्धि ये नवदुर्गाओं के नामहैं वहां जाय हाथजोड़ सब देवता इनकी भक्तिसे स्तुति करनेलगे (अमरपतिमुकुटचुम्बितचरणाम्बुज सकलभुवनसुखजननी। जयतिजगदीशवन्दित सकलामलनिःकलादुर्गा १

विकृतनखदशनभूषण रुधिरवसाच्छुरितखड्गकृतहस्ता ।
जयतिनरमुण्डमण्डितापिशितसुरासवरताचण्डी २ प्रज्व
लितशिखिशणोज्ज्वलविकटजटाबद्धचन्द्रमणिशोभा । ज-
यतिदिगम्बरभूषासिद्धवटेशामहालक्ष्मी ३ करकमलजनि
तशोभापद्मासनबद्धपद्मबदनाच । जयतिकमण्डलुहस्ता
नन्दादेवीनतार्त्तिहरा ४ दिग्वसनाविकृतमुखा फेत्कारो
द्दासपूरितदिशौघा । जयतिविकरालदेहा क्षेमकरीरौद्रभाव
स्था ५ क्षोभितब्रह्माण्डोदरखरमुखरवरहुंकृतनिनादा । ज
यतिमहीमहितासाशिवदूत्याख्याप्रथमशक्तिः ६ मुक्ताट्टहा
सभैरवदुस्सहरवचकितसकलदिक्चक्रा । जयतिभुजगेन्द्र
बन्धनशोभितकर्णामहारुण्डा ७ पटुपटहमुरजमर्दल झल्ल
रिकारावनर्तितावयवा । जयतिमधुव्रतरूपा दैत्यहरीभ्राम
रीदेवी ८ शान्ताप्रशान्तबदनासिंहरथाध्यानयोगसन्निष्ठा।
जयतिचतुर्भुजदेहा चन्द्रकलाचन्द्रमङ्गलादेवी ९ पक्षपुट
चंचुघातैःसंचूर्णितविबुधशत्रुसंघाता । जयतिशितशूलह
स्ताबहुरूपारेवतीरौद्रा १० पर्यटतिशक्तिहस्ता पितृवननि
लयेषुयोगिनीसहिता । जयतिहरसिद्धिनाम्नी हरिसिद्धिर्व
न्दितासिद्धैः ११) इसप्रकार नवदुर्गा स्तुतिकर बारम्बार
प्रणामकर सब देवता प्रार्थनाकरतेभये कि हे भगवती इस
सङ्कट में आपही हमारी रक्षाकरो और कोई हमको अव-
लम्ब नहींहै यह देवताओंका वचन सुन सिंहपर आरूढ़
बीसभुजाओंमें नानाप्रकारके आयुधधारे नवदुर्गा सहित
कुमारीस्वरूप भगवती प्रकटभई औ बड़े पराक्रमी प्रचण्ड
ब्रह्माजी के वरदानसे गर्वित बड़ेअधर्मी औ अब्रह्मण्य वे
दैत्य भी वहांहीं आये उनमें इन्द्रमारी गुरुकेशी प्रलम्ब

नरकारिष्ट पुलोमा शरभ शम्बर दुन्दुभि इल्वल नमुचि भौम वातापि धेनुक कलि मायाव्रत बलबन्धु कैटभ कालजित् राहु पौंड्र आदि दैत्य मुख्यथे येसब प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी अनेकप्रकार के शस्त्र अस्त्र औ ध्वजा धारणकिये अनेक भांतिके बाहनों पर चढ़थे उनके आगे पणव भेरी गोमुख शंख डमरू डिंडिमआदि बाजेबजतेथे वे सब दैत्य आयकर युद्धके बीच शर शूल परिघ पट्टिश शक्ति तोमर कुन्त शतघ्नी गदा मुद्गर आदि नानाप्रकारके आयुधोंकी वृष्टि भगवतीके ऊपर करनेलगे तब भगवती क्रोधसे प्रज्वलितहो दैत्योंका संहार करनेलगी औ उनके ध्वज आदिचिह्न बलात्कारसे हरकर देवताओंको दियेक्षण मात्रमेंही अनन्तदैत्योंका क्षयकिया औ रक्तासुरको कण्ठसे पकड़ भूमिपर गिराय त्रिशूलसे उसका हृदय विदारणकर दिया शेषदैत्य भयसे पलायन करगये इसभांति देवताओंने जयपाया पीछे छत्रपुरमें आय भगवतीका बड़ा उत्सवकिया औ तोरणको बड़े २ ध्वजों से अलंकृत किया देवताओंने नवमीके दिन जयपाया औ उत्सवकिया इसलिये और भी जोराजानवमीकाउपवासकर भगवतीका उत्सवकरें औध्वजचढ़ावें वे अवश्यही जयपावें इतनासुनराजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र नवमीव्रतका क्याविधानहै उसका आप वर्णनकरें तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज पौषशुक्लनवमीको स्नानकर पूजनके लिये अपने हाथसे पुष्पलावे औ सिंहवाहिनी कुमारी भगवतीका पूजनकरै औ अनेकप्रकारके ध्वज भगवतीके आगे स्थापन कर मालतीपुष्प धूप दीप नैवेद्य पशुबलि सुरा मांस माला

वस्त्र दधि चन्दन और भी बिना अग्नि सिद्ध अनेकप्रकार के भक्ष्य भोज्य भगवतीको निवेदनकर (रुद्रांभगवतीं कृष्णांग्रहनक्षत्रमालिनीम् । प्रपन्नोहंशिवांरात्रिंसर्वशत्रु क्षयंकरीम्) यह मन्त्र पढ़े पीछे कुमारी औ भगवती के भक्त ब्राह्मणों को भोजनकराय क्षमापन करावै उपवासकरै अथवा भक्तिसे एक भक्तहीकरै इसभांति जो पुरुष नवमी का उपवासकर ध्वजोंसे भगवतीका पूजनकरै उनको चोर अग्नि जल राजा शत्रुआदिका भयनहीं होता इसनवमी को भगवती का विजय भयाहै इसलिये यह नवमी भगवती को अति प्रियहै जो भक्तिसे नवमी को भगवती का पूजनकर ध्वजारोपण करै वह सबसुखभोग अन्तमें वीरलोकको जाताहै ॥

॥ पचपनवां अध्याय ॥

उल्का नवमी का विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज आश्विनशुक्ल नवमीको स्नान कर देवता औ पितरों का तर्पणकर गन्ध पुष्प धूप नैवेद्य मांस मत्स्य सुरा आसव आदि से भैरव प्रिया चामुण्डाका पूजनकर हाथजोड़ नम्रहो (महिषघ्नि महामायेचामुंडेमुंडमालिनि । द्रव्यमारोग्यविजयंदेहिदेवि नमोस्तुते) पीछे सातपांच अथवा एक कुमारी को भोजन कराय नील कंचुक भूषण वस्त्र दक्षिणा देकर सन्तुष्टकरै श्रद्धासे भगवती प्रसन्न होती है यह वीरानुशासनहै पीछे अभ्युक्षणकर गोवरका चौकालगाय उसपर आसन विछाय आसनपर आप वैठे औ सन्मुख पात्रधरकर जो कुछ भोजन सिद्धहोय सब परोसलेवैपीछे एक मुट्ठी तृण औ आठ

सूखे पत्र लेकर अग्निसे प्रज्वलितकर भोजन करनेलगे जबतक वह अग्नि प्रज्वलितरहै तावत्कालमें भोजनकरै अग्नि शांतहोतेही आचमनकर चामुंडाका हृदयमें ध्यान करताहुआ प्रसन्नता पूर्वक गृह कृत्यकरै इसप्रकार प्रति मासव्रतकर बर्ष समाप्त होनेपर कुमारी पूजनकर उनको बस्त्र भूषण भोजनआदिदेकर क्षमापन करवै औ ब्राह्मण को सुबर्ण औ गौ देवै इसबिधिसे जो पुरुष नवमी ब्रतकरैं उनको शत्रु अग्नि राजा चोर भूत प्रेत पिशाच आदिका भय नहींहोता युद्धके बीच शस्त्र नहीं लगते औ सब संकटोंमें चामुंडा उनकी रक्षाकरती है इस उल्कानवमी ब्रतके करनेहारे पुरुष औ स्त्री उल्काकी भांति तेजस्वी होजाते हैं॥

छप्पनवां अध्याय॥

दशावतार ब्रतका विधान औ फल॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज सत्ययुगके आदि में भृगुऋषिभये उनकी भार्य्या बड़ी पतिव्रताथी जिसकानाम दिव्याथा भृगुभी उससे अत्यन्त प्रसन्नरहते थे एकसमय अपने अग्निहोत्र आदि अपनी भार्य्या को सौंप आप संजीवनी विद्याके लिये हिमालयके उत्तरभागमेंजाय तप करनेलगे औ शिवजी का आराधन कर उन से संजीवनी विद्याप्राय दैत्यराज को सदा विजयी किया चाहतेथे इसी अवसर में गरुड़पर चढ़ विष्णुभगवान् वहां आय दैत्यों का बध करनेलगे औ क्षणमात्रमें दैत्यों का संहार किया तब भृगुकी भार्य्या भगवान् को शाप देनेकेलिये उद्यतहुई उसकेमुखसे शापनिकलनाही चाहताथाकि विष्णुभगवान् ने चक्रसे उसका भी शिर भुट्टासा उड़ादिया इतनेमें भृगु

मुनिभी संजीवनी विद्यापाय वहांआये तो देखा कि सबदैत्य औ ब्राह्मणीभी मारीगई तबक्रोधकर विष्णुभगवान्को शाप दिया कि तुम दशबार भूमिपर जन्मलो इतनाकह श्रीकृष्ण भगवान्बोले कि हेमहाराज भृगुमुनिके शापसे औ जगत्की रक्षाके लिये हमबार२अवतारलेते हैं जो मनुष्यभक्तिसे हमारा अर्चनकरते हैं वे अवश्यस्वर्गगामी होतेहैं राजायुधिष्ठिरकहतेहैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र आपअबदशावतार ब्रतका विधानवर्णनकीजिये तबश्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज भाद्रपदकी शुक्लदशमीको नंदीआदिमें स्नान औ तर्पणकरघरआय दोमूठी धान्यचूर्णलेकर घृतमें पकावे इस भांति दशबर्षतक प्रतिबर्षकरै औ दशोंवर्षोंमें क्रमसे पूरी घेवर कसार गणक सोमलकखण्डवेष्टित कसार अर्क पुष्प कर्णवेष्ट औ मंडक येपक्वान्न उसचूर्णके बनाय भगवान्को नैवेद्यलगावे औरभी बहुतसा पक्वान्नबनाय आधा भगवान्को नैवेद्यलगाय चौथाई ब्राह्मणको दे औ चौथाईमें से आप भोजनकरै प्रथम गन्ध पुष्प धूप दीप आदि उपचारोंकरके (मत्स्यंकूर्मंवराहंच नरसिंहंत्रिविक्रमम् । रामं रामंचरामंचबुद्धंचैवसकल्किनम् ॥ गतोस्मिशरणंदेवं हरिं नारायणम्प्रभुम् । प्रणतोस्मिजगन्नाथंसमेविष्णुःप्रसीदतु॥ छिनत्तुवैष्णवींमायां भक्त्याप्रीतोजनार्दनः । श्वेतद्वीपंनयत्वस्मान्मयात्माविनिवेदितः) इन मन्त्रोंसे दशावतार का पूजनकरै इसप्रकार जो इसव्रतकोकरै वह भगवान्के अनुग्रहसेजन्ममरणसेछुटै औ सर्वदाविष्णुलोकमें निवासकरै॥

सत्तावनवां अध्याय॥

तारकद्वादशीका विधान फल औ एकराजा की कथा॥

राजायुधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णचन्द्र मैं बड़ापातकी हूं भीष्म द्रोण आदि महात्माओं का मैंने बध किया अब कृपाकर आप ऐसाकोई उपाय बतावैं जिससे इसपापसे छुटजाऊं राजाका यह बचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज बिदर्भ देशमें एकबड़ाप्रतापी यशोध्वज नामराजा था एक दिन उसने मृगयामें मृगके धोखे एक तपस्वी ब्राह्मणको वाणसे मारदिया उसपापसे वह मरनेके अनन्तर रौरव नरकमें पड़ा वहां बहुत कालतक यातना भोगकर भयंकर सर्प बना सर्पयोनिमें भी उसने क्रोधबशहो एक ब्राह्मणको डसा डसतेही वह ब्राह्मण मरगया औ मरते २ एकलाठी सांपको भी मारी जिससे उसके भी प्राणगये फिर वह सिंह बना औ जीवोंका संहार करनेलगा वह सिंह एक राजा के हाथसे मारा गया फिर वह ब्याघ्र हुआ औ एक बैश्य को उसने बनमेंमारा फिर वह मार्जारहुआ औ चाण्डाल बालकोंके हाथ मारागया पांचवें जन्ममें समुद्रके बीच अति भयंकरमकर बना औ एकस्त्री वहां स्नानकरने आईथी उसको खैंचलेगया औ धीवरोंने उसको मारा छठे जन्ममें पिशाचहुआ औ अनेक मनुष्योंके प्राणहरे तब एकसिद्धने अपनी शक्तिसे उसका संहार किया सातवेंजन्ममें अतिक्रूर ब्रह्मराक्षसहुआ औ गुर्जरदेशको शून्यकरनेलगा तब भी सदासराजाने ब्रह्मास्त्रसे उसका संहारकिया फिर आठवें जन्ममें ब्याघ्र बना औ एकनराहने उसको मारा नवें जन्ममें जम्बुक हुआ

औ श्मशानमें मांसके लिये गयाथा वहां चिता ऊपर गिरने से दग्धहोगया दशवेंजन्ममें गृध्रहुआ उसको भी एक चाण्डाल ने बाणसे मारा ग्यारहवें जन्ममें बड़ा क्रूरकर्मा औ भयंकर स्वरूप चण्डाल हुआ औ कई मनुष्य उसने मारे इसलिये राजाने उसको शूलीपर चढ़ाया बारहवें जन्ममें बिलवासी जीव बना औ एक व्याधकेहाथमरा उसने पूर्वकालमें तारक द्वादशी का व्रतकियाथा इसलिये इन पापयोनियोंसे जल्दी २ छुटतागया फिर वह विदर्भ देशका धर्मात्मा राजा हुआ औ भक्तिसे तारक द्वादशीका व्रत कियाकरता उसके प्रभाव से बहुतकाल निष्कण्टक राज्य कर स्वर्गको गया इतनासुन राजायुधिष्ठिर पूछतेभये कि हे श्रीकृष्णचन्द्र इसव्रतको क्योंकर करनाचाहिये औ पतिकी आज्ञापाय नारी इसव्रतको किस विधानसे करै यह आप कहैं। तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराजन् एकसमय द्वारकामें हमारेपास बड़ेतपस्वी मुद्गलमुनिआये हमने उनको पूजनकर आसनपर बैठाया औ यमादर्शन नामव्रतका विधानउनसे पूछा तबमुद्गलमुनि कहनेलगे कि हे श्रीकृष्णचन्द्र एकसमय यमदूत आये औ उनने दण्ड से हमारे मस्तकमें ताड़नकिया तब हमको मूर्छाहोगई यमदूतभी अंगुष्ठमात्र पुरुष हमारे देहसे निकाल दृढ़ बांध कर यमलोकको लेगये वहां देखा कि अति भयंकर कृष्णवर्ण यमराज तो मध्यमें सिंहासनके ऊपरबैठे हैं औ उनके चारोंओर वात पित्त श्लेष्म श्वास कासज्वर स्फोटक लूता भगन्दर यक्ष्मा कुष्ठ मूत्रकृच्छ्र प्रमेह विशूचिकाआदि बड़े बड़े रोग देहधारे हाथ जोड़े खड़े हैं अनेक प्रकारके

अस्त्र लिये दूत औ हजारों राक्षस विद्यमान हैं चित्रगुप्त आदि लेखक सन्मुखबैठे सबके पाप पुण्यका हिसाब कर रहे हैं यह अद्भुत रचना यमराजकी सभाकी देख हम को बहुत त्रासहुआ यमराजने हमको देख दूतोंसे कहा कि रे मूर्खो इस मुनिको क्यों ले आये कौंडिन्यनगरमें भीष्मक का पुत्र मुद्गलनाम क्षत्रियहै उसको लाओ औ इसब्राह्मण को छोड़दो तब हमको उनने छोड़दिया हमनेभी यमराज को प्रणामकिया औ यमादर्शन ब्रतका विधान उनसे पूछा उननेभी प्रसन्नहो जो हमको कहा वह विधान हम आप को कहते हैं इतना कह मुद्गलमुनि ने ब्रतविधान हम को कहा वहीं हम आपके आगे वर्णन करते हैं मार्गशुक्ल पक्ष की द्वादशी को नदीआदिमें स्नानकर तर्पण पूजनआदि कर हवनकरै सूर्यास्त पर्यंत हवनकरतारहै सूर्यास्त होते-ही गोबरका मण्डल भूमिपरबनाय उसमें चन्दनका ध्रुव लिख चांदी अथवा ताम्रके अर्घ्यपात्र में मोती पुष्प फल अक्षत गन्ध सुवर्ण जल रखकर मस्तक तक उस पात्रको उठाय दोनों जानु भूमिपर टेक पूर्वाभिमुख होकर सहस्र-शीर्षा मन्त्रकरके अर्घ देवै पीछे ब्राह्मण भोजनकरावै बा-रह महीनोंमें क्रमसे खंडखाद्य सोमलकातिल तंडुल गुड़के अपूप मोदक खंडवेष्टक सत्तू अपूप मधुशीर्ष पायस घृत पूर औ कसार ब्राह्मणोंको भोजनकरावै पीछे क्षमापनकर मौनसे आपभी भोजनकरै इसबिधिसे जो पुरुषअथवास्त्री ब्रतकरैं वे अप्सरा गन्धर्व यक्षविद्याधर आदि करके से-वित सूर्य्यके समान भासमान विमानमें बैठ नक्षत्रलोकको जाते हैं वहां अयुतकल्प पर्यंत निवासकर विष्णुलोक में

प्राप्त होते हैं यह व्रत सती श्री उमा, सीता, राज्ञी, दमयंती, रुक्मिणी, सत्यभामा, मेनका, रम्भा, उर्वशीआदि नारियों ने कियाहै इस व्रतके करनेसे अनेक जन्मोंमें किये पातक कट जाते हैं ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

अरण्य द्वादशी का विधान औ फल ॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप अरण्य द्वादशीका विधान वर्णनकरैं तब श्रीकृष्णभगवान् कथन करनेलगे कि हे महाराज यहव्रत रामचन्द्रजी की आज्ञासे वनमें सीताने कियाथा औ अनेकप्रकारके भक्ष्य भोज्यआदिसे मुनिपत्नियोंको सन्तुष्टकिया उसव्रतका हम विधान कहते हैं आप प्रीतिसे श्रवणकरैं मार्गशुक्ल एकादशीको प्रभातही स्नानकर भगवान्का भक्तिसे पूजनकरै उपवास रक्खै औ रात्रिको जागरणकरै दूसरेदिन स्नान आदिकर वेद वेदांग जाननेहारे ब्राह्मणोंको उपवनमें लेजाय भोजनकराय पंचगव्यप्राशनकर आपभी भोजनकरै इसविधिसे एकवर्ष व्रतकरै औ माघ, श्रावण, औ कार्त्तिक में मण्डक घृतपूर खण्डवेष्टक अनेकप्रकारके शाक औ व्यंजन अपूप मोदक सोमलक आदि भांति २ के पक्कान्न और नानाविधि शीतलभोजनसे ब्राह्मणोंको तृप्तकरै औ कर्पूर, इलायची, चतुर्जात, कस्तूरी आदि से सुगन्धित पानक उनको पिलावै सुन्दर फलेफूले वृक्षयुक्तवन में जलाशयके तटपर ब्राह्मण भोजनकरावै वनमें रहनेहारेमुनि उनकी पत्नी औ गृहस्थ औरभी ब्राह्मणको भोजनकरावै वासुदेव, जनार्दन, दामोदर, मधुसूदन, पद्मनाभ, विष्णु

गोवर्द्धन, त्रिविक्रम, श्रीधर, हृषीकेश, पुण्डरीकाक्ष, औ वराह इननमस्कारान्त नामोंसे एक२ ब्राह्मणका पूजनकर भोजन कराय बस्त्र औ दक्षिणादेकर (विष्णुर्मेप्रीयताम्) यह वाक्य कहै पीछे अपने सुहृत् सम्बन्धी औ बान्धवों सहित आपभी वहां भोजनकरै इसप्रकार जो अरण्य द्वादशी ब्रतकरै वह अपने सबपरिवार सहित दिव्यविमान में बैठ श्वेतद्वीपको जाताहै जहांके सब निवासी चतुर्भुज श्यामदेह पीतवस्त्र शंख चक्र गदा पद्मधारे कौस्तुभमणि औ मुकुट कुण्डलआदि भूषणोंसे शोभित औ लक्ष्मीकरके आलिंगित साक्षात् विष्णुस्वरूपहीहैं वहां प्रलयपर्यंत निवासकर मुक्ति पाताहै औ जो नारी इस ब्रतकोकरैं वेभी संसारके सबसुखभोग भगवान्के अनुग्रहसे मोक्षपातीहैं॥

उनसठवां अध्याय ॥

रोहिणी ब्रतका विधान औ फल॥

राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र बर्षाकालमें जब आकाश नीलमेघोंसे आच्छादितहोजाता मयूरचारों ओर मीठी २ बोली बोलनेलगते हैं दर्दुर कोलाहल मचाते हैं उस समय कुलस्त्री किसको अर्घ्यदेती हैं क्या ब्रत करती हैं औ किस तिथिको करती हैं यह आप वर्णनकरैं यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज श्रावण मासके कृष्णपक्षकी एकादशी को शुचि होकर सर्वौषधि जलसे स्नान करै पीछे उड़दके आटेकी एकसौ डिडिरिका औ पांच मोदक बनाय सब सामग्री लेकर उत्तम जलाशयपरजावै वहां गोबरका मण्डलबनाय उसमें रोहिणी सहित चन्द्रका गन्ध पुष्प धूप दीप अक्षत

नैवेद्य आदिसे पूजनकर कटिप्रमाण जलमें प्रवेशकर मन में रोहिणी औ चन्द्रका ध्यानकरता हुआ वे डिंडिरिका जलके मत्स्यआदि जीवोंको खिलावै पीछे जलके बाहिर आकर चन्द्रमाको अर्घ्यदेकर ब्राह्मणको भोजनकराय दक्षिणादेवैं दशवर्ष पर्यन्त इसविधिसे जो स्त्री अथवा पुरुष व्रतकरै वह धनधान्य पुत्रपौत्रआदि सब पदार्थपाय बहुत काल संसार सुख भोगकर ब्रह्मलोक को जाता है वहां से विष्णुपुरमें औ वहांसे भी शिवलोकमें प्राप्तहोताहै ॥

साठवां अध्याय ॥

अवियोग व्रतका विधान औ फल ॥

राजायुधिष्ठिरपूछतेहैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र अब आपयह वर्णनकरें कि अवियोगव्रत किसविधिसे कियाजाताहै तब श्रीकृष्णभगवान्कहनेलगे कि महाराज अवियोगव्रत सब व्रतोंमें उत्तमहै अबहमउसका विधान कहते हैं आप श्रवण कीजिये। भाद्रशुक्ल द्वादशी को प्रभात उठ जलाशय पर जाकर स्नान करै औ उसके तटपर हरे गोबर से मण्डल लिखकर उसमें लक्ष्मी सहित विष्णु गौरी सहित शिव सावित्री सहित ब्रह्मा औ संज्ञा सहित सूर्य्यनारायण का सब उपचारों से इन मन्त्रोंकरके पूजनकरै (सहस्रमूर्द्धापुरुषः पद्मनाभोजनार्दनः। व्यासर्षिःकपिलाचार्यो भगवान् पुरुषोत्तमः १ नारायणोमधुरिपुर्विष्णुर्दामोदरोहरिः। महा वराहोगोविन्दः केशवोगरुडध्वजः २ कृष्णःसपुण्डरीकाक्षो विश्वरूपस्त्रिविक्रमः। उपेन्द्रोवामनोरामो वैकुण्ठोमाधवो ध्रुवः ३ वासुदेवोहृषीकेशः कृष्णःसंकर्षणोच्युतः। अनिरुद्धोमहायोगी प्रद्युम्नोनन्तएवच ४ नित्यंसमेस्तुसुप्रीतः स

श्रीकः केशिसूदनः ५) उमापतिर्नीलकण्ठः स्थाणुःशम्भुर्भगाक्षिहृत्। ईशानोभैरवःशूली त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकृत् १ कपर्दीशोमहालिंगी महाकालोवृषध्वजः। शिवःशंभुर्महादेवोरुद्रोभूतमहेश्वरः २ ममास्त्विहहिपार्वत्या शङ्करःशङ्करश्चिरम् ३) ब्रह्माशम्भुःप्रभुःस्रष्टा पुष्करीप्रपितामहः। हिरण्यगर्भोवेदज्ञः परमेष्ठीप्रजापतिः १ वेधाश्चतुर्मुखःकर्त्ता स्वयम्भुःकमलासनः। विरंचिःपद्मयोनिश्च ममास्तुवरदःप्रभुः २) आदित्योभास्करोभानुः सूर्योर्कःसवितःरविः। मार्तण्डोमण्डलीज्योति रग्निरश्मिर्महेश्वरः १ प्रभाकरःसप्तसप्तिः पारगस्तरणिःखगः। दिवाकरोदिनकरःसहस्रांशुर्मरीचिमान् २ पद्मप्रबोधनःपूषा किरणीमेरुभूषणः। निक्षुभावल्लभोदेवः सुप्रीतोस्तुसदामम ३) लक्ष्मीःश्रीःसम्पदापद्मा मेविभूतिर्हरिप्रिया। पार्वतीललितागौरी उमाशंकरवल्लभा। गायत्रीविकृतिःसृष्टिः सावित्रीमेवरप्रदा। राज्ञीभानुमतीसंज्ञा निक्षुभाभास्करप्रिया) इनमन्त्रोंसे चारोंमिथुनोंका पूजनकर ब्राह्मण भोजनकराय अनेकप्रकारके दानकर आपभी भोजनकरें जो इस व्रतको करै उसको कभी इष्ट वियोग नहीं होता औ बहुत काल संसार सुख भोग कर क्रमसे ब्रह्मा विष्णु शिव औ सूर्य्यलोकमें निवासकरमोक्ष पाताहै औ जो नारी इस व्रतकोकरै वह भी सब अभीष्ट फल पावै॥

इकसठवां अध्याय॥

गोवत्सद्वादशी का विधान, फल गौओंका माहात्म्य, मुनियों औ राजा उत्तानपादकी कथा॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अठारह

अक्षौहिणी सेना मेरेनिमित्त मारीगई उस पापसे मेरे चित्त
में बड़ी ग्लानि रहतीहै उनके बीच ब्राह्मण क्षत्रिय आदि
सबथे भीष्म द्रोण कर्ण शल्य दुर्य्योधन आदि सब मार-
दिये उनके बधका पाप दिनरात मेरे मर्मोंको छेदनकरता
है अब आप कोई ऐसा उपायकहैं कि इसपापका क्षालन
होय तब श्रीकृष्ण भगवान् ने कहा कि हे महाराज आप
गोवत्सद्वादशीका ब्रतकरैं उससे सब पातक कटजाते हैं।
राजाने पूछा कि उस ब्रतका क्याविधान है औ कब किया
जाताहै तब श्रीकृष्णभगवान् फिर कहनेलगे कि पारियात्र
पर्वतपर लडुलिकाश्रमके बीच जिसका नाम ठंढागिरि है
वहां एक बड़ा बनहै जिसमें अनेक मुनियों के आश्रम हैं
चारों ओर सिंह, हाथी, हरिण, बानर, शश, वराह आदि
जीव विहार करतेहैं औ वृक्षोंकरके वह बन अतिही रम-
णीयहै वहां सत्ययुगमें बहुतसे मुनि लडुलिकाश्रमके बीच
तपकरनेलगे बहुतकाल उनको तपकरतेहुआ तब शिवजी
वृद्धब्राह्मणका रूपधार लाठी हाथमें लिये कांपतेहुये वहां
आये औ पार्वतीजीनेभी जैसा रूपबनाया वहसुनो समुद्र
मथनके समय पांचगौ उत्पन्नभई हैं नन्दा, सुभद्रा, सुरभी,
सुशीला औ नन्दिनी ये पांचों शुक्लवर्ण हैं औ देवताओं
की तृप्ति तथा लोकोपकारके लिये उत्पन्न भई हैं इनपांचों
धेनुओंको जमदग्नि भरद्वाज वशिष्ठ गौतम औ शिवजी
ने ग्रहणकिया गोमय गोमूत्र गोरोचन दुग्ध दही औ घृत
ये छः पवित्र पदार्थ गौओं के शरीर से उत्पन्न होते हैं
गोबर से बिल्ववृक्ष उत्पन्नभया जो शिवजी को अति
प्रियहै पद्महस्तालक्ष्मी बिल्ववृक्षमें निवासकरती है इससे

उसको श्रीवृक्ष कहते हैं उत्पल औ कमलों के बीज भी गोबरसेही उत्पन्न भये हैं गोरोचन मंगल्य पवित्र औ सर्वकार्य साधक होता है गोमूत्र से अति सुगन्धगुग्गुल उत्पन्नहुआ जिसका धूप सब देवताओंको औ विशेषकर के शिवजीको प्रियहै दुग्धसे अनेक उत्तम पदार्थों की उत्पत्तिहै दही मंगलप्रदहै औ घृतसे सबदेवताओं को तृप्त करनेहारा अमृत उत्पन्नहुआ एक कुलकेही ब्राह्मणरूप औ गोरूपदोभाग होगये हैं ब्राह्मणोंमें मन्त्ररहते हैं औ गौओंमें हवि गौओंसेयज्ञ प्रवृत्तहोतेहैं सब देवता गौओं में निवासकरते हैं षडंगसहित वेद गौओंसे उत्पन्नभयेहैं गौओंके शृंगमूलमेंब्रह्मा औ विष्णुस्थितहैं शृंगाग्रमें स्थावर जंगम सबतीर्थोंका निवासहै शिरमें महादेव ललाटमें पार्वती नासावंसमें कार्त्तिकेय नासिकाके दोनों पुटोंमें कंबल अश्वतर नाग कानों में अश्विनीकुमार नेत्रोंमें सूर्य्य चन्द्र दन्तोंमें सबवायु जिह्वामेंवरुण हुंकारमें सरस्वतीदोनों पार्श्वमें यम औ कुबेरदोनों सन्ध्यागलकंबलमें ग्रीवामें इन्द्र आठबसु पार्ष्णिमें जंघाओंमें चतुष्पाद्धर्म खुरोंके मध्यमें गन्धर्व खुराग्रोंमें नागखुरोंके पृष्ठभागमें सम्पूर्णराक्षसपुच्छ में आदित्य गोमूत्रमें साक्षात् गङ्गागोबरमें यमुना रोमकूपों में तेंतीसकोटि देवताउदरमें पर्वतसमुद्र आदिसहितभूमि चारोंस्तनोंमें चारसागर दुग्धधारामें विद्युत्सहित मेघ श्वेत रक्त पीत कृष्ण गौओंकेइनचारवर्णोंमें ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद औ अथर्ववेदस्थितहैं इसभांति सर्व देवमयी औ सर्वतीर्थमयी धेनुहैं। यहमनमें विचार पार्वतीजीनेनंदिनीधेनुका रूपधारा जिसके सब अंग अति सुन्दर शुक्ल

वर्ण औ चारोंस्तनों से दुग्धटपकरहाहै कार्तिकेय बछड़ा बने महादेवजी भी वृद्ध ब्राह्मणका रूपधारे उनदोनों गौ औ बछड़ाकोलेकर जहां मुनि तपकरते थे वहां पहुंचे औ कुलपति भृगुमुनि के पासजाय कहाकि दो दिन आप इस हमारी गौको अपनेपास रहने देवैं इतनेमें हम समीपवर्ती तीर्थ की यात्रा करआवैं भृगुजीने कहा बहुतअच्छा औ वह धेनु मुनियोंके हवाले करदी महादेवजीने वहांसे अन्तर्द्धान होकर सिंहका रूपधारण किया कि जिसके बक्र कठोर औ अतितीक्ष्ण नखजलतेहुये पिंगलवर्ण नेत्रबड़ी२ औ तीखी दाढ़ लम्बी पूंछ औ लटकतीहुई लालजिह्वा इसप्रकार अतिकराल रूपधार आश्रमके समीप आय गर्जने लगे वह घोर शब्द सुन गौ औ बछड़ा त्रासको प्राप्त भये सब मुनियों में हाहाकार मचगया गौ बछड़ा भयसे भगे औ सिंह भी पीछेलगा उनसबके चरणोंके चिह्न आज तक भी शिलाके ऊपर देखपड़तेहैं जिनको सबदेवतापूजतेहैं औ तीर्थसहित शिवलिंगभी वहांहै जिसलिंगके स्पर्श से गोहत्यानिवृत्त होती है औ जंबू मार्गमें स्थित उस शिव तीर्थमें स्नानकरनेसे ब्रह्महत्या आदिमहापातककटजातेहैं वे मुनि भी यह वृत्तान्तदेख प्राणत्यागकरनेको उद्यतभये तबदेखा कि नतो कहीं सिंहहै औ न बछड़े समेतगौ है सब मुनि यहआश्चर्य देखबिचारही कररहेथे कि पार्वतीसहित वृषपर आरूढ़त्रिशूलहाथमेंलिये कार्तिकेय, गणपतिनन्दी महाकाल, भृङ्गी, वीरभद्र, घंटाकर्ण, चामुंडा, मातृका, भूतयक्ष राक्षसगुह्यकदेव, दानवगन्धर्व आदिसहित श्रीमहादेवजी, वहांप्रकटभये मुनिउनका दर्शन पायकृतार्थभये औ भक्तिसे

उनका पूजन किया औ गोरूपिणी श्रीपार्वतीका सपत्नीकमु-
नियोंने प्रीतिसे अर्चन किया उसीदिनसे कार्तिककृष्णपक्ष में
गोवत्सद्वादशी व्रतका प्रचारहुआहै उत्तानपाद इसव्रतको
सदाकिया करताथा उसका हमवृत्तांत कहते हैं उत्तानपाद
एकराजाथा उसकेरुची औ श्रुध्नीनामदो रानीथीं श्रुध्नीके
ध्रुवनामक पुत्र उत्पन्न भया कुछ दिनके अनन्तर श्रुध्नीने
रुचीसे कहा कि हे सखि तू इसबालकका पालन कर औ मैं
पतिकी शुश्रूषामें रहूँगी रुचीने यहबात अंगीकारकरली
औ श्रुध्नी पतिकी सेवामें तत्परभई एकदिन ईर्षासे रुचीने
उसबालकको मारखण्ड २ कर रांधलिया औ भोजनकेसमय
राजाके आगे वही मांसपरोसा राजा भोजन कियाही चा-
हताथा कि वह बालक जीकर उठ खड़ाहुआ तब सबको
आश्चर्यभया कि यह क्या मायाहै रुचीने श्रुध्नी से पूछा
कि यह तेरे किसपुण्यका प्रभावहै कि सातबार इसबालक
को ईर्षासे मैं बधकरचुकी परन्तु यह फिर जीउठताहै क्या
तू मृतसंजीविनी बिद्या जानतीहै कि कोई मणिमन्त्र औ-
षधी आदि तेरे पासहै जिससे यह बालकनहीं मरनेपाता
मुझको सत्यबता दे तब श्रुध्नीने कहा कि हे रुचि मैंने गो-
वत्स द्वादशी व्रतकियाहै उसीका यह सबप्रभावहै इसव्रत
के करनेसे कभी पुत्रसे बियोग नहीं होता तूभी इसव्रतको
करै तो बड़े प्रतापी औ दीर्घजीवी पुत्रपावै यह सपत्नीका
बचन सुन रुची भी व्रतकरनेलगी औ पुत्र धन सुख आ-
रोग्य आदि सब पाये औ अन्तमें पति सहित ध्रुवस्थान
में प्राप्तभई ब्रह्माजीने भी उनका बहुत सत्कार किया अ-
द्यापि ध्रुव उत्तानपाद औ रुचिका आकाशमें दर्शनहोताहै

जो उनके दर्शनकरै वह सब पापोंसे मुक्तहोय इतनी कथा सुन राजा युधिष्ठिरने गोवत्स द्वादशी व्रतका विधान पूछा तब श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज कार्तिककृष्ण द्वादशी को स्त्री अथवा पुरुष संकल्पकर नदीमें स्नानकरै औ एकभक्त व्रत रखकर मध्याह्नके समय सुशीला औ सवत्सा कपिला गौ का गन्ध पुष्प जल अक्षत दीप अनेक प्रकारके नैवेद्य उड़दके बड़े और भी जो पदार्थ गौ को प्रियहों उनसे गौ औ बछड़े का (ओंमातारुद्राणांदुहिता वसूनांस्वसादित्यानाममृतस्यनाभिः प्रणवोचंचिकितुषेज नायनागामदितिंवशिष्ठयानमोगोभ्योनमःस्वाहा) इसमन्त्रकरके पूजनकरै पीछे हाथजोड़ (ॐसर्वदेवमयेदेवि सुभद्रेभद्रवत्सले । मातर्ममाभिलषितं सफलंकुरुनन्दिनि) यह मन्त्रपढ़ क्षमापन कराय गौको तृप्तिपूर्वक भोजनकरावै औ आपभी तवे औ स्थालीमें सिद्धहुआ भोजन न खाय औ ब्रह्मचर्यसे भूमिपर शयनकरै इस व्रतका करने हारा गौके शरीरमें जितने रोमहैं उतने दिव्यवर्ष गोलोक में निवास करताहै। मेरु पृष्ठके ऊपर अष्ट दिक्पालों की पुरी हैं औ इन सबके ऊपर गोलोक है जो कार्तिक कृष्ण द्वादशीको गन्ध पुष्प वटकआदिसे सवत्सा गौका भक्तिसे पूजन करते हैं वे कभी सन्तानका कष्टनहींपाते औ संसार का सबसुख भोग गोलोक को जाते हैं ॥

बासठवां अध्याय ॥

गोविंदशयन व्रतका विधान चातुर्मास्यके नियम औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम गोविन्दशयन व्रतका विधान औ चातुर्मास्यके नियम कहें

हैं मिथुनके सूर्यमें विष्णुभगवान्‌को शयनकरावै औ तुला के सूर्यमें फिर उठावै आषाढ़ शुक्लपक्षकी एकादशी को उपवासकर शंख चक्र गदा पद्मधारे पीताम्बर पहिने ऐसी अतिसुलक्षण भगवान्‌की प्रतिमाको पलंगकेऊपर शय्या बिछाय तकियेलगाय उसपर सुलावै प्रथम मूर्त्तिका पूजन कर इतिहास औ पुराण जाननेद्वारा प्रतिमाको पंचामृत औ शुद्धजलसे स्नानकराय उत्तमगन्धसे लेपनकर भूषण वस्त्र पहिनाय पुष्प धूप औ अनेकप्रकारके नैवेद्य निवेदनकर (सुप्तेत्वयिजगन्नाथ जगत्सुप्तंभवेदिदम्। विबुद्धेत्वयिबुध्ये व जगत्सर्वंचराचरम्)इसमन्त्रसे प्रतिमाको शयन करावै प्रतिमा शयनसे उत्थापन पर्यन्त चार महीने स्त्री अथवा पुरुष भक्तिसे नियम ग्रहणकरै उन नियमोंको फलसहित हम कथन करते हैं गुड़को त्यागै तो मधुरस्वरहोय तैला-भ्यंगनकरै तो सुन्दर शरीरहोय कटुतैलछोड़े तो शत्रुनाश होय महुआकातेल त्यागदे तो अतुल सौभाग्यपावै पुष्प आदि उपभोग त्यागनेसे स्वर्गमें जाय विद्याधर बने जो योगाभ्यासकरै वह ब्रह्मपदपावै कटुतिक्त मधुर क्षार आदि रसका त्याग करै वह कभी वैरूप्य औ दौर्गन्ध्य को प्राप्त न होय ताम्बूल त्यागनेसे भोगी औ मधुरस्वरहोय घृतके त्यागसे स्निग्ध औ लावण्ययुक्त शरीरहोय फल त्यागसे पुत्र औ बुद्धिकी प्राप्तिहोय शाक न खाय तो भोगी होय अपक्व भोजनकरै तो अमलहोय पादाभ्यंग औ शिरोभ्यंग त्यागै तो धनकास्वामी यक्षहोय दही दूध छोड़े तो गोलोक में प्राप्तहोय स्थालीपाकत्यागनेसे स्वर्ग को जाय कड़ाही तवेका पदार्थ त्यागे तो बहुत सन्ततिहोय भूमिपर सोवै

तो चतुरहोय मधु मांसत्यागे तो सदामुनि औ सदायोगी होय सुराका त्यागकरनेसे आरोग्य प्राप्तहोय इत्यादि और भी वस्तुओंके परित्यागसे धर्म होताहै एकान्तर उपवास करनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्तिहोतीहै नख औ केशोंके धारण करनेसे नित्य गंगास्नानकाफल प्राप्तहोताहै जो मौनरक्खै उसकी आज्ञा कभी भंग न होय भूमिपर रखकर भोजन करै तो भूमिपतिहोय (ओंनमोनारायणाय) इस मंत्र को जपै तो अनशन व्रतका फलपावै विष्णुभगवान्‌के चरणों में प्रणामकरै तौ गोदानका फलहोय चरणोंके स्पर्शकरने से कृतकृत्य होजाय जो नित्य विष्णु भगवान् के सम्मुख लोगोंको पुराणसुनावै औ धर्मोपदेश करै वह साक्षात् वेद-व्यासहीहै औ अन्तमें विष्णुलोकको जाय पुष्प माला से भगवान्‌का पूजनकरै तो विष्णुलोकमें प्राप्तहोय विष्णुभग-वान्‌के आगे प्रेक्षणक अर्थात् नाचतमाशा करावै तो अ-प्सरालोकमें निवास करै तीर्थमें स्नानकरै तो निर्मल देह पावै पंचगव्य प्राशन करनेसे चान्द्रायणका फलहोय एक भक्तकरनेसे अग्निहोत्रका फलमिलै नित्य गंगास्नानकरै तो नरक नदेखै पात्रका त्यागकरै तो पुष्कर स्नानका फल होय पत्रोंमें जो भोजनकरै तो कुरुक्षेत्रका फलपावै शिला पर भोजनकरै तो प्रयागस्नानका फलहोय इत्यादि व्रतोंसे भगवान् प्रसन्नहोतेहैं चारोंवर्णोंमें विवाह यज्ञोपवीत चूडा करणआदि शुभक्रिया विष्णुशयनमें न करै और भी गृह-प्रवेश देवप्रतिष्ठा आदि न करै इसीप्रकार दक्षिणायन में औ मलमासमेंभी शुभकृत्य नकरै भाद्रशुक्ल एकादशीको भगवान् करवटलेते हैं उसदिनभी महापूजा औ बड़ाउत्सव

हैं मिथुनके सूर्यमें विष्णुभगवान्को शयनकरावै औ तुला के सूर्य्यमें फिर उठावै आषाढ़ शुक्लपक्षकी एकादशी को उपवासकर शंख चक्र गदा पद्मधारे पीताम्बर पहिने ऐसी अतिसुलक्षण भगवान्की प्रतिमाको पलंगकेऊपर शय्या बिछाय तकियेलगाय उसपर सुलावै प्रथम मृत्तिका पूजन कर इतिहास औ पुराण जाननेद्वारा प्रतिमाको पंचामृत औ शुद्धजलसे स्नानकराय उत्तमगन्धसे लेपनकर भूषण वस्त्र पहिनाय पुष्प धूप औ अनेकप्रकारके नैवेद्य निवेदनकर (सुप्तेत्वयिजगन्नाथ जगत्सुप्तंभवेदद्रुतम्। विबुद्धेत्वयिबुध्येत जगत्सर्वंचराचरम्) इसमन्त्रसे प्रतिमाको शयन करावै प्रतिमा शयनसे उत्थापन पर्य्यन्त चार महीने स्त्री अथवा पुरुष भक्तिसे नियम ग्रहणकरै उन नियमोंको फलसहित हम कथन करते हैं गुडको त्यागै तो मधुरस्वरहोय तैला-भ्यंगनकरै तो सुन्दर शरीरहोय कटुतैलछोड़ै तो शत्रुनाश होय महुआकातेल त्यागदे तो अतुल सौभाग्यपावै पुष्प आदि उपभोग त्यागनेसे स्वर्गमें जाय विद्याधर बनै जो योगाभ्यासकरै वह ब्रह्मपदपावै कटुतिक्त मधुर क्षार आदि रसका त्याग करै वह कभी वैरूप्य औ दौर्गन्ध्य को प्राप्त न होय ताम्बूल त्यागनेसे भोगी औ मधुरस्वरहोय घृतके त्यागसे स्निग्ध औ लावण्ययुक्त शरीरहोय फल त्यागसे पुत्र औ बुद्धिकी प्राप्तिहोय शाक न खाय तो भोगी होय अपक्व भोजनकरै तो अमलहोय पादाभ्यंग औ शिरोभ्यंग त्यागै तो धनकास्वामी यक्षहोय दही दूध छोड़ै तो गो लोक में प्राप्तहोय स्थालीपाकत्यागनेसे स्वर्ग को जाय कड़ाही तवेका पदार्थ त्यागे तो बहुत सन्ततिहोय भूमिपर सोवै

तो चतुरहोय मधु मांसत्यागै तो सदामुनि औ सदायोगी होय सुराका त्यागकरनेसे आरोग्य प्राप्तहोय इत्यादि और भी बस्तुओंके परित्यागसे धर्म होताहै एकान्तर उपवास करनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्तिहोतीहै नख औ केशोंके धारण करनेसे नित्य गंगास्नानकाफल प्राप्तहोताहै जो मौनरक्खै उसकी आज्ञा कभी भंग न होय भूमिपर रखकर भोजन करै तो भूमिपतिहोय (ओंनमोनारायणाय) इस मंत्र को जपै तो अनशन ब्रतका फलपावै विष्णुभगवान्के चरणों में प्रणामकरै तौ गोदानका फलहोय चरणोंके स्पर्शकरने से कृतकृत्य होजाय जो नित्य विष्णु भगवान् के सम्मुख लोगोंको पुराणसुनावै औ धर्मोपदेश करै वह साक्षात् वेद-व्यासहीहै औ अन्तमें विष्णुलोकको जाय पुष्प माला से भगवान्का पूजनकरै तो विष्णुलोकमें प्राप्तहोय विष्णुभग-वान्के आगे प्रेक्षणक अर्थात् नाचतमाशा करावै तो अ-प्सरालोकमें निवास करै तीर्थमें स्नानकरै तो निर्मल देह पावै पंचगव्य प्राशन करनेसे चान्द्रायणका फलहोय एक भक्तकरनेसे अग्निहोत्रका फलमिलै नित्य गंगास्नानकरै तो नरक नदेखै पात्रका त्यागकरै तो पुष्कर स्नानका फल होय पत्रोंमें जो भोजनकरै तो कुरुक्षेत्रका फलपावै शिला पर भोजनकरै तो प्रयागस्नानका फलहोय इत्यादि ब्रतोंसे भगवान् प्रसन्नहोतेहैं चारोंवर्णोंमें बिबाह यज्ञोपवीत चूड़ा करणआदि शुभक्रिया विष्णुशयनमें न करै और भी गृह-प्रवेश देवप्रतिष्ठा आदि न करै इसीप्रकार दक्षिणायन में औ मलमासमेंभी शुभकृत्य नकरै भाद्रशुक्ल एकादशीको भगवान् करवटलेते हैं उसदिन भी महापूजा औ बड़ाउत्सव

करै अब हम इसशयनका कारणकहते हैं पूर्वकालमें योग निद्राने बड़ा तपकर हमको प्रसन्नकिया औ यह वर मांगा कि आपके शरीरमें मेरानिवासहोय तबहमने बिचारकिया किहमारे बक्षस्स्थलमें लक्ष्मीका निवासहै चारोंभुजाओंमें शंख चक्र आदि रहते हैं नाभिके नीचे गरुड़ने रोकरक्खा है शिरपर मुकुट औ कानोंमें कुण्डलरहतेहैं केवल नेत्रखा-लीहैं यह बिचार हमने योगनिद्राको कहा कि चारमहीने हमारेनेत्रोंमें निवासकियाकर उसदिनसे चारमहीने हमारे लोचनोंमें प्रसन्नहोकर योगनिद्रा निवास करतीहै औ हम शेषशय्यापरसोते हैं चातुर्मास्यमें जो पुरुषअथवा स्त्री ब्रत औ नियमसेरहै वहअवश्यही विष्णुलोकमेंनिवासकरै फिर कार्त्तिकशुक्ल एकादशीको(इदंविष्णुर्विचक्रमे) इसमन्त्रकर के विष्णुभगवान्‌को शयनसे उठावै उस दिन से सब शुभ कृत्योंकी प्रवृत्तिहोतीहै शयनसे भगवान् कोउठाय पहिली भांति महापूजनकर रथपर बैठाय नगरमें घुमावै औ दीप मालाआदि बड़ा उत्सवकरै जहां २ भगवान् का रथजाय वह भूमि स्वर्गसमान होजाती है रात्रिको देवालय में जा-गरणकरै द्वादशी के दिन प्रभातही स्नानकर भगवान्‌का अर्चनकरै औ घृतयुक्त तिलोंका हवनकर घृत क्षीर दही मोदक आदि पदार्थ ब्राह्मणोंको भोजनकरावै ग्यारह आठ पांच दो अथवाएकही ब्राह्मणका गन्ध पुष्प आदिसे पूजन कर श्राद्धोक्त बिधिसे नित्य भोजनकरावै और भी ब्राह्मणों को भोजनदक्षिणा देकर सन्तुष्टकरै औ चातुर्मास्यमें जिस वस्तुका त्याग कियाहोय वह भी ब्राह्मणको देवै पीछे आप भी भोजन करै इसविधि से जो ब्रत करै वह विष्णुलोकमें

प्राप्त होता है जिसका यह चातुर्मास्यव्रत निर्विघ्न पूराहो जाय वह कृतकृत्यहोजाता है औ अन्तमें बिष्णुलोक के जाताहै जो भगवान्का यह उत्सवकरै औ इसका अनुमोदनकरै वह बिष्णुलोकमें प्राप्तहोय जो सुनै ध्यानकरै स्तुति करै हवनकरै परन्तु हृदयमें भगवान्की भक्तिहोय वह अवश्यही बिष्णुलोकमें निवास करै जिसदिन भगवान् सोवै औ जिसदिन उठैं उसदिन जो उपवास औ भगवान् का अर्चन करै वह सद्गति पावै इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

सबप्रकारकी शांतिकरने हारा नीराजन बिधान ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकालमें प्रजापालनाम एक राजाथा उसने अपनी प्रजाके सब उपद्रव शांतहोनेकेलिये शांतिकरी जिससे उसकी प्रजाअत्यंत सुखको प्राप्त भई इसीसे राजाका नाम प्रजापाल पड़ा औ ज्वर आदि सब बड़े २ रोग राजाके आधीन रहतेथे उसीसमय बड़ा प्रतापीरावणनाम लंकाका राजाथासबदेवता जिसकी आज्ञा मानतेथे अखण्ड चन्द्रमण्डल छत्ररूप बनताथा इन्द्र जिसका सेनापतिथा वायुझाड़ू देता बरुण जलछिड़कता कुबेर धनकी रक्षाकरता यम शत्रुओंका संहार करता मनु मन्त्रके समय सेवामें आता मेघलेपनकरते औ वृक्ष पुष्पवृष्टि करते ब्रह्मासहित सप्तऋषि शांति आदिमें तत्पर रहते नाग पहरादेते गन्धर्व गाते औ अप्सरानाचतींगंगा आदि नदी स्नान करातीं अग्नि रसोई बनाता बिश्वकर्मा अन्न का संस्कार करता मयासुरसब शिल्पके काम बनाता सबराजा नगरकी रक्षा करते सूर्य्यभगवान् प्रकाश करते

एकदिन रावणनेपूछा कि हमारी सेवामें जो नहीं आयाहो उसको शीघ्रलाओ तब एकराक्षसहाथजोड़कर बोला कि महाराजाधिराज काकुत्स्थ मान्धाता धुंधुमार नल अर्जुन ययाति नहुष भीम बिदूरथ आदिसबराजा आपकी सेवामें स्थितहैं केवलएक प्रजापालनाम राजायहांनहीं आता यह सुनतेही रावणने अतिकोपाकिया औ दूतसेकहा कि जल्दी जाकर प्रजापालसेकहो कि शीघ्रहमारी सेवामें आवेनहीं तो चन्द्रहासनामक खड्गसे उसका मुंड रुण्डसे अलग करदेंगे यह आज्ञापातेही धूम्राक्षनाम दूत राजाप्रजापालके पास गयाराजाको देखा कि दिनरात प्रजाकी रक्षामेंतत्परहै दूतने रावणकासंदेश सुनाया राजाने सुनकर दूतको तो बिसर्जन किया औ ज्वरको बुलाकरकहा कि तुमरावणके पासजाओ यहआज्ञापातेही लंकामें रावणके पासज्वरपहुंचा औ रावण के शरीरको आक्रांतकिया रावण अति ब्याकुलभया औ जानाकि यह सब काम प्रजापालका है तबज्वरसे कहा कि प्रजापाल अपने स्थानमेंहीरहै हमको उसकी सेवासे कुछ प्रयोजननहीं इतना कहतेही ज्वरनेउसको छोड़दिया उस प्रजापालने सबरोग औ उपद्रव शान्तकरनेहारी शान्ति ब- नाईहै उसका हमविधान कहते हैं हरिप्रबोधहके अनन्तर कार्त्तिक शुक्लद्वादशीको प्रदोषके समय अरणीसे अग्नि उ- त्पन्नकर वर्धमान वृक्षकी समिधाओंसे प्रज्वालितकर शांति मन्त्रोंसे हवनकरै औ विष्णुभगवान्की प्रतिमाबनाय गन्ध पुष्प धूपदीप नैवेद्य वस्त्र भूषण रत्न लाजा इक्षुआदिसे पू- जनकरलक्ष्मी ब्रह्मा चण्डिका आदित्यशंकरगौरीकार्त्तिकेय गणपति ग्रह पितर नागआदि देवताओंका पूजनकर सब

का नीराजन अर्थात् आरतीकरै गौ भैंसआदि कोभी भूषितकर उनका नीराजनकरै पीछे घण्टादि वाद्योंके शब्द से उनको त्रासदेवै जिससे वे दौड़ैं उनकेपीछे २ बछड़े औ उनके पीछे रक्तपीत श्वेत वस्त्र पहिनेगोपाल दौड़ते फिरैं इसभांति कोलाहल कर घोड़े हाथीआदि का पूजन औ नीराजनकरै फिर राजा सिंहासनपरबैठे औ पुरोहित मंत्री भृत्य आदि चारोंओर बैठैं औ राज्यके चिह्न छत्र चामर आदिका पूजन औ नीराजनकरके राजाके ऊपरधारै पीछे सर्व शुभलक्षण युक्त वेश्या अथवा और कोई सौभाग्यवती स्त्री राजाका नीराजनकरै ब्राह्मण वेदघोषकरैं अनेक प्रकारके बाजे बजैं पीछे चतुरंगिणी सेनाका नीराजनकरै यह शान्ति जिसदेशमें करीजाय वहां रोग औ दुर्भिक्षका भय नहींहोता प्रजाका आयुष् बढ़ताहै यह शान्ति प्रजा के कल्याणकेअर्थ प्रतिवर्ष करनीचाहिये जोराजा भगवान् का नीराजनकर गौ ब्राह्मण हाथी घोड़े सेना औ राज चिह्नों का नीराजनकरैं वे संसार में सुखभोग उत्तम लोक पाते हैं यह राजा प्रजापालका वाक्य है ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

भीष्मपंचक का विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराज अब हम भीष्मपंचकका विधान कहतेहैं भीष्मपंचक का व्रत बशिष्ठ भृगु गर्गआदि मुनि ब्रह्मचर्य जप होमआदिमें तत्पर ब्राह्मण सत्यशौच में परायण क्षत्रिय शीरभद्र आदि स्वधर्मनिष्ठ वैश्य औ अनेक उत्तम शूद्रभी करते हैं जिसने यह व्रत किया उसने सब उत्तम कर्मकिये इस भीष्मपं

मांस मैथुन असत्यभाषण शिकारखेलना आदिका त्याग करै पांचदिन विष्णु भगवान् का पूजनकर शाकाहारकरै भर्त्ताकी आज्ञा से सुखप्राप्तिके लिये स्त्री इस व्रतको करैं विधवानारी पुत्रपौत्रोंकी वृद्धिकेलिये अथवा मोक्षकेअर्थ इस व्रतको करै नित्यस्नान दान वैश्वदेव औ विष्णुभगवानूका पूजनकरै कार्त्तिक शुक्लएकादशीसे व्रतकरके पूर्णमासी को अतिभयंकर जिसकामुख खड्ग हाथमेंलिये विकृतस्वरूप ऐसी पापपुरुषकी लोहकी मूर्त्तिबनाय काले तिलोंके ढेरपर स्थापनकर सुवर्णके कुण्डल औ कृष्णवस्त्र उसको पहिनाय करवीर पुष्प आदिसे धर्मराजके नामोंकरके भक्तिपूर्वक उसका पूजनकर हाथोंमेंपुष्पांजलि लेकर (यदन्यजन्मनिकृतामिहजन्मनिवापुनः । पापप्रशममायातु तत्पापंतवपूजनात्) यह मन्त्रपढ़ पुष्पांजलि देकरब्राह्मणको वह प्रतिमा देवै औ(कृष्णोमेप्रीयताम्) यहवाक्य कहै पीछे नीलोत्पलके समानश्यामवर्ण चतुर्भुज चतुर्दंष्ट्र अष्टपाद त्रिनेत्र शङ्कुकर्ण व्याघ्रचर्म ओढ़े जटाधारे सर्पों के भूषण पहिने ऐसेरुद्रका ध्यानकरै शरशय्यापर सोयेहुये भीष्मने यह व्रत कहाहै जो इस व्रतकोकरै वह ब्रह्महत्या गोहत्याआदि बड़े२पापोंसे छुटजाताहै औ सद्गतिपाताहै॥

पैंसठवां अध्याय ॥

मल्लद्वादशी का विधान ॥

राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र मल्लद्वादशीका क्या विधानहै आपउसका वर्णनकरैं यहसुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हेमहाराज हमारी अवस्था जब आठवर्षकीथी उससमययमुनाके तटपर भाण्डीरबटकेनीचे हमको सिंहा-

सनपर बैठाय सुभद्रभद्र सुभद्रांग इन्द्रभट आदि बड़े२मल्ल गोप औ गोपाली पालिका धन्या धनिष्ठा राधा अनुराधा सोमा तारका आदि गोपी इनसबने दही दुग्ध सुरा मांस आदिसे कंसके बधकेअर्थ हमारा पूजनकिया औ तीनसौ मल्लोंने भक्तिसे पूजनकर मल्लयुद्धकिया औ हमारीप्रसन्न-ताके लिये बड़ा उत्सव किया परस्पर बड़ेप्रेमसे मिले उस दिनसे यह मल्लद्वादशी प्रसिद्ध हुई इस ब्रतको कार्त्तिक शुक्ल द्वादशी से आरम्भकरै औ प्रतिमास क्रमसे केशव, नारायण,माधव,गोबिन्द,विष्णु,मधुसूदन,त्रिविक्रम,बामन श्रीधर,हृषीकेश, पद्मनाभ, दामोदर इन नामोंसे गन्धपुष्प धूपदीप गीतवाद्य मल्लयुद्ध घृत दुग्ध दानआदिसे हमारा पूजनकरै औ (कृष्णोमेप्रीयताम्) यह वाक्य कहै यह विधि इसब्रतकीहै बाल्यावस्थामें यह उत्सव हमने किया है इसलिये यह द्वादशी हमको बहुत प्रियहै मल्लोंने इस ब्रतकी प्रवृत्तिकरी इसलिये इसकानाम मल्लद्वादशीहै औ अरण्यमेंकरी इसलिये अरण्यद्वादशी कहाई जिन गोपों ने हमारा पूजन किया उनके भैंस गौ आदिकी बहुतबृद्धि भई औरभी जो पुरुष इस ब्रतको करैं वे आरोग्य बल ऐश्वर्य औ सद्गति पावैं ॥

छियासठवां अध्याय ॥

बामन द्वादशीका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णकहते हैं कि हे महाराज पूर्वकालमें विदर्भदेश का स्वामी दमयन्तीका पिता बड़ा पराक्रमी औ प्रजापा-लक राजा भीमभयाहै एकदिन तीर्थयात्रा करतेहुये ब्रह्मा जी के पुत्र पुलस्त्यमुनि वहां आये राजा ने उनका बड़ा

सत्कार किया अपने हाथसे आसन बिछाय बैठाया पाद्य अर्घ्यआदिसे उनका पूजनकिया पुलस्त्यमुनिने भी प्रसन्न हो राजासे कुशलपूछा तब राजाने अतिबिनयसे कहा कि महाराज जहां आपका आगमन होय वहां सबप्रकारका कुशलहीहोता है इसभांति अनेकप्रकारकी स्नेहकी बातें राजा औ मुनिपरस्पर करतेरहे कुछकालके अनन्तर राजा ने पूछा कि महाराज संसारकेजीव दिन रात अनेकप्रकार के दुःखोंसे पीड़ित रहते हैं गर्भबास बड़ादुःखहै पीछे अनेक प्रकारके रोग सताते हैं यह दशा जीवोंकी देख मुझे अत्यन्त त्रासहोताहै ऐसा कौन उपायहै जिससे थोड़ापरिश्रम करकेही जीव संसारके दुःखोंसे छूटें ऐसा उपवास दानआदि जो कर्महोय उसका आप वर्णनकरें यह राजा का वचनसुन पुलस्त्यमुनि कहनेलगे कि हे राजन् माघ शुक्ल द्वादशीका उपवासकरे तो मनुष्य कभी दुःख भागी न होय राजाने ब्रतका बिधान पूछा तब पुलस्त्यमुनिबोले कि हे राजन् यहब्रत अतिगुप्तहै तुम्हारे स्नेहसे हम कहते हैं अदीक्षितको यह व्रत कभी मतकहना जितेन्द्रिय धर्म निष्ठ औ विष्णुभक्त पुरुष इसब्रतके अधिकारी हैं ब्रह्महा गुरुघाती गोघ्न स्त्रीघातक कृतघ्न मित्रद्रोही आदि बड़े २ पातकी भी इस ब्रतके करनेसे निष्पाप होजाते हैं पहिले अच्छे मुहूर्त्तमें दशहाथ लम्बा चौड़ा मण्डप बनाय उसके मध्यमें पांचहाथ विस्तारकी वेदीबनावै वेदीके ऊपर पांच रंगका मण्डल बनावै औ आठ अथवा चारकुण्ड बनावै मण्डलके मध्यमें कर्णिकाकेबीच पश्चिमाभिमुख भगवान् की मूर्त्तिस्थापनकर गन्ध पुष्प धूप दीप भांति २ के नैवेद्यों

से शास्त्रोक्त बिधिकरके वेदवेत्ता ब्राह्मणोंसे पूजनकरावै औ नारायणके सन्मुख दो स्तम्भ गाड़कर उनके ऊपर एक आड़ाकाष्ठ रख उसमें एक दृढ़ छांका बांधै उसपर सुवर्ण चांदी ताम्र अथवा मृत्तिकाका शतच्छिद्र कलश उत्तम जलसे पूर्णकररक्खै पलाशकी समिधा तिल घृत क्षीर औ शमीपत्रोंसे हवन करै औ ईशान कोण में ग्रहों का पीठ-स्थापनकर ग्रहपूजाकरै औ अपनी २ दिशामें इन्द्र यम वरुण औ कुबेरका पूजनकरै पीछे शुक्लवस्त्र चन्दनसेभूषित दर्भपाणि यजमानको पीठके ऊपर पूर्वोक्त कलशके नीचे ब्राह्मण बैठावैं यजमानभी एकाग्रचित्त होकर (नमस्तेदेवदेवेश नमस्तेभुवनेश्वर । ब्रतेनानेनमांत्राहि परमात्मन्नमोस्तुते) यह मन्त्रपढ़ै औ कलशसे गिरती जलधाराको मस्तकपर धारै उससमय चारों दिशाओंमें ब्राह्मण हवन करैं शान्तिका ध्याय विष्णुसूक्त पुण्याहवाचन आदिपढ़ैं अनेकप्रकारके बाजे बजैं इसभांति बड़ा उत्सव करावै हरिवंश सौवर्णिक उपाख्यान औ महाभारत आदिका यजमान श्रवणकरै इसभांति सम्पूर्णरात्रि व्यतीत करै औ ब्राह्मण हवनकरते रहैं इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज विष्णुभगवान् वामनरूपधार बलिकेपास गये औ कहा कि हे दैत्येन्द्र तीनपद भूमि आप हमकोदेवैं तो हम रहनेको कुटी बनालेवैं बलिनेकहा कि तुमको जहां चाहिये तीनिपद भूमिग्रहणकरो तब बामन वृद्धिको प्राप्त भये दोनोंपैर भूमिपररख इन्द्रादिकोंकेलोक नाभिसे आवृत्तकर ब्रह्मलोकमें शिर लगाया एक पाद क्रममें इतना दबाया औ दूसरा चरण उसपर रक्खा औ तीसरे पाद-

न्यासको स्थाननहीं मिला तब देवदुन्दुभि बजानेलगे सब देवता औ सिद्ध प्रशंसा करनेलगे इसभांति त्रिभुवनको वशमेंकर बलिको भगवान्ने कहा कि तुम पातालमें निवासकरो औ यथेच्छभोग भोगो औ वर्त्तमान इन्द्रके अनन्तर तुम इन्द्र बनोगे बलिभी भगवान्की आज्ञा पाय प्रणामकर पातालको गया भगवान्ने दिक्पालोंको कहा कि अपने २ स्थानको जाओ इसभांति जगत्कार्य करके भगवान् अन्तर्द्धानभये यहसब कृत्य भगवान्ने एकादशी को किया था इसलिये यह तिथि भगवान् को अतिप्रिय है फाल्गुणशुक्कमें पुष्ययुक्तएकादशीहोय तो विजयाएकादशी कहातीहै उसदिन उपवासकर रात्रिके समय सुवर्णके काष्ठ के अथवा बांसके पात्रमेंकमण्डलु छत्रखड़ाऊँ मालाआदि स्थापनकर श्वेतवस्त्रसेढकै पीछेगन्ध पुष्प धूप दीप अनेक प्रकारके नैवेद्य तिल जौ गोधूमआदिसे भगवान्का पूजन कर मृगचर्म औ सुवर्णसहित वहपात्र भगवान्को निवेदन करै मन्त्रसे पूजाकरै तो शतगुण भक्तिसेकरै तो लक्षगुण औ मंत्रसहितभक्तिसे पूजनकरै तो कोटिगुण फलहोताहै रात्रि को जागरणकर बड़ाउत्सवकरै प्रभातहोतेही स्नानकरभगवान्का पूजनकर सबसामग्री ब्राह्मणकोदेकर (वामनोदान कर्त्ता च द्रव्यस्थोवामनस्स्वयम्। वामनोस्यप्रतिग्राहीतेनवै वामनेनमः) यह मन्त्र पढ़ै ब्राह्मण भी दानलेकर (वामनः प्रतिगृह्णातिवामनोनोददातिच। वामनस्तारकोनित्यंते नवैवामनेनमः) यह मन्त्रपढ़ै (मत्स्यंकूर्मंवराहंच नरसिंहंतुवामनम्। रामंरामंचकृष्णंचतेनवैवामनेनमः) इसमंत्र से पूजनकरै ओंमत्स्यायनमः जानुनोः। वराहायनमः गुह्ये।

नरसिंहायनमः नाभ्याम्। वामनायनमः उरसि। रामायनमः भुजयोः। रामायनमःमुखे। कृष्णायनमः शिरसि। इस प्रकार न्यासकरै इसप्रकार एकादशीको उपवास औ पूजनकर द्वादशीको ब्राह्मण भोजनकराय आपभी भोजन करै इसव्रतको करनेहारा एक मन्वन्तर पर्यन्त विष्णुलोक में निवास करता है फिर भूमिपर जन्म लेकर धन धान्य हाथी घोड़े पुत्रपौत्र रूप सौभाग्य आरोग्य दीर्घायुष् आदि पाकर चक्रवर्त्ती राजाहोताहै यह एकादशी का विधान है इसीप्रकार श्रवणयुक्त द्वादशीकोभी व्रतपूजनआदिकरै तो सबफलपावै उसदिन ब्राह्मणोंको दही भात भोजन करावै यह बामन द्वादशीका व्रत सगरकाकुत्स्थ धुंधुमार गाधि आदिबड़े २ राजा औ वशिष्ठआदि मुनियोंने कियाहै इस व्रतके करनेसे अणिमादि सिद्धि औ सद्गतिप्राप्तहोती है॥

सतसठवां अध्याय॥

प्राप्तिद्वादशी का विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम पौष कृष्ण द्वादशी ब्रतका विधान कहतेहैं जिसके करनेसे सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं उसदिन उपवासकर विष्णुभगवान् का पूजनकरै औ पाखंडोंके साथ संभाषण आदि न करै प्रतिमास भगवान् का पूजनकरै पौषसे लेकर ज्येष्ठपर्यंत क्रमसे पुंडरीकाक्ष माधव विश्वरूप पुरुषोत्तम अच्युत औ जयका पूजनकरै इस छःमहीनेके प्रथम पारणमें तिलोंसे स्नान औ तिल प्राशनकरै आषाढादि छः महीनों में भी इनहीं नामों से भगवान्का पूजनकरै परन्तु पंचगव्य का प्राशन औ स्नानकरै एकादशीको उपवास कर द्वादशीको

इस विधानसे पूजन कर ब्राह्मण भोजन करावै इसभांति एकबर्ष ब्रतकर सवत्सा गो सुवर्ण वस्त्र पात्र आसन आदि बस्तु ब्राह्मणको देवै औ (केशवःप्रीयताम्) यह वाक्य कहै। भक्तिसे जो इस संप्राप्ति द्वादशीका ब्रतकरै वह पापों से मुक्त होय सब कामनापावै इस माहात्म्यको जो श्रवण करै उसके भी सब मनोरथ सिद्धहोतेहैं जो विष्णुभक्त इस प्राप्तिद्वादशी ब्रतको श्रद्धासेकरैं वे संसार सुख भोग अन्त में स्वर्ग में बास करते हैं॥

अड़सठवां अध्याय॥

गोविंदद्वादशी का विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराज अब हम गोविंद द्वादशीका विधान कहते हैं जिसके करने से अभीष्ट फल मिलता है पौष शुक्लद्वादशीको उपवास कर पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे गोविंदका पूजनकर इसी नामका उच्चारण करतारहै पाखंडोंसे संभाषण न करै फिर ब्राह्मणोंको यथाशक्ति दक्षिणा देकर आपभी गोमूत्र गोमय दधि अथवा गोदुग्ध प्राशनकरै दूसरे दिन स्नानकर उसीबिधिसे गोविंदका पूजनकर ब्राह्मण भोजन कराय आप भी गोदुग्ध आदि भोजनकरै औ गौको तृप्तिपूर्वक भोजन करावै इसी प्रकार प्रतिमास ब्रत करै वर्ष समाप्त होनेपर सुवर्ण की गोविन्द प्रतिमा बनाय पुष्प धूपदीप माला वस्त्र भूषण नैवेद्य आदि से पूजनकर (गोविंदोगोपतिर्गोप्ताश्रीकांतः श्रीधरोहरिः। सर्वकामफलावाप्तिं करोतुममकेशवः) यह मंत्र पढ़ सवत्सागौ सहित ब्राह्मणोंको देवै औ (गोविंदः प्रीयताम्) यह वाक्य कहै उसदिन भी गौवों को भोजन

देवै सुवर्ण शृंग रौप्य खुर उत्तम वृष प्रतिमास ब्राह्मणको देने से जो फल प्राप्त होताहै वही इस व्रतके करने से भी होताहै औ इस गोविंद द्वादशी व्रतका करनेहारा सबसुख भोग गोलोक को जाताहै ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

अखंडद्वादशी व्रतका विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्ण उपवास आदि में जो कुछ वैकल्य अर्थात् किसी बातकी न्यूनता रहजाय तो क्या फल होताहै यह आप कथनकरैं यह सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हेमहाराज उपवास आदिके प्रभाव से राज्य उत्तमरूप आदि पाकर वैकल्य दोषसे काणे अंधे कुबड़े होजातेहैं वैकल्य दोषसेही स्त्री पुरुषोंमें बियोग होता है उत्तम कुलमें जन्म पाकर भी दुःशील होते हैं धनाढ्य होकर भी धनका भोग और दान नहीं करसक्के उत्तमरूप युक्तहोकर वस्त्र भूषणोंसे हीन रहतेहैं इसलिये यज्ञमें व्रतमें और भी धर्मकृत्योंमें बिकलता न होनेदेवै राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जो कदाचित् उपवास आदि में वैकल्य होभीजाय तो कौन कर्म करना चाहिये जिससे वह अच्छिद्रहोय तब श्री कृष्णचन्द्र बोले कि हे महाराज अखंड द्वादशीका व्रतकरने से सबप्रकारका वैकल्य दोष दूरहोताहै उसका आप विधानसुनैं मार्गशीर्ष शुक्लद्वादशी को स्नानकर भगवान्का भक्तिसे पूजनकरै उपवास रक्खै औ नारायण का स्मरण करतारहै पूजाके अन्तमें (सप्त जन्मनियत्किंचिन्मयाखंडंव्रतंकृतम् । भगवंस्त्वत्प्रसादेन तदखंडमिहास्तुमे । यथाऽखंडंजगत्सर्वंत्वमेवपुरुषोत्तम ।

तथाखिलान्यखंडानिव्रतमानिममसंतुवै) यह मंत्र पढ़ै औ चारमहीने में प्रथम पारणकर ब्राह्मणोंको तिल पात्र देवै औ भगवान्का पूजनकरै चैत्रादि चारमासके अनंतर दूसरा पारणकरै औ शर्करापात्र ब्राह्मणोंको देवै श्रावणादि चारमासके अनंतर तीसरा पारणकर नारायणका पूजन करै औ घृत पूर्ण पात्र ब्राह्मणोंको देवै सुवर्ण चांदी ताम्र मृत्तिका अथवा पलाशपत्रके पात्र अपने वित्तानुसार बनाकरदेवै पीछे जितेन्द्रिय बारह ब्राह्मणों को क्षीर भोजन कराय वस्त्र भूषण औ दक्षिणा देकर क्षमापन करावे औ आचार्य्यकाभी विधिपूर्वक पूजनकरै इसविधिसे जो अखंड द्वादशीका व्रतकरै उसके सातजन्मतक कियेहुये व्रत संपूर्ण फलदायक होजातेहैं इसलिये स्त्री पुरुषोंको व्रतोंका वैकल्य दोष निवृत्तकरनेके लिये अवश्य यह व्रत करनाचाहिये॥

सत्तरवां अध्याय॥

मनोरथ द्वादशी का विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज स्त्री अथवा पुरुष फाल्गुन शुक्ल एकादशी को उपवासकर भगवान्का पूजनकरै औ उठते बैठते हरिका स्मरण करतारहै द्वादशी के दिन प्रभातही स्नान कर भगवान् का अर्चनकरै औ घृतसे हवनकर ब्राह्मणको दक्षिणादेकर (पातालसंस्था वसुधायमासाद्यमनोरथम् । अवापवासुदेवोसौप्रददातुमनोरथान् ॥ भ्रष्टराज्यश्चदेवेन्द्रो यमभ्यर्च्यजगत्पतिम् । मनोरथमवाप्तोमेसददातुमनोरथान्) यह मन्त्र पढ़ै पीछे मौनसे हविष्य भोजन करै चारमासमें प्रथम पारण करै रक्तपुष्प तुलसी गुग्गुल धूप औ हविष्यान्न नैवेद्यसे भग-

वानूका अर्चनकर गोशृंगजल प्राशनकरै फिर आषाढ़ आदि चारमासके अनन्तर चमेली के पुष्प रालधूप औ शाल्यन्नका नैवेद्य इनसे भगवान् का यजनकर कुशोदक प्राशनकरै कार्त्तिकादि चारमासके अनन्तर तीसरा पारण करै जपापुष्प उत्तमधूप औ कषाय रसयुक्त नैवेद्यसे नारायणका पूजनकर गोमूत्रप्राशनकरै प्रतिमास ब्राह्मणों को दक्षिणादेवै वित्तशाठ्य न करै बर्षके अन्तमें एककर्ष सुवर्ण की नारायण प्रतिमा बनाय पूजनकर दोवस्त्र औ दक्षिणा सहित ब्राह्मण को देवै औ बारह ब्राह्मणोंको भोजन कराय प्रत्येकको जलका घट छतरी जूता वस्त्र औ दक्षिणा देवै इस द्वादशी ब्रतके करनेसे सब मनोरथ सिद्धहोते हैं इसीसे इसका नाम मनोरथ द्वादशीहै इन्द्रने त्रैलोक्यका राज्य इसीब्रतसे पायाहै औरभी कोई जिस अभिलाषसे इस ब्रतको करै वह उसको अवश्यपावै पुत्र धन आरोग्य आदि सब पदार्थ इसब्रतसे मिलते हैं कभी इष्ट वियोग नहीं होता स्त्री औ शूद्रभी इस ब्रतको कर स्वर्गको जाते हैं औ लाखोंवर्ष वहाँ उत्तम भोग भोगकर अच्छे कुल में जन्म पाते हैं जो पुरुष भगवान् का पूजन नहींकरते गो ब्राह्मण की सेवा नहीं करते औ मनोरथ द्वादशी का ब्रत नहींकरते वे किसप्रकार अपना अभीष्ट फल पासक्ते हैं॥

इकहत्तरवां अध्याय॥

तिल द्वादशीका विधान औ फल॥

राजायुधिष्ठिरकहतेहैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र थोडेसेपरिश्रम से अथवा स्वल्पदान से सब पापकटजांय ऐसा कोई उपाय आपकहैं यहसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे

महाराजमाघकृष्ण द्वादशी को जब मूल अथवा पूर्वाषाढ़ नक्षत्रहोय तब एकादशी के दिन उपवासकर द्वादशीको श्रीकृष्णभगवान् का पूजनकरै ब्राह्मण को कृष्णातिल देवै औ आपभी स्नान प्राशन आदि कृष्णतिलोंसे करै औ (कृष्णोमेप्रीयताम्) यह वाक्य कहै इसप्रकार एक बर्ष ब्रतकर अन्तमें तिलोंसे पूर्ण कृष्णवर्णके कुंभ पक्वान्न छत्र जूता बस्त्र औ दक्षिणा बारह ब्राह्मणोंको देवै जितने उन तिलोंके बोनेसे तिल उत्पन्नहोयँ उतने हज़ार बर्ष इसब्रत का करनेहारा स्वर्गमें निवास करताहै औ किसी जन्ममें अन्ध बधिर कुष्ठी आदि नहींहोता सदा आरोग्य रहता है इसतिल दानसे बड़े २ पाप कटजाते हैं न इसब्रतमें बहुत परिश्रम औ न बहुत धनका ब्यय इसलिये अवश्य यह ब्रत करना चाहिये तिलोंसे स्नान करै तिल दानकरै औ तिलही भोजनकरै तो अवश्यही सद्गति पावै॥

बहत्तरवां अध्याय॥

एक वैश्यकी कथा औ सुकृत द्वादशी का बिधान॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ऐसा कौन कर्महै कि जिसके करनेसे संतापहोय औ ऐसा कौनहै जिसको करके सन्ताप न-होय यह आप बर्णनकरैं आप के बचनसुनते २ हमको तृप्ति नहींहोती यहसुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज आपनेजो पूछा उसका हम बर्णन करते हैं पूर्वकालमें विदिशा नगरीके बीच शीरभद्र नाम एक वैश्यथा वह पुत्र पौत्र कन्या स्त्री आदिमें ऐसा आसक्तथा कि दिनरात उनके भरण पोषणमें लगारहता कभी स्वप्नमें भी परलोक की चिन्तानहीं करता न्यायसे

अन्यायसे सब प्रकार धनका उपार्जन करता कभी दान हवन देवपूजन आदि कर्मका नामभी नहींलेता कुछकाल के अनन्तर वह वैश्य मृत्युवशभया औ वेत्रवती नदी के तटपर बड़ाप्रेतबना एकदिन ग्रीष्म ऋतुमें बिपीत नामक वेदवेत्ता ब्राह्मण ने उस प्रेतको देखा कि सूर्य किरणों से अत्यन्त सन्तप्त नदीके बालूमें लोटताहै सब अङ्गमें छाले पड़गये हैं तृषासे कण्ठ सूखता है औ जिह्वा लटकपड़ी है औ अति दुःखी हो चिल्लारहाहै यह उसकी दशादेख ब्राह्मणको बड़ीदया आई औ उसका वृत्तान्त पूछा तब वह प्रेत कहनेलगा कि हेब्राह्मण पूर्वजन्ममें परलोककेलियेकोई कर्म नहींकिया उससे अब दग्धहोरहाहूं धन घर खेत पुत्र स्त्री आदिकी चिन्तामें सदा आसक्तरहा कभी अपने हित का चिन्तन न किया इससे यह कष्ट भोगरहाहूँ यह काम किया औ यह करनाहै इसी चिन्तामें सब जन्मखोया उसका फल भोगताहूं लोभवश होकर शीत उष्ण सबसहे परन्तु धर्मके लिये किंचित्भी कष्ट न सहा उससे अब जलाजाताहूँ देवता पितर औ अतिथिका कभी मैंने पूजन आदि न किया उसीसे अब मुझे अन्न जल नहींमिलता अन्यायसे मैंने बहुत धन एकत्रकिया उसका उपभोग अब औरही करतेहोंगे यहशोच २ मुझे कलनहीं पड़ती घरमें आये ब्राह्मणका कभीमैंने पूजन न किया न देवार्चन कभी बनपड़ा केवल कुटुम्बका पोषणकिया उससे अब एकाकी दग्धहोताहूँ जिनकेलिये मैंने अनेक पापकिये वे सबतो इस समयसुखभोगतेहैं औ मैं एकाकी इसगरमरेतमें पड़ा जलताहूं पापका सञ्चय मैंनेकिया औ चैन औरोंने उड़ाया यह

विचार२ दिन रात मनहींमनमें जलाजाताहूँ औ बाहिरसे सूर्यकिरणोंकरके दग्धहोरहाहूँ परन्तु न तो भीतरशोकदग्ध करताहै न बाहर सूर्य यहकेवल मेरा पापही दो भागहोकर भीतरबाहरसे मुझे जलाताहै हेमुनीश्वर ऐसाभीकोईउपाय है कि जिससे इसदुर्गतिसे मेरा उद्धारहोय इस भांति शीरभद्रके अति दीनवचन सुन बिपीतमुनि बोले कि हे शीरभद्र दशजन्म पहिले तैंने द्वादशीका उपवास कियाहै उसके प्रभावसे यह बड़ाभारी तेरे पापका पहाड़ क्षय होगया है अब तू स्वल्पकालमेंहीं उत्तम गतिको प्राप्तहोगा वह द्वादशी ब्रत पापका क्षय औ पुण्ड का जयकरनेहाराहै इसीसे उस का नाम सुकृतद्वादशी है इस भांति शीरभद्र को आश्वासन कर बिपीतमुनि अपने आश्रम को गये औ शीरभद्र भी द्वादशी ब्रतके प्रभावसे थोड़े कालके अनन्तर मोक्षको प्राप्त भया इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज यह उपवासका प्रभावहै कि इतना पाप थोड़ेही कालमें क्षयहुआ इसलिये सदा मनुष्यको पुण्यके लिये यत्नकरनाचाहिये औ अपनेकल्याणके अर्थ उपवासआदि करते रहना चाहिये राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र पापोंसेअति दारुण नरक यातना भोगनी पड़ती है ऐसा कौन ब्रतहै जिससे सब पाप निवृत्त होयँ औ मोक्ष प्राप्तहोय उसका आपबर्णन करैं तब श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज फाल्गुन शुक्लएकादशीको उपवासकरै औ काम क्रोध लोभ दंभ मोह आदिका त्यागकर संसार की असारताका भाव न करताहुआ (औं नमोनारायणाय) इस मन्त्र का दिनभर स्मरण करतारहै इसीभांति द्वादशी

को भी करै प्रथम चारमासके पारणमें सुवर्ण चांदी ताम्र अथवा मृत्तिकाके पात्रोंमें यवभर कर ब्राह्मणोंको देवै आषाढ़ादि दूसरे पारण में घृतपात्र देवै और कार्त्तिकादि चारमास के पारणमें तिलपात्र ब्राह्मणों के अर्पण करै औ (नारायणनमस्तेस्तु जहिपापमशेषतः। अनेकजन्मजनितंबाल्ययौवनवार्द्धके १ पुण्यानिवैविवर्द्धन्तुपापंयातुचसंक्षयम्। आकाशादिषुशब्दादौमहदादिषुपार्थिवे। प्रकृतौ पुरुषेचैव ब्रह्मण्यपिचयः प्रभुः। यथासर्वत्रधर्मात्मा वासुदेवोव्यवस्थितः। तेनसत्येनमेपापंनरकार्त्तिप्रदंसदा। प्रयातुक्षीणतांपुण्यंवृद्धिमभ्येत्वनुत्तमम्) ये मन्त्रपढ़ै पीछे मौनसे भोजनकरै वर्ष पूराहोनेपर सुवर्ण की बिष्णु मूर्त्ति बनाय पूजनकर वस्त्र सुवर्ण सवत्सा धेनु औ दक्षिणा सहित ब्राह्मणको देवै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै इस बिधिसे जो पुरुष अथवा स्त्री इस सुकृतद्वादशी का व्रतकरै वह कभी नरकनहीं देखता जो नारायण का भक्त होय उसको कभी नरकबाधा नहींहोती बिष्णुकानाम उच्चारण करतेही सबपाप नष्ट होजाते हैं फिर नरक का क्या भयहै बासुदेव नारायण आदि नामोंको जो उच्चारणकरता रहै वह कभी यम का मुखनहीं देखता पाखंडी पुरुषों को कभी इस बृत का उपदेश न करै॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

धरणीद्वादशी ब्रत का विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र यह सब वेदोंमें प्रसिद्धहै कि बिधि पूर्वक यज्ञ करनेसे बड़े २ दान देने से औ बड़े परिश्रम से परमेश्वर की प्राप्तिहोती है

परन्तु कलियुगके मनुष्य न तो दानदेसकैं न यज्ञ उनसे होसक्ता फिर उनका मोक्ष किस प्रकार होय यह आप वर्णन करैं जिससे चारों वर्ण अल्प आयास करके मुक्ति भागी होयँ यह राजा का बचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज हम परमरहस्य आपको कहते हैं प्रीतिसे श्रवण कीजिये जब प्रलयके समय भूमिजलमें डूबकर रसातलको चलीगई उस समय अपने उद्धार के लिये भूमिने ब्रत किया उसब्रतसे भगवान् प्रसन्न भयेऔ भूमि को उस संकटसे उद्धार कर अपने स्थानमें स्थापन किया जो ब्रत भूमिने किया उसका हम बिधान कहते हैं मार्गशुक्ल दशमीको शौचआदिकर अष्टांगुलप्रमाण क्षीर वृक्षके काष्ठका दन्तधावनकरै स्नानकर भगवान्का पूजन औ अग्निहोत्रकरै पीछे हविष्य अन्नका भोजनकर एकादशीके दिन स्नानकर शंख चक्र गदा पद्मधारे पीतवस्त्र पहिने प्रसन्नमुख श्रीनारायण का ध्यानकर सूर्य्यनारायण को अर्घ्यदेवै औ यह मन्त्रपढ़ै (एकादश्यांनिराहारः स्थित्वाचाहंपरेऽहनि। भोक्ष्यामिपुंडरीकाक्ष शरणंमेभवाच्युत) पीछे भगवान् का पूजनकर उपवास रक्खे औ रात्रि को (ॐनमोनारायण) यह मन्त्र जपताहुआ भगवान्के आगे शयनकरै प्रभात उठ नदीके तटपर जाय(धारणंपोषणंत्वत्तोभूतानांदेविसर्वदा तेनसत्येनमांभद्रेपापांमोचयसुव्रतम्) इसमन्त्रसे मृत्तिका ग्रहणकरै (ब्रह्माण्डोदर तीर्थानिकरैस्स्पृष्टानि तेरवे भवंतिपूतानिसदा मृत्तिकांकिरणैःस्पृश) इसमंत्र से मृत्तिकाको सूर्य्यदर्शनकरावै(त्वयिसर्वेरसानित्यं स्थितावरुणसर्वदा । तेनेमांमृत्तिकांह्राव्यमांपूतंकुरुमाचि

रम्) इस मन्त्रसे मृत्तिकामें जलडालै उसमृत्तिकाको शरीरमें लगाय स्नानकर सन्ध्या तर्पणआदि करै पीछे देव गृहमें आय (केशवायनमः पादयोः। दामोदरायनमःकट्याम्। नृसिंहायनमः ऊर्वोः। श्रीवत्सधारिणेनमः उरसि। कौस्तुभधारिणेनमः कण्ठे। श्रीपतयेनमः वक्षसि। त्रैलोक्यविजयायनमः मुखे। सर्वात्मनेनमः शिरसि। रथांगधारिणेनमः चक्रे। शंखपाणयेनमः शंखे। गम्भीरायनमः गदायां। शान्तमूर्त्तयेनमः पद्मे। इनमन्त्रोंसे भगवान्के इन इन अंगों विषे पूजनकरै फिर चार कलश जलपूर्णस्थापनकरै उनकेबीच चन्दन सुवर्ण रत्नआदिडाल तिलपात्रों से उनको आच्छादनकरै वे चारोंकलश चारसमुद्रहैं उनके मध्यमें वस्त्रयुक्त एकपीठ स्थापनकरै उसपर सुवर्ण चांदी ताम्र अथवा काष्ठका जलपूर्ण पात्ररख उसमें मत्स्यरूपी भगवान्की सुवर्णकी प्रतिमा स्थापनकरै पीछे गन्ध पुष्प धूप दीप अनेक प्रकारके नैवेद्य औ फलोंसे भगवान् का पूजनकर (रसातलगतावेदा यथादेवत्वयाहृताः। मत्स्यरूपेणतद्वन्मांभवादुद्धरकेशव) यह मन्त्रपढ़ै औ रात्रिके समय जागरणकर बड़ा उत्सवकरै प्रभात उठ स्नानकर भगवान्का पूजनकरै औ वे चारोंघट चारवेद जाननेवाले ब्राह्मणोंको एक २ देकर मत्स्यावतारकी मूर्त्तिसहित वह पात्रभी कुटुम्बी ब्राह्मण को देवै पीछे यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय आपभी अपने परिवार सहित मौनसे भोजनकरै इस विधिसे जो द्वादशी व्रतकरै उसका पुण्य फल ब्रह्माके तुल्यआयुष् होय तोभी नहीं वर्णन करसक्के इस व्रतका करनेहारा अवश्यही ब्रह्मलोक को जाता है औ

जन्म २ में किये ब्रह्महत्यादि पापइससे कटजाते हैं यह मत्स्यद्वादशी का बिधान है इसीभांति पौष शुक्ल द्वादशी को कूर्म भगवान्‌का पूजनकरै स्नानआदि पूर्ववत् करके (कूर्मायनमःपादयोः। नारायणायनमः कट्याम्। संकर्षणायनमः उदरे। विशोकायनमः उरसि। मत्स्यरूपायनमः भुजयोः। हरयेनमः कण्ठे। सर्वात्मनेनमः शिरसि) इन मन्त्रोंसे इन अङ्गोंका पूजनकर गन्ध पुष्पआदि उपचारों से विधिपूर्वक भगवान्‌का अर्चनकर एक कलश स्थापन करै औ ताम्रपात्रमें जल भरकर उसमें सुवर्णकी कूर्मभगवान्‌की प्रतिमा स्थापनकर घृतपूर्णकलशके ऊपरउसपात्र को रक्खै औभक्तिसे पूजनकर रात्रिको जागरण औ गीतनृत्यआदिउत्सवकरदूसरेदिन वहमूर्तिसहितपात्रब्राह्मणको देवै औ ब्राह्मणोंको खीरखण्ड औ घृत भोजनकराय आप भी भोजनकरै इसविधिसे व्रतकरनेहारा संसारचक्रसे मुक्त हो विष्णुलोक को जाता है अनेक जन्मोंके किये पाप तत्क्षणनाशको प्राप्तहोतेहैं औ पूर्वोक्तसबफल इसव्रतकेकरने से प्राप्तहोताहै इसी भांति माघशुक्लमें बाराह द्वादशी का व्रतकरै इसव्रतमें भी स्नान पूजन कलशस्थापन आदि पहिली भांतिकर अमृततोद्भवायनमः। दिव्याग्रायनमः। गदिनेनमः प्रद्युम्नायनमः इन मन्त्रोंसे क्रम करके शङ्ख चक्र गदा औ पद्मका पूजन कर कुम्भके ऊपर सुवर्ण अथवा ताम्र का पात्र सबजीवोंसे पूर्ण कर स्थापनकरै उस बीच सुवर्ण की वराहभगवान्‌की प्रतिमा स्थापन करै कि जिनके दंष्ट्राग्र पर सप्तद्वीपवती पृथिवीस्थितहै फिर गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य औ दो श्वेत वस्त्रोंसे भगवान् का पू-

जनकरै रात्रिको जागरणकरै औ प्रभात उठस्नान आदि कर कलश सहित बराह नारायण की मूर्त्ति वैष्णव ब्राह्मण के अर्पणकरै केवल इसी ब्रतको करै तौ सौभाग्य लक्ष्मी कीर्त्ति पुष्टि औ सद्गति पाताहै जो बर्षभर करै उसके फल औ पुण्यका तौ क्याअन्तहै इसीप्रकार फाल्गुन शुक्ल द्वादशी को ब्रतकर (नरसिंहायनमःपादयोः। गोबिंदायनमः उदरे। बिश्वाजितेनमःकट्याम्। अनिरुद्धायनमः उरसि। शितिकंठायनमः कंठे। वैनतेयायनमः शिरसि। असुरध्वंसनायनमःचक्रे। तोयात्मनेनमः शंखे। बैकुंठायनमः गदायाम्। सर्वात्मनेनमः पद्मे) इनमन्त्रोंसे इनअंगोंका पूजन कर सबउपचारोंसे नृसिंहभगवान्का पूजनकरै पीछे कलश स्थापनकर उसपर मूर्त्तिस्थापन करै औ भक्तिसे पूजनकर वेदवेत्ता ब्राह्मण को देवै इस ब्रतके करनेसे सब पाप दूर होते हैं औ उत्तम फलकी प्राप्ति होती है इसीप्रकार चैत्र शुक्ल द्वादशीको स्नानआदि कर (वामनायनमःपादयोः। बिष्णवेनमःकट्याम्। वासुदेवायनमःउदरे। श्रीवत्सधारिणेनमः उरसि। बिश्वभृतेनमः कंठे। यमरूपिणेनमः शिरसि। विश्वजितेनमः भुजयोः। शंखायनमः शंखे। चक्रायनमः चक्रे) इनमन्त्रोंसे इनका पूजनकर वामनभगवान्का स्थापनकरै उनके समीप कमंडलु छतुरी खड़ाऊं औ दंडभी रक्खै पीछे सबउपचारोंसे पूजनकर ब्राह्मणको देवै औ (ह्रस्वरूपी बिष्णुः प्रीयताम्) यह वाक्य कहै इस ब्रतके करनेसे अपुत्रको पुत्र निर्द्धनको धन औ भ्रष्टराज्य को राज्य प्राप्तहोता है इस ब्रतका करनेहारा बहुत काल विष्णुलोक में निवासकर भूमिपरआय चक्रवर्त्ती राजा ब-

नताहै वैशाख शुक्लद्वादशीको भी पूर्ववत् स्नानआदि कर (जामदग्न्यायनमः पादयोः। सर्वधारिणेनमः उदरे। क्षत्रान्तकायनमःभुजे। मणिकण्ठायनमः कण्ठे। सुरूपायनमः मुखे। ब्रह्माण्डधारिणेनमः शिरसि। शंखायनमःशंखे। चक्रायनमः चक्रे) इन मन्त्रोंसे पूजनकर कलश स्थापन कर उसपर नयेबांसके पात्रमें सुवर्णकी परशुराम प्रतिमा स्थापनकरै जिसके दक्षिण हस्तमें कुठार धारणकरावै फिर उसका विधिपूर्वक पूजनकर ब्राह्मणको देवै इसव्रतका करनेहारा एक कल्प ब्रह्मलोक में निवासकर चक्रवर्त्तीराजा बनताहै ज्येष्ठ शुक्लद्वादशीको पूर्ववत् स्नानआदिकर (दामोदरायनमः पादयोः। त्रिविक्रमायनमः कट्याम्। धृतविश्वायनमः उदरे। सम्वर्त्तकायनमः मुखे। संवत्सरायनमः कण्ठे। सर्वास्त्रधारिणेनमः बाह्वोः। सहस्रशिरसेनमःशिरसि। शंखायनमः शंखे। चक्रायनमः चक्रे। इनमन्त्रों से पूजनकर कलश स्थापनकरै उसपर पात्रमें सुवर्णकी राम लक्ष्मण मूर्त्तिस्थापनकर पूजनकरै पीछे ब्राह्मणको देवै इस ब्रतकेकरनेसे उत्तम सन्तानकी प्राप्तिहोती है बशिष्ठजीकी आज्ञासे इसब्रतको सन्तानके अर्थराजा दशरथने कियाथा इसलियेसाक्षात् रामचन्द्रही उनके पुत्रबने विष्णुभगवान् ने चाररूप धार राजा दशरथके घरमें जन्मलिया इसलिये यहब्रत बहुतफल देनेहाराहै इसीविधिसे स्नान आदिकर वासुदेवायनमःपादयोः।संकर्षणायनमःकट्याम्। प्रद्युम्नायनमः उदरे। अनिरुद्धायनमः उरसि। चक्रहस्तायनमःकण्ठे। पुरुषायनमः शिरसि। शंखायनमः शंखे। चक्रायनमः चक्रे। इन मन्त्रोंसे पूजनकर पहिली भांति घटके ऊपर

सुवर्णकी संकर्षणकी मूर्त्तिस्थापन कर विधिसे उसका पूजनकर ब्राह्मणको देवै इस ब्रतके करनेसे विद्या धन राज्य पुत्र प्राप्तहोते हैं औ मरणके अनन्तर विष्णुलोक में छः मन्वन्तर पर्यन्त यह ब्रत करनेहारा निवासकर सातजन्म तक राजाहोताहै पीछे मोक्षको प्राप्तहोजाता है इसीप्रकार श्रावण शुक्ल द्वादशीको। बुधायनमःपादयोः। श्रीधरायनमः कट्याम् । पद्मोद्भवायनमः उदरे। संवत्सरायनमः उरसि। सुग्रीवायनमः कण्ठे। विश्ववाहनेनमः भुजयोः। शंखायनमः शंखे। चक्रायनमःचक्रे। इन मन्त्रोंसे पूजनकर कलशके ऊपर सुवर्णकी बुद्धभगवान्‌की प्रतिमास्थापन कर पूजनकरै औ ब्राह्मणकोदेवै यहब्रत शुद्धोदनने किया जिससे बुद्धभगवान् उसके पुत्रबने औ शुद्धोदनभी बहुत काल राज्य सुखभोग परमगतिको प्राप्तभया इसी रीतिसे भाद्रशुक्ल द्वादशीको स्नानआदि कर। कल्किनेनमः पादयोः। हृषीकेशायनमःकट्याम्। म्लेच्छप्रध्वंसनायनमः उदरे। जगन्मूर्त्तयेनमः उरसि । शितिकण्ठायनमः कण्ठे। खड्गहस्तायनमःभुजयोः। विश्वमूर्त्तयेनमः शिरसि । शंखायनमः शंखे। चक्रायनमः चक्रे। इन मन्त्रोंसे पजनकर कलशके ऊपर सुवर्णकी कल्किनारायणकी मूर्त्तिस्थापन कर दो वस्त्रउढ़ाय भक्तिसे पूजनकर दूसरेदिन ब्राह्मणके अर्पणकरै इस ब्रतके करनेसे सब उत्तम फल प्राप्तहोतेहैं यह दशावतार दानका औ पूजनका हमने विधान कहा अब इसका फल कथनकरते हैं। सर्वज्ञताकी प्राप्तिकेलिये मत्स्यरूप भगवान्‌का पूजनकरै वंशकेउद्धारकेलियेकर्मका। संसारके उद्धारहोनेके अर्थ बाराहका। पाप निवृत्तिकेलिये

नृसिंहका । मोहनाशके लिये वामनका । धनप्राप्तिके लिये परशुरामका । शत्रुनाशके अर्थ रामचन्द्रका । सन्तानके लिये बलदेवका । रूपकी प्राप्तिकेअर्थ बुधभगवान्का । औ शत्रुसंहारके लिये कल्किनारायण का भक्तिसे पूजन करै इन सबका पूजन औ दान करने से अभीष्ट कामना सिद्धहोती हैं इसप्रकार आश्विनशुक्ल द्वादशी को स्नान आदिकर (पद्मनाभायनमः पादयोः । पद्मयोनयेनमः कट्याम् । सर्वदेवायनमः उदरे । पुष्कराक्षायनमः उरसि । अव्ययायनमः शिरसि । शंखायनमः शंखे । चक्रायनमःचक्रे) इन मन्त्रों से इन अंगोंका पूजनकर कलश स्थापन करै औ उस को वस्त्र माला आदिसे अलंकृतकर उसके ऊपर सुवर्णकी पद्मनाभकी मूर्त्तिस्थापनकर भक्तिसे पूजन करै पीछे दक्षिणा सहित दरिद्र ब्राह्मणके अर्पण करै इस व्रतके करनेसे जितना पुण्यहोताहै उसका कौन वर्णन करसक्ताहै ब्रह्महत्या आदि पाप तो भगवान्का नाम स्मरण करतेही नष्टहोजाते हैं फिर व्रत औ पूजनभीकरै तो क्या कहनाहै इसी प्रकार कार्त्तिकशुक्ल द्वादशी को स्नान आदिकर (नमोदामोदराय) इस मन्त्रकरके भगवान्के सर्वाङ्गका पूजनकर चार कलश स्थापनकरै ये चारोंसमुद्र हैं इनके मध्यमें अतिसुन्दर पांचवांकलश स्थापनकरै उसके बीच सुवर्ण रत्नआदि डाल श्वेतवस्त्रसे उसको आच्छादितकरै उसकेऊपर ताम्रपात्रमें सुवर्णकी भगवान्की प्रतिमा स्थापनकर भक्तिसे सब उपचारों करके पूजनकरै दूसरे दिन पांच ब्राह्मणों को भोजन कराय चारोंको चार कलश औ पांचवें को मूर्त्ति सहित कलश देवै वेदवेत्ता

ब्राह्मणको देवै तो सौ गुणा फलहोताहै वेदवेदांग जानने हारेको देनेसे सहस्रगुणा सरहस्य वेदज्ञाताको देनेसे लक्षगुण औ पौराणिक को देनेसे अनन्त गुणफल प्राप्त होताहै इसप्रकार कलश देकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै औ दीन अनाथ अंध आदि को भी भोजन देकर संतुष्टकरै यह ब्रत धरणीने किया तब भगवान्ने प्रसन्नहो बराह रूप धार भूमिका उद्धार किया। प्रजापतिने इसीब्रत के प्रभावसे प्रजा औ मुक्तिपाई। कृतबीर्यराजाने इस ब्रत के करनेसे सहस्रबाहु नामक चक्रवर्ती पुत्र पाया। शकुंतलाने यह ब्रत किया तो उसके भरतनाम चक्रवर्ती पुत्र उत्पन्न भया और भी अनेक राजाओंके अभीष्ट इस ब्रतसे सिद्ध भये हैं जो इस ब्रतको करै अथवा इसके माहात्म्य को सुनै वह बिष्णुलोक को प्राप्तहोय औ उसके सातपुरुष सद्गति को प्राप्तहोयँ संपूर्ण माहात्म्य तो इस धरणीद्वादशी का कौन वर्णन करसक्ताहै यह हमने थोड़ासा कहाहै॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

बिशोकद्वादशी औगुड़धेनु आदिदशधेनुओंके दानका बिधानऔफल ॥

राजा युधिष्ठिरपूछतेहैं कि ऐसा कौन ब्रतहै जिसकेकरनेसे इष्ट बियोग न होय ऐश्वर्य प्राप्तिहोय औ शोक मोह आदि का नाशहोकर संसारसे मुक्ति मिलै यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज यह देवता दैत्य आदि सबमें गुप्तहै जो आपने पूछा परन्तु हम आपके स्नेहसे कथन करते हैं आश्विन मासमें बिशोक द्वादशीका ब्रत करनेसे ये फल प्राप्त होते हैं उसका यह बिधानहै कि दशमीके दिन शौचआदिकर पूर्वमुख

अथवा उत्तराभिमुख बैठ दंतधावन कर स्नानकरै पीछे सन्ध्या तर्पण आदिकर घरआय नारायणका पूजनकरै औ लघु भोजनकरै एकादशी के दिन निराहार रहै औ भक्तिसे लक्ष्मी सहित नारायण का पूजनकरै रात्रिको जागरणकर प्रभात उठ सर्वौषधि जल औ पंचगव्यसे स्नान कर श्वेतवस्त्र औ पुष्पमाला पहिन विशोकायनमः। वरदायनमः। श्रीशायनमः। जलशायिनेनमः। कंदर्पायनमः। माधवायनमः। दामोदरायनमः। विपुलायनमः। पद्मनाभायनमः। मन्मथायनमः। श्रीधरायनमः। मधुलिहेनमः। चक्रिणेनमः। गदिनेनमः। वैकुंठायनमः। यज्ञमुखायनमः। वामनायनमः। विश्वरूपिणेनमः। सर्वात्मनेनमः। इनमन्त्रोंसे क्रम करकेपादजंघाजानूऊरूगुह्यकटिउदरपार्श्वनाभिहृदयवक्षस्थल दोनों हाथ बामभुजा दक्षिणभुजा कंठ मुखललाट किरीट औ सर्वांगका पूजनकरै पीछे नदीकेबालूसे सुन्दर चतुरस्रस्थंडिल बनाय उसपर लक्ष्मीकी औ सूर्यकी प्रतिमा स्थापनकर। औंदेव्यैनमः। शांत्यैनमः। विशोकायैनमः। इनमन्त्रोंसे पूजन करै सुवर्ण का कमल बस्त्र औ अनेकप्रकारके नैवेद्यचढ़ावै रात्रिको नृत्यगीत आदिक उत्सवकरै दूसरे दिन उत्तमशय्यापर बैठायबस्त्रभूषण भोजन आदि करके ब्राह्मण मिथुनका पूजनकरै औ गुडधेनु सहित वह शय्या भी उनकोदेवै औ (यथालक्ष्मीर्नदेवेशत्वांपरित्यज्यगच्छति। तथाविशोकतामेस्तुभक्तिरग्र्याच केशवे॥ यह मन्त्र पढ़ क्षमापन करावै औ सूर्यकी तथा लक्ष्मीकी प्रतिमा ब्राह्मण को देवै उत्पलकरवीर बाण कुंकुम नागकेसर सिंदुवारमल्लिका अशोक पाटलाकदम्ब औ

चमेलीये पुष्पपूजनके लिये प्रशस्तहैं इतनासुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपने गुड़धेनु देनी कही उसका आपबिधानभी कहैं किक्योंकरगुड़धेनु बनती है औ क्यामन्त्रहै तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज अब हम गुड़धेनु का बिधान कहते हैं आप प्रीति से श्रवणकीजिये पहिले भूमिको गोबरसेलीप उसकेऊपर दर्भ बिछाय दर्भोंके ऊपर कृष्ण मृगचर्म बिछावै उसकेऊपर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख गुड़धेनु बनावै एक भार प्रमाण गुड़की धेनु औ इसके चतुर्थांशगुड़करके बछड़ा बनावै इक्षुके पाद सीपीके कर्ण मोतियोंके नेत्र श्वेत सूत्रकी शिरा मूँगाकीभ्रू ताम्रकी पीठ नवनीतके स्तन औ श्वेत चामरके उनके रोमबनाय श्वेत कम्बलसे दोनों को आच्छादनकरै औ गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य अनेक प्रकारके फल औ सुगन्ध द्रव्योंसे उनका पूजनकरै औ हाथ जोड़ (यालक्ष्मीसर्वभूतानां याचदेहेव्यवस्थिता । धेनुरूपेणसादेवी ममपापंव्यपोहतु॥ विष्णोर्वक्षसियालक्ष्मीः स्वाहायाचविभावसोः। चन्द्रार्कशक्रशक्तिर्याधेनुरूपासुरप्रिया॥ चतुर्मुखस्ययालक्ष्मी यालक्ष्मीर्धनदस्यच । यालक्ष्मीर्लोकपालानां साधेनुर्वरदास्तुमे ॥ स्वधात्वंपितृमुख्यानां स्वाहायज्ञभुजांयतः । सर्वपापहराधेनुस्तस्माच्छांतिंप्रयच्छमे ॥) ये मन्त्रपढ़ै पीछे वह धेनुसत्पात्र ब्राह्मणको देवै सबधेनुओं का यही विधान है पापके नाशकरनेहारी दश धेनुकही हैं उनके हम नाम औ स्वरूपकहतेहैं गुड़धेनु घृतधेनु तिलधेनु जलधेनु क्षीरधेनु मधुधेनु शर्कराधेनु दधिधेनु रसधेनु औ प्रत्यक्षधेनु ये दशधेनुहैं कोई मुनि सुवर्णधेनु औ नव-

नीत धेनुभी कहतेहैं गुड़धेनुकेतुल्य सबके दानका विधान औ मन्त्रहैं जिसपर श्रद्धाहोय उसका दानकरै व्रतोंमें विशोकद्वादशी व्रत उत्तमहै उसका अंग गुड़धेनुहै इसलिये वह सब धेनुओं में उत्तमहै अयन संक्रांति विषुव व्यतीपात औ चन्द्रग्रहणादि पर्वोंमें गुड़धेनुआदि दश धेनुओं का दान करै यह विशोकद्वादशी व्रत सब पाप हरनेहारा है जिस व्रतके करनेसे मनुष्य सौभाग्य आयुष आरोग्य पाता है औ अन्तमें विष्णुलोक को जाता है औ हज़ारों जन्मतक दुःख शोकआदिसे पीड़ित नहींहोता जोस्त्री इस व्रतको कर नृत्य गीतआदि उत्सवकरै वहभी सम्पूर्णफल पातीहै जो इस माहात्म्य को सुनै पूजन देखै अथवा व्रत करनेके लिये औरों को उपदेशकरै वह भी इन्द्रलोक में निवास करता है॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

विभूति द्वादशीका विधान फल औ राजा पुष्पबाहन की कथा॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हेमहाराज अब हम विभूति द्वादशी व्रतका विधान कहते हैं आप श्रवणकीजिये कार्त्तिक वैशाख मार्गशीर्ष आषाढ़ अथवा फाल्गुन शुक्लदशमीको मनुष्य लघु भोजनकरै रात्रिके समय यह नियम ग्रहणकरै कि एकादशी को निराहार रह भगवान्‌का अर्चनकर द्वादशीको ब्राह्मणोंके साथ भोजन करूँगा हे मधुसूदन यहमेरा व्रत निर्विघ्नसमाप्तहोय प्रभातउठ स्नान आदिकर भूतिदायनमः। विशोकायनमः। शिवायनमः। विश्वमूर्त्तयेनमः। कन्दर्पायनमः। आदित्यायनमः दामोदरायनमः। वासुदेवायनमः। माधवायनमः।मुक्तिकृतेनमः

श्रीधरायनमः। केशवायनमः। शार्ङ्गधरायनमः। वरदाय नमः।शंखपाणयेनमः। चक्रपाणयेनमः।खड्गपाणयेनमः। गदापाणयेनमः।परशुपाणयेनमः।सर्वात्मनेनमः।इनमन्त्रों से शुक्ल माल्य अनुलेपन आदिकरके पाद जानु ऊरु कटि मेढ्र हस्त उदर स्तन हृदय कण्ठ मुख केश पृष्ठ कर्ण इन अङ्गोंका औ शंख चक्र खड्ग गदा परशु इन आयुधोंका औ सर्वांगका पूजनकरै सुवर्णकामत्स्य उत्पलसहित वित्तानुसारबनाकरजलके कुम्भकेबीच भगवान्के आगेस्थापन करै औ शुक्लवस्त्रसे ढकागुड़ तिलयुक्त पात्र भी स्थापनकरै रात्रिको जागरणकर इतिहास आदि श्रवणकरै प्रभातउठ भगवान् का पूजनकर तीन कर्ष सुवर्णका उत्पल औ वह सब सामग्री कुटुम्बी ब्राह्मणको देवै औ इसी विधानसे मासक्रमकरके दशावतार दानकरै औ उत्पलसहितव्यास औ दत्तात्रेयकी प्रतिमाका भी दानकरै इसप्रकार एकवर्ष व्रतकरके लवण पर्वत गुड़ शय्या ग्रामक्षेत्र घर औ वस्त्र भूषण आदि देकर गुरुको सन्तुष्टकरै औरभी ब्राह्मणोंको भोजन कराय दक्षिणा गौ औ वस्त्रदेवै सामर्थ्य न होय तो भक्ति पूर्वक थोड़ी २ ही सबवस्तु देवै भगवान् भक्ति से प्रसन्नहोते हैं इसविधिसे जो पुरुष तीनवर्ष इस व्रतको करै उसके सौ कुलोंका उद्धारहोता है औ हजारोंयुग वह स्वर्गमें निवासकर चक्रवर्ती राजा होताहै पूर्वकालमें रथंतर कल्पके बीच बड़ाप्रतापी पुष्पवाहननाम एक राजा भया उसने बड़ा तप किया तब ब्रह्माजीने प्रसन्नहो उस को एक सुवर्णका कमल दिया जिसपर अपने अन्तःपुर औ भृत्यों सहित बैठ सप्तद्वीपोंमें वह विचरताथा उसको

प्रसन्नहो जहां ब्रह्माजीने कमल दिया वह द्वीप पुष्करद्वीप कहाया पुष्प रूप बाहन ब्रह्माजीने उसको दिया इसलिये राजा का नाम पुष्पबाहनभया तीनलोक में कोई स्थान राजाको उसकमलके प्रभावसे अगम्य नहीं था उसराजा की रानी अति रूपवती पतिव्रता औ हजारों उत्तम नारियोंकरके सेवित लावण्यवती नामथी उसका पुत्रभी बड़ा पराक्रमी बिनीत औ धर्म्मात्माथा यह सब अत्युत्तम सामग्री अपनी देख राजाको बड़ा बिस्मय भया तबप्रचेता मुनिके पास जाय राजाने बड़े बिनयसे प्रणामकर पूछा कि महाराज ऐसामैंने कौनपुण्य कियाहै जिससे इतना ऐश्वर्य ऐसी उत्तम भार्या औ पुत्र पाये औ इतनाबड़ा बिमान मिला कि जिसमें लाखोंहाथी घोड़े औ सेना चढ़जाय तौ भी खालीहीरहताहै आप यहमेरा सन्देह निवृत्त कीजिये यह राजा का बचन सुन क्षणमात्र ध्यानकर प्रचेतामुनि बोले कि हे राजा पूर्वकालमें अति क्रूरस्वभाव कृष्णवर्ण रक्तनेत्र औ सब जीवोंको भयदेनेहारा एकव्याधथा वह नित्य बनके जीव मारउनके मांससे अपने कुटुम्बका पोषण किया करता एकसमय वृष्टि न होनेसे उस देशमें बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा एक दिन उस दुर्भिक्षमें वह व्याधसारे बनमें भटका परन्तु कोई जीव हाथ न आया इससे व्याकुलहो घरको लौटा रस्तेमें उसने एक सरोवरमें कमलफूले देखे वहांसे बहुतसे कमल तोड़लिये औ घर आय वहांसे अपनी पत्नीको संगलेकमल बेचनेके लिये बिदिशा नगरीमें गया सारे नगरमें फिरा परन्तु कमल किसीने न पूछे तब सायंकालके समय क्षुधा तृषासे व्याकुल अपनी भार्यास-

हित एक स्थानमें बैठगया वहां उसने रात्रिके समय गीत-वाद्य का बड़ाशब्द सुना औ जाना कि अनंगवती नाम बेश्या विभूति द्वादशीका व्रतकरके अपने गुरुको लवणाचल औ सब उपस्करोंके सहित उत्तम शय्या देती है यह शब्दसुन वहव्याधभी अपनी भार्या सहित वहां गया औ जायकर देखा कि मण्डपके बीचसुवर्ण की भगवान् की प्रतिमा स्थापनकर रक्खी है औ सब उसका पूजनकर रहे हैं उसने शोचा कि ये कमल हमारे किसी कामकेनहीं इस मूर्त्तिपरही चढ़ादेवैं यह बिचार दोनोंस्त्री पुरुषों ने दूरसे कमलके पुष्प भगवान् की प्रतिमा पर फेंकदिये अनंगवतीभी कमलके उत्तम पुष्प देख प्रसन्नभई औ तीन सौ मोहर उनको पारितोषिक दिया उस प्रसन्नतामें उन दोनों को रात्रि भर निद्रा न आई वेश्यानेभी अपने गुरुको बस्त्र भूषण ग्राम घर शय्या औ लवणपर्वत देकर सन्तुष्टकिया औ ब्राह्मणभोजनकराय भार्यासहित उसव्याधको भी भोजनदे बिसर्जन किया कुछ दिनके अनन्तर वहपापी व्याध औ उसकी स्त्री मृत्युवशभये हे राजन् वहव्याधतुमहो औ व्याधकी भार्या तुम्हारी रानीहै तुमसे बिनाइच्छाही बिभूतिद्वादशीको उपवास औ रात्रिको जागरण बनपड़ा इससे तुम जन्मान्तरमें राजा रानी भये औ भगवान् पर तुमने कमल चढ़ाये इससे तुमको कमलाकार यह बिमानमिला ब्रह्माके रूपसे बिष्णुभगवान्ही तुमपर प्रसन्न भये हैं वह अनंगवती वेश्याभीकामदेवकीभार्या औ रतिकीसपत्नीप्रीति नाम भईहै हे राजन् इस शरीरके अनन्तर तुममोक्ष को प्राप्तहोगे इतनी कथा सुन प्रसन्न हो मुनिको प्रणाम कर

राजा अपनी राजधानीको आया औ विभूति द्वादशी का व्रत श्रद्धासे करनेलगें इतनी कथा सुनाय श्रीकृष्णभगवान्‌ने कहा कि हे महाराज भक्तिसे विभूतिद्वादशीका व्रत करै औ वित्तशाठ्यन करै तो अवश्यही अभीष्ट फलपावै जो इस माहात्म्यको सुनै अथवा सुनावै वह सद्गतिपावै॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

मदन द्वादशी का विधान औ फल गर्भिणी स्त्रीके धर्म॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब हम मदनद्वादशीका विधान सुनना चाहते हैं जिसव्रतके करने से दितिने उनचास पुत्रपाये यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान्‌ कहनेलगे हे महाराज वशिष्ठआदि मुनियों ने जो विधान दितिको बतायाथा वही हम आपको कहते हैं चैत्रशुक्ल द्वादशीको उत्तमकलश चावलों से पूर्ण श्वेत वस्त्रोंसे आच्छादित फल औ इक्षुरस सहित स्थापन करै उसके ऊपर गुड़ औ सुवर्ण सहित ताम्रपात्र रक्खै उसके ऊपर केलाका पत्र बिछाय उसपर रतिसहित कामदेवकी मूर्त्तिस्थापनकरै फिर गन्ध पुष्पादि उपचारोंसे पूजनकर। कामायनमः सौभाग्यदायनमः स्मरायनमः मन्मथायनमः शातोदरायनमः अनंगायनमः पद्ममुखायनमः पंचशराय नमः सर्वात्मनेनमः इन मन्त्रोंसे पाद जंघा उरू कटि उदर बक्षस्थल मुख बाहू औ मस्तकका पूजनकरै दूसरे दिन मूर्त्तिसहित वह कुम्भ ब्राह्मणको देवै औ यथाशक्तिब्राह्मण भोजन करावै परन्तु लवण रहित भोजन ब्राह्मणको देवै फिर ब्राह्मण को दक्षिणादेकर (प्रीयतामत्रभगवान्‌कामरूपीजनार्दनः। हृदयेसर्वभूतानांयेनानंदोविधीयते) यहमन्त्र

पढ़ै.व्रतकेदिन आपभी एकफल भक्षणकर रात्रिके समय भूमिपरसोवै। इसप्रकार बारहमहीने व्रतकर तेरहवेंमास में उत्तमशय्या सुवर्णकी कामदेव औ रतिकी प्रतिमाशुक्ल वर्णकी सवत्सा गौ औ वस्त्र ब्राह्मण दम्पतीका पूजनकर उनको देवै औ गौ का दुग्ध शुक्लतिल औ पायस करके कामदेवके नामोंसे हवनकरै औ ब्राह्मणोंको भोजन कराय उनको दक्षिणा पुष्पमाला इक्षुदण्ड औ वस्त्रआदि देकर सन्तुष्टकरै इसमें वित्तशाठ्यनकरै इसविधिसे जो इसव्रत कोकरै वह सौभाग्य रूप धन पुत्रपावै औ बहुतादिन संसारका सुखभोग विष्णुलोक को जावै दितिने उत्तम वर औ सन्तानके लिये यह व्रतकिया तब कश्यपजीने आप आकर उसकोवरा कुछकालके अनन्तर दितिने कश्यपजी से शत्रुओंके संहार करनेहारा पुत्रमांगा कश्यपजीने उस को बरदिया थोड़ेही समयमें दितिके गर्भ रहा तब कश्यप जीने दितिसे कहा कि हे प्रिये इस गर्भको तुम सौवर्ष पर्यन्त धारणकरो औ सन्ध्याके समय भोजन न करो वृक्ष के नीचे शून्यघरमें औ जलके बीच कभी मतजाओ ऊखल आदिके ऊपर मतबैठो उद्विग्नचित्त मतरहो भस्म से नखसे औ अंगारसे भूमिपर रेखा नकरो व्यायामगात्र भंग कलह अतिहास्य आदिका त्यागकरो केश खोलकर औ नग्नहोकर कभी मतबैठो उत्तर औ पश्चिमको शिर करके मत शयन करो पैरगीले मत रक्खो अमंगलवचन न बोलो नित्य गुरुशुश्रूषा औ मंगलमें तत्पर रहो सर्वौषधियुक्त गरम जलसे स्नान करो खोटीस्त्री औ मृतवत्सा स्त्रीका स्पर्श न करो वस्त्रके वायुको त्यागो जल्दी मतचलो

पराये घर न जाओ नदी को उल्लंघन मतकरो दुष्टवचन मतसुनो ग्लानि करनेहारी वस्तुको न देखो अजीर्ण से बचतीरहो गर्भकी रक्षाकरनेहारी ओषधी धारण करोइस विधिसे जो गर्भिणी स्त्रीरहे वह उत्तमपुत्रपातीहै नहींतोगर्भ गिरजाताहै अथवास्तंभनहोजाताहै तुम इसीरीतिसे चलो तो अति सुन्दर औ पराक्रमी पुत्र तुम्हारे होगा इतना उपदेश दितिको कर कश्यपमुनि अन्तर्द्धानभये दितिभी पति की कहीरीति परचली औ उनचास पुत्र उसके जन्मे और भी जो नारी इस ब्रतको करै वह अवश्यही पुत्र पावै औ पति सहित संसारका सुख भोगकरै॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

दुर्गा महिमा औ अंकपाद ब्रत का बिधान॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र बड़ेघोरबन में समुद्र तरणमें संग्राम में चौरआदिके भयमें व्याकुल हुआ मनुष्य किस देवता का स्मरणकरै जो उस संकटके समय उसकी रक्षा करै यह आप कथनकरैं तब श्रीकृष्ण चन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज सर्वमंगल मंगला श्रीदुर्गा भगवतीका स्मरणकरनेहारा पुरुष कभी दुःख औ भयको प्राप्त नहीं होता जब हम औ बलदेवजी अपने गुरुसे सब बिद्यापढ़चुके उससमय हमने गुरुदक्षिणा के लिये कहा तब गुरुने हमारा दिव्यप्रभावजान यहीकहा कि हे पुत्र हमारा पुत्र प्रभासक्षेत्रमें गयाथा वहां उसको किसीने मार दिया हम उसीपुत्रको चाहतेहैं जहांहोयवहांसे तुमलाकर हमको देदो तब हम यमलोकमें गये वहांसे गुरुपुत्र को लेकर गुरुके समीप आये औ उनको उनका पुत्रदिया औ

गुरुको प्रणामकर चलनेलगे तब गुरुनेकहा कि हे पुत्रो इस स्थानमें तुम अपने पाद का चिह्नकरजाओ हमनेभी गुरुकी आज्ञानुसार किया उसदिनसे दक्षिणपाद बलदेव जीका मध्यमें सर्वमंगलाका औ वामपाद हमारा सबवहां पूजतेहैं प्रतिमासकी शुक्लत्रयोदशीको एक भक्त नक्तअ-थवा उपवासरहकर मृत्तिका अथवा सुवर्ण की प्रतिकृति बनाय गन्धपुष्पधूपदीप नैवेद्य मधुशीधुसुरा आसवमांस औ बलिकरकेजो स्त्री अथवा पुरुष पूजनकरैं वह सब पा-पोंसे मुक्तहो स्वर्गमें निवास करताहै जहां शुक्लत्रयोदशी को पुष्पमांस सुरा बलि आदि करके पादके अंकका पूजन कियाजाय वहांमारी दुर्भिक्ष आदि उपद्रव नहीं होते॥

अठहत्तरवां अध्याय॥

दुर्गंधनाशन व्रत का बिधान॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ऐसाकौन व्रतहै जिसके करने से शरीर का दुर्गंध नष्ट होजाय औ दौर्भाग्य भी दूरहोय तब श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज यही बात बिष्णुमतीरानीने जातूकर्ण्यमुनि को पूछी थी तबमुनिने यहकहा कि हे पतिव्रते ज्येष्ठशुक्ल त्रयोदशीको नदीमें स्नानकर गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य श्वेतार्क पुष्प करबीरपुष्प औ निंबकरके सूर्य्यनारायणका पूजनकरै निंब सूर्य्यभगवान् को बहुत प्रियहै इस भांति पूजनकर व्रत रक्खै इसप्रकार चार त्रयोदशीको व्रत औ पूजनकरै तो शरीरका दुर्गंध औ दौर्भाग्य नष्टहोय जो स्त्री इस व्रतको भक्तिसे करै औ अर्क करबीर औ निंबका पू-

जनकरैं वे दौर्भाग्य दौर्गंध्य औ वंध्यापनसे छूट पति के साथ अनेक प्रकारके सुख भोगती हैं॥

उनासीवां अध्याय॥

यमादर्शन व्रतका विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ऐसाकौन व्रतहै जिसके करने से यमको न देखना पड़े तब श्रीकृष्ण भगवान्‌ने कहा कि हे महाराज मुद्गलमुनिने यहबात हम से कही कि हे यदुपुंगव जब यमने मुद्गलक्षत्रिय को लाने की आज्ञादी उसीसमय यमदूतगये औ उसको लेआये वह बड़ा धर्मात्माथा इसलिये यमराज ने भी उसका सत्कारकिया औ समीपबैठाया तब मुद्गलक्षत्रियने पूछा कि हे धर्म्मराज कोई ऐसा उपाय जीवोंके लिये कहैं जिससे आपके लोकका दारुण मार्ग न देखना पड़े तब यमराज कहने लगे कि हे मुद्गल जो पुरुषको नरकका भयहोय तो मार्गशीर्ष आदि प्रतिमासकी शुक्ल त्रयोदशीको तेरह आठ अथवा पांच ब्राह्मणों को हमारे नामसे बुलावै वे ब्राह्मण वेदवेत्ता शांतचित्त आचारनिष्ठ सौम्यदर्शन औ सूर्य्यभक्तहोयँ पीछे उनको दिनके पहिले प्रहरमें तैलाभ्यंग कराय गरम जलसे नहवाय अच्छीधोती पहिनाय पूर्वाभिमुख सब को आसनपर बैठावै पीछे अपने हाथसे गुड़के अपूप पक्वान्न औ अनेकप्रकारके सात्विक व्यंजन उनके आगे परोसै जब वे प्रसन्नतासे भोजनकर आचमनआदि करचुकैं तब प्रत्येकको तिल चावलोंसे पूर्ण ताम्रपात्र छतुरी जूता वस्त्र जलपूर्णकलश औ दक्षिणादेवै पंक्तिभेद न करै औ (ओंनमःशनैश्चरोमृत्युर्दण्डहस्तोविनाशकः।

अभवः प्रलयःशान्तिर्दुस्वप्नःशमनोंतकः॥ लोकपालोधनी क्रूरोरौद्रोघोरोनमःशिवः। नमःप्रसन्नमानस्को ददातुमम वांछितम्) यह मन्त्रपढ़ै पीछे प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मणों को विसर्जनकरै औ उनकेसाथ पहुँचानेकेलिये जाय इसव्रत को जो एकबारभीकरै वह यमलोकको नहींदेखता यहयम-राजने मुद्गल क्षत्रियसे कहा औ हे श्रीकृष्ण हमको उनने छोड़दिया तब हम अपने शरीरमें प्रविष्ट भये औ आज आपके मिलनेको आये श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महा-राज इतनी कथा सुनाय मुद्गलमुनि अपने आश्रमकोगये इस व्रतको जो स्त्री अथवा पुरुष करते हैं वे यमको जीत इन्द्रलोकमें निवास करते हैं जो एकवर्ष प्रतित्रयोदशीको यह यमादर्शननाम व्रतकरै वे गन्धर्व औ अप्सराओं क-रके सेवित दिव्य विमानमें बैठ इन्द्रलोक में प्राप्तहोते हैं औ आधि व्याधि औ बड़ेभयंकर यमदूतों करकेकभी पी-ड़ित नहींहोते औ चिरकालपर्यन्त स्वर्गमें निवास करतेहैं॥

अस्सीवां अध्याय॥

अनंग त्रयोदशी व्रतका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज शरीरकोक्लेश देनेहारे बहुत व्रत करनेसे क्या प्रयोजनहै एक अनंग त्र-योदशीकाही व्रतकरै तो सब कुछपावै यह त्रयोदशी सब प्रकारके सुख देनेहारी नरकका भय हरनेहारी औ मंगल वृद्धि करनेहारी है शिवजी ने कामदेव को दग्धकर दिया फिर अनंगहोकर सबके मनमें कामदेवका निवास भया तब कामदेवने इसव्रतकोकिया इसीसे इसका नाम अनंग त्रयोदशी पड़ा अब हम इसव्रतका विधान कहते हैं मार्ग

शुक्लत्रयोदशीको नदी तड़ाग आदिमें स्नानकर जितेन्द्रियहो पुष्प धूप दीप नैवेद्य औ कालोद्भवफलों करके शशिशेखरका पूजनकरै औ तिलसहित अक्षतों करके हवनकरै रात्रिको मधु प्राशनकरशयन करै वहकामदेवकेतुल्य उत्तम रूप पाताहै। पौषमें योगेश्वरका पूजनकर चन्दन प्राशन करै तो शरीरमें चन्दनके समान गन्ध होजाय औ राजसूय यज्ञका फलपावै। माघमें नाट्येश्वरका पूजनकर मौक्तिक चूर्णप्राशनकरै तो सौभाग्य औ बहु सुवर्ण यज्ञका फलपावै। फाल्गुनमें वीरेश्वरका पूजनकर कमल प्राशन करै तो तप्त सुवर्णके समान शरीरकी कान्ति होजाय औ गोमेध यज्ञका फलपावै चैत्रमें सुरूपका पूजनकरै औ कर्पूर प्राशनकरै तोचन्द्रकेतुल्य मनोहर होजाय औ नरमेध यज्ञका फलपावै। वैशाख में महारूपका पूजनकर जातीफल प्राशनकरै तो उत्तमजातिपावै उसके सबकामसफल होयँ औ सहस्र गोदानका फलपाय विष्णुलोकमें निवास करै। ज्येष्ठमें प्रद्युम्न का पूजनकरै औ लवंग प्राशनकरै तो लावण्य सब प्रकारके सुख औ वाजपेय यज्ञका फल पावै। आषाढ़में उमापतिका पूजनकर तिलोदकप्राशनकरै तो तिलोत्तमाके समान रूपपाय सौवर्ष सुखभोगै औ पौंडरीकयज्ञका फलपाय स्वर्गकोजावै। श्रावणमें ईशानका पूजनकर बिल्वपत्रका प्राशनकरै तो अनन्तपुण्यपावै। भाद्रमेंसद्योजातका पूजनकर अगुरु प्राशनकरै तोभूमिपर सबका गुरु बनै औ पुत्रपौत्र धन आदि पाय बहुतदिन संसारसुखभोग अन्तमें पौंडरीकयज्ञकेफलको प्राप्तहो विष्णुलोकमें निवासकरै। आश्विनमें त्रिदशाधिपतिका पूजन

कर स्वर्णोदक प्राशनकरै तोउत्तमरूप बिद्या औ सुवर्णकोटि दानका फलपावै । कार्तिकमें बिश्वेश्वरका पूजनकर मदन फल प्राशनकरै तो मदनके समान रूपवान्होय औ अन्त में शिवलोकमें निवासकरै जोइसव्रतमें किसीदिन विघ्नहो-जाय तो दूसरे दिन उसीबिधानसे व्रतकरलेवै एकवर्ष इस प्रकारव्रतकरके कलश स्थापनकर उसके ऊपर ताम्रपात्रमें सुवर्णकी शिवप्रतिमा स्थापनकर श्वेतवस्त्रसे आच्छादनकरै औ गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजनकर शिवभक्त ब्राह्मण को देवै औ उसके साथ सवत्सा गौ छत्र जूता औ यथाशक्ति दक्षिणा देवै औ शिवभक्त ब्राह्मणों को भोजन कराय दक्षिणावस्त्र औ जलपूर्णकलश उनकोदेवै औ शिव-लिंगको पंचामृतसे स्नानकरावै इसप्रकार जो व्रतकरै औ व्रत पारणके समयबड़ा उत्सव करै वह निष्कंटक राज्य आ-युष्बल यश औ सौभाग्य सौजन्मतक पाताहै औ अन्तमें शिवलोकमें निवास करताहै इस अनंग त्रयोदशी व्रतको जो पूर्वोक्त रीतिसे भक्तिपूर्वककरै वह अवश्यही शिवलोक को प्राप्त होताहै ॥

इकासीवां अध्याय ॥

पालीव्रत का विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जल पूर्ण तड़ाग औ सरोवरोंमें कुल स्त्री किसको अर्घ्यदेती हैं यह आपकथनकरैं तब श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज भाद्रशुक्लचतुर्दशीको ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य शूद्र औ स्त्री त-ड़ागके तटपर जाकर फल पुष्प बस्त्र दीप चन्दन महावर सप्तधान्य अग्निपाक बिना सिद्धकिये अन्न तिल चावल

खजूर नालिकेर बीजपूर नारंगी द्राक्षा दाड़िम सुपारीआ-दि करके वरुणका पूजन करै पहिले मण्डल लिख उसमें गया पुष्कर प्रभास औ वरुणासहित वरुणको लिखकर पूजनकरै औ(वरुणायनमस्तुभ्यं नमस्तेयादसांपते। अपांपतेनमस्तेस्तुरसानांपतयेनमः॥ माक्लेदंमाचदौर्गंध्यंमावैरस्यंमुखेस्तुमे। वरुणोवारुणीभर्तावरदोस्तुसदामम) इस मन्त्रसे मध्याह्नके समय वरुणको अर्घ्यदेवै औ अग्नि बिना सिद्ध किया भोजनकरै औ सब नैवेद्य ब्राह्मणको देवै इस बिधिसे जो इस पालीब्रतको करै तत्क्षण सब पापोंसे मुक्त होजाताहै औ आयुष् यश सौभाग्य पाताहै औ समुद्रके जलकी भांति उसके धनका किसीको अन्तनहीं आता॥

बयासीवां अध्याय॥

रंभाव्रत का बिधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि ब्रह्मसभामें देवलमुनि के उपदेशसे अप्सरा गन्धर्व औ देवताओं ने कदली को अर्घ्य दान कियाहै उसका हम बिधान कहते हैं इसीभाद्र-शुक्ल चतुर्दशी को नानाप्रकारके फल सप्तधान्य दीप च-न्दन दही दूर्वा अक्षत बस्त्र पक्वान्न जायफल लवंग लव-लीफल आदि करके (विचित्रकदलीकंदकदल्येकामदायिनी। शरीरारोग्यलावण्यदेहिदेविनमोस्तुते) इस मन्त्रसे केलाके वृक्षका पूजन कर अर्घ्य देवै पीछे अग्नि बिना सिद्धकिया भोजन करै जो पुरुष अथवा स्त्री भक्तिसे इस ब्रतको करै उसके बंशमें दुर्भगा दरिद्रा बन्ध्या पापिनी व्य-भिचारिणी कुलटा वेश्या पुनर्भू दुष्टा औ पतिविरोधिनी कोई कन्या नहीं उत्पन्नहोती इस ब्रतको करने हारी नारी

सौभाग्य पुत्र पौत्र धन आयुष् कीर्त्ति आदि पाकर सौ-
वर्ष पर्यन्त अपने पतिके साथ संसारके सुख भोगती है ।
यह रम्भाव्रत गायत्री ने स्वर्गमें किया गौरीने कैलास में
इन्द्राणीने नन्दन बनमें लक्ष्मीने श्वेतद्वीपमें राज्ञीने भारत
मण्डलमें अरुन्धतीने दारुबनमें स्वाहाने मेरुपर्वतपरसीता
देवीने अयोध्यामें देवकीने रैवताचल पर औ भानुमतीने
यह व्रत नागपुरमें कियाहै जोस्त्री भाद्रमासमें पुष्प अक्षत
धूप दीप नैवेद्य आदि करके कदलीका पूजनकरैं वे कभी
दुःखोंकरके पीड़ित न होयँ औ उनके वंशमें बिधवा कुरूपा
कुलटा आदि कन्या उत्पन्न न होयँ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

उतथ्यमुनि औ अंगिरामुनिकीकथा, शिवचतुर्दशीका विधानऔफल॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र पूर्वकाल
में जब अग्नि नष्टहोगया औ देवताओंको अग्निकाकाम
पड़ा उससमय अग्निका काम किसनेदिया यह आप व-
र्णनकरैं आप सबकुछ जानते हैं इसलिये पूछाहै यह राजा
का वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज जब
तारकासुरने देवताओंको पराजितकर स्वर्गसे निकालदिया
उससमय सब देवता ब्रह्माजीके समीपगये औ उनसे प्रा-
र्थनाकरी कि महाराज तारकासुरने हमको बहुत सताया है
उसके नाशका कोई उपाय कल्पना कीजिये तब ब्रह्माजी
ने कहा कि हे देवताओ पार्वती औ शिवजीके वीर्यसे उ-
त्पन्न औ गंगा अग्नि कृत्तिकाआदि करके बर्द्धित बालक
इस दैत्यको मारैगा यह ब्रह्माजीका वचनसुन देवता शिव
जीके समीपगये औ प्रणामकर सबवृत्तान्त सुनाया शिव

ीनेभी बालक उत्पन्न करना अंगीकार कर देवताओंको
वसर्जनकिया औ आप मैथुनमें प्रवृत्तभये इसमें एक दि-
व्यहजार वर्षसेभी अधिककाल बीतगया औ मैथुनसमाप्त
न भया तब देवताओं को बड़ा भयहुआ औ परस्पर वि-
चार करनेलगे कि शिव पार्वतीसे जो बालक उत्पन्नहोगा
वह तारकासुरका बधकरैगा परन्तु अभीतो सुरतहीसमाप्त
नहींहोता बालक क्याजाने कब उत्पन्नहोगा इसलिये इन-
के सुरत निवृत्तिका उपाय करनाचाहिये यह सबदेवताओं
ने विचारकर अग्नि औ वायुको वहां भेजा अग्निको पा-
र्वतीजीनेदेखा औ लज्जितहो शिवजीको सूचनकिया तब
शिवजीने कहा कि हे प्रिये अब हमारेवीर्यको अग्नि धा-
रण करेगा यह शिवजी का वचन सुनतेही अग्नि वहां से
अन्तर्द्धानभया तब देवता अग्निको ढूँढ़नेलगे परन्तु स्वर्ग
भूमि आकाश आदिमें कहीं पता न लगा तब देवताओं
ने कृमि कीट पतंग औ मण्डूकों को पूछा उनने अग्निका
मार्ग बताया इसलिये उनको अग्नि ने शापदिया कि तु-
म्हारी मनुष्यबाणी जातीरहै फिर देवताओंने हाथियोंको
पूछा हाथियों ने कहा कि अग्नि हमारे शरण में आया है
यह सुनतेही हाथियों को अग्निने शापदिया कि तुम्हारी
जिह्वा उलटीहोजाय यह शापदे अग्नि हाथियोंके मुखसे
निकल चलागया तब देवताओंने हाथियोंको वरदिया कि
अग्निके शापसे तुम्हारी जिह्वा उलटी तो होजायगी परंतु
संज्ञा औ चेष्टाकरके सबकुछ कहसकोगे औ समझोगे इतना
कहदेवता आगेगये वहांजीवंजीव नामकपक्षी देखा उसको
देवताओंने अग्निका पतापूछा परन्तु वहकुछ न बोला औ

बारम्बार पूछनेपरभी चुपरहा तब अग्निने प्रसन्नहो उसको वरदिया कि हे जीवंजीव मैं प्रसन्नहोकर तुझको वरदेता हूँ कि जबतक तेरी इच्छाहो तबतक जीतारह औ मनुष्यके समान तेरी वाणी होय औ जो तेरा मांस भक्षणकरै वह भी अजर औ अमर होजाय एक सौ बारहबर्ष के अनन्तर क्षणमात्र तूम्लानहुआ करैगा परन्तु मृत नहींहोगा यह वर जीवंजीवको देकर अग्नि वहांसे चला औ बांस के बीच जायछिपा देवता भी वहां पहुंचे औ बांससे कहा कि उष्मा करके तेरावर्ण कलुष होरहाहै इसलिये तेरेगर्भ में अग्नि है हे बंश तू हमको अग्नि बतादे हम तुझको वरदेते हैं कि जो गृहस्थी अथवा ब्रह्मचारी तेरीयष्टि धारण करेगा उसको पंचाग्नि तपने का फल प्राप्तहोगा यह देवताओं से वरपाय बंशने अग्निको प्रकट करदिया तब प्रसन्नहो देवताओंने अग्निसेकहा कि तुम शिवजीका वीर्यधारणकरो अग्निनेदेवताओंके कहेसे शिवजीका वीर्य धारा परन्तु उसकेतेजसे दग्धहोनेलगा तब जाकर वह बीर्य अग्निने गङ्गामें डाला गङ्गाभी दग्ध होनेलगी तब अपने तटपर शर वनके बीच फेंकदिया वहां कुमार उत्पन्न भया जिसने तारकासुर को मारा इतनी कथा सुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जितने काल अग्नि गुप्तरहा उतनेसमयमें अग्निकाकाम किसने किया यह आप कथनकरैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज उतथ्यमुनि औ अंगिरामुनिका विद्यामें औ तपमें परस्पर बड़ा बिवाद हुआ उतथ्य कहैं कि हम अधिकहैं औ अंगिराकहैं कि हम इसका निश्चय करनेके लिये दोनों

ब्रह्म लोकमें गये औ ब्रह्माजीसे सबवृत्तान्त कहा तब ब्रह्माजीने उनसे कहा कि तुम जाकर सब देवता औ लोकपालोंको लेआओ तब सबके सम्मुख तुम्हारा बिवाददेखकर निश्चयकहैंगे यह ब्रह्माजीकाबचनसुन दोनों मुनिगये औ देवता ऋषि गन्धर्व किन्नर यक्ष राक्षस दैत्य दानव आदि सबको बुलालाये केवल सूर्य्यभगवान् नहीं आये तब ब्रह्माजीने कहा कि सूर्य्यकोभी किसी प्रकारसे लाओ यह सुन उतथ्यमुनि सूर्य्यनारायणके समीपगये औ उनसे कहा कि आप शीघ्र हमारे साथ ब्रह्मलोकको चलैं तब सूर्य्यभगवान्ने कहा कि हे उतथ्यमुनि हमारा चलना किस प्रकार होसके जो हम तुम्हारे साथ जायँ तो जगत्में अंधकार छाजाय इसलिये हमनहीं चलसक्ते यह सुनि उतथ्यमुनि वहांसे चलेआये औ ब्रह्माजीको सब वृत्तान्त सुनायातब उनने अंगिरामुनिसे सूर्य्यभगवान्के लानेकेलिये कहा अंगिरामुनि ब्रह्माजीकी आज्ञापाय सूर्य्यनारायणके समीपगये औ सबबातकही सूर्य्यनारायणने वही उत्तर इनको दिया जो उतथ्यको दिया था तब अंगिराने कहा कि आप ब्रह्मलोकको जाइये हमआपके बदले यहां रहकर प्रकाशकरैंगे यह सुन सूर्य्यनारायण ब्रह्मलोकको गये औ अंगिरा प्रचण्ड तेजसे तपनेलगे सूर्य्यभगवान्ने ब्रह्माजी से पूछा कि किसलिये हमको आपने बुलायाहै तबब्रह्माजी ने कहा कि आप तो शीघ्र अपने स्थानपर जायँ नहीं तो अंगिरामुनि सम्पूर्णब्रह्माण्डको दग्धकरडालैगा देखो गोलोक दग्धहोकर कृष्णवर्णहोगयाहै शाकद्वीप जलाजाता है इसलिये शीघ्रही आपजायँ यह सुनतेही सूर्य्यभगवान्

उलटे अपने स्थानपर आये औ अंगिरामुनिको प्रशंसा कर विसर्जनकिया तब अंगिरा देवताओं के समीप आये औ देवताओंसे कहा कि हम तुम्हारा कौनकार्य करें तब देवताओंने अंगिरामुनिकी बड़ीस्तुतिकरी औ कहा कि जब तक हमअग्निको ढूंढ़ें तबतक आप अग्निका कामदीजिये यह देवताओंका वचनसुन अंगिरामुनि अग्निका कामदेने लगे जब अग्निआये तो देखा कि अंगिरामुनि अग्निबन रहेहैं उनसे कहा कि हेमुनि हमारास्थान छोड़दो हमतुम्हारे ज्येष्ठपुत्र बनैंगे औ औरभी बहुतपुत्र तुम्हारे होंगे यहवर-पायअंगिराने अग्निका स्थानछोड़दिया अग्निका अवतार वृहस्पति अंगिराके ज्येष्ठ पुत्रभये औ सैकड़ों पुत्रपौत्र और भीअंगिरामुनिके उत्पन्नभये अग्निको अपना स्थान चतु-र्दशीतिथिको प्राप्तभया इसलिये यहतिथि अग्निको अति प्रियहै स्वर्गमें देवता औ भूमिपर मान्धाता मनुनहुष आदि बड़े २ राजाओंने इसतिथिको मानाहै जो पुरुषयुद्धमेंमारे जायँ सर्पआदि काटनेसे मरैं नदी पर्वत अग्नि विषआदि निमित्तसे मरेहों औ जिनने आत्मघात कियाहोउनका इस तिथिमें श्राद्धकरना चाहिये जिससे वे सद्गतिको प्राप्तहोयँ इसतिथिके व्रतका हम विधान कहते हैं चतुर्दशीको उप-वासकरै औ गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्यआदिसे त्रिलोचन श्रीसदाशिवका पूजनकरै औ रात्रिको पंचगव्य अथवा लवण तैलरहित भोजनकरै औ अग्नयेस्वाहा हव्यवाहा-यस्वाहा सोमायस्वाहा अंगिरसेस्वाहा। इन मन्त्रों से अष्टोत्तरशत कृष्णतिलोंका हवनकरै दूसरेदिन प्रभातही स्नानकर पंचामृतसे शिवजीको स्नानकराय भक्तिसेपूजन

करै औ पूर्वोक्तरीतिसे हवनकर हाथजोड़ (नमोस्तुभूतपतयेनमःसूर्याग्निरूपिणे । पुत्रान्यच्छसुखंयच्छमोक्षंयच्छनमोस्तुते) यह मन्त्रपढ़े पीछे आरतीकर ब्राह्मणकोभोजन कराय उनको दक्षिणादे मौनसे आपभी भोजनकरै इसप्रकार एकवर्ष व्रत कर सुवर्णकी शिवप्रतिमा बनाय चांदी के वृषपर चढ़ाय दो श्वेत बस्त्रोंसे आच्छादितकर ताम्र पात्र में स्थापन करै पीछे गन्ध श्वेत पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजनकर ब्राह्मणको देवै जो बनपड़े तो इस ब्रत को सदाही करतारहे एकवर्ष जो इस ब्रतकोकरै वह दीर्घ आयुष् भोगकर तीर्थपर प्राणत्यागताहै औ दिव्यविमान में बैठ दिव्य नारियोंकरके सेवित स्वर्गमें जाय देवताओं के साथ विहार करताहै वहां बहुतकाल सुखभोग भूमिपर राजाहोताहै औ दाता यज्ञ करनेहारा चतुर ब्राह्मण प्रिय पुत्रपौत्र औ उत्तम पत्नी करके युक्तहोता है शुक्लचतुर्दशी को जो मनुष्य भक्तिसे शिवपूजन करैं उनको सब दुर्लभ पदार्थ भी प्राप्त होते हैं ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

श्रवणिका ब्रतका विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र श्रवणिका ब्रत किसप्रकार करनाचाहिये औ कब करनाचाहिये यह आप वर्णनकरैं यह सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हेमहाराज मार्गशीर्षआदि बारहों महीनोंमें जब द्रव्य प्राप्ति होय औ भक्तिहोय तबहीं यह ब्रत करनाचाहिये औ विधान इसका यहहै कि शुक्लपक्षकी चतुर्दशीको अथवाअष्टमीको पूर्वाह्नमें स्नानआदिकर पतिव्रता सुरूपा औ सौ-

भाग्यवती ग्यारह नारियोंको निमन्त्रण देकर बुलावै औ वेद वेदांग जाननेहारे एक ब्राह्मणको निमन्त्रितकरै फिर पाद्य अर्घ्य चन्दन पुष्प धूप दीपआदिसे उन सबका पूजनकर कण्ठसूत्र कटिसूत्र वस्त्रआदि उनको देकर अनेक प्रकारके पक्वान्न उनकेआगे परोसे औ एक २ जलपूर्ण वर्द्धनीपात्रभी सबकेआगे रक्खै वे वर्द्धनीपात्र पुष्पमाला चन्दन वस्त्रआदिसे भूषित औ सुवर्णयुक्तहोयँ फिर हाथ जोड़कर यजमान यह मन्त्रपढ़ै (यद्बाल्येयच्चकौमारेवार्द्धकेवापियत्कृतम्। तत्सर्वंनाशमायातुऋणंदेवर्षिपितृजम्। इमंमांसमयेपूर्णे तारयस्वभवार्णवात्।अनृणोगंतुमिच्छामि विष्णोःपदमनुत्तमम्) वे सब ब्राह्मणी भी एवमस्तु यह वाक्य उच्चारणकरैं पीछेवह ब्राह्मण वर्द्धनीपात्र उठाकर(अमुस्याःशिरसोदेव्याः समुत्तीर्यरुहक्रमम् । कटुकंनिम्बवृक्षंच ततोवृक्षमधोरुहम् । ततो गच्छ महादेवं श्रवणिश्रवणिकोत्तमे) इस मन्त्र से यजमान के शिर पर घुमावै पीछे यजमान उन सब को भोजन वस्त्र दक्षिणा आदि देकर सन्तुष्ट करे जो स्त्री अथवा पुरुष इस व्रत को करै वह सुख पूर्वक प्राण त्यागताहै औ इसव्रतकाकरनेहारा पुरुष आरोग्य पुत्रपौत्र धन आदि पाय सौ वर्ष संसार का सुखभोग अन्तमें इन्द्रलोकको जाताहै औ स्त्री इसव्रतको करै तो गौरीलोकमें निवासकरै स्त्री को मन्त्र विना भी व्रत आदि करनेसे उसका फलहोसक्ता है जो इसव्रतके माहात्म्यको भक्तिसे सुनैं वे भी सब पापोंसे छूट परमगति को प्राप्त होते हैं जो पुरुष भक्तिसे श्रवणिका व्रतकरै औ गुड़ घृत युक्त पक्वान्न स्त्रियोंको भोजन कराय दक्षिणा सहित

जल पूर्णपात्र उनको देवैं वे बहुत दिन सुखभोग उत्तम गति पाते हैं ॥

पचासीवां अध्याय ॥

नक्तव्रत का विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब आप नक्त व्रत का विधान श्रवण कीजिये जिसके जाननेसेही मनुष्य मोक्ष को प्राप्तहोय चाहे जिस मास की कृष्णचतुर्दशीको ब्राह्मण भोजन कराय नक्तव्रतका आरंभकरै प्रतिमासमें दो अष्टमी औ दो चतुर्दशी होती हैं उसदिन भक्तिसे शिव पूजन करै औ शिवध्यानमें तत्पर रहै रात्रिके समय भूमि को पात्र बनाय उसपर रख भोजन करै उपवाससे उत्तम भिक्षा भिक्षासे अयाचित औ अयाचितसे भी उत्तम नक्त है इसलिये नक्तव्रत करना चाहिये पूर्वाह्नमें देवता भोजन करते हैं मध्याह्नमें मुनि अपराह्नमें पितर औ सायंकालमें गुह्यक आदि भोजन करते हैं इसलिये सबके पीछे नक्तभोजन करना चाहिये नक्तव्रत करनेहारा पुरुष नित्य स्नान हविष्य औ लघु अन्नका भोजन नित्य हवन औ भूमि शयनकरै इसभांति एकबर्ष व्रतकरके अन्तमें सुवर्ण का चांदी का अथवा ताम्रका पात्र घृतसेभर पूर्ण कलश के ऊपर स्थापनकरै कपिला गौ के पंचगव्यसे मृत्तिका के शिवलिंगको स्नान कराय फल पुष्प यव क्षीर दधि दूर्वा तिल चावल ये आठ बस्तु जलमें डाल अर्घ्य देवै दोनों जानु भूमि पर रख पात्रको शिरतक उठाय महादेवजीको अर्घ्य देवै पीछे अनेक प्रकारके भक्ष्य भोज्य औ भात करके वलिदेवै औ एक उत्तम सवत्सा गौ औ एक धुरंधर

वृष दरिद्री औ वेदवेत्ता ब्राह्मण को दक्षिणा सहित देवै इस ब्रतका करनेहारा दिव्य देह धार अप्सराओं करके सेवित उत्तम बिमानमें बैठ रुद्रलोकको जाताहै वहां तीन सौ कोटि वर्ष पर्यंत सुख भोगकरराजा बनता है एकबार भी जो इस बिधानसे नक्तब्रत कर श्रीसदाशिवका पूजन करै वह बिमानमें बैठ स्वर्गको जाताहै ॥

छियासीवां अध्याय ॥

प्रतिमास की शिवचतुर्दशी का बिधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र और भी जो कोई भुक्तिमुक्तिदेनेहारा ब्रत होय तो आप वर्णन कीजिये तब श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज अब हम तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध शिवचतुर्दशीका बिधान कहते हैं मार्गशीर्ष मासकी शुक्ल त्रयोदशीको एकबार भोजनकरै औ चतुर्दशीको निराहार रहकर पार्वती सहित शिवजी कापूजनकरै गन्ध पुष्प धूप दीप आदि करके । नमः शिवाय नमःसर्वात्मने नमस्त्रिनेत्रायनमोहरये नमइन्दुमुखाय नमःश्रीकंठाय नमःसद्योजाताय नमोवामदेवायनमोऽघोराय नमस्तत्पुरुषाय नमईशानाय नमोऽनन्तधर्मायनमो ज्ञानरूपायनमोऽनंतवैराग्यायनमोऽनंतैश्वर्यायप्रधानायनमः व्योमात्मनेनमः व्योमव्योमात्मरूपायनमः ॥ इनमन्त्रों से पादललाट नेत्र मुख कंठ कर्ण भुज हृदय स्तन उदर पार्श्वकटिऊरु जानुजंघागुल्फऔ पृष्ठइनअंगोंका पूजन करै ॥ सृष्ट्यैनमः तुष्ट्यैनमः । इनमन्त्रोंसे पार्वतीकाअर्चन करैफिर सुवर्णका वृषशुक्लवस्त्रपंचरत्न औ अनेक प्रकारके भक्ष्यभोज्य ब्राह्मण को देवै (प्रीयतांदेवदेवोत्रसद्योजातः

पिनाकधृक्) यहमन्त्रपढ़ उत्तराभिमुखहो घृतप्राशनकर भूमिपर शयनकरै प्रतिमासकी शुक्ल चतुर्दशीको यहीविधानकरै औ मार्गशीर्षआदि महीनोंमें शयनकेसमय (शंकरायनमस्तुभ्यंनमस्तेपरवीरहन्। त्र्यंबकायनमस्तेस्तु महेश्वरततःपरम् १ नमःपशुपतेनाथ नमस्तेशंभवेपुनः। नमस्तेपरमानन्दनमःसोमार्द्धधारिणे॥ नमोभीमायचोग्रायत्वामहंशरणंगतः २) येमन्त्र हाथजोड़करपढ़ै औ इन बारहमहीनों में क्रमसे गोमूत्र गोमय दुग्ध दधि घृत कुशोदक पंचगव्य घृत दुग्ध कमल गोशृङ्ग जल कृष्णतिल ये प्राशनकरै औ मन्दार मालती केतकी सिंदुवार अशोक मल्लिका कुब्जक पाटला अर्कपुष्प कदम्ब कमल औ उत्पल इन करके क्रमसे बारहों चतुर्दशियों को पूजनकरै इसप्रकार एकवर्षकरके कार्त्तिकमासमें भक्तिसे शिवपूजन कर अनेक प्रकारके भोजन वस्त्र भूषण दक्षिणाआदिदेकर ब्राह्मणोंको सन्तुष्टकर नीलेरंग का वृषछोड़ै औ एक गौ तथा एकवृष सुवर्णका बनवाय आठ मोतियों सहितउत्तम शय्यापर रक्खै जलका कुम्भ चावल घृत दक्षिणाआदि सहित वह सब सामग्री वेदवेत्ता शान्तचित्त सपत्नीकब्राह्मणकोदेवै इसमें कभी वित्तशाठ्य न करै इस व्रतको जो पुरुष भक्तिसेकरै उसके सब पाप नष्टहोजाते हैं हजारअश्वमेधका फल पाताहै औ दीर्घायुष् ऐश्वर्य सन्तान विद्या आदिपाय बहुतदिन संसार सुखभोग विष्णुलोकादिकों में विहार करताहुआ शिवलोकमें प्राप्तहोताहै इसव्रत के सम्पूर्ण फलको वृहस्पति ब्रह्मा अनन्त सिद्ध आदि भी नहीं वर्णनकरसक्के जो इसमाहात्म्य को पढ़ै सुनै वह भी

शिवलोक को जाताहै जो नारी पतिकी औ गुरुकी आज्ञा लेकर इसब्रतकोकरै तो वहभी परमेश्वरके अनुग्रहसे शिव-लोकको प्राप्त होय ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

सर्वफल त्याग ब्रतका माहात्म्य औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम सर्व फलत्यागका माहात्म्य वर्णन करतेहैं आप प्रीतिसे श्रवण करैं मार्गशुक्ल चतुर्दशीको अथवा और मासकी अष्टमीको ब्राह्मणोंको पायस भोजन कराय दक्षिणादे इसब्रतका आ-रम्भकरै बर्षभर कोई फल मूल भक्षण न करै वर्षके अन्त में चतुर्दशीके अथवा अष्टमीके दिन सुवर्णके रुद्र धर्मराज औ कूष्माण्ड मातुलुंग बृन्ताक पनस आम्रातक कपित्थ कलंज श्रीफल जम्बीर कदलीफल बेर दाडिम ये फल सुवर्णके बनावै उदुम्बर नारिकेलद्राक्षा दोनों कटेली क-कोल एला ककड़ी करीर कुटज शमी ये फल चांदीके ब-नावै औ ताम्रका तालफल बनावै औ पिण्डारक खजूर सूरण कन्द पनस लकुच चिर्भट शाल्मलि फल करेला इंगुदी पटोल ये सब फलभी तांबे के बनवावै दो जलके कुम्भ दो वर्द्धनीपात्र दोपात्र भोजनसहित औ धेनु तथा पूर्वोक्त सबफल वेदवेदांग जाननेहारे शांतचित्त औ कुटुंबी ब्राह्मण को शिवजी औ यमराजकी प्रसन्नताके लिये देवै औ (यथाफलेषुसर्वेषुवसंत्यमरकोटयः। तथासर्वफलत्यागा च्छिवभीतिःसदास्तुमे ॥ यथाशिवश्चधर्मश्चसदानन्तफ लप्रदौ। तद्युक्तफलदानेन स्यातांमेचवरप्रदौ॥ यथाफला न्तिकामानि शिवभक्तस्यसर्वदा । तथानन्तफलावासिर-

स्तुमेजन्मजन्मनि ॥ यथाभिन्नान्नपश्यामि शिवविष्णवर्कप
द्मजान्। तथाममास्तुविश्वात्मा शंकरःशंकरःसदा) येमंत्र
पढ़ै। सब उपकरणों सहित उत्तम शय्या भूषण दक्षिणा
औ जलकुम्भ ब्राह्मणको देकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन
करावै परन्तु तैल क्षारवर्जित भोजनदेवै जो सबफल न त्याग
सकै तोएकही फलकात्यागकरै औ सुवर्णआदिबनवायइस
बिधानसे ब्राह्मणकोदेवै यहब्रत शैव बैष्णव भागब्रत योगी
आदि सबकोंकरना चाहिये वेदवेत्ता इससर्व फल त्याग
ब्रतको अतिशस्त कहतेहैं फलोंमें जितने परमाणु होयँ उ-
तने हजार युग इस ब्रतका करनेहारा रुद्रलोकमें निवास
करताहै नारियोंको भी यहब्रत अवश्यकरना चाहिये इस
ब्रतके करनेहारेको किसीजन्ममें इष्टबियोग नहीं होता औ
अन्तमें स्वर्गबास मिलताहै जो भक्तिसे इसमाहात्म्य को
पढ़ै अथवा सुनै वहभी सबपापोंसे छूट स्वर्गको जाताहै ॥

अठासीवां अध्याय ॥

तारा के निमित्त देवताओंसे चन्द्रमाका युद्ध बिजय पूर्णिमा ब्रतका
बिधान फल औ अमावास्या को श्राद्धआदि करने का फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज पूर्णिमा तिथि
चन्द्रमा की प्रियाहै उसदिन मास पूर्णहोताहै इसलिये
उसको पर्णमासी कहते हैं पौर्णमासीको युद्धमें चन्द्रमा ने
देवताओंसे जय पायाहै बृहस्पति की स्त्री तारामें चन्द्रमा
आसक्त होगया था इसलिये देवताओंसे युद्धहुआ राजा
युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र तारा किस की पुत्री
थी चन्द्रमा उसमें क्योंकर आसक्त भया औ देवताओंसे
किस बिधि युद्धहुआ यह आप कथनकरैं यह राजा का

प्रश्न सुनश्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज प्रजा-
पति की अतिसुन्दरी तारानाम कन्या थी उसको प्रजापति
ने बृहस्पतिको बिवाहदिया वह भी यत्न पूर्बक अपने पति
की सेवा करनेमें प्रवृत्त भई एकदिन उसअतिसुन्दरी को
चन्द्रमाने देखा देखतेंही चन्द्रमा कामबश हुआ औ तारा
से कहनेलगा कि हे तारे मेरेसमीप शीघ्र आगमनकर मैं
तेरे आधीनहूं तारानेभी चन्द्रमाका अभिप्राय जान कहा
कि हे चन्द्र मैं अंगिरामुनि के पुत्र बृहस्पति की भार्याहूं
औ परदारा का तुमको गमनकरना योग्य नहीं यह तारा
का बचन सुनकर भी चन्द्रमाने न माना औ ताराका द-
हिनाहाथपकड़ अपने स्थानकोलेगया यह बात बृहस्पति
ने जानी औ बड़ाकोपकर सब वृत्तांत इन्द्रसे कहा इन्द्रने
चन्द्रमाके पास दूतभेजा परन्तु चन्द्रने कुछ न माना तब
इन्द्रने सब देवताओंको बुलाकर यह वृत्तान्त सुनाया यह
सुनतेही सब देवता औ गन्धर्व क्रोधसे जल उठे औ रथों
पर चढ़ नानाप्रकारके शस्त्र अस्त्र धार चन्द्र से युद्धकरने
उठ धाये चन्द्रमाने देवताओंकी इसभांति चढ़ाई देख
दैत्य दानव राक्षस आदि अपनी सहायके लिये बुलाये
औ आपभी रथपर चढ़ युद्धके लिये निकला दोनों ओर
की सेना मिलतेही घोरयुद्ध होनेलगा चन्द्रमाने हिमवृष्टि
से देवताओंको भगादिया औ युद्धमें जयपाय चन्द्रमाग-
र्जनेलगा देवता भी पराजितहो विष्णुभगवान् के शरण
में गये औ सम्पूर्ण वृत्तान्त उनके आगे वर्णन किया यह
वृत्तान्त सुन विष्णुभगवान् गरुड़पर चढ़ सुदर्शन चक्र
धार सब देवताओंको साथले चन्द्रमासे युद्ध करनेकेलिये

आये फिर देवता औ दैत्यों का घोरयुद्ध आरम्भ हुआ परन्तु चन्द्रमाने ऐसा युद्धकिया कि क्षणमात्रमें इन्द्रसहित सब देवता औ गन्धर्वों को जीत युद्धसे विमुखकिया तब विष्णुभगवान्ने बड़ाकोपकिया औ शंखध्वनिकर चन्द्रमा को मारनेके लिये सुदर्शनचक्र उठाय उससमय ब्रह्माजी ने कहा कि आपके चक्रको त्रैलोक्यमें कोई अवध्य नहींहै औ चन्द्रमाको हमने ब्राह्मणों का राजा बनायाहै इसलिये आप इसकाबध न करैं जो और उपाय आपकहैं वहकिया जाय तबविष्णुभगवान्ने कहा कि अमावास्याको चन्द्रमा नष्टहोय औ फिर जन्म लेकर पूर्णिमा पर्यन्त वृद्धिकोप्राप्त होय औ ब्राह्मणों के हव्य कव्य देवता औ पितरोंको प-हुँचावैं यह दक्ष का भी शाप चन्द्रमाको है यह बात सब देवताओं ने स्वीकार करी ब्रह्माजीने चन्द्रमाको बुलाकर समझाया औ कहा कि हे पुत्र गुरुकी भार्या तुम देदो फिर कभी ऐसा अबिनय मतकरना चन्द्रमाने ब्रह्माजीकी आ-ज्ञामान उसी समय ताराको वृहस्पतिके अर्पणकिया परन्तु सब देवताओं के सम्मुख यहकहा कि इसमें मेरागर्भ है जो सन्तानहोगी वहमेरी होगी यह चन्द्रका बचन सुन वृहस्पतिने कहा कि जिसका क्षेत्रहोय वह उस बीजका स्वामी होताहै बीज चाहे जिसकाहो यह वेदशास्त्र संपन्न औ धर्मनिष्ठ ऋषियोंने कहा है इसलिये इसका संतान तुमको नहीं मिलसक्ता तब चन्द्रमाने कहा कि आपका वचन ठीकनहीं है माता तो केवल गर्भ धारणकरनेकेलिये एक थैली है संतान के ऊपर पिताकाही स्वत्वरहताहै यह पौराणिकमुनियों का मतहै इसभांति चन्द्रमा औ वृहस्पति

को बिवादकरते देख ब्रह्माजीने एकान्तमेंतारासे पूछा कि तैंने किस से गर्भधारण कियाहै यह ब्रह्माजीका वचनसुन लज्जासे ताराने कुछउत्तर न दिया औ उसगर्भको उसी क्षण वहांहीं त्यागदिया वह बालक ऐसा तेजस्वी उत्पन्न भया कि संपूर्ण स्वर्गमें प्रकाशहोगया ब्रह्माजीने उस बालकसेही पूछा कि तू किसका पुत्रहै बालकने उत्तर दिया कि चन्द्रमाका पुत्रहूं तब ब्रह्माजीने प्रसन्नहो औ बालक की बुद्धिमत्तादेख उसकानाम बुधरक्खा औ चन्द्रमाको दियाचन्द्रमा उसबालकको ले प्रसन्नहोताहुआ अपनेघर आया औ ब्रहस्पति भी अपनी भार्याकोले धीरे २ अपने सदनको गये चन्द्रमाने कहा कि पूर्णिमाको हमारा बिजय हुआ औ उत्तम पुत्रपाया इसालिये यहतिथि हमको अत्यन्तप्रियहै इसदिन जो पुरुष औ स्त्री व्रतकर हमारा पूजनकरैंगे उनके सब मनोरथ पूर्णहोंगे इतनी कथा सुनाय श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज पूर्णिमाके दिन नदी आदिमें स्नानकर देवता औ पितरोंका तर्पण करै पीछे घरमें आय मण्डलबनाय उसके बीच नक्षत्रों सहित चन्द्रमालिख श्वेत गन्ध पुष्प धूप दीप घृतपक्व नैवेद्य औ शुक्लवस्त्रकरके चन्द्रमाका पूजनकर क्षमापनकरावै औ सायंकालके समय(गगनार्णवमाणिक्यंचन्द्रदाक्षायणीप्रिय गृहाणार्घ्यंमयादत्तम त्रिनेत्रसमुद्भव) इसमन्त्रसे अर्घ्य देकर रात्रिके समय मौनसे शाकाहारकरै यहव्रत सबमनोरथ पूर्ण करनेहाराहै अमावास्या तिथि पितरोंको प्रियहै उसदिन दानतर्पण आदिकरनेसे पितरों की तृप्तिहोती है जो अमावास्याको उपवासकरै उसको अक्षयवटकेनीचे श्राद्धकर-

नेका फलहोताहैजो अमावास्याको पिंडदानकरै वह इक्कीस कुलका उद्धार करताहै औ आपभी बहुतकाल पितृलोक में सुखभोगकर पांच जन्मतक धनवान् औ विद्वान् ब्राह्मण होताहै एकवर्षपर्यंत पूर्णिमाव्रतकरके नक्षत्र सहितचन्द्रमा की सुवर्णकी प्रतिमा बनाय बस्त्र भूषण आदिसे उसका पूजनकर ब्राह्मणको देवै इसव्रतका करनेहारा पुरुष सब पापोंसे मुक्तहो चन्द्रमा की भांति शोभित होताहै औ पुत्र पौत्र धन आरोग्य आदि पाय बहुत काल संसार सुख भोग अन्तसमय प्रयागमें प्राण त्यागकर बिष्णुलोक को जाताहै वहां गन्धर्व औ अप्सरा उसकी सेवामें रहती हैं वहां तीनअयुतकल्प निवासकरताहै जो पुरुष पूर्णिमाको चन्द्रमाका पूजनकरैं और अमावास्याको पितृ तर्पण पिंड दान आदि करैं वे धनधान्य संतान आदिसे कभी खाली नहीं रहते॥

नवासीवां अध्याय॥

वैशाखी कार्तिकी औ माघी पूर्णिमा का बिधान औ फल॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि बर्षभरमें कौन २ तिथि स्नान दान आदिमें अधिक पुण्यप्रदहै उनका आपबर्णनकरैं यह सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज वैशाख कार्तिक औ माघ इनतीन महीनोंकी पूर्णिमा स्नानदानकेलिये अतिश्रेष्ठहै इनको स्नानदानबिना न बितावै तीर्थोंमें स्नान करै औ वित्तानुसार दानदेवै वैशाखीको गंगामें कार्त्तिकीको पुष्करमें औ माघीको काशीमें स्नानकरै उसदिन जोपितरों का तर्पणकरै वहअनन्त फलपाताहै औ पितरोंका दुष्कृत से उद्धार करताहै वैशाखीको भोजन सुवर्ण औ वस्त्रसहित

जलपूर्ण कुम्भ ब्राह्मणों को देवै वह सब उत्तम फल पावै अनेक प्रकारके भोजन गौ भूमि सुवर्ण वस्त्र आदि कार्त्तिकी पूर्णिमाको देवै औ माघीपूर्णिमाको देवता औ पितरों का तर्पणकर सुवर्णसहित तिल पात्र कम्बल रुईकेवस्त्र कपास रत्नआदि दानकरै कार्त्तिकी पूर्णिमाको वृषोत्सर्गकरै भगवान्‌का नीराजन करै हाथी घोड़े रथ औ घृत धेनु आदि दश धेनुओंका दानकरै औ कदली खजूर नालिकेर दाड़िम मातुलंग ककड़ी वृन्ताक करेलाबिम्ब कूष्माण्डआदि फल दानकरै इन तिथियों को जो स्नान दानआदि नहीं करते वे जन्मान्तरमें रोगी औ दरिद्रीहोतेहैं ब्राह्मणोंको दान देने का तो फलहैही परन्तु बहिन भानजे दौहित्र बूआ आदिको दान देनेकाभी इन तिथियोंमें बड़ा पुण्यहोताहै मित्र कुलीन बिपत्ति करके पीड़ित दरिद्री औ आशा करके दूरसे आयाहो वह अतिथि उत्तमहै उसको दानदेने से स्वर्गकी प्राप्तिहोती है सीता औ लक्ष्मण सहित रामचन्द्र जब बन को चलेगये उस समय मातामहके घरसे आय भरतने कौशल्याके आगे बहुत शपथ किये परन्तु कौशल्याको विश्वास न भया तबभरतने यह शपथकिया कि वैशाखी कार्त्तिकी औ माघी पूर्णिमा बिना स्नान दान केमेरी व्यतीतहोयँ जो मेरीसम्मतिसे रामचन्द्र वनकोगये होयँ तो यह सुनतेही कौशल्या को विश्वास आगया औ भरतको अपने अंकमें बैठाय आश्वासन किया इनतीनों तिथियोंका सम्पूर्ण माहात्म्य कौन वर्णन करसक्ता है यह हमने संक्षेपसे कहाहै इनतीनों तिथियोंको जल अन्न वस्त्र पात्र छतुरीआदि दानकरनेहारे पुरुष इन्द्रलोककोजातेहैं॥

नब्बेका अध्याय॥

युगादि तिथियोंका माहात्म्य औ विधान॥

राजायुधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र औरभी जो तिथि ऐसी होयँ कि जिनको किये स्नान दान जपआदि अक्षय होतेहैं उनका आप वर्णन करैं यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज यह अत्यन्त रहस्य हम आपको कहते हैं जो आजतक किसी को नहीं कहाथा वैशाख शुक्लतृतीया कार्त्तिकशुक्ल नवमी भाद्रकृष्ण त्रयोदशी औ माघकी पूर्णिमा ये चारों तिथि युगादि हैं अर्थात् इन तिथियोंको क्रमसे चारोंयुगोंका प्रारम्भहुआ है इन तिथियोंको उपवास तप दान जप होमआदि करने से कोटिगुण फल होताहै वैशाखशुक्ल तृतीयाको गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य वस्त्र भूषणआदिसेलक्ष्मी सहित नारायण का पूजनकर मेष के चर्मपर लवण धेनु स्थापन करै औ उसके चतुर्थांश प्रमाण बछड़ाबनावै पीछे शास्त्रकी रीतिसे दान कर ब्राह्मणको देवै औ (श्रीधरः श्रीपतिः श्रीमान् श्रीशःप्रीयताम्) यह वाक्यकहे तो दशहजार गोदानका फलपावै कार्त्तिकशुक्ल नवमीको नदी तड़ागआदिमेंस्नान कर पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि करके पार्वती सहित श्री सदा शिवका पूजनकरे औ तिल धेनु दानकरै (अष्टमूर्त्तिर्नीलकण्ठःप्रीयताम्) यहवाक्य उच्चारणकरै इसप्रकार तिल धेनुदान करनेहारा शिवलोकमें निवासकरताहै भाद्र कृष्ण त्रयोदशी को पितृ तर्पण कर शहद औ घृत युक्त अनेक प्रकारके पकान्नोंसे ब्राह्मण भोजन कराय दुग्धदेने हारी सुन्दर तरुण सवत्सा गौ ब्राह्मणकोदेवै औ (पिता

पितामहःप्रपितामहश्चप्रीयताम्)यहवाक्यकहै इसप्रकार गोदान करनेसे जो फल प्राप्तहोताहै उसका कोटि वर्षमें भी बर्णननहीं करसक्के वह पुरुष इसलोकमें पुत्रपौत्र ऐश्वर्य्य औ परलोकमें सद्गतिपाता है माघपूर्णिमा को गायत्री सहित ब्रह्माजी का पूजनकर सुवर्ण बस्त्र अनेक प्रकारके फलोंसहित नवनीत धेनुका दानकरे औ (पितामहः पद्म योनिःप्रीयताम्)यहवाक्यकहै इसप्रकार दान करनेवालों को तीनलोकमें कोईपदार्थदुर्लभनहीं इन युगादि तिथियों में जोदानकरै वह अक्षयहोताहै निर्धनहोय तो थोड़ा २ ही दान करै उसीका अनन्त फलहै शय्या आसन छतुरी जूता बस्त्रसुवर्ण भोजन आदि ब्राह्मणोंको देना चाहिये इन तिथियों को यथा शक्ति ब्राह्मण भोजनकराय मौनसे आपभी भोजनकरै युगादि तिथियोंको दानपूजन आदि करनेसे कायिक वाचिक औमानस सब प्रकारके पापनष्ट होजातेहैं औ दान करनेहारा अक्षय स्वर्गबास पाताहै इन युगादितिथियोंमें किये स्नानदान आदि कोटि गुण होजातेहैं यह व्यासादि मुनि कहते हैं ॥

इकानबेका अध्याय ॥

सत्यवान् औ सावित्रीकी कथा,सावित्री ब्रत का विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप सावित्री ब्रतका विधान कथनकरैं यह राजाका बचनसुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज सावित्री नाम राजकन्याने बनमें जिस प्रकार यह ब्रत किया उसका हम नारियोंके हितके अर्थ वर्णन करतेहैं पूर्वकालमें बड़ा पराक्रमी सत्यवादी क्षमावान् जितेन्द्रिय प्रजाके हितमें तत्पर

अश्वपति नाम राजाथा उसके कुछ संतान न भई इस-
लिये वह सावित्री व्रतकिया करता कुछ कालके अनन्तर
ब्रह्माजीकी पत्नी सावित्री ने प्रसन्नहो राजाको वरदिया
कि हे राजन् एककन्या तेरे उत्पन्नहोगी इतना कह कम-
ण्डलुधरा श्रीसावित्री देवीअन्तर्द्धानभई औ थोड़े कालके
अनन्तर राजाके अतिसुन्दरी एककन्या उत्पन्नभई सावि-
त्रीके बरसे प्राप्तभई इसलिये राजाने उसका नामसावित्री
रक्खा कुछ कालके अनन्तर वह तरुण अवस्थामें प्राप्तहुई
तब तो उसका इतनातेजबढ़ा कि मानोंतप्त सुवर्णके उस
के अंगहोयँ औ देखने वालोंको यही निश्चयहोय कि यह
कोई देवकन्याहै वह कन्याभी पिताके उपदेशसे सावित्री
व्रत किया करती एक दिन व्रतकर शिर स्नान किया औ
सावित्री का पूजन औ हवन आदि कर अपनी सखियों
सहित पिताके पासगई पिताको प्रणामकर बिनयसे हाथ
जोड़ बैठगई राजाने पुत्री का रूप औ तारुण्य देख कहा
कि हे पुत्री तू अबवर योग्यहुई औ कोई तेरेकोवरता नहीं
अब तू मेरेधर्मकी रक्षाकर मैंने धर्मशास्त्रोंमें यह सुनाहै कि
जो कन्या पिताके घर रजस्वला होजाय वह वृषलीकहा-
तीहै औ उसका पिता ब्रह्महत्या को प्राप्तहो नरकको जा-
ताहै इसलिये वृद्धअमात्योंको साथ लेकर तू स्वयंबर के
लिये जा औ जहां अपने योग्यकोई राजकुमारदेखै उसी
को वरले सावित्री ने भी यह पिताकी आज्ञा अंगीकार
करी औ सब राज परिकर साथले वहांसे चली थोड़े काल
मेंही राजर्षियोंके आश्रम सब तीर्थ औ तपोबनोंमें घूमती
वृद्ध ऋषियोंको अभिवन्दन करती मन्त्रियों सहित अपने

पिताके समीप आपहुंची उस समय नारदमुनि भी वहांबैठे थे सावित्री नारदजीको औ पिताको प्रणामकर अपना वृत्तांत कहनेलगी कि हे महाराज सब आश्रम औ तीर्थ मैंने देखे औ एकराजकुमारको मैंने वर भीलियाहै द्युमत्सेन एक राजाहै ईश्वरकी इच्छासे वह राज्य करता २ अंधाहो-गया तबउसके शत्रु रुक्मीने उसकाराज्य हरलिया औ उस को निकालदिया वह अब अपनी रानी समेत तपोबनमें रहताहै उसका एकपुत्र परम धार्मिक पिताका आज्ञाकारी सत्यवान् नामहै उसको मैंने बराहै यह सावित्रीका वचन सुन नारदमुनि बोले कि हेराजा यह बाततेरी कन्यानेअ-च्छी न करी वह बालक रूपवान् पितृभक्त ब्रह्मण्यहै औ शिविराजा के समान सत्यवादीहै इसीसे उसका नाम स-त्यवान् पड़ा औ ययातिके सदृश उदार चन्द्रकेतुल्यप्रिय दर्शन औ अश्विनी कुमारोंके समान रूपवान् है उसको अश्वबहुत प्रियहै इसलिये मृत्तिकाके अश्व बनायाकरता है औ चित्रोंमेंभी अश्वही लिखताहै इसलिये इसका नाम चित्राश्वभी पड़गयाहै अब वह राजा द्युमत्सेनका पुत्रतरुण अवस्थाको प्राप्तभया है बलीहै प्रतापीहै इस प्रकार सब गुण उसमें हैं परन्तु यही बड़ाभारी दोषहै कि आजसेवर्ष वें दिन मृत्युवश होजायगा यह नारदजी का वचन सुन सावित्रीबोली कि हेदेवर्षे राजा एक वचन कहतेहैं ब्राह्मण एक बातबोलते हैं कन्या एकबार बरीजातीहै ये तीनोंबातें बार बार नहींहोतीं अब वह दीर्घायुष् हो चाहे अल्पायुष् निर्गुणहो वा गुणवान् मैंने उसको वरलिया दूसरेपतिको कभी न बरूँगी मनमें निश्चयं करके वचनसे कहाजाताहै

औ जो वचनकहा वहीकरना चाहिये इसलिये मैंने जोमन में निश्चयकर कहा वही करूँगी यह सावित्री का निश्चय युक्त वचनसुन नारदजीने कहा कि हे पुत्रि जो तेरा ऐसा दृढ़ निश्चय है तो शीघ्र बिवाह कर परमेश्वर सब बात भली करेंगे इतना कह नारदमुनि स्वर्गको गये औ राजा नेभी शुभमुहूर्त्तमें सावित्रीका सत्यवान्से बिवाह करादिया सावित्रीभी मनोबांछित भर्त्तापाय अतिहर्ष को प्राप्त भई औ सुखपूर्वकदोनों अपने आश्रममें रहनेलगे परन्तु नारदमुनिका वाक्य सावित्रीके हृदय में खटकताथा जब वर्ष पूरा होनेपर आया तब सावित्री ने विचारकिया कि अब मेरे पतिका मृत्यु समीप है यहशोच भाद्रशुक्ल द्वादशी के प्रदोषसे तीन रात्रिका ब्रत ग्रहणकर बैठी औ सावित्री भगवती का पूजनकरती रही औ यह निश्चयथाही कि आजसे चौथेदिन सत्यवान्का मृत्युहोगा तीन दिन रात सावित्रीने नियमसे ब्यतीतकिये चौथेदिन देवता पितरोंको सन्तुष्टकर ब्राह्मण भोजन कराय अपने श्वशुर औ सास के चरणों पर प्रणाम किया सत्यवान् बन से काष्ठलाया करता उसदिन भी काष्ठलेने चला तब सावित्रीभी उसके संग चलपड़ी सत्यवान् ने वहां काष्ठकाटकर बोझबाँधा औ घरको चला परन्तु उसके मस्तकमें बेदना उत्पन्नहुई जिससे चल न सका काष्ठका बोझा तो उतार दिया औ सावित्रीसे कहा कि हे प्रिये मेरेशिरमें बहुत ब्यथाहै इस लिये थोड़ाकाल तेरेउत्संगमें शिररखकर सोना चाहताहूँ सावित्रीने कहा कि हे प्राणनाथ आप मेरेअंकमें शिररख कर सुख से शयन कीजिये आपके शिरकी व्यथा निवृत्त

होजायगी तब आश्रमको चलैंगे सत्यवान् सावित्रीके अंक में शिरधर के बटवृक्षकी छायामें सोया इतने में यमराज वहां आये सावित्रीने उनकोदेख प्रणाम किया और कहा कि देवता दैत्य गन्धर्वआदि तुम कौनहो इस बनमें मेरा धर्षण करना चाहतेहो तो यह कभीनहीं होसकैगा कोई पुरुष मुझको स्पर्श नहींकरसक्ता मैं पतिव्रताहूँ दूसरेपुरुष को मेरा स्पर्श दीप्त अग्निज्वालाकी भांति है यह सावित्री का वचन सुन धर्मराजने कहा कि हे सावित्रि सबलोकका क्षय करनेहारा मैं यमहूं इस तेरेपतिका आयुष् समाप्तहो-गया है परन्तु तू पतिव्रता है इसलिये मेरेदूत इस को न लेजासके तब मैं आपलेने आयाहूँ इतना कह यमराजने सत्यवान्के शरीरसे अंगुष्ठमात्र पुरुषको खैंचलिया औ लेकर अपने लोककोचला सावित्रीभी उसके पीछे होली बहुतदूरजाकर यमराजने सावित्री से कहा कि हे पतिव्रते अब तू लौटजा इस मार्गमें इतनीदूर कोईनहींआता तब सावित्रीने कहा कि महाराज पतिके साथआतेहुये मुझे न तो ग्लानि भई औ न कुछश्रम मैं सुखपूर्वक चलीआती हूँ वर्णाश्रमों का आधार वेद शिष्यों का आधार गुरु औ नारियोंका आधार पतिहै भूमिपर सबको आश्रयहै परन्तु मुझको इसकेबिना दूसरा कुछ अवलम्ब नहीं इसभांति धर्मयुक्त औ मधुर सावित्रीके वचन सुन यमराज प्रसन्न होकर कहनेलगा कि हे पुत्रि मैं तेरेसे प्रसन्नहुआ जो वर तुझे अपेक्षित हो मांग तब सावित्री ने पांचबर मांगे कि मेरे श्वशुरके नेत्र अच्छेहोजायँ औ राज्य मिलजाय मेरे पिताके सौ पुत्रहोयँ मेराभर्त्ता दीर्घायुषपावै सौपुत्र मेरे उ-

औ जो वचनकहा वहीकरना चाहिये इसलिये मैंने जोमन में निश्चयकर कहा वही करूँगी यह सावित्री का निश्चय युक्त वचनसुन नारदजीने कहा कि हे पुत्रि जो तेरा ऐसा दृढ़ निश्चय है तो शीघ्र बिवाह कर परमेश्वर सब बात भली करेंगे इतना कह नारदमुनि स्वर्गको गये औ राजा नेभी शुभमुहूर्त्तमें सावित्रीका सत्यवान्से बिवाह करादिया सावित्रीभी मनोवांछित भर्त्तापाय अतिहर्ष को प्राप्त भई औ सुखपूर्वकदोनों अपने आश्रममें रहनेलगे परन्तु नारदमुनिका वाक्य सावित्रीके हृदय में खटकताथा जब वर्ष पूरा होनेपर आया तब सावित्री ने विचारकिया कि अब मेरे पतिका मृत्यु समीप है यहशोच भाद्रशुक्ल द्वादशी के प्रदोषसे तीन रात्रिका ब्रत ग्रहणकर बैठी औ सावित्री भगवती का पूजनकरती रही औ यह निश्चयथाही कि आजसे चौथेदिन सत्यवान्का मृत्युहोगा तीन दिन रात सावित्रीने नियमसे ब्यतीतकिये चौथेदिन देवता पितरोंको सन्तुष्टकर ब्राह्मण भोजन कराय अपने श्वशुर औ सास के चरणों पर प्रणाम किया सत्यवान् बन से काष्ठलाया करता उसदिन भी काष्ठलेने चला तब सावित्रीभी उसके संग चलपड़ी सत्यवान् ने वहां काष्ठकाटकर बोझबाँधा औ घरको चला परन्तु उसके मस्तकमें बेदना उत्पन्नहुई जिससे चल न सका काष्ठका बोझा तो उतार दिया औ सावित्रीसे कहा कि हे प्रिये मेरेशिरमें बहुत ब्यथाहै इस लिये थोड़ाकाल तेरेउत्संगमें शिररखकर सोना चाहताहूँ सावित्रीने कहा कि हे प्राणनाथ आप मेरेअंकमें शिररख कर सुख से शयन कीजिये आपके शिरकी व्यथा निवृत्त

ह्यताम्) यह मन्त्र पढ़ वेदवेत्ता अग्निहोत्री दरिद्री औ सावित्री कल्पजाननेहारे ब्राह्मण को देवै औ सब सामग्री ब्राह्मणके घर पहुँचादेवै आपभी उसके साथ दशक़दम जाय और यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय आपभी हविष्य अन्न भोजनकरै इसीप्रकार ज्येष्ठमासकी पूर्णिमा को वटवृक्षके नीचे काष्ठभारसहित सत्यवान् औ सावित्रीकी प्रतिमा बनाय पूजनकरै रात्रि को जागरणआदि कर प्रभात वह प्रतिमा ब्राह्मणकोदेवै इसविधानसे जो सावित्री व्रतकरै वह पुत्रपौत्र धनआदि सब पदार्थ पाय चिरकाल तक भूमिपर सब सुखभोग अपने पतिसहित ब्रह्मलोक को जाती है यह व्रत पुण्यवर्द्धक पापहारकदुःख प्रणाशन औ धनदायकहै जो नारी भक्तिसे इस व्रतको करैं वे सावित्रीकी भांति दोनों कुलोंका उद्धारकर पतिसहित चिरकालतक सुख भोगती हैं जो इस माहात्म्यको पढ़े अथवा सुनै वहभी मनोवांछित फलपावै ॥

बानवेका अध्याय ॥

कलिंगभद्रा रानी की कथा कृत्तिका व्रतका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्रकहतेहैं कि हेमहाराज पूर्वकालमें मध्यदेशके बीचचक्रस्थल नामग्राममें कलिंगभद्रानाम अतिरूपवती औ बहुपुत्रा राजादिलीपकी रानीथी वहसदा ब्राह्मणों को दानदेती देवार्चनकरती ब्राह्मण भोजनकराती उससमयमें कलिंगभद्रारानी के समानकोई दूसरा दानदेनेहारा न था एकसमय उसने कार्त्तिकमासमें छःमहीनेका कृत्तिकाव्रतधारणकिया औ नित्यपूजन दान ब्राह्मणभोजन हवन आदिमें तत्पररहती व्रतमें थोड़ाकाल अवशेषथा कि एकदिन उस

त्पन्नहोयँ औ हमारीसदा धर्ममें दृढ़ श्रद्धार है धर्मराजने ये सब वर सावित्रीकोदे घरको बिदाकिया सावित्रीभी प्रसन्न होतीहुई अपनेपतिको संगलेकर आश्रममें आई भाद्रकी पूर्णिमाको जो उसने ब्रतकिया था यह सब उसका फलहै इतनीकथा सुन राजायुधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र उस ब्रतका विधान आप विस्तारसे वर्णनकरैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज भाद्रशुक्ल त्रयोदशी को शौच आदि कर तीनदिन के ब्रतका नियम ग्रहणकरै जो तीनदिन उपवास रहनेकी शक्ति न होय तो त्रयोदशी को नक्तचतुर्दशीको अयाचित औ पूर्णिमाको उपवासकरै नित्य नदी तड़ाग आदि में स्नानकरै औ पूर्णिमा को सरसोंका उबटना लगाय स्नानकरै औ बांसके पात्रमें एक सेर नदीका बालूलेआवै पीछे सुवर्णकी ब्रह्मा सहित सावित्रीकी प्रतिमाबनाय उसपर स्थापनकर दो रक्तवर्णवस्त्रों से उनको आच्छादितकरै फिर गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य से पूजनकर कूष्माण्ड नालिकेर ककड़ी तुरई खजूर कैथा दाड़िम जामुन जम्भीरी नारङ्गी अखरोट पनस गुड़ लवण जीरा सप्तधान्य आदि सब बस्तु बांसके पात्रमें रख (ओंकारपूर्विकेदेविवीणापुस्तकधारिणि । वेदमातर्नमस्तुभ्य मवैधव्यंप्रयच्छमे) यहमन्त्रपढ़ सावित्रीकोअर्पण करै रात्रिके समय जागरण करै गीत वाद्य नृत्यआदि का बड़ा उत्सवहोय नारी मिलकर गीतगावैं ब्राह्मण सावित्री कथाकहैं इसप्रकार सारीरात्रि उत्सवसे बिताय प्रभातही सब सामग्री सहित सावित्री मूर्त्ति (सावित्रीयंमयादत्ता सहिरण्यासहासना । ब्रह्मणःप्रीणनार्थाय ब्राह्मणप्रतिगृ-

द्यताम्) यह मन्त्र पढ़ वेदवेत्ता अग्निहोत्री दरिद्री औ सावित्री कल्पज्ञाननेहारे ब्राह्मण को देवै औ सब सामग्री ब्राह्मणके घर पहुँचादेवै आपभी उसके साथ दशकदम जाय और यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय आपभी हविष्य अन्न भोजनकरै इसीप्रकार ज्येष्ठमासकी पूर्णिमा को वटवृक्षके नीचे काष्ठभारसहित सत्यवान् औ सावित्रीकी प्रतिमा बनाय पूजनकरै रात्रि को जागरणआदि कर प्रभात वह प्रतिमा ब्राह्मणकोदेवै इसविधानसे जो सावित्री व्रतकरै वह पुत्रपौत्र धनआदि सब पदार्थ पाय चिरकाल तक भूमिपर सब सुखभोग अपने पतिसहित ब्रह्मलोक को जाती है यह व्रत पुण्यवर्द्धक पापहारक दुःख प्रणाशन औ धनदायकहै जो नारी भक्तिसे इस व्रतको करैं वे सावित्रीकी भांति दोनों कुलोंका उद्धारकर पतिसहित चिरकालतक सुख भोगती हैं जो इस माहात्म्यको पढ़ै अथवा सुनै वहभी मनोवांछित फलपावै ॥

बानवेका अध्याय ॥

कलिंगभद्रा रानी की कथा कृत्तिका व्रतका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हेमहाराज पूर्वकालमें मध्यदेशके बीचवृकस्थल नामग्राममें कलिंगभद्रानाम अतिरूपवती औ बहुपुत्रा राजादिलीपकी रानीथी वहसदा ब्राह्मणों को दानदेती देवार्चनकरती ब्राह्मण भोजनकराती उससमयमें कलिंगभद्रारानी के समानकोई दूसरा दानदेनेहारा न था एकसमय उसने कार्त्तिकमासमें छःमहीनेका कृत्तिकाव्रतधारणकिया औ नित्यपूजन दान ब्राह्मणभोजन हवन आदिमें तत्पररहती व्रतमें थोड़ाकाल अवशेषथा कि एकदिन

को रात्रिसमय पतिकेसाथ सोतीहुईको भयंकर सर्पनेकाटा
काटतेही उसकेप्राण जातेरहे औ जन्मान्तरमें बकरी बनी
परन्तु व्रतके प्रभावसे बकरी भी जातिस्मरा थी उसने अ-
पना कृत्तिका व्रत फिर ग्रहणकिया अपने यूथसे अलगहो
उपवास करने लगी एक दिन उसको उसके स्वामीने बां-
धरक्खा था उससमय किसी जातिस्मर ऋषिने उसको
देखा औ जाना कि यह रानी कलिंगभद्राहै तब दयाकर
बन्धनसे उसको छुटाया वहांसे छुट उसने बेरीके पत्रभक्षण
कर शीतलजल पानकर व्रत पारण किया ऋषि अपने
आश्रमकोगये औ वह अपनेव्रतमें तत्परभई औ कुछ
कालके अनन्तर उसने प्राणत्यागकिया औ गौतम ऋषि
की भार्या अहल्याकेगर्भसे उत्पन्नभई मातापिताने उसका
नाम योगलक्ष्मी रक्खा औ तरुणभई जबगौतममुनिने बड़े
तपस्वी औ शांतचित्त शांडिल्यमुनिको बिवाहदी वहभीशां
डिल्यकेघरमें सरस्वती स्वाहा अरुंधती गौरी राज्ञी गायत्री
अथवा साक्षात् महालक्ष्मीकी भांति शोभितहोतीथी नित्य
देवता पितर औ अतिथियोंके सत्कारमें लगीरहती ब्राह्म-
णोंको भोजनदेती एक दिन शांडिल्यमुनिने योग बल से
सब वृत्तान्त जानकर पूछा कि हे प्रिये कृत्तिका कितनी हैं
तब योगलक्ष्मीको भी पूर्ववृत्त स्मरणआया औ कहा कि
महाराज छःकृत्तिका हैं तब शांडिल्यमुनिने उसको मन्त्र
औ कृत्तिका व्रतका फिर उपदेश किया जिसके करनेसे
दोनों चिरकाल संसार सुख भोग स्वर्गको गये राजा यु-
धिष्ठिरने इतनी कथा श्रवणकर पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र
कृत्तिकाव्रतका क्या बिधानहै आप वर्णनकरें तब श्रीकृष्ण

चन्द्र कहनेलगे कि हे महाराजकार्त्तिक की पूर्णिमाको कृत्तिका नक्षत्रमें चन्द्रमा औ वृहस्पति होयँ औ उसदिन सोमबारहोय वह महाकार्त्तिकी होती है महाकार्त्तिकी तो बहुत बर्षोंमें औ बड़ेपुण्यसे प्राप्तहोती है इसलिये साधारण कार्त्तिकी पूर्णिमाकोही उपवासकरै कार्त्तिकीपूर्णिमाको प्रभातही दन्तधावन आदि कर नक्तव्रत का अथवा उपवासका नियमग्रहणकरै पुष्कर प्रयाग कुरुक्षेत्र नैमिषकुशावर्त्त बिल्वक गोकर्ण अर्बुद अमरकण्टकआदि किसीतीर्थ में अथवा अपने घरमेंहीस्नानकरै फिर देवता ऋषि पितर औ अतिथिका पूजनकर सायङ्कालकेसमय घृत औ दुग्ध से पूर्ण पात्रमें सुवर्ण चांदी रत्न नवनीत अन्न औ पिष्टसे छःकृत्तिकाकी मूर्त्ति क्रमसे बनाय स्थापनकरै फिर उनको रक्तसूत्रसे वेष्टितकर सिन्दूर कुंकुम चन्दन चमेलीके पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि से उनका पूजनकर (ओंसप्तर्षिदाराह्यनरत्नस्थवल्लभा येब्राह्मणाऋषिभावेनयुक्ताः। तुष्टः कुमारस्ययथार्थमातरो ममापिसुप्रीततराभवन्तुस्वाहा) यहमन्त्रपढ़ सब कृत्तिकाओंकीमूर्त्ति ब्राह्मणकोदेवै ब्राह्मण भी ग्रहण करके (शर्मदाःकामदाःसन्तु इमानक्षत्रमातरः। कृत्तिकादुर्गसंसारात्तारयन्त्वावयोःकुलम्) यह मन्त्र पढ़ै पीछे ब्राह्मण सब सामग्रीलेकर घरकोजाय औ छः कदम तक यजमान उसकेपीछेचलै पीछे लौटकर ब्राह्मणभोजन करावै इसप्रकार जोपुरुष कृत्तिकाव्रतकरै वह सूर्य्यकेतुल्य प्रकाशवान् विमानमेंबैठ नक्षत्रलोकमेंजाताहै वहां प्रलय कालपर्यन्त दिव्य देहधार दिव्य नारियों के साथ बिहार करताहै जो स्त्री इस व्रतकोकरै वह भी अपने पतिसहित

नक्षत्रलोकमें जाय बहुतकाल दिव्यभोग भोगती है औ जो स्त्री पुरुष इसमाहात्म्यको भक्तिसे सुनै वह सब पापोंसे मुक्तहोता है इसविधिसे सुवर्ण आदिकी छः कृत्तिकाबनाय पात्रमेंरख गन्ध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजने हारा जन्म मरणसे छुट जाता है॥

तिरानबेका अध्याय॥

मनोरथ पूर्णिमा का विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज फाल्गुनकी पूर्णिमाको स्नान आदिकर लक्ष्मीसहित जनार्दनका पूजन करै औ चलते फिरते बैठते उठते जनार्दनका स्मरणकरै औ पाखण्ड पतित नास्तिक चण्डाल आदिसे सम्भाषण न करै जितेन्द्रिय रहै रात्रिके समय चन्द्रमाको नारायणका रूप औ रात्रिको लक्ष्मीरूप भावनाकर (श्रीनिशाचन्द्र रूपस्त्वं वासुदेवजगत्पते। मनोभिलषितंदेव पूरयस्वनमो नमः) इसमन्त्रसे अर्घ्यदेवै पीछे तैल लवण रहितभोजन मौनसे करै इसीप्रकार चैत्र वैशाख ज्येष्ठ इनतीन महीनों में भी पूजनकर प्रथमपारणकरै आषाढ़ श्रावण भाद्रपद औ आश्विन इन चार महीनों की पूर्णिमा को श्रीसहित श्रीधरका पूजनकर चन्द्रमाको अर्घ्यदेवै औ पूर्ववत् दूसरा पारणकरै कार्त्तिकआदि चार महीनोंमें भूतिसहित केशव का यजनकर चन्द्रमाको अर्घ्य देवै औ तीसरा पारणकरै प्रत्येक पारणके अन्तमें ब्राह्मणोंको दक्षिणादेवै प्रथम पारणके चारमहीनोंमें पंचगव्य दूसरे पारणके चारमहीनोंमें कुशोदक औ तीसरेमें सूर्य्यकिरणों करके तप्तजल प्राशन करै रात्रिके समय गीत वाद्य भगवान्के गुणकीर्त्तन आदि

करै औ प्रतिमास जलकुम्भ जूता छतुरी सुवर्ण वस्त्र भोजन औ दक्षिणा ब्राह्मणको देवै औ मार्गशीर्ष आदि महीनोंमें केशव नारायण माधव गोविन्द विष्णु मधुसूदन त्रिविक्रम वामन श्रीधर हृषीकेश राम पद्मनाभ इनकाकीर्त्तनकरै प्रतिमास देनेको समर्थ न होय तो वर्षके अन्तमें सुवर्ण का चन्द्रबिम्बबनाय फल वस्त्र आदि से पूजनकर ब्राह्मणको देवै इस प्रकार व्रत करनेहारे पुरुष को अनेक जन्म पर्यन्त इष्टवियोग नहींहोता औ वह पुरुष नारायण स्मरण करताहुआ मृत्युवशहो स्वर्गको जाता है यमराज का मुख नहीं देखता बहुत काल स्वर्गसुख भोगकर धन धान्ययुक्त सत्कुलमें जन्म लेताहै जो इस मनोरथपूर्णिमा का व्रतकरे औ रात्रिको लक्ष्मी रूप तथा चन्द्रमाको नारायण स्वरूपमान चन्दन तिल अक्षतआदिसे अर्घ्यदेवै उनके सब मनोरथ सिद्धहोते हैं ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

अशोक पूर्णिमाका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम अशोक पूर्णिमाका विधान कहते हैं जिसउपवास को कर मनुष्य कभी शोकको नहीं प्राप्तहोता फाल्गुनकी पूर्णिमा को शिरआदि अंगोंमें मृत्तिकालगाय नदीआदिमें स्नान कर मृत्तिकाका स्थंडिलबनाय उसके ऊपर भूधरनारायण औ अशोकाधरणी का पुष्प पत्र नैवेद्य आदि से पूजन कर हाथजोड़ (यथाविशोकांधरणिकृतवांस्त्वांजनार्दनः। तथामांसर्वशोकेभ्योमोचयाशेषधारिणि॥ यथासमस्तभूता नामाधारस्त्वंव्यवस्थिता। तथाविशोकंकुरुमांसकलेच्छाविभू

तिभिः॥ध्यानमात्रेयथाविष्णोःसावधानासिमेदिनि। तथा मनः सुस्थितंमेकुरुत्वंभूतधारिणि) ये मन्त्रपढे पीछेरात्रि के समय चन्द्रमाको अर्घ्यदेवै उपवासरक्खै अथवा रात्रि के समय तैल क्षारवर्जित भोजनकरै चार २ मासमें एक२ पारणकरै प्रत्येक पारणके अन्तमें विशेष पूजा औजागरण करै प्रथम पारण में धरणीद्वितीयसें मेदिनी औ तृतीयमें वसुन्धरा का पूजनकरै प्रतिपारण में दो वस्त्र ब्राह्मण को देवै औ धरणी सहित भगवान् को घृतस्नानकरावै वस्त्र के अभावमें सूत्रसे धरणी का पूजन करै औ घृताभावमें दुग्धसे स्नानकरावै वर्षके अन्तमें सवत्सा गौ भूमि वस्त्र भूषण आदिब्राह्मणकोदेवै यहव्रत पातालमेंस्थित भूमिने किया तब भगवान्ने वराह रूपधार उसका उद्धार किया औ प्रसन्नहोकर कहा कि हे धरणि तेरे इसव्रतसे हम परम सन्तुष्टभये और भी जो पुरुष स्त्री इसव्रतको भक्तिसे कर हमारा पूजनकरेंगे औ यथाविधि पारण करेंगे वे जन्म २ में सब प्रकारके क्लेशों से छुट तुम्हारी भांति सब कल्याण के भाजनहोंगे जो पुरुष इस अशोक पूर्णिमा व्रतको करै वह सबपापोंसे औशोकसेछुट सबप्रकारकी सम्पत्तिपावै॥

पंचानबेका अध्याय॥

रानी शीलधनाकी कथा औ अनन्तव्रतका विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र भक्तिसे नारायणका आराधनकरैं तो सब मनोवाञ्छित फल प्राप्त होतेहैं परन्तु स्त्रीपुरुषोंको सन्तान हीनहोना इससे अधिक कोई दुःख औ शोक नहीं सब सुखोंकाहेतु सन्तानहै जगत् में वे धन्यहैं जो सर्वगुण सम्पन्न आरोग्य बलवान् धर्मज्ञ

शास्त्र वेत्ता दीन अनाथोंका आश्रय भाग्यवान् हृदय को आनन्द देनेहारा औ दीर्घायुष पुत्र पाते हैं अब हम ऐसा व्रत सुनना चाहते हैं कि जिसके करनेसे ऐसे लक्षणोंकरके युक्त पुत्रउत्पन्नहोयँ यह राजाकाबचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज इसमें एकप्राचीन इतिहास हमबर्णनकरते हैं हैहयवंशमें कृतवीर्यनाम राजाहुआहै उस की हज़ार रानियों में मुख्य सब लक्षणों करके युक्त शील घनानाम रानीथी उसने एकदिन पुत्र प्राप्तिके लिये ब्रह्मवादिनी मैत्रेयीसे पूछा तब मैत्रेयीने उसको यह व्रत उपदेश किया कि मार्गशीर्षमासमें जिसदिन मृगशिरा नक्षत्र होय उसदिन स्नानआदिकर अनन्तभगवान्के बामचरण का पूजन गन्ध पुष्प धूप दीप आदिसे करै औ (अनन्तं सर्वकामाना मनन्तंभगवत्फलम् । नमाम्यनन्तंचपुनरस्तदेवापुत्रजन्मनि ॥ अनन्तपुण्योपचयमनन्तंचमहाव्रतम् । यथाभिलषितावाप्तिं कुरुमेपुरुषोत्तम) ये मन्त्रपढ़ प्रार्थना कर एकाग्रचित्तहो बारम्बार प्रणामकर ब्राह्मणको दक्षिणा देवैऔ (अनन्तःप्रीयताम्) यह वाक्य उच्चारणकरै औ गोमूत्र प्राशनकरै औ रात्रिके समय तैल क्षारवर्जित भोजनकरै इसीविधिसे पौषमास पुष्यनक्षत्र में भगवान् की बाम कटिका पूजन कर गोमूत्र प्राशनकरै माघमास मघा नक्षत्रमें भगवान्के भ्रूका पूजनकरै फाल्गुन में फाल्गुनी नक्षत्रमें स्कन्धकापूजनकरै इनचारमहीनोंमें गोमूत्रप्राशन करै औ सुवर्ण सहित तिल ब्राह्मण को देवै चैत्रमें चित्रा नक्षत्रमें भगवान् के दक्षिण स्कन्धका पूजनकरै बैशाख में बिशाखा नक्षत्र में दक्षिण भुजाका पूजनकरै ज्येष्ठमें ज्येष्ठा

नक्षत्रमें दक्षिण कटिका पूजनकरै आषाढ़में आषाढ़ानक्षत्र में दक्षिण पादका पूजन करै इनचार महीनों में पंचगव्य प्राशनकरै ब्राह्मणको सुवर्ण देवै औ रात्रिको भोजन करै श्रावणमासमें श्रवणनक्षत्रमें भगवान् के दोनों चरणोंका पूजनकरै भाद्रमें भाद्रपदा नक्षत्रमें गुह्यका पूजनकरै आश्विनमें अश्विनी नक्षत्रमें हृदय का पूजनकरै औ कार्त्तिक मासमें कृत्तिका नक्षत्रमें अनन्त भगवान्के शिरका पूजन करै इन चार महीनोंमें घृत प्राशनकरै औ घृतही ब्राह्मण को देवै प्रथम चारमासमें घृतसेहवनकरै द्वितीय चारमास में धान्य से औ तृतीय चारमास में अनन्त भगवान् की प्रीतिके लिये दुग्ध से हवन करै इस प्रकार बारह महीनों में तीन पारण कर वर्ष के अन्त में सुवर्णकी अनन्त भगवान्कीमूर्त्ति औ चांदीके हलमूसलबनावै पीछे मूर्त्तिकोताम्र पीठपर स्थापनकर दोनोंओर हल मूसलरख पुष्पधूपदीप नैवेद्य आदिसे पूजनकर (अनंतायनमः। सर्वात्मनेनमः। शेषायनमः। कामायनमः। वासुदेवायनमः। संकर्षणायनमः। सर्वार्थदायिनेनमः। श्रीकंठनाथायनमः। इन्दुमुखायनमः) इनमन्त्रोंसे शिरपाद जानु कटि पार्श्व उदर भुज कण्ठ औ मुख का पूजनकरै (हलायनमः। मुसलायनमः) इनमन्त्रों से हलमूसलका पूजनकरै औ नील वस्त्र पुष्प माला आदि से अनन्त भगवान्का पूजनकर बारहघट अन्न औ जल युक्त स्थापनकरै उनमें बारह महीनोंका पूजनकरै नक्षत्र नक्षत्रदेवता संवत्सर औ सब नक्षत्रोंके राजाचन्द्रमाका विधि पूर्वक पूजनकरै फिर पुराणवेत्ता धर्मज्ञ शांत प्रियदर्शन ब्राह्मणका वस्त्र भूषण आदिसे पूजनकर यह सब सामग्री

उसके अर्पणकरै औ (अनंतःप्रीयताम्) यह वाक्यकहै पीछे और ब्राह्मणों कोभी भोजन दक्षिणा आदिदेकर संतुष्टकरै इसबिधिसेजो इसअनन्तब्रतको समाप्तकरै वहसबअभीष्ठ फलपावै हे शीलघनेजो तू उत्तम पुत्रकी इच्छा रखती है तो बिधिपूर्बक श्रद्धासे इसब्रतकोकर श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज इसप्रकार मैत्रेयीसे उपदेशपाय शीलघना ब्रत करनेलगी ब्रतके प्रभावसे अनन्तभगवान् संतुष्टहुये औ रानी शीलघनाको पुत्रदिया शीलघनाके पुत्रका जन्म होतेही आकाश निर्मल होगया सुखदेने हारा पवनचलने लगादेवदुन्दुभिबजनेलगे पुष्पवृष्टिभईसारे जगत्में मंगल हुआ गन्धर्व औ अप्सरानाचने गानेलगे सबलोकोंका मन धर्ममें आसक्त हुआ राजा कृतबीर्य ने अपने पुत्र का नाम अर्जुनरक्खाजो कृतवीर्य का पुत्र होनेसे कार्तबीर्य कहाया कार्तबीर्यने बड़ा तपकरके बिष्णुभगवान्के अवतार श्री-दत्तात्रेयजीका आराधनाकिया औ येवरपाये कि हेअर्जुन तू चक्रबर्तीहो जो सायंकाल औप्रभात (नमोस्तुकार्त्तबीर्याय) यह वाक्य उच्चारण करैंगे उनको प्रस्थभर तिलदान का पुण्यहोगा औ जो तुम्हारा स्मरण करतेरहेंगे उन पुरुषों का द्रब्यनष्टनहीं होगा इतना वर भगवान्से पाय राजा कार्तबीर्यधर्मसे सप्तद्वीपवती पृथिवीका पालन करनेलगा उसनेबड़ी२दक्षिणावाले यज्ञकिये सबशत्रुओंको जीताइस भांतिरानीशीलघनाने अनन्तब्रतके प्रभावसे अतिउत्तम पुत्रपाया जो पुरुष अथवास्त्री इस कार्तबीर्यके जन्मको श्र-वणकरै वह सातजन्मपर्यंत संतानका दुःख न पावै जो इस अनन्तब्रतको भक्तिसेकरै वहउत्तमसंतान औ ऐश्वर्यपावै॥

छियानबेका अध्याय॥

सांभरायिणी की कथा औ मास नक्षत्र व्रत का माहात्म्य॥

राजा युधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ऐश्वर्य आदिके प्राप्त न होनेसे इतना कष्टनहींहोता जितना प्राप्त होकर नष्टहोजानेसे होताहै इसलिये आपऐसाकोई व्रत कहें जिसके करनेसे ऐश्वर्यभ्रंस औ इष्टबियोग न होययह बचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज यह बड़ा भारीदुःखहै कि प्राप्तहुये सुखका नाश होजाना इस के लिये यह बिधानकरना चाहिये कि बारह महीनोंके नाम नक्षत्रोंमें कार्तिकादि मासोंमें पुष्प धूप दीप आदिसे भगवान् का पूजनकरै कार्त्तिकादि चारमहीनोंमें कृसरान्न नैवेद्य लगावै औ यही ब्राह्मणोंको भोजन करावै फाल्गुनादि चार महीनोंमें संयाव नैवेद्यलगावै औ आषाढ़ आदि चार मासमें पायस नैवेद्य लगावै पंचगव्यप्राशनकरै औ भक्तिसे नारायणका अर्चनकर (नमोनमस्तेच्युतसंक्षयोरस्तुपापस्य वृद्धिं समुपैतुपुण्यं। ऐश्वर्यवित्तादिसदाऽक्षयंमेक्षयंतमोयातुतवप्रसादात्। यथाच्युतत्वंपरतः परस्मात्सुब्रह्मभूतःपरतःपरात्मा। तथामुरारेकुरुवांछितंमेहरापदंपापहराप्रमेय। अच्युतानन्तगोविन्द प्रसीदयदभीप्सितम्। तदक्षयंसदा देव कुरुष्वपुरुषोत्तम) इनमन्त्रोंसे प्रार्थनाकरै पीछेरात्रि केसमय भगवान् का नैवेद्य आप भक्षणकरै वर्षपूरा होने पर घृतपूर्ण ताम्रपात्र औ दक्षिणा ब्राह्मणको देकर (अच्युतःप्रीयताम्) यह वाक्य कहै इसप्रकार सातवर्ष व्रत कर सुवर्णकी अच्युत मूर्त्तिबनाकर स्थापनकरै औ उसके आगे भगवान्की परमभक्ता औ पातिव्रता साम्भरायिणी

नाम ब्राह्मणीकी चांदीकी मूर्त्तिबनाय स्थापनकरै पीछे उनका गन्ध पुष्पादि उपचारों से पूजनकर क्षमापन करावै प्रतिवर्ष जो घृतपात्र न दियाहोय तो उसीसमय घृतपूर्ण सात ताम्रपात्र सुवर्ण सात सवत्सागौ सातजलपूर्ण घट छतरी जूता उत्तम शय्या सब सामग्रीसहित घर औभूमि वित्तानुसार ब्राह्मणको देवै औ लक्ष्मी सहित विष्णुभगवान्का पूजनकर बारम्बार प्रणामकर क्षमापन करावै इस विधिसे जो ब्रत औ भगवान्का पूजनकरै उसके धन ऐश्वर्य आदिका क्षय नहींहोता औ स्वर्गबास पाताहै इतना कथनकर श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज स्वर्गमें बड़ी तपस्विनी सिद्धा औ सबके सन्देहहरनेहारी साम्भरायिणी नामक एकनारी रहतीहै एकसमय इन्द्रने बृहस्पति से पूछा कि हमारे पहिले जितने इन्द्रहोगयेहैं उनका क्या आचरण औ चरितथा आप वर्णन कीजिये बृहस्पति ने कहा कि हे देवराज सब इन्द्रों का वृत्तान्त तो हम नहीं जानते केवल एक दो इन्द्रोंका समाचार हमको बिदितहै तब इन्द्रने कहा कि हे देवगुरो आपके बिना हम यह वृत्तान्त किससे पूछें बृहस्पति कुछकाल विचारकर कहने लगे कि हेपुरन्दर न तो देवता औ न गन्धर्व इतने प्राचीन वृत्तको जानते हैं केवल तपस्विनी औ धर्मज्ञा सांभरायिणी अति प्राचीन वृत्तान्त जानती हैं उससे आप पूछैं यह सुन बृहस्पतिको सङ्गले इन्द्र सांभरायिणी के स्थान पर गये सांभरायिणी ने बड़े सत्कार से उनको बैठाया औ पूजन आदिकर विनय से आगमनका प्रयोजन पूछा तब बृहस्पति बोले कि हे सांभरायिणि देवराजको प्रा-

चीन वृत्तान्त सुननेका बड़ा कुतूहलहै जो तू व्यतीत इन्द्रों का चरित्र जानतीहोय तो वर्णनकर यहसुन सांभरायिणी बोली कि हे देवगुरो जितने इन्द्र होचुके हैं सबका वृत्तान्त मैं भलीभांति जानतीहूँ बहुतसे मनु औ सप्तर्षि मैंनेदेखे हैं मनुओंके पुत्रोंको जानती हूँ औ सब मन्वन्तरोंका चरित्र मुझे विदितहै जो तुम पूछो वही सुनाऊँ यह साम्भरायिणी का वचनसुन इन्द्र औ बृहस्पति ने स्वायम्भुव स्वारोचिष उत्तमतामस रैवत चाक्षुषआदि मनु औ व्यतीत इन्द्रोंका वृत्तान्त उससे पूछा सब वृत्त ठीक २ सांभरायिणीने वर्णन किया औ एक इन्द्रका समाचार यों कहा कि शंकुकर्ण नाम दैत्य पूर्वकालमें बड़ा प्रतापीहुआ वह सब देवताओं को जीत स्वर्गमें इन्द्रको जीतनेआया उस समय शची औ इन्द्र एक शय्यापरथे शंकुकर्ण को देखतेही भयसे इन्द्र शय्याके नीचेछिपे औशची बृहस्पति के घरभागगई शंकुकर्ण उस शय्याके ऊपर बैठगया औ सबदेवता उसके दर्शनकेलिये आनेलगे विष्णुभगवान्भी शंकुकर्णको मिलनेआये उनकोदेख वह शय्यापरसे उठा औ बड़े स्नेही बन्धुकीभांति विष्णुभगवान् को आलिंगन किया विष्णु भगवान् ने भी उसको आलिंगन कर ऐसा निष्पीड़नकिया कि उसके सबअस्थि चूर्णहोगये औ घोर शब्द करताहुआ मृत्युवश भया दैत्यको मरेजान इन्द्रभी शय्याके नीचेसे शिर झुकाये निकले औ विष्णु भगवान् की स्तुति करनेलगे हे देवराज यह वृत्तान्त मैंने अपने नेत्रों से देखाथा तब इन्द्रने सांभरायिणी से पूछा कि तू इतने प्राचीन वृत्तान्त क्योंकर जानती है सांभरायिणी

ने कहा कि स्वर्ग का ऐसा कोई वृत्तांत नहीं है जो मैं न जानतीहूं तब इन्द्रनेइसका कारण पूछा कि ऐसा क्या सत्कर्म तैंने कियाहै जिसके प्रभावसे अक्षय स्वर्गबासतैंने पाया तब सांभरायिणीने कहा कि मैंनेप्रतिमास मास नक्षत्रोंमें सात बर्ष पर्यंत भगवान्का पूजन किया औ उपबास किया है यह सब उसी कर्मका फलहै जो पुरुष अक्षय स्वर्ग बास इन्द्र पद ऐश्वर्य संतति आदि चाहै उसको अवश्यबिष्णु भगवान्का आराधन करनाचाहिये हेदेवेन्द्र जो तुमनेपूछा सो मैंने वर्णन किया अब और जो पूछने की इच्छाहोय सो पूछिये धर्म अर्थ काम औ मोक्ष ये चारों पदार्थ बिष्णुभगवान्के आराधनसे प्राप्त होते हैं इतनासुन वृहस्पति औ इन्द्र सांभरायिणी पर बहुतप्रसन्न भये औ दोनों भक्तिपूर्वकसांभरायिणीका बताया व्रतकरनेलगे श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज जो इस सांभरायिणीके किये व्रत को सातवर्ष पर्यंत भक्तिसेकरैं वे अक्षय स्वर्गवास पातेहैं ॥

सत्तानबेका अध्याय ॥

वैष्णव नक्षत्र पुरुष व्रत का विधान ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र पुरुष औ स्त्रियों को उत्तम रूप किस कर्मके करनेसे प्राप्तहोताहै औ उत्तम रूप पाकर भी फिर अंगभंग आदि दोष किसकर्म के करनेसेहोते हैं यह आप वर्णनकरैं कई अति रूपवान् स्त्री पुरुष काने अन्धे लँगड़े आदि होजाते हैं उत्तम गति लावण्य औ मीठेवचन रूपवान्केही अच्छेलगतेहैं कुरूप को केवल विड़म्बनाहै इसलिये उत्तमरूप प्राप्तिकाउपाय वर्णन कीजिये यह राजा का वचनसुन श्रीकृष्ण भगवान्

कहनेलगे कि हे महाराज यही बात अरुन्धती ने वशिष्ठ जीसे पूछीथी तब वशिष्ठजीने यह कहा कि हे प्रिये विष्णु भगवान्का आराधन औ पूजन बिनकिये क्योंकर उत्तम रूप प्राप्तहोसक्राहै जो पुरुष अथवा स्त्री उत्तमरूप ऐश्वर्य औ सन्तान चाहै उसको नक्षत्र पुरुषरूप विष्णुभगवान् का पूजन करनाचाहिये अरुन्धतीने नक्षत्र पुरुषका विधान पूछा तब वशिष्ठजी कहनेलगे कि हे प्रिये चैत्रमाससे लेकर भगवान्के पाद आदि अंगोंकापूजनकरै उपवासरख स्नान कर नक्षत्र पुरुषके अंगोंका पूजन इस विधिसेकरै कि मूल में पाद रोहिणीमेंजंघा अश्विनीमें जानु दोनों आषाढ़ाओं में ऊरु दोनों फाल्गुनीमें गुह्य कृत्तिकामें कटि दोनों भाद्र पदाओंमें पाश्वरेवतीमें कुक्षिअनुराधामें वक्षस्स्थल धनि-ष्ठामें पृष्ठ विशाखामें दोनोंभुजा हस्तमें दोनोंहाथ पुनर्वसु में अंगुलि आश्लेषा में नख ज्येष्ठामें ग्रीवा श्रवणमें कर्ण पुष्यमेंमुख स्वातिमेंनाभि शतभिषामेंमुख मघामेंनासिका मृगशिरा में नेत्र चित्रा में ललाट औ भरणीमें शिर औ आर्द्रामें केशोंका पूजनकरै उपवासके दिन तैलाभ्यंग न करै नक्षत्र नक्षत्रदेवता औ चन्द्रमाका भी प्रति नक्षत्रमें पूजनकरै औ ब्राह्मण भोजन करावै जो अशौच आदि होजाय तो दूसरेनक्षत्रमें उपवासकर पूजनकरै व्रत समाप्त होनेपर सुवर्णका नक्षत्रपुरुष बनाय उत्तमशय्यापर स्था-पनकरै औ ब्राह्मण मिथुनको शय्यापर बैठाय वस्त्र भूषण आदिसे उनका पूजनकर सप्तधान्य सवत्सागौ छतरी जूता घृतपात्र औ दक्षिणा सहित वह नक्षत्र पुरुष (यथानवि ष्णुभक्तानां वृजिनंजायतेक्वचित् । तथासरूपमारोग्यं सु

खंचतदिहास्तुमे १ यथाचलक्ष्म्याशयनं नशून्यंतेजनार्दन।
शय्याममाप्यशून्यास्तु तथाजन्मनिजन्मनि २) ये मन्त्रपढ़
ब्राह्मणको देवै जो इतना देनेका सामर्थ्य न होय तो घृत
पात्रसहित एकगौ ब्राह्मणकोदेवै इसव्रतके करनेसे सर्वांग
सुन्दररूप मनकी प्रसन्नता आरोग्य उत्तम सन्तान मीठी
वाणी औ ऐश्वर्य्य सात जन्म तक प्राप्तहोते हैं औ सब
पाप निवृत्त होजाते हैं इतनी कथा कह श्रीकृष्णभगवान्
बोले कि हे महाराज इसप्रकार नक्षत्र पुरुष का विधान
वशिष्ठजीने अरुन्धतीको कथन किया वही हमने आपको
सुनाया जो इसविधिसे नक्षत्ररूप भगवान्का पूजनकरते
हैं वे अवश्यही उत्तमरूप पाते हैं ॥

अट्ठानबेका अध्याय ॥

शैव नक्षत्र पुरुष व्रतका विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र यह आपने विष्णु नक्षत्र पुरुषका विधान वर्णनकिया अब आप शिव-भक्तोंके कल्याण के अर्थ शैव नक्षत्र पुरुषका विधान कहैं यह राजा का वचनसुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज नक्षत्र पुरुषका जिसदिन पूजनकरै उस दिन उपवास अथवा नक्तव्रत करना चाहिये फाल्गुन शुक्लपक्ष में हस्त नक्षत्रहोय उस दिन से शैव नक्षत्र व्रतका धारण करै औ प्रदोषके समय शिवपूजन करै (शिवायनमः शंकरायनमः हरायनमः शंभवेनमः भीमायनमः त्रिनेत्राय नमः अनंगांगहरायनमः सुरज्येष्ठायनमः शूलिनेनमः पार्वतीपतयेनमः कपालिनेनमः सद्योजातायनमः वामदेवाय नमः खट्वांगधारिणेनमः रुद्रायनमः खंडेंदुधारिणेनमः ए-

ष्ठकायनमः कृत्तिवाससेनमः वाचस्पतयेनमः भैरवायनमः स्थाणवे नमः पूष्णोदन्त बिनाशिनेनमः सर्वदर्शिने नमः त्र्यम्बकायनमः अन्धकारयेनमः सोमधारिणेनमः पाशांकुशपद्मशूलकपालसर्पेंदुधराय गजासुरान्तकांधकादि बिनाशमूलकायशिवायनमः) इनमन्त्रोंसे हस्तआदि सत्ताईस नक्षत्रोंमें क्रमसे पाद गुल्फ जानु ऊरु मेढ्र कटि नाभि दोनों पार्श्व उदर वक्षस्स्थल हृदय दोनों भुजा हाथ नख पृष्ठ कण्ठ जिह्वा दन्त ओष्ठ नासिका नेत्र दोनोंकर्ण शिर औ सर्वांग का पूजनकर गन्ध पुष्प धूप दीप आदि उपचार निवेदनकरै औ रात्रिके समय तैल क्षाररहित भोजन करै प्रतिनक्षत्रमें सेरभर चावल औ घृतपात्र ब्राह्मणको देवै दो नक्षत्र एक दिन होजायँ तो दो अंगोंका एकदिन पूजनकरै सूतकादि में पूजन न करै फिर वह नक्षत्र आवै तब उस अंगका पूजनकरै इसप्रकार ब्रतकर अन्तमें सुवर्णकी शिव पार्वती की प्रतिमा बनाय उत्तम शय्या पर स्थापनकरै पीछे उनका सर्वोपचारों से पूजनकर कपिला गौ छत्र चामर दर्पण जूता बस्त्र भूषण अनुलेपन आदि सहित वह मूर्त्ति ब्राह्मणको देवै औ यह मन्त्रपढ़ै (यथा नदेवशयनं तवपर्वतजातया । शून्यंकदाचिद्भवति तथामे सन्तुसिद्धयः । यथानदेवःश्रेयान्वै त्वदन्योविद्यतेक्वचित् । तथामामुद्धराशेष दुःखसंसारसागरात्) पीछे प्रदक्षिण कर विसर्जनकरै औ शय्या गौआदि सब सामग्री ब्राह्मण के घर पहुँचादेवै इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज दुश्शील दांभिक कुतार्किक निन्दक लोभीआदि को यह ब्रत नबतानाचाहिये शान्तस्वभाव शिवभक्त इस

व्रतके अधिकारीहैं इसव्रतके करनेसे महापातकभी निवृत्त होजाते हैं जो स्त्री पतिकी आज्ञापाय इसव्रतकोकरै उसको कभी इष्टवियोग नहींहोता जो इसव्रतके माहात्म्यको पढ़ै अथवाश्रवणकरै उसकेपित्तरोंकानरकसे उद्धारहोजाताहै॥

निनानबेका अध्याय॥

सम्पूर्ण व्रतका विधान, औ फल॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जो नक्षत्र पुरुष व्रतको ग्रहणकरके फिर न करसकै तो कौन कर्मकरने से वह व्रत सम्पूर्णहोय यह आप कथनकरैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज यह अति रहस्य बात आपने पूछीहै आपके अनुरोधसे हम वर्णन करतेहैं अनेकप्रकारके उपद्रव मद मोह आदि से जो व्रत भग्नहोजायँ उनकी पूर्तिके लिये अवश्य यह सम्पूर्णव्रत करना चाहिये इस व्रतके करने से खंडित व्रत पूर्ण फल देनेहारे होजाते हैं जिस देवता का व्रत भग्नहोजाय उसकीपत्नी सहित सुवर्ण की अथवा चांदीकी मूर्त्तिबनाय उस व्रतकेदिन स्थापनकर पंचामृत से स्नानकरावै पीछे जलपूर्ण कलश के ऊपर विराजकर गंध पुष्प अक्षत धूप दीप वस्त्र भूषण वलि आदि से पूजनकर (व्रतहीनस्यदीनस्य प्रायश्चित्तमजानतः। शरणंभवखिन्नस्यकुरुष्वाद्यदयांप्रभो। तपश्छिद्रंव्रतच्छिद्रं यच्छिद्रंपूजनेमम। तवप्रसादात्तदेवसर्वमच्छिद्रमस्तुनःस्वाहा। अमुकदेवतायैनमःपूर्वतोदक्षिणतः पश्चिमतउत्तरतः उपर्यधस्तादिक्पालेभ्योनमः) इस मंत्रसे अर्घ्य देवै पीछे देवता के पाद जानु कटि शिर वक्षस्स्थल कुक्षि हृदय पृष्ठ बाहु शिखा औ केशोंका

ष्ठकायनमः कृत्तिवाससेनमः वाचस्पतयेनमः भैरवायनमः स्थाणवे नमः पूष्णोदन्त बिनाशिनेनमः सर्वदर्शिने नमः त्र्यम्बकायनमः अन्धकारयेनमः सोमधारिणेनमः पाशांकुशपद्मशूलकपालसर्पेंदुधराय गजासुरान्तकांधकादि बिनाशमूलकायशिवायनमः) इनमन्त्रोंसे हस्तआदि सत्ताईस नक्षत्रोंमें क्रमसे पाद गुल्फ जानु ऊरु मेढ्र कटि नाभि दोनों पार्श्व उदर वक्षस्स्थल हृदय दोनों भुजा हाथ नख पृष्ठ कण्ठ जिह्वा दन्त ओष्ठ नासिका नेत्र दोनोंकर्ण शिर औ सर्वांग का पूजनकर गन्ध पुष्प धूप दीप आदि उपचार निवेदनकरै औ रात्रिके समय तैल क्षाररहित भोजन करै प्रतिनक्षत्रमें सेरभर चावल औ घृतपात्र ब्राह्मणको देवै दो नक्षत्र एक दिन होजायँ तो दो अंगोंका एकदिन पूजनकरै सूतकादि में पूजन न करै फिर वह नक्षत्र आवै तब उस अंगका पूजनकरै इसप्रकार ब्रतकर अन्तमें सुवर्णकी शिव पार्वती की प्रतिमा बनाय उत्तम शय्या पर स्थापनकरै पीछे उनका सर्वोपचारों से पूजनकर कपिला गौ छत्र चामर दर्पण जूता बस्त्र भूषण अनुलेपन आदि सहित वह मूर्त्ति ब्राह्मणको देवै औ यह मन्त्रपढ़ै (यथा नदेवशयनं तवपर्वतजातया। शून्यंकदाचिद्भवति तथामे सन्तुसिद्धयः। यथानदेवःश्रेयान्वै त्वदन्योविद्यतेक्वचित्। तथामामुद्धराशेष दुःखसंसारसागरात्) पीछे प्रदक्षिण कर विसर्जनकरै औ शय्या गौआदि सब सामग्री ब्राह्मण के घर पहुँचादेवै इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज दुश्शील दांभिक कुतार्किक निन्दक लोभीआदि को यह ब्रत नबतानाचाहिये शान्तस्वभाव शिवभक्त इस

व्रतके अधिकारीहैं इसव्रतके करनेसे महापातकभी निवृत्त होजाते हैं जो स्त्री पतिकी आज्ञापाय इसव्रतकोकरै उसको कभी इष्टवियोग नहींहोता जो इसव्रतके माहात्म्यको पढ़ै अथवाश्रवणकरै उसकेपितरोंकानरकसे उद्धारहोजाताहै॥

निनानबेका अध्याय॥

सम्पूर्ण व्रतका विधान, औ फल॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जो नक्षत्र पुरुष व्रतको ग्रहणकरके फिर न करसकै तो कौन कर्मकरने से वह व्रत सम्पूर्णहोय यह आप कथनकरैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज यह अति रहस्य बात आपने पूछीहै आपके अनुरोधसे हम वर्णन करतेहैं अनेकप्रकारके उपद्रव मद मोह आदि से जो व्रत भग्नहोजायँ उनकी पूर्तिके लिये अवश्य यह सम्पूर्णव्रत करना चाहिये इस व्रतके करने से खंडित व्रत पूर्ण फल देनेहारे होजाते हैं जिस देवता का व्रत भग्नहोजाय उसकीपत्नी सहित सुवर्ण की अथवा चांदीकी मूर्त्तिबनाय उस व्रतकेदिन स्थापनकर पंचामृत से स्नानकरावै पीछे जलपूर्ण कलश के ऊपर बिराजकर गंध पुष्प अक्षत धूप दीप वस्त्र भूषण बलि आदि से पूजनकर (व्रतहीनस्यदीनस्य प्रायश्चित्तमजानतः। शरणंभवखिन्नस्यकुरुष्वाद्यदयांप्रभो। तपश्छिद्रंव्रतच्छिद्रं यच्छिद्रंपूजनेमम। तवप्रसादात्तद्देवसर्वमच्छिद्रमस्तुनःस्वाहा। अमुकदेवतायैनमःपूर्वतोदक्षिणतः पश्चिमतउत्तरतः उपर्यधस्तादिक्पालेभ्योनमः) इस मंत्रसे अर्घ्य देवै पीछे देवता के पाद जानु कटि शिर बक्षस्स्थल कुक्षि हृदय पृष्ठ बाहु शिखा औ केशोंका

पूजनकर (पूजितस्त्वंयथाशक्त्यानमस्तेस्तुसुरोत्तम । ऐहिकामुष्मिकींनाथ कार्यसिद्धिंदिशस्वमे) इस मन्त्र को पढ़ क्षमापनकराय सत्पात्रब्राह्मणको संमुख बैठाय उसका पूजनकर (इदंव्रतंमयाखंडं कृतमासीत्पुराद्विज । भगवंस्त्वत्प्रसादेन सम्पूर्णंतादिहास्तुमे) यह मन्त्रपढ़ सब सामग्री सहित वह प्रतिमा ब्राह्मण को देवै औ ब्राह्मण भी ग्रहणकर (वाक्यंपूर्णमनःपूर्णंपूर्णःकायोव्रतेनते । सम्पूर्णस्यप्रसादेन भवपूर्णमनोरथः । ब्राह्मणायत्प्रभाषंतेह्यनुमोदंतिदेवताः । सर्वदेवमयोविप्रोनतद्वचनमन्यथा । जलधिःक्षारतांनीतःपावसर्वमभक्ष्यताम् । सहस्रनेत्रःशक्रोपिकृतोविप्रैर्महात्मभिः । ब्राह्मणानांतुवचनाद्ब्रह्महत्याप्रणश्यति । अश्वमेधफलंसाग्रं प्राप्यतेनात्रसंशयः । व्यासवाल्मीकिगर्गगौतम पराशरधौम्यवशिष्ठांगिरसनारदादिमुनिवचनात्संपूर्णंतेव्रतंभवतु) ये मन्त्रपढ़ैयजमान भी ब्राह्मण को विसर्जनकर सब सामग्री उसके घर भेजदेवै पीछे पंचयज्ञ कर भोजन आदिकरै इस सम्पूर्ण व्रत को जो एकबारभी भक्तिसे करै वह प्रथम कियेहुये खंडित व्रतका संपूर्णफल पाता है औ व्रत खंडन करने के पापसे छुटताहै इस व्रत का करता पुरुष धनरूप आरोग्य कीर्त्ति आदि पाय सौ-बर्षपर्यन्त भूमिपर सुखभोगस्वर्गजाय देवताबनताहै वहां देवताओं के साथ बहुतकाल विहारकर अंत में मोक्षको प्राप्तहोताहै श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज यह व्रत प्रायश्चित्त हमको गोकुलमें प्रसन्न हो गर्गजीने उपदेश किया था आपभी इसव्रतको करैं जिससे जन्मांतरों में भी किये खंडित व्रत सम्पूर्ण होजायँ ॥

सौका अध्याय ॥

वेश्याओं को कल्याण देनेहारे काम व्रत का विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र वर्णाश्रमों के धर्म औ आचार तो हमने पुराणों में बहुत बार श्रवण किये अब यह सुनना चाहते हैं कि स्त्रियोंका कौन देवता है औ किस व्रतउपवास आदि के करनेसे नारी स्वर्गको जाती हैं यह आप वर्णनकरैं यह राजा का वचन सुन श्री कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज हमारे सोलहह-ज़ाररानी हैं वे रूपमें औ गुणोंमें सब एकसे एक बढ़कर हैं एकसमय बसंत ऋतुमें कि जब सब बन उपबन फूल रहेथे कोकिला कुहू २ शब्दकरते थे उन सब रानियों ने कामदेव के समान रूपवान् हमारे पुत्र साम्ब को देखा साम्बको देखतेही वेसब कामके बशहो व्याकुलभई हमने यह चेष्टा उनकी देख शाप दिया कि हमारे स्वर्ग गमनके अनन्तर तुमको चोर लूटैंगे यह हमारा वचन सुन वे सब अति दीनता से अश्रु पात करती हुईं बोलीं कि हे प्राण-नाथ सब जगत्के स्वामी आप हमारेपति इस दिव्यनगर में रत्न जटित भवनों में निवास देवताओं के सदृश पुत्र इन सबको त्याग चोरों की दासी बन किस बिधि हमारा कालक्षेप होगा औ क्योंकर हमारा उद्धारहोगा यह उनका दीन वचन सुन हमने कहा कि तुम सब अग्नि की पुत्री अप्सराहो औ हमारी रानी बननेके लिये तुमने शुक्लपक्ष की द्वादशीका व्रतकर शय्या आदिका दान किया उससे हम तुमको पतिमिले एक समय तुम सब मानससरोवरमें जलक्रीड़ा कररही थीं वहां नारदमुनि आये तुमने उनका

आदर सत्कार न किया तब उनने तुमको शाप दिया कि पतिसे तुम्हारा वियोग होय चोर तुमको हरलेजायँ औ वेश्या बनजाओ इसप्रकार तुमको नारदजीका शाप पहिलेहीथा औ वैसाही शाप हमारे मुखसे निकलगया इसलिये तुम अवश्य चोरोंकी दासी बनोगी परंतु अबभी जो हम कथनकरैं सो सुनो पूर्वकाल में जब देवासुर संग्राम हुआ उसमें लाखों दैत्य दानव राक्षस आदि मारेगये उन सबकी बिधवा नारियों को एकत्रकर देवराजने आज्ञा दी कि तुम सब वेश्या बनकर राजाओंके मन्दिरोंमें औ देवालयोंमें रहो राजा औ बहुश्रुत ब्राह्मण तुम्हारे पति होंगे धन देनेहारे पुरुषकी देवताकी भांति शुश्रूषा करना सुरूप कुरूपका बिचार मतकरना औ निर्द्धनको कभी समीप मत आनेदेना जो धनबिना किसीपुरुषका संगकरोगी तो ब्रह्महत्याके तुल्य पातक तुमको होगा बहुत मद्यमतपीना सदा कुटिल बुद्धिहोना परन्तु जिसकी दासी बनकररहो उसके साथ कभी ब्यभिचार मतकरना दासीहोकर जो स्वामीसे ब्यभिचारकरै वह अधोगतिको प्राप्त होती है औ उत्तम दिनोंमें उपवासकर देवता औ पितरोंकी प्रीतिके लिये गौ भूमि वस्त्र सुवर्ण आदि ब्राह्मणों को देतेरहना औरभी तुम्हारे उद्धारके लिये हम उपाय कहतेहैं जिसदिन आदित्यबारको हस्त पुष्य अथवा पुनर्वसु नक्षत्रहोय उस दिन सर्वौषधि जलसे स्नानकर कामदेवरूप विष्णुभगवान्‌का पूजनकरै (कामायनमः मोहकारिणे नमः उत्कंठकायनमः आनंदायनमः पुष्पचापायनमः पुष्पबाणायनमः अनंगाय नमः मकरध्वजायनमः) इन मन्त्रोंसे पाद जंघा कंठ मुख

ामांग दक्षिणांग शिर औ सर्वांगका पूजनकर (नमःश्री
ातयेताक्ष्यर्यध्वजांकुशधरायच । गदिनेपीतबस्त्रायशंखिने
चक्रिणेनमः । नमोनारायणायेति कामदेवात्मनेनमः । नमः
ग्रांत्यैनमःप्रीत्यै नमोरत्यैनमः श्रियेनमः पुष्ट्यैनमस्तुष्ट्यै
नमः सर्वार्थदायच) इन मन्त्रोंसे गन्धमाल्य पुष्प धूपदीप
नैवेद्य आदि करके कामदेवस्वरूप गोविंद का पूजन करै
पीछे वेदवेत्ता औ धर्मनिष्ठ ब्राह्मणोंको बुलाय उसका पूजन
कर सेरभर चावल सहित घृतपात्र उसको देवै औ (मा-
धवःप्रीयताम्) यह वाक्य उच्चारणकरै पीछे भोजन आदि
कर उस ब्राह्मणको कामदेवकारूप मान सबप्रकार उसको
सन्तुष्टकरै इस भांति एक वर्ष पर्यंत आदित्यबार ब्रतकरके
तेरहवेंमासमें गुड़ पूर्ण कलश ऊपर ताम्रपात्रमें सुवर्णकी
रतिसहित कामदेवकी प्रतिमा स्थापनकर उसका पूजनकरै
औ ब्राह्मण मिथुन बुलाय बस्त्र भूषण आदिसे उनका पू-
जनकर सब उपस्करों करके सहित उत्तम शय्या छत्र जूता
दीवट पादुका आसन इक्षु दण्ड सवत्सागौ औ दक्षिणा
सहित वह मूर्त्ति (यथांतरंनपश्यामिकामकेशवयोस्सदा । त
थैवसर्वकामाप्तिरस्तुविष्णोस्सदामम) यह मन्त्रपढ़ब्राह्मण
को देवै ब्राह्मण भी (कोदात्कस्माअदात्) इत्यादि वैदिकमंत्र
पढ़ प्रतिग्रहलेवै पीछे प्रदक्षिणाकर ब्राह्मणको विसर्जनकरै
औ सबसामग्री उसकेघरभेजै उसदिनसे यह नियमरक्खै
कि आदित्यबार को जो ब्राह्मण रतिकी इच्छासे आवै उ-
सका सब प्रकार से सन्तोष करै औ एक २ पुराणज्ञ औ
शान्तचित्त ब्राह्मणका सदा पूजनकरै औ उसकी आज्ञासे
दूसरेका भी करै जो किसीप्रकारका बिघ्नहोय तो प्रणयसे

ही ब्राह्मण को संतुष्ट करै श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि इतना कथनकर इन्द्रनेकहा कि वेश्याओंके उद्धारके लिये यहव्रतहमनेकहाहै तुम्हारा उद्धार इसव्रतके करनेसे होगा हे महाराज यही व्रत हमने गोपियोंको उपदेश किया जो वेश्या भक्तिसे इसव्रतको करै वह कई कल्प विष्णुलोकमें निवास करती है ॥

एकसौएकका अध्याय ॥

वृन्ताक त्याग बिधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज अब हम वृन्ताकत्यागका बिधानकहतेहैं एकबर्षछःमहीने अथवातीन मास वृन्ताकका त्यागकर पीछेभरणी अथवामघामें उपवासकर स्थंडिलबनाय उसपर अक्षतपुष्पोंसे (यममावाहयामि धर्मराजमावाहयामि कालमावाहयामि चित्रगुप्तमावाहयामिमृत्युमावाहयामि परमेष्ठिनमावाहयामि) इनमन्त्रोंसे आवाहनकर गन्ध पुष्प नैवेद्य आदिकरके पूजनकरै पीछे अग्निस्थापनकर तिल औ घृतकरके (यमायस्वाहा धर्म्मराजायस्वाहा कालायस्वाहा नीलायस्वाहा चित्रगुप्तायस्वाहा वैवस्वतायस्वाहा मृत्यवेस्वाहा परमेष्ठिनेस्वाहा) इन मन्त्रोंसे आहुतिदेकर अग्निर्मूर्द्धाइत्यादि वैदिकमन्त्रकरके अष्टोत्तर शत आहुति देवै औ भूषणबस्त्र छत्र जूता कालाकम्बल काला बैल गौ औ दक्षिणा सहित सुवर्णका वृन्ताक ब्राह्मण को देवै औ यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन भी करावै इसविधिका करनेहारा पौंडरीकयज्ञका फल पाताहै सातजन्म पर्यंत यमका दर्शन नहींकरता औ सातहज़ार कोटिबर्ष पर्यंतस्वर्गमें सुख भोगताहै जो पुरुष एक वर्ष

वृन्ताक त्याग अन्तमें घृत तक्र सहित सुवर्णवृन्ताक ब्राह्मणको देवै वह कभी यमलोक न देखै ॥

एकसौदोका अध्याय ॥

ग्रह नक्षत्र व्रत का फल सहित बिधान ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम ग्रह नक्षत्रव्रतका बिधान कहते हैं जिसके करनेसे क्रूरग्रह भी सौम्यहोजायँ औलक्ष्मी धृति तुष्टि तथापुष्टिकी प्राप्तिहोती है आदित्यबार को हस्तनक्षत्रहोय उसदिन सूर्य्यभगवान् का पूजनकर नक्तव्रतकरै इसीप्रकार सात आदित्यबारों को नक्तव्रतकर अन्तमेंसुवर्णकी सूर्य्यभगवान्की प्रतिमाबनाय ताम्रपात्रमें स्थापनकर घृतसे स्नानकराय रक्तचन्दन रक्त पुष्प रक्तबस्त्र धूपदीप आदिसे पूजनकर मोदक नैवेद्यलगावै औ छतरी जूता दोरक्तबस्त्र दक्षिणासहित वहमूर्ति(आदिदेवनमस्तुभ्यंसप्तसप्तेदिवाकर । त्वरयातारयस्वास्मान स्मात्संसारसागरात्) यहमन्त्रपढ़ ब्राह्मणको देवै इसव्रत के करनेसे आरोग्य संपति औ संतानकी प्राप्तिहोती है चित्रानक्षत्र युक्त सोमबारसे आरंभकर सातसोमबारको नक्तव्रतकरै अन्तमें चांदीकी चन्द्रप्रतिमा बनाय चांदी अथवा कांस्य के पात्रमें स्थापनकर श्वेत पुष्प श्वेतवस्त्र आदि से पूजनकर दही भात नैवेद्यलगाय छतरीजूता दक्षिणासहित वह मूर्ति ब्राह्मण को दे यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै इसव्रतके करनेसे चन्द्रमाप्रसन्नहोताहै औ चन्द्रमा प्रसन्न होजानेसे सब ग्रह अनुग्रह करतेहैं स्वाति नक्षत्र युक्त भौमबारको बृतका आरंभकर सात नक्तबृतकरै अन्तमें सुवर्णकी भौमप्रतिमाबनाय ताम्रपात्रमें स्थापनकर रक्त

चन्दन रक्तवस्त्र आदिसे पूजनकर घृतयुक्तकसार नैवेद्य लगाय (जन्मनःप्रभवेऽपित्वंमंगलः पृच्छ्यसेबुधैः। अमंगलंनिहत्याशुसर्वदायच्छमंगलम्)यह मन्त्रपढ़ ब्राह्मणको देवै इसीप्रकार बिशाखा युक्तबुधबारमें बुधका पूजनकर (बुधत्वंबुद्धिजननोबोधव्यःसर्वदानृणाम्। तत्वावबोधंकुरुमे राजपुत्रनमोनमः) यह मन्त्रपढ़ बुधप्रतिमा ब्राह्मण को देवै अनुराधायुक्त बृहस्पतिबारसे सात नक्तब्रतकर अन्त में सुवर्ण की बृहस्पति मूर्त्तिबनाय सुवर्णपात्रमें स्थापनकर गंध पीतपुष्प पीतवस्त्र यज्ञोपवीत आदि से पूजन कर खण्डके भक्ष्य नैवेद्य लगाय (धर्मशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ ज्ञान विज्ञानपारग। अलब्धबुद्धिगांभीर्य देवाचार्यनमोस्तुते) यह मन्त्रपढ़ ब्राह्मण को देवै इसीप्रकार ज्येष्ठायुक्त शुक्रवारको ब्रतका आरम्भकरै औ सातनक्तब्रतकर अन्तमें सुवर्णकी शुक्रप्रतिमाबनाय चांदी अथवा बांसकेपात्र में स्थापनकर श्वेतचन्दन श्वेतवस्त्र आदि से पूजनकर घृत पायसका नैवेद्यलगाय (भार्गवोभर्गशुक्रोपिशुक्रक्रमवि शारदः। हत्वाग्रहकृतान्दोषान् सर्वकामप्रदोभव)यहमन्त्र पढ़ ब्राह्मणको देवै मूलायुक्त शनिवारसे सातनक्त ब्रतसात शनिवारोंमेंकर अन्तमें शनिराहु औ केतुकापूजनकरै तिल औ घृत करके ग्रहोंके नामसे होमकरै अर्कपलाश खदिर अपामार्ग पिप्पल उदुंबर शमी दूर्वा औ कुशा ये नवग्रहों की क्रमसे समिधा हैं इनमें प्रत्येक समिधा करके एक सौ आठ २ अथवा अट्ठाईस २ आहुति देवै शनैश्चरआदि की सुवर्ण की प्रतिमा बनाय कस्तूरी नीलवस्त्र आदि से पूजन कर कृसर नैवेद्य लगावै औ (शनैश्चरनमस्तेस्तु

नमस्तेराहवेतथा। केतवेचनमस्तुभ्यं सर्वसम्पत्प्रदोभव) यह मन्त्रपढ़ सब सामग्री सहित ब्राह्मणको देवै इस विधानके करने से सब ग्रहोंकी पीड़ा शान्त होजाती है औ क्रूरग्रहभी सौम्य होजाते हैं शनि राहु औ केतुकी प्रतिमा को लोहपात्रमें स्थापनकर पूजाकरै औ कृष्णागरुका धूप देवै जो इस विधानको करै उसके सब उपद्रव शान्त होजातेहैं औ जो इस ग्रहकल्पकोपढ़ै अथवा श्रद्धासे श्रवण करै उसके ऊपर सब ग्रह अनुग्रहकर धन सन्तान आरोग्य सुख ऐश्वर्य आदि देते हैं॥

एकसौतीन का अध्याय॥

पिप्पलादमुनिकीकथाऔशनैश्चरव्रतकाविधानतथाफल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं पूर्वकालमें त्रेतायुगकेबीचअनावृष्टिहोनेसे बड़ादुर्भिक्षपड़ा उसघोरकालमें कौशिकमुनि अपने स्त्री पुत्रों को साथले घरछोड़ दूसरे देश को चले परन्तु रस्ते में सब कुटुम्ब का पोषण न होसका इसलिये निर्दयहो हृदयको कठोरकर एक बालकको मार्गमेंही छोड़ दिया वह अकेला बालक भूखा प्यासा वनमें रोता फिरता था अकस्मात् एक पीपलकावृक्ष उसने देखा औ उसके समीप एक बावड़ी भी दृष्टिआई बालकने पीपलके फल बीन २ खाये औ ठंढाजलपिया कुछ स्वस्थहो वहीं रहने का बिचारकिया मुनिका बालकही तो था वहांही आश्रम बनाय तप करनेलगा नित्य पीपलके फलखाय कालक्षेप करता एकदिन नारदमुनि वहां आ निकले बालकने उनको प्रणाम किया औ आदरसे बैठाया नारदजी उसकी अवस्था औ विनयदेख बहुत प्रसन्नहुये औ उसकी दी-

नतापर दयालुहो बालकके मौंजीबन्धनआदि सबसंस्कार कर पदक्रमः रहस्य सहित वेद उसको पढ़ाय वैष्णव द्वादशाक्षर मन्त्र का उपदेश कर दिया बालक मन्त्रपातेही विष्णुभगवान्का ध्यान औ मन्त्रका जप करने लगा नारदजीभी वहांहींरहे थोड़े कालमेंही बालकके तपसे संतुष्ट हो गरुड़पर चढ़ विष्णुभगवान् वहांआये बालक ने उन को नारदके वचनसे जाना औ भगवान्में दृढ़भक्ति मांगी भगवान्भी ज्ञान औ योग का उपदेश औ अपने में दृढ़ भक्ति देकर अन्तर्द्धान भये बालकभी महाज्ञानी होगया एक दिन नारदमुनि से बालकने पूछा कि महाराज यह किस कर्म का फलहै कि मैंने इतना कष्ट उठाया माता पिता का कुछ ठिकानाही नहीं संस्कार भी अनुग्रह कर आपने किये यह नारदजी बालक का वचनसुन बोले कि हे बालक शनैश्चरने तुमको इतनी पीड़ादी औ सारादेश उसी दुष्टग्रहने पीडितकिया वह शनैश्चर आकाशमें प्रज्वलित देखपड़ता है यह सुनतेही बालक को बड़ा क्रोध हुआ औ शनैश्चरको आकाशसे अपनेतपके प्रभावकरके गिराया शनैश्चरभी एकपर्वतपर पहिलेगिरे जिसमें पैरटूट जानेसे पंगुहोगये नारदजी शनैश्चरको भूमिपर गिरे देख हर्षसे नाचनेलगे औ सब देवताओंको बुलालाये औ शनैश्चरकी दुर्गति सबको दिखाई तब ब्रह्माजीने बालक से कहा कि हे बालक तैंने पीपलके फलखाकर तपकिया इस लिये तेरा नाम पिप्पलाद होगया जो पुरुष स्थावरवार अर्थात् शनिवारको इसआश्रममें तेरापूजनकरैंगे अथवा पिप्पलाद इस नाम का स्मरण करैंगे उनको सात जन्म

पर्यन्त शनिपीड़ा न होगी अब तुम निरपराध शनैश्चरको हमारी आज्ञासे पूर्ववत् आकाशमें स्थापन करदो हे पुत्र ग्रहपीड़ाकी निवृत्तिके लिये शान्ति होम बलि नमस्कार आदि करने चाहिये इसभांति ग्रहोंका अनादर नहीं करना शनिपीड़ा निवृत्तिकेलिये शनिवारको तैलाभ्यंग करै औ ब्राह्मणको भी अभ्यंगके लिये तैलदेवै शनिकी लोह की प्रतिमा बनाय तैलके पात्रमें रक्खै औ एकवर्ष पर्यन्त प्रतिशनिवारको पूजनकरै अन्तमें कृष्णपुष्पकृष्णदोवस्त्र कृसर तिल भात आदि करके पूजनकर कृष्ण गौ काला कम्बल तिलतेल औ दक्षिणासहित शन्नोदेवी इत्यादि वैदिकमंत्रपढ़ ब्राह्मणकोदेवै औ ब्राह्मणबिना और वर्ण (क्रूरावलोकनवशाद्भुवनं योनाशयतितुष्टोधनकनकसुखानिददात्यसौशनैश्चरःपातु) यहमन्त्रपढ़ै यहमन्त्र राजानलको शनैश्चरने स्वप्नमें आप उपदेश कियाहै। पीछे (खंडंनीलांजनप्रख्यं नीलवर्णसमप्रभम्। छायामार्तंडसंभूतंनमस्यामिशनैश्चरम्) यहमन्त्रपढ़ ब्राह्मणकोविसर्जनकरै जो मनुष्य प्रति स्थावरबारको एकवर्ष व्रतकरैं औ इस विधि से उद्यापन करैंगे उनको कभी शनैश्चरकी पीड़ा न होगी इतना कह सब देवताओंको संगले ब्रह्माजी अपने धाम कोगये औ पिप्पलादमुनिनेभी ब्रह्माजीकीआज्ञामान शनैश्चरको अपनेस्थानमेंपहुंचादिया इसशनैश्चरोपाख्यान को जो भक्तिसेसुनै उसको शनि पीड़ा न होगी लोह की शनिप्रतिमा गढ़ाय तेलसे पूर्ण लोहकलश पर स्थापन करै दक्षिणासहितब्राह्मणकोदेवै तो कभी शनिपीड़ा न होय॥

एकसौचारका अध्याय॥

संक्रांति व्रत का विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज संक्रांति के दिन स्थंडिलके ऊपर पद्मबनाय उसमें रक्तचन्दन करवीर पुष्पआदिकरके सूर्य्यनारायणका पूजनकर (नमस्तेविश्व रूपायविश्वधाम्नेस्वयंभुवे। नमोनमस्तेवरद ऋक्सामय जुषांपते) इसमन्त्रसे अर्घ्यदेवै औ ब्राह्मणको जलकुंभ औ घृतपात्र सहित सुवर्णका कमलदेवै औ नक्तव्रतकरै इस प्रकार एकवर्ष पर्यंत प्रतिमास संक्रांति व्रत औ सूर्य्यनारायण का पूजनकर अन्तमें घृतपायस का हवनकर बारह गौ जो सामर्थ्य न होय तो एकगौ सस्ययुक्त भूमि अथवा सोने चांदी तांबा आटा आदि से बनी भूमि औ सुवर्ण की सूर्य्य प्रतिमा ब्राह्मणको देवै इसमें वित्तशाठ्य न करै जो पुरुषइसप्रकार संक्रांतिव्रतकरै वह प्रलय पर्यंत स्वर्ग में निवासकरताहै औ जन्मान्तरमें चक्रवर्ती राजाहोय पुत्र उत्तमस्त्री आरोग्य औ दीर्घायुष् पाताहै जो इस संक्रांतिव्रत विधानको पढ़ै सुनै अथवा औरोंको व्रतकाउपदेश देवै वह भी स्वर्गवास पाताहै॥

एकसौपांच का अध्याय॥

भद्रा की कथा, भद्राव्रत का विधान औ फल॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र लोकमें भद्रा औ विष्टिनामसे प्रसिद्धहै वह कौनहै कैसीहै किसकीपुत्री है औ उसका पूजन किस विधिसे कियाजाताहै यह आप वर्णनकरैं यह राजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज विष्टि सूर्य्यनारायण की कन्याहै छाया

में उत्पन्न भई है औ शनैश्चरकी सोदर भगिनी है वह कृ-
ष्णवर्णा ऊर्ध्वकेशी दीर्घदंष्ट्रा औ बड़ी भयंकर स्वरूपहै
उत्पन्नहोतेही भुवनका ग्रास करने दौड़ी यज्ञोंमें विघ्न औ
उत्सवोंमें उपद्रव करनेलगी सबजगत्‌को उसने त्रासदिया
तब सूर्य्यनारायणने विचारकिया कि इसकन्याका बिवाह
करनाचाहिये क्योंकि तरुण कन्याको पिताके घरमें रहना
उचितनहीं यहशोच सूर्य्यनारायणने उसका बिवाह ठह-
राया परन्तु उसने क्षणमात्रमें बरकेप्राणलिये औ बिवाह
के मण्डप आदि उखाड़कर फेंकदिये औ सारीप्रजाको
पीड़न करनेलगी सूर्य्यनारायण विचार करनेलगे कि इस
दुष्टा कुरूपा स्वेछाबिहारिणी अतिक्रूरा कन्याको किसके
साथ बिवाहैं इसी अवसर में प्रजाकी अतिपीड़ा देख ब्र-
ह्माजी सूर्य्यभगवान्‌के पासआये औ उनकी कन्याकी सब
दुष्टताकही तब सूर्य्यनारायण बोले कि हे ब्रह्माजी आप
जगत्‌के कर्त्ता हर्त्ताहोकर हमको क्याकहतेहो जो उचित स-
मझपड़ै सो कीजिये यह सूर्य्यनारायणका वचनसुन ब्रह्मा
जीने विष्टिको बुलाकर कहा कि हे भद्रे बव बालव कौलव
आदि करणोंके अन्तमें तू निवासकर औ जो पुरुष खेती
व्यापारआदि कर्मतेरे बीचकरैं उनको तू भक्षणकर तीन
दिन किसीकोबाधा न दे चौथेदिनके अर्धमें तेराभोगहोगा
उसदिन सुर असुर सब तेरापूजन करैंगे औ जो तेरे को
न मानैं उनका तू कार्य विध्वंसकर इतना विष्टिके प्रतिउ-
पदेश कर ब्रह्माजी अपने लोककोगये औ विष्टिभी भ्रांत
चित्तहो देवता दैत्य मनुष्यआदि को त्रास देतीहुई विच-
रनेलगी इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज

इसप्रकार भद्राकी उत्पत्तिभईहै यह अतिदुष्टाहै इसलिये अवश्य इसका त्यागकरना चाहिये विष्टिका स्वरूप यह है कि अति कृष्णवर्ण लम्बी नासिका बड़ी २ दंष्ट्रा मोटी पिण्डली ऊँची जंघा फटे कपोल मलिन वस्त्र पहिने मुख से अग्निज्वाला उगलतीहुई लोकोंका कार्य नाशकरनेके लिये त्रिभुवनमें बिचरतीहै भद्राके पांचघड़ीमुखमें दोघड़ी कण्ठमेंग्यारहघड़ी हृदयमेंचारघड़ी नाभिमेंपांचघड़ीकटिमें औतीनघड़ी पुच्छमेंस्थितहैं (मुखमें कार्यनाश कण्ठमें धन नाशहृदयमें प्राणहानिनाभिमें कलहकटिमें अर्थभ्रंश औ पुच्छमें जय होताहै) विष्टिके पुच्छमें जो भलेबुरे कार्यकरै सब सिद्धहोते हैं (धन्यादधिमुखीभद्रा महामारीखरानना॥ कालरात्रिर्महारौद्राविष्टिश्चकुलपुच्छिका। भैरवीचमहाकालीअसुराणांक्षयंकरी) ये बारह भद्राके नामजो पुरुष प्रभात उठ पढ़े उस को व्याधिका भयनहीं होता सब ग्रह अनुकूलरहते हैं युद्धमें द्यूतमें औ राजकुलमें जयपाताहै जो विधिपूर्वक नित्य विष्टिका पूजनकरै उसके सब कार्यसिद्ध होतेहैं भद्राव्रत करनेहारे पुरुषको प्रेत पिशाच भूत पूतना शाकिनी ग्रह आदि पीडानहींदेते इष्टवियोग नहींहोता औ अन्तमें वहपुरुष सूर्यलोकको जाताहै सूर्यकीपुत्री शनिकी भगिनी अतिक्रूरा विष्टिका जो भक्तिसे उपवासकरै उसके सबमनोरथ सिद्धहोतेहैं अबहम भद्राकेव्रतका विधानकहतेहैं रात्रिकेसमय भद्राहोय तो दोदिन नक्तव्रतकरै एकप्रहरकेअनंतर तीनप्रहर दिनमें भद्रा होय तो उपवासकरै नहीं तो एक भक्तकरना चाहिये स्त्री अथवा पुरुष व्रत के दिन सुगन्ध आमलकलगाय सर्वौषधि जलसे स्नानकरै

अथवा नदीआदिपर जाय विधिसे स्नानकरै पीछे देवता पितरों का तर्पण पूजन आदि कर कुशाकी भद्राकी मूर्त्ति बनाय गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजनकर भद्रा के नामोंसे एकसौआठ आहुति देकर तिल औ पायस ब्राह्मण को भोजन कराय आप भी मौन से तिल सहित कृसर भोजनकरै औ पूजनके अन्त में (छायासूर्यसुतेदेवि विष्टेइष्टार्थदायिनि । पूजितासियथाभक्त्याभद्रेभद्रप्रदाभव) यह मन्त्र पढ़ै इसविधि से सत्रह भद्राव्रतकर अन्त में लोहके पीठपर भद्राकी मूर्त्ति स्थापनकर कृष्णवस्त्र उढ़ाय गन्ध पुष्प आदिसे पूजनकर कृसर नैवेद्यलगावे पीछे लोह तैल तिल सवत्सा कृष्णागौ कालाकंबल औ दक्षिणा सहित वहमूर्त्तिब्राह्मणकोदेवै इसबिधिसे जो पुरुष भद्राव्रत औ उद्यापन करै उसके किसी कार्य में विघ्न नहीं होता ॥

एकसौछठा अध्याय ॥

अगस्त्यमुनिकेचरित्रोंकावर्णन,अगस्त्यदानकाविधानऔफल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज अब हम सब पाप हरनेहारे अगस्त्यव्रतका विधान कहते हैं राजायुधिष्ठिरने कहा कि प्रथम आप अगस्त्यमुनिके चरित वर्णन कीजिये तब अर्घ्यदान का विधान औ उदय का काल कहना तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज मित्र औ वरुण दोनोंमुनि मन्दरपर्वतके समीपतपकरतेथे उनके तपमें विघ्न करने के लिये इन्द्रने उर्वशी नाम अप्सराको भेजा अप्सराको देखतेही दोनों मुनियों का वीर्य कुम्भमें गिरा उससे अगस्त्यमुनिउत्पन्नभये अगस्त्यमुनिका लोपामुद्रा से विवाहभया अगस्त्यजीने बहुतकाल बड़ा उग्र

तपकिया उसी समय बड़े दुराचार औ ब्राह्मणों के शत्रु इल्वल औ वातापि नाम दो दैत्य थे उनका यह काम था कि एकभाई मेष बनता दूसरा भाई उसमेषको मार उसका मांस रींध श्राद्धके व्याजसे ब्राह्मणोंको निमन्त्रणदे उनको वह मांस खिलादेता औ पीछे भाई का नामलेकर पुकारता वह भी सब के उदर विदारणकर निकलआता इसप्रकार सैकड़ोंमुनि उनने मारडाले एक दिन इल्वलने अगस्त्य मुनि को भी श्राद्धमें निमन्त्रण दिया तब अगस्त्यमुनि ने कहा कि हम अकेलेही श्राद्धमें भोजन करैंगे औ सम्पूर्ण मांस हमकोहीदेना इल्वलनेभी यह बात स्वीकारकरी औ सब मांस अगस्त्यके आगे परोसदिया अगस्त्य जब भोजनकरचुके तब इल्वल पुकारा कि अरेभाई क्यों बिलम्ब करता है बाहर निकलआ अगस्त्यमुनि ने कहा कि वह तो अब जीर्णहुआ कहां से निकलेगा यह सुन इल्वलने अगस्त्यमुनि पर बड़ा क्रोधकिया परन्तु अगस्त्यमुनि ने उसको भी अपनी क्रूर दृष्टि से भस्मकरडाला इन दोनों दैत्यों का संहार होतेही बाकीके दैत्य भयसे समुद्र में जा घुसे औ नित्य रात्रिके समय निकल मुनियों को भक्षण करजाते यज्ञपात्र फोड़डालते औ फिर समुद्रमें प्रविष्ट होजाते यह दैत्यों का बड़ा उत्पात देख ब्रह्मा विष्णु शिव कुबेर इन्द्र आदि सब देवता सम्मतिकर अगस्त्यमुनि के समीप आये औ कहा कि हे मुनि तुम समुद्र को पानकरो मुनिने भी देवताओं की आज्ञा से समुद्रपान किया तब सूखे समुद्रमें सब दैत्यों को देवताओं ने मारा इस प्रकार अगस्त्यमुनि ने सब जगत् निष्कंटक करदिया पीछे गंगा

के प्रवाहसे समुद्र पूर्णभया तब सब देवता औ दैत्यों ने मिलकर मन्दराचलको मंथान औ वासुकि को नेत्रबनाय समुद्र को मथन किया उसमेंसे प्रथम तो अमृत कौस्तुभ ऐरावत आदि उत्तम २ पदार्थ निकले औ पीछे अति दारुण कालकूट विष प्रकटभया जिसके गन्धसेही देवता औ दैत्य मूर्च्छितहोनेलगे उसमेंसे कुछ विष शिवजीने भक्षण किया जिससे वे नीलकण्ठ भये तब ब्रह्माजीने देवताओं से कहा कि अब और किसी की सामर्थ्य नहीं है जो इस बाकीके बिषका संहारकरै इसलिये तुम सब दक्षिणदिशा में लंका के समीप अगस्त्यमुनि रहते हैं उनके शरणमें जाओ यह ब्रह्माजीकीआज्ञापाय सब देव दानव अगस्त्य मुनिके समीपगये उनने भी सब को ब्याकुलदेख आश्वासनकिया औ उस बिषको अपने तपोबलसे हिमालयमें प्रवृष्टकिया वह बिष कन्दरूपसे वहां उत्पन्नहुआ और जो कुछ शेषरहा वह धतूर करवीर अर्क आदिवृक्षोंमें बांटदिया उस हिमालयपर्वतके बिषयुक्त बायुसे मनुष्योंको अनेक प्रकारके रोगहोते हैं वह बिष बायु वृष संक्रान्तिसे लेकर सिंहांत तक रहताहै पीछे बिषका वेग शान्त होजाताहै इस प्रकार बिषके संकटसे अगस्त्यमुनि ने सबको बचाया पूर्व कालमें प्रजाकी बहुत वृद्धिभई तब ब्रह्माजीकी देहसे मृत्यु उत्पन्नहुआ औ प्रजाका संहार करनेलगा एकदिन अगस्त्यमुनिके समीपभीआया अगस्त्यमुनिने अपनी क्रोधकी दृष्टिसे उसीक्षण मृत्युको भस्म करदिया तब ब्रह्माजी को दूसरा मृत्यु सिरजना पड़ा श्वेतनाम राजा स्वर्गसे नित्य आकर दण्डकारण्यमें अपने पूर्वशरीरका मांसखाता एक

दिन उसने निर्विण्णाहो अगस्त्यमुनिसे कहा कि महाराज सब दान मैंने किये परन्तु अन्न औ जलका दान कभी न किया इसलिये स्वर्गवास पाकरभी नित्य यहशवमांसमुझे खाना पड़ताहै अब आप ऐसा अनुग्रहकरैं कि इस विपत्ति से छूटूँ यह राजाका दीन वचनसुन दयाकर अगस्त्यमुनि ने अन्नकरके उसका श्राद्धकिया जिससे राजाको स्वर्गमेंही नित्य भोजनके लिये उत्तम उत्तम पदार्थ मिलनेलगे बिन्ध्यपर्वतने विचारकिया कि सूर्य्यनारायण मेरुपर्वतकी प्रदक्षिणा करतेहैं मेरी प्रदक्षिणा नहींकरते इसलिये इनका मार्ग रोकनाचाहिये यह मनमेंठान बिन्ध्य बढ़नेलगा उसको नित्य बढ़तेदेख देवता बहुत ब्याकुलहुये औ अगस्त्य मुनिके समीप जाय कहा कि आप बिन्ध्याचलको बढ़नेसे रोकें नहीं तो वह सूर्य्यभगवान् का मार्ग रोधकरैगा यह देवताओंका बचनसुन अगस्त्यजी बिन्ध्यके पासगये औ बिन्ध्यसे कहा कि हम तीर्थयात्राको जातेहैं तुम थोड़ासा नीचे होजाओ तो हम तुम्हारेपार चलेजायँ बिन्ध्य मुनि की आज्ञासे नम्रहोगया अगस्त्यमुनि ने पर्वत को लंघन कर कहा कि जबतक हम तीर्थयात्रासे न लौटैं तबतकऊँचे मतहोना इतना कह अगस्त्यमुनिगये सो अबतकभीनहीं लौटे औ दक्षिणदिशामें आकाशके बीच देदीप्यमानदेख पड़तेहैं एकसमय बसन्त ऋतु में लोपामुद्रा ने अगस्त्य मुनिसे कहा कि आपके साथ विषयों को भोगना चाहती हूँ परन्तु हाथी घोड़े दासी दास उत्तम शय्या वस्त्र भूषण आदि सब सामग्री सहित एक रत्नजटित प्रासादहोय यह पत्नीका वचनसुन अगस्त्यमुनिने कुबेरको बुलाकर आज्ञा

दी कुवेर नेभी सब सामग्री सहित महल औ रत्नोंके भूषण उसीक्षण मुनिको निवेदनकिये तब अगस्त्यमुनि ने बहुत काल पर्यन्त लोपामुद्राकेसंग बिहारकिया इसभांति और भी अनेक चरित अगस्त्यमुनिके हैं अब हम उनके अर्घ्य का बिधान कहतेहैं कन्याके सूर्यके सातअंशजायँ उसदिन रात्रिके समय शुक्लतिलोंसे स्नानकर श्वेतवस्त्र धार माला वस्त्रआदिसे भूषित पंचरत्न सहित अव्रण कलश स्थापन करै उसकेऊपर अनेकप्रकारकेभक्ष्य औ सप्तधान्य सहित घृतपात्र स्थापनकर उसमें जटाधारे कमण्डलु हाथमेंलिये शिष्य औ मृगोंकरकेवेष्टित ऐसी अगस्त्यमुनिकी सुवर्णकी प्रतिमा बनाय स्थापनकरै पीछे श्वेतचन्दन चमेलीकेपुष्प उत्तम धूपदीप नैवेद्य आदिसे उनका पूजनकर अर्घ्यदेवै खजूर नालिकेर कूष्मांड फालसा ककोड़े करेले ककड़ीबीज पूरवृन्ताक दाड़िम नारंगी कदली फल कुशा काश दूर्वाके अंकुर कमल उत्पल सप्तधान्य वस्त्र अनेक प्रकारके भक्ष्य ये सब पदार्थ बांसके पात्रमेंधर सुवर्ण चांदी अथवा ताम्र का अर्घ्यपात्र मस्तकतक उठाय दक्षिणाभिमुखहो दोनों जानु भूमिपर रख प्रसन्न चित्तहो (काशपुष्पप्रतीकाशअ ग्निमारुतसंभव। मित्रावरुणयोःपुत्र कुंभयोनेनमोस्तुते॥ विंध्यवृद्धिक्षयकरमेघतोयाविषापह। रत्नवल्लभदेवर्षे लंका वासनमोस्तुते॥ वातापिर्भक्षितोयेन समुद्रःशोषितःपुरा। लोपामुद्रापतिःश्रीमान् योसौतस्मैनमोनमः॥ येनोदितेन पापानिप्रलयंयांतिव्याधयः। तस्मैनमोस्त्वगस्त्याय सशि ष्यायसुपुत्रिणे) ये मन्त्र पढ़ अर्घ्यदेवै औ ब्राह्मण (अ गस्त्यमृषिंनसामामित्रैः प्रजामपत्यंबलामिच्छमानः। उभौ

वर्णाद्दृष्टिरुग्रः पुपोष सत्यादेवेथशिष्मेजगाम) इस वैदिक मन्त्रसे अर्घ्यदेवै इसप्रकार अर्घ्यदेकर (अर्चितस्त्वंयथा शक्त्या मयागस्त्यमहामुने। ऐहिकामुष्मिकींदत्वा कार्यं सिद्धिंब्रजस्वमे) इसमन्त्रसे अगस्त्यमुनिका बिसर्जनकरै पीछे सब सामग्रीसहितमूर्त्ति (अगस्त्योमेमनस्थश्च अगस्त्योस्मिन्धनेस्थितः। अगस्त्योद्विजरूपेण प्रतिगृह्णातु संस्तुतः)यहमन्त्रपढ़ वेदवेत्ताब्राह्मणकोदेवै ब्राह्मणभीप्रतिग्रहलेकर(अगस्त्यःसप्तजन्मानिनाशयित्वातवापदम्। अतुलंविमलंसौख्यं प्रयच्छतुमहामुनिः) यहमन्त्रपढ़ै इसप्रकार अर्घ्यदानकर कोई फल धान्य अथवा लवण आदि एकरस वर्षभरत्यागै इसविधिसे ब्राह्मण सातवर्ष अर्घ्यदेवै तो चारों वेद औ सब शास्त्रका जाननेहारा होय क्षत्रिय सब पृथिवीको जीत राजाहोय वैश्य धन धान्य औ बहुतसे पशुपावै शूद्रअर्घ्यदेवै तो धनसन्मान औ आरोग्यका भागीहोय स्त्री बहुतसे पुत्र सौभाग्य औ संपत्ति पावैकन्याको उत्तम वरमिलै बिधवाको अनंत पुण्यकी प्राप्ति होय औ रोगी अगस्त्यमुनिको अर्घ्यदेकर रोगसेछूटै जिसदेशमें इसविधानसे अर्घ्य दियाजाय वहां कभी दुर्भिक्ष आदिका भय न होय अर्घ्यदेनेहारापुरुष हंसयुक्त बिमानमेंबैठस्वर्गकोजाताहै जोऐश्वर्य भोग शरीरसौख्य संतान पशु आदि की इच्छाहोय तो अवश्यही अगस्त्यमुनिको भक्ति पूर्वक शरत् ऋतुमें अर्घ्यदेवै॥

एकसौसातवां अध्याय॥

नवीन चन्द्रको अर्घ्यदेने का विधान॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराज अब हम नवीन

चन्द्रमाको अर्घ्यदानका बिधानकहतेहैं प्रतिमासकी शुक्ल द्वितीयाको प्रदोषकेसमय भूमिपर गोबरका मण्डलबनाय उसमें रोहिणी सहित चन्द्रमाकी प्रतिमास्थापनकर श्वेत चंदन श्वेतपुष्प अक्षत धूपदीप अनेकप्रकारके नैवेद्यफल दही श्वेत बस्त्र दूर्वांकुर आदिसे पूजनकर इनहीं पदार्थों करके चन्द्रमा को अर्घ्य देवै जो इस विधि से प्रतिमास चन्द्रमा को अर्घ्य देवै वह पुत्र पौत्र धन पशु आरोग्य आदि पाय सौ बर्ष संसार का सुख भोगअन्तमें चन्द्रलोक को जाताहै वहां प्रलय पर्यंत दिब्य स्त्रियोंके साथ बिहार कर मुक्तिपाताहै श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज आपचन्द्रबंशमें उत्पन्न भये हैं इसलिये धर्म ऐश्वर्य आरोग्य औ उत्तम भोगोंकी प्राप्तिके लिये आपको अवश्य नवीन चन्द्रको अर्घ्य देनाचाहिये ॥

एकसौआठवां अध्याय ॥

शुक्र औ वृहस्पतिको अर्घ्यदेने का बिधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज प्रति शुक्रका दोष निवृत्त होनेके लिये यात्राके आरम्भमें यात्राकी समाप्तिमें औ शुक्रोदयके समय शुक्रपूजा अवश्य करनी चाहिये उसका हम विधान कहते हैं सुवर्ण चांदी अथवा कांस्यके पात्रमें चांदीकी शुक्रकी मूर्त्ति स्थापनकर सब उपचारों से उसका पूजनकरै पीछे (नमस्तेसर्वलोकेश नमस्तेभृगुनन्दन।कवेसर्वार्थसिद्ध्यर्थंगृहाणार्घ्यंनमोस्तुते १) इस मंत्रसे अर्घ्य देकर शुक्लवस्त्र मोती सवत्सा गौ औ दक्षिणा सहित वह मूर्त्ति ब्राह्मणको देवै पुष्प बटक करका जल गेहूं चणे आदिसे जबतक शुक्रका पूजन न कर लेवै

तबतक नवान्न भक्षण न करै इस विधि शुक्रका पूजन करने से सब कामना सिद्धि होती हैं इसी विधिसे सुवर्ण आदि के पात्रमें सुवर्णकी वृहस्पति मूर्त्ति स्थापनकर पीतवस्त्र उढ़ावे औ सर्षप पलाशकी त्वचाके क्वाथ औ पंचगव्य के जलसे स्नानकर पीतवस्त्र पहिन सब उपचारोंसे वृहस्पति का पूजनकर घृतका हवनकरै औ पूर्वोक्त रीतिसे अर्घ्यदेवै पीछे सवत्सा गौ सहित वह प्रतिमा ब्राह्मणको देवै यात्रा के समय वृहस्पतिकी संक्रांति औ उदयके समय इस विधि से पूजनकरै तो सब मनोवाञ्छितफल पावै शुक्र औ वृहस्पतिकी प्रीतिके लिये उत्तम मोतीही देवै तो भी सब मनोरथ सिद्धहोयँ औ वह पुरुष कभी कुरूप न होय जो शुक्र की औ गुरुकी इस विधिसे पूजाकरै उनके घरमें कभी प्रति शुक्र आदिका दोष नहीं होता॥

एकसौनवका अध्याय॥

पंचाशीति व्रतोंका फल सहित विधान॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं अब हम अत्यन्त गुप्तपंचाशीतिव्रत कहते हैं जो भविष्य पद्म मार्कण्डेय औ वराहपुराणमें कहे हैं अभीष्ट मित्र पुत्र शिष्य औ बंधुको धर्म कहना चाहिये इसलिये श्रुतिस्मृति औ पुराणोंसे जो हमने धर्म निश्चय कियाहै वह आपके प्रति कथन करते हैं प्रभातसन्ध्यामें स्नानकर अश्वत्थवृक्षका पूजनकर ब्राह्मणों को तिलपात्रदेवै वह कभी कृत अकृतका शोक नहींकरता यह अत्यन्त गुप्तव्रत सब पापोंका हरनेहारा है पर्वदिनमें एक कर्ष सुवर्ण ब्राह्मणको देवै यह वाचस्पतिव्रत बुद्धिकी वृद्धिकरता है औ वृहस्पतिने कहा है लवण मिरच जीरा

हींग शुंठी आदि सब मसाले चतुर्थीके दिन एकभक्तकर कुटुम्बी ब्राह्मणको देवै यह शिलाबृत लक्ष्मीलोकमें वास देताहै औ मुखकी शुद्धता करताहै नक्तबृतकर गौ वस्त्र औ सुवर्णका त्रिशूल कुटुम्बी ब्राह्मणकोदेवै औ प्रणामकर (श्री केशवौप्रीयेताम्) यह वाक्यकहै यह महापातक हरनेहारा बृतहै एकबर्ष पर्यंत एकभक्त बृतकर अन्तमें सुवर्णके वृष औ सब उपस्कारों सहित तिल धेनु ब्राह्मणको देवै यह रुद्र बृत सबप्रकारके शोक हरताहै औ इसका करनेहारा शिव-लोकको जाताहै सर्वौषधि जलसे स्नानकर पंचमीके दिन सर्वोपस्कर दान करै ऊखल मूशल सूप चलनी स्थाली चूल्हा जल कुम्भ ये गृहस्थके उपस्कर हैं इनको गृहस्थी ब्राह्मणके घरमें स्थापनकरै यह गृह बृत सब सुख देनेहारा है औ अत्रिमुनिने अनसूयाको उपदेश कियाहै सुवर्ण का नीलोत्पल शर्करापात्र सहित श्रद्धासे कुटुम्बी ब्राह्मणकोदेवै यह लीलाबृतहै इसका करनेहारा विष्णुलोकको जाता है आषाढ़ आदि चार महीने तैलाभ्यंग न करै अन्तमें तिल तैल पूर्ण नया घट ब्राह्मणको देवै औ घृत पायस ब्राह्मण को भोजन करावै यह लोकप्रीतिकर ब्रतहै इसको भक्ति से करनेहारा पुरुष बिष्णुलोकको जाताहै चैत्रमासमें दही दूध घृत औ गुड़ खांड़ आदि इक्षु बिकार त्यागै अन्तमें ब्राह्मण मिथुनका पूजनकर ये सबपदार्थ औ दो उत्तम वस्त्र उनको देकर (गौरीमेप्रीयताम्) यह वाक्यकहै यह गौरीब्रत करनेसे भगवतीलोककी प्राप्तिहोती है पौषकृष्ण त्रयोदशीसे नक्तब्रतकरै एकवर्ष बृतकर सप्तधान्य औ दो वस्त्रोंसहित सुवर्णका अशोकवृक्ष ब्राह्मणको देकर (प्रद्युम्नः

प्रीयताम्) यह वाक्यकहै यह कामव्रत सब शोकका नाश करनेहारा है इसको जो पुरुष भक्तिसे करै वह कल्पभर विष्णुलोक में निवास करता है आषाढ़ आदि चारमहीने नख न कटावै औ वृंताक न खाय अन्तमें कार्त्तिककी पूर्णिमाकेदिन घृत औ शहदकेघट सहित सुवर्णका वृन्ताक ब्राह्मणकोदेवै यह शिव व्रत है इसका करनेहारा रुद्रलोक को जाताहै पांच पूर्णिमाओं को एकभक्त व्रतकर अन्तमें चन्दन से पूर्णिमाकी मूर्त्तिलिख सब उपचारोंसे पूजनकरै पीछे दूध दही घृत शहद औ श्वेत शर्करा इनपाचों का एक २ घट भरके (मनोरथान्पूरयस्व सम्पूर्णापूर्णिमाह्यसि । पंचकुंभप्रदानेन भूतानांपुष्टिरस्तुमे) यह मन्त्रपढ़ पांच ब्राह्मणों को एक २ कुम्भदेवै यह पंचघट व्रत पुष्टि देनेहारा है औ इसके करने से सब मनोरथ सिद्धहोते हैं हेमन्त और शिशिरऋतु में पुष्पों का त्याग कर फाल्गुन की पूर्णिमा को सुवर्णके तीन पुष्प ब्राह्मणको देकर (शिव केशवौप्रीयेताम्) यह वाक्य उच्चारण करै यह सौगन्ध्य व्रत सुगन्धि उत्पन्न करताहै औ इसव्रतके करनेसे उत्तम लोक की प्राप्तिहोती है फाल्गुन कृष्ण आदि तृतीयाओं को लवण न खाय इसप्रकार एकवर्ष व्रतकर अन्तमें ब्राह्मण मिथुन का पूजन कर सब उपस्करों सहित घर औ उत्तमशय्या उनकोदेवै औ (गोविंदःप्रीयताम्) यह वाक्य कहै इस सौभाग्यव्रत का करनेहारा गौरी लोक को जाता है सन्ध्यासमय एकवर्षपर्यंत मौनव्रतकरै अन्तमें घृतकुंभ दो वस्त्र औ घण्टा ब्राह्मणको देवै यह सारस्वत व्रत विद्या औ रूपदेनेहाराहै इसव्रतके करनेसे अक्षयवास सरस्वती

लोकमें मिलताहै एकवर्ष पंचमी को उपवासकर अन्तमें
सुवर्ण का कमल औ उत्तम गौ ब्राह्मण को देवै यह ल-
क्ष्मीव्रत दुःखशोक का हरनेहारा औ कांति सौभाग्यका
करनेहारा है इसव्रत का करनेहारा जन्म२ में लक्ष्मीवान्
होताहै औ अन्तमें विष्णुलोकको जाताहै जो स्त्री इसव्रत
को करै वह सौभाग्यपावै औ सपत्नियोंका गर्व हरै गौरी
सहित रुद्र लक्ष्मी सहित जनार्दन औ राज्ञी सहित सूर्य
भगवान् की प्रतिमा विधिपूर्वक स्थापनकर सब उपचारों
से पूजनकर वस्त्र घण्टा पात्र औ दक्षिणा सहित वे मूर्त्ति
ब्राह्मणकोदेवै यह देवव्रत दिव्यदेह देनेहाराहै शुक्लचन्दन
आदि से शिवलिंग औ विष्णुमूर्त्ति को नित्य एकवर्ष प्र-
लेपनकरै अन्तमें जल औ घृतके कुंभ सहित उत्तम धेनु
ब्राह्मण को देवै यह शुक्लव्रत सब प्रकारके कल्याण देताहै
इसव्रतको करनेहारा पुरुष दशहजार जन्मतक राजाहोकर
अन्तमें शिवलोक को जाताहै अश्वत्थ सूर्यनारायण औ
गंगाका नित्यपूजनकर एकवर्षपर्यंत एकभक्तव्रतकरै अन्त
में ब्राह्मण मिथुनका पूजनकर तीन गौ औ सुवर्ण का वृक्ष
ब्राह्मण को देवै यह कीर्त्तिव्रत भूमि औ कीर्त्तिका देनेहारा
है जो पुरुष इसव्रतको करै वह दिव्य विमानमें बैठ स्वर्ग
में जाय अप्सराओंके साथ विहार करताहै घृत करके शिव
विष्णु ब्रह्मा सूर्य गौरी गणपति को स्नानकरावै औ सब
उपचारोंसे नित्य इनका वर्षभर पूजनकरै औ सामवेद का
गायनकरै अन्तमें सुवर्ण कमल सहित उत्तम गौ ब्राह्मण
को देवै यह सामव्रत करनेहारा पुरुष शिवलोकमें निवास
करता है नवमी को एकभक्त व्रतकरै औ अन्तमें कंचु

दोवस्त्र औ सुवर्णकासिंह ब्राह्मणकोदेवै जो स्त्री इसवीरव्रत कोकरै वह अनेकजन्मपर्यंत उत्तमरूप सौभाग्य औ सुख पावै औ अन्तमें शिवलोकमेंजायनिवासकरै एकवर्ष पर्यंत दुग्धाहारकर पूर्णिमाव्रतकरै औ श्राद्धकरै अन्तमेंश्राद्धकर पांचसवत्सागौ पिशंगवर्णकेवस्त्र औ सौ जलकुंभ ब्राह्मणों को देवै जो इस पितृव्रत को करै वह अपने सौ पुरुषों का उद्धारकर विष्णुलोकमें प्राप्तहोताहै एकवर्ष ताम्बूलकात्या-गकरअन्तमें तीनताम्बूल सुवर्णकेबनाय उनमें चूनेकेबदले मोती रख ब्राह्मणको देवै इसपत्रव्रतको जो नारीकरै वह दौर्भाग्य औ मुखकादौर्गंध्य कभी नहींपाती इसव्रतके कर-नेसे मुखमें उत्तम सुगन्ध औ सौभाग्य प्राप्तिहोतीहै चैत्र आदिचारमहीने ज्येष्ठ आषाढ़में एकमास अथवा पक्षभर ही जलका अयाचित व्रतकरै अन्तमें जलपूर्ण कलशअन्न वस्त्र घृत सप्तधान्य तिलपात्र औ सुवर्ण ब्राह्मणको देवै यह वारिव्रत करनेहारा पुरुष कल्प भर ब्रह्मलोक में नि-वासकर दूसरे कल्पके प्रारंभमें चक्रवर्ती राजाहोताहै एक वर्ष पंचामृतसे शिव औ विष्णुकोस्नान कराय अन्तमेंगौ शंख औ सुवर्ण ब्राह्मणकोदेवै इस घृतिव्रत का करनेहारा पुरुष बहुत काल शिवलोकमें निवासकर राजा होताहै एक महीने अथवा वर्षभर मांस न खाय अन्तमें सुवर्ण का हरिण औ सवत्सागौ ब्राह्मणकोदेवै यह अहिंसा व्रत सर्वशांतिप्रदहै इस व्रतको करनेहारा पुरुष अश्वमेधयज्ञ का फलपाताहै माघमासमें प्रातःकाल स्नानकर अन्तमें ब्राह्मण दंपती का वस्त्र भूषण पुष्पमाला आदिसे पूजन कर उनको उत्तम भोजन करावै इस सूर्यव्रतको करनेहारा

पुरुष शरीरारोग्य औ सौभाग्यपाताहै औ कल्पभर सूर्य्य
लोकमें निवासकरताहै आषाढ़ आदि चारमहीने प्रातःका
लस्नानकर कार्त्तिकीपूर्णिमाको घृतकुंभ औगो कुटुंबीब्रा-
ह्मणको देकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकरावै इस वैष्णव
बृतके करनेसे सब मनोरथ सिद्धहोते हैं औ विष्णुलोककी
प्राप्तिहोतीहै एकअयनसे दूसरेअयनपर्यंत पुष्पऔघृतका
त्यागकरै अन्तमें पुष्प घृत औ धेनु ब्राह्मणको देकर घृत
औ पायस ब्राह्मणोंको भोजनकरावै इसशील ब्रतके करने
से शील औ आरोग्यकी प्राप्तिहोतीहै औ इस ब्रतकाक-
रनेहारा शिवलोककोजाताहै तैल औ मांसकाएकवर्षत्याग
कर अन्तमें सुवर्णके दीपक चक्र त्रिशूल औ दो वस्त्र ब्रा-
ह्मणको देवै इस बृतके करनेसे तेजकी वृद्धिहोती है वस्त्र
भूषण पुष्प कुंकुम कर्पूर अगरु चन्दन ताम्बूल औ अनेक
प्रकारके भोजनों करके सातदिन सुवासिनी का पूजनकर
कुमुदादेवीप्रीयताम्) यह वाक्यकहै इसीप्रकार कमला
माधवी गौरी पार्वती उमा औ काली इन एक २ देवी के
नामसे सात २ दिन सुवासिनी पूजनकरै प्रत्येक सुवासिनी
को बाली अंगूठी दर्पण उत्तम २ वस्त्र औ षट्रस भोजन
दे सन्तुष्टकरै औ एक ब्राह्मणका पूजनभीकरै यह सप्तसु-
न्दरक नाम ब्रत उत्तमरूप औ सौभाग्य देनेहारा है चैत्र
मासमें सब सुगन्धद्रव्य का त्यागकरै अन्तमें एक सीपी
भर सुगन्धद्रव्य शुक्ल दोवस्त्र औ यथाशक्ति दक्षिणा ब्रा-
ह्मणोंको देवै इस बरुण ब्रतके करनेसे वरुणलोककी प्राप्ति
होतीहै वैशाख मासमें लवणका त्यागकर अन्तमें सवत्सा
गौ ब्राह्मणको देवै यह कान्ति बृत कीर्त्ति औ कान्ति देने-

हाराहै इसब्रतका करनेवाला पुरुष बहुतकाल विष्णुलोक में निवासकर राजा होताहै तीनपलसे अधिक सुवर्ण का ब्रह्माण्ड बनाय द्रोणभर तिलोंकेऊपर स्थापनकर ब्राह्मण मिथुनका पूजनकर उनको देवै औ घृत तिलोंसे हवनकर ब्राह्मण भोजनकरावै औ (विश्वात्माप्रीयताम्) यहवाक्य कहै इसब्रह्मब्रतके करनेसे निर्वाणपद मिलताहै दुग्धाहार करके ब्रतकरै औ सुवर्ण सहित उभयमुखी धेनु ब्राह्मणको देवै तो परमपदको प्राप्तहो तीनदिन दुग्धाहार रहकर सुवर्ण का कल्पवृक्ष बनाय चावलोंके ढेरपररख उत्तम वस्त्र औ पुष्पमालाओं से आच्छादितकर ब्राह्मण को देवै इस कल्प ब्रतका करनेहारा कल्पभर स्वर्गमें निवासकरता है अयाचित ब्रतसे रह कर उत्तम शकटी वस्त्र भूषण ताम्बूल औ मोदकपात्र व्यतीपात दोनों ग्रहण अथवा अयन संक्रान्तिकेदिन ब्राह्मणको देवै यहब्रत परलोक गमन के खेदको हरनेहाराहै वर्षभर अष्टमीको नक्तब्रतकर अन्त में ब्राह्मण को गौ देवै इस सुगति ब्रतको करनेहारा पुरुष स्वर्ग को जाता है हेमंत औ शिशिर ऋतु में इन्धनदान करै औ अन्त में ब्राह्मण को घृत धेनु देवै यह वैश्वानर ब्रत शरीरारोग्य औ कान्तिदेनेहाराहै इसब्रतकोकरनेहारा मुक्ति पाता है एकादशी को नक्तब्रत कर चैत्रमास चित्रा नक्षत्रमें सुवर्णका शंख औ चक्र ब्राह्मणकोदेवै इस विष्णु ब्रतको करनेहारा पुरुष विष्णुलोक में निवासकर कल्प के आदिमें राजाहोता है एकवर्ष दुग्धाहार करै अन्तमें एक गौ औ एकवृक्ष ब्राह्मणको देवैइसलक्ष्मी ब्रतका करनेहारा एक कल्प लक्ष्मीलोकमें निवासकरताहै एकवर्ष सप्तमीको

नक्तव्रतकरै अन्तमें दुग्धदेनेहारी गौ ब्राह्मणकोदेवै इससू
व्रतके करनेसे सूर्य्यलोककी प्राप्तिहोती है चतुर्थी को एक
र्ष नक्तव्रतकर अन्तमें सुवर्णका हाथी ब्राह्मणकोदेवै यह
वनायक व्रत करनेसे सब विघ्न निवृत्तहोते हैं चातुर्मास्यमें
फलोंका त्यागकरै अन्तमें वे फल सुवर्णके बनाय गौ श्वेत
वस्त्रश्रौ घृतपूर्ण घट सहित ब्राह्मण को देवै यह फल व्रत
करनेसे सन्तानकी वृद्धिहोतीहै एकवर्ष पर्य्यन्त सप्तमी को
उपवास कर अन्तमें सुवर्णका कमल श्रौ सब उपकरणों
सहित पांचगौ दुग्धदेनेवाली पौराणिकब्राह्मणको देवै इस
सौरव्रतके करनेसे सूर्यलोककी प्राप्तिहोतीहै बारह द्वादशी
पवासकर अन्तमें वस्त्र सहित जलपूर्ण बारहघट ब्राह्मणों
को देवै यह गोविन्द व्रत सब कार्य सिद्ध करनेहाराहै का-
र्त्तिकी पूर्णिमाको वृषका दानकर नक्तव्रत करै यह वृष व्रत
करनेसे गोलोक प्राप्तिहोतीहै कृच्छ्रव्रतके अन्तमें गोदान
कर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै यह प्राजापत्य व्रत
ब्रह्मलोक प्राप्तिकर्त्ता है एकवर्ष चतुर्दशी को नक्तव्रत कर
अन्तमें वृषभदानकरै इस त्र्यम्बक व्रतकरनेसे शिवलोक
प्राप्ति होती है सातरात्रि उपवासकर ब्राह्मण को घृतपूर्ण
कुम्भदेवै यह ब्रह्मव्रत ब्रह्मलोक दायक है एकवर्ष मघामें
नक्तव्रतकर अन्तमें दुग्धदेनेहारी गौ ब्राह्मणको देवै इस व्रत
का करनेहारा एक कल्प स्वर्गमें निवास करता है कार्त्तिक
शुक्ल चतुर्दशीको उपवासकर रात्रिकेसमय विलक्षण पंच-
गव्यपानकरै अर्थात् कपिला गौका मूत्र कृष्णागौका गो-
बर श्वेत गौ का दूध लालगौका दही श्रौ कर्बुर वर्ण गौ
का घृत लेकर वेदोक्त मन्त्रोंसे कुशोदक सहित मिलाकर

प्राशनकरै दूसरेदिन प्रभात स्नानकर देवता औ पितरों का तर्पण आदि कर ब्राह्मण भोजनकराय आपभी मौन से भोजनकरै इसब्रह्मकूर्च व्रतके करनेसे बाल्य यौवन औ बार्द्धकमें किये सब प्रकारके पापक्षयहोतेहैं एकवर्ष तृतीया को बिना अग्निसिद्ध किया भोजनकरै औ अन्तमें उत्तम गौ ब्राह्मण को देवै इसऋषिव्रत के करने से शिवलोकमें अक्षय वास मिलता है दोपल सुवर्ण का रथ बनाय ब्राह्मण को देवै इस रथ व्रत का करनेहारा कल्पभर स्वर्गमें रहता है इसीप्रकार उपवास कर दोपल सुवर्णका हस्ती ब्राह्मणकोदेवै इसकरिव्रत के करने से स्वर्ग प्राप्तिहोती है एकवर्ष ताम्बूल आदि मुखवास का त्यागकर अन्तमें ब्राह्मणको गौ देवै इस मुखवास व्रतके करने से कुबेर लोक की प्राप्तिहोती है रात्रिभर जल में निवासकर प्रभातही गोदानकरै इस वारुण व्रत का करनेहारा पुरुष वरुणलोक में निवास करता है चंद्रका अयन व्रत करके अन्तमें सुवर्णका चन्द्र ब्राह्मण को देवै इस चंद्रव्रत के करने से चंद्र लोक प्राप्तिहोती है ज्येष्ठमास की अष्टमी औ चतुर्दशी को पंचाग्नि तपकर सुवर्ण सहित गौ ब्राह्मण को देवै इस रुद्र व्रत के करने से शिवलोक प्राप्ति होती है एक वर्षभर तृतीया को शिवालय में लेपन करै अन्त में गोदान करै इस भवानीव्रत के करनेसे सब मनोरथ सिद्धहोते हैं माघ मास की सप्तमी को उपवास कर ब्राह्मण को गौ देवै इस तपनव्रत का करनेहारा कल्पभर स्वर्ग में निवास करताहै तीनरात्रि उपवासकर फाल्गुन पूर्णिमाको गोदानकरै इस धामव्रतके करने से सूर्यलोक प्राप्तिहोती है पूर्णिमासी को

उपवासकर तीनोंकालोंमें वस्त्र भूषण भोजन आदि करके ब्राह्मण मिथुन का पूजनकरै इस इन्दुव्रतके करनेसे मोक्ष प्राप्तिहोतीहै शुक्ल द्वितीया को लवण पूर्ण कांस्यपात्र वस्त्र औ दक्षिणा एकवर्ष पर्यंत ब्राह्मणको देतारहै अन्तमें गो-दानकरै इससोमव्रतका करनेहारापुरुष कल्पभर शिवलोक में निवासकर अन्तमें राजाहोताहै वर्षभर प्रतिपदाको एक भक्तकर अन्तमें कपिलागौ ब्राह्मण को देवै इस आग्नेय व्रत के करने से अग्निलोक प्राप्तिहोती है माघमास में एकादशी चतुर्दशी औ अष्टमी को एकभक्त व्रतकर वस्त्र जूता कम्बल चर्मआदि शीत निवारण करनेहारी वस्तु दान करै इस सौख्य व्रतके करनेसे अश्वमेध यज्ञके फल की प्राप्तिहोती है एकवर्ष दशमीको एक भक्त व्रतकर अन्तमेंसुवर्णकी स्त्रीरूप दशादिशाओंकी मूर्त्तिद्रोणभर तिलों के ऊपर स्थापनकर धेनुसहित ब्राह्मणको देवै इसमहापातक हरनेहारे दिग्व्रतके करनेसे ब्रह्माण्डका आधिपत्य मिलता है शुक्लसप्तमी को सूर्य्यनारायण का पूजनकर सात धान्य औ लवण ब्राह्मणको देवै इस धान्य व्रतके करने से अपना औ सात कुलोंका उद्धारहोताहै एकमास उपवास कर ब्राह्मणको गौ देवै इस विष्णुव्रतके करनेसे विष्णुलोक प्राप्तिहोतीहै एक पक्ष उपवासकर दो कपिला गौ ब्राह्मण को देवै इस ब्रह्मव्रतका करनेहारा ब्रह्मलोकमें निवास करता है बीस पल से अधिक सुवर्ण की कुलपर्वत औ समुद्रोंसहित भूमिबनाकर तिलोंके ढेरपर रख ब्राह्मणकोदेवै औ उसदिन पयोव्रतरहै इस महीव्रतके करनेसे शिवलोक प्राप्तिहोतीहै माघ अथवा चैत्रकी शुक्लतृतीयाको सब उ-

पकरणों सहित गुड़धेनु ब्राह्मणकोदेवै इसमहाव्रतके करने हारा अप्सराओं करके सेवित गौरीलोकमें निवासकरता है एकवर्ष एक भक्तव्रतकर अन्तमें गोदानकरै इसरुद्रव्रत के करनेहारा कल्पभर शिवलोकमें निवासकर राजाहोता है चैत्रमासमें तीनदिन स्नानकरनक्तव्रतकरै अन्तमें दुग्ध देनेहारी पांच गौ दरिद्री औ कुटुम्बी ब्राह्मण को देवै इस गतिव्रतकेकरनेहारा सबरोगोंसे औ जन्ममरणसे छुटजाता है जो पुरुष कन्यादानकरै वह अपने इक्कीसकुलों सहित ब्रह्मलोकको जाताहै कन्यादानसे अधिककोई दान नहीं है इसदानके करनेसे अक्षय स्वर्गबास मिलताहै तिलपिष्टका हाथीबनाय दोरक्तवस्त्र अंकुश चामर कक्ष्या नक्षत्र माला आदिसे उसको भूषितकर ताम्रपात्र में स्थापन करै पीछे वस्त्र भूषण आदि से ब्राह्मण मिथुन का पूजन कर कण्ठ प्रमाण जलमें स्थितहो वह हस्ती उनकोदेवै यह कान्तार तरण व्रतकरनेहारा सबप्रकारके सङ्कट औ पापोंसे छुटता है औ सद्गतिपाताहै इसमें कुछ संदेह नहीं जो पुरुष एक दिनभी भक्तिसे पौरन्दरव्रतकरै उनको प्रलयपर्यन्त स्वर्ग वासमिलताहै पंचमीको पयोव्रतकरके सुवर्णकानाग ब्राह्मण कोदेवै उसको कभी सर्पभयनहींहोता शुक्लपक्षकी अष्टमी को उपबासकर दो शुक्लवस्त्र औ घण्टा से भूषित उत्तम वृष ब्राह्मणको देवै इसवृषव्रतका करनेहारा कल्पभर शिवलोकमें निवासकर राजाहोताहै उत्तरायण के दिन सेर भर घृतसे सूर्य्यनारायणको स्नानकराय उत्तमघोड़ी ब्राह्मणको देवै इसराजव्रतका करनेहारा पुरुष सब अभीष्टफल पाय अन्तमें पुत्र भाईआदि सहित सूर्य्यलोकमें निवास

करताहै नवमीको नक्तव्रतकर विन्ध्यवासिनी भगवती का पूजनकरै औ सुवर्णका हंस ब्राह्मणकोदेवै इसआग्नेयव्रत के करनेसे उत्तम वाणीकी प्राप्ति होतीहै औ अन्तमें अग्निलोक प्राप्तिभी होतीहै द्वादशी को उपवास कर तिल फल इक्षु भोजन औ दक्षिणा ब्राह्मण को देवै तो विष्णुलोक प्राप्तिहोय विष्कुम्भ आदि सत्ताईसयोगोंमें नक्तव्रत करके क्रमसे घृत तैल फल इक्षु यव गेहूँ चणे मटर चावल लवण दही दूध वस्त्र सुवर्ण कम्बल गौ वृष छतुरी जूता कपूर केसरि चन्दनपुष्प लोहताम्र कांस्य औ चांदी ब्राह्मण को देवै इस योग व्रतका करनेहारा सब पापों से छूटताहै औ उसको कभी इष्टवियोग नहींहोता कार्त्तिकी पूर्णमासी को सुवर्णका मेष वस्त्र माला आदिसे भूषित कर ब्राह्मण को देवै मार्गशीर्ष पूर्णिमाको सुवर्णका वृष दान करै इसी क्रमसे बारह मासोंकी पूर्णिमाको बारहराशियोंका दानकरै अन्तमें ब्राह्मणोंको भोजनकराय दक्षिणादेवै इसराशिव्रत के करनेसे सब उपद्रव निवृत्तहोते हैं औ सोम लोक की प्राप्तिहोतीहै इतनाकह श्रीकृष्णभगवान्‌बोले कि हेमहाराज ये पचासीव्रत हमनेकहेहैं जो इनके विधानको केवल श्रवण अथवा पठनकरै वह ब्रह्महत्या गोहत्या पितृहत्या आदिपातक महापातक औ उपपातकोंसे उसी क्षण छूटजाताहै औ जो भक्तिसे इनव्रतोंकोकरै उसको धन सौख्य सन्तान स्वर्गआदि कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं ॥

एकसौदशका अध्याय॥

माघस्नान का विधान ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज सत्ययुगब्राह्म-

ए त्रेता क्षत्रिय द्वापर वैश्य औ कलियुग शूद्रहै कलियुग
में मनुष्योंको स्नानकर्ममें शिथिलता रहतीहै तो भी माघ
स्नानके व्याज से स्नानविधान कहते हैं जिसके हाथपांव
बचन औ मन भलीभांति संयुतहोयँ औ विद्या तप तथा
कीर्त्तिकरके युक्तहो उसको सम्पूर्ण तीर्थफल होताहै श्रद्धा
हीन पापी नास्तिक संशयात्मा औ हेतुबादी तीर्थ फलके
भागी नहींहोते प्रयाग पुष्कर कुरुक्षेत्र आदि तीर्थोंमें अ-
थवा और चाहेजहां माघस्नान करनाचाहिये सूर्योदयके
समानही स्नानकरनेसे सब महापातक निवृत्त होतेहैं औ
प्राजापत्ययज्ञकाफल प्राप्तहोताहै जो ब्राह्मण सदाप्रातः
काल स्नानकरताहै वह सब पापोंसे छुट परब्रह्म पाता है
उष्णोदकका स्नानवृथा बिनावेद जपवृथा श्रोत्रिय बिना
श्राद्ध वृथा औ सायङ्काल के समय भोजन वृथा होताहै
बायव्य बारुण ब्राह्म्य औ दिव्य ये चारप्रकार के स्नान
होते हैं गौओंके रजसे बायव्य स्नान होताहै समुद्रादिकों
में बारुणस्नान ब्राह्म्य स्नान मंत्रोंसे औ मेघजलसे दिव्य
स्नान होताहै इन सबमें बारुण स्नान उत्तम है ब्रह्मचारी
गृहस्थ वानप्रस्थ भिक्षु बाल तरुण वृद्ध स्त्री नपुंसक माघ
में तीर्थकेबीच स्नानकर उत्तमफल पातेहैं ब्राह्मण क्षत्रिय
औ वैश्य मन्त्रपूर्वक स्नानकरैं औस्त्री तथाशूद्र मन्त्रहीन
स्नानकरैं माघमहीनेमें जल यह कहताहै कि जो किंचित्
सूर्यउदयहोतेही हममें स्नानकरै उसकेब्रह्महत्या सुरापान
आदि बड़े २ पापभी हमहरैं माघस्नानकरनेहारे पुरुषवहां
निवास करतेहैं जहांसुवर्णके प्रासाद अप्सराओंके समान
नारी औ दही दूधकी नदीवहतीहैं जिनमें पायसका कर्दम

होरहाहै तीर्थयात्राकरै तो यतिकी भांति संयमसेरहै दुष्टों का संग नकरै तो चन्द्र सूर्य्यके तुल्य उत्तम भोगपाता है पौष फाल्गुनके बीच मकरकेसूर्य्यमें तीनदिन माघस्नानकरै माघके प्रथम दिनही संकल्प पूर्वक स्नानका नियम करै वस्त्रबिना ओढ़े स्नानकरनेजाय तो पद २ में अश्वमेधका फलपावै तीर्थपरजाय स्नानकर मस्तकमें मृत्तिका लगाय सूर्य्यको अर्घ्यदे पितरों का तर्पणकर जलसे बाहरनिकल इष्टदेवको प्रणामकर शंख चक्र धारनेहारे पुरुषोत्तम श्री माधवका पूजनकरे सामर्थ्यहोय तो नित्य हवन एकबार भोजन ब्रह्मचर्य औ भूमिपर शयनकरै औ असमर्थ धनाढ्य जितना होसके उतनाकरै परन्तु प्रातःस्नान अवश्य करनाचाहिये तिलोंका उबटना तिलोंसेस्नान तिलोंसेपितृ तर्पण तिलहोम तिलदान औ तिलोंका भोजन माघमास में करै तो कभी कष्ट न पावै तीर्थकेऊपर अग्निप्रज्वलितकरै औ स्नानकेलिये तैल औ आमलकदेवै इसप्रकार एकमास स्नानकर अन्तमें वस्त्र भूषण भोजन आदिसे ब्राह्मण दम्पती का पूजनकरै औ कम्बल वस्त्र रत्न अनेकप्रकारके अंगरखे रजाई जूता और भी जो शीत हरनेहारी बस्तु हैं यथाशक्ति दानकरै औ (माधवःप्रीयताम्)यहवाक्यकहै इसप्रकारमाघ स्नानकरनेहारा अगम्यागमन सुवर्णस्तेयआदि गुप्त प्रकट जितनेपातक कियेहों सबसे छूटजाताहै औ पिता पितामह प्रपितामह माता मातामह प्रमातामह आदि इक्कीस कुल सहित विष्णुलोकको जाताहै जो साधारण रीति से भी सर्य्योदयसे अरुणवर्णहुये नदीजलमें माघमासमें स्नानकरैं वेभी अपने सात पुरुषों सहित स्वर्गको जाते हैं ॥

एकसौग्यारहका अध्याय ॥

नित्य स्नानका विधान औ तर्पणकी विधि ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज मनकी प्रसन्नता औ देहकी शुद्धि स्नान बिना नहीं होसक्ती इस लिये स्नान अवश्य करनाचाहिये नदी आदि में अथवा घरमें शुद्ध जलके बीच (ओंनमोनारायणाय) इस मूलमन्त्रसे जलमें तीर्थकल्पनाकरै चारहाथ लम्बाचौड़ा तीर्थकल्पना कर हाथमें कुशालेकर (विष्णुपादप्रसूतासि वैष्णवीविष्णु देवता। पाहिनश्चैनमस्तस्मा दाजन्ममरणांतिकात्॥ तिस्रःकोट्योर्द्धकोटिश्च तीर्थानांवायुरब्रवीत्। दिविभुव्यन्तरिक्षेच तानितेसन्तिजाह्नवि॥ नन्दिनीत्येवतेनाम देवेषुनलिनीतिच। क्षमापृथ्वीचविहगा विश्वकायाशिवास्मृता॥ विद्याधरीसुप्रसन्ना तथालोकप्रसादिनी। हेमाक्षयाजाह्नवीच शान्ताशान्तिप्रदायिनी) इनमन्त्रोंको सातबार पढ़ गङ्गा का आवाहनकरै इसआवाहनसे अवश्य गङ्गाका सान्निध्य होजाताहै फिर अंजलिमेंजललेकर तीन चारपांच अथवा सातबार मस्तकपर डाल (अश्वक्रान्तेरथक्रान्ते विष्णुक्रान्तेवसुन्धरे। मृत्तिकेहरमेपापं यन्मयादुष्कृतंकृतम्॥ उद्धृतासिबराहेण कृष्णेनशतबाहुना। नमस्तेसर्वलोकानां वसुधारिणिसुव्रते) इन मन्त्रोंसे मृत्तिकाको अभिमन्त्रण कर शरीरमेंलगाय स्नानकरै पीछे आचमनकर शुक्लवस्त्रपहिन इन मन्त्रोंसे तर्पणकरै (देवायक्षास्तथानागा गन्धर्वाप्सरसांगणाः। क्रूराःसर्पाःसुपर्णाश्चराक्षसाजम्भकाःखगाः॥ वाय्वाधाराजलाधारा स्तथैवाकाशगामिनः। निराश्रयाश्चये जीवाः पापकर्मरताश्चये॥ तेषामाप्यायनायैतद्दीयतेसलि-

लंमया) सव्यसे देवताओंका अपसव्यसे मनुष्योंका औ
कण्ठमें यज्ञोपवीतधार ऋषियों का तर्पणकरै (सनकश्च
सनन्दश्चतृतीयश्चसनातनः। कपिलश्चासुरश्चैववोढुःपं
चशिखस्तथा ॥ सर्वेतेतृप्तिमायान्तु मद्दत्तेनाम्बुनासदा।
मरीचिमत्र्यंगिरिसौ पुलस्त्यंपुलहंक्रतुम् । प्रचेतसंवशिष्ठं
चभृगुंनारदमेवच।देवब्रह्मऋषीन्सर्वांतर्पयामितिलोदकैः)
इन मन्त्रोंसे तिल जलकरके तर्पणकर सव्यजानु भूमिपर
रख अपसव्यहो अग्निष्वात्त वर्हिषद हविष्मान् आज्यप
सोमप आदि दिव्य पितृगणका तर्पणकर अपने पितरोंका
तर्पणकरै (येबान्धवाबान्धवावायेऽन्यजन्मनिबान्धवाःतेतृ
प्तिमखिलायान्तु मद्दत्तेनाम्बुनासदा) यह मन्त्रपढ़ आच-
मन कर अपनेआगे अष्टदल पद्म लिख अक्षत पुष्प ति-
ल रक्तचन्दन औ जल करके (नमस्तेविष्णुरूपायनमोवि
ष्णुसखायवै । सहस्ररश्मयेनित्यंसताश्वायनमोनमः ॥ नम
स्तेसर्ववपुषेनमस्तेसर्वशक्तये । जगत्स्वामिन्नमस्तेस्तुदिव्य
चन्दनभूषित ॥ पद्मनाभनमस्तेस्तुनमस्तेयजुषांपते) इन
मन्त्रों से सूर्यनारायण को अर्घ्य देकर तीन प्रदक्षिणा
कर ब्राह्मण गौ औ सुवर्णका स्पर्शकर घरमेंआय विष्णु
भगवान् का पूजनकरै इस विधिसे नदी तड़ाग आदिमें
पाप औ अलक्ष्मीनिवर्त्तकस्नान नित्य करना चाहिये ॥

एकसौ बारहका अध्याय ॥

रुद्रस्नान का विधान औ फल ॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र सर्व दुष्टो-
पशम औ सबप्रकारकी शान्ति करनेहारे रुद्रस्नान का
विधान आप वर्णनकरैं यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्ण

भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज एक समय अगस्त्य मुनिने स्वामिकार्त्तिकेयसेपूछा कि हेशिवपुत्र रुद्रस्नानका क्या विधानहै औ किसको करनाचाहिये यह आप वर्णन करैं तब कार्त्तिकेय कहनेलगे कि हेअगस्त्यमुनि मृतवत्सा वन्ध्या दुर्भगा औ कन्या सन्तानही जिसनारीकेहोयँ उस को यह स्नान अवश्य करनाचाहिये अष्टमी चतुर्दशी रविबार भौमवार अथवा और किसी पर्वमें नदीके तटपर महानदियोंके संगम में शिवालयमें गोष्ठमें अथवा अपने घरमें स्नानकरै अग्निहोत्री सदाचार धर्मज्ञ औ रुद्रकर्म में निपुण ब्राह्मणको पहिले निमन्त्रण करै गोबरसे लिपा बन्दनवाल आदिसे अलंकृत अतिसुन्दर चतुरस्र मंडप बनाय उसके मध्यमें पंचरंगका कमललिख कर्णिकाकेबीच महादेवजी का स्थापन करै उनके दोनों ओर पार्वती औ विनायक औ आठोंदलोंमें इन्द्रादि लोकपालोंको स्थापन कर गन्ध पुष्प धूप दीप औ गुडोदनसे पूजनकर मंडप की चारो दिशाओंमें भूतबलि देवै अग्निकोणमें कुण्डबनाय लवण सर्षप घृत औ मधुसेमानस्तोकेतनये इत्यादि वैदिकमन्त्र करके हवन करावै औ एक ब्राह्मण श्वेतवस्त्र श्वेतचन्दन श्वेतपुष्पों की माला कंकण कुण्डल अँगूठी आदिसे अलंकृत मण्डलके समीप बैठा ग्यारह २ पाठ का एक २ रुद्रपाठकरै इसीभांति दूसरा मंडलबनाय श्वेत वस्त्र श्वेतपुष्प आदिसे अलंकृत उस नारीको मण्डल में बैठाय रुद्रपूजक आचार्य उसको स्नान करावै औ अर्क पत्रके दोनेमें जल लेकर रुद्रैकादशिनी करके उसका अभिषेककर सातसौचार पत्र अर्कके बहुत सुन्दर औ अ-

च्छिद्रलावै औ अश्वस्थान गजस्थान बल्मीक संगम ह्रद वेश्यागण राजद्वार औ गोष्ठ इनस्थानोंकी मृत्तिका सर्वौषधि रोचना अनेक नदी औ तीर्थोंकेजल इन सबपदार्थों को एककलशमें डाल उसको स्नान करावै औ आठोंदिशाओंमें अश्वत्थपत्र फल अक्षत सहित जो आठकलश स्थापनकर रक्खेहैं उनसे क्रमकरके स्नानकरावै इसप्रकार स्थापनकर गौ सुवर्ण वस्त्रआदि सहित सब सामग्री आचार्यको देवै औरभी ब्राह्मणोंको भोजन दक्षिणा वस्त्रआदि देकर क्षमापनकरावै इसविधिसे जो स्त्री रुद्रस्नानकरै वह सौभाग्य सुखऔ सन्तान पातीहै ब्राह्मणों की सम्मतिसे चाहेजिसकाल मेंरुद्रस्नानकरै उसस्त्रीके शरीरके सबदोष निवृत्तहोजातेहैं औ उसके सन्तान चिरंजीव होते हैं ॥

एकसौ तेरहका अध्याय ॥

ग्रहणारिष्ट हर स्नानका विधान ॥

राजायुधिष्ठिरकहतेहैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र अब हमचन्द्र औ सूर्यके ग्रहणमें स्नानका विधान सुनना चाहतेहैं आप वर्णनकरैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज जिस पुरुष की जन्म राशिमें ग्रहणहो उसके कल्याणके अर्थ हम स्नानका विधान कहते हैं ग्रहण से प्रथमही ब्राह्मणोंका वरणकर स्वस्तिवाचन कराय शुक्ल वस्त्र आदिसे गुरुका पूजनकर चार कलश चारसमुद्रमान कर स्थापन करै उनमें अश्वस्थान गजस्थानआदिसे मृत्तिकालाकर डालै औ प्रत्येक कुंभमें गोरोचन पंचगव्य पंचरत्न पद्म शंख स्फटिक श्वेतचंदन हाथीदांत केशरि उशीर

गूगल सर्षप औ तीर्थजल डाल उनमें इन मंत्रोंसे देवताओं का आवाहन करै (सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदास्त था । आयांतुयजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ योसौवज्र धरोदेव आदित्यानां प्रभुर्मतः । सहस्रनयनश्चेन्द्रोपीडा मंतव्यपोहतु ॥ मुखंयःसर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युतिः । चंद्रोपरागसंभूतामग्निःपीडांव्यपोहतु ॥ यःकर्मसाक्षीलो कानांधर्मराजेतिविश्रुतः।यमश्चंद्रोपरागाच्चपीडामंत्रव्यपो हतु ॥रक्षोगणाधिपःसाक्षात्प्रलयानलसमप्रभः । खड्गह स्तोतिभीमश्च रक्षःपीडांव्यपोहतु॥ नागपाशधरोदेवः स दामकरवाहनः । सजलाधिपतिश्चंद्र ग्रहपीडांव्यपोहतु ॥ प्राणरूपोहियोलोकान्यातिनित्यंनभोगतिः । वायुश्चन्द्रोप रागोत्थां पीडांसद्योव्यपोहतु ॥ योसौनिधिपतिर्देवः खड्ग शूलगदाधरः। चंद्रोपरागकलुषं धनदोत्रव्यपोहतु॥ योसौ महेश्वरोदेवः पिनाकीवृषवाहनः। चन्द्रोपरागपापानिसना शयतुशंकरः ॥ त्रैलोक्येयानिभूतानि स्थावराणीतराणिच । ब्रह्मार्कविष्णुयुक्तानितानिपापंदहंतुवै) इनमंत्रोंसे कलशमें देवावाहनकर इनहींमंत्रोंसे उनको अभिमंत्रणकरै पीछेतीनों वेदके मंत्र औ इनमंत्रों से यजमान का अभिषेककर ये सब मन्त्रपत्रोंमें लिखयजमानके शिरपररख स्नानकरावै ग्रहण के अनन्तर शुक्लवस्त्र मालाआदिसे भूषित हो गोदानकरै सबसामग्री आचार्यको देवै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय वस्त्र दक्षिणा गौआदि ब्राह्मणोंको दे संतुष्ट करै इस विधिसे जो स्नान करै उसको कभी ग्रहणजनित पीड़ा नहीं होती औ परमसिद्धि पाताहै सूर्यग्रहणहोय तो मंत्रोंमें चन्द्र पदके स्थान में सूर्यपदा लगालेवै जो इसविधानको नित्य

श्रवण करै अथवा सुनावै वह सब पापों से छुट इन्द्रलोक में निवास करताहै ॥

एकसौचौदहकाअध्याय ॥

मरणका विधान ॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र मरण के समय गृहस्थ पुरुषको किस प्रकारसे प्राण त्यागने चाहियें यह आप वर्णनकरैं हमको श्रवण करने का बड़ा कुतूहल है यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज जब पुरुष अपना मृत्यु समीप जानै तो गरुड़ध्वज विष्णुभगवान् का चिंतन करै औ शुचिहो स्नान कर सब उपचारोंसे नारायण का पूजनकर अनेक प्रकार के पुण्य स्तोत्रों से स्तुति कर यथाशक्ति गौ भूमि सुवर्ण वस्त्र घर आदि दान करै औ बंधु पुत्र कलत्र क्षेत्र धन धान्य आदिसे अपना चित्त निवृत्त करै मित्र शत्रुको समान समझै औ सबकर्मोंका त्यागकर ये वाक्यकहै (परित्यजाम्यहंभोगांस्त्यजामिनिखिलान्जनान् । धनादिकंमयोत्सृष्टमुत्सृष्टंचानुलेपनम् ॥ शुश्रूषणादिकंचैवदानमानादिकंतथा । होमादयःकृतायेयेसदानित्यक्रियामया ॥ नैमित्तिकास्तथा काम्याःश्राद्धधर्मामयेप्सिताः । त्यक्तश्चाश्रमिणांधर्मोवर्ण धर्मस्तथामया॥ आभ्यांकराभ्यांविहनन्कुर्वन्कर्मसुदुःसहम् । नपापंकस्यचित्कुर्य्यांप्राणिनःसंतुनिर्भयाः॥ नभासिप्राणिनोयेचयेजलेयेचभूतले । क्षितौविवरगायेचयेचपाषाणसंपुटे ॥ येधान्यादिषुवस्त्रेषुशयनेष्वासनेषुच । तेतिष्ठंतुसुखं नित्यंदत्तंतेभ्योऽभयंमया॥नमेसुबांधवःकश्चिद्विष्णुंमुक्त्वा जगद्गुरुम् । मित्रपक्षेचविष्णुर्मेखंचोर्ध्वंचतथादिशि ॥पा

श्वंतोमूर्द्धहृदये वायव्यांवाचिचक्षुषि । श्रोत्रादिषुचसर्वेषुस मेविष्णुःप्रतिष्ठितः) येमन्त्रपढ़ सबकात्यागकर दक्षिणाग्र कुशाबिछाय पूर्व अथवाउत्तरओर शिरकर शयनकर विष्णु भगवान् का चिन्तन करै (विष्णुंकृष्णंहृषीकेशंकेशवंमधु सूदनम् । नारायणंनरंसौरिंवासुदेवंजनार्दनम् ॥ वाराहंयज्ञ पुरुषंपुण्डरीकाक्षमच्युतम् । वामनंश्रीधरंकृष्णंसुरेन्द्रमपरा जितम् ॥ पद्मनाभंहरिंश्रीदंदामोदरमधोक्षजम् । सर्वेश्वरेश्व रंशुद्धंप्रभुंवामनमीश्वरम् ॥ चक्रिणंगदिनंशांतं शंखिनंगरु डध्वजम् । किरीटकौस्तुभधरं प्रणमाम्यहमव्ययम् ॥ अह मस्मिजगन्नाथे मयिचास्तुजनार्दन । अनयोरन्तरंमास्तुअ ग्नियुक्ताशमीइव ॥ अयंविष्णुरयंशौरिरयंकृष्णःपुरोमम । नीलोत्पलदलश्यामः पद्मपत्रायतेक्षणः ॥ एषपुण्यतमोवि ष्णुंपश्याम्यहमधोक्षजम्) इनमंत्रोंकोपढ़ताहुआश्रीविष्णु भगवान् को प्रणामकरै औ (ॐनमोभगवतेवासुदेवाय) इस मन्त्रको निरन्तर जपै औ प्रसन्नमुख शंख चक्र गदा पद्मधारे केयूर कटक कुण्डल श्रीवत्स पीताम्बर आदि से भूषित नवीनमेघके समान श्यामवर्ण ऐसारूप विष्णुभग- वान् का ध्यावै अथवा जिसरूपपर अपना मनस्थिरहोय उसीका ध्यानकरै इस प्रकार जो प्राणत्याग करै वह सब पापोंसे छुट विष्णुभगवान् में लीनहोजाता है इतना सुन राजायुधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णचन्द्र यह विधान जो आपने कहा सो स्वस्थचित्त रहनेसे होसक्ताहै परंतु मरण के समय तरुण औ आरोग्य पुरुषोंकी भी चित्तवृत्ति मोह को प्राप्तहोजातीहै वृद्ध औ रोगियोंकी तो कथाही क्याहै अति वृद्ध औ रोगग्रस्त क्योंकर कुशाके शयनपर बैठ

ध्यान करसक्ताहै इसलिये और कोई उपाय आपकहैं कि जिससे निष्फल मरण न होय यह राजाका बचनसुन श्री कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज यही मुख्यउपाय है कि जो और कुछभी न होसकै तो सब ओरसे चित्तवृत्ति रोककर गोविन्द स्मरण करता हुआ प्राणत्यागकरै क्योंकि जिस २ भावको स्मरण करता हुआ अन्तमें शरीरत्यागै उस २ भावकरके भावित उसीको प्राप्तहोता है इसलिये सब प्रकारसे वासुदेवका चिन्तन करनाचाहिये राज्य उपभोग भोजन बाहन स्त्री गन्ध माल्य मणि वस्त्र भूषण आदिमें जो अत्यन्तमोहसे इच्छा रहै उसकानाम आर्त्तिध्यानहै दहन हंनन ताड़न प्रहारमें चित्तजाय दया न उत्पन्नहोय औ मन तथा इन्द्रिय वशमें न रहैं यह रौद्रध्यान है सूत्रार्थवेद महाव्रत आदिका भावन इन्द्रियोंका उपशम मोक्षकी चिन्ता शम दम औ गंगादिकोंका स्मरण जिसमें होय उसकानाम धर्मध्यानहै सब इन्द्रिय अपने २ विषयों से निवृत्त होजायँ हृदयमें इष्ट अनिष्ट का कुछचिन्तन न रहै औ आत्मास्थिर होकर परमेश्वरमें निविष्टहोय इसका नाम शुक्लध्यानहै आर्त्ति औ रौद्र ध्यानसे असद्गति होती है धर्मध्यानसे स्वर्गवासामिलता है औ शुक्लध्यानसे मोक्ष प्राप्तिहोतीहै इसलिये ऐसाही प्रयत्न करनाचाहिये जिससे शुक्ल ध्यान स्थिरहोय सातहजार दि०यवर्ष जलमें सोलह हजार अग्निमें गौओंके घरमें साठहजार वर्ष औ युद्धमें प्राणत्यागने करके अस्सीहजारवर्ष स्वर्गवासहोताहै परंतु अनशनव्रत करके प्राणत्यागनेसे अक्षयगति मिलतीहै॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय॥

तड़ागादिकीप्रतिष्ठा व बनानेकाविधान व फल वसमुद्रस्नानकीविधि॥

राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र तड़ाग वापी कूपआदि जलाशयकाउत्सर्ग किसविधिसे औ किससमयमें कियाजाताहै यहसब आप वर्णनकरैं यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज आपने बहुत उत्तम बातपूछी अब हम तड़ागादि का उत्सर्ग विधान कहते हैं प्रथम सुन्दरसोपान अर्थात् पैंडियोंकरके युक्त पक्कातलाव बनावै जिसकी पाल दृढ़हो औ चारोंओर वृक्षलगावै जब वह तड़ाग कार्त्तिक महीनेमें जलसे पूर्णहोजाय उससमय स्थिर नक्षत्रोंमें उसका उत्सर्गकरै अश्वत्थ उदुम्बर प्लक्ष औ वटके काष्ठके दण्डों पर दिक्पालों के रंग की पताका लगाय दिशाओंमें स्थापनकरै मध्यमें पंचरंगका बड़ाध्वज स्थापनकरै यजमानके चार हाथ अथवा पांचहाथ प्रमाण की वेदी मध्यमें यूप करके भूषित बनावै कदम्ब अश्वत्थ पलाश औ विकङ्कतवृक्षके काष्ठका यूप चारोंवर्णोंके लिये क्रमसे कहाहै औब्राह्मणके लिये वट औविल्वका क्षत्रियको खदिर का वैश्यको उदुम्बर औ शूद्र को महुआ के काष्ठ का यूपभी बनाना योग्यहै औ विभीतक उदुम्बर शाक औ शाल्मलि वृक्षका यूप शूद्रबनावै अष्ट दिक्पालों की मूर्त्ति रंगकरके लिखै औ ब्रह्मा सावित्री विष्णु लक्ष्मी औ रुद्र पार्वतीकी मूर्त्तिभीलिखै पीछे उनका सब उपचारोंसे पूजन कर चारों दिशाओंमें हस्तप्रमाण औ तीन मेखला करके युक्त कुण्डबनावै औ उत्तमवस्त्र पहिने सुवर्णके भूषण औ पुष्प माला चन्दन आदिसे अलंकृत सोलह अथवा आठ

होता अर्थात् हवन करनेवाले ब्राह्मण कल्पनकरै औ वेद वेदांग इतिहास पुराण आदि जाननेहारा शान्तचित्त आचार्य्यहोय ताम्रपात्र मृत्तिकाके पात्र होमकेलिये समिधा तिल और भी जो सामग्री अपेक्षितहो सब एकत्रकर ग्रह यज्ञके विधानसे वेदीमें स्थापनकिये देवताओं के नाम से औ वारुण मन्त्रोंसे हवनकर इन्द्रादि लोकपालों को अपनी २ दिशामें बलिदेवै मण्डपके द्वारोंमें सुवर्ण औ पल्लवों सहित कलश स्थापन करै अश्वत्थ पत्रोंकी वन्दनमाला बांधे सुवर्ण का कूर्म ताम्रका मकर चांदी का मत्स्य रांग का मेडक शीशे का डुण्डुभ हंस आदि श्वेतपक्षी चांदी के औ चक्रवाक आदि पीतवर्ण पक्षी सोने के औ चांदी की जलौका बनाय सबको ताम्रपात्र में स्थापन करै नाम मन्त्र से इन सब की प्रतिष्ठा औ पूजा कर वैदिक मन्त्रोंसे यूपकी प्रतिष्ठाकरै कुंकुम चन्दन आदि से यूपको लिप्तकर पुष्प धूप दीप आदि से उसका पूजनकरै फिर आचार्य्य चरुश्रपणकर व्याहृतियोंसे हवनकर गीत वाद्य आदिसे वरुणका आवाहनकर ताम्रपात्रको जलमेंलेजाय वरुणको निवेदनकर और भी रत्न औ अनेकप्रकारके बीज वरुणके निमित्त जलमें छोड़ै फिर एकगौको प्रदक्षिणाकर यजमान उसका पूँछ पकड़ अपनी भार्य्या सहित जलका अवगाहनकरै फिर जलसे निकल वह गौ औ यथाशक्ति दक्षिणा ब्राह्मणको देवै औ कुद्दालआदि आयुधोंका पूजन कर कर्मकारोंकाभी सत्कारकरै औ (सामान्यंसर्वभूतेभ्योमयादत्तमिदंजलम्। तेनमेभगवान्नित्यंवरुणःप्रीयतांसुदा) यह मन्त्रपढ़ थोड़ा जल तड़ागमेंडालै पीछे हजारसेलेकर

एकतक जितनी सामर्थ्यहोय उतनी गौ ब्राह्मणों को दे
यह तड़ागके उत्सर्गका विधानहै अब हम वापी औकूप
की प्रतिष्ठाका विधान कहतेहैं कुण्ड मण्डप वेदी यूप भूषण
वस्त्र आदि सब सामग्री पूर्वोक्तरीतिसे इसमेंभी एकत्रकर
वापीके चारों कोणोंमें तीर्थ जलसे पूर्ण पुष्प चन्दन श्वेत
वस्त्र आदिसे भूषित चार कलश स्थापनकरै औ पूर्वरीति
व्याहृतिहोम औ ग्रहहोमकर वरुण औ लोकपालोंको बलि
देकर वरुणसूक्तोंका पाठकरै वेदीके मध्यमें पंचरंगसेकमल
लिख उसकेमध्यमें शिव ब्रह्मा औविष्णुका पूजनकरमत्स्य
कच्छप मण्डूक आदिका पूर्वरीतिसे अधिवासनकरै (मित्र
मित्रोसिभूतानांधनदोधनकारिणाम्। वैद्योव्याध्यभिभूतानां
शरण्यःशरणार्थिनाम्)इसमन्त्रसेवरुणकाविसर्जनकरै औ
पूजाके प्रारम्भमें(नमस्तेविश्वगुप्तायनमोविष्णोअपांपते।
सान्निध्यंकुरुदेवेशसमुद्रेयद्धदत्रवै) इसमन्त्रसे आवाहन
करै ब्राह्मणोंकोदक्षिणादेवै औ एकउत्तमगौ एकब्राह्मणको
देवै इन तड़ागआदिकी प्रतिष्ठाओंमें अनिवारित भोजन
देनाचाहिये इसमें वित्तशाठ्य न करै तड़ागादिकोंकाजल
उत्सर्गकिये बिनाअशुचि होताहै बिनामन्त्र कुशाग्रकरके
भीसमुद्रका स्पर्शनकरै।अग्निवाचोइत्यादि वैदिक मन्त्रसे
पहिले अभिमंत्रण कर समुद्रमें स्नानकरै। श्रावणमासमें
शतभिषा नक्षत्रमें फल मूल अक्षतआदि करके समुद्रको
अर्घ्य देकर पीछे स्नान करै तो हजार जन्मोंमें किये पाप
क्षणमात्रमें नष्टहोजाते हैं विधि पूर्वक कर्म करने से कर्त्ता
औ कारयिता स्वर्गको जाते हैं औ विधिहीन कर्मसे दोनों
का नरकमें पात होताहै तड़ाग आदि बनाकर प्रतिष्ठा न

करै तो उसका बनवानाही निष्फलहै तड़ाग आदि बनाने-हारा रत्नजटित सुवर्णके विमानमेंबैठ दिव्यलोकको जाता है इसरीतिसे उत्सर्गकर आठदिनतक बड़ा उत्सवकरै कर्मकार स्थपति शिल्पी सूत्रधार आदिभी जलाशय बनाने से स्वर्गको प्राप्तहोते हैं जलाशय खोदनेके समय जितने जीव मरैं वे सब उत्तमगतिको प्राप्तहोते हैं धेनुके शरीरमें जितने रोम होयँ उतने दिव्यवर्ष कूप आदि बनानेवाला स्वर्ग में रहता है औ तड़ाग बनानेवाला करोड़ों युग पर्यन्त स्वर्ग सुख भोगता है उसके जो कोई पितर दुर्गति को प्राप्तभये हों वे सब स्वर्गकोजाते हैं पितर नाचतेहैं कि हमारे कुलमें ऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने जलाशय बनाया छोटासाभी जलाशय बनावै जिसमें एक गौकी भी तृषा निवृत्तहोय तो अनन्त फलहोताहै संसारके स्त्री पुत्र धनआदि सब पदार्थ नश्वरहैं तड़ाग वापी देवालय औ सघनछायावाला वृक्ष ये चारोंसंसारसे उद्धारकरते हैं इसलिये सर्वस्वकरके भी एक जलाशय अवश्य बनाना चाहिये जिसभांति पुत्रके देखनेसे माताका स्वरूप ज्ञातहोता है इसीभांति जलाशय देखने औ उसका जलपीनेसे कर्त्ता का शुभाशुभ ज्ञातहोताहै इसलिये न्यायसे धन उपार्जन कर तड़ागआदि बनावै जो धूप औ गरमीसे व्याकुलपांथ जहां आकर ठंढा जल पानकर तटके ऊपर वृक्षोंकी घनी औ ठंढी छायामें विश्रामकरैं तड़ागादि बनानेहारा अपने दोनों कुलोंका उद्धार करताहै इष्टापूर्त्त करनेहारा पुरुषकृत कृत्यहोताहै इसलोकमें जो तड़ागआदि बनाताहै उसीका जन्म सफलहै औ वही अजर अमर है जब तक तड़ाग

आदि बनेरहैं औ जबतक तड़ाग आदि बनानेकी कीर्त्ति रहै तबतक वह कैलासमें सुखभोगताहै धन्यहैं वेपुरुष कि जो हंसआदि पक्षी औ कमल कुवलय आदि पुष्पों करके मण्डित अपने बनाये तड़ागमें लोकों को जलपीते देखते हैं जिसके तलावमें घट अंजलि मुख चंचु आदि करके अनेक जीव जल पीते हैं उसीका जन्म सफल है उत्तम तड़ाग बनाय उसके तटपर देवालयभी बनावै तो उनके पुण्यका कहांतक वर्णनकरैं देवालयकीईट जबतक खण्ड२ न होजायँ तबतक देवालय बनानेवाला स्वर्ग में निवास करताहै ऐसे स्थानमें कूपबनावै जहां बहुत जीव जलपीवैं औ स्वादुजल उसमेंहोय तो बनानेवालेके सात कुलोंका उद्धार होजाताहै जिसके बनाये कूपका स्वादुजल मनुष्य पीवैं उसने सब पुण्य किये जो पुरुषतड़ाग बनाय उसके तटपरबृक्षोंकेबीच उत्तमदेवालयबनावै उसकीकीर्त्ति सर्वत्र व्याप्तहोतीहै औ बहुतकाल दिव्यभोग भोगकर चक्रवर्त्ती राजा होता है जिनके बनाये तलाव वापी कूप धर्मशाला आदिहैं जो अन्नदान करतेहैं औ जिनके वचन अतिमधुर हैं यमराज उनका नामभी नहीं लेते ॥

एकसौसोलहका अध्याय ॥

वृक्षलगानेका माहात्म्य औ वृक्षोद्यापन का विधान ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आप वृक्ष लगानेका माहात्म्य औ वृक्षोद्यापनका विधान वर्णनकरैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराजआपने बहुत उत्तम बात पूछी पांच वृक्ष लगाये बहुत उत्तम औ दशपुत्रभी उत्पन्न किये किसी अर्थ नहीं

धन्यहैं वृक्ष कि जो अपने पुष्प पत्र फल मूल वल्कल काष्ठ औ छायाकरके किसी अर्थीको निराश नहींकरते पुत्रतो क्या जाने वर्षभरमें एकदिन श्राद्धकरें अथवा न करें औ वृक्ष नित्यही अपने फल पुष्पआदि करके आरोपण करनेहारे का श्राद्ध करतेहैं न वह फल अग्निहोत्रआदि कर्मोंसेहोय औ न पुत्रउत्पन्न करनेसे जो वृक्षलगानेसे होताहै सच्छाया सपुष्पा औ सफलावृक्ष बाटिका कुलस्त्रीकी भांतिअपने भर्त्ताको दोनों लोकोंमें सुखदेनेहारी होतीहै अशोकपल्लव हैं कर जिसके तिलकरके भूषित हैं मुख जिसका ऐसी वृक्षबाटिका वेश्याकी भांति सबके उपभोग के योग्य जो लगावै उसको अवश्य उत्तमलोक प्राप्ति होती है वह पुरुष नित्य गायत्री जपका नित्यदान का औ नित्ययज्ञकरनेका फल पाताहै जो वृक्ष लगाताहै एक पीपल एक नींब एक बट दशइमली कैथ विल्व औ आमलक ये तीन औ पांच आम्रके वृक्ष जो पुरुष लगादेवै वह कभी नरक नहींदेखता धनाढ्योंके घरमें अतिथिका सत्कारहो वा न हो परन्तुवृक्ष तो फल पुष्प आदि करके अवश्यही सबका सत्कार करता है जिसने जलाशय न बनवाया औ एकभी वृक्ष न लगाया उसने संसारमें जन्म लेकर क्या किया वृक्षों के तुल्य कोई परोपकारी नहीं है कि आप धूपमें खड़े रहकर दूसरे को छाया करते हैं औ फल पुष्प आदिसे सबकी शुश्रूषा करने में तत्पर रहते हैं पार्वतीजीने मन्दराचलमें अपना पुत्र कल्पनाकर शोकनाशन अशोकवृक्ष लगाया औ जातकर्म आदि सब संस्कार उसके किये अब हमसब पापहरनेहारा औ कीर्त्तिवर्द्धन वृक्षोद्यापनका विधान कहते हैं कांटोंवाला

कुबड़ा कोटरयुक्त कीट जिसमें लगें औ स्त्री लिंग जिसका नामहो ऐसा वृक्ष न लगावै उत्तम वृक्ष आरोपणकर उसके चारों ओर जलके लिये आलवाल छोड़ पक्का चौतराबांध उत्तम मुहूर्त्तमें उसका उद्यापनकरै पहिले दिन वृक्षको पताकाओंसे अलंकृतकर रक्तवस्त्र उढ़ाय रक्तसूत्रसे वेष्टित कर उसका अधिवासनकरै चारों दिशाओंमें श्वेतवस्त्रों से आच्छादित पंचपल्लव भूषित चन्दन औ पुष्पमाला से अलंकृत रत्नयुक्तचार कलशस्थापनकरै और भी जो वृक्ष उसके समीपहों सबको रक्तसूत्रसे वेष्टितकर पताकासे अलंकृत करै औ सबके मूलमें एक २ कलशस्थापनकरै सुवर्णके पत्र औ फल पन्द्रह अथवा दश बनाकर सबबीजों सहित ताम्रपात्रमें रक्खै औ वाद्य घोषसहित सबदिशाओं में इन्द्रादि लोकपालों को बलि देवै इसप्रकार मन्त्रवेत्ता आचार्य अधिवासनकरै दूसरेदिन प्रभातही मेखलासहित कुण्ड बनाय ग्रह यज्ञ विधानसे शांतिकर्मका आरम्भकरै पहिले सुवर्ण वस्त्र आदि करके चार अथवा आठ ब्राह्मणों का पूजनकर उनसे घृत औ तिलोंका हवन करावै मातृका स्थापनकर पुष्प औ अक्षतों करके उनका पूजनकरै पीछे पायस औ घृतकरके परिप्लुत चरु सिद्धकरके होमकरै औ जातकर्मसे लेकर गोदान पर्यंत सब संस्कार वृक्षके करै पहिले वृक्षको स्नानकराय जातकर्म अन्नप्राशनकर सुवर्ण सूची से कर्णवेध करै चूड़ाकरण कर मुंजकी मेखला औ वस्त्रपहिनावै पीछे गोदान संस्कारकरै कोई आचार्य कहते हैं कि माधवीलता मालती अथवा सल्लकी के साथ वृक्ष का विवाहभी करनाचाहिये इसप्रकार प्रतिष्ठाकर ब्राह्मण

उस वृक्षको आशीर्वाददेवैं औ यजमान पुष्पांजलि लेकर (येशाखिनःशिखरिणांशिरसोविभूषा येनन्दनादिषुवनेषु कृतप्रतिष्ठाः। येकामदाःसुरनरोरगकिन्नराणां तेमेनतरुयद्दु रितार्त्तिहराभवन्तु ॥ एतैर्द्विजैर्विविधदत्तहुतैर्हुताशः पश्य त्यसावहिमदीधितिरम्बरस्थः। त्वंवृक्षपुत्रपरिकल्पनयावृ तोसि कार्यंसदैवभवताममपुत्रकार्यम्) ये मन्त्र पढ़ पुष्पां-जलिदे घृतमें मुखदेख वृक्षको पुत्रकीभांति बार २ लालन कर (अङ्गादंगात्संभवति हृदयाच्चाभिजायते। आत्मावैपुत्र नामासि त्वंजीवशरदांशतम्) यह मन्त्र पढ़ आशीर्वाद देवै ब्राह्मणोंको दक्षिणा देवै औ आचार्य्य को उत्तम धेनु देकर बड़ा उत्सवकरै दीन अनाथोंको अनिवारित भोजन देवै औरोंको भी प्रसन्नहो सुरा आसव आदि देवै औ दास कर्मकार आदि सबका यथाशक्ति सत्कारकरै सायङ्कालके समय अपने भाई बन्धुओं सहित भोजनकरै इसविधिसे जो वृक्षोंका उत्सवकरै वह दोनों लोकोंमें अभीष्ट फलपा-ताहै पुत्रोंके बिना मनुष्योंकी शुभगति नहींहोती औ कुपुत्र होनेसे दोनोंलोकोंका नाशहोताहै यह बिचार उत्तम वृक्ष लगाय शास्त्रकी रीतिसे उनको पुत्र कल्पनाकरै ॥

एकसौसत्रह का अध्याय ॥

देव प्रसाद बनाने का देवप्रतिमा स्थापन का औ देवताकी गन्धादि उपचार समर्पण करनेका फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज जो पुरुष अति रमणीय देवालय बनावै उनका यह शरीर नष्टहोजाने पर भी कीर्त्तिमय शरीर स्थिर रहताहै जो शुभ्रवर्ण अतिऊँचे औ पताकाओंकरके अलंकृत देवप्रासादबनावैं वेसंसारमें

अनेक प्रकारके सुखभोग स्वर्गकोजाते हैं जो उत्तमप्रासाद बनाय उनके बीच सुवर्ण चांदी ताम्र पाषाण अथवालोह की प्रतिमा स्थापनकरतेहैं वे अनेक राजाओं करके सेवित चक्रवर्ती राजा होते हैं जो मेरुनामक प्रासादमें देवप्रतिमा स्थापनकर पंचामृतसे स्नानकराते हैं वे दिव्य कल्प इन्द्र बनके स्वर्गका राज्यकर चक्रवर्ती होतेहैं जो उत्तम चन्दन से देवताओंको अनुलेपन करैं वे दिव्य गन्धयुक्त देहधार नन्दन बनमें अप्सराओंकेसाथ विहार करते हैं जो सुगन्ध युक्त कमल उत्पल आदि दिव्य पुष्पों करके देवताओंका अर्चनकरते हैं वे बिमानमें बैठ स्वर्गको जाते हैं जो दिव्य धूपोंसे देवताओं को धूपितकरैं वे दिव्य देहधार स्वर्ग में जाय देवांगनाओंकेसाथ बिहारकरते हैं जो देवतापर वस्त्र चढ़ाते हैं वे दिव्य भूषण वस्त्र औ दिव्य मालाओं करके भूषितहो उत्तम सिंहासनपर बैठते हैं औ दिव्यांगना उनके ऊपर सुवर्ण दण्डके चामर धूनन करती हैं देवालयमें दीप प्रज्वलितकरै तो दिव्यदेहधार दिव्य नारियोंकरके वेष्टित रत्नजटित सुवर्णके विमानमें दीप्यमानहोताहै जो देवालय में जागरणकर नृत्य गीतआदि उत्सवकरै उसको अप्सरा औ गन्धर्व गीत नृत्यसे प्रसन्न करतेहैं जो पुरुष देवालय में लेपन आदि करैं वे स्वर्गमें जाय रत्न प्रासादों के बीच निवास करते हैं जो पुरुष देवालय में परमभक्तिसे घण्टा वितान छत्र चामर आदि चढ़ावे वह उत्तम रत्नोंकास्वामी औ चक्रवर्ती होताहै जो पुरुष स्तुति वचनरूप पुष्पों से देवताओंका अर्चन करैं औ प्रणाम करैं वे दोनोंलोकों में उत्तम फल पातेहैं ॥

एकसौअठारह का अध्याय ॥

देवालयमें दीपदानका विधान फल, औ ललिता नाम एक रानीकी कथा ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र कौनसे तप से नियमसे ब्रतसे अथवा दानसे अत्यन्ततेजो युक्तशरीर इस लोक में होता है यह आप कथनकरें यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज एक समय पिंगल नाम तपस्वी मथुरा में आये उनको हमारी पत्नी जाम्बवती ने यही बात पूछी थी जाम्बवती के प्रति जो उनने कहा वही हम आपको कथन करते हैं संक्रांति सूर्य्य चन्द्रग्रहण वैधृति व्यतीपात उत्तरायण दक्षिणायन विषुव एकादशी शुक्ल चतुर्दशी तिथिक्षय सप्तमी अष्टमी आदि पुण्य दिनों में स्नान कर ब्रत रख स्त्री अथवा पुरुष अंगण के बीच घृत कुम्भ औ वस्त्रसहित प्रज्वलित दीपक भूमिदेवोंको देवै इतना सुन राजा युधिष्ठिर ने पूछा कि भूमिदेव ब्राह्मण किसको कहते हैं यह हमारासंशय प्रथम आप निवृत्तकरैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज पूर्वकालमें सत्ययुगके बीच त्रिशंकुराजा सदेह स्वर्गको जानाचाहताथा उसका वशिष्ठजीने चण्डालबनादिया त्रिशंकु ने यह सब वृत्तान्त विश्वामित्रजी से कहा विश्वामित्रजीको बड़ा क्रोधहुआ औ दूसरी सृष्टि रचनेका आरम्भकिया औ सबदेवताओं सहित दूसरास्वर्ग त्रिशंकु के लिये बनानेलगे शृङ्गाटक नालिकेर ऊँट भेड़ वृन्ताक कोद्रव कूष्माण्डआदि पदार्थ बनाये औ नये सप्तर्षि तथा देवताओंकी प्रतिमा बनाईं उससमय इन्द्रने आय प्रार्थना

कर विश्वामित्रजीको सृष्टि निर्माणसे रोका वे प्रतिमा जो विश्वामित्रजीने बनाईथीं उनमें ब्रह्मा विष्णुआदि देवताओं का सान्निध्यभया वही भूमिदेवकहाये औ अपने भक्तोंको वरदेनेलगे उनकेसन्मुख दीपदान करनाचाहिये चारप्रस्थ घृतका प्रज्वलितदीप रक्तवस्त्रसहित (तद्विष्णोःपरमंपदं) इत्यादि मन्त्रसे सूर्य्यनारायणको निवेदनकरै पीतवस्त्रयुक्त विष्णुभगवान् को श्वेतवस्त्र युक्त शिवजीको कौसम्भवस्त्र युक्त रवि को लाक्षारस रंजितवस्त्रयुक्त दुर्गा को नीलवस्त्र युक्त कामदेवको खादिर वर्ण वस्त्रयुक्त गणेशको नागों को कृष्णवस्त्रयुक्त दीप निवेदनकरै औ यह विशेष श्रवणकरो कि सूर्य्यको पूर्णवर्त्ति शिवको ईश्वरवर्त्ति विष्णुकोभोगवर्त्ति ब्रह्माको पद्मवर्त्ति गौरीको सौभाग्यवर्त्ति कामको अशोक वर्त्ति दुर्गाको रक्तवर्त्तिऔ नागोंको नागवर्त्तियुक्त दीपकदेवै प्रथम देवताका पूजनकर पीछे बड़ेपात्रमें घृत भरकर दीपदानकरै इस विधिसे जो दीपदान करै वह देदीप्यमान विमानमें बैठ स्वर्गमें जाताहै औ वहां प्रलयकाल पर्य्यन्त निवासकरता है जिस प्रकार दीप प्रकाशित रहताहै उसी प्रकार दीपदान करनेहाराभी प्रकाशितहोताहै औ दीपक शिखा की भांति उसकी भी ऊर्ध्वगति होती है घृतसे अथवा तैलसे दीपदान करै दीपका तैल और किसी काम में न लगावै औ दीपका निर्वापण तथा हरण भी न करै दीप तैल से कर्म करनेहारे के नेत्रमें फूला पड़ता है दीप बुझादेनेवाला काणाहोताहै औ दीपका हरणकरै तो अंधा होय ललितानाम रानी नित्यदीपदान कियाकरती उसको सपत्नियोंने पूछा कि हे ललिते दीपदानका फल तू हमको

भी सुनाव तेरी इतनी भक्ति दीपदानमें क्योंकर है तब ल-
लिता कहनेलगी कि हे सखियो मुझे तुम्हारे साथ मत्सर
औ ईर्षा नहीं है इसलिये मैं दीपदान का फल तुमको सु-
नाती हूँ ब्रह्माजी ने मनुष्योंके उद्धारके लिये साक्षात् पा-
र्वतीजीको देविका नदीरूपसे भूमिपर उतारा जिसमें एक
बारभी स्नानकर मनुष्य शिवजीका गणहोता है जहां नृ-
सिंहजीने स्नानकियाहै उस नृसिंहतीर्थमें स्नान करने से
सब पाप निवृत्त होजातेहैं सौवीरकनाम राजा जिसके मै-
त्रेय पुरोहितथे उसने देविकाके तटपर विष्णुमन्दिरबनाया
औ नित्य पुष्प धूप दीप नैवेद्यआदिसे वहां पूजन किया
करता एकदिनकार्त्तिकी पूर्णिमाको वहां दीपदानकिया औ
बड़ा उत्सवकराया अन्तमें सब निद्रावश होगये उस स-
मय वह दीपनिर्वाण होनेलगा इसीअवसरमें एक मूषिका
जो उसीमन्दिरमें रहतीथी दीपका घृत चाटनेनिकली औ
दीपककी बत्तीको अगलीओर खैंचा इससे वहदीप चैतन्य
होगया औ जलनेके भयसे घृतभी नखासकी वही मूषिका
मरकर विदेह राजाकी पुत्री मैं भई जो इस धर्मनिष्ठ राजा
की रानी औ तुम्हारी सपत्नीहूँ बिना इच्छाभी मैंने दीपक
की बत्तीनिकाली उसका यह फल भया जो पुरुष भक्तिसे
कार्त्तिकी पूर्णिमाको विष्णुमन्दिरमें दीपदान करतेहैं उनके
फलका तो क्या वर्णनकरैं मैं दीपदानका फल भली भांति
जानतीहूँ इसीलिये नित्य देवालय में दीप जलातीहूँ यह
ललिताका वचन सुन उसकी सबसपत्नीभी दीपदान करने
लगीं औ बहुत काल राज्य सुखभोग सबकी सब अपने
पति सहित विष्णुलोक को गईं इस प्रकार और भी जो

पुरुष अथवा स्त्री दीपदान करै वह उत्तम तेज औ विष्णु लोकमें बास पाताहै॥

एकसौउन्नीस का अध्याय॥

वृषोत्सर्गका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हेमहाराज कार्त्तिकीपूर्णिमा अमावास्या अयन संक्रांति चैत्रशुक्ल तृतीया अथवा बैशाखकी द्वादशीको चार बछियाओं सहित नीलवर्ण के उत्तम वृषको छोडै तो अनन्त पुण्य होताहै इसकाविधान गर्गमुनि ने हमको इस प्रकार उपदेश किया है कि पहिले मातृका पूजनकर अभ्युदय कारक मातृश्राद्धकरै फिर रुद्र पूजनकर घृतसे हवनकरै औ जीववत्सा औ दूध देनेहारी गौका एक रंगका सर्वांग सुन्दर तरुण बछडा लेकर बाम भागमें त्रिशूल औ दक्षिण भागमें चक्रसे अंकितकर कुंकुम आदिसे अनुलिप्तकरै औ चार तरुण बछियाओंको भी भूषितकर उनके कानमें (पतिर्वोबालिनंपुष्टं सुन्दरंतरुणंशुभम्। ददातितेनसहिताः क्रीडध्वंहृष्टमानसाः) यह वाक्य कहै फिर उनको वस्त्र उढाय भोजन से सन्तुष्ट कर देवालयमें गोष्ठमें अथवा नदीसंगम आदि स्थानोंमें छोडै स्वेच्छाचारी गर्जता हुआ बडे ककुद अर्थात् थुही करके युक्त औ अहंकारसे पूर्ण ऐसा वृष छोडनेवाले पुरुष धन्य हैं इस विधिसे जो वृषोत्सर्ग करै उसके दशपुरुष पिछले औ दशअगले सद्गतिको प्राप्तहोतेहैं वृष जो नदीमें उतरै औ जो जल उसके शृंग आदिसे उडै औ जिस जलको वह पुच्छसे स्पर्शकरै वहसब उसके पितरोंको अक्षयतृप्ति देनेहारा होताहै शृंगोंकरके जो भूमिको खोदताहै वह उस

छोड़नेवाले के पितरों की तृप्तिके लिये मधुकुल्या बनतीहै चारहज़ार हाथ लम्बेचौड़े तड़ाग बनानेसे जो पितरों को तृप्ति होतीहै वही एकवृष छोड़नेसे होतीहै मधु औ तिल युक्त पिण्डदानसेभी वहतृप्ति पितरोंको नहींहोती जो एक वृषोत्सर्ग करनेसे होतीहै बहुतसे पुत्र उत्पन्न करनेचाहिये जिनमेंसे एकभी गयाको जाय पिण्डदानकरै अथवा पितरोंके निमित्त वृष छोड़ै जो पुरुष अपने पितरोंके उद्धार के लिये वृषछोड़ै वह आपभी स्वर्गवास पाताहै ॥

एकसौबीसका अध्याय ॥

होलिका की उत्पत्ति औ फल सहित विधान ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र फाल्गुन पूर्णिमाको ग्राम २ औ नगर २में क्यों उत्सवहोताहै बालक क्यों क्रीड़ाकरते हैं औ घर २ में होली क्यों जलाईजाती है शीतोष्णा औ अडाडा उसको क्यों कहते हैं औ किस देवताका पूजन उसदिन कियाजाताहै यह आप वर्णनकरैं यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज सत्ययुगमें रघुनाम राजाशूर प्रियवादी सर्वगुण युक्त औ बड़ादानी हुआ वह सब पृथिवीकोजीत सब राजाओं को अपने बशमेंकर पुत्रोंकी भांति प्रजाका पालन करताथा उसके राज्यमें दुर्भिक्षव्याधि भय अकालमरण आदि कोई उपद्रव नहीं था औ सब प्रजाके लोक धर्ममें आसक्तथे एकसमय सब पुरकेलोक एकत्रहो राजाके द्वार पर आकर त्राहि२पुकारनेलगे राजाने उनकेत्रासकाकारण पूछा तब उनसबनेकहा कि महाराज ढोंढानाम राक्षसीनित्य हमारे बालकोंको पीड़ादेतीहै औ औषध मन्त्र तन्त्रआदि

उसपर कुछभी नहीं चलता यह पौरोंका वचन सुन राजा ने अपने पुरोहित श्री वशिष्ठमुनिसे पूछा मुनिने कहा कि हे राजन् सुमाली नाम दैत्यकी पुत्री यह ढोंढाहै इसने बहुतकाल उग्रतप कर शिवजीको प्रसन्न किया शिवजी ने प्रसन्नहो इससे कहा कि वरमांग तब इसने यह वरमांगा कि देवता दैत्य मनुष्य आदि कोई मुझे न मारसकैं औ शस्त्र अस्त्रसे.बध न होय दिन में रात्रिमें शीतकाल उष्ण काल वर्षाकाल में औ भीतर बाहर कहीं मुझको भय न होय शिवजीने कहा तथास्तु औ यहभी कहा कि ऋतुसंधि के बीच उन्मत्त औ बालक तुझे त्रासदेंगे इतना कह शिव जी अन्तर्द्धान भये वही राक्षसी नित्यबालकोंको औ प्रजा को पीड़ा देती है अडाडा शब्द करके कुटुंबियों का सिद्ध अन्न ग्रहण करती है इसलिये उसको अडाडा कहते हैं यह तो उस राक्षसीका चरितहै अब उसके निवारणका उपाय हम कहते हैं फाल्गुनशुक्ल पूर्णिमाको सबलोक निःशंकहो क्रीडाकरैं अश्लील भाषणकरैं नाचैं हँसैं बालक काष्ठके खड्ग लेकर योधाओंकी भांति हर्षसे युद्धके लिये उत्सुकहो दौड़ते फिरैं बहुतसासूखा काष्ठ औ उपले इकट्ठेकर उनमें रक्षोघ्न मंत्रोंकरके अग्निलगाय उसमें हवनकरैं सब लोक किलकिला शब्द करते ताली बजाते उस अग्निकी तीन प्रदक्षिणाकरैं गावैं हँसैं औ निःशंक हो जो जिसके मनमें आवै सो बोलैं इसप्रकार लोकोंके कोलाहलसे रक्षोघ्न मंत्रों करके हवन करनेसे बालकोंके खड्गप्रहारसे वह दुष्ट राक्षसी क्षयको प्राप्त होगी यह वशिष्ठजीका वचन सुन राजा ने सम्पूर्णराज्यमें इसी प्रकार बड़ा उत्सव कराया जिससे

वह राक्षसी नाशको प्राप्त भई उसी दिनसे यहां ढोंढाका उत्सव लोकमें प्रसिद्ध हुआ सर्व दुष्टापह औ सर्व रोगोंका शांत करनेहारा होम इस दिन कियाजाता है इसलिये इसको होलिका कहते हैं सब तिथियोंका सार परमआनंद देनेहारी पूर्णिमा तिथिहै सारत्वसेही इसका नाम फल्गु है गोबरसे लिपेहुये अंगण में इस रात्रिको बालकोंकी रक्षा करनी चाहिये बहुतसे खड्गहस्त बालक अपने घरमें बुलावै वे घरमें रक्षित बालकोंको काष्ठके खड्गोंसे स्पर्शकरैं हँसैं गावैं पीछे उनको गुड़ औ पक्वान्न देकर विसर्जन करै इस रात्रिको बालकोंका अवश्य रक्षणकरना चाहिये इस विधिके करनेसे ढोंढाका दोष शांतहोताहै इतना सुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र दूसरे दिन चैत्रमास औ वसन्तऋतुका प्रारम्भ होता है इस दिन क्या करना चाहिये तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज होलीके दूसरेदिन प्रभात उठ आवश्यक कामकर पितर औ देवताओंका तर्पण पूजनकर सर्व दुष्टोपशांतिके लिये होलिकाकी विभूतिका बन्दनकरै औ घरके अंगणमें गोबरसे लीप रंग औ अक्षतों करके चौकपूरै उसमें शुक्लवस्त्र से आच्छादित पीठ रखकर पुष्पमाला आदिसे भूषित औ सुवर्णसहित कलश स्थापनकरै पीछे उस पीठपर चंदन रख सौभाग्यवती स्त्री उत्तम वस्त्र भूषण पहिन दही दूर्वा अक्षत शिरीष पुष्प आदिसे उस चंदनका पूजनकरै फिर आम्रके पुष्प सहित उस चंदनको प्राशनकरै औ कामदेवका पूजन कर सूत मागध बन्दी औ ब्राह्मणों का यथाशक्ति सत्कार कर (कामदेवः प्रीयताम्) यह वाक्य कहै औ भोजनके

समय प्रथम पहिले दिनका बासी पक्कान्न थोड़ासा खाकर यथेष्ट भोजन करै इसविधिसे जो फाल्गुनोत्सवकरै उसके सब मनोरथ अनायाससे सिद्धहोते हैं आधि व्याधि नाश को प्राप्तहोती हैं पुत्र पौत्र धन आदिकी प्राप्तिहोतीहै यह पूर्णिमा सब विघ्न हरनेहारी जयदा पवित्रा औ सब तिथियोंमें उत्तमहै शिशिरऋतुकी समाप्ति औ बसन्तके आरम्भहोतेही चैत्रकृष्ण प्रतिपदाको चन्दनसहित आम्रपुष्प को जो प्राशनकरै वह बर्षभर सुखीरहताहै॥

एकसौ इक्कीसका अध्याय॥

दमनकोत्सव औ दोलोत्सव का फल सहित विधान॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र और भी बहुतउत्तम२पुष्पहैं उनको छोड़कर दमनकका अर्पण देवताओंको किसकारण करतेहैं यह आपवर्णनकरैं औ दोलोत्सव तथा रथयात्रोत्सवका विधानभी कथनकरैं यहराजा का वचनसुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज प्रथम मन्दराचलमें दमनक बृक्षउत्पन्नहुआ उसका दिव्य गन्ध आघ्राण कर सब देवांगना कामवश होतीथीं औ उन्मत्तकी भांति हँसती गातीथीं सबमुनिभी उसका गन्ध सूँघ वेदाध्ययन औ तप छोड़ कामवशहुये इसप्रकार सब लोक उसके गन्धसे उन्मत्तहुये देख ब्रह्माजीको बड़ाक्रोध हुआ औ दमनकको कहनेलगे कि तू बड़ादुष्टहै तैंनेहमारी सबप्रजा आकुलकरदी जो एकजीवपर अपकारकरै उसको अधम कहते हैं तैंनेतो बहुतोंकी हानिकरीहै इसलिये आजसे लेकर देव पितृ कर्ममें कोई तुझे ग्रहण नकरैगा यह ब्रह्माजीके मुख से शाप सुन दमनकने कहा कि महाराज

मैंने द्वेषसे अथवा क्रोधसे किसी का अपकार नहीं किया आपने मुझे ऐसाही सुगन्धदिया कि जिससे सब आपही उन्मत्त होजाते हैं इसमें मेरा क्यादोष है जिसकी जो प्रकृतिहो उसको वह क्योंकर त्याग सकताहै परन्तु आपने निरपराध मुझको शापदिया यह दमनकका युक्तियुक्त वचनसुन प्रसन्नहो ब्रह्माजी बोले कि हे दमनक हमने तुझे शाप दिया परन्तु अब वरभीदेते हैं कि वसन्त ऋतुमें तू सब देवताओंके मस्तक पर चढ़ैगा औ जो मनुष्य भक्ति से तुझको देवताओंपर चढ़ावेंगे वे सदा सुखी होंगे औ चैत्रमासमें सब पाप हरनेहारी दमनक चतुर्दशी प्रसिद्ध होगी इतनाकह ब्रह्माजी अन्तर्द्धान भये औ दमनक भी अपने गन्धसे त्रिभुवनको वासित करताहुआ ब्रह्माजीसे शाप औ बरपाय शिवजीकेनिवासस्थान उसी मंदराचल में रहा उसीदिनसे लोकमें दमनक पूजाप्रसिद्धभई श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अब हम दोलोत्सवका वर्णन करते हैं एकसमय नन्दनबनमें दोलोत्सवका प्रारम्भहुआ वसन्त ऋतुमें देवांगना औ देव मिलकर दोलाक्रीड़ा करनेलगे कोई देवांगना दोलापर गाती हैं कोई देवता अपनी प्रियाको आलिंगनकर माधवीलताकी दोलापर झूलते हैं विद्याधर विहारकररहे हैं गन्धर्वगाते हैं औ अप्सरा नाचती हैं नन्दनबनमें यह चमत्कारदेख पार्वतीजीने शिव जीसे कहा कि हमारेलियेभी एकदोला बनवाइये जिसपर आपकेसाथ बैठ मैंभी दोलाक्रीड़ा करूँ यह पार्वतीजी का वचनसुन शिवजीने देवताओंको बुलाकर दोला बनानेकी आज्ञादी देवताओंने आज्ञापातेही दो उत्तम जड़ाऊसुवर्ण

के स्तंभ गाड़ उनपर एकपट्टा रख उसमें वासुकिनागकी दोला बनाई उसका फणही बैठनेके लिये रत्नजटित पीठ कल्पना किया उस फण के ऊपर अतिमृदु रुई की गद्दी औ रेशमी वस्त्र बिछाये दोला की शोभाके लिये मोतियों के गुच्छे औ माला चारोंओर लटकाये इस प्रकार अति उत्तम दोलाबनाय देवताओंने शिवजीसे प्रार्थनाकरी कि हे प्रभुदोला सिद्धहोगईहै आप आरूढ़ होयँ यह देवताओं की बिनती सुन प्रसन्नहो पार्वतीजी सहित श्रीमहादेवजी दोलापर चढ़ेजया औ विजया दोनों दोलाको आंदोलन करनेलगीं उस समय पार्वतीजी ने मधुरस्वरसे ऐसागीत गाया कि शिवजी आनन्दमें मग्नहोगये गन्धर्व गानेलगे अप्सरा नाचनेलगीं औ चारण अनेकप्रकारके बाजेबजाने में प्रवृत्त भये परन्तु शिवजी के दोला विहारसे सब कुल पर्वत कांपउठे समुद्रक्षोभ को प्राप्तभये बड़ा प्रचण्ड पवन चलनेलगा औ सबलोक त्रस्तहोगये इसप्रकार त्रैलोक्य को अति व्याकुल देख इन्द्रआदि सब देवता शिवजी के शरणमें गये औ प्रणामकर प्रार्थनाकरी कि हे नाथ अब आप इस दोलालीला को निवृत्तकरैं सब भुवन क्षोभ को प्राप्तहोरहे हैं यह देवताओं की प्रार्थना सुन भक्तवत्सल श्रीमहादेवजी दोलासेउतरे औ प्रसन्नहोकर यह कहा कि आजसे लेकर जो पुरुष इस दोलोत्सवको करेगा वहसब अभीष्टफल पावैगा श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हेमहाराज दोलोत्सवका विधान हम वर्णनकरते हैं प्रथम बसन्त ऋतुमें उपवनकेबीच पुष्करिणीके तटपर अतिउत्तम दोला बनावै उसको छत्र दर्पण पुष्प माला सुवर्णके कलश औ

अनेकप्रकार के बिचित्र वस्त्रोंसे अलंकृतकरै पीछे अग्नि-होत्र औ दिक्पाल बलि करके मूलमन्त्रसे इष्ट देवता को उस दोला पर चढ़ाय (विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखो) इत्यादि वैदिकमन्त्र पढ़ै औ नृत्य गीत वाद्य स्तुति पाठ औ अनेकप्रकारके मङ्गल शब्दोंकरके बड़ाउत्सवकरै इसी अवसरसे कुंकुमके रंगसे भरी क्रीड़ावापीमें उत्तमस्त्री अपने पतियोंसहितप्रवेशकरजलक्रीड़ाकरैं औ परस्परपिचकारि-योंसेसिंचनकरैं जो पुरुष इस विधिसे दोलोत्सवकरैं वे पुत्र पौत्र धन आरोग्यआदि पाय सौवर्ष संसारका सुखभोग अन्तमें उत्तमगतिपाते हैं वसन्तऋतुमें भक्तिपूर्वक जो म-नुष्य दोलोत्सव करते हैं उनका जन्म सफल है वे अपने कई कुलोंका उद्धारकर स्वर्गको जाते हैं ॥

एकसौबाईसका अध्याय ॥

रथयात्रा का विधान औ फल ॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम रथयात्राका विधान कहते हैं आप प्रीतिसे श्रवण कीजिये एक समय वसन्त ऋतुमें भ्रमण करतेहुये नारदजी शिव लोकमें गये वहां प्रणाम कर शिवजी के समीप बैठे शिव जीनेभी उनको कुशलपूछा औ यहभी पूछा कि आप कहां से आये हैं तब नारदजी कहने लगे कि हे देवदेव अब हम सुख दुःख रूप मर्त्यलोकसे आये हैं वहां कामदेवके मित्र वसन्त ऋतुने सब जगत् वश करलिया है मन्द २ मलय पवन बहताहै औ सहकाररूप मस्तहाथी पर को-किलरूप डिंडिम को स्थापनकर नगर २ औ ग्राम २ में वसन्त ऋतु यह घोषणा करताफिरता है कि कौन शिव

है विष्णु कौनहै औ जड़ब्रह्माको कौनजानताहै इसजगत का स्वामी एक कामदेव है सब उसके शासनमें रहो औ लोकभी यह कामशासन सुनकर सब उन्मत्तहोरहे हैं सीमाओंमें गोपगीतगातेहैं शस्यरक्षिका युवती बेवशहोगान करती हैं कुलटा स्त्री विटों में आसक्तहो ताण्डव करती हैं प्रफुल्लित बनमें पशुपक्षीभी कामके वशहो अपनी२ प्रिया को संगले विहारकरते हैं सबके चित्त उत्कण्ठित होरहे हैं कोकिल पंचमस्वर बोलते हैं उसको सुन विरही जनों के प्राणही जाते हैं मलयानिलसे कम्पित वृक्षोंके पत्र मानो हर्षसे नृत्यही कररहेहैं बालक इस सुखके अनभिज्ञहैं औ वृद्धोंके इन्द्रिय विकलहैं इसलिये इन दोनोंको तो कामकी व्यथा नहीं है और सबजगत् उन्मत्त होरहाहै यहविचित्र प्रभाव चैत्रका देख आप को निवेदन करने आये हैं यह नारदजीका वचनसुन वेदमय दिव्यरथके ऊपरचढ़ गन्धर्व अप्सरा मुनिगण औ सब देवताओं को संगले शिवजी मर्त्यलोकमेंआये औ नारदजीने जैसाकहाथा वैसाहीदेखा कि सब जगत् आनन्दमें मग्नहै शिवजी वसन्तकी शोभा देखतेहीथे कि उनकेसाथ जो देवता आदिथे वेभी उन्मत्त भये कोई उत्कण्ठितहो गानेलगे कोई हर्षसे अनेकप्रकार के बीणाआदि बाद्य बजानेलगे कोई प्रसन्नतासे नाचनेही लगे देवता भी अलस दृष्टिहो परस्पर नरमालाप करने लगे इसप्रकार शिवजी ने सब को क्षुब्धहुये देख बिचार किया कि यह तो बड़ा अनर्थहुआ कि ये सब बेवशहोगये इसका शीघ्रही उपाय करनाचाहिये जो मनुष्य अनर्थको उठतेदेख उसके विघात के लिये यत्न नहींकरते वे अवश्य

आपदा करके पीड़ितहोतेहैं अबहमको इनसबकी उन्माद से रक्षा करनीचाहिये औ स्वामिभक्त वसन्त ऋतुका भी मान रखनाचाहिये यह शोच वसन्तऋतुको बुलाकर शिवजीने कहा कि हे वसन्त चैत्रमासमें तुम अपना सब प्रभाव प्रकटकरो औ चैत्रशुक्लपक्षमें सबजीवोंको औ विशेष करके देवताओंको सुख देनेहारेहो औ देवताओं को बुला कर स्वस्थ किया औ यहभी कहा कि जो पुरुष वसंतऋतु में रथयात्रोत्सव करैंगे वे दिव्य देहधार स्वर्ग सुख भोगैंगे इतना कह सब देवताओंको संगले शिवजी अपने लोक को गये औ वसन्तऋतुभी शिवजीकी आज्ञानुसार वनमें विहारकर अन्तर्द्धान भया उसी दिनसे लोकमें रथयात्रोत्सवका प्रचार हुआ है इतना सुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि रथयात्रा किसविधिसे करनीचाहिये उसमें देवता किस प्रकार चढ़ावे औ रथ कैसा बनावे यह आप वर्णन करैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज बहुत दृढ़ काष्ठका अथवा बांसका रथबनाय उत्तम वस्त्रसे वेष्टितकर पंचरंगी पताका औ पुष्पमाला आदिसे भूषितकर छत्र चामर आदिसे सजाय उत्तम श्वेतवर्ण दो बैल उसमें जोड़ देवालयके अंगणमें खड़ाकरै फिर वैश्वदेव ग्रहशांति औ शांतिक पौष्टिक आदि कर्मकर मूलमंत्रसे औ (रथेतिष्ठन्नयतिवाजिनः) इत्यादि वैदिक मंत्रसे देवता को रथमें विराजमानकरै उस समय शंख दुंदुभि काहला आदि बाजे बजें मशाल जलाकर बहुत से मनुष्य रथ के साथ चलैं आगे २ नाच तमाशा होता चले इस प्रकार सूर्यास्त होने के अनन्तर धीरे २ रथको नगरमें घुमावे रथके साथ जि-

तने मनुष्य हों औ तमाशा देखनेवाले जितने हों सबको पुष्पमाला औ ताम्बूल देवै जो मार्गमें रथका धुरी पहिया युग आदि कोई अंग टूटजाय तो ब्राह्मणों से तिल औ घृतका हवन कराय उस अंगको बनवाय आगे रथयात्रा करै नगरके मध्यमें रथको स्थापनकर वहां गीत नृत्य नाटक दोला चक्रदोला आदि अनेकप्रकारके उत्सवकरै इस विधिसे जो रथयात्राकरै उसके धन सन्तान औ पशुवृद्धि को प्राप्त होते हैं औ अन्तमें सद्गति पाता है माघशुक्लपक्ष में रथसप्तमी होती है उस दिन उपवासकर सूर्यनारायण का पूजनकर सुवर्णका दिव्यरथ बनाय निवेदनकरै वह मनुष्य सौ वर्ष पर्यंत संसार सुखभोग अन्तमें सूर्यलोकको जाता है इस भांति नगरके मध्यमें उत्सवकर नगरके पूर्व द्वारपर रथको लेजाय वहां उत्सव करै दूसरे दिन दक्षिण द्वारपर लेजाय रात्रिको जागरण करै औ नट आदि के तमाशे करावै तीसरे दिन पश्चिम द्वार पर चौथे दिन उत्तर द्वारपर औ पांचवें दिन फिर नगर के मध्य में रथ को स्थापन कर उत्सव औ जागरण करता हुआ छठे दिन अपने स्थानपर देवताको स्थापन कर महापूजा करै औ बड़ा उत्सव करावै रथयात्रा प्रसंगसे सर्व पापहरा रथसप्तमीकाभी हमने वर्णनकिया अब औरभी विशेषआप श्रवणकरैं तृतीयाको गौरीका पूजनकरै चतुर्थीको गणपति का पंचमीको लक्ष्मी अथवा सरस्वतीका षष्ठीको स्कंदका सप्तमीको सूर्य्यका अष्टमी औ चतुर्दशीको शिवका नवमी को चण्डिकाका दशमीको वेदव्यास आदि शान्तचित्त ऋषियोंका एकादशीको विष्णुभगवान्‌का द्वादशीको इन्द्रका

त्रयोदशीको कामदेवका औ पूर्णिमाको सब देवताओंका अर्चनकरै इसविधिसे दमनकोत्सव आन्दोलनोत्सव औ रथयात्रा अपनी २ तिथिमें सब देवताओंकी करनी चाहिये इसप्रकार वसन्तऋतुमें उत्सव करनेहारापुरुष बहुत काल स्वर्गसुखभोग चक्रवर्त्ती राजा होताहै ॥

एकसौतेईसका अध्याय ॥

कामदेवका चरित औ मदन त्रयोदशी का विधान ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज एक समय हिमालय पर्वतमें श्रीमहादेवजी तपकरनेलगे औ उससमय हिमालयने अपनी पुत्री श्रीपार्वतीजीको उनकी सेवा के लिये नियतकिया ब्रह्मादि देवताओंने विचारकिया कि जो शिवजी पार्वतीसे बिवाहकरैं औ उनसे पुत्र उत्पन्नहोय तो हमारा संकटहरै इसलिये ऐसाउपाय करनाचाहिये कि पार्वतीके ऊपर शिवजी का अनुरागहोय यह विचार कर इसकार्य में कामदेवको नियतकिया कामदेवभी रतिप्रीति उन्माद वारुणीदर्प शृंगार वसन्त आदि अपने परिवार को संगले शिवजीके आश्रममें पहुँचा प्रथम सब आश्रम में वसन्त ऋतुकी प्रवृत्तिभई पीछे कामदेवने प्रवेशकिया औ उन्मादन नाम बाण धनुष्पर चढ़ाय शिवजी को मारनाचाहा इतनेमें शिवजीने सब कुटिलता कामदेवकीदेख क्रोधदृष्टिसे उसको देखा देखतेही वह भस्महुआ औ कामदेवकीभार्या रति औ प्रीति दोनों विलाप करनेलगीं तब पार्वतीजीके हृदयमें अत्यन्त करुणा उत्पन्नभई औ शिव जीसे प्रार्थनाकरी कि महाराज मेरेनिमित्त कामदेवकी यह दशाभई अब आप कृपाकर इसको फिरभी जीवदान देवैं

तब प्रसन्नहो शिवजी ने कहा कि हे पार्वति सब जगत्‌
इसने उपद्रव कर रक्खाथा इसलिये हम ने इस को दग्ध
किया अबइसका फिर जीवनक्योंकरहोसक्ताहै परन्तु चैत्र
शुक्ल त्रयोदशीको प्रतिवर्ष एकबार यह जीवितहोगा उस
दिन जो इसका पूजनकरैंगे वे वर्षभर सुखी रहैंगे इतना
कह शिवजी कैलासको गये यह कामदेवका चरितहै अब
हम पूजाविधान कहते हैं चैत्रशुक्ल त्रयोदशीको स्नानकर
अशोक वृक्ष बनाय उसके नीचे रति प्रीति औ वसन्तस-
हित कामदेवकी मूर्त्ति सिंदूर औ हलदीसे लिखे अथवा
सुवर्णकी मूर्त्ति स्थापन करै ऐसी मूर्त्तिबनावै कि अप्सरा
जिसकी सेवामें चारों ओर स्थित हैं विद्याधरी हाथजोड़े
संमुखखड़ीहैं गन्धर्वनृत्यकररहेहैं इसप्रकारकी मूर्त्तिबनाय
मध्याह्नके समय गन्ध पुष्प धूप दीप अनेक प्रकार के नै-
वेद्य औ ताम्बूलआदि उपचारोंकरके (नमोवामायकामा
यदेवदेवायमूर्त्तये । ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राणांमनःक्षोभकराय
वै) इस मन्त्रसे पूजनकरै इसप्रकार स्त्री कामदेवका पूजन
कर वस्त्र माला भूषणआदिसे अपने पतिका पूजनकरै औ
उसको साक्षात् कामदेवजानै रात्रिको जागरणकर उत्सव
करै सबको गन्ध ताम्बूल पुष्पमालाआदिदेवै औ शूद्रोंको
मद्यदेकर बड़ाउत्सवकरै इसविधिसे जो प्रतिवर्षकामोत्सव
करै वह सुभिक्ष क्षेम आरोग्य यश लक्ष्मी सुखपाताहै औ
विष्णु ब्रह्मा सूर्य चंद्रआदि ग्रह कामदेव वसंत औसबब्रह्म-
र्षियक्ष गन्धर्व असुर राक्षस सुपर्ण नागपर्वतआदि उसपर
प्रसन्नहो उसको सुख देतेहैं कभी उसको शोक नहीं होता
वसन्तऋतुमें रतिप्रीति वसन्त मलयानिल आदि अपने

परिवार सहित कामदेवका जो नारी भक्तिसे पूजनकरै वह सौभाग्यरूप औ सुख पातीहै ॥

एकसौचौबीस का अध्याय ॥

भूतमाताके उत्सवका विधान ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र सब ग्रामों में औ नगरोंमें लोक भूतमाता का उत्सव करते हैं नाचते गातेहैं उन्मत्तकी भांति प्रलाप करते हैं भूमिपर लोटते हैं अंग भंग करते हैं यह उत्सव शास्त्रोक्तहै कि लौकिकही है आप इसहमारे सन्देहको निवृत्तकीजिये यहराजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज एकसमय मन्दराचलमें शिवजी पार्वतीकेसंग विहार करतेथे उनको एकान्तमें उत्तम शय्यापर क्रीड़ाकरते दिव्यसौवर्ष व्यतीत हुए एक दिन आवश्यकके लिये पार्वतीजी बाहिर निकलीं उसीक्षण कृष्णवर्ण करालमुख पिंगलनेत्रा मुक्तकेशी मुण्ड माला धारे खट्वांग औ कपाल हाथों में लिये व्याघ्रचर्म पहिने डमरु बजाती फूत्कार शब्द से आकाश को भरती अतिभयङ्कर एकनारी उनकेमूत्रसे उत्पन्नभई औ हजारों उनकी परिचारिकाभी गजचर्मओढ़े नाचती गाती ताली बजाती हँसती कपाल खट्वांग धारे प्रकटभईं इसी भांति ऐसेही रूपकरकेयुक्त औसिंह शार्दूलआदि समान जिनके मुख ऐसे हजारों भूतोंकरके सहित अतिभयङ्कर एकपुरुष शिवजीसे भी उत्पन्न हुआ औ वे दोनोंस्त्री पुरुष प्रसन्नहो इकट्ठे होगये तब प्रसन्न हो शिवजी ने पार्वतीजी से कहा कि हे प्रिये ये दोनों हम से औ तुम से उत्पन्न मूर्त्तिमान् मानों वीभत्स रसही होयँ हास्य करनेहारे स्त्री पुरुष दोनों

तब प्रसन्नहो शिवजी ने कहा कि हे पार्वति सब जगत्में इसने उपद्रव कर रक्खाथा इसलिये हम ने इस को दग्ध किया अबइसका फिर जीवन क्योंकरहोसक्ताहै परन्तु चैत्र शुक्क त्रयोदशीको प्रतिवर्ष एकबार यह जीवितहोगा उस दिन जो इसका पूजनकरैंगे वे वर्षभर सुखी रहैंगे इतना कह शिवजी कैलासको गये यह कामदेवका चरितहै अब हम पूजाविधान कहते हैं चैत्रशुक्क त्रयोदशीको स्नानकर अशोक वृक्ष बनाय उसके नीचे रति प्रीति औ वसन्तसहित कामदेवकी मूर्त्ति सिंदूर औ हलदीसे लिखै अथवा सुवर्णकी मूर्त्ति स्थापन करै ऐसी मूर्त्तिबनावै कि अप्सरा जिसकी सेवामें चारों ओर स्थित हैं विद्याधरी हाथजोड़े संमुखखड़ीहैं गन्धर्वनृत्यकररहेहैं इसप्रकारकी मूर्त्तिबनाय मध्याह्नके समय गन्ध पुष्प धूप दीप अनेक प्रकार के नैवेद्य औ ताम्बूलआदि उपचारोंकरके (नमोवामायकामायदेवदेवायमूर्त्तये । ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राणांमनःक्षोभकरायवै) इस मन्त्रसे पूजनकरै इसप्रकार स्त्री कामदेवका पूजन कर वस्त्र माला भूषणआदिसे अपने पतिका पूजनकरै औ उसको साक्षात् कामदेवजानै रात्रिको जागरणकर उत्सव करै सबको गन्ध ताम्बूल पुष्पमालाआदिदेवै औ शूद्रोंको मद्यदेकर बड़ाउत्सवकरै इसविधिसे जो प्रतिवर्षकामोत्सव करै वह सुभिक्ष क्षेम आरोग्य यश लक्ष्मी सुखपाताहै औ विष्णु ब्रह्मा सूर्य चंद्रआदि ग्रह कामदेव वसंत औसबब्रह्मर्षियक्ष गन्धर्व असुर राक्षस सुपर्ण नागपर्वतआदि उसपर प्रसन्नहो उसको सुख देतेहैं कभी उसको शोक नहीं होता वसन्तऋतुमें रतिप्रीति वसन्त मलयानिल आदि अपने

परिवार सहित कामदेवका जो नारी भक्तिसे पूजनकरै वह सौभाग्यरूप औ सुख पातीहै ॥

एकसौचौबीस का अध्याय ॥

भूतमाताके उत्सवका विधान ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र सब ग्रामों में औ नगरोंमें लोक भूतमाता का उत्सव करते हैं नाचते गातेहैं उन्मत्तकी भांति प्रलाप करते हैं भूमिपर लोटते हैं अंग भंग करते हैं यह उत्सव शास्त्रोक्तहै कि लौकिकही है आप इसहमारे सन्देहको निवृत्तकीजिये यहराजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज एकसमय मन्दराचलमें शिवजी पार्वतीकेसंग विहार करतेथे उनको एकान्तमें उत्तम शय्यापर क्रीड़ाकरते दिव्यसौवर्ष व्यतीत हुए एक दिन आवश्यकके लिये पार्वतीजी बाहिर निकलीं उसीक्षण कृष्णवर्ण करालमुख पिंगलनेत्रा मुक्तकेशी मुण्ड माला धारे खट्वांग औ कपाल हाथों में लिये व्याघ्रचर्म पहिने डमरु बजाती फूत्कार शब्द से आकाश को भरती अतिभयङ्कर एकनारी उनकेमूत्रसे उत्पन्नभई औ हजारों उनकी परिचारिकाभी गजचर्मओढ़े नाचतीं गाती ताली बजाती हँसती कपाल खट्वांग धारे प्रकटभईं इसी भांति ऐसेही रूपकरकेयुक्त औसिंह शार्दूलआदि समान जिनके मुख ऐसे हजारों भूतोंकरके सहित अतिभयङ्कर एकपुरुष शिवजीसे भी उत्पन्न हुआ औ वे दोनोंस्त्री पुरुष प्रसन्नहो इकट्ठे होगये तब प्रसन्न हो शिवजी ने पार्वतीजी से कहा कि हे प्रिये ये दोनों हम से औ तुम से उत्पन्न मूर्त्तिमान् मानों वीभत्स रसही होयँ हास्य करनेहारे स्त्री पुरुष दोनों

सदृशहैं इनमें हमको कुछभी अन्तर नहीं देखपड़ता भूत-माता आतृभांडा औ अन्तकसंविधा ये तीन इन के नाम हैं जोपुरुष भक्तिसे इनका पूजनकरैंगे वे पशु आरोग्य औ सन्तान पावैंगे उनके घरमें भूत पिशाच शाकिनी राक्षस आदि कभी पीड़ा न करैंगे औ उनके बालक आरोग्यरहैं गे इतना सुन राजा युधिष्ठिर ने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र भूतमाताकी पूजा किससमयमें औ किस विधानसे करनी चाहिये यहआप वर्णनकरैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज नामभेद कालभेद औ क्रियाभेदसे बालकों के हितकरनेहारी इसभगवतीका पूजन सर्वत्र होताहै ज्येष्ठ प्रतिपदासे लेकर पूर्णिमातक भगवतीका पूजनकरै अनेक प्रकारके हास्य औ वीभत्स तमाशे भगवतीके आगे करावै धन लोभसे विश्वास देकर मार्ग्गमें वेदपाठी ब्राह्मण इसने मारा अब इसको शूलपर चढ़ाते हैं इसने परस्त्रीका स्पर्श किया इसलिये इसके हाथ काटेजाते हैं इसने स्वामि द्रोह किया इसलिये यह करोत से चीराजाताहै औ रुधिर की धार शरीर से बहती है इस चोरको राजपुरुष बांधे लिये जातेहैं इस श्वेतकेश औ श्वेतवस्त्रधारी ब्राह्मणको लड़के छेड़ते हैं औ पत्थर मारते हैं यह विधवा स्त्री गर्भ रहनेसे पेट बड़ा होजाने से घरके बाहर क्यों नहीं निकलती इस कृपणको देखो कि धनहोकर भी अपने कुटुम्ब का भरण पोषण नहीं करता औ मरा२ पुकारता है इस वृन्ताक के समान कृष्णवर्ण भीलकोदेखो कि वृक्षके कोटरोंमेंसे शुकों के बच्चोंको पकड़ २ आगमें भून खण्ड खण्ड कर शहत के साथ खाताहै इस स्त्री को देखो कि केशखोले हाथमें छुरी

लिये हुंकारशब्द करतीहुई काला कम्बलपहिने सूपबजा-
वती योगिनीकीभांति नाचतीहै इसप्रकारके तमाशे भग-
वतीकेआगे नित्यकरावै नवमी अथवा एकादशीको दीपक
प्रज्वलितकर बड़ेउत्सवसे भगवती के समीपलेजाय रक्षा
वाले पुरुष साथजायँ आगे २ सूप बजातेचलें यह सर्वार्थ
साधक दीपक वीरचर्या में कहा है इसप्रकार पूर्णिमातक
प्रदोषके समय दीप निकालै औ द्वादशीके दिन भूतमाता
का बड़ा उत्सवकरै इसप्रकार अनेकप्रकारके हास्यदायक
तमाशे औ अनेकप्रकारके उत्सवोंसे भूतमाता का पूजन
करैं वे सपरिवार बर्षभर प्रसन्न रहते हैं कोई विघ्न उनके
घरमें नहींहोता ॥

एकसौपचीसका अध्याय ॥

रक्षाबन्धनका विधान ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र सब पाप औ अमंगलका नाश करनेहारा रक्षा विधान आप वर्णन करैं जिसके एकबार करनेसे वर्षभर रक्षारहै औ भूत प्रेत पिशाच आदि धर्षण न करैं यह राजाका वचन सुन श्री-कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज इसमें हम प्राचीन इतिहास वर्णन करते हैं आप श्रवणकरैं पूर्वकालमें बारह वर्ष पर्यंत देवता औ दैत्योंका युद्धभया उसमें देवता परा-जितहुये इन्द्रभी अपनी नगरी अमरावतीमें प्राण बचाने के लिये आयछिपे दानवराजने तीनलोक वशकरलिये औ यहआज्ञा सब देवता औ मनुष्योंकोदी कि मेरा यजनकरो मेरी स्तुतिकरो मेरापूजनकरो जो मेरी इसआज्ञाका उल्लं-घनकरैगा वही बध्यहोगा दैत्यराज की इस आज्ञासे यज्ञ

उत्सव देवपूजाआदि निवृत्तहुये स्वाहा स्वधा वषट्इत्यादि शब्दकहीं कानमें नपड़तेथे सबने वेदपढ़ना छोड़दिया सब संसारमें अव्यवस्थाहोगई इससेइन्द्र औरभी निर्बल हुये इन्द्रको हीनबलदेख दैत्योंने अमरावतीमेंभी नटिकने दिया तब इन्द्रव्यग्रहो बृहस्पति के समीपगये औ उनसे यह कहा कि हे देवगुरो अब हम स्वर्गमें ठहरनहीं सकते इसलिये यही विचारहै कि फिर दैत्योंके साथ युद्धकरैं जय पराजय तो ईश्वरके आधीन है परन्तु उत्साह पूर्वक युद्ध करना अपने अधीन है थोड़ी देरभी प्रज्वलितहोना अच्छा औ बहुतकाल तक सिलगते २ धुआंकरना कुछनहीं देवैश्वर्य कर्मके आधीनहै औ कर्म पौरुषको कहतेहैं इसलिये अब हम पौरुष करैं तो अवश्यही कल्याणहोय यह इन्द्रका वचनसुन बृहस्पति बोले कि हे देवराज यहपौरुष का समयनहीं है देशकाल का बिचारकिये बिन जो काम कियेजाते हैं वे सफल नहींहोते औ उनमें एक प्रकार का अनर्थ उत्पन्न होजाताहै तब इन्द्र ने फिर कहा कि आप यथार्थ कहते हैं परन्तु जिसकार्यमें उत्साहहोय वह अवश्यही सिद्धहोताहै जो गुण दोष बिचारकर कार्यका आरम्भ करते हैं वे अवश्यही मनोबांछित फलपाते हैं इस प्रकार इन्द्र औ बृहस्पतिकासंवाददेख शचीने इन्द्रसेकहा कि आजचतुर्दशीहै इसलिये आप युद्धसे निवृत्तरहैं कल्ह मैं आपके रक्षाबांधूँगी जिससे अवश्यआपका जयहोगा इन्द्रनेभी यह शचीका बचन अंगीकार किया दूसरे दिन शचीने इन्द्रके हाथमें रक्षापोटली बांधी औ बड़ा उत्सव किया ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराय ऐरावतहाथीपरचढ़

इन्द्र युद्धकेलिये निकले औ दैत्यसेनामेंजाय अपनानाम सुनाय बाणोंसे शत्रुओं के शिरकाटनेलगे दैत्यभी सन्नद्ध हो युद्धकरनेलगे परन्तु रक्षाके प्रभावसे इन्द्रके आगे न ठहर सके कोई समुद्र में घुसे कोई पातालको गये कई वहांहीं मारेगये इसप्रकार दानवों को पराजयदे फिर इन्द्र ने राज्यपाया औ देवताओं सहित त्रैलोक्य का पालन करनेलगा दानवराज भी युद्ध में हार शुक्र के समीप गये औ उनसे कहा कि हे दैत्यगुरो बड़े आश्चर्य्य की बात है कि इन्द्र ने हमको जीतलिया इससे यह जाना कि दैवही बलवान् है बल पौरुष आदि सब वृथा हैं यह दानवेन्द्र का वाक्य सुन शुक्राचार्य्य ने कहा कि हे दैत्यराज इसमें आप विषाद न करें युद्ध में जय पराजय होतेही रहते हैं अब तुम इन्द्र के साथ सन्धि करलो शची की रक्षा के प्रभावसे इससमय इन्द्र को कोई नहीं जीतसक्ता एकवर्ष व्यतीतकरो पीछें सब कल्याणहोगा यहशुक्रका वचनसुन शोकत्यागकर सब दानव काल प्रतीक्षा करनेलगे यह हमने पुत्र आरोग्य धन सुख औ विजय को देनेहारा रक्षा का प्रभाव संक्षेपसे वर्णन कियाहै इतनी कथा सुन राजा युधिष्ठिर ने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र किस तिथिको औ किसविधिसे रक्षाबन्धन करनाचाहिये यहआप वर्णन करें आपकेमुखसे अतिविचित्र औ बहुतअर्थ करकेयुक्त कथा सुनते२हमको तृप्तिनहींहोती है यहराजाकावचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज श्रावणीपूर्णिमाको प्रभातउठ शौच दन्तधावनआदि कर श्रुतिस्मृतिविधान से स्नानकरै देवता औ पितरोंका तर्पणकरउपाकर्मविधान

से ऋषितर्पणकरै शूद्रहोय तो मन्त्ररहित स्नानदानआदि कर्मकरै पीछे मध्याह्नके अनन्तर कर्पासके अथवा अलसी केवस्त्रमें अक्षत श्वेतसर्षप औ सुवर्णकी रक्षापोटली बनाय अंगणमें गोबरका चौकालगाय उसकेबीच मण्डलरच मण्डलमें पीठरख पीठकेऊपर उत्तमपात्रमें पोटली स्थापन करै वहांही मन्त्री पुरोहितआदि सहित राजा बैठे वेश्या नृत्यकरैं अनेक प्रकारके बाजेबजैं फिर हवन औ शान्ति कर (येनबद्धोबलीराजादानवेन्द्रोमहाबलः । तेनत्वांप्रतिबध्नामिरक्षेमाचलमाचल) इस मन्त्रसे रक्षापोटलीको पुरोहित राजाके दक्षिण हाथमेंबांधे पीछे राजा वस्त्र भोजन औ दक्षिणा से ब्राह्मणों का पूजन करै यह रक्षाबन्धन चारों वर्णों को करना चाहिये इस विधिसे जो रक्षाबन्धन करावै वह वर्षभर सुखी रहता है औ पुत्र पौत्र धन आदि सबपदार्थ पाता है ॥

एकसौ छब्बीसका अध्याय ॥

महानवमी का बिधान ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज सबतिथियों में उत्तम महानवमीतिथिहै वर्षभरके सुखकेलिये भूतप्रेत पिशाचोंकी निवृत्तिके अर्थ सबप्रकारके मङ्गल मिलने के लिये औ भगवतीकी प्रसन्नताकेहेतु सब मनुष्यों को औ विशेषकरके राजाओंको महानवमीका उत्सवकरनाचाहिये इतना सुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र यह महानवमी कबसेप्रवृत्तभईहै यशोदाकेगर्भसे भगवतीउत्पन्नभई तबसेही इसकीप्रवृत्तिहै कि पहिलेसत्ययुगआदिमें भीथी औ इसतिथिको जोबहुतजीवमारेजातेहैं उनकीक्या

गतिहोतीहै औ मारनेवाला किसगतिको प्राप्तहोताहै यह सब आप वर्णनकरैं यह राजाका बचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज वह परमशक्ति सर्वव्यापिनी भावगम्या अनंता औ लोकविश्रुताहै कला काली सुषुम्णा सर्वमङ्गला माया कात्यायिनी दुर्गा चामुंडा शङ्करप्रिया देवी परमेश्वरी भवानी शिवाइत्यादिनामोंसे औ अनेक रूपोंसे सर्वत्र पूजनकरीजातीहै देव दानव राक्षस गंधर्व नाग यक्ष किन्नर नरआदि सब प्रति नवमी को उसका पूजन करते हैं औ सृष्टिके आरम्भसे उसका पूजनचला आयाहै आश्विनकेशुक्लपक्षमें अष्टमीको मूलनक्षत्रहोय उसदिन नवमी आजाय उसकानाम महानवमीहै कन्याके सूर्य्यमेंमूल नक्षत्र युक्त शुक्लाष्टमीको नवमीहोय वह महानवमी त्रैलोक्य में दुर्लभहै आश्विन शुक्लकी अष्टमी औ नवमीको जगन्माता श्रीभगवतीका पूजन करनेसे सबशत्रुओंको जीतताहै वह तिथि पुण्या पवित्रा धर्म औ सुखको देनेहारी है उसदिन मुण्डमालिनी चामुण्डा का अवश्य पूजन करना चाहिये उसदिनजो महिष मेष आदिजीव बलिदियेजाते हैं वे सब स्वर्गकोजातेहैं औ बलि देनेहारेको पापनहींहोता जैसी प्रसन्नता महिष मेष आदिकी बलिसे विंध्यवासिनी श्रीभगवती की होती है ऐसी पुष्प धूप दीप विलेपन नैवेद्य आदि से नहींहोती भवानी के आंगन में जो महिष आदि मारेजाते हैं वे स्वर्ग में जाय अप्सराओं के प्रिय वीरहोते हैं सब कल्प औ मन्वंतरोंमें इसनवमीके दिन सब देवता दैत्य आदि अनेक प्रकारके उपचार औ उपहारों करके भगवतीका पूजनकरतेहैं औ तीनोंलोकों में अवतार

ले २ कर मर्यादाका पालन भगवती करतीहै वही भगवती यशोदाके गर्भसे उत्पन्नहो कंसके मस्तक पर पांव रख आकाशको गई हमने उस भगवतीको विंध्याचलमें स्थापन कर फिर पूजाका प्रचार किया यह भगवती का उत्सव पहिलेसेही प्रसिद्धथा परन्तु सब जीवोंके उपकारके अर्थ औ सब उपद्रव शांतहोने के लिये हमने अपनी भगिनी भगवतीकी महिमा विशेषकरके प्रसिद्धकरी विंध्यवासिनी भगवतीके स्थानमें नवरात्र तीन रात्र एकरात्र उपवास अथवा नक्तव्रत कर अनेक प्रकारके उपयाचितों से भगवतीका आराधनकरै ग्राम २ में नगर २ में घर २ में औ बन २ में स्नानकर प्रसन्नहो भक्तिपूर्बक ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री आदि सब भगवतीका पूजनकरैं औ विशेष करके राजाओंको यह उत्सव करना चाहिये अब हम इस का बिधान कहते हैं जयकी इच्छावाला राजा प्रतिपदासे अष्टमीपर्यंत लोहाभिसारकर्मकरैपहिले पूर्वोत्तरप्रणवभूमि में नौ अथवा सात हाथ लम्बा चौड़ा पताकाओं से अलंकृत मण्डप बनाय तीन मेखला औ अश्वत्थपत्राकार योनिसे भूषित अग्निकोणमें अतिसुन्दर एकहाथका कुण्ड बनावै पीछे राज्यके अंग छत्र चामर आदि औ सब शस्त्र अस्त्र मण्डपमें लाकर अधिवासनकरै शुचि ब्राह्मण स्नान कर शुक्लवस्त्र पहिन सबका पूजनकरै पूर्वकालमें बड़ा बलवान् लोह नाम दानवहुआ उसको देवताओंने मारखंड २ कियापृथिवीमेंजितना लोहदेख पड़ताहै सब उसके अंगों से उत्पन्न हुआहै तबसेही यहलोहाभिसार कर्म राजाओं को बिजय प्राप्तहोनेके अर्थ ऋषियोंने प्रवृत्त कियाहै घृत

संयुक्त पायसका हवनकर हवनशेष हाथी औ घोड़ों को खिलाय सब को अलंकृतकर नगरमेंघुमावै राजाभी स्नान कर राजचिह्नों का नित्य पूजनकरै हाथी घोड़ोंके आगे वाद्य बजते चलैं अब हम पुराणोक्तपूजा मन्त्रकहतेहैं जिन करके पूजन करनेसे कीर्ति आयु यश औ बलकी प्राप्तिहो-तीहै (यथाम्बुदश्छादयातिशिवायेमांवसुंधराम्। तथाच्छादयराजानंविजयारोग्यवृद्धये) छत्रमन्त्रः (शशांककरसंकाशक्षीरडिंडीरपांडुर। प्रोत्सारयाशुदुरितंचामरामरदुर्लभ) चामरमन्त्रः (असिर्विशसनःखड्ग स्तीक्ष्णधारोदुरासदः। श्रीगर्भोविजयश्चैव धर्मधारस्तथैवच॥ इत्यष्टौतव नामानिस्वयमुक्तानिवेधसा। नक्षत्रंकृत्तिकान्तेतुगुरुर्देवोमहेश्वरः॥ हिरण्यचशरीरंतेधातादेवोजनार्दनः। पितामहो महादेवस्त्वांपालयतुसर्वदा) खड्गमन्त्रः (शर्मप्रदस्त्वं समरेधर्मकामयशोर्थदः। रथिनामर्थनीयोसि चर्मानघ नमोस्तुते) चर्ममन्त्रः (सर्वायुधमहामात्र सर्वदेवारिसूदन। चापमांसर्वदारक्षसार्कंशायकसत्तमैः) चापमन्त्रः(सर्वायुधानांप्रथमंनिर्मितासिपिनाकिना। शूलायुधाद्विनिष्कृष्य कृत्वामुष्टिग्रहंशुभम्॥ चंडिकायाः प्रदत्तासि सर्वदुष्टनिवर्हिणि। तयाविस्तारिताचासिदेवानांप्रतिपादिता॥ सर्वसत्वांगभूतासिसर्वासुरनिवर्हिणी। छुरिकेरक्षमांनित्यंशांतिंयच्छ नमोस्तुते) छुरिकामन्त्रः (हुतभुग्वसवोरुद्रा वायुःसोमो महर्षयः। नागकिन्नरगन्धर्व यक्षभूतगणाग्रहाः॥ प्रथमास्तुसहादित्यै र्भूतेशोमातृभिःसह। शक्रःसेनापतिःस्कन्दो वरुणश्चाश्रितस्त्वयि॥ प्रदहन्तुरिपून्सर्वान् राजाविजयमृच्छतु। यानिप्रयुक्तान्यरिभिरायुधानिसमंततः॥ पतन्तु

परिशत्रूणां हतानितवतेजसा। हिरण्यकशिपोर्युद्धे युद्धेदेवा सुरेतथा॥ कालनेमिबधेयुद्धे युद्धेत्रिपुरघातने। शोभितासि तथैवाद्य शोभयास्मांश्चसंस्मर ॥ नीलांश्वेतामिमांदृष्ट्वा नश्यंत्वाशुनृपारयः। व्याधिभिर्विविधैर्घोरैः शस्त्रैश्चयुधिनिर्जिताः॥ सद्यःस्वस्थाभवंतिस्म त्वद्घातेनायमार्जिताः। पूतनारेवतीनाम्ना कालरात्रीतिसास्मृता॥दहत्वाशुरिपून्सर्वान् पताकेत्वंमयार्चिता) पताकामंत्रः (प्रोत्सारणायदुष्टानांसाधुसंरक्षणायच। ब्रह्मणानिर्मितश्चासि व्यवहारप्रसिद्धये। यशोदेहिसुखंदेहि जयदोभवभूपते । ताडयस्वरिपून्सर्वान् हेमदण्डनमोस्तुते) कनकदण्डमन्त्रः (दुन्दुभेत्वंसपत्नानां घोरोहृदयकम्पनः । भवभूमिपसैन्यानांतथाविजयवर्द्धनः॥ यथाजीमूतघोषेण प्रहृष्यंतिचवार्हिणः। तथास्तुतवशब्देन हर्षोऽस्माकंमुदावहः ॥ यथाजीमूतशब्देन स्त्रीणांत्रासोभिजायते । तथैवतवशब्देन त्रस्यंत्वस्मद्द्विषोरणे) दुन्दुभिमन्त्रः (विजयोजयदोजेता रिपुहंताशुभंकरः । दुःखहाधर्मदःशान्तः सर्वारिष्टविनाशनः॥ एतेष्टौसन्निधौयस्मात्तवसिंहामहाबलाः। तेनासिंहासनेतित्वं वेदैर्मंत्रैश्चमीयसे॥ त्वयिस्थितःशिवःशान्तस्त्वयिशक्रःसुरेश्वरः। त्वयिस्थितोहरिर्देवस्त्वदर्थंतप्यतेतपः॥ नमस्तेसर्वतोभद्र भद्रदोभवभूपतेः। त्रैलोक्यजयसर्वस्व सिंहासननमोऽस्तुते) सिंहासनमन्त्रः (कुलाभिजनजात्याच लक्षणैर्व्यंजनोत्तमैः। भर्त्तारमभिरक्षत्वं शिवंतवभवेदिति ॥ कशाघातमधिष्ठानं क्षमस्वतुरगोत्तम । गन्धर्वकुलजातस्त्वं माभूयाःकुलदूषकः॥ ब्राह्मणःसत्यवाक्येन सोमस्यवरुणस्यच। प्रभावाच्चहुताशस्य वर्द्धस्वत्वंतुरंगम॥ तेजसाचैवसूर्यस्य मुनीनांतपसात

रा । रुद्रस्यब्रह्मचर्य्येण पवनस्यबलेनच ॥ स्मरत्वंराजपुत्रं
त्र कौस्तुभंचमणिंस्मर । सुरासुरैर्मथ्यमान क्षीरोदादमृता
देभिः॥जातउच्चैःश्रवाःपूर्वं तेनजातोसितत्स्मर। यागतिंत्र
ह्महागच्छेन्मातृहापितृहातथा ॥ भूमिहानृतवादीचक्षत्रिय
श्चपराङ्मुखः।सूर्याचन्द्रमसौवायुर्यावत्पश्यन्तिदुष्कृतम्॥
व्रजत्वंतांगतिंक्षिप्रं तच्चपापंभवेत्तव । विकृतिंयदिगच्छेथा
युद्धाध्वानितुरङ्गम । रिपुंविजित्यसमरे सहभर्त्रासुखीभव)
अश्वमन्त्रः (शक्रकेतोमहावीर्य सुपर्णस्त्वय्युपाश्रितः । पत
त्रिराड्वैनतेयो तथानारायणध्वजः ॥ काश्यपेयोरुणभ्राता
नागारिर्विष्णुवाहनः । अप्रमेयोदुराधर्षोरणेदेवारिसूदनः ॥
गरुत्मान्मारुतगति स्त्वयिसन्निहितोयतः । सासिचर्मायु
धान्योधान् रक्षत्वंचरिपून्दह) ध्वजमन्त्रः (कुमुदैरावणौ
पद्मः पुष्पदन्तोथवामनः । सुप्रतीकोञ्जनोनील एतेष्टौदेव
योनयः॥ तेषांपुत्राश्चपौत्राश्च वनान्येतेसमाश्रिताः। भद्रो
मन्दोमृगश्चैव गजःसंकीर्णएवच ॥ वनेवनेप्रसूतास्तेस्मर
योनिंमहागज । पांतुत्वांवसवोरुद्रा आदित्याःसमरुद्गणाः ।
भर्त्तारंरक्षनागेन्द्र समूहःप्रतिपाल्यताम्॥अवाप्नुहिजयंयुद्धे
गमनेस्वस्तितेव्रज । श्रीस्तेसोमाद्बलंविष्णोस्तेजःसूर्य्याज्ज
वोनिलात् ॥ स्थैर्य्यंमेरोर्जयंरुद्राद्यशोदेवात्पुरंदरात् । युद्धे
रक्षन्तुनागास्त्वांदिशश्चसहदैवतैः॥ अश्विनौसहगन्धर्वैःपां
तुत्वांसर्वतःसदा) हस्तिमन्त्रः इनमंत्रों से गन्ध पुष्पादि
करके सब राजचिह्न औ शस्त्रोंका पूजनकरै अष्टमीके दिन
पूर्वाह्नमें स्नानकर नियमग्रहणकरै औसुवर्ण चांदी मृत्तिका
पाषाण काष्ठआदि किसी वस्तुकी दुर्गामूर्त्ति बनाकर उत्तम
स्थानके बीच सिंहासनके ऊपर स्थापनकरै कुंकुम चन्दन

सिन्दूर आदिसे उसमूर्त्तिको चर्चितकर कुमुद कमलआ-
दि पुष्पचढ़ाय धूप दीप नैवेद्य मांस सुरा बलिआदि निवे-
दनकरै उससमय सब प्रकारके बाजेबजैं बन्दीजन स्तुति
पढ़ैं बहुतसे मनुष्य छत्र चामरआदि राजचिह्न लेकर चारों
ओर खड़ेहोयँ दीक्षायुक्त राजा पुरोहित सहित (जयन्ती
मंगलाकाली भद्रकालीकपालिनी। दुर्गाक्षमाशिवाधात्री
स्वाहास्वधानमोस्तुते ॥ अमृतोद्भवंश्रीवृक्षं महादेवप्रियंस
दा। विल्वपत्रंप्रयच्छामि पवित्रंतेम्बिकेमुदा) इसमन्त्रसे
विल्वपत्रयुक्त अर्घ्यदेवै औ भगवतीको उसदिन द्रोणपुष्प
भी चढ़ावै असुरोंके साथ युद्धकरनेसे जो क्षत भगवतीके
अंगमें भयेथे वे सब द्रोणपुष्पसे अच्छेहुये इसलिये द्रोण
पुष्प भगवतीको प्रियहै फिर शत्रुओंके बधकेलिये खड्ग
को प्रणामकर सुभिक्षराज्य औ अपना विजयमांगै औह
दयमें इसप्रकार भगवतीका ध्यानकरै बहुत भुजाओंकरके
युक्त महिषासुरका बध करनेहारी कुमारी स्वरूप सिंहपर
चढ़ी खड्गउठाये घण्टाध्वनि करती युद्धकेमध्यमें विराज-
मानहै पीछे जय२शब्दकर यहस्तुतिपढ़ै (सर्वमंगलमांग
ल्येशिवेसर्वार्थसाधिके। उमात्रियंबकेगौरिनारायाणिनमोस्तु
ते॥कुंकुमेनसमालब्धेचन्दनेनविलेपिते॥विल्वपत्रकृतापीडे
दुर्गेहंशरणंगतः) इसभांति अष्टमीको सब पूजाआदिकर
रात्रिको जागरणकरै नट वेश्या आदिका बड़ाउत्सवकरावै
इसप्रकार रात्रि व्यतीतकर प्रभात होतेही सौ पचास अ-
थवा पचीस महिष औ मेषकी बलिदेवै औ सुरा आसव
के कुंभोंसे परमेश्वरीका तर्पणकरै वह सब कापालिकों को
देवै औ दासी दास बन्धु औ भगवतीके भक्तोंको सबबांट

कर नवमीके अपराह्न समयमें रथकेबीच भगवती की प्रतिमा स्थापनकर सारेराज्यमें भ्रमणकरावै अपनी सेनासहित राजा साथ रहै दीपवृक्ष जलतेचलैं नंगे खड्ग औ धनुष्धारे बड़े २ वीरपुरुष रथकेओर पासचलैं शंख पटह आदि बाजे बजैं वेश्या चारणआदि नृत्यकरते चलैं औ एकवीर खड्गधारी उपवासकर मांस रक्त जल अन्न गंध पुष्प अक्षतआदिसहित बलिदिशा औ विदिशाओंमें (बलिंगृह्णंत्विमंदेवा आदित्यावसवस्तथा। मरुतश्चाश्विनौ रुद्राःसुपर्णाःपन्नगाग्रहाः। असुरायातुधानाश्चपिशाचोरगराक्षसाः। डाकिन्योयक्षवेतालाः योगिन्यःपूतनाःशिवः। जंभकाःसिद्धगन्धर्वा मालाविद्याधरानगाः। दिक्पालालोकपालाश्चयेचविघ्नविनायकाः। जगतांशांतिकर्तारोब्रह्माद्याश्चमहर्षयः। माविघ्नंमाचमेपापं मासंतुपरिपंथिनः। सौम्याभवंतुतृप्ताश्च भूतप्रेताःसुखावहाः) इसमन्त्रसे देवै इसविधिसे रथमें अथवा पालकी में भगवती की प्रतिमा स्थापनकर सबराज्यमें घुमावै औ सबविघ्न निवृत्तिकेलिये भूतशांति करै जिससे यात्रा निर्विघ्नहोय इस विधिसे जो राजा अथवा और पुरुष भगवतीकीयात्राकरैं वे सबपापोंसे छुटभगवतीलोकको जाते हैं औ कभी उनको शत्रुचौरग्रह विघ्नआदिका भयनहींहोता भगवतीकेभक्त सदा आरोग्य सुखीभोगी औ निर्भयहोतेहैं जोयहभगवतीके उत्सवकाविधानपढ़ै अथवा सुनै उसकेभीसबअमंगल निवृत्तहोजाते हैं महिषासुरके मस्तकपर चरणरक्खे सिंहपर चढ़ी नंगा खड्गहाथमें लिये सब भूषणोंसे भूषित श्रीदुर्गाका पूजन करनेहारे मनुष्य बड़े २ संकटोंसे भी उत्तीर्ण होजाते हैं॥

एकसौ सत्ताईसका अध्याय॥

इन्द्रध्वज का विधान॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज पूर्वकालमें देवासुर संग्रामके बीच इन्द्रके विजयके लिये ध्वजयष्टिबनाई औ उसको सब देवता सिद्धविद्याधर नागआदिकों ने मेरु पर्वतपर स्थापनकर सबउपचारोंसे उसकापूजनकियाअनेक प्रकारके भूषणछत्र घण्टा किंकिणीआदिसे उसको अलंकृत किया उसको देखतेही दैत्य त्रस्तहोगये औ देवताओंनेउनको पराजितकर स्वर्गका राज्यपाया औ दैत्यपातालकोगये उसदिनसे देवता उसइन्द्रध्वजयष्टिका पूजन औ उत्सवकरतेथे उसी अवसरमें राजा उपरिचरवसु स्वर्गमेंगया उसको प्रसन्नहो इन्द्रने वह ध्वजादिया औ कहा कि इसका तुम पूजनकरो जिससे तुम्हारे राज्यके सब दोष निवृत्तहोयँ और भी जो राजा प्रति बर्ष इसका पूजनकरेंगे उनके राज्य में क्षेम औ सुभिक्ष रहैगा किसीप्रकारका उपद्रव न होगा यह इन्द्रका बचनसुन इंद्रध्वजकोले राजा उपरिचरवसु अपने नगरमें आया औ प्रतिबर्ष इंद्रध्वजका बड़ा उत्सव करनेलगा अब हम इन्द्रध्वजके उत्सवका बिधानकहते हैं बीसहाथ लम्बी दृढ़ औ उत्तम काष्ठकी यष्टि बनावै औ उसको विचित्रवस्त्रोंसे वेष्टितकर पीठोंके ऊपर स्थापनकरै पहिला पीठ श्वेतवर्ण कर्णिकायुक्त चतुरस्र इन्द्र यम वरुण औ कुबेर करके युक्तबनावै दूसरा रक्तचूर्ण करके वृत्तयुक्त षडस्र तीसरा श्वेतवर्ण अष्टास्र चौथा अति अरुण वर्ण वृत्त पांचवां शुक्लवर्ण अष्टकोण छठा कृष्णवर्ण बुद्बुद शोभितवृत्त सातवां शुक्लवर्ण अष्टकोण बिद्याधरों करके युक्त

आठवां पीतवर्ण वृत्तवेष्टित चतुरस्र नवां लम्बा रक्तवर्ण औ नवग्रहों युक्त दशवां शुक्लवर्ण औ गणेश चन्द्रिका ब्रह्मा विष्णु औ शिव सहित ग्यारहवां कृष्णवर्ण वृत्त यमराजयुक्त बारहवां छत्राकार शुक्लवर्ण तेरहवां पीठ ध्वजा के तुल्य दीर्घ कुशा पुष्पमाला घंटा चामर आदि सहित बनाय उनके ऊपर ध्वजको स्थापनकरै पीछे हवनकराय गुड़के अपूप औ पायस ब्राह्मणोंको भोजन कराय दक्षिणा दे धीरे २ उस ध्वजको खड़ाकरै औ नौदिन अथवा सात दिन राजा बड़ा उत्सवकरावै अनेकप्रकारके नाच तमाशे होयँ मल्लयुद्ध औ कुक्कुट मेष आदि जीवोंका युद्धकरावै औ वस्त्र भूषण आदि देकर सबका सम्मानकरै रात्रिको जागरणकरै ध्वजकी भलीभांति रक्षाकरै जो ध्वजपर काक बैठजाय तो दुर्भिक्षहोय उलूकबैठे तो राजा का मरणहोय और ध्वजके ऊपर कपोत बैठे तो दुर्भिक्ष पड़ै इस प्रकार इन्द्रध्वजका बड़ा उत्सवकरै जो एकवर्ष करके दूसरे वर्ष न करसके तो फिर बारहवें वर्षकरै ध्वजके अंगभंगहोनेसे बड़ा उपद्रव होताहै इसलिये सावधानहो उसकी रक्षाकरै इन्द्रध्वजका उत्थानकर भक्तिसे उसकापूजनकरैजो प्रमाद से ध्वज गिरपड़ै अथवा टूटजाय तो सोने अथवा चांदी का ध्वज बनाय उसका उत्थापन औ अर्चनकर शांतिक पौष्टिक आदि कराय वह ध्वज ब्राह्मणकोदेवै फालसा ककड़ी नालिकेर कैथ बीजपूर नारंगी आदि फल औ अनेकप्रकारके नैवेद्योंसे इन्द्रध्वजकापूजनकर (वज्रहस्तसुरारिघ्न देवराजपुरन्दर। क्षेमार्थंसर्वलोकस्यपूजेयम्प्रतिगृह्यताम्)यहमन्त्रपढ़ै औ श्रवणसे भरणीपर्यंत पूजनकररात्रिके

समय (सार्द्धंसुरासुरगणैः पुरन्दर शतक्रतो। उपहारंगृहीत्वेमं महेन्द्रध्वजगम्यताम्) इसमन्त्रसे बिसर्जनकरै इस बिधिसे जो राजा इन्द्रध्वजकीयात्राकरै उसकेराज्यमें यथेष्ट वृष्टिहोतीहै मृत्यु औ ईतियोंकाभयनहींहोता औ वह राजा शत्रुओंको जीत चिरकाल राज्यभोग स्वर्गमें जाताहै औ उसके देशमें कभी परचक्र भय नहीं होता॥

एकसौअट्ठाईसका अध्याय॥

दीपमाला की कथा औ विधान॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकालमें बिष्णु भगवान्‌ने वामनरूपधार बलिकोछला औ इन्द्रको राज्य दिलाय बलिको पातालमें स्थापन किया औ एक दिन उसके राज्यका नियतकिया कार्तिक की अमावास्या को दैत्य यथेष्ट चेष्टा करते हैं औ महीतलमें उनका राज्य होता है राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र कौमुदी तिथि का बिधान बिशेष करके आप वर्णन करैं कि उस दिन दान क्योंदेते हैं किस देवता का पूजन करते हैं औ क्या क्रीड़ाकरते हैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज कार्त्तिक कृष्णचतुर्दशीको प्रभात के समय नरक का भय निवृत्त होनेके लिये अवश्यही स्नानकरना चाहिये अपा मार्ग्ग के पत्र शिरके ऊपर भ्रामणकर धर्मराजके नामोंसे तर्पणकरै यम धर्मराज मृत्यु औ अन्तकका तर्पणकर देवताओंका पूजनकर नरक को दीपदेवै औ प्रदोषके समय शिव विष्णु ब्रह्मा आदिके मन्दिरों में कोष्ठागार चैत्य सभा नदी तट तडाग उद्यान बापी रथ्या बगीचे हस्तिशाला अश्वशालाआदि स्थानोंमें

औ चामुण्डा बुद्धभैरव आदि देवताओंकेआलयोंमें दीपक प्रज्वलितकरै अमावास्याके दिन प्रभात समय स्नानकर देवता औ पितरोंका पूजन तर्पण आदिकर पार्वण श्राद्ध करै औ दही दुग्ध घृत औ अनेकप्रकारके पक्वान्न ब्राह्मणोंको भोजनकराय दक्षिणा देवै पीछे मध्याह्न के अनन्तर राजा अपने नगरमें यह घोषणा करादेवै कि आज लोक में बलिका राज्यहै सब यथेष्ट चेष्टाकरो नगरकेलोक कली से अपने घरोंको शुभ्रकर वृक्ष पुष्प औ बन्दनमाला आदिसे औ नानाप्रकारके खिलौनोंसे भूषितकरैं नगरके सब नरनारी उत्तम२वस्त्रभूषणपहिने कुंकुमकालेपनकरैंताम्बूल चर्वणकरैं द्यूतक्रीड़ा औपानकरैं परस्परप्रेमसे तालीदेकर हँसै नृत्यगीत आदि बड़ा उत्सवहोय प्रदोषके समय बड़ी दीपमाला प्रज्वलितकरैं अनेकप्रकारके दीप वृक्ष खड़ेकिये जावें उस समय योजना नाम राक्षसी लोकमें बिचरती है उसकाभय निवृत्त होनेकेलिये नीराजनकरैं इसप्रकारअति शोभित नगरकी शोभा देखनेकेलिये आधीरात्रिके समय अपनेमित्र औ मन्त्रीआदिसहित राजानिकलै औनगरकी औ बाजारकीशोभा देखता२धीरे२पैरोंसेही फिरै सारेनगर की रमणीयतादेख औ अपने ऊपरबलिराजाकोसंतुष्टहुये मान अपने महलमें आवै उसी समय सब स्त्री अपने २ घरसे मरु डिंडिम आदि बाजेबजाकर प्रसन्नहो अलक्ष्मी को निकालें सारीरात्रिलोक उत्सवमें जगतेरहैं वेश्याआदि मार्गोंमें घूमैं ब्राह्मण आशीर्वाद देवैं औ बड़ाभारी उत्सव नगर भर में सम्पूर्ण रात्रि रहै प्रभात होतेही वस्त्र भूषण आदिसे ब्राह्मणोंको सन्तुष्टकर औरोंको भोजन पानआदि

दिलाय मीठे वचनों से पण्डितों का सत्कारकर सामन्त आदिकोंको ताम्बूल सिपाहियोंको कण्ठभूषण औ कङ्कण औ अपने समीपवर्ती सेवकों को अपने नामांकित भूषण देकर सन्तुष्टकरै औ मंचकेऊपरबैठमहिषवृषहाथी मल्ल आदिका युद्ध औ नटनर्त्तक चारण आदिके तमाशे राजा देखै गौ महिषी आदि को भूषित करैं मध्याह्न के अनन्तर नगरसे पूर्वदिशामें ऊँचे स्तम्भ अथवा वृक्षोंपर कुश औ काशकी बनी मार्ग्गपाली बांधै फिर हवन कराय अपनी प्रजाके हजार दोहजार मनुष्योंको भोजनकरावै उससमय राजाका नीराजनकरैं पीछे गौ वृष हाथी घोड़े राजा राजपुत्र ब्राह्मण शूद्र आदि सब उसमार्गपाली का उल्लंघन करैं इस मार्गपालीको बँधवानेवाला अपने दोनोंकुलों का उद्धार करताहै औ इसको लंघन करनेवाले बर्षभर सुखी रहते हैं फिर भूमिपर पंचरंग से मण्डल लिख उसके बीच प्रसन्नमुख द्विभुज किरीट कुण्डलधारे कूष्माण्ड बाण जंभ मुरआदि दैत्योंकरके वेष्टित औ अपनीरानी विन्ध्यावली सहित राजाबलिकी मूर्त्तिस्थापनकर उसका पूजनकरै पहिले अर्घ्य देकर कमल कुमुद गन्ध धूप अक्षत गुड़के अपूप मद्य मांस लेह्य दीप बलि आदिसे पूजनकर (बलिराजनमस्तुभ्यं विरोचनसुतप्रभो। भाविष्येन्द्रसुराराते पूजेयम्प्रतिगृह्यताम्) यह मन्त्रपढ़ै इसप्रकार पूजन कर रात्रि को जागरण औ नट नर्तक आदि का तमाशा करावै औरभी नगरके लोग अपने २ घर शय्यामें श्वेततण्डुलोंकरके बलिका स्थापनकर फल पुष्पआदिसे पूजन करैं इसदिन बलिराजाके निमित्त जो कुछ दान देवै वह

अक्षयहोताहै औ विष्णुभगवान्‌की प्रीतिहोतीहै यहतिथि विष्णुभगवान् ने प्रसन्नहो बलिको दीहै उसी दिनसे यह कौमुदीका उत्सव प्रवृत्तहुआहै यहतिथि सब उपद्रवविघ्न शोकआदि हरनेहारी है औ धन पुष्टि सुखआदि देती है कुनाम भूमिकाहै औ मुद हर्षको कहते हैं भूमिपर सबको हर्षदेनेसे इसका नाम कौमुदी हुआ जो राजा वर्ष भर में एकदिन बलिराजाका उत्सवकरै उसकेराज्य में रोग शत्रु मारी औ दुर्भिक्षका भयनहीं होता सुभिक्ष क्षेम आरोग्य औ सम्पत्तिकी वृद्धिहोतीहै इस कौमुदीतिथिको जो जिस भावमेंरहै वहवर्ष उसको उसीभावमें बीतताहै रोवै तो रोदन करतारहै भोगसेभोग हर्षसेहर्ष स्वस्थतासे स्वस्थता औ इसदिन दीनरहनेसे वर्षभर दीनतारहती है इसलिये इसतिथिको हृष्ट औ तुष्ट रहनाचाहिये यहतिथि वैष्णवी है औ दानवीभी है दीपमालाकेदिन जो पुरुषभक्तिसे राजा बलिका पूजनकरैं उनको वहवर्ष आनन्दसे व्यतीत होता है औ सब मनोरथ उनके सिद्ध होते हैं॥

एकसौउनतीसका अध्याय॥

ग्रहयज्ञ, अयुतहोम औ लक्ष होम का विधान॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं हे श्रीकृष्णचन्द्र आप सर्वज्ञहैं इसलिये सर्बकार्य सिद्ध होनेकेअर्थ शान्तिक औ पौष्टिक बिधान कहैं यह राजा का बचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज धन आयुष् पुष्टि औ शांति की इच्छाहोय तो ग्रह यज्ञ करना चाहिये अब हम सब पुराणोंका सार ग्रह शांतिका बिधान संक्षेपसे कहते हैं उत्तम दिनमें ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन आदि कराय ग्रह औ ग्रहों

के अधिदेवताओंको स्थापनकर होमका आरम्भकरै ग्रह यज्ञमें तीन प्रकारका होम होताहै अयुत होम लक्ष होम औ सबकामना सिद्धकरनेहारा कोटि होम। अब हम अयुतहोम युक्त नवग्रहयज्ञका बिधान कहते हैं। प्रथम ईशान कोणमें उत्तमबेदी बनाय उसमें बत्तीस देवताओंका स्थापनकरै सूर्य्य,चन्द्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र,शनि,राहु, औ केतु ये नवग्रहहैं मध्यमें सूर्य्य दक्षिणमें भौम उत्तरमें गुरु ईशानमें बुध पूर्वमें शुक्र अग्नेयमें सोम पश्चिममें शनि नैर्ऋत्यमें राहु औ वायव्यकोणमें केतुका शुक्ल तंडुलोंकरके स्थापन करे शिव पार्वती स्कंद हरि ब्रह्मा इन्द्र यम काल ये ग्रहोंके अधिदेवताहैं शहद घृत दही अथवा पायस करके अष्टोतरशत अथवा अट्ठाईस २ आहुति प्रत्येक देवताके नामसे देवै एक २ प्रादेश लम्बी सीधी औ अव्रणसमिधा सबकर्मोंमें उत्तमहोती हैं अपने २ मन्त्रसे समिधा होमकरै आकृष्णेन०इमंदेवा० अग्निर्मूर्द्धा०उद्बुध्यस्व० बृहस्पते० अन्नात्० शन्नोदेवी० कयानः० केतुंकृण्वन्न० इत्यादि नवग्रहों के मन्त्रहैं प्रजापति सर्प ब्रह्मा विनायक बायु आकाश सावित्री लक्ष्मी उमा ये ग्रहोंके प्रत्यधि देवताहैं इन सबका औ अश्वनीकुमारोंका आवाहनकर पूजनकरै सूर्य्य भौमका रक्तवर्ण सोम शुक्रकाश्वेत बुध गुरुका पिंगल शनि राहुका कृष्ण औ केतुका धूम्रवर्ण ध्यान करै इसी रंगके वस्त्र औ पुष्प ग्रहोंको अर्पण करै गन्ध बलि औ गुग्गुलका धूप सबको निवेदनकरै गुडोदन घृत पायस संयाव घृत क्षीर दहीभात घृतोदन कृसर मांस औ चित्रोदन क्रम करके सब ग्रहों को नैवेद्य लगावै ईशान

कोणमें दही अक्षत पंचपल्लव पंचरत्न औ दो वस्त्रोंकरके भूषित अव्रण कुम्भ स्थापन कर उसमें गंगा आदि नदी समुद्र औ सरोवरों युक्त वरुणका आवाहनकरै गज अश्व रथ वल्मीक संगम ह्रद गोकुल इन स्थानों की मृत्तिका सर्वौषधि और भी सब सामग्री वहां स्थापन करै (सर्वेस मुद्राःसरितःसरःप्रस्रवणानिच। आयान्तुयजमानस्य दुरि तक्षयकारकाः) इसमन्त्रसे कलशमें आवाहन करै इसप्रकार आवाहनकर घृत यव तिल औ धानोंकरके हवनका आरम्भकरै अर्क पलाश खदिर अपामार्ग पिप्पल उदुम्बर शमी दूर्वा औ कुश ये ग्रहोंकी समिधा हैं इनसे ग्रह ग्रहदेवता औ ग्रहोंके प्रत्यधि देवताओंके मंत्रोंकरके हवन करै हवनकेअन्तमें अनेकप्रकारके वाद्योंकेशब्द औ मंगल गीतोंसहित नये कुम्भोंकरके यजमानको स्नानकरावै औ (स्कन्दोगणेशोगिरिजा रमावाणीशचीतथा। सुरास्त्वाम भिषिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः॥ वासुदेवोजगन्नाथ स्तथा संकर्षणोविभुः। प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तुविजयायते॥ आखण्डलोग्निर्भयदस्तथापुण्यजनेश्वरः। वरुणःपवनश्चै वधनदश्चतथाशिवः॥ देवदानवगन्धर्वायक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयोमनवोदेवाः सिद्धाविद्याधरास्तथा॥ देवपत्न्योध्रुवो नागादैत्याश्चाप्सरसांगणाः। अस्त्राणिसर्वशस्त्राणि राजा नोवाहनानिच॥ अष्टधायानिरत्नानिकालश्चऋतवस्तथा। सरितःसागराःशैलास्तीर्थानिजलदानदाः॥ एतेत्वामभि षिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये) इन मन्त्रों से स्नानकर शुक्ल वस्त्र गन्धमाला आदिसे अलंकृतहो पत्नी सहित आसन परबैठ ग्रहोंकापूजनकर कपिलागौ शंख अरुण वृष सुवर्ण

पीत वस्त्र श्वेतअश्व कृष्णागौ लोह औ अज ये नवग्रहों को दक्षिणा चढ़ावै औ क्रमसे ये मन्त्रपढ़ै (कपिलेसर्वदेवानांपूजनीयाशिरोहिणि। तीर्थदेवमयीयास्मादतःशान्तिम्प्रयच्छमे॥ शंखत्वंनिजशब्देन दैत्यविद्रावणस्सदा। विष्णोप्रियोसित्वमतः सदाशान्तिम्प्रयच्छमे॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानन्दकारकः। अष्टमूर्त्तेरधिष्ठानमतःशान्तिम्प्रयच्छमे॥ हिरण्यगर्भस्त्वमसि तथावीजंविभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिम्प्रयच्छमे॥ पीतवस्त्रयुगंयस्माद्वासुदेवस्यवल्लभम्। प्रसादात्तस्यविष्णो स्तदतःशान्तिम्प्रयच्छतु॥ कपिलासोमयुक्तस्त्वं यस्मादमृतसम्भवः। चन्द्रार्कवाहनोनित्यमतःशान्तिम्प्रयच्छमे॥ यस्मात्त्वंपृथिवीरूपा धेनोवैकृष्णसंज्ञिता। सर्वपापहरानित्य मतःशान्तिम्प्रयच्छमे॥ यस्मादायसकर्माणि तवायत्तानिसर्वदा। लांगलान्यायुधादीनि तस्माच्छान्तिम्प्रयच्छमे॥ यस्मात्त्वंछागयज्ञाना मङ्गत्वेनव्यवस्थितः। योनिर्विभावसोर्नित्यमतःशान्तिम्प्रयच्छमे) ये मन्त्रपढ़ै पीछे हाथ जोड़कर (गवामंगेषुतिष्ठंति भुवनानिचतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहिलोकेपरत्रच॥ यथानशून्यंशयनंकेशवस्याशिवस्यच। शय्याममाप्यशून्यास्तुतथाजन्मनिजन्मनि॥ यथारत्नेषुसर्वेषुसर्वेदेवाव्यवस्थिताः॥ तथाशान्तिम्प्रयच्छन्तुरत्नदानेनमेसुराः। यथाभूमिप्रदानस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम्॥ दानान्यन्यानिमेशान्तिन्तथाभूमिःप्रयच्छतु) येमन्त्रपढ़ गन्ध पुष्पमाला धूप दीप नैवेद्य वस्त्र सुवर्ण रत्न आदि करके भक्ति पूर्वक ग्रहोंका पूजनकरै इसमें कभी वित्तशाठ्य न करै अब हम नवग्रहोंके ध्यान कहते हैं (पद्मासनःपद्मकरः पद्मगर्भसम

द्युतिः । सप्ताश्वरथयुक्तश्च द्विभुजःस्यात्सदारविः ॥ श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वःश्वेतभूषणः । गदापाणिर्द्विबाहुश्च वंद्यःस्यात्सदाशशी॥रक्तमाल्यांवरधरोरक्तःशक्तिगदाधरः। चतुर्भुजोमेषगमो वरदस्याद्धरासुतः ॥ पीतमाल्यांवरधरःक र्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदापाणिःसिंहस्थोवरदोबुधः॥ पीताम्बरःपीतवपुः कुंजरस्थश्चतुर्भुजः। कमण्डलुधरोदण्डी वरदःस्यात्सदागुरुः ॥ श्वेताम्बरःश्वेतवपुस्तुरगस्थश्चतुर्भु जः। अक्षस्रक्कुण्डिकाधारी वरदःस्यात्सदाभृगुः॥इन्द्रनील द्युतिःशूली वरदोगृध्रवाहनः। वाणवाणासनधरोधातव्योर्क सुतःसदा ॥सदाशार्दूलवदनःखड्गीशूलीवरप्रदः। नीलसिं हासनस्थश्चराहुर्ध्येयः सदाबुधैः॥धूम्रादिवाहनाःसर्वेगदिनो विकृताननाः । गृध्रासनगतानित्यंकेतवः स्युर्वरप्रदाः) यह ग्रहोंकास्वरूपहै इसके अनुसार ध्यानकरै और ऐसीहीमूर्ति बनाकर उनका पूजनकरे हवनकेलिये कुंडउत्तमलक्षणोंकर के युक्त औ यथार्थ बनानाचाहिये मानहीन कुंड अनर्थकर-नेहारा होताहै अयुत होमसे दशगुण आहुति औ दक्षिणा लक्षहोममें होती है तीन मेखला औ योनि करके भूषित चतुरस्र कुण्ड लक्षहोमके लिये ईशानकोणमें बनावै औ देवता स्थापनकेलिये तीनवप्रोंकरके वेष्टित स्थंडिल बनावै उसके ऊपर तण्डुलों करके पूर्वोक्त रीतिसे आदित्याभि-मुख सब देवता स्थापनकरै कुंभ स्थापन औ हवन पूर्ववत् करै अग्निमें वसुधाराका पातनकरै औ आग्नेय वैष्णव रौद्र महा वैश्वानर आदिसूक्तसाम औ ज्येष्ठसामकापाठ करावै यजमानको स्नान पूर्ववत् करावै वेही मन्त्रपढ़ै यजमान भी काम क्रोध त्याग शांतचित्तहो ऋत्विजों को दक्षिणा देवै

नवग्रह यज्ञके अयुत होम करनेके लिये वेदवेत्ताचार ब्राह्मणों का अथवा दोका वरण करै लक्षहोममें दश अथवा आठ ऋत्विक् हवन करनेकेलिये नियतकरने चाहिये अयुत होमसे लक्ष होममें दक्षिणा आदि सब दशगुण होनी चाहिये सब ऋत्विजोंको भूषण शय्या वस्त्र कटक कुण्डल आदि वित्तानुसारदेवे वित्तशाठ्य न करै जो समर्थ होकर न देवै उसका कुलक्षयहोताहै अन्नदान भी यथा शक्तिकरै अन्नहीन यज्ञ दुर्भिक्षकरने हारा होताहै अल्पधन मनुष्य कभी लक्ष होम न करै क्योंकि धनके संकोचसे विपरीत फल होताहै एकही ब्राह्मण का भली भांति पूजनकर अयुतहोम करावै अथवा दो चार ब्राह्मणों का वरण करै जो घरमें धन होय तो लक्षहोमकरै लक्षहोम करनेहारे पुरुष के सब मनोरथ सिद्ध होते हैं औ आठसौ कल्पपर्यंत देवताओं करके पूजित वह पुरुष शिवलोकमें निवासकरताहै जिसकार्यके उद्देशसे लक्षहोम करै वही कार्य सिद्धहोताहै पुत्रार्थी पुत्र धनार्थी धन भार्यार्थी उत्तमभार्या औ राज्यार्थी पुरुषलक्षहोम करनेसे राज्यपाताहै औ जो निष्काम होकर लक्ष हवन करै तो मुक्ति पावै जो राजा विधिपूर्वक ब्राह्मणोंसे नवग्रहशांति करावै वह ऐश्वर्य्य संतान औ विजय पाताहै औ उसके राज्यमें दुर्भिक्ष मारी परचक्र आदि कोई उपद्रव नहीं होते॥

एकसौतीसका अध्याय॥

कोटि होमका विधान॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकाल में प्रतिष्ठाननगरके बीच बड़ाप्रतापी शस्त्रास्त्रमेंनिपुण ब्रह्मण्य

पितृभक्त देव ब्राह्मण पूजक राजासंवरण नाम हुआ एक समयब्रह्माजीके पुत्रसनकऋषि राजा संवरणके पास आये राजाने उनको आसनपर बैठाय प्रणाम किया औ पाद्य अर्घ्य आदिदेकर सब राज्य औ आत्मा उनके आगे निवेदन किया मुनिनेभी राजाका सत्कार अंगीकार किया पीछे अनेकप्रकरके प्राचीन राजाओंके चरित औ इतिहास पुराण आदि की मनोहर कथा कहतेसुनतेरहे इसी अवसर में जगत्के औ अपने हितके लिये बड़े बिनय से राजासंवरणने सनकऋषिसे प्रार्थनाकरी कि हे देवर्षेभूकंप पांशुवृष्टि ग्रहयुद्ध अनावृष्टि राज्योपद्रव आदि उत्पातों की शान्तिके लिये कोई उपाय धन आरोग्य औ स्वर्ग देनेहारा आपवर्णनकरैं । यह राजाकी प्रार्थना सुन सनक मुनिबोले कि हे राजन् सब कार्य सिद्ध करनेहारा औ शांतिप्रद कोटिहोमका बिधान हम बर्णन करते हैं जिसके करतेही ब्रह्महत्यादि पातक निवृत्तहोते हैं सब उत्पात शांतहोजातेहैं औ बड़ा सुख उत्पन्न होताहै प्रथम उत्तम मुहूर्त देख देवालयमें नदी के तटपर अथवा बनमें कोटि होमकरावै पहिले वेदवेत्ता ब्राह्मणका वरणकर गन्ध पुष्प माला वस्त्र भूषण आदिसे उसका पूजनकर (त्वंनोमातिः पितामाता त्वंगतिस्त्वंपरायणम् । त्वत्प्रसादेनविप्रर्षे सर्वं मेस्यान्मनोगतम् ॥ आपद्विमोक्षायचमे कुरुयज्ञमनुत्तमम् । कोटिहोमाख्यमतुलं शान्त्यर्थंसर्वकामिकम्) यहमन्त्रपढ़ प्रार्थनाकरै आचार्यभी शुक्लवस्त्र आदिसे शोभितहोउत्तम ब्राह्मणोंसहित पुण्याह वाचनकर समभूमिमें मण्डपबनावै सौहाथ विस्तार का मण्डप उत्तम पचास हाथका मध्यम

औ पचीसहाथका लम्बा चौड़ा निकृष्ट होताहै शक्ति औ समयके अनुसार मण्डपबनाय उसके मध्यमें चारहाथलम्बा और चारहाथहीचौड़ा तीनमेखलाओं करकेयुक्त औ द्वादशांगुल विस्तृत योनि करके भूषित चतुरस्र कुण्ड बनावै कुण्डके पूर्वभागमें चारहाथ लम्बी चौड़ी औ एक हाथ ऊँची वेदीबनावै वही सब देवता स्थापन करने का स्थान है मण्डपकी चारों दिशाओं में भूमिकोलेपन कर उसमें पंचपल्लवों करके शोभित जलपूर्ण चारकलश स्थापनकरै मंडपकेऊपर बितान औ सबदिशाओंमें तोरणस्थापनकरै इसभांति सब संभार एकत्रकर पुण्याहवाचन औ जयशब्द पूर्वक उत्तमदिनसे पुरोहित होमका आरम्भकरै पूर्वमेंब्रह्मा मध्यमेंविष्णु पश्चिममेंरुद्र उत्तरमेंबसु ईशानमें ग्रह अग्निकोणमेंमरुत औ बाकी दिशाओंमें लोकपालों कास्थापनकर गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्यादिसे वैदिक औ पौराणिकमन्त्रोंसे उनका अलग २ पूजनकर (आदित्यावसवोरुद्रामरुतोलोकपास्तथा। ब्रह्माजनार्दनश्चैव शूलपाणि र्भगाक्षिहा॥सत्रेसन्निहिताःसर्वे भवन्तुमखभागिनः। पूजां गृह्णन्तुसर्वत्रमयाभक्त्योपपादिताम्॥ कुर्वंतुचशुभंसर्वे यज्ञ कर्तुःसमाहिताः) इनमंत्रोंसेप्रार्थनाकरै पीछे वेदपाठीब्राह्मणोंसहित कुंडकासंस्कारकर उसमें अग्निप्रज्वलितकर घृतार्चिष् उसअग्निका नामरक्खै विद्यावृद्ध वयोवृद्ध गृहस्थ जितेन्द्रिय स्वकर्मनिष्ठ शुद्ध औ ज्ञान शील सौ ब्राह्मणोंको हवनकेलिये नियुक्तकरै अथवा जितनेब्राह्मण उत्तममिलैं उनकाहीवरणकरै अग्निको पंचमुखध्यानकरै जिसमें चार मुख तो सात सात जिह्वाओं करके युक्त औ पांचवां सर्व

कामदमुख एक जिह्वायुक्त ध्यावै प्रज्वलित अग्निमें हवन करै धूमायमान अग्निमें वृथाहोम न करै ऋग्वेदीब्राह्मण पूर्वाभिमुख यजुर्वेदी उत्तराभिमुख सामवेदी पश्चिमाभिमुख औ अथर्वणवेदी ब्राह्मण दक्षिणाभिमुख बैठकर हवनकरै प्रथम ब्रह्माका स्थापन कर इस कर्मका आरम्भकरै प्रणवादि स्वाहांत व्याहृतियों से यह होमकरना चाहिये घृत कृष्णतिल औ थोड़ेसे यवमिलाकर होमकरै पलाशकीसमिधाओंसेकोटिहोमकरै औ हजारआहुतिपूरीहोनेपरपूर्णाहुति देताजाय इसविधिसे कोटिहवनकरै परन्तु सबब्राह्मण औयजमान काम क्रोधआदि दोषोंसेबचैं इतनासुन राजा संवरण ने कहा कि महाराज यह कोटिहोम बहुत काल में होताहै इतनेदिन संयमसे रहना अतिकठिन है इसलिये कोई संक्षेप उपाय कोटिहोमका कथनकरैं जिससे थोड़े से समय में निर्विघ्न यह यज्ञ होजाय यह राजाका वचनसुन सनक मुनि कहनेलगे कि हे राजन् कोटिहोम चारप्रकार काहै शतानन दशानन द्विमुख औ चौथा एकमुख समयानुसार इनचारोंमेंसे जौनसा बनपड़ै वही करना उत्तम सौ कुण्डबनाकर एक २ कुण्डपर दश २ ब्राह्मणों को हवनके लिये नियतकरै एक कुण्डमें अग्नि का संस्कार कर उसी अग्निको सब कुण्डोंमें प्रज्वलितकरै इसविधि करनेसे वह एकही कोटिहोम होताहै यह शतमुखहोम कार्य गौरवसे औ समयके संकोचसे कहाहै यह थोड़े दिनों में होजाता है जो अधिक अवसर होय तो दशकुण्ड बनाकर प्रत्येक कुंडपर बीस २ ब्राह्मण हवनके लिये नियुक्तकरै यह दश मुख हवनहै जो महीने दो महीने का अवसर होय तो दो

कुण्ड बनाकर पचास २ ब्राह्मण एक २ कुण्ड पर हवनके लिये नियुक्तकरै यह द्विमुखहोमहै और जो कालका संकोच नहोय तो एक कुण्डमें अग्नि स्थापनकर उत्तम कुलोत्पन्न सदाचार औ वेदवेत्ता ब्राह्मणोंसे हवनकरावै इसमें ब्राह्मणों की संख्याका नियम नहीं है औ कालका भी नियम नहीं यह एक मुख होम स्वस्थ यज्ञ कहाता है परन्तु यह बहु काल साध्यहै औ बीचमें अनेकप्रकारके विघ्नहोते हैं धन औ शरीरकी स्थिरताका कुछ भरोसा नहीं इसलिये संक्षेप सेही यह यज्ञकरना चाहिये इसविधि यज्ञ समाप्तकर बड़ा उत्सव करावै सब ऋत्विजोंको कटक कुण्डल वस्त्र दक्षिणा देवै सौ गौ सौ घोड़े औ हज़ार मोहर ब्राह्मणोंको देवै हाथी औ घोड़ोंका पूजनकरै दीन अन्ध कृपण आदिको भोजन देकै अन्तमें अवभृथ स्नान करै औ लक्ष होमोक्त मंत्रोंसे ब्राह्मण यजमानका अभिषेककरैं इसविधिसे जो राजाकोटि होमकरै वह आरोग्य पुत्र राज्य वृद्धि औ ऐश्वर्य पाता है कभी उसको ग्रहपीड़ा नहीं होती उसके राज्यमें अनावृष्टि उत्पात मारी दुर्भिक्ष आदि कभी नहीं होते सब उपसर्ग पाप औ ग्रहपीड़ाका शमन करनेहारा यह हवनहै इसको करनेहारे स्वर्गको जाते हैं॥

एकसौ इकतीसका अध्याय॥

महाशान्तिका विधान॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज राजाओं के हितके लिये सब उपद्रव शान्त करनेहारा महादेवजी का कहा महाशान्ति विधान हम वर्णन करते हैं राज्याभिषेक के समयमें राजाके यात्राकालमें दुःस्वप्नमें दुर्निमित्तमें ग्रह

पीड़ामें उल्कापात निर्घात भूकम्प केतुका उदय छत्र ध्वज आदिका अपने स्थान से गिरना अथवा टूटना घरमें काक कपोत उलूक आदिका प्रवेशहोना ग्रह युद्ध जन्मराशिसे अनिष्टस्थानमें ग्रहोंकीस्थिति सूर्य्यमण्डलमें तामस कील-कोंका देखपड़ना वस्त्र शस्त्र मणि शय्याआदिमें अग्निका देखपड़ना अश्वतरी आदिका गर्भधारणा इत्यादि अनेक प्रकारकी उत्पातोंके शान्तिके लिये महाशान्ति करनी चा-हिये उत्तमकुलमें उत्पन्न शुचि शीलवान् चारवेद तीनवेद दोवेद अथवा एक अथर्वण वेद जाननेहारे कृच्छ्र पाराक चान्द्रायण आदि व्रतोंमें तत्पर पांच ब्राह्मण इस शान्ति के लिये बर्णकरै दशहाथ अथवा बारहहाथ लम्बाचौड़ा मण्डपबनाय उसके मध्यमें चारहाथकी बेदीबनावै अग्नि-कोणमें तीन मेखला औ योनिकरके भूषित एक हस्त प्र-माण कुण्डबनावै मण्डपको गोबरसेलीप तोरण औ बन्दन मालासे अलंकृत करै फिर आचार्य्य स्नानकर शुक्लवस्त्र माला चन्दनआदिसे अलंकृतहो पांचकलश वेदीकेऊपर स्थापनकरै मध्यका कलश अष्टदल कमल बनाय उसके ऊपर स्थापनकरै सबकलशोंको पंचपल्लव औ वस्त्रआदि से भूषित करै ब्रह्मकूर्च के विधान से पंचगव्य सर्बौषधि गोरोचन चन्दन पंचरत्न श्वेतसर्षप शमी दूर्बा कुश धान जौ अपामार्ग वट उदुम्बर प्लक्ष अश्वत्थ कपित्थ प्रियंगु औ आम्रकेपत्र हाथीकेदांत से उखाड़ी मृत्तिका तीर्थजल ये सब वस्तु कुम्भोंमें डालै बाचामिति आसिंचोति न्देवा इति ईशावासेति इत्यादि चार वैदिक मंत्रोंसे आग्नेयादि कोणोंमें स्थित चारों कुंभोंको अभिमन्त्रणकरै औ मध्यके

कुम्भको भवोद्भवादि मन्त्रसे मन्त्रितकर गन्ध पुष्प अक्षत वस्त्र घृतपक्क नैवेद्य दीपक औ नालिकेर आदि फलोंकरके प्रत्येक कुम्भ का पूजन कर स्वस्तिबाचन कराय अग्नि कार्यकाआरम्भकरैअग्निद्रुतंइत्यादि मन्त्रकरके अग्निको स्थापनकरैहिरण्यगर्भः इत्यादिमंत्रसेब्रह्मासनकानियोजन करै कपोत सुप्रणीतेन इस मन्त्रसे ब्रह्माका स्थापन करै। पीछे आज्यसंस्कार कर और भी हवन सामग्री एकत्रकरै पुरुषसूक्तकरके पायस सिद्धकर भूमिपर स्थापनकरै अठारहसमिधाशमीकी औ सातसमिधा पलाशकी स्थापनकरै घृतके दो भागकर पूर्वक्रमसे जातवेदसे इत्यादि मन्त्रकरके सातआहुति देकर उसी मन्त्रसे स्थालीपाक की सात आहुति देवै दीर्घसूक्तकरके चारआहुति यमायस्वाहा इस मन्त्रकरके सातआहुति इदंविष्णु इत्यादि मन्त्रसे सात आहुति नक्षत्रेभ्यः स्वाहा इसमन्त्रसे सत्ताईसआहुति देकर स्विष्टकृत होमकरके घृत प्लुत समिधाओंसे ग्रह होम कर प्रायश्चित्तके लिये आहुतिदेवै इसप्रकार हवनकर काश्मरी वृक्षके काष्ठका पीठ बनवाय उसपर यजमानको बैठाय पांचो कलशोंके जलसे वेदोक्त औ पुराणोक्त मन्त्रों करके सब अरिष्ट निवृत्तहोनेके लिये ब्राह्मण अभिषेककरैं पीछे पुण्याहवाचन कर शांतिकर्म समाप्तकरैं भूमि सुवर्ण वस्त्र शय्या आसन दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणोंको संतुष्टकरै दीन अनाथोंको निरंतर भोजन देवै इसविधिसे शांति करने करके दीर्घ आयुष् औ शत्रुओंसे जय प्राप्त होताहै दुर्घट कार्यभी सिद्ध होजातेहैं कुल की वृद्धिहोतीहै जिस भांति कवच पहिनलेनेसे देहमें शस्त्र प्रहार नहींल-

गता इसीभांति इसमहाशान्तिके करनेसे दैवीउपद्रव पीड़ा नहीं देसकते अहिंसक जितेन्द्रिय धर्मसेधन उपार्जन करने हारा औ दयादाक्षिण्य आदि गुणोंकरके जोपुरुष युक्तहोय उसपर सब ग्रह अनुग्रह करतेहैं इस शांतिके करनेसे पाप का क्षय धर्मकी वृद्धि मनोरथोंकी सिद्धि उत्पातोंकी शांति औ उत्तमलोककी प्राप्ति होती है ॥

एकसौबत्तीसका अध्याय ॥

दानकी प्रशंसा गोदान का विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब हम दान का माहात्म्य सुनना चाहते हैं आपकेमुखसे पुण्यका विषय व्रतोंका बिस्तार औ संसारकी असारता दिखाने हारा ज्ञान श्रवण किया अब आप यह वर्णनकरैं कि क्या दान किस समयमें किसको देना चाहिये हमारे विचार में भूमिदानसे अधिक कोईदान नहींहै कि जिसको चोर आदि नहीं हर सक्के यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हेमहाराज ब्राह्मणकोदिया धन बिना व्याज बढ़ताहै औ बिना भूमिमें गाड़ी निधि है बड़ा पुष्ट बलवान् औ चिरस्थायी शरीरपाकर क्या फलहै जो किसी के ऊपर उपकार न बन पड़ा उपकारहीन जीवनही व्यर्थ है ग्राससे आधा अथवा उससे भी आधा अर्थी पुरुषोंको क्यों नहीं देते इच्छानुसार धन कब किसीको मिलताहै दान नहीं दियाजाता परन्तु धनको चोर लेजाय तो रोते फिरते हैं धर्म अर्थ औ कामसे रहित जिनके दिनव्यतीत होते हैं वे पुरुष लुहार की खाल की भांति श्वास लेतेहुये भी मरेही पड़े हैं जिनने दान न दिया हवन न किया तीर्थ

में प्राण न त्यागे सुवर्ण वस्त्र अन्न जल आदिसे ब्राह्मणों का सत्कार नहीं किया वे पुरुष जन्म २ में नंगे भूखे रोगी औ कपालहाथ में लिये माँगते फिरते हैं अनेक कष्टों से अर्जित और प्राणोंसे भी प्यारे धनको दान देना यही धनकी सद्गति है और सब धनके लिये बिपत्ति हैं उपभोगसे औ दानसे कभी सम्पत्तिका क्षय नहीं होता केवल पूर्व पुण्य के क्षीण होनेसे सम्पत्ति क्षयको प्राप्त होती है मरने के अनन्तर धनपर अपना स्वत्व नहीं रहता इसलिये अपनेहीहाथसे पात्रमें धनका विनियोगकरै जन्मरूप वृक्षके यही फलहैं कि दान देना तप करना औ परमेश्वर में भक्ति रखना इतना सुन राजा युधिष्ठिर ने कहा कि हे श्रीकृष्णचंन्द्र विष्णु भगवान् की प्रसन्नता के लिये जो दान जिसविधानसे ब्राह्मणोंको देनेचाहियें औ जिनकेदेने से दोनों लोकमें उत्तम सिद्धि प्राप्तहोय उनका आप वर्णन करैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज व्यास बाल्मीकि औ मनुकेकहे दान हम आपके प्रतिकथनकरते हैं गौ भूमि औ सरस्वती ये तीन दान सब दानोंमें उत्कृष्ट औ मुख्यहैं ये सातकुलका उद्धार करते हैं इनमें प्रथम हम गोदानका विधान कहते हैं राजायुधिष्ठिरने कहा कि प्रथम आप गौकेलक्षण औ दान लेनेहारे ब्राह्मणके लक्षण कथनकरैं पीछे विधान कहैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज तरुणी रूपयुक्त सुशीला सवत्सा दूधदेनेहारी औ न्यायसेअर्जित उत्तमगौ श्रोत्रिय अर्थात् वेदवेत्ताब्राह्मणकोदेनीचाहिये वृद्धा रोगिणी बन्ध्या हीनांगी मृतप्रजादुःशीला औ दुग्धरहितगौका

कभी दान न करै कुटुम्बी वेदवेत्ता दरिद्री आहिताग्नि औ अतिथियोंकेसत्कारमेंप्रवृत्त ब्राह्मणकोउत्तमगुणोंकरकेयुक्त गौ देवै अकुलीन मूर्ख लोभी पिशुन औ हव्यकव्यसे हीन ब्राह्मणको कभी गौ न देवै पुण्यदिनमें स्नानकर पितरोंका तर्पणकर शिव औ विष्णुका घृत औ दुग्धसे अभिषेककरै पीछे सुवर्णशृङ्गी रौप्यखुरी कांस्यके दोहनपात्रमें सहितगौ का पुष्पादिकोंसे पूजनकर दक्षिणासहित ब्राह्मणकोदेवै औ (गावोममाग्रतःसन्तुगावोमेसन्तुपृष्ठतः । गावोमेहृदयेसन्तुगवांमध्येवसाम्यहम्) यहमन्त्रपढ़ै औ गौकी प्रदक्षिणा करै ब्राह्मण जब गौको लेकरचलै उसके पीछे आठ कदम जाय इसविधिसे जो ब्राह्मणकोगौदेवै वहसब अभीष्टफल पाय स्वर्गको जाताहै सात जन्मोंमें कियेपाप तत्क्षण नष्ट होजाते हैं पद २ में अश्वमेधका औ गोशतका फलपाता है यह दक्षके प्रति विष्णुभगवान् ने कहा है गोदान करनेहारा चौदह इन्द्र व्यतीत होयँ तब तक स्वर्गमें रहता है सब पातक निवृत्त करनेहारा गोदानसे अधिक कोईप्रायश्चित्त नहीं चारोंवर्ण इस दानके करनेसे उत्तम लोकोंको प्राप्तहोते हैं शास्त्रवेत्ताऋषि यह कहते हैं कि गोदानसे बढ़कर कोईदान नहींहै इसलिये स्वर्गकी कामनावाले पुरुषों को अवश्यही ब्राह्मणको गौ देनी चाहिये ॥

एकसौतेंतीसका अध्याय ॥

तिलधेनु का विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम बराहनारायणका कहा तिलधेनु दानका विधानकहतेहैं जिस दानके करनेसे ब्रह्महा गोघ्न पितृहा गुरुदारगामी विषदेने

हारा अग्निलगानेवाला औरभी बड़े २ पातकोंकरकेयुक्त पुरुष सब पापों से छुट स्वर्गको जाताहै भूमिको गोबर से लीप वस्त्र औ अजिन बिछाय उसकेऊपर श्वेत औ कृष्ण तिल स्थापनकरै एकद्रोण तिलकाबत्स औ चारद्रोण तिलों की गौ कल्पनाकरै सुवर्ण के शृंग चांदी के खुर शर्कराकी जिह्वा गुड़का मुख गन्ध द्रव्यके प्राण इक्षुके पाद ताम्रका पृष्ठ मालाका पुच्छ नवनीतके स्तन औ रेशमके रोम उस धेनुके कल्पनाकर उत्तमवस्त्रसे आच्छादनकर फल दक्षिणा मोती औ वस्त्रसहित वहधेनु पर्व दिनमें ब्राह्मणको देवै औ उसकेसाथ कांस्य का दोहनपात्र देवै औ (यालक्ष्मी सर्व भूतानां याचदेहेऽव्यवस्थिता। धेनुरूपेणसादेवी ममपापंव्य पोहतु)यह मन्त्रपढ़ प्रणाम औ प्रदक्षिणाकर विसर्जनकरै इसविधिसे जो तिलधेनुका दानकरै वहसब पापोंसे छुट ब्रह्म लोकको जाताहै जो पुरुषदानका अनुमोदनकरै प्रसन्नचित्त हो प्रशंसाकरैं औ विधिपूर्वक किये इसदानको जो ब्राह्मण ग्रहणकरैं वे सब ब्रह्मलोकको जातेहैं प्रशान्त सुशील वेद-ब्रतमें निष्ठ ब्राह्मणको तिल धेनु देनेहारापुरुष कृतअकृत का शोक नहींकरता तिल धेनु दान करनेहारा पुरुष तीन दिन अथवा एकादिन तिलही भोजनकरै दानकरके विशुद्ध पाप उस पुरुष को तिल भक्षण चान्द्रायणब्रत के तुल्यहै बाल्य यौवन बार्द्धकमें मन वचन कर्मसे जो पापकियेहोयँ अभक्ष्यभक्षण अगम्यागमन अपेयपान आदिजो पातक महापातक औ उपपातक कियेहोयँ वे सब तिल धेनु दान से नाशको प्राप्तहोतेहैं यमलोकके मार्गमें महाघोर वैतरणी नदी है जिसके बालूमें पापी दग्धहोते हैं लोह मुख काक

औ बड़ेभयङ्कर श्वान जहां पापियोंका मांस नोच २ खाते हैं जहां असिपत्रवन औ लोहका कंटकयुक्त शाल्मलिवन है इनसबको उल्लंघनकर सुवर्णके विमानमें बैठाहुआ तिल धेनु देनेहारा पुरुष उत्तमलोकको जाताहै गुणहीन धनाढ्य कुण्डगोल औ लोभी ब्राह्मणको कभी तिलधेनु नदेवै एक गौ एकब्राह्मणको देनीचाहिये नैमिषारण्यमें कथाप्रसंगके बीच यह विधान मुनियोंने कहा औ हमको नारदमुनि ने उपदेशकिया वही हमने आपको श्रवणकराया यह पवित्र पुण्य मांगल्य औकीर्त्तिवर्द्धन विधान श्राद्धकालमें ब्राह्मणों को श्रवणकरानेसे अनन्त पुण्य होताहै गौ घर शय्या औ स्त्री इनको दानकर बहुत ब्राह्मणोंको नदेवै इनका विभाग होनेसे दाताअधोगतिकोप्राप्तहोताहै औ विक्रयहोनेसेसात कुल दुर्गतिको प्राप्तहोते हैं इसलिये एकबस्तु एक ब्राह्मण कोही देनीचाहिये इसदानके प्रभावसे उत्तमाबिमानमें बैठ साक्षात् विष्णुभगवान् के समीप पहुँचताहै माघ अथवा कार्त्तिककी पौर्णमासी अमावास्या चन्द्रसूर्य्य ग्रहण अयन संक्रांति विषुव षडशीतिमुख संक्रांति वैशाख अथवा मार्ग-शीर्षकीपूर्णिमा व्यतीपात औ गजच्छाया योगमें तिलधेनु का दानकरै धेनुके शरीरमें जितनेरोम होतेहैं उतने हजार बर्ष दान करनेहारा स्वर्गमें निवास करता है दान को जो ग्रहणकरै दानकरनेको भक्तिसे देखैं औ दानका अनुमोदन करैं वेभी स्वर्गको जाते हैं ॥

एकसौचौतीसका अध्याय ॥

जलधेनुकाविधान फल औ मुद्गलमुनिकी कथा ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम जल

धेनु दानका विधान कहते हैं जिसदानके करने से देवदेव विष्णु भगवान् प्रसन्न होते हैं उत्तम जलसे पूर्ण कलश स्थापनकर रत्न धान्य दूर्वा पंचपल्लव कूट मांसी मुश नेत्रबाला खस औ आमलक उस कुम्भमें डाल श्वेत दोवस्त्र यज्ञोपवीत औ पुष्प मालासे उसको अलंकृत करै उसके पास दोहनपात्र स्थापनकर सब उपचारोंसे विष्णुभगवान् का पूजनकर दक्षिणासहित वह कुम्भब्राह्मणकोदेवै पहिले (विष्णोर्वक्षसियालक्ष्मीः स्वाहायाचविभावसोः। सोमशक्रार्कशक्तिर्या धेनुरूपेणसास्तुमे) इस मन्त्र से कुम्भ को अभिमन्त्रणकरै औ दानकरके (शेषपर्यंकशयने श्रीमान् शार्ङ्गविभूषितः। जलशायीजगद्योनिः प्रीयतांममकेशवः) यह मन्त्रपढ़ै दानकरके उसदिन उपवास रक्खै इसविधि से जलधेनुदान करनेहारा पुरुष दिव्य औ मानुष सब प्रकारके सुख भोगताहै इसदानसे शरीरारोग्य औ सब मनोरथोंकी सिद्धिप्राप्तहोतीहै इसमें हम मुद्गलऋषिका वृत्तांत वर्णन करतेहैं एकसमय मुद्गलऋषि यमलोकमें गये वहां देखापापीजीव अनेकप्रकारके कुम्भीपाकआदि दारुणनरकोंमें पड़े चिल्लातेहैं औ यमके भयंकर दूत उनको अनेक प्रकारकेत्रासदेरहे हैं किसीको तेलके कडाहमें पकातेहैंकिसी के शरीरमें घावकर उनमें क्षार डालते हैं किसीको विष्ठाके कुण्डमें डुबोतेहैं उन नरकके जीवोंको मुद्गलके दर्शनसे कुछ आह्लाद हुआ औ यत्किंचित् सुखीभये इसभांति नरकके जीवोंको सुखीदेखमुनिने धर्मराजसे इसका कारणपूछा तब धर्मराज कहनेलगे कि हेमुनितुम्हारे दर्शनसे इतनाआह्लाद इनकोहुआहै तुमने तीनजन्म पहिले जलधेनुदानकियाथा

उस दानके प्रभावसे तुम्हारा दर्शन सबको आह्लाद देता है जलधेनु दानकरनेहारा पुरुष इक्कीस जन्मतक आह्लाद युक्त रहताहै इससेअधिक आह्लाददायक कोई कर्मनहींहै जलधेनु दानकरनेहारे पुरुषको हजारों जन्मतक दाह ज्वर आर्त्ति श्रम आदि नहींहोते हे मुद्गल अब आप हमारा किया अर्घ्य पाद्यआदि सत्कार ग्रहणकर अपने धाम को जावैं कृष्णके भक्तोंका हमभी सत्कारकरते हैं जो कृष्णका पूजनकरैं कृष्णप्रीत्यर्थव्रतकरैं नित्यकृष्णका ध्यानकरैंदान देकर (अच्युतःप्रीयताम्) यह वाक्य कहैं चलते फिरते कृष्ण का स्मरणकरैं सदा कृष्णअच्युत अनन्त बासुदेव इत्यादि नामों का उच्चारणकरते रहैं वे हमारे लोकमें नहीं आते वह कृष्ण जगत्काप्रभुहै औ हम सब उसके आज्ञा कारीहैं लोकोंका संयमन हमकरते हैं औ हमारा संयमन करनेहारा कृष्ण है यमराजका यह वचनसुन अग्निशस्त्र आदि करके पीड़ित सबनरकके जीव इसविधि पुकारनेलगे कि (नमःकृष्णायहरये विष्णवेजिष्णवेनमः। देवायहृषीकेशाय जगद्धात्रेऽच्युतात्मने॥ नमःपंकजनेत्राय नृसिंहाय निनादिने। शार्ङ्गिणेशितखड्गाय शंखचक्रगदाभृते॥ नमोवामनरूपायदैत्यलोकबधायच। वराहरूपायतथा नमो यज्ञांगधारिणे॥ व्याप्ताशेषदिगंताय शान्तायपरमात्मने। वासुदेवनमस्तुभ्यं नमःकेशिनिसूदन॥ केशवायनमोनित्यं नमस्तेस्तुमहीधर) इसप्रकार विष्णुभगवान् का स्मरण करतेही नरकका अग्निशीतल होगया शस्त्र कुण्ठितभये कंटकयुक्त शाल्मलिवृक्ष टूटगयाक्षारनदीसूखगई लोहमुख पक्षी गिरपड़े अंधकार निवृत्तहोगया ऐसा प्रचण्ड पवन

चला कि असिपत्र बन जड़से उखड़गया यमदूत मूर्च्छित होकर भूमिपरगिरे पूय औ रुधिरकी नदियोंमें उत्तमजल बहनेलगा सुगन्ध औ शीतल मन्द २ पवन चलनेलगा औ सब नरकके जीव दुःखसे मुक्त उत्तमवस्त्र भूषण माला लेपनआदिसे भूषित तेजकरके जाज्वल्यमान औ (नमो नमोस्तुकृष्णाय गोविन्दायाव्ययात्मने। वासुदेवायदेवाय विष्णवेप्रभुविष्णवे) यह बारम्बार उच्चारण करतेदेख पड़े यमराजने पाद्य अर्घ्यआदिसे सबका पूजनकिया औ एकाग्रचित्तहो हाथजोड़ यह स्तुतिकरनेलगे (विष्णोर्देवाधिदेवस्यजगद्धातुःप्रजापतेः। प्रमाणंयेचकुर्वंतितेषामपिनमो नमः॥ तस्ययज्ञवराहस्य विष्णोरमिततेजसः। प्रमाणंयेच कुर्वन्तितेषामपिनमोनमः॥अच्युतस्याप्रमेयस्य मायावामनरूपिणः प्रमाणंयेचकुर्वंतितेषामपिनमोनमः)यमराजइस प्रकार स्तुतिकरतेही थे कि उनके देखतेदेखतेही सबनरक के जीव दिव्यविमानोंमें बैठ स्वर्गकोगये मुद्गलभी यहसब चरित्रदेखअपनेस्थानमें आये औ विष्णुभगवान्‌काप्रभाव औ उनके नामोंका माहात्म्य बारम्बार स्मरणकर अपने जीवको इसविधि समझानेलगे कि हेजीव विष्णुभगवान्‌ की माया बड़ी दुस्तर औ गह्वरहै जिसकरके मोहितहुआ तू परमेश्वरको नहीं पहिंचानता हे जीव तू कीट जूका मत्कुण वृक्ष लता पक्षी पशु मनुष्यआदि अनेक योनियोंमें भटकता फिरताहै औ मुक्तिकेलिये यत्न नहीं करता बड़ा आश्चर्य्य है कि मायाकरके मोहित मनुष्य अपना हित नहीं पहिंचानते विष्णुमाया यद्यपि दुस्तरहै तौभी विष्णु भक्त उसको सुख से छेदन करसक्ते हैं धर्म्म के अविरोध

से बिषयों को भोगता हुआ पुरुष भी विष्णुभगवान् में दृढ़ भक्ति रक्खै तो उसकी मायाका पार पाताहै जो मनुष्य जन्म पाय भगवान् का आराधन नहीं करते उनका जन्मही वृथाहै थोड़े परिश्रमसेही जो दोनों लोकों में कल्याणदेने हाराहै ऐसे विष्णु भगवान् का आराधन कौन पुरुष न करै वे वर्ष मास दिन विषयांध पुरुषों के व्यर्थ हैं जिनमें भगवान् का आराधन नहीं किया जो भगवान्धन वस्त्र भूषण आदि कुछ नहीं चाहता केवल हृदयकी भक्ति ही चाहताहै हे जीव उससे तू दूर २ क्यों फिरताहै हजारों जन्मोंके अनंतर इस कर्मभूमिमें मनुष्य जन्मपाकर जो पुरुष विष्णुभगवान्का आराधन औ जलधेनु दान नहीं करते उनका जन्म भ्रष्टहै औ वेही मायाकरके बंचितहोते हैं हम ऊपरको भुजा उठाय पुकारतेहैं कि हे मनुष्यो दोनों लोकोंमें कल्याण प्राप्तिके लिये विष्णुभगवान् का आराधन औ जलधेनुका दानकरो नरककी यातना अतिदुःसह है औ मैंने अपने नेत्रोंसे देखीहै उनसे बचनेकेलियेविष्णु भगवान्को भजो सैकड़ों यज्ञ औ क्लेशदायक अनेक ब्रत करनेसे कुछ प्रयोजन नहीं यमराज का भय निवृत करने के लिये एक जलधेनु का दानही बहुतहै ॥

एकसौपैंतीसका अध्याय ॥

घृत धेनु का बिधान औ फल ॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम घृतधेनुका विधान वर्णन करते हैं आप प्रीतिसेश्रवणकरैं गौ के घृतसे पूर्ण एक कुंभ स्थापन कर गन्धमाला आदि से उसको अलंकृतकर श्वेतबस्त्रसे आच्छादनकरै औ इक्षु

के पाद चांदीकेखुर सुवर्णकेनेत्र अगुरुकाष्ठकेशृङ्ग सप्तधान्यके पार्श्व सिल्हक औ कपूरकेप्राण फलोंके स्तन सब रसों की जिह्वा गुड़ औ क्षीर का मुख क्षौमसूत्र का पुच्छ श्वेत सर्षपकेरोम औ ताम्रकापृष्ठ घृतधेनुकाबनावै औ इसीप्रकार वत्सबनाकर (आज्यंतेजः समुद्दिष्टमाज्यंपापहरंपरम्। आज्यंसुराणामाहारः सर्वमाज्येप्रतिष्ठितम् ॥ त्वंवैघृतमया देवी कल्पितासिमयाकिल। सर्वपापप्रणोदाय सुखायभव भाविनि) इसमन्त्रसे उसका पूजनकर दक्षिणा सहितघृत धेनु ब्राह्मणकोदेवै औ (दक्षिणासाहिताधेनुः कल्पिताज्य मयीशुभा। एनांममोपकारायगृहाणत्वंद्विजोत्तम) यहमन्त्र पढ़ै उसदिन घृतकाही आहारकरै इसी बिधानसे नवनीत धेनुकाभी दानकरै घृतधेनु दानकरनेहारा पुरुष उस लोक में निवास करताहै जहां घृत क्षीर की नदी बहती हैं औ पायसका जिनमें कर्दमहै औ उस पुरुषकी सातपीढ़ी उसी लोकमें निवास करती हैं जो निष्काम होकरघृत धेनु दान करै तो निष्कल्मषपदको प्राप्तहोताहै घृत अग्नि है घृत सोमहै औ सर्व देवमय घृतहै इसलिये घृतके दानसे सब देवता प्रसन्नहोतेहैं मायारूप जिसमें जलहै पुत्र कलत्र आदि जिसके तरंगहैं लोभ जिसमें बड़ा भारी नक्रहै ऐसे संसार सागरका पार घृतधेनु दानसे प्राप्तहोताहै ॥

एकसौछत्तीसका अध्याय ॥

लवण धेनु का विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप ऐसा दान वर्णनकरैं जिसके करनेसे सब दानोंका फल प्राप्त होय सब पापनिवृत्त होयँ औ सब मनोरथ सिद्ध

होयँ यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज सब द्रव्यों में लवण उत्तम है जिसके दान करनेसे ब्रह्महा गोघ्न पितृहा गुरुतल्पग बिश्वासघाती क्रूरात्मा और भी सब प्रकारके पाप करनेहारा पुरुष निष्पाप होजाताहै औ धन धान्य पशु दीर्घायुष् औ संतान पाकर बहुत दिन संसारसुख भोग शिवलोक को जाता है अब हम लवणधेनु का बिधान कहते हैं गोबरसे भूमिको लेपन कर उसके ऊपर मेषका चर्म औ वस्त्र बिछाय उसके ऊपर एक आढक अर्थात् चार सेर लवण रक्खै उसी को धेनु कल्पनाकरै सुवर्णकेशृङ्ग चांदीकेखुर इक्षुके पाद फलों के स्तन सब रसोंकी जिह्वा गन्धके घ्राण शुक्तिके कर्ण चन्दन काष्ठके शृङ्ग औ मोतियोंके नेत्र कल्पनाकर उसके कपालमें सक्तु पिंड मुखमें यव दोनों पार्श्वोंमें तिल औ गेहूं इस भांति सप्तधान्य उसके अंगोंमें स्थापनकर ग्रीवा में कंबल पृष्ठमें ताम्र अपानमें गुड़का पिंड पुच्छमें कंवल दुग्धके स्थानमें द्राक्षायोनिमें मधु औ सब अंगोंमें फलों का निवेश करै ये सब बस्तु लवणके चतुर्थांश के समान रक्खै इस बिधि धेनु बनाय बस्त्र भूषण आदि से उसका पूजनकर दक्षिणासहित सुशील ब्राह्मणको देवै औ(लवणेवैरसाःसर्वे लवणेसर्वदेवताः। सर्वदेवमयेदेवि लवणाख्ये नमोस्तुते) यहमन्त्रपढ़ै पीछे उसकीप्रदक्षिणाकर विसर्जन करै लवणधेनुकी प्रदक्षिणाकरनेसे सबपृथिवीकी परिक्रमा का फलहोताहै औसबयज्ञ तथा दानकरनेका पुण्यभीप्राप्त होताहैइसबिधिसे जोपुरुष लवण धेनुदानकरै वहसौभाग्य आरोग्यसबसम्पत्ति औप्रलयपर्यन्तस्वर्गमेंवासपाताहै॥

एकसौसैंतीसका अध्याय ॥

सुवर्णधेनु दानका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हमसुवर्ण धेनु दानका विधान कहते हैं पचासपल पचीसपल अथवा जितना सामर्थ्यहो उतना सुवर्णलेकर अतिसुन्दर रत्नों से जड़ी धेनु बनावै पीछे से ऊँची बड़ी कुक्षि औ मोटे स्तनों करके युक्त कपिलाधेनु बनाय हीरेके दांत वैडूर्य्य का गलकम्बल तांबेके शृंग मोतीकेनेत्र औ मूँगेकी जिह्वा उसकी बनावै कृष्णाजिन के ऊपर प्रस्थभर गुड़ रखकर उसके ऊपर धेनुको स्थापनकरै औ अनेकप्रकारकेफल आठकुंभ अठारहप्रकारके धान्य छतुरी जूता आसनभोजन ताम्रका दोहनपात्र दीपक लवण शर्करा आदि सब पदार्थ उसके पास स्थापनकर गुड़धेनुके विधानसे उसका पूजनकर (त्वं सर्वदेवगणमन्दिरभूषणासि विश्वेश्वरत्रिपथगोदधिपंचजानाम् । श्रद्धाम्बुतीक्ष्णशकलीकृतपातकौघैः प्राप्नोतिनिर्वृतिमतीवपरांनमामि ॥ लोकेयथेप्सितफलार्थविधायनीत्वा मासाद्यकोहिभवभागभवतीहमर्त्यः । संसारदुःखशमनायविमुक्तिहेतोस्त्वांकामधेनुमितिवेदविदोवदन्ति) यहमन्त्र पढ़ सब उपस्कर औ दक्षिणा सहित वह धेनु ब्राह्मण को देवै पीछे प्रदक्षिणा औप्रणामकर क्षमापनकरावै दानकाल में जो देवता औ तीर्थधेनुके अंगमें निवासकरते हैं उनको सुनो नेत्रोंमें चन्द्र सूर्य्य जिह्वामें सरस्वती दन्तों में मरुत कर्णोंमें अश्विनीकुमार शृंगोंमेंरुद्र औ ब्रह्माककुदमें गन्धर्व औ अप्सरा कुक्षिमें चारों समुद्र योनिमें गङ्गा रोमकूपों में ऋषिअपान में पृथिवी आन्त्रों में नदी अस्थियोंमें पर्वत

पादोंमें धर्मादिकहुंकारमें चारोंवेदकंठमें द्ररु पृष्ठवंशमें मेरु औ सब शरीर में बिष्णुभगवान्स्थित हैं इसभांति सुवर्ण धेनु सर्वदेव मयी है इस लिये अवश्य यह दान करनाचाहिये जिसने यह दानकिया उसने सब दान किये कर्म भूमि में यहदान होना बहुतदुर्लभहै इसदानका करनेहारा पुरुष अथवा स्त्री दिव्य बिमानमें बैठ गन्धर्व औ अप्सराओं करके सेवित स्वर्गको जाताहै वहां सौ कोटि वर्षसेभी अधिककाल सुखभोगकर मनुष्य लोकमें जन्मले आधिब्याधिरहित रूपवान् औ ऐश्वर्यवान् होताहै औ सब मनोरथ उसके अनायाससे सिद्धहोते हैं औ अन्तमें फिर शिवलोक को जाताहै ॥

एकसौ अड़तीसका अध्याय ॥

रत्नधेनुके दानका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम अतिदुर्लभ रत्नधेनुके दानकाविधान कहते हैं जिसकेकरने से गोलोककी प्राप्तिहोती है पर्वदिनों में गोबरसे भूमिपर लेपनकर कृष्णाजिन बिछाय उसकेऊपर एकद्रोण अर्थात् सोलहसेर लवणरख लवणके ऊपर रत्नधेनु स्थापन करै इकासी पद्मरागमुखमें इकासी पुखराजनासिकामें मुक्तावली पुच्छमें सौ गारुत्मत रत्न अपानमें स्फटिक दांतों में और भी सबरत्न अंगोंमें स्थापनकर सुवर्णकेखुर शर्कराकीजिह्वा गुड़का गोबर घृतका गोमूत्र औ दही दूध प्रत्यक्षही रखकर चामर उसके पुच्छ में लगाय ताम्रका दोहनपात्र उसके समीप स्थापनकरै इसके चतुर्थांश तुल्यवत्स बनावै अनेकप्रकारके फल औ भोजन उसके समीपरख गुड़धेनु

विधानसे उसका पूजनकर (त्वंसर्वदेवगणवासमितिब्रुवं ति रुद्रेन्द्रचंद्रकमलासनवासुदेवाः। तस्मात्समस्तभुवनत्र यहेतुयुक्ता मांपाहिदेविभवसागरपीड्यमानम्) यह मन्त्र पढ़ ब्राह्मणको वह धेनुदेवै पीछे दक्षिणा दे प्रदक्षिणाकर क्षमापनकरावै इस विधिसे जो पुरुष रत्नधेनु दानकरै वह सौ करोड़ कल्पपर्यन्त शिवलोकमें सुखभोग अन्तमें सर्व काम समृद्ध औ शत्रुओंको क्षय करनेहारा राजाहोताहै॥

एकसौउनतालीसका अध्याय॥

उभयमुखी धेनुके दानका विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र उभयमुखी अर्थात् प्रसवहोतीहुई गौ किसविधिसे दानकरै औ उसके दानसे क्याफल होताहै यहआपवर्णनकरैंयहराजाकावचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज उभयमुखी धेनु बड़े पुण्यवान् मनुष्यों को प्राप्त होसक्ती है जबतक बछड़ेके पैर भीतरही होयँ केवल शिरही बाहर निकलाहो तबतक वहधेनु साक्षात् सप्तद्वीपवती पृथिवी है उभयमुखी धेनु के दान फलका एकमुख से वर्णन नहीं करसक्ते बहुत यज्ञ औ दान करनेसे क्या प्रयोजनहै केवल उभयमुखी दानसेही अनंत पुण्य प्राप्त होताहै गौ औ वत्सके शरीर में जितने रोम होयँ उतने हजार दिव्यवर्ष स्वर्गमें निवास करताहै उसकेपितर नरकसेनिकल बिमानमेंबैठ उसलोक को जातेहैं जहांकेवृक्ष कल्पवृक्षहैं औ पायस कर्दमयुक्त घृत क्षीर की नदी बहती हैं जो सुवर्ण सहित उभयमुखी दान करै वह गोलोकमें निवासकर ब्रह्मलोकको जाताहै दुर्बला औ दक्षिणारहित धेनु दान न करै क्योंकि यह काम्य विधि

है स्त्री भी इसदानकोकर चन्द्रके समान मुख तप्तसुवर्णके समानवर्ण कमलसे नेत्र औ बड़ा सौभग्य पाती है॥

एकसौचालीसका अध्याय॥

वृषभ दान का बिधान औ फल॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपका बचनरूप अमृत पान करते २ मुझे तृप्तिनहीं होती औ श्रवणकरने का बड़ा कुतूहलहै इसलिये और भी दान माहात्म्य आपवर्णनकरैं यह राजाका बचनसुन श्रीकृष्णभगबान् कहनेलगे किहेमहाराजसबदानोंमें उत्तम औपावन बृषभदान का बिधान हम वर्णन करते हैं दशधेनु दानसे भी एक वृषके दान करनेसे अधिक फल प्राप्तहोताहै हृष्ट पुष्ट युवा सुशील रूपवान् औ धुरंधरएकही बृषके दान करनेसे सब कुलकाउद्धार होजाताहै पर्व दिनमें वृषभको भूषितकर उसके पुच्छमें चांदी लगाय दक्षिणासहित ब्राह्मण को देवै औ (धर्मोवृषभरूपेण जगदानंदकारकः। अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः पाहिसनातन) यहमन्त्रपढ़ प्रणामकर उसका विसर्जनकरै इसविधि वृषभदानकरनेसे सातजन्म तक किये सबप्रकारके पाप उसीक्षण नष्टहोजाते हैं अन्त में वह पुरुष दिव्यवृषभ युक्त देदीप्यमान बिमान में बैठ गोलोकमें जाता है बृषभकेशरीरमें जितने रोमहोयँ उतने हजारवर्ष वहां सुखभोग उत्तम ब्राह्मणके घरमें जन्मलेता है औ यज्ञकरनेहारा तथा वड़ातेजस्वी होताहै शान्त जितेन्द्रिय वेदवेत्ता अहिंसक औ प्रतिग्रहसे डरनेवाले ब्राह्मण मनुष्योंका उद्धार करनेको समर्थहोते हैं दृढ़ पुष्ट बलवान् भारउठानेमें समर्थ औ सबगुणोंकरके भूषित उत्तमवृषभ

जो पुरुष दानकरते हैं वे दशधेनु दानके फलसेभी अधिक उत्तम फल पाते हैं॥

एकसौइकतालीसका अध्याय॥

महिषी दानका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज पुण्य पवित्र आयुष् औ सुखदेनेहारा महिषीदान माहात्म्य हम कहते हैं ग्रहण अयन संक्रान्ति शुक्लचतुर्दशीआदि पर्वदिनों में अथवा जब होसके तबहीं संसाररोग निवृत्तिके लिये महिषीदानकरै बहुत दूधदेनेहारी तरुण पुष्ट सुशीलमहिषी उत्तम ब्राह्मणकोदेवै वेद रहित औ दाम्भिक को दान न देनाचाहिये दानके समय यह पौराणिक मन्त्रपढ़ै (इन्द्रादिलोकपालानां याराजमहिषीशुभा। महिषीदानमाहात्म्यं सास्तुमेसर्वकामदा। धर्मराजस्यसाहय्ये यस्यपुत्रःप्रतिष्ठितः। महिषासुरस्यजननी यासास्तुवरदामम) यहमन्त्रपढ़ प्रदक्षिणाकर पृष्ठभागसे महिषीका दानकरै वस्त्र भूषण औ दक्षिणासहित महिषी ब्राह्मणकोदेकर क्षमापनकरावै इसविधिसे जोपुरुषमहिषीदानकरैवहइसलोकमें औ परलोकमें मनोबांछित फलपाताहै औ राजाबनताहै जोनारी महिषी दानकरै वह राजमहिषी अर्थात् राजाकी पट्टरानी होतीहै ब्राह्मणइसदानकोकरै तो यज्ञकरनेहाराहोय क्षत्रिय विजयपावै वैश्य धनधान्यकरके युक्तहोय शूद्र इसदानके करनेसे सब प्रकारकी सम्पत्तिपाताहै इसलिये अपने औ अपने कुटुम्बके कल्याणके अर्थ धनवान् पुरुष को अवश्यही महिषी दान करना चाहिये दशधेनु दानके समान महिषीदानका फलहोताहै यह नारदमुनि कहते हैं औबीस

धेनुदानके समान वेदव्यासजी बताते हैं सगर काकुत्स्थ धुंधुमार गाधिआदि बड़े २ राजाओंने यह दानकिया है महिषीदान माहात्म्यको जो पुरुषसदा श्रवणकरै वह सब पापोंसे छुट शिवलोकको जाताहै नवीनमेघकेसमान नील वर्ण पुष्ट मनोहर औ दुग्धका मानों समुद्र ऐसीमहिषी सुवर्ण औ तिलोंसहित ब्राह्मणकोदेनेसेदोनोंलोकजीतताहै॥

एकसौबयालीसका अध्याय॥

मेषीदानका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज अब हमऔर भी उत्तमदान कहतेहैं जिसके करनेसे सबपाप निवृत्तहोयँ सौ मोहरकी मेषी अर्थात् भेड़ बनावै उसको उत्तमभूषण रेशमीवस्त्र चन्दन पुष्पमालाआदिसे अलंकृतकरै अथवा प्रत्यक्ष मेषीकोही भूषित कर सबधातु सबरस सप्तधान्य फल पुष्पआदि सबसामग्री उसकेसमीपरक्खै वित्तशाठ्य न करै ग्रहण विषुवअयनआदि पर्वकालों में दुःस्वप्नहोने पर ग्रहपीड़ा में अथवा जब श्रद्धा उत्पन्नहोय तबहीं यह दानकरै प्रथम तिल औ घृतसे हवनकर वस्त्र भूषणआदि से ब्राह्मणका पूजनकरै पीछे तिलके कुम्भपर उसको स्थापनकर उसके संमुख लवण रख विधिपर्वक उसका पूजन कर (रोमत्वङ्मांसमेदाद्यैः सर्वोपकरणैस्तथा। जगतो हितयुक्तासि सततंपार्थिवोत्थिता॥ वाङ्मनःकायजनितंय त्किंचिन्ममदुष्कृतम्। तत्सर्वंविलयंयातु तवदानोपसेव नात्) यह मन्त्र पढ़ कुटुम्बी ब्राह्मण को देवै पीछे उस ब्राह्मण के साथ सम्भाषण न करै औ उसका मुख भी न देखै प्रतिग्रहकरके वह ब्राह्मण पातकी होजाताहै पूर्वकाल

में यह दान पार्वतीजीने किया जिसके प्रभाव से शिवजी पति मिले इन्द्राणी ने सुवर्णके रोमों करके युक्त सौ मेषी दान करनेसे सब देवताओंका राजा इन्द्रपति पाया नल को गया राज्यमिला इसीदानके करनेसे रुक्मिणीको हम पति प्राप्तभये अपुत्रको पुत्र औ निर्द्धनको धन इस दान के प्रभावसे मिलताहै जो इसदान विधानको सुनै वहभी अहोरात्रकृत पापसे छुटजाताहै ॥

एकसौतेतालीसका अध्याय ॥

भूमिदानका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज अबहमसबपाप हरनेहारे भूमि दानका विधानकहते हैं जोपुरुषअग्निहोत्री दरिद्र कुटुम्बी वैदिकब्राह्मणको दक्षिणासहित भूमिदेवै वह बहुतकालसब ऐश्वर्यका भोगकर अन्तमें दिव्यविमानमें बैठ विष्णुलोकको जाताहै औ वहां प्रलयपर्य्यंत दिव्यांगनाओंकेसाथ विहारकरताहै धनधान्य सुवर्ण रत्न भूषण आदिसब दानकाफल भूमिदेनेहारापाताहै समुद्र नदी पर्वत सम विषम स्थल सब गन्ध औ रस क्षीरयुक्त ओषधी पुष्प फल कमल उत्पल आदिके समूह सब उसनेदिये जिसने भूमिदान किया भूमिदान करने से जो पुण्य होताहै वह दक्षिणायुत अग्निष्टोम आदि यज्ञ करनेसे भी नहीं प्राप्त होताहै वेदवेत्ता ब्राह्मणको भूमिदेकर फिर न हरै तो जब तक लोक हैं तबतक स्वर्ग में निवास करताहै औ प्रलय पर्यन्त उसकेपितर सन्तुष्ट रहते हैं वृत्तिकेनिमित्त जो पाप पुरुषसे बन पडते हैं गोचर्म मात्र भूमि देनेसे वे सब पाप निवृत्त होजाते हैं हजार मोहर देनेसे जो फल होताहै उत-

नाही गोचर्म प्रमाण भूमिदानसे भी होताहै एक हजार कपिला गौ दान करने के समान पुण्य गोचर्ममात्र भूमि देनेसे होताहै मध्यम अर्थात् न बहुतलम्बे औ न ठिंगने पुरुषके व्याम अर्थात् सीधीफैलाई दोनोंभुजाओंके समान एकदण्ड होताहै तीसदण्डका गोचर्म औ चार गोचर्मके तुल्य एक निवर्त्तन होताहै सगर आदि अनेकराजाओंने इस भूमिका उपभोगकियाहै परन्तु अपने २ आधिपत्यमें जिस २ ने भूमिदानकिया सबको फलहुआ यमदूत मृत्यु-दण्ड असिपत्र बन वरुणके घोरपास रौरव आदि अनेक नरक औ उनकी दारुण यातना कोई भी भूमिदान करने वालेके समीप नहीं आतीं चित्रगुप्त मृत्युकाल यम आदि सब उसका पूजन करते हैं षट्कर्म करनेहारा वेदवेत्ता आ-हिताग्नि दरिद्र सदाचार औ अतिथि सत्कार में तत्पर ब्राह्मणको भूमिदेनी चाहिये जिसभांति गौ अपने वत्सका पालन करतीहै इसीविधि भूमिदान करनेहारेका भूमि भी पालन करतीहै जिसभांति जलके सेचनसे बीज अंकुरित होजाते हैं इसीप्रकार भूमिके देनेसे सब मनोरथ अंकुरित हो सुफलहोते हैं जिसभांति सूर्य्य सब अन्धकारको हरता है इसीभांति भूमिदान सबपाप हरनेहाराहै औरकी दान करी भूमिको जो हरै उसको वारुणपाशों से बांध यमदूत रुधिर औ रादकेकुण्डमें डालते हैं अपनीदी अथवा और की दी भूमि जो पुरुष हरै वह प्रलय पर्यंत नरकाग्नि में जलताहै भूमिहरीजानेसे ब्राह्मणके जो अश्रुबिन्दु गिरते हैं वे हरनेहारे पुरुषकी तीनपीढ़ी को नरक में पहुँचाते हैं ब्राह्मणको भूमिदेकर फिरहरै उसको उलटालटकाय कुम्भी

पाकनामनरकमेंपकातेहैं दिव्यहजारवर्षकेअनन्तर कुम्भी-पाकसे निकल भूमिपर जन्मलेताहै औ सात जन्मपर्यंत अनेक क्लेश भोगताहै आप भूमिदान करनेसे दूसरेकी दी भूमिको न हरनेमें अधिकपुण्यहै ब्राह्मणका धन हरनेहारे पुरुष निर्जल अरण्यमें सूखे वृक्षकेकोटरके बीच कृष्णसर्प बनते हैं जो प्रसन्न चित्तहोकर ब्राह्मणको भूमिदेवै उसके सब मनोरथ सिद्ध होते हैं भूमिदानसे अधिक कोई पुण्य नहीं औ भूमिहरणसे बढ़कर कोई पातक नहीं भूमिदान करनेहारे पुरुषप्रलयपर्यन्त स्वर्ग सुख भोगते हैं॥

एकसौचवालीसका अध्याय॥

सुवर्ण भूमिदानका विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र भूमिदान क्षत्रिय करसकते हैं औरों से न तो भूमिदान होसके न दी भूमिका पालनहोय इसलिये सबके कल्याणके अर्थ ऐसा दान आप कहैं जिसके करने से भूमिदानके समान फल होय यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज जो प्रत्यक्ष भूमि न देसकै तो सुवर्णकी भूमि बनाय ब्राह्मणको देवै तौभी वही फल होताहै अब हम इस दानका विधान कहते हैं ग्रहणसंक्रांति युगादि तिथि व्य-तिपात आदि पुण्य समयोंमें पापक्षयके औ यश प्राप्तिके अर्थ यह दानकरै सौ पलसे औ पांचपलतक सामर्थ्यानु-सार सुवर्णकी भूमि बनावै जम्बूद्वीप आदि द्वीप मेरु आदि पर्वत नदी अनेकप्रकारकी खेती औ रत्नादिकोंसे उसको अलंकृतकर दश अथवा बारहहाथ लम्बा चौड़ा मंडप ब-नाय उसमें चारहाथ की वेदी बनावै ईशानकोणमें देवता

स्थापनकरै औ अग्निकोणमें कुण्डबनाके पताका आदिसे मण्डपको शोभितकर लोकपाल औ ग्रहोंका सब उपचारों से पूजनकरै पीछे ब्राह्मणोंसे हवन करावै ब्राह्मणभी वस्त्र भूषण चन्दन आदिसे अलंकृत प्रसन्नचित्तहो हवन करैं शंखतूर्य आदि अनेकप्रकारके बाजे बजें वेदीके ऊपर अष्टादश धान्य लवणआदि सबरस आठ पूर्णकलश रेशमी वितान अनेकप्रकारके फल नानाभांति के वस्त्र चन्दन के टुकड़े औरभी सब सामग्रीको स्थापनकर सबका अधिवासनकरै फिर होमकेअन्तमें यजमान श्वेतवस्त्र मालाआदि से अलंकृतहो सुवर्णकीबनाई भूमिकी प्रदक्षिणाकर पुष्पांजलिलेकर (नमस्तेसर्वदेवानां त्वमेवरचनायतः । धात्री चसर्वभूताना मतःपाहिवसुन्धरे । वसुधारयसेयस्मात्सर्व सौख्यप्रदायकम्।वसुन्धराततोजाता तस्मात्पाहिभयादलम् । चतुर्मुखोपिनोगच्छे द्यस्मादंतंतवाचले । अनन्तायैनमस्तस्मात् पाहिसंसारकर्दमात् । त्वमेवलक्ष्मीगोंविन्दे शिवेगौरीतिसंस्थिता । गायत्रीब्रह्मणःपार्श्वे ज्योत्स्नाचन्द्ररवौप्रभा । बुद्धिर्बृहस्पतौख्याता मेधामुनिषुसंस्थिता। विश्वंप्राप्यस्थिता यस्मात्ततोविश्वंभरामता। धृतिःक्षितिःक्षमाक्षोणी पृथिवीवसुधामही । एताभिर्मूर्त्तिभिः पाहिदेविसंसारसागरात्) येमन्त्रपढ़ पृथ्वीपर पुष्पांजलि चढ़ावैपीछे उसको दानकर ब्राह्मणकोदेवै औ अपने धनकाअर्द्ध अथवा चतुर्थांश गुरुकेअर्पणकरै इसविधि से जो पुरुष पर्व दिनमें सुवर्ण भूमिकादानकरै वह अतिप्रकाशमान बिमान में बैठ विष्णुलोकको जाताहै वहांतीनकल्प पर्यन्त उत्तम भोगभोगकर भूमिपर जन्मलेकर सातजन्म पर्यंत विजयी

धर्मनिष्ठ शतकोटि धनकास्वामी चक्रवर्ती राजाहोताहै॥

एकसौ पैंतालीसका अध्याय॥

हलपंक्ति दानका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हेमहाराज अब हम सर्व पाप हरनेहारा औ सर्व सौख्यप्रदायक ऐसादान कहते हैं जिस एकदानके करनेसेही सबदानोंका फल प्राप्तहोय चार बैलोंकरकेयुक्त एक हलहोता है ऐसे दशहल होनेसे एक पंक्ति होतीहै प्रथमउत्तम दृढ़काष्ठके दशहलबनवायसुवर्ण के पट्ट औ रत्नों से भूषितकर तरुण सुन्दर बली अव्यंग ऊँचे वस्त्र भूषणआदि से अलंकृत उत्तमवृष उनहलों में जोतै औ उत्तम खेती करके युक्त बड़ाग्राम छोटाग्राम अथवा सौनिवर्त्तन परिमित भूमिदान के लिये नियत करै जो इतना सामर्थ्य न होय तो पचास निवर्त्तनही देवै पीछे वेदवेत्ता सदाचार सम्पूर्णांग अलंकृत सपत्नीक दश ब्राह्मणों को निमंत्रण देवै दशहाथ का मण्डपबनाय उस में अतिसुन्दर हस्तप्रमाण कुण्डबनावै उसमें वेसबब्राह्मण पलाशकी समिधा घृत कृष्णतिल औ पायसकरके व्याहृ-तियों से पर्जन्यसूक्तसे औ रुद्रमंत्रोंसे हवनकरैं फिर पर्व-कालमें यजमान स्नानकर शुक्लवस्त्र आदि से अलंकृतहो सप्तधान्य के ऊपर हलपंक्ति को स्थापनकर उसमें वृषभ जोड़ै उससमय अनेकप्रकारके बाजेबजैं औ वेदध्वनिहोय औ यजमान पुष्पांजलि ग्रहणकर ये मन्त्र पढ़ै (यस्माद्दे वगणाःसर्वेहलेतिष्ठंतिसर्वदा। वृषस्कन्धेसुनिहितास्तस्मा द्भक्तिःशिवेस्तुमे॥ यस्माच्चभूमिदानस्य कलांनार्हन्तिषोड शीम्। दानान्यन्यान्यतोभक्तिर्ममैवास्तुसदादृढा) फिर

ब्राह्मण उनहलोंको धीरे२चलावै औ यजमान रत्नोंसहित सबबीज सुवर्ण औ चांदी ब्राह्मणोंके हाथसे निर्वपनकरावै अर्थात् बुवावै पीछे भूमि औ वे सब हल उन ब्राह्मणोंको अर्पण करै इसप्रकार जो पुरुष हलपंक्तिका दानकरै वह अपने इक्कीसकुलोंसहित स्वर्गकोजाताहै सातजन्म पर्यंत उस पुरुषको दारिद्र्य दौर्भाग्य औ व्याधि नहीं होतीहै औ सेनाका अधिपति बनताहै जो भक्तिसे इस दानको देखै वहभी जन्मभर किये पापों से छुटताहै यह दान दिलीप ययाति शिवि भरत आदि सब राजाओंने कियाहै इसीके प्रभावसे वे आजतक स्वर्गसुख भोगते हैं इसलिये भक्ति पूर्वक सब स्त्री पुरुषों को यह दानकरना चाहिये जो हल-पंक्तिका दानकरनेका सामर्थ्य न होय तो पांचचार अथवा एकही हल दान करै हलसे जितने रेणु उठैं औ वृषभों के शरीरमें जितने रोमहोयँ उतनेहजार बर्ष शिवलोकमें नि-वासकर अन्तमें वह पुरुष राजा होताहै॥

एकसौछियालीसका अध्याय॥

राजाबभ्रुवाहनकीकथा औ अपाक दानका विधान॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आप ऐसा कोई दानकहैं जिसके करनेसे मनुष्य बहुपुत्र बहुधन औ बहुभाग्य होजाय यहराजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज इसमें एक इतिहास हम कहते हैं आप प्रीतिसे श्रवणकीजिये पूर्वकालमें इसीभरतवंशके बीच बभ्रुवाहननाम एक राजाहुआ वह बड़ाप्रतापी आ-रोग्यबली औ शत्रुओंको जीतनेहाराथा परन्तु नतो उसके कोई ऐसा मंत्रीथा जो राज्यभार उठासकै न पुत्र न मित्र

औ न कोईसुख देनेहारा बन्धुथा इसकारण वहराजा सदा व्यग्र रहता एक दिन महायोगी पिप्पलाद मुनि वहां आये राजाकी रानी शुभावती ने पाद्यार्घ्यआदि से उनका पूजनकिया औ आसनपर बैठाय प्रार्थना करी कि महाराज यह निष्कंटक राज्य पायापरन्तु मन्त्री मित्र पुत्रआदि हमको क्योंनहीं प्राप्तहोते इसकाआप कारण कथनकरैं यह रानीका बचनसुन पिप्पलाद मुनिकहनेलगे कि हे रानीयह कर्मभूमिहै इसमें जितना कर्मकरो उतनाही फल प्राप्तहोता है जो पदार्थ पूर्वजन्ममें मनुष्यने संपादन नहीं कियाहोय वह पदार्थ शत्रु मित्र बांधव राजा आदिकोई भी नहीं दे सकते पूर्वजन्ममें तुमने राज्यका अर्जन किया सो पाया बिना संपादन किये पुत्र मित्र आदि अब कहांसे मिलजायँ यह मुनिका बचनसुन रानी शुभावतीने कहा कि महाराज पीछेकी बातगई सोगई अबभी कोईव्रतदान उपवास मन्त्र अथवा सिद्धयोग आपऐसा बतावैं जिससे हमबहुत पुत्र बहुतभृत्य मित्र औ धन पावैं यह रानीकाबचनसुन पिप्पलाद मुनिने उनको अपाकदान का विधान उपदेश किया जिसके करनेसे राजाबभ्रुबाहन ने बहुत पुत्र भृत्य मन्त्री औ मित्रपाये इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज सर्वकामप्रद उसदानका विधान हम आपके प्रति कथनकरते हैं अच्छेमुहूर्त्तमें अगरु चन्दन धूप पुष्प वस्त्र भूषण नैवेद्यआदिसे शुक्रका पूजनकरै औ (त्वंमेभांडानि चित्राणिगुरूणिचलघूनिच। माणिक्यादीनिशुभ्राणिहारां श्चसुमनोहरान् ॥ संपादयमहाभागाविश्वकर्मात्वमेवहि। भार्गवत्वंप्रसन्नेन मनसापाहिमांसदा) यह मन्त्रपढ़ै फिर

अपाक अर्थात् बिना अग्नि सिद्धकिये पदार्थोंसहित एक हजारभाण्ड अर्थात् पात्र वहां स्थापन करै सायङ्काल के समय हवनकर रात्रिको जागरण औ गीत वाद्य आदिका उत्सव करै प्रभात होतेही यजमान स्नानकर श्वेत वस्त्र पहिने उन भाण्डोंकेऊपर यथाशक्ति सोने चांदी ताम्र अथवा लोहके सोलह भाण्ड स्थापनकर सबको रक्तवस्त्र से ढक पुष्पमालाओंसे उनका अर्चनकरै ब्राह्मणोंसे स्वस्तिबाचनआदि करवाय शुक्रका पूजनकरै सौभाग्यवती नारियों का पूजन कर भाण्डों की प्रदक्षिणा करै औ (भांडरूपाणियान्यत्र कल्पितानिमयाकिल । भूत्वासत्पात्ररूपाणि उपतिष्ठन्तुतानिमे) यह मन्त्रपढ़ उन सब भाण्डों को बांटदेवै अथवा लुटादेवै जिसकी इच्छाहोय सो आपही लेलेवे इस विधिसे जो पुरुष अथवा स्त्री यह दानकरै उसके ऊपर तीनजन्म तक विश्वकर्मा सन्तुष्ट रहते हैं औ पुत्र मित्र भृत्य घरआदि सबपदार्थ मिलतेहैं जो स्त्री इसदान को भक्तिसे करै वह सौभाग्य पतिके साथ अवियोग पुत्र पौत्रआदि सब पदार्थ पातीहै औ अन्तमें अपने पतिसहित स्वर्गको जाती है॥

एकसौ सैंतालीसका अध्यया॥

गृहदान का बिधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आप सब शास्त्रकातत्त्व जानतेहैं इसलिये गृहदान का माहात्म्य बर्णनकरैं तब श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज गृहस्थधर्मसे अधिक कोईधर्मनहीं असत्यसे अधिक पाप नहीं ब्राह्मणसे बढ़कर कोईपूज्यनहीं औ गृहदानसे उत्तम

कोई दाननहीं धनधान्य पुत्र स्त्री हाथी घोड़े गौ भृत्यआदिसे परिपूर्ण घर स्वर्गसेभी अधिकसुख देनेहारा है जिस भांति सब जीवमाताके आश्रयसे जीतेहैं इसीबिधि सब आश्रम गृहस्थके आश्रयसे जीते हैं अपनेघरमें रात्रिकेसमय पैर पसारकर सुखपूर्वक सोनेमें जो आनन्दहै वह स्वर्गमेंभीनहीं जो पुरुष शैव वैष्णव योगी दीन अनाथ अभ्यागत आदि के लिये धर्मशाला बनाते हैं उनको सब ब्रत औ दानोंका फलप्राप्तहोताहै पक्कीईटोंका बहुतदृढ़ ऊँचा शुभ्रवर्णजाली झरोखे स्तम्भ कपाट अर्गलआदियुक्त जलाशय औ पुष्प-वाटिकासे भूषित उत्तम अँगनकरके शोभित बहुतरमणीय घरबनाय लोहे सोने चांदी पीतल ताम्र काष्ठ मृत्तिकाआ-दिके सब उपस्कर वस्त्र चर्म वल्कल तृण पाषाण अजिन सातों धातुओंके पात्र रत्न भूषण गौ भैंस घोड़े वृषभ सब धान्य घृत तैल गुड़ तिल चावल धान्य इक्षु मूंग गोधूम सर्षप मटर अरहर चने मसूर कँगुनी उड़द लवण खजूर द्राक्षा जीरा धनियां चूल्हा चक्की छलनी छाज ऊखल म-सल हांड़ी मथानी मार्जनी जलकुम्भइत्यादि सब छोटेबड़े गृहस्थके उपकरण उसघरमें स्थापनकरै फिर अच्छेमुहूर्त्त में कुलशीलयुक्त औ वेदशास्त्र जाननेहारे सपत्नीकब्राह्मणों को बुलाय वस्त्र भूषणआदिसे उनका पूजनकर शान्तिकर्म में उनको नियुक्तकरै घरके अंगनमें मेखला सहित कुण्ड बनाय ब्राह्मण उसमें हवनकरैं औ रक्षोघ्न सूक्त पढ़ैं पीछे वास्तुपूजाकर दिशाओं में भूतवलि देवै इसविधि शान्ति कर्मकर वहगृह उन ब्राह्मणोंकोदेवै जो शक्तिहोय तो एक२ गृह एक २ ब्राह्मणको देवै अथवा एक गृहही सर्वोपस्कर

सहित एक सत्पात्र ब्राह्मण के अर्पण करै शीत वायु औ धूपकी हरनेहारी तृणकी कुटीभी ब्राह्मणको देवै तो स्वर्ग को जाताहै फिर उत्तम घर देनेका तौ पुण्य कहांतक कहैं गौ भूमि सुवर्ण आदि के दान औ अनेकप्रकार के यम नियम गृहदानकी षोड़शीकला की भी तुल्यता नहीं कर सक्के सब सामग्री सहित बहुतदृढ़ और सुन्दर गृह उत्तम ब्राह्मणको जो पुरुषदेवै वह उत्तम विमानमेंबैठ शिवलोक को जाताहै औ वहां बहुतकाल दिव्य अप्सराओंके साथ विहार करताहै ॥

एकसौ अड़तालीसका अध्याय ॥

अन्नदानका माहात्म्य राजाश्वेतकी कथा औ एकवैश्यकी कथा ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकाल में मुनियोंने जो अन्नदान माहात्म्य कहाहै वह हम कहते हैं आप एकाग्र चित्तहो श्रवणकरैं हे महाराज अन्न दीजिये अन्नदीजिये अन्नदीजिये जिससे सद्यः सब को सन्तोष होताहै और दानोंसे क्या प्रयोजनहै बनके बीच रामचन्द्र जीने निर्वेदसे यहकहा कि हे लक्ष्मण सम्पूर्ण पृथिवी अन्न से पूर्णहै परन्तु हमको अन्न नहींप्राप्तहोता इससे यही जानते हैं कि हमने अन्नदान नहींकिया जो कर्मबीज मनुष्य बोते हैं उसीकाफल खाते हैं हमने ब्राह्मणोंके मुखमें अन्न का हवन नहींकिया बिनादिया कोई पदार्थ नहीं मिलता यह लोकप्रवाद सत्यहै सत्यसे परे पुण्य नहीं बुद्धिसे अधिक लाभ नहीं सन्तोष से परे सुख नहीं औ अन्नदानसे बढ़कर कोई दान नहीं स्नान अनुलेपन भूषण वस्त्रआदि चाहे जितने पदार्थमिलैं परन्तु अन्नबिनासुख औ सन्तोष

नहींहोता अर्थात् भूखेको ये कोईपदार्थ अच्छे नहींलगते पूर्वकालमें श्वेतनामक चक्रवर्त्ती राजाहुआहै जिसनेबहुत यज्ञकिये अनेक संग्रामोंमें जयपाया दानदिये धर्मसे राज्य किया वह राजा अनेक उत्तम भोग बहुत काल भोगकर राज्यको त्याग वानप्रस्थ हुआ औ बहुतकाल तप करके अन्तमें दिव्य बिमानपर बैठ स्वर्गकोगया वहां विद्याधर किन्नरआदि उसके साथ विहारकरते अप्सरा उसकी सेवा में रहतीं गन्धर्व उसको गीतसुना कर रिझाते इन्द्र भी उसका बहुत सत्कारकरते औ सदादिव्यवस्त्र भूषणमाला आदि पहिनने को मिलते परन्तु भोजनके समय बिमान पर बैठ भूलोकमें आता औ वहां अपने पूर्वशरीरका मांस नित्य खाता औ वह शरीर नित्य भक्षण करने परभी न घटता इससे अत्यन्त व्याकुलहो राजाने एक दिन ब्रह्मा जीसे प्रार्थनाकरी कि महाराज स्वर्ग में मेरा निवास सब देवता मेरा सत्कारकरैं और सब उपभोग मेरे लिये उपस्थितरहतेहैं परन्तु यह पापिनीक्षुधा मुझेनिरन्तरसताती है औ अपने पूर्वशरीरकामांसखातेमुझे अत्यन्तघृणाहोती है मैंने ऐसा कौन पापकिया किजिससे उत्तमभोजन नहीं मिलताअब आपकृपाकर ऐसा उपाय बतावैं जिससे यह कष्टनिवृत्तहोय यहराजाकावचनसुन ब्रह्माजीकहनेलगे कि हेराजन् तुमने सबदानकिये परन्तु ब्राह्मणोंकोउत्तम२भोजनोंसे सन्तुष्ट नहींकिया उसीकाफल अबभोगतेहो अन्नके बिना दूसरा कोईसंजीवन औषध नहींहै इससे इसीको अमृतजानना चाहिये इसलिये अबतुम भूमिपरजाय वेदशास्त्र जाननेहारे तपोनिष्ठ औ जितेन्द्रियब्राह्मणकोभोजनकराओ

तो तुम्हारा यहक्लेशनिवृत्तहो यहब्रह्माजीकावचनसुनराजा श्वेतभूमिपर आया औ वहां परमभक्तिसे अगस्त्यमुनिको भोजनकराय अपनेकण्ठसे दिव्य मोतियोंकी एकावलीउतार उनकोदक्षिणादी अगस्त्यजीको भोजनकरातेहीराजा सन्तुष्टहोगया औ सबदेवता वहांआय बड़ेआदरसे राजा को बिमानमें बैठाय स्वर्गको लेगये रामचन्द्रजीने जबरावणको मारदिया तबवह एकावली अगस्त्यजीने रामचंद्र जीकोदी यह अन्नदानका माहात्म्य है हमारा वचन सत्य मानो कि अन्नसे बढ़कर कोईउत्तम पदार्थनहीं अन्नजीवों का प्राण है अन्नही तेजबल औ सुखहै इस कारण अन्न देनेहारा प्राणदायकहोताहै भूखे मनुष्य दूसरे जिसकेघर आशाकरके आवैं औ तृप्तहोकर वहांसेजायँ वहपुरुषधन्य है जो भूखेको अन्न न देसके उसका गृहस्थाडम्बर वृथाहै अन्नके बिना कोई जीनहीं सक्ता जैसा अन्न खाकर पुरुष मैथुन में प्रवृत्त होय वैसेही पुत्र उत्पन्न होते हैं मनुष्यों का दुष्कृत अन्नमें रहता है इसलिये जो जिसका अन्न खाय वह उसका दुष्कृत भक्षणकरताहै चन्द्रमा जब बनस्पतियों में प्राप्तहोता है उसदिन जो परान्न भोजन करै उसका एकमहीनेकाकिया पुण्य अन्नदाताको प्राप्तहोजाता है इसलिये उसदिन परान्नभोजन न करै जिसअन्नके देने का इतना फल है फिर क्यों न अन्नदान करैं ब्राह्मण को भिक्षाहंतकार अथवा तृप्तिपूर्वक भोजनदिये बिना जोपुरुष भोजनकरते हैं वे केवल किल्विषही भक्षणकरते हैं जिसने दशहजार अथवा हजारहीब्राह्मणोंको भोजनकराया उसने ब्रह्मलोकको जानेकेलिये मानो कमरबांधी पूर्वकालमेंकाशी

के बीच प्राणिजीवी वैश्योंमें देवब्राह्मणपूजक धनेश्वरनाम एक वैश्यथा उसकेघरमें सर्पिणी एकअण्डा छोड़गई वैश्य ने उस अण्डेको देखा औ दयासे उसका रक्षणकिया कुछ दिनके अनन्तर अण्डेको फोड़कर कृष्ण सर्पका बच्चा निकला वैश्यभी उसको नित्य दूध पिलानेलगा वह सर्पकभी बैश्यके अंगको चाटता कभी पैरोंमें लोटता औ सारेघरमें फिरता वैश्य उसकी भलीभांति रक्षाकरता कुछकालमें वह बड़ा भयंकर सर्पहोगया एकदिन वैश्य गंगास्नानको गया था औ उसका पुत्र दुकानपर सौदाबेचताथा उससमय वह सर्प चंचलतासे वणिकपुत्रके पैरोंके बीचसे निकला इससे उसको त्रासहुआ औ सर्पको उसने तर्जनकिया तर्जनकरतेही उछलकर सर्प वैश्यपुत्रके मस्तकपरजाबैठा औ क्रोध कर बोला कि रे मूर्खतेरे पिताके मैं शरणमेंहूं उसीने मेरा पालन पोषणकिया इसलिये मैं तेराभी भलाही चाहताथा परन्तु तैंने मुझेबिनाअपराधताड़नकियाइसलियेअबतुझे जीता न छोड़ूंगा यह सर्पका वचन सुनतेही उसके घरमें रोनापीटनामचगया इतनेमें अच्युतअनन्तगोविन्दआदि नाम उच्चारणकरता धनेश्वरभी स्नानकरके घरआया औ पुत्रकोदेखा सर्पनेकहा कि हे धनेश्वर तेरेपुत्रने निरपराध मुझको ताड़नकिया इसलिये तेरे संमुखही मैं इसके प्राण हरताहूं जिससे फिर कोईपुरुष ऐसाकाम न करै यह सुन धनेश्वर बोला कि हेसर्प जोउपकार भक्ति स्नेहआदि सब को भूलकर उत्पथमें चलै उसको कौन रोकसक्ताहै परन्तु क्षणमात्र तू इस बालकको दंशमतकर जबतक यह अपना और्ध्वदैहिक अपनेहाथ करलेवै सर्पने यह बात स्वीकार

करली वैश्यनेभी वेदवेत्ता औ जितेन्द्रिय एक हजार ब्रा-
ह्मणोंको घृत पायस भोजनकराया औ सबको दक्षिणादी
ब्राह्मणोंने प्रसन्नहो (हे वैश्यपुत्र तू चिरंजीव हो तेरे सब
शत्रु नष्टहोयँ औ सब मनोरथसिद्धहोयँ) ये वाक्य कहकर
अक्षत औ पुष्प वैश्यपुत्र के मस्तकपर डाले अक्षतगिर-
तेही ब्राह्मणों के वाग्वज्र से ताड़ित पर्वत की भांति वह
सर्प्पगिरा औ मरगया सर्प्पको मरे देख धनेश्वरको बड़ा
पश्चात्ताप हुआ औ शोचनेलगा कि यह सर्प्प मैंने पुत्र
की भांति पाला औ बहुत इसका लालनकिया अब यह
मेरेही दोषसे मृत्युवशहुआ यहबड़ाही अनुचितकर्म बन-
पड़ा उपकार करनेहारेमें जो साधुता करै उसकी साधुता
प्रशंसायोग्य नहींहोती अपकारियों में जो साधुत्व रक्खै
उसकीसाधुता सराहिये इसभांतिअनेकप्रकारकेपश्चात्ताप
वैश्यनेकिया औ दुःखकेमारे नतो भोजनकिया औ नरात्रि
को सोया प्रभातहोतेही गंगामें स्नानकर देवतापितरोंका
पूजन तर्पणआदिकर घरआय एकहज़ार सदाचार ब्राह्म-
णोंको अनेकप्रकारके उत्तम २ भोजनोंसे सन्तुष्टकिया औ
दक्षिणा दी ब्राह्मणों ने प्रसन्नहोकरकहा कि हे धनेश्वर हम
बहुतसन्तुष्ट हुये तूभी बरमांग तब वैश्यने यही बरमांगा
कि महाराज यह सर्प जीउठै यही बरचाहताहूँ यहवैश्यका
वचनसुन ब्राह्मणोंने अभिमंत्रित जलसे उससर्पको प्रोक्षण
किया प्रोक्षण करतेही पर्वत की भांति वह सर्प उठा औ
दोनोंजीभ लपलपानेलगा उसकोदेख धनेश्वर बड़ाप्रसन्न
हुआ औ सब नगरके लोग धनेश्वरकी प्रशंसा करनेलगे
यह सहस्र ब्राह्मण भोजन का संक्षेप से माहात्म्य वर्णन

कियाहै जो पुरुष ब्राह्मणोंको औ अभ्यागतोंको अन्नदेते हैं वेबहुतादिन संसारसुखभोगकर विष्णुलोकको जाते हैं॥

एकसौउनचासका अध्याय॥

स्थालीदानका विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपके मुखसे अन्नदान माहात्म्य सुन एकबात हमारेभी स्मरण आई वह अपने नेत्रोंसे देखी आपको सुनाते हैं जब द्यूत के छलसे दुर्योधन कर्ण शकुनि आदिने हमारा राज्य औ धन हरलिया औ हम वल्कल पहिन बनकोगये उससमय सब नगरकेलोग औ सदाचार ब्राह्मण स्नेहसे हमारेसाथ चले उनको देख हमको बड़ा निर्वेद हुआ औ यह शोचा कि जो पुरुष ब्राह्मण मित्र भृत्य आदिका पोषणकरै उसका जीवन सफल है अपना पेटतो सबही भरते हैं अभ्यागत सुहृद्वर्ग औ कुटुम्बकोछोड़ जो अपनाही पेटभरै वहपापी जीताही मराहै यह मनमें शोच उन ब्राह्मणोंसे हमने कहा कि आप सब त्रिकालज्ञ औ ज्ञानविज्ञानके पारगामी मेरे स्नेहसे आयेहैं अब कुछ अपने भोजनके लिये उपाय कहैं जिससे भाई भृत्य बन्धु औ आपसहित हमारा बारहवर्ष निर्जन बनमें निर्बाहहोय यह हमारा वचनसुन मैत्रेयमुनि बोले कि हे महाराज एक प्राचीन वृत्तान्त हमने दिव्य दृष्टिसे देखाहै वह हम कहते हैं आप श्रवणकरैं पूर्वकाल में तपोबन के बीच दुर्भगा औ दरिद्रा एक ब्रह्मचारिणी थी वह इसदशामेंभी नित्य ब्राह्मणोंका पूजन कियाकरती उसका शम दम औ श्रद्धादेख एकदिन प्रसन्नहो ब्राह्मणों ने कहा कि हे ब्राह्मणि हम तुम्हसे बहुतप्रसन्नहैं वरमांग

तब ब्राह्मणी ने कहा कि महाराज कोई व्रत अथवा दान ऐसा बताइये जिसके करनेसे पतिकी प्रिया बहुपुत्रा धनाढ्या लोकमें प्रशंसा योग्य औ त्रिवर्ग भागिनी होजाऊँ यह ब्राह्मणीका वचनसुन वशिष्ठजी कहनेलगे कि हे ब्राह्मणि सब मनोरथ सिद्ध करनेहारा दान हमतेरेको बताते हैं वह तू कर पचीसपल बारहपल अथवा छःपलताम्रकी एक हांडी बनावै जोसामर्थ्य न होय तो मृत्तिकाकी उत्तम हांडीलेकर उसको चावलोंसे भर चन्दनसे चर्चितकर मण्डलके बीच स्थापनकरै उसकेसमीप सब प्रकारकी तरकारी शाक औ घृतकापात्र स्थापनकर पुष्प धूप दीप वस्त्र आदिसे उसका पूजनकर (ज्वलज्ज्वलनपार्श्वस्थतंडुलैरपिपूरिते । त्वयाविनानसंसिद्धिर्भूतानांसिद्धिकामिनाम् ॥ अतस्त्वांप्रणमेनित्यंसत्यंकुरुवचोमम । अक्षयान्नप्रदानित्यंतथाभववरप्रदा) यह मन्त्रपढ़ वह हंडिका आचार्यके अर्पणकरै यहदान रविवार संक्रांति चतुर्दशी अष्टमी एकादशी अथवा तृतीयाकोकरै यह वशिष्ठजीका उपदेशमान वह ब्राह्मणी नित्य ब्राह्मणोंको स्थाली देनेलगी उसपुण्य के प्रभाव से जन्मांतर में वह तुम्हारी भार्या द्रौपदी भई इतनाकह मैत्रेयमुनिनेकहा कि हे महाराज अब जोद्रौपदी अपनी स्थालीसे अन्नदेवै तो सम्पूर्ण जगत् को तृप्तकर सकतीहै यह मैत्रेयका वचन सुन हमने भी वैसाही किया औ सब ब्राह्मणों को नित्य भोजन करानेलगे इतना कह राजायुधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अन्नदानके प्रसंग से यह स्थाली दान विधान हमने कहा सो आपने क्षमा करना जो पुरुष सुन्दर ताम्रकी स्थालीबनाय तण्डुलों से

पूर्णकर पर्वदिनोंमें इस विधानसे ब्राह्मणकोदेवै उनके घर में सुहृद् सम्बन्धी बान्धव मित्र भृत्य औ अतिथि नित्यभोजन करैं तौभी भोजनका संकोच नहींहोता॥

एकसौपचासका अध्याय॥

दासीदानका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हमभक्ति से औ स्नेहसे आपको दासी दानका विधान कहते हैं जो आजतक किसीने न कहाहोगा चारों आश्रमोंमें गृहस्थाश्रम सब से उत्तम है गृहस्थमें गृह औ गृह में उत्तम स्त्री सारहैं जिसमें पूर्णचन्द्रमुखी औ पीनोन्नतस्तनी नारीहोयँ उसीको घर कहना चाहिये जिस घरमें स्त्रियों का आदर होय वहां सब देवता निवास करतेहैं औ जहां इनका अनादरहोय वे गृह नाश कों प्राप्तहोतेहैं अनादर करी हुई नारी जिनघरोंको शापदेतीहै वे घर मानों कृत्याकरके हत होजायँ शीघ्रही पराभवको प्राप्तहोते हैं अमृतके मानोंकुण्ड सुखकी मानों राशि रतिके मानों निधान ऐसी नारी किसनेरची हैं श्यामा मंथरगामिनी घनपीन पयोधरा ऐसी नारी औ महिषी घर २ में नहींहोती हैं अर्थात् कोई पुण्यवान्ही पाता है जिस घरमें सुवर्ण दासी बालक औ दही दूधआदि न होयँ वहघर साक्षात् नरकही जानोअधिपति बिना ग्राम दासीबिना घर औ घृतबिना भोजन ये तीनों वृथाहैं रूपलावण्ययुक्त दासी जिसघरमेंहोयँ वहां साक्षात् कमलहस्ता लक्ष्मी निवास करती हैं जिसघरमें शौच आचारहोय व्यवहार शुद्धहोय औ दासीदासोंका भलीभांति पोषणहोय वहांलक्ष्मीका निवासहोताहै बहुत लोकोंकरके

आकुल ग्राम दासी दासोंकरके आकुलघर औ धर्मकरके आकुलबुद्धि उत्तम होतीहै जिसघरमें भार्या गृहस्थव्यवहार में चतुरहोय दासी अपने २ काममें तत्पर होयँ औ सेवक सदा उद्यमीहोयँ वहां त्रिबर्ग अर्थात् धर्म अर्थ औ कामका निवास होताहै वेद में लिखा है कि जो २ पदार्थ अपनेको प्रियहोयँ सोसब ब्राह्मणोंको देनेचाहिये यहबात मनमें बिचार ब्राह्मण को उत्तमदासी देनी चाहिये स्थिर नक्षत्रमें औ सौम्यग्रहान्वित लग्नमें बस्त्र भूषण आदिसे यथाशक्ति दासीको अलंकृतकर (इयंदासीमयातुभ्यंभगवन्प्रतिपादिता । सर्वकर्मसुयोज्येयं यथेष्टंभद्रमस्तुमे) यह मन्त्रपढ़ ब्राह्मणको देवै पीछे सुवर्ण वस्त्र सुगन्धद्रव्य आदि ब्राह्मणको देकर क्षमापन करावै इसीविधिसे देवालयमेंभी दासीअर्पणकरै इसप्रकार जोपुरुष दासीदानकरै वहविद्याधरोंकरके सेवित अप्सरा लोकमेंनिवासकरताहै॥

एकसौइक्यावनका अध्याय॥

प्रपादान औ जलदानका विधान औ फल॥

राजा युधिष्ठिरकहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप प्रपा अर्थात् जलशाला का विधान कहैं किस कालमें औ किसविधिसे जलशाला दानहोताहै औ उसके दानसे क्या फलहै यहसब आप वर्णनकरैं यहराजाका बचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज चैत्रमहीनेकेआरम्भमें उत्तम मुहूर्त्तदेख नगरके मध्यमें रस्तेके किनारे देवालयमें चैत्यवृक्षकेनीचे अथवा निर्जलबनमें सुन्दरमंडप घनी औ ठण्ढी छायायुक्त बनावै उसकेबीच ठण्ढे जलसे पर्ण गीलेवस्त्रसे वेष्टित बड़े २ मटके औ शीतलजल निज

मेंरहै ऐसी सुराही रक्खै औ सुशील कुटुम्बी ब्राह्मण को उसमें नियुक्तकरै जो निरन्तर सबको जलपिलायाकरै उस ब्राह्मणके निर्बाह योग्य जीविका कल्पनाकरदेवै इसप्रकार उत्तममुहूर्त्तमें प्रपा बनवाय यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनकराय (प्रपेयंसर्वसामान्याभूतेभ्यःप्रतिपादिता। अस्याःप्रदानात्पितरस्तृप्यन्तुचपितामहाः) यह मन्त्रपढ़ प्रपाका दान करे उसदिनसे लेकर चार अथवा तीनमास तक निरन्तर जलपिलावै औ यथाशक्तिअन्नभी देवै सुगन्ध शीतल सुस्वादु औ उत्तमपात्रमें स्थितजलसबको पिलावै औ यथाशक्तिनित्यहीब्राह्मणभोजनकरावैइस विधिसेजोपुरुषग्रीष्मऋतुमें जलदानकरै वह सौ कपिला गोदानका फलपाता है औ अन्तमें दिव्यकुम्भाकार बिमानपरबैठ स्वर्गमेंजाय तीसकल्प पर्यंत सुखभोगताहै औ यक्ष गन्धर्वआदि उसका सेवनकरतेहैं फिर भूमिपर जन्मले चतुर्वेद वेत्ताब्राह्मण होताहै औ उत्तमकर्मकर मुक्तिपाताहै प्रपादानकी सामर्थ्य न होय तो ठण्ढेजलसे पूर्णघट जिसकामुख वस्त्रसेढकाहो नित्य ब्राह्मणकेघर देवै औ प्रतिमास उसका उद्यापनकरै अनेकप्रकारके पक्वान्न औ वस्त्र दक्षिणादिसे शिव अथवा विष्णुका उद्देशकर ब्राह्मणका पूजनकरै औ (एषधर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः । अस्यप्रदानात्सकलाममसन्तुमनोरथाः) यहमंत्रपढ़ ब्राह्मणको जलपूर्णघट अर्पण करै इसविधानसे जो धर्मघटदानकरै वह प्रपादानके फलको प्राप्तहोताहै जो धर्मघटभी न देसकै नित्य अश्वत्थका सेवनकरै नमस्कार औ प्रदक्षिणाकर (अनेनाश्वत्थसेवनेनमेजनार्दनःप्रीयताम्) यह वाक्य उच्चारणकरै अश्वत्थ

वृक्षकेनीचे जो सत्कर्मकरै वह अनन्त फलदायक होता है औ अश्वत्थसेवन से सब पाप नाशको प्राप्तहोते हैं स्वादु औ शीतलजलकी प्रपा जोपुरुष ऐसेस्थानमें लगावै जहां बहुत मनुष्य जलपीवैं वह इसमृत्युलोकमें धन्य है ॥

एकसौबावन का अध्याय ॥

शीतकालमें अंगीठीदानका विधान, औ फल ॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र शीतकाल में दयालु पुरुष अग्निष्ठिका अर्थात् अंगीठीका दान किस विधिसे करते हैं यहआप वर्णनकरैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज सबजीवों के सुखदेनेहारे अग्निष्ठिका दानका विधान हमकहते हैं आप प्रीतिसे श्रवणकीजिये मार्गशीर्षके आरम्भमें उत्तममुहूर्त्त देख देवालय मठ घर अथवा बड़ेचौकमें प्रभात औ सायङ्काल बहुतसा सूखाकाष्ठ एकत्रकर अग्निप्रज्वलितकरै इसीविधिसे शीतकाल भर दोनोंवक्त अग्निजलावै औ सब दीन अनाथ वस्त्रहीन वहां सेकैं जो उनमें कोईभूखा होय उसको भोजनदेवै किसीको निषेध न करै इसविधिसे जो पुरुष अग्निदानकरै वह दिव्यविमानमें बैठ ब्रह्मलोक को जाताहै वहां साठहजारवर्ष सुखभोगकर भूमिपरजन्म लेताहै औ चतुर्वेदवेत्ता यज्ञकरनेहारा आरोग्य धनवान् औ तेजस्वी ब्राह्मण होताहै जो पुरुष चैत्य देवालय सभा घर आदि में हेमन्त औ शिशिर ऋतुके बीच जीवों के सुखदेनेहारी अँगीठी दोनोंकाल देते हैं वे सब सुखभोगकर स्वर्गको जाते हैं ॥

एकसौ तिरपनका अध्याय॥

पुस्तक दान औ विद्यादानका विधान, औ फल॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अनेकप्रकार के गोदान औ भूमिदानके विधान माहात्म्यसहित आपके मुखसे श्रवणकिये अब हम विद्यादानका माहात्म्य श्रवण कियाचाहते हैं आप कथनकरैं यह राजाका वचनसुन श्री कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज जिसप्रकार विद्या दान करना चाहिये औ दानसे जो फल होताहै वह हम बर्णन करते हैं शुभ मुहूर्त्तमें स्वस्तिकादि भूषित चतुरस्र मण्डलबनाय उसके मध्यमें पुस्तक को स्थापनकर गन्ध पुष्प आदि से उसका पूजनकरै पीछे लेखकका पूजनकर सुवर्णकीकलम औ चांदीकीदवात उसकोदेवै वह सुशील औ अप्रमादी लेखकपुस्तक लिखनेका आरम्भकरै मात्रा अनुस्वार संयुक्त पदच्छेद सहित लिखै औ एकाग्रचित्त होकर समबर्त्तुल न बहुत मोटे न अतिसूक्ष्म जिनके शिर समानहोयँ ऐसे अक्षरलिखे इसविधि शैव अथवा वैष्णव शास्त्र लिखवाय अन्तमें वस्त्र भूषण आदि से लेखकका पूजनकरै फिर उस पुस्तकको दोवस्त्रोंसे वेष्टनकर दक्षिणा सहित व्युत्पन्न प्रियंवद औ उत्तमवाचक ब्राह्मणको देवै अथवा सर्वसामान्य देवालय आदिमें उस पुस्तककोरक्खै औ जिसकी इच्छाहोय सोबांचै इसविधिसे जोपुरुषपुस्तक दानकरै वह तीर्थयात्राकरने औ यज्ञकरनेसेभी कोटिगुण अधिक फल पाताहै हजार कपिलागौ का विधिपूर्वक दान करनेसेजोफलहोताहै वह एकपुस्तकके देनेसे प्राप्तहोताहै पुराण रामायण औ महाभारतदेनेसे जोफल प्राप्तहोताहै

उसका कौन वर्णन करसक्ताहै प्रभातउठ जोपुरुष शिष्यों को वेदशास्त्र नृत्य गीत वेदांग आदि पढ़ावै वह धन्य है जो उपाध्याय को वृत्तिदेकर विद्यार्थियों को पढ़ावै उसने कौनदान न किया विद्यार्थियोंको भोजन वस्त्र भिक्षापुस्तक आदि के देनेसे मनुष्योंके सब मनोरथ सिद्धहोते हैं विद्या देनेहारा विवेक दीर्घजीवित धर्म अर्थ काम औ सम्पत्ति सबकुछदेताहै शास्त्र शस्त्र विद्याकलाआदि जोपुरुषसीखना चाहै उनका यथाशक्ति सहायकरना औ उनके ऊपर सदा उपकारकरनेकी इच्छारखनी हजार बाजपेययज्ञ विधिपूर्वक करनेसे जोफल प्राप्तहोता है वही विद्यादानसे भी होताहै शिव अथवा सूर्य्यके भवनमें जो पुरुष नित्य पुस्तक बँचवावै वह गौ भूमि सुवर्ण औ वस्त्रके दानका नित्य फलपाता है विद्याहीन पुरुष धर्म अधर्म नहीं जानसक्ता इसलिये सदा विद्यादानमें तत्पर रहना चाहिये तीनलोक चारवर्ण चार आश्रम औ ब्रह्मादिक देवता सब विद्यादान में प्रतिष्ठित हैं विद्यादान करनेहारापुरुष एककल्प विष्णुलोकमें निवास कर भूलोक में जन्मलेकर दाता भोगी रूप सौभाग्य युक्त दीर्घायु नीरोगपुत्र पौत्रयुक्त औ धर्मात्माराजा होताहै औ सौबर्ष राज्यकरताहै विद्यादानसे अधिक कोई दान जगत् में नहीं विद्यादान करनेहारा पुरुष गौ भूमि सुवर्ण हाथी घोड़े रथआदि सब दानोंका फल पाता है॥

एकसौचौवनका अध्याय॥

तुलादानका विधान औफल॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकाल में प्रियव्रत नाम राजा बड़ा प्रतापी औ धर्मात्मा हुआ जो

तीसहजारवर्ष राज्यकर सातोंद्वीप अपने सात पुत्रोंको दे विषयोंसे चित्तकोखैंच तप करनेकेलिये बनमें गमनकिया राजाको तपोबनमें प्राप्तहुयेसुन बड़े२ महात्मा औ तपस्वी मुनि राजाको मिलने आये राजानेभी विधिपूर्वक पाद्यार्घ्य आचमन आदिसे पूजनकर मधुर बचनों से कुशल प्रश्न पूछ उन सबको आसनपर बैठाया इसीअवसरमें ब्रह्माजी के पुत्र बड़ेतेजस्वी मानोदूसरेसूर्य पुलस्त्यमुनि वहां आये उनकोदेख राजासहित सब मुनि उठे औ बड़े सत्कार से उनको बैठाया पाद्यादिकोंसे उनकापूजनकिया पीछे अनेक प्रकार की कथा कहनेलगे उससमय मुनियों ने पूछा कि हे पुलस्त्य मुनि किसदान ब्रत नियम आदि से पुरुष औ स्त्रियों को सद्गति प्राप्तहोती है यह आप वर्णनकरैं आपके मधुर बचन श्रवण करनेकी हमको औ इस राजाप्रियब्रत को बड़ी अभिलाषाहै यह मुनियों का वचन सुन पुलस्त्य मुनि कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो अतिरहस्य सब दानों में उत्तम औ सब पाप हरनेहारा दान हम कहते हैं जिसके करनेसे ब्रह्महा गोघ्न पितृघ्न गुरुदारगामी झूठासाक्षीआदि अनेकपापी मनुष्य सबपापोंसे छूटदिव्य देहधारी होते हैं ब्रह्मलोक की इच्छाहोय तो कृच्छ्र चान्द्रायण आदि ब्रत करै परन्तु येकाय क्लेश ब्राह्मण भिक्षु औ विधवा नारियों के लिये कहे हैं राजा औ धनवान् गृहस्थ इस कृच्छ्रसाध्य धर्म को नहीं सम्पादन करसकते हैं मनुष्यों के बहिश्चर प्राण धनहैं इसलिये धनाढ्य पुरुषों को धन करके धर्मका अर्जन करनाचाहिये सब द्रव्यों में श्रेष्ठ औ देवताओं में मुख्य अग्निका सन्तान सुवर्ण है सुवर्ण दानसे सब पाप

दूरहोते हैं औ दिव्यदेह प्राप्तिहोती है इतनाकह पुलस्त्य मुनिने ऋषियों के औ राजाके प्रति तुलादान का विधान कहा श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज वहीविधान ऋषीश्वरों ने हमको कहा औ हम आपको श्रवणकराते हैं आप सावधानहोकर सुनें व्यतीपात अयन विषुव ग्रहण ग्रहपीड़ा दुःस्वप्न दर्शन कार्त्तिकी अथवा माघी पूर्णिमा इत्यादि पर्व दिनोंमें अथवा जब धनहोय उसीसमय यह दान करना चाहिये धर्मके समय तो यहीबिचारै कि मृत्यु ने हमारे केश पकड़ रक्खे हैं जो कुछ करलेवैं वही हमारा है जब श्रद्धाहोय उसीसमय दान आदि करने चाहिये श्रद्धासे ही फल होताहै अपने घरके अथवा देवालय के अङ्गनमें सोलहहाथ लम्बा चौड़ा औ पताका तोरणआदि से अलंकृत मण्डपबनाय उसके मध्यमें सात हाथ लम्बी चौड़ी औ एकहाथ ऊँची चतुरस्रवेदी बनाय वेदी के मध्य में विधिपूर्वक तुलाको स्थापनकरै दोहाथ भूमिमेंगाड़े औ चारहाथ स्तम्भ ऊपररक्खै चन्दन खदिर बिल्व शाक इंगुदी तिंदुक देवदारु औ श्रीपर्ण इनआठ वृक्षोंमेंसे किसीके काष्ठका स्तम्भ बनावै अथवा और किसी दृढ़ काष्ठवाले याज्ञिक वृक्षका स्तम्भ रचै उनकेऊपर उसी काष्ठका चार हाथ लम्बा तिर्यक्काष्ठ रक्खै उसमें छियानबे अंगुललंबे लोहपाश लगावै औ मध्यमें तुला पुरुष बनाय रत्न वस्त्र चन्दनआदिसे तुलाको भूषितकर स्तम्भोंकोभी पुष्पमाला औ वस्त्रोंकरके अलंकृतकरै तीन२मेखला औ योनिकरके युक्त हस्त प्रमाण चार कुण्ड बनावै ईशान कोण में हस्त प्रमाण वेदीबनाय उसकेऊपर ग्रह औ दिक्पालोंका पूजन

करै औ गन्ध पुष्प अक्षत फल वस्त्र आदिकरके शिवजी का पूजनकरै क्षीर वृक्षके तोरणबनावै मण्डपके चारोंद्वारों में पुष्पमाला रत्न पल्लव आदिसे शोभित कुम्भ सप्तधान्य के ऊपर स्थापनकरै ऋग्वेद आदि जाननेहारे ब्राह्मणोंको क्रमसे पूर्वादि दिशाओं के कुण्डपर हवनके लिये नियुक्त करै कई ऋषीश्वरोंका मतहै कि सोलह ऋत्विक् हवन के लिये नियुक्त करनेचाहिये प्रत्येक ऋत्विक्को दो २ ताम्र-पात्र औ एक २ आसनदेवै तिल घृत समिधा विष्टरपुष्प कुश स्रुक् स्रुवआदि सबहवनकी सामग्री एकत्रकरै लोक-पालों के रंग की पताका दिशाओं में लगावै औ बीचमें पंचरंग का महाध्वज खड़ाकरै इसप्रकार सब सामग्री स-म्पादनकर ब्राह्मण वर्द्धकी अर्थात् बढ़ई औकारीगरकावस्त्र भूषणआदि से सत्कारकरै पीछे पूर्वदिनमें यजमान स्नान कर शुक्लवस्त्र पहिन दिक्पालोंको बलिदेवै उस समय अ-नेक प्रकारके शंख तूर्य आदि बाजे बजैं औ वेदध्वनि होय अब हम बलि मन्त्र कहते हैं (एह्येहिसर्वामरसिद्धसाध्यै रभिष्टुतोवज्रधरामरेश । गन्धर्वयक्षाप्सरसांगणेनरक्षाध्व रंनोभगवन्नमस्ते) ॐमिन्द्रायनमः (एह्येहिसर्वामरहव्य वाहमुनिप्रवीरैरभितोभियुष्ट । तेजोवतांलोकगणेनसार्द्धम माध्वरंरक्षकतेनमस्ते) ॐमग्नयेनमः (एह्येहिवैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चितदिव्यमूर्ते । शुभाशुभानांचकृताम धीश शिवायनःपाहिमखंनमस्ते) ॐयमायनमः (एह्येहि रक्षोगणनायकत्व विशालवेतालपिशाचसंघैः । ममाध्वरं पाहिपिशाचनाथ लोकेश्वरस्त्वंभगवन्नमस्ते) ॐनिर्ऋ तयेनमः (एह्येहियादोगणवारिधीनां गणेनपर्जन्यसहाप्स

रोभिः। विद्याधरेंद्रामरगीयमान पाहित्वमस्मान्भगवन्नम स्ते) ॐवरुणायनमः (एह्येहिवायोममरक्षणाय मृगाधि रूढःसहसिद्धसंघैः। प्राणाधिपःकृष्णगतेःसहायो गृहाणपू जांभगवन्नमस्ते) ओंवायवेनमः (एह्येहियक्षाधिपराज राज सुयक्षरक्षोगणपूज्यमान। धनादिनाथोनरवाहनस्त्वं गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते) ॐकुबेरायनमः(एह्येहिगङ्गाधर भूतनाथसुरासुरैःपूजितपादपद्म।देवेशदक्षाध्वरनाशकारिन् रक्षाध्वरंनोभगवन्नमस्ते) ॐमीशानायनमः (एह्येहिपा तालधराहिनाथ नागांगनाकिन्नरगीयमान। रक्षोनरेंद्राम रलोकनाथ नागेशरक्षाध्वरमस्मदीयम्) ॐमनन्तायनमः (एह्येहिविश्वाधिपतेमुनींद्र लोकेनसार्द्धंपितृदेवताभिः। विभोभवत्वंसततंशिवायपितामहंत्वांसततंनतोऽस्मि) ॐ ब्रह्मणेनमः (त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणिचराणिच। ब्रह्मविष्णुशिवैःसार्द्धंरक्षांकुर्वन्तुतानिमे। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयोमुनयोगावोदेवमातरएवच। सर्वेममाध्वरेरक्षांप्रकुर्वन्तुमुदान्विताः) इन मन्त्रोंसे सब दे- वताओंका औ दिकपालोंका पूजनकर बलि देवै कटक कुं- डल कंठभूषण अंगुलीयक औ अनेक प्रकारके विचित्र वस्त्र ब्राह्मणोंको देवै औ ब्राह्मणोंसे द्विगुण वस्त्र भूषण आदि करके गुरुका पूजन करै फिर ब्राह्मण आधार औ आज्य भागकरके प्रणवादि स्वाहांतनाम मन्त्रोंसे हवन करैं यहां जो देवता स्थापन किये होयँ उनके नामसे औ ग्रहलोक पाल बनस्पति ब्रह्मा विष्णु शिव आदिके नामसे होमकरैं होमके अन्तमें अनेकप्रकारके मंगल शब्दहोयँ औ शुक्ल वस्त्र पहिन तुलाकी तीन प्रदक्षिणाकर यजमान पुष्पांजलि

लेकर (नमस्तेसर्वदेवानांशक्तिस्त्वंशक्तिमास्थिता। साक्षीभूताजगद्धात्री निर्मिताविश्वयोनिना। एकतःसर्वसत्यानि तथानृतशतानिच । धर्माधर्मकृतांमध्ये स्थापितासिजगद्धिते। त्वंतुलेसर्वभूतानांप्रमाणमिहकीर्तिता । मांतोलयंतीसंसारादुद्धरस्वनमोस्तुते । योसौतत्त्वाधिपोदेवःपुरुषःपंचविंशकः। सएषोधिष्ठितोदेवस्त्वयितस्मान्नमोनमः। नमोनमस्तेगोविंद तुलापुरुषसंज्ञक । त्वंहरेतारयस्वास्मानस्मात्संसारकर्दमात्) ये मन्त्रपढ़ पुष्पांजलिदेवै पीछे पुण्यकालके बीच परमात्माको प्रणामकर भूषण वस्त्र आदिसे अलंकृतहो खड्ग कवच ढाल आदि धारणकर तुलाके ऊपर चढ़ै औ दूसरे ओर अन्न दधि सुवर्ण आदि चढ़ावै इतना तुला द्रव्य चढ़ावै कि वह पलड़ा भूमिपर टिकजाय क्षणमात्र बैठ (नमस्तेसर्वभूतानां साक्षिभूतेसनातनि। पितामहेनदेवित्वं निर्मितापरमेष्ठिना।त्वयाधृतंजगत्सर्वंसहस्थावरजंगमम्। सर्वभूतात्मभूतस्थे नमस्तेविश्वधारिणि) ये मन्त्र पढ़ै पीछे तुलासे उतर आधातुला द्रव्य गुरु को औ चतुर्थांश ऋत्विजोंको देकर शेषचतुर्थांश दीनअनाथ औ ब्राह्मणोंको बांटदेवै तुलाद्रव्य को बहुतकाल घरमें न रक्खै घरमें रखने से शोक भय औ व्याधि होती हैं इसी विधानसे चांदी औ कर्पूरकी भी तुलाकरतेहैं सौभाग्यकी इच्छावाली स्त्री केसर लवण औ गुड़की तुलाकरतीहैं इस विधिसे अन्न आदि करके जो स्त्री पुरुष तुला दानकरैं वे उत्तम अप्सराओं करकेयुक्त गन्धर्व नगरके समान अनेक पुष्प फलयुक्त वृक्षोंसे भूषित शय्या आसन पताका घण्टा आदिसे अलंकृत सबऋतुओंमें सुखदेनेहारे जिसमें मोति-

योंका झालर लटकती हैं ऐसे मनोहर विमानमें बैठ सूर्य लोकको जातेहैं वहां एक कल्प सुख भोगकर विष्णुलोक विश्वेदेवोंकेलोक इन्द्रलोक धर्मराजलोक वरुणलोक कुबेर लोक आदिमें करोड़ों कल्प निवासकर मनुष्यलोकमें जन्म ले बड़ाधर्मात्मा दानी औ शत्रुओंका क्षयकरनेहारा राजा होताहै जो इसदान माहात्म्यको भक्तिसे श्रवणकरै वहभी त्रिविध पाप से छूटता है ब्रह्मा विष्णु औ शिव से उत्तम कोई पूजनीयदेवता नहीं अश्वमेधके समान यज्ञनहीं गंगा सम तीर्थ नहीं औ तुलापुरुषके तुल्य दान नहींहै ॥

एकसौ पचपनका अध्याय ॥

हिरण्यगर्भदानका विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र कोई और भी ऐसा दान अथवा व्रतकेहै जिसके करनेसे आयुष्यश औ ऐश्वर्यकी वृद्धिहोय यह राजाका बचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज लोकोंके हितके लिये हम वह उपाय कहते हैं कि जिसके करनेसे हमारे समान मनुष्यहोजायँ व्रत उपवास तीर्थयात्रा महादान यज्ञ वेदाध्ययन आदिसे विष्णुलोक प्राप्तहोताहै जो देवताओं को भी दुर्लभ है जो पुरुष गो ब्राह्मणके निमित्त प्राण त्यागै प्रयागमें अनशन व्रतकरै अथवा शिवाराधनकरै वहब्रह्म लोकको जाता है यह सनातनीश्रुति है अब हम आपके स्नेहसे हिरण्यगर्भ नामक दानका विधान कहतेहैं जिसके करनेसे इनकर्मोंके समान फलप्राप्तहोय अग्निकासन्तान सुवर्णहै सब धातुओंमें श्रेष्ठ औ पवित्र है उसीका पर्याय नाम हिरण्यहै जो पुरुष भक्तिसे ब्राह्मणको सुवर्ण देवै वह

हमारे तुल्यहोताहै अयन विषुव ग्रहण व्यतीपात कार्त्तिकी पूर्णिमा जन्म नक्षत्र ग्रहपीडा दुःस्वप्न दर्शनआदि कालों में प्रयाग पुष्कर नैमिष अर्बुदाचल गंगा यमुना गंगासागर संगम और भी पुण्य नदियों के तटपर यह दान देना चाहिये अथवा घर देवालय बाग तड़ाग आदि पवित्र स्थलमें यहदानकरै प्रथम भूमिशोधनकर बारहहाथलंबा चौड़ा मण्डप बनावै उसको स्तम्भ पताका आदिसे अलंकृतकर मध्यमें पांचहाथकी वेदीबनाय मध्यमें हिरण्यगर्भ रचै अब हम उसका बिधान कहतेहैं ब्राह्मणोंसे स्वास्तिवाचनकराय वस्त्र भूषण आदिसे शिल्पी अर्थात् कारीगरका पूजनकर कर्मका आरम्भकरै उत्तम सुवर्ण से हिरण्यगर्भ बनावै चौंसठ अंगुल उसका दैर्घ्य कहाहै मूलमें उसका विस्तार त्रिभाग हीनकरना चाहिये मध्यमें बर्तुलकर्णिका दशपत्र औ ग्रंथिवर्जित नालबनाय नीचेताम्रका पीठरचै उसके समीप सुवर्णका कमण्डलु छत्र जड़ाऊ पादुकाआदि सब उपकरण स्थापनकरै फिर वेदघोष करतेहुये ब्राह्मण उसको मण्डपमेंलाकर वेदीमें एकद्रोण तिलोंकेऊपर स्थापनकरैं पीछे सबको कुंकुमसे लिप्तकर रेशमी बस्त्रोंसे ढक पुष्प मालाओंसे अलंकृतकर धूप दीप आदिसे पूजनकर (भूलोकप्रमुखालोका स्तवगर्भेव्यवस्थिताः। ब्रह्मादयस्तथादेवा नमस्तेभुवनोद्भव ॥ नमस्तेभुवनाधार नमोवैभुवनेश्वर। नमोहिरण्यगर्भाय गर्भेयस्यपितामहः) यह मन्त्र पढ़ पूजन कर एक रात्रि उसका अधिवासन करै वेदी के चारोंओर चतुरस्र चारकुण्ड बनावै जिनमें चारवेद जाननेहारे सुशील ब्राह्मणक्रमसे मौनपूर्वक हवनकरैं ब्रह्मस्थान

मेंभी उतनेही ब्राह्मण नियुक्त करै वेभी उत्तम भूषण औ नये वस्त्र पहिने होयँ गन्ध धूप आदि सहित दो २ ताम्र पात्र सबकोदेवै वेदीके ईशानकोणमें ग्रहवेदी बनायउसके ऊपर ग्रह दिक्पाल औ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरकी सुवर्णकी मूर्त्ति स्थापन कर गन्ध पुष्प वस्त्र आदि से उनका पूजन कर पताका तोरण आदि से मण्डपको अलंकृत करै औ द्वारोंमें रत्नयुक्त दो २ कलश स्थापनकरै तुलादानोक्त रीति से दिक्पाल बलि देवै पलाश की समिधा हवन के लिये उत्तमहोती हैं तिल गौके घृत औ समिधाओंकरके व्याहृतियों से औ नाम मंत्रोंसे दशहजार अथवा पांच हजार आहुतिदेवै फिर पर्वकेसमय यजमान स्नानकर श्वेतवस्त्र पहिन हिरण्यगर्भ का पूजन करै औ (नमोहिरण्यगर्भाय विश्वगर्भायवैनमः। चराचरस्यजगतो गृहभूतायवैनमः॥ मात्राहंजनिपूर्वेण मर्त्यधर्मासुरोत्तमः। तद्गर्भसम्भवानद्यो देवदेव्योभवाम्यहम्) यह मन्त्रपढ़ भक्तिसे उसकी प्रदक्षिणाकरै बामहस्तमें सुवर्णका धर्मराज औ दहिनेमें सूर्य लेकर दोनों जानुओंके बीच शिरकरके हिरण्यगर्भको उठावै पीछे ब्राह्मण गर्भाधान पुंसवन सीमन्तोन्नयन औ जातकर्म संस्कार हिरण्यगर्भका करैं इतना काल यजमान किसीका मुख न देखै फिर उठ प्रदक्षिणाकर वेदघोष पूर्वक हिरण्यगर्भको स्नानकरावैं सुवर्ण चांदी ताम्र अथवा मृत्तिकाके आठ कलश दही अक्षत पुष्प पल्लव आदिसे भूषित लेकर (देवस्यत्वा) इत्यादि मन्त्रसे आठ ब्राह्मण उसका अभिषेककरैं औ (आद्यजातस्यतेङ्गानि अभिषिंच्यामहेवयम्। दिव्येनान्नेनचायुष्मन् चिरजीवीभवेत्ततः) यह मन्त्र पढैं

फिर यजमान संकल्प पूर्वक वह हिरण्यगर्भ ब्राह्मणों को देवै यज्ञके सबउपकरण गुरुके अर्पणकरै पादुका छत्र जूता वस्त्र आसन भोजन आदि सब सभासद ब्राह्मणोंको देवै दीन अन्ध कृपण आदिको अनिवारित भोजन देवै इस विधिसे जो यह दानकरै वह अपने कुलका उद्धार करता है औ आप भी स्वर्गको जाताहै भक्तिसे इस दानका करने हारा पुरुष पांच योजन लंबे चौड़े बापी कूप तड़ाग बाग सरोवर प्रासाद आदिसे शोभित सैकड़ों उत्तम नारियों करके सेवित वेणु वीणा मृदंग आदिके मनोहर शब्दोंसे पूरित मणिमय भूमिका औ जड़ाऊ वेदियों करके अलंकृत हजारस्तम्भ औ विचित्र पताकाओं करके भूषित सूर्य के समान प्रकाशवान् विश्वकर्माके बनाये बिमानमें बिराजमानहो विद्याधरों करके सेवित स्वर्गको जाता है वहां सौ मन्वन्तर पर्यंत इन्द्रके समान सुख भोगकर भूलोकमें जन्म ले पराक्रमी धार्मिकसत्यवादी ब्रह्मण्यगुरुभक्त औ शत्रुओं को जीतनेहारा दश जन्म तक सम्पूर्ण जम्बूद्वीपका राजा होताहै जो पुरुष इस विधानको श्रवणकरै वह सौ वर्ष से भी अधिक स्वर्ग सुख भोगताहै इस विधि हिरण्यगर्भ बनाय सबसंस्कारकर उसके बीचसे निकल ब्राह्मणको भक्ति पूर्वक देवै तो मार्कंडेय की भांति दिव्य देह धार स्वर्ग में निवास करता है ॥

एकसौछप्पनका अध्याय ॥

ब्रह्मांडदानका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम अगस्त्यजीका कहा ब्रह्मांडदान कहते हैं जिस दानके क-

रनेसे तीनप्रकारके पाप निवृत्त होते हैं औ धन यश आयुष् मंगल औ सद्गतिकी प्राप्ति होती है आप प्रीतिपूर्वक श्रवण कीजिये एक वितस्तिसे सौ अंगुल पर्यंत लम्बा चौड़ा यथाशक्ति सुवर्णका ब्रह्मांड बनावै उसमें देवता असुर मनुष्य गन्धर्ब नाग राक्षस नदी समुद्रपर्वत सरोवर विमान आदि बनावै औ बीचमें मेरुपर्वत जिसके तीनों शिखरोंपर ब्रह्मा विष्णु औ शिवकी पुरीरचै आठों दिग्गज बनावै औ चौदह भुवन कल्पनाकरै दोकलशों करके युक्त औ सम्पुटाकार ब्रह्मांड बीसपल सुवर्ण से अधिक सुवर्ण करके बनवावै फिर अयन विषुव ग्रहण आदि कालों में पुष्प मंडपिका बनाय उसमें द्रोणभर तिलके ऊपर ब्रह्मांड को स्थापनकरै औकेसरचन्दनसे चर्चितकरदोवस्त्रोंसे ढक गन्ध धूप आदिसे उसका पूजनकरै उसके चारों ओर पूर्ण कलश स्थापनकरै अठारह प्रकारके धान्यएकरद्रोण वहां रक्खै खड़ाऊं जूताछतरी पात्रदर्पण भोजन आदि सब सामग्री भी उसके समीप स्थापनकरै इसविधि घरमें अथवा मण्डपमेंब्रह्मांडस्थापनकर हस्त प्रमाण चतुरस्त्र कुंडबनावै उसमें चारों वेदजाननेहारे चार ब्राह्मणवस्त्रभूषण आदिसे अलंकृतहोकरहवनकरैं औउपाध्याय तथाराजाका पुरोहित भी हवनकरैं ग्रहयज्ञ विधानसे हवनकरैं विष्णु शिव ब्रह्मा आदि देवताओं के नाम मन्त्रोंसे तिलोंकी आहुति देकर दशहजार आहुति व्याहृतियों करके देवैं औ ब्राह्मण रुद्र पाठभी करैं फिर यजमान स्नानकर श्वेत वस्त्र पहिन सब उपचारोंसे ब्रह्मांडकापूजनकर पुष्पांजलिले (नमोजगत्प्रतिष्ठाय विश्वधाम्नेनमोस्तुते । वाङ्मनोतीतरूपाय ब्रह्मांड

शुभकृद्भव ॥ ब्रह्मांडोदरवर्त्तीनि यानिभूतानिकानिचित्। तानिसर्वाणिमेतुष्टिं प्रयच्छन्त्वतुलांसदा ॥ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च लोकपालास्तथाग्रहाः । नक्षत्राणितथानागा ऋषयोमरुतस्तथा ॥ सर्वेभवन्तुसुप्रीताः सप्तजन्मांतराणिमे) ये मन्त्रपढ़ पुष्पांजलिदेवै औ दक्षिणा सहित वह ब्रह्मांड ब्राह्मणके अर्पणकरै ॥

सत्ययुगकेबीच बड़ाऐश्वर्य्यवान् औ दशहजार हाथियोंका बल धारण करनेहारा सुद्युम्न नाम राजा हुआ वह तीसहजार बर्ष निष्कण्टक राज्यकर विरक्त हो बनमेंगया वहां बहुतकाल उग्रतप कर अन्तसमय दिव्य विमानपर आरूढ़हो इन्द्रादिलोकोंको उल्लंघन करताहुआ ब्रह्मलोक में प्राप्तहुआ ब्रह्माजीनेभी राजाका बड़ासत्कार किया औ आसनपर बैठाया राजाभी सुख पूर्वक वहां निवास करने लगा एक दिन राजाने ब्रह्माजी से पूछा कि महाराज मैंने कौन ऐसा शुभकर्म किया कि जो आपके समीप निवास पाया यह आप कृपाकर मुझे बतावैं तब ब्रह्माजी कहने लगे कि हे राजन् तुमने सुवर्णका ब्रह्मांड दानकर ब्राह्मण को दिया उसदानके प्रभावसे तुम हमारेलोकमें प्राप्तभये ब्रह्माण्डदान बिना और किसीप्रकार से हमारा लोकनहीं प्राप्तहोता अब तुम कल्पान्तमें हमारे साथ मुक्तिको प्राप्त होगे धन यश आयुष् औ सर्वप्रकारके सुख देनेहारा ब्रह्मांड दान जिसने किया उसने सब दान किये ॥

एकसौसत्तावनका अध्याय ॥

भुवनप्रतिष्ठाका विधान औ फल ॥

राजा युधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप

भुवनप्रतिष्ठाका विधान कहैं यह राजाका वचन सुन श्री-
कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज लोकोंके उपकार
के लिये आपने बहुत उत्तम बातपूछी अब हमपरम रहस्य
भुवन प्रतिष्ठाका बिधान संक्षेप से कहते हैं भुवन प्रतिष्ठा
करनेसे देव असुर नाग गन्धर्व यक्ष राक्षस प्रेत पिशाच
भूतआदि सबकीप्रतिष्ठाहोजातीहै पहिले उत्तममुहूर्त्तदेख
सात हाथ लम्बा चौड़ा दृढ़ स्वच्छ श्वेतवर्ण पट बनवाय
उसमें चित्रकार से सब भुवन लिखवावै तरुण आरोग्य
रूपवान् औ चतुर चित्रकारको बुलाय वस्त्र भूषण लेपन
पुष्प आदिसे उसका पूजनकर चित्रकर्ममें नियुक्तकरै उस
समय सब ब्राह्मण औ आचार्यकाभी वस्त्र भूषण आदि
से अर्चनकरै ब्राह्मण वेदध्वनि औ पुण्याहवाचन करैं औ
शंख भेरी आदिके अनेक मंगलशब्द होयँ इस विधि से
आरम्भकर पुराणोक्त विधिसे सब भुवन लिखवावै मध्यमें
जम्बूद्वीप उसकेमध्यमें मेरुपर्वत जिसके तीनों शिखरोंपर
ब्रह्मा विष्णु शिवकी पुरी औ दिशाओंमें अष्टदिक्पालपुरी
लिखवावै सात द्वीपों करके युक्त पृथिवी सात कुलाचल
सात समुद्र नदीनद सरोवर सप्तपाताल भूर्भुव आदि सात
लोकब्रह्मादि देवताओंके लोक ध्रुवमार्ग ग्रह औ तारागणों
करके वेष्टित सूर्यदेव दानव गन्धर्व यक्ष राक्षस नाग ऋषि
मुनि गौ वेदमाता गरुड़ आदि पक्षी औ ऐरावत आदि
आठ दिग्गज उसमें लिखै औ उसको जल तेज वायु आ-
काश अहंकार महत्तत्त्व अव्यक्त मन तमोगुण रजोगुण
सत्वगुण करके उत्तरोत्तर वेष्टित कल्पनाकर सबको पुरुष
करके भीतर बाहर आवृत माने इस भांति चित्रपट बन-

वावै फिर अति मनोहर मण्डप बनाय उसके मध्यमें उसको स्थापनकरै औ चतुरस्र हस्तप्रमाण चारकुंड बनवाय उनमें दो २ ब्राह्मणोंको हवनके लिये नियुक्तकरै ब्राह्मण भी वस्त्र भूषण आदिसे अलंकृत हो चित्र पटस्थ देवताओंके नाम मन्त्रोंसे हवनकरैं यजमान भी स्नानकर श्वेतवस्त्र पहिन आचार्य सहित गन्ध पुष्पादि करके पटका पूजनकर (ब्रह्मांडोदरवर्त्तीनि भुवनानिचतुर्दश। तानिसन्निहितान्यत्र पूजितानिभवंतुमे॥ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रोह्यादित्यावसवस्तथा। पूजितासुप्रतिष्ठाश्चभवन्तुसततंमम) ये मन्त्रपढ़े औ प्रदक्षिणा कर अनेकप्रकारके भक्ष्य भोज्य नैवेद्य लगाय रात्रिको जागरणकरै अनेक प्रकारके बाजे बजैं वेदध्वनि होय गीत नृत्य आदि करके बड़ा उत्सवकरावै प्रभात होतेही स्नानकर वस्त्र भूषण पहिन पूर्वोक्त रीति से चित्रपटका पूजनकर सौ गौ ऋत्विजोंको देवै फिर सुन्दर दृढ़ रथलाकर पताका ध्वज आदिसे उसको अलंकृतकर दो हाथी उसमें जोतै हाथी न होयँ तो घोड़ेही रथमें लगावै उसपर चित्रपटको रखहजारमोहर ब्राह्मणोंको बांटदेवालयके बीचचित्रपटको पहुंचावै वहां उसको स्थापनकर महापूजाकरै औ बड़ा उत्सवकरै उत्तमछत्र घंटाध्वज चामर आदि उपकरण चढ़ावै गुरु औ ब्राह्मणोंको यथाशक्ति दक्षिणादेवै दीन अंध कृपण आदिको अनिवारित भोजन दिलावै औ अपने मित्र स्वजन बन्धु आदिकोभी भोजन करावै इस विधानसे जो पुरुष अथवा स्त्री सार्वलौकिकी प्रतिष्ठाकरै उसने सचराचर त्रैलोक्य स्थापनकिया औ अपने कुलका उद्धारभी किया जबतक वह चित्रपट वहां स्थापितरहै तबतक उसकी अ-

क्षयकीर्त्ति त्रैलोक्य में फैलती है औ जितने दिन लोकमें कीर्त्तिरहे उतने हजारवर्ष भुवनप्रतिष्ठा करनेहारा स्वर्ग में निवास करताहै गन्धर्व औ अप्सरा उसकी सेवामें रहते हैं बहुत काल स्वर्ग सुखभोग पुण्यक्षय होनेपर भूमि पर जन्मले धर्मात्मा दीर्घायु ऐश्वर्यवान् प्रतापी औ पुत्रपौत्र आदि करके युक्त दश जन्मपर्यन्त राजा होताहै पूर्वकाल में बड़ाप्रतापी रघुनाम चक्रवर्त्ती राजाहुआहै जिसने सब भूमिको जीता औ दैत्यों को मार स्वर्ग में इन्द्रका राज्य जमाया एक दिन वह राजा अपनी सभामें बैठाथा उसी अवसरमें ब्रह्माजीके पुत्र पुलस्त्यमुनि वेद वेदांगके पार-गामी अपने शिष्योंसहित वहांआये राजाने उनको बड़ी भक्तिसे पाद्यअर्घ्य मधुपर्क आदिसे पूजनकर आसनपर बैठाया औ बड़ेविनयसे यहपूछा कि महाराज इतनाऐश्वर्य ऐसा अव्याहत तेज बल पुष्टि धनधान्य पुत्र पौत्र आदि सब पदार्थ मैंने किसदान तप अथवा नियमके प्रभाव से पाय यहआपकृपाकर बर्णनकरैं आप त्रिकालज्ञहैं यहराजा का बचन सुन पुलस्त्यमुनि कहनेलगे कि हे राजन् सात जन्म पहिले बड़ेधनाढ्य पुत्र भृत्यआदि सहित सत्यवादी औ धर्मात्मा वैश्य तुमथे तुम ने पुराण श्रवण किया औ अनेक दान दिये औ भुवन प्रतिष्ठाकरी उसीके प्रभावसे तुम सात जन्म से राजाहोते आते हो औ आगेभी सात जन्म राजा होगे औ अन्तमें मुक्ति पावोगे जो तुमने पूछा वह सब हमने कहा जो पुरुष अथवा स्त्री भुवनप्रतिष्ठाकरैं वे कृतकृत्य होतेहैं इतना कह पुलस्त्यमुनि अपने धामको गये हे महाराज धर्मकी वृद्धि अभीष्टकीसिद्धि औ पापका

क्षय इस भुवनप्रतिष्ठासे होताहै ऐसा कोई कार्य नहीं जो इस भुवनप्रतिष्ठाके करनेसेसिद्ध नहोय इसलिये यह अवश्य करनी चाहिये॥

एकसौ अट्ठावनका अध्याय॥

नक्षत्रदानका फलसहित विधान॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र और तो सब दानोंका विधान आपके मुखसे श्रवणकिया अब आप नक्षत्रोंका दान कल्प वर्णन कीजिये यहराजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज एकसमय देवर्षि नारद द्वारकामें आयेथे उनको हमारी माता देवकीने यही बात पूछी उस समय नारदजीने जो नक्षत्रदान कहा वह हम वर्णन करते हैं कृत्तिका नक्षत्रमें घृत पायस करके साधु ब्राह्मणोंको सन्तुष्टकरै तो उत्तम लोकपावै रोहिणी नक्षत्र में घृत दुग्ध औ रत्न अनृण होने के लिये ब्राह्मणको देवै मृगशिरानक्षत्रमें सवत्सा दूध देनेहारी गौ ब्राह्मणको देवै तो विमानमें बैठ स्वर्गको जाय आर्द्रानक्षत्रमें तिलोंसहित कृसर देनेसे मनुष्य सब प्रकारके संकटोंसे छुटताहै पुनर्वसु नक्षत्रमें घृतपक्क अपूप ब्राह्मणको देवै तो उत्तम कुलमें जन्म पाकर यश लक्ष्मी औ रूप पावै पुष्यनक्षत्रमें सुवर्ण देवै तो कृतकृत्यहोकर दिव्यलोकमें चन्द्रमाकी भांति विराजमान होय आश्लेषानक्षत्रमें ब्राह्मणोंको चांदी देवै तो निर्भय औ शास्त्रवेत्ताहोय मघानक्षत्रमें तिलपूर्णशराव अर्थात् सकोरे देवै तो पशुवान् औ पुत्रवान् होय पूर्वाफाल्गुनीमें खण्डकापात्र ब्राह्मणको देवै तो पुण्यलोकोंमें जाय निवास करै उत्तराफाल्गुनीमें सुवर्णका कमल देवै तो सब बाधाओं

से छुट सूर्यलोकको जाता है हस्तनक्षत्रमें सुवर्णका हाथी बनाय ब्राह्मणको देवै तो दिव्य हस्ती पर आरूढ़हो इन्द्र-लोककोजाय चित्रा नक्षत्रमें उत्तमवृषभ औ अनेकप्रकार के सुगन्धद्रव्य देवै तो अप्सराओं के साथ नन्दन वनमें बिहारकरै स्वाती में जो पदार्थ अपने को अतिप्रिय होयँ उनका दानकरै तो बहुतयश औ अन्तमें सद्गतिपावै विशा-खामें उत्तम वृषोंकरके युक्त औ धान्य वस्त्र सहित शकट दानकरै तो सूर्य्यभगवान् सन्तुष्टहोतेहैं औ दानकरनेहारा पुरुष सब पापोंसे छुट उत्तमगति पाताहै अनुराधा नक्षत्र में कम्बल औ वस्त्र ब्राह्मणोंको देवै तो दिव्य सौवर्षसे भी अधिक स्वर्गमें देवताओंके समीप निवास करताहै ज्येष्ठा नक्षत्रमें फल औ शाक ब्राह्मण को देवै तो अभीष्ट गति पावै मूल नक्षत्रमें ब्राह्मणोंको फल मूलआदि देवै तो अ-पने पितरोंको प्रसन्नकरै औ उत्तम गतिपावै पूर्वाषाढ़ा में दधिपात्र कुलीन औ वेदवेत्ता ब्राह्मणको देवै तो पुत्रपौत्र पशु धन औ ऐश्वर्य्य पावै उत्तराषाढ़ा में घृत शहद औ फाणित अर्थात् बताशे ब्राह्मणोंको देवै तो सब काम पावै अभिजित् में घृत मधु सहित दुग्धदेवै तो स्वर्गमें निवास करै श्रवण नक्षत्रमें पुस्तक दानकरै तो विमानमें बैठ अ-पनी इच्छासे सब लोकोंमें विचरै धनिष्ठा नक्षत्रमें गोयुग देवै तो अनेकजन्मोंतक सुखीहोय शतभिषामें अगुरु औ चन्दनदेवै तो अप्सराओंके लोकमें जाय पूर्वाभाद्रपदामें राजमाषदेवै तो सब प्रकारके भक्ष्यभोज्यपावै औ जन्मा-न्तरमें सुखीहोय उत्तराभाद्रपदा में वस्त्र सहित जल पात्र ब्राह्मणको देवै तो पितरों को सन्तुष्टकरै औ सद्गति पावै

कांस्य दोहन युक्त धेनु रेवतीनक्षत्र में ब्राह्मण को देवै तो उसके सब मनोरथ सिद्धहोयँ औ जन्मान्तर में सद्गति पावै अश्विनीनक्षत्रमें उत्तम अश्वोंकरके युक्तरथ ब्राह्मण को देवै तो हाथी घोड़े रथ आदि पावै औ तेजस्वी होय भरणी नक्षत्रमें ब्राह्मणको तिलधेनु देवै तो उत्तम गौ यश औ सद्गतिपावै इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि हे महाराज यहनारदजीका कहा नक्षत्रकल्प आपको कथन किया इसके करने से सब पाप औ उपद्रव निवृत्तहोते हैं दानमें वारका औ कालका कुछनियम नहीं श्रद्धाही मुख्य है सब वेदोंको देख यह दानविधान ब्रह्माजीके पुत्र नारद नेकहाहै जोइसदानकोदेवै वहसबदानोंका फलपाताहै॥

एकसौ उनसठिका अध्याय॥

तिथिदानका फल सहित विधान॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज सब पाप औ विघ्न हरनेहारे तिथिदानका विधान हमकहते हैं जिसदान के करनेसे मानस वाचिक औ कायिक पाप उसीक्षण कट जाते हैं श्रावण कार्त्तिक बैशाख अथवा फाल्गुन के शुक्ल पक्षके आरम्भसे यह दान देना चाहिये वृत्त श्रद्धा सहाय औ सत्पात्रकी प्राप्ति जबहोय वहीउत्तम दानकालहै तीर्थ देवालय गोष्ठ अथवा घरमें ही श्रद्धा पूर्वक दान देवै तो अनन्त फल पावै प्रतिपदा के दिन ब्राह्मण औ ब्रह्मा का पूजनकर सुवर्णका अष्टदल कमल बनवाय सुगन्ध घृतसे पूर्ण ताम्रपात्रपर उसकोरख पुष्प धूपआदिसे उसकापूजन कर ब्राह्मणको देवै तो अभीष्ट लक्ष्मीपावै औ निष्कामहो यह दानकरै तो मुक्तिभागीहोय द्वितीयाके दिन सुवर्ण की

अग्निकी प्रतिमाबनाय गुड़घृतसे पूरित ताम्रपात्रमें रक्खै
औ उस पात्रको जलपूर्ण कलश के ऊपर स्थापनकरै फिर
व्याहृतियोंसे अष्टोत्तरशत आहुति घृत औ तिलों करके
दे पूर्णाहुतिदेवै औ वस्त्रमाला अनेकप्रकारके भक्ष्यभोज्यों
करके उसमूर्त्तिका पूजनकर ब्राह्मणको देवै औ (वह्निर्मेप्री
यताम्) यह वाक्य उच्चारणकरै तो जन्मभर किये पापोंसे
छुट वह्निलोकमें निवासकरै यह नारदमुनिने कहाहै तृतीया
के दिन सुवर्णकी गोधाबनाय ताम्र पात्रमें रख लवण के
ऊपर स्थापनकरै औ दो रक्तवस्त्रों से उसको आच्छादन
कर जीरा कुटकीके टुकड़े औ गुड़ उसके पासरखगन्ध पुष्प
धूप दीप नैवेद्यआदि से उसका पूजनकर ब्राह्मण को देवै
तो इतना फल होताहै कि जिसका वर्णन नहीं करसकते
सुवर्णके जहां प्रासाद हैं पायस के कर्दमयुक्त जहां नदी हैं
औ गन्धर्व अप्सरा जहां बसते हैं उनलोकों में वह पुरुष
बहुतकाल सुखभोगकर मर्त्यलोकमें जन्मले सुरूप सुभग
दाता भोगी धनाढ्य औ पुत्र पौत्रयुक्त होताहै औ स्त्री भी
इस दानकोकरै तो येसब फलपावै चतुर्थीकेदिन सुवर्णका
हस्ती बनाय कुशा सहित द्रोणभर तिलों के ऊपर स्थापन
कर वस्त्र पुष्प नैवेद्य आदिसे उसका पूजनकर ब्राह्मणको
देवै औ (गणेशःप्रीयताम्) यह वाक्य कहै जो पुरुष
यह दानकरै उसके किसीकार्यमें विघ्ननहींहोता औ सात
जन्मतक मत्तहस्तियोंका स्वामीहोताहै औ गजेन्द्रपरचढ़
सबलोक को जीतताहै पंचमी के दिन एक कर्षभर सुवर्ण
का नाग बनाय घृत दुग्ध पूर्णपात्र में उसको स्थापनकर
विधिपूर्वक पूजनकरै औ ब्राह्मणको देकर प्रणामकर क्षमा-

पनकरावै यहदान नागोंके उपद्रवको दूरकरताहै औ दोनों लोकोंमें सुखदेताहै औ सर्पकेकाटनेसे जो पुरुष मृतहुआ होय उसके उद्धारके लिये शिवजीने यह प्रायश्चित्त कहा है षष्ठीके दिन मयूरपरचढ़े शक्ति हस्त सुवर्णमाला पहिने ऐसी कार्त्तिकेयकी सुवर्णकी प्रतिमाबनाय द्रोणभर चावलों केऊपर स्थापनकर सब उपचारोंसे उसका पूजनकर कुटुम्बी ब्राह्मणकोदेवै इसदानका करनेहारापुरुष बहुतऐश्वर्य पाय अन्तमें स्वर्गको जाताहै औ शूद्र इसदानको करै तो जन्मांतरमें ब्राह्मण होय सप्तमी को सुवर्णकी सूर्यप्रतिमा बनाय सब उपचारों से उसका पूजनकर दक्षिणा सहित ब्राह्मणों को देवै तो गन्धर्व सन्तुष्ट होते हैं औ वह पुरुष सूर्यलोकमें निवास करताहै अष्टमीके दिन धुरन्धर वृषको दो श्वेतवस्त्र उढ़ाय उसके गलमें घंटा बांध पूजनकर ब्राह्मणको देवै औ (वृषध्वजः प्रीयताम्) यह वाक्य उच्चारण करै औ प्रदक्षिणाकर द्वारतक उसके साथ जाय इस दान के करनेहारे को शिवलोक प्राप्ति होती है वृषके स्कन्ध में चौदहभुवन निवास करतेहैं इसलिये वृषदान करनेसे चौदह भुवन दान करनेका फल प्राप्त होता है नवमीके दिन सुवर्णका सिंह बनाय नीलवस्त्रसे आच्छादितकर दुष्ट दैत्य निवर्हणी भगवतीका स्मरणकर मोतीके आठ पानोंसहित उत्तम ब्राह्मणको देवै तो सब उत्तम फलपावै औ वनदुर्ग कांतार आदिमें चौर व्याल आदि हिंसक जीवोंका कभी उसको भय नहीं होता औ अन्तसमय सुरासुरों करके पूज्यमान देवीलोकको जाताहै वहां बहुतकाल सुख भोगकर पुण्यक्षीण होनेसे मर्त्यलोकमें जन्मले धर्मात्मा राजा होता

है दशमीके दिन शालिके दश पिंडबनाय उनका पूजनकर लवण गुड़ जीरा निष्पाव तिल चावल उड़द दूध दही औ घृत सहित जो पुरुष ब्राह्मणको देवै उसके सब मनोरथ सिद्ध होते हैं औ बहुतकाल स्वर्ग सुख भोग उत्तम कुल में जन्मपाताहै एकादशीके दिन सुवर्णकी विश्वेदेव प्रतिमा बनाय ताम्रपात्रमें रख घृत पूर्णकलशके ऊपर स्थापनकर सब उपचारों से उसका पूजनकरै पीछे पौराणिक ब्राह्मण को देवै तो विष्णुलोक पावै द्वादशीके दिन गौ वृषमहिषी अश्व सुवर्ण सप्तधान्य गुड़ पुष्प फल रस घृत औ अनेक प्रकारके रस ये बारह पदार्थ यथाशक्ति एकत्रकर सबको वस्त्रसे आच्छादितकर उनका पूजनकरै पीछे सत्पात्र ब्राह्मणोंको देवै वह पुरुष बहुत कीर्ति औ ऐश्वर्य पाय अंत में विष्णुलोकको जाताहै वहां बहुतकाल निवासकर पुण्य क्षय होनेसे भूमिपर जन्मले यज्ञ करनेहारा दानी औ प्रतापी राजा होताहै औ सौ वर्ष जीता है त्रयोदशीके दिन सत्पात्र ब्राह्मणको स्नान कराय उत्तम वस्त्र पहिनाय गंध पुष्प आदिसे अलंकृतकर उत्तम भोजन करावै औ दक्षिणा देकर प्रेतनाथ रौद्र वैवस्वत महिष वाहन यम आदि धर्मराजके नाम उच्चारणकर प्रणाम पूर्वक उसको विसर्जनकरै इस विधिसे जो पुरुष यमराजका अर्च्चनकरै वह सब रोगों से छुटताहै औ यममार्गमें कष्ट नहीं पाता औ पितृलोक में बहुत काल निवासकर मर्त्यलोकमें जन्मले सुखी औ पुत्रवान् होताहै चतुर्दशीके दिन उत्तम कुम्भ सुवर्ण वस्त्र औ घंटा आदिसे भूषित वृषकुटुंबी ब्राह्मणको देवै तो शिवलोकको जाय वहां बहुतकाल सुखभोग तीनसौजन्म तक

आरोग्य धन औ उत्तम कुलमें जन्म पाताहै पूर्णमासी के दिन चांदीकी चन्द्र प्रतिमा बनाय गन्ध पुष्प नैवेद्य आदि से उसका पूजनकर वस्त्र भूषण सहित ब्राह्मणको देवै औ (क्षीरोदार्णवसम्भूत गगनांगनदीपक । उमापतिशिरोरत्न शिवनेत्रनमोनमः) यह मंत्रपढ़ै पीछे विधिपूर्वक वृषोत्सर्ग करै इस दानका करनेहारा प्रलय पर्यन्त अप्सराओं के साथ बिहार करताहै औ चन्द्रमाके समान कांतिमान् होता है जो पुरुष इस क्रमसे प्रतिपदा आदि तिथियोंमें दानकरै वह ब्रह्मलोक विष्णुलोक आदि में बहुतकाल बिहार कर अन्तमें शिवजीके साथ एकताको प्राप्त होताहै॥

एकसौसाठका अध्याय॥

वराहदानका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हेमहाराज अब हम सब पाप हरनेहारे पवित्र औ सब दानोंमें उत्तम वराहदानका विधान कहते हैं जो वराहभगवान्ने भूमिके प्रति कहा है संक्रांति ग्रहण द्वादशी यज्ञोत्सव बिवाह दुःस्वप्न दर्शन आदि कालोंमें अथवा जब श्रद्धाहोय तबहीं यह दानकरै कुरुक्षेत्र आदितीर्थ गंगाआदि नदी गोष्ठ देवालय अथवा अपनेघरके अंगनमें यहदान विधिपूर्वक कुटुंबी ब्राह्मणको देवै परन्तु वहब्राह्मण वेद वेदांग जाननेहारा सुशील औ सम्पूर्णांग होनाचाहिये ये देशकाल औ पात्र हमने कहे अब दानबिधान कहते हैं ईशान कोणमें गोबरसेलेपनकर उसपर कुशा बिछाय उसके ऊपर चार द्रोण तिलों करके वराहकीमूर्त्ति कल्पनाकरै जो चार द्रोणका सामर्थ्य नहोय तो एक द्रोण अथवा आढ़क अर्थात् चारसेर तिलोंकीही

बनावै सुवर्णका उसकामुख चांदीकी दंष्ट्रा बनाय पद्मराग मणिसे भूषितकरै सुवर्णकी बनमाला शंख औ चक्र उसके पास स्थापनकरै सुवर्णकी भूमिबनाय सबधान्य वस्त्र भूषण आदिसे शोभितकर उसकी दंष्ट्राकेऊपर स्थापनकरै चांदी के खुर औ कुशाके रोमबनाय वराहभगवान् को वस्त्रों से आच्छादितकरै फिर नवग्रहयज्ञ औ तिलों से होम करके (वराहाशेषदुःखानि सर्वपापफलानिच । त्वंमर्दयमहादंष्ट्र भास्वत्कनककुण्डल ॥ शंखचक्रासिहस्ताय हिरण्यकांति कायच । दंष्ट्रोद्धृतक्षितिभृते त्रयीमूर्त्तेनमोनमः) येमन्त्रपढ़ विधिपूर्वक पूजनकर प्रदक्षिणा औ नमस्कारकरै पीछे वस्त्र भूषण औ दक्षिणासहित ब्राह्मणकोदेवै इसका दानचरणमें करैइसविधिसे आचार्यको यहदानदे कुछ दूरतक पहुँचाने केलिये अनुगमनकरै औ क्षमापनकरावै इसदानके करने से जो पुण्य प्राप्तहोताहै उसकावर्णन कौन करसक्ताहै सब यज्ञ औ सबदान करने से जो फल प्राप्तहोताहै वह इस एक दानसेही मिलताहै वराहभगवान्ने जिसप्रकार भूमि का उद्धारकिया उसीभांति यहदान करनेहारा पुरुष अपने कुलका उद्धार करताहै औ विष्णुलोकको जाताहै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री शैव वैष्णव योगीआदि सबको यह दान करनाचाहिये वेदवेत्ता ब्राह्मणको जो पुरुष तिलोंका वराहबनाय सुवर्ण वस्त्रसहित देवै वह अपने पूर्वपुरुषोंका उद्धारकर मित्र कलत्रसहित स्वर्गको जाताहै ॥

एकसौ इकसठका अध्याय ॥

धान्याचलके दानका विधान औ फल ॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपकेमुख

से हम और भी दानोंका माहात्म्य श्रवणकिया चाहते हैं आपकथनकरैं जिनके करनेसे अक्षयपदकी प्राप्तिहोय यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज जो दानमाहात्म्य रुद्रने नारदको औ मत्स्यरूप भगवान् ने मनुको कथनकियाहै वह दशप्रकारका पर्वत दान हम आपको श्रवणकराते हैं जिसके करनेसे सब मनोरथ सिद्धहोते हैं औ उत्तम लोककी प्राप्ति होतीहै धान्याचल लवणाचल गुडाचल सुवर्णाचल तिलपर्वत कर्पासपर्वत घृतपर्वत रत्नपर्वत रजतपर्वत औशर्कराचल ये दशप्रकार के पर्वतदानहैं अब इनका क्रम पूर्वक हम विधान कहते हैं अयन विषुव व्यतीपात अवम् दिन शुक्ल तृतीया ग्रहण अमावास्या बिवाहोत्सव यज्ञद्वादशी पूर्णिमा औरभीपुण्य दिनोंमें येदान विधिपूर्वक करनेचाहिये तीर्थदेवालय गोष्ठ नदीसंगम आदि स्थानोंमें उत्तराभि मुख अथवा पूर्वाभिमुख चतुरस्र मण्डपबनाय गोबरसे लेपनकर कुशाबिछाय उसकेऊपर धान्यपर्वत बनावे हजार द्रोण धान्यका उत्तम पांचसौ द्रोणका मध्यम औ तीनसौद्रोण धान्यका निकृष्ट पर्वत होताहै इसप्रकार पर्वतबनाय सुवर्णके तीनवृक्ष उस पर लगावे पूर्वमें मोतीहीरे दक्षिणमेंगोमेद पुखराज पश्चिम में पन्ना नीलम औ पर्वतके उत्तरमें वैदूर्य औ पद्मरागरक्खै चन्दनके टुकड़े औ मूंगे उसमें स्थापनकर शुक्तिकीशिला कल्पनाकरै ब्रह्मा विष्णु शिव औ सूर्यकी सुवर्णकी मूर्त्ति उसके ऊपर स्थापन करै सुवर्ण रजत आदि धातु उसमें रक्खै घृतके झरने औ बस्त्रों के मेघ कल्पना करै पूर्वादि दिशाओं में क्रमसे श्वेत कृष्ण कर्बुर औ रक्तवस्त्र रक्खै

चांदीके इन्द्रआदि अष्टदिक्पाल स्थापनकरै अनेकप्रकार के फल पुष्प पर्वत में रख पंचरंगका वितान उसके ऊपर लगावै औ उसको पुष्पमालाओं से भूषितकरै इसप्रकार धान्यका मेरुपर्वत बनाय पूर्वदिशामें अनेक फल सुवर्णके कदम्ब वृक्ष औ अनेक वस्त्रादिकों से भूषित सर्वान्न का मन्दराचल स्थापनकरै दक्षिणमें चांदीका अथवा गोधूम का गन्धमादन पर्वत बनाय सुवर्णका जम्बूवृक्ष चांदीवस्त्र आदि से उसको अलंकृतकरै पश्चिम में तिलों का विपुलाचल स्थापनकरै औ उसको सुवर्णके अश्वत्थवृक्ष सुवर्णके हार वस्त्रआदिसे भूषितकरै उत्तरमें उड़दोंका सुपार्श्व पर्वत स्थापनकर सुवर्णके वटवृक्ष सुवर्णकी धेनु सुवर्ण रत्न वस्त्र सब रस फल पुष्प आदिसे उसको अलंकृतकरै इस प्रकार सब पर्वत बनाय पूर्वादि दिशाओं में हस्तप्रमाण चतुरस्र कुण्डबनावै उनमें चार वेदवेत्ता ब्राह्मण तिल घृत समिधा औ कुशाओंसे होमकरें पीछेयजमान स्नान आदि कर उन पर्वतोंका पूजनकरै औ हाथ जोड़ (त्वंसर्वदेवगणधामविधिं विरुद्धमस्मद्गृहेष्वमरपर्वतनाशयाशु । क्षेमंविधत्स्वकुरुशांतिमनुत्तमांमे संपूजितःपरमभक्तिमतामयाहि । त्वमेवभगवानीशोब्रह्माविष्णुर्दिवाकरः । मर्तामूर्तपरंबीजमतःपाहिसनातन । यस्मात्त्वंलोकपालानांविश्वमूर्त्तेश्चमण्डलम् । केशवार्कवसूनांचतस्माच्छांतिंप्रयच्छमे । यस्मान्नशून्यममरैर्नारीभिश्चशिरस्तव तस्मान्मामुद्धराशेषदुःखसंसारसागरात् । यस्माद्धैवरथेनत्वंभद्राश्ववर्षेणच । शोभसेमन्दरक्षिप्रमतस्तुष्टिकरोभव । यस्माज्जडानणिजंबूद्वीपेत्वंगन्धमादन । गन्धर्वर्वरशोभावानतःकीर्त्तिर्दृ

ढास्तुमे। यस्मात्त्वंकेतुमान्मौलौवैभ्राजेनवनेनच। हिरण्य जाश्वत्थशिखरस्तस्मात्तुष्टिंविधत्स्वमे उत्तरैः कुरुभिर्यस्मात्सावित्रेणवनेनच सुपार्श्वराजसेनित्यमतःश्रीरक्षयास्तुमे) ये मन्त्र पढ़ उन सबको अभिमन्त्रणकरै दूसरे दिन स्नान कर मध्यका मुख्यपर्वत गुरुके अर्पणकरै औ वे चारों दिशाओंके पर्वत उन चारों ब्राह्मणोंको देवै फिर चौबीस दश सात छः पांच अथवा एकही कपिला गौ दुग्ध देनीहारी गुरुको देवै यही विधान सब पर्वतोंके दानकाहै ग्रह लोकपाल पर्वत औ ब्रह्मादि देवताओंके नाम मंत्रोंसे हवनकरै उस दिन उपवास अथवा नक्तव्रतकरै औ (अन्नंब्रह्मयतःप्रोक्तमन्नेप्राणाःप्रतिष्ठिताः। अन्नाद्भवंतिभूतानिजगदन्नेनवर्द्धते। अन्नमेवयतोलक्ष्मीरन्नमेवजनार्द्दनः। धान्यपर्वतरूपेण पाहितस्मान्नगोत्तम) ये मन्त्रपढ़ै इस विधान से जो पुरुष धान्याचल दानकरै वह सौ मन्वन्तर पर्यंत स्वर्ग में निवास करताहै औ गन्धर्व अप्सरा आदि उसकी सेवा में रहते हैं औ पुण्य क्षय होनेपर राजा होता है जो पुरुष सुवर्ण वृक्षों करके शोभित औ चार विष्कम्भ पर्वतों सहित धान्याचल भक्तिसे ब्राह्मणको देतेहैं वे ब्रह्मलोकको जातेहैं॥

एकसौबासठका अध्याय॥

लवणाचलके दानका विधान औ फल॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हेमहाराज अब हम लवणाचल दान विधान कहते हैं जिसके करनेसे मनुष्यको शिवलोक प्राप्त होताहै सोलहद्रोण लवणका उत्तम आठ द्रोण का मध्यम औ चार द्रोण लवणका लवणाचल अधमहोता है इनमें यथाशक्ति लवणाचल बनाय उसके चतुर्थांशके

तुल्य चार विष्कम्भ पर्वत बनावै ब्रह्मादि देवता वृक्ष सरोवर लोकपाल धेनु आदि सब पूर्वरीति से बनाय विधि पूर्वक उसका पूजनकर (सौभाग्यरससंपूर्णःसंभूतोलवणोरसः । दानात्मकत्वेननमःपाहिपापान्नगोत्तम । यस्मादन्नरसाःसर्वेनोत्कृष्टालवणंविना । प्रियंचशिवयोर्नित्यंतस्माच्छांतिप्रदोभव । विष्णुदेहसमुद्भूतोयस्मादारोग्यवर्द्धनः तस्मात्पर्वतरूपेणपाहिसंसारसागरात्) ये मन्त्र पढ़ ब्राह्मण को देवै इस विधिसे जो पुरुष लवणाचलका दानकरै वह एक कल्प उमालोकमें निवासकर पुण्य क्षयहोनेसे धर्मात्मा औ पुत्र पौत्रयुक्त राजा होताहै औ सौबर्ष आयुष् भोगता है जो भक्तिसे लवणाचल दानकरैं वे विमानपर बैठ स्वर्ग को जायँ औ वहां गन्धर्व अप्सराओं करके सेवित बहुत काल सुख भोगकरैं ॥

एकसौतिरसठका अध्याय ॥

गुडपर्वतके दानकाविधान औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम गुड़ पर्वतके दानका विधान कहते हैं जिसके करनेसे स्वर्ग प्राप्ति होती है दशभार गुड़का उत्तम पांचभारका मध्यम औ तीन भार गुड़का निकृष्ट होताहै इसमें धान्याचलके विधान से विष्कम्भपर्वत वृक्ष देवता लोकपाल आदि बनावै औ उसी विधिसे होम पूजन आदिकर (यथादेवेषुविश्वात्माप्रवरोयंजनार्दनः । सामवेदस्तुवेदानांमहादेवस्तुयोगिनाम् ॥ प्रणवःसर्वमन्त्राणांनारीणांपार्वतीयथा । तथारसानांप्रवरःसदैवेक्षुरसोमतः ॥ ममतस्मात्पुरालक्ष्मींप्रयच्छगुडपर्वत । सुरासुराणांसर्वेषांनागयक्षर्क्षपत्रिणाम् ॥ निवासश्चासिपा

र्वत्यास्तस्मान्मांपाहिसर्वदा) ये मन्त्र पढ़ ब्राह्मणको देवै इस विधिसे जो पुरुष गुड़पर्वत दानकरै वह गन्धर्वों करके पूजित गौरीलोकको प्राप्त होताहै औ सौ कल्प पर्यंत वहां सुख भोगकर दीर्घायुष्, बड़ा प्रतापी औ चक्रवर्त्ती राजा होताहै पूर्वकालमें मरुत्तराजाकी सुलभा नाम बड़ी पतिव्रता औ सुशीलारानी थी राजामरुत्तका भी उसमें बहुत अनुरागथा एक समय वहां दुर्वासामुनि आये उनका राजा औ रानीने बड़ा सत्कार किया औ पाद्य अर्घ्य दे आसन पर बैठाय बड़े विनय से रानी ने पूछा कि महाराज किस पुण्यके प्रभावसे मेरे पतिका मुझमें इतना अनुरागहै औ सब सपत्नीभी मेरा हित चाहती हैं आप कृपाकर कथन कीजिये यह रानीका वचन सुन दुर्वासामुनि कहनेलगे कि हे सुलभे हम तेरे पूर्व जन्मका वृत्तांत कहते हैं सावधान होकर श्रवणकर पूर्वजन्ममें गिरिव्रजपुरके बीच रहनेवाले वैश्यकी तू भार्याथी सदा पतिकी सेवामें तत्पर रहती एक समय तैंने ब्राह्मणोंके मुखसे दान माहात्म्य श्रवण किया उसमें विशेष करके गुड़पर्वत दानका माहात्म्य सुना औ विधिपर्वक गुड़ाचलका दान किया उस दानके प्रभावसे रूप सौभाग्य औ आरोग्य पाया चारजन्म रानी होते व्यतीत होचुके औ अभी सातजन्म पर्यंत आगे भी राजमहिषी होगी औ उत्तम सन्तान पावैगी इतना कथनकर दुर्वासामुनि अपने धामको गये औ रानीने भी दानके प्रभावसे मनोवाञ्छित फल पाये यह दान नारियों के लिये विशेष करके फलदायकहै जो स्त्री अथवा पुरुष इस दान को विधानसे करैं उनपर गौरी भगवती प्रसन्न होती हैं॥

एकसौचौसठका अध्याय ॥

सुवर्ण पर्वतके दानका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हेमहाराज अब हम सुवर्णपर्वतके दानका विधान कहते हैं जिसके करनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है हजारपल सुवर्णका पर्वत उत्तम पांचसौ का मध्यम औ अढ़ाईसौका निकृष्ट होताहै परन्तु सामर्थ्यके अनुसार एकपल सुवर्णपर्यंतभी होसक्ता है इसका सबविधान धान्यपर्वतकीभांतिहै पर्वतका पूजनादि कर (नमस्तेब्रह्म वीजाय ब्रह्मगर्भायवैनमः। यस्मादनन्तफलद स्तस्मात्पाहिशिलोच्चय ॥ यस्माद्ग्नेरपत्यंत्वं यस्मात्पुत्वंजगत्पतेः। हेमपर्वतरूपेण तस्मात्पाहिनगोत्तम) यह मन्त्रपढ़े इस विधिसे जो पुरुष सुवर्ण पर्वत दानकरै वह स्वर्गको जाता है वहां दिव्य सौबर्ष निवासकर परमगतिको प्राप्तहोताहै सुवर्णाचलसे बढ़कर कोई दान नहीं है मणिके शृंगों से भूषित औ अष्टलोकपालों सहित सुवर्णाचलका जो पुरुष भक्ति पूर्वक दान करै वह एक कल्प पर्य्यन्त अग्निलोक में निवास करता है ॥

एकसौ पैंसठका अध्याय ॥

तिलपर्वतके दानकाविधानऔफलऔतिलोंकीउत्पत्तिसहितप्रशंसा॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम तिलपर्वत दानकाविधान कहतेहैं जिसके करनेहारा पुरुष विष्णुलोकको जाताहै सब पदार्थों में तिल पवित्र हैं औ विष्णुभगवान् के देहसे उत्पन्नहुये हैं इसलिये उत्तमागिने जातेहैं पूर्वकालमें मधु कैटभनाम दो दैत्यभये मधुकेसाथ एकहजारवर्ष भगवान् ने युद्ध किया तब परिश्रम होनेसे

भगवान्के शरीरसे प्रस्वेद भूमिपर गिरा उससे तिल औ कुश उत्पन्नभये औ वह दैत्यभी भगवान् ने मारा जिसके मेदसे सब भूमि प्लुतहोगई इसीसे मेदिनी कहाई उसदैत्य के मरनेसे देवता बहुत प्रसन्नभये औ विष्णुभगवान्की स्तुति करनेलगे कि हे भगवन् यह जगत् आपनेही उत्पन्न किया औ आपही इसका पालन करते हैं ये तिल आपके अंगसे उत्पन्नहुये हैं ये सदा हव्य कव्यका पालनकरैं औ दैव पितृकर्ममें मनुष्य इनकोलगावैं औ जहां तिलप्रयुक्त कियेजायँ वहां दैत्य पिशाच आदि कोई बिघ्न न करैं यह देवताओंका वचन सुन विष्णुभगवान्ने कहा कि ये तिल तीनोंलोकों की रक्षा के लिये होंगे जो पुरुष स्नान करके श्रद्धायुक्त शुक्लपक्षमें देवताओंको औ कृष्णपक्षमें पितरों को तिलोदक देवैंगे अथवा सातआठ तिलोंसहित जलांजलिदेवैंगे उनकेदेवता औ पितर सन्तुष्टहोंगे श्वान काक पतित आदिके संगसे जोपाप हुआहोय वह तिलतर्पणमात्रसे निवृत्त होजाता है ऐसे उत्तम तिलों करके पर्वत बनाय ब्राह्मणको देना चाहिये दशद्रोण तिलों का उत्तम पांचकामध्यम औ तीनद्रोण तिलोंका निकृष्टहोताहै तिल पर्वतकाभी पूजन आदि पूर्वरीतिसे करके (यस्माद्दैमधुनायुद्धेविष्णोःस्वेदसमुद्भवाः। तिलाःकुशाश्चमाषाश्चतस्माच्छन्नोभवत्विह॥ हव्येकव्येचयस्माच्च तिलैरेवाभिमन्त्रणम्। तस्मादुद्धरशैलेन्द्र तिलाचलनमोस्तुते) यहमन्त्रपढ़ै इस विधि से जो पुरुष तिलपर्वत का दान करै वह दीर्घ आयुष भोगकर देवता औ पितरोंकरके पूज्यमान स्वर्गको जाताहै औ पुण्यक्षय होनेपर मृत्युलोकमें जन्मले धार्मिक

राजा होताहै नारी इस दानको करै तो रूप सौभाग्य धन औ पुत्र पौत्र पातीहै निर्धन पुरुषभी इसविधानके श्रवण करनेसे कपिलादानके तुल्यफल पाताहै तिलपर्वत समान कोई दान नहीं है जिनतिलोंसे देवता औ पितर तृप्तहोते हैं उनके पर्वतके दानका पुण्य तो कौन वर्णन करसकै॥

एकसौछियासठका अध्याय॥

कर्पासाचल दानका विधान औफल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज अबहम कर्पास पर्वतके दानका बिधान कहते हैं जो सब देवताओंको प्रिय है औ सब दानोंमें उत्तमहै बीसभार कर्पासका उत्तम दश का मध्यम औ पांचभार कर्पासकापर्वत अधम होताहै पूर्व रीतिसे कर्पासाचलबनाकर धान्यपर्वतकी रीतिसे जागरण औ अधिवासनकरै फिर दूसरेदिन पूजनआदिकर सत्पात्र ब्राह्मणकोदेवै कर्पासाचलदान जोपुरुष श्रद्धासे विधिपूर्वक करै वह एककल्प रुद्रलोकमें निवासकर भूमिपर जन्मले राजाहोय रूपधन बिद्यालक्ष्मी औ पराक्रमपावै इसीप्रकार पांचजन्म पर्य्यन्त राजाहोय नारी इसदान को करै तो रूप सौभाग्य सन्तान औ धन पावै॥

एकसौसतसठका अध्याय॥

घृताचलदानका बिधान औ फल॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम सर्व पापहरनेहारे घृताचलका विधानकहते हैं पचास घृतकुंभ का उत्तम पचीस का मध्यम औ इससे भी अर्द्ध निकृष्ट होताहै इसप्रकार घृतपर्वतबनाय चारभारघृतके विष्कम्भ पर्वत बनावै उनकेऊपर चावलोंसे पूर्ण कलश रक्खै इक्षु

केलाआदि अनेकप्रकारके फल उनके समीप स्थापनकरै औ उसको वस्त्रसे वेष्टितकर धान्य पर्वतके विधानसे अधिवासन होम देवार्चन आदिकरै दूसरेदिन पूजन आदि कर (संयोगाद्घृतमुत्पन्नं यस्मादमृततेजसोः । तस्माद्घृतोर्चिर्विश्वात्मा प्रीयतांममशंकरः ॥ यस्मात्तेजोमयंब्रह्मघृतेचैवव्यवस्थितम् । घृतपर्वतरूपेण तस्मान्नःपाहिशंकर) ये मन्त्रपढ़ मुख्य पर्वत गुरुको निवेदनकरै औ विष्कम्भ पर्वत ऋत्विजोंको देवै इसविधिसे जो पुरुष घृताचल दान करै वहचाहै महापातक करनेहाराभीहोय परन्तु सब पातकोंसे छुट शिवलोकको जाताहै हंस सारस आदि पक्षियों करकेशोभित किंकिणी मालाओंकरकेभूषित दिव्यविमान में बैठ अप्सरा गन्धर्व सिद्ध विद्याधर आदिकरके सेवित प्रलयपर्यन्त पितरोंके साथ बिहार करताहै ॥

एकसौ अठसठका अध्याय ॥

रत्नाचलदानका विधान औ फल ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि अब हम रत्नाचल दान विधानका माहात्म्य कहते हैं जिस दानके करनेसे सप्तर्षि लोककी प्राप्ति होती है हजार मोतीका पर्वत उत्तम पांच सौ का मध्यम औ तीनसौका निकृष्ट होताहै मोतियों का पर्वत बनाय उसके चतुर्थांशके समान विष्कम्भ पर्वत बनावै इन्द्रनील औ गोमेदका पूर्वमें पुखराज औ पन्नेका दक्षिणमें पद्मराग औ सुवर्णका पश्चिममें औ विद्रुमसहित वैदूर्यका पर्वत उत्तरमें बनावै सुवर्णके वृक्ष औ देवता स्थापनकरै आवाहन पूजन आदि सबविधान धान्य पर्वतकी रीतिसे कर(यथादेवगणास्सर्वेसर्वरत्नेष्ववस्थिताः । पंचरत्न

मयोनित्यमतःपाहिमहाचल । यस्माद्रत्नप्रदानेनतुष्टिमेति जनार्द्दनः । सरत्नाचलदानेनप्रीतोभवतुमेसदा) ये मन्त्र पढ़ मुख्य पर्वत गुरु को औ विष्कम्भ पर्वत ऋत्विजों को देवै इस विधान से जो पुरुष रत्नाचल दान करै वह विष्णुलोकको जाय वहां दिव्यसौवर्ष पर्यन्त सुखभोगकर मर्त्यलोकमें जन्मले रूप आरोग्य बल आदि करके युक्त चक्रवर्तीराजाहोय इसदानके करनेसे अनेकजन्मोंमें किये हुये ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होजाते हैं॥

एकसौउनहत्तरका अध्याय॥

रजताचलदानका विधान औ फल एक राजाकी कथा॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि अब हम रजताचलदान का विधान कहते हैं जिसके करनेसे मनुष्य सोमलोक को जाताहै हजारपल चांदीका उत्तम पांचसौ पलका मध्यम औ अढ़ाईसौपल चांदीका निकृष्टहोताहै सामर्थ्यकेअनुसार बीसपलतकभी रजताचल बनाकर दानकरै इसके चतुर्थांशके तुल्य विष्कम्भपर्वत बनावै उनके ऊपर चांदीके लोकपाल औ ब्रह्मा,विष्णु,शिव, बनाकर स्थापनकरै सुवर्ण का पर्वत औ वृक्षआदिबनावै पूर्ववत् होमजागरणपूजनादि कर(पितॄणांवल्लभंयस्माद्धर्मोदानकरस्यच । तस्माद्रजतमांपाहिघोरात्संसारसागरात्) यहमन्त्र पढ़ मध्य पर्वत गुरुको औ चारोंके पर्वत ऋत्विजोंको देवै इसविधिसे जो रौप्याचलका दानकरै वह दशहजार गोदानकाफलपाताहै पूर्वकालमें एक बड़ाप्रतापी सूर्यवंशमें सोमप्रभ राजाहुआ जिसकी सोमवतीनाम अति रूपवती औ पतिव्रता रानी थी जो दशहजार नारियोंमें मुख्य औ राजाकी अति प्रियाथी

एकदिन सभाके बीच अपने पुरोहित श्रीवशिष्ठमुनिसे राजा ने विनयपूर्वक पूछा कि हे भगवन् किस पुण्यसे उत्तम तेज औ ऐश्वर्य मैंने पाया यह आप कृपाकर कथन कीजिये यह राजाका प्रश्न सुन वशिष्ठजी कहनेलगे कि हे राजन् पूर्वकालमें परम शिवभक्ता लीलावतीनाम एकवेश्याथी उसने चतुर्दशी के दिन सुवर्ण वृक्षों सहित लवणाचल दानकर अपने गुरुको दिया वहां एक शौंडनाम सुनार था उसने सुवर्ण के वृक्ष औ देवता श्रद्धासे बहुत सुन्दर बनाये औ धर्मका काम समझ भृति अर्थात् घड़ाई भी नहींली वृक्ष आदि ऐसे उजलाये कि अतिमनोहर होगये औ सुवर्णकार की स्त्रीने भी उन वृक्ष औ मूर्त्तियोंको प्रीतिसे स्वच्छ किया औ दोनों स्त्री पुरुषों ने दानके काममें भली भांति शुश्रूषाकरी लीलावती वेश्याने दानकर अपने गुरुकोदिया कुछकालके अनन्तर वेश्या मृत्युवश भई औ सब पापोंसे छुट शिवलोकको गई सुवर्णकार जिसने दरिद्री होकर भी घड़ाई न ली वह सप्तद्वीपके स्वामी चक्रवर्त्ती तुमभये औ उत्तम तेजपाया औ वह सुवर्णकारकी स्त्री देवप्रतिमाओं के उजलानेसे अति रूपवती तुम्हारी रानीबनी दरिद्र होकर भी सुवर्णकार औ उसकी भार्याने लवणाचलका सब काम भृतिके बिना श्रद्धासे किया उसके प्रभावसे यह उत्तम फल पाया हे राजन् अब तुम श्रद्धासे धान्याचल आदि दश पर्वतोंका दान कीजिये यह वशिष्ठजीका वचन सुन राजाने धान्याचल आदि सब पर्वतों का दान किया औ बहुत काल राज्यभोग अन्तमें देवताओं करके सेवितशिवलोकको गया जो निर्धन पुरुष इस मेरुदानको श्रद्धासे देखे

इसके विधानको प्रीतिसे श्रवणकरै अथवा दान करने के लिये किसीको बुद्धि देवै वहभी स्वर्गको जाताहै इन धान्याचल आदि दानोंके विधानको श्रवण करनेहाराही दिव्य विमानमें बैठ स्वर्गको जाताहै फिर श्रद्धासे दान करनेका तो पुण्य कहां तक वर्णनकरैं ॥

एकसौ सत्तरका अध्याय ॥

सदाचार निरूपण ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपके मुखसे प्रतिपदा आदि तिथियोंके व्रत रहस्य मन्त्र सहित व्रतोद्यापन नवग्रह यज्ञ विधान हवनविधान देवताओंके अनेकउत्सव अनेक प्रकारके दान धर्म्म तड़ाग वृक्ष आदि का उत्सर्ग इत्यादि हमने औ इन महर्षियोंने श्रवणकिये परन्तु हमारा मनमोहकोही प्राप्तहुआ आपने अनेक देवता औ भांति २ के व्रतकहे तिथि क्रमसे पूजा मन्त्र उपवास आदिका वर्णनकिया ध्यानयोगमें निष्ठ मुनीश्वर एक परमात्माकोही सर्वव्यापी औ सबका प्रभु कहते हैं यहसब आपने वर्णन किया परन्तु वर्णआश्रमोंके धर्म्म औ सदाचारका आपने कथन न किया इसलिये अब आप वर्णाश्रम धर्म वर्णन कीजिये ये सब मुनीश्वरभी आपके वचन श्रवण करने को उत्सुक होरहे हैं यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज व्रत औ दानों का लेशमात्र हमने वर्णन कियाहै सम्पूर्ण तो कौन वर्णन करसकताहै अब हम वर्णाश्रमधर्म कथनकरते हैं संसारके सबजीव दुःखोंसे छुट कल्याणके भागीहोयँ सब आरोग्यरहैं कोई दुःखभागी न होय हमने व्रतोंमें अनेक देवताओंका

पूजन आदि कहा परन्तु वास्तवमें कुछभेदनहीं जो ब्रह्मा सो विष्णु जो विष्णु सो शिव जो शिव सो सूर्य्य जो सूर्य्य सो अग्नि जो अग्नि सो कार्त्तिकेय जोकार्त्तिकेय सो गणपति इनमें कुछभेदनहींहै इसीप्रकार गौरी लक्ष्मी सावित्री आदि शक्तियोंमेंभी भेदका लेशनहीं चाहे जिसदेवीदेवत के उद्देशसे व्रत करै परन्तु भेद बुद्धि न रक्खै क्योंकि सब जगत् शिव शक्तिमयहै जगत् अनेकप्रकारका भासता है परन्तु परमार्थवेत्ता इस भेदको नहीं मानते किसी देवत का आश्रय लेकर नियम व्रत आदि करै केवल त्रयीधर्म का आचरण करनाचाहिये यहीइसमें मुख्य कारणहै परन्तु जितने हमने व्रतदान आदि कहे वेसब आचारयुक्त पुरुष के सफल होतेहैं आचारहीन पुरुषको वेदपवित्र नहींकरते चाहे छहों अंगोंसहित पढ़ेहोयँ जिसभांति पंख जमनेपर पक्षियोंके बच्चे घोंसले को छोड़कर उड़जाते हैं इसी भांति आचारहीन पुरुषको वेदभी मृत्युके समय त्यागदेतेहैं बुरे पात्रमें जल अथवा श्वानके चर्ममें दुग्धरहनेसे जिसभांति अपवित्र होजाताहै इसीप्रकार आचारहीनमें स्थित शास्त्र भी व्यर्थहै वृत्त अर्थात् आचरणका यत्नसे रक्षणकरै वित्त अर्थात् धन तो कभी आताहै औ कभी जाताहै वित्तहीन जीता औ वृत्तहीन नहींजीसकता आचारहीधर्म औ कुल का मूलहै आचार से हीन पुरुष धर्म औ कुलसे भी हीन होजाताहै दुष्टपुरुषोंके कुलसेभी क्याउपयोगहै क्यासुगन्ध युक्त उत्तम पुष्पोंमें कृमि नहीं उत्पन्न होतेहैं हीन कुल में भी उत्पन्न पुरुष जो शौच आचार सहितहोय तो सैकड़ों कुलीनोंसे वह एक उत्तमहै कुलको कुल नहींकहते आचार

को कुल कहतेहैं आचारहीन पुरुष न इस लोकमें औ न परलोक में सुख पाताहै इतना सुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब हम सदाचार श्रवणकियाचाहते हैं कि सर्वधर्ममय सदाचार किसको कहते हैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज आचारही प्रथम धर्म है औ जिनमें आचारहोय वे सत्पुरुष कहाते हैं सत्पुरुषोंका जो आचरण उसीका नाम सदाचार है जो पुरुष अपना हितचाहै उसको अवश्यही आचारनिष्ठहोना चाहिये पुरुषमें पाप आदि जितने लक्षण हैं वे सब आचारसे निवृत्तहोजातेहैं धर्मनिष्ठ परनिन्दासे रहित सत्कर्ममें प्रवृत्त औ शौचआचारमें परायण पुरुष सबका प्रिय होताहै नास्तिक क्रिया हीन अधर्मी गुरुकी आज्ञा लंघन करनेहारे औ आचारभ्रष्ट पुरुष अल्पायुष् होजाते हैं सब लक्षणों से हीन भी पुरुष श्रद्धावान् असूया रहित औ सदाचारयुक्तहोय तो अपने सब मनोरथ पाताहै ब्राह्म मुहूर्त्तमें उठ धर्म औ अर्थ का चिन्तन करै औ आचमन स्नान आदिकर प्रातःसन्ध्या करै इसीभांति मौनसे सायं सन्ध्यावन्दनभी करै सूर्य्यको उदय औ अस्तहोते न देखै तो दीर्घ आयुष्पाताहै जो ब्राह्मण दोनोंकालका सन्ध्यावन्दन नहींकरते उनको राजा शूद्र कर्मोंमें नियुक्तकरै दिन में उत्तराभिमुख औ रात्रिके समय दक्षिणाभिमुख होकर मूत्रपुरीषकात्यागकरै जोऐसास्थान नहोय तौयथेच्छत्यागै भूमिको तृणोंसे आच्छादितकर अपनेशिरको बस्त्रसे ढक पुरीषोत्सर्ग करै ग्राम आवसथ तीर्थ क्षेत्र गोष्ठ आदि में शौच न करै जलके भीतरसे आवसथसे मूषकके बिल से

बल्मीकसे मृत्तिकालेकर शौचनकरै औ शौचशेष मृत्तिका
सेभी शौचनकरै देवार्चनआदि क्रिया औ भोजनसदा आ
चमनकरकेकरै फेनरहितगन्धवर्ण शब्दसेरहित पवित्रजल
करके पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुखहोकर आचमनकरै
विद्वान्पुरुष धन उपार्जन करनेके लिये सदा यत्नकरै औ
त्रिवर्ग अर्थात् धर्म अर्थ औ काम इनकाभी सदा साधन
करतारहै इनके साधन से गृहस्थी को दोनोंलोकमें सिद्धि
होतीहै जितना धन प्राप्तहोय उसका चतुर्थांश परलोकके
निमित्तलगावै चतुर्थांश संचयकरै औ आधे द्रव्यसे नित्य
नैमित्तिक सहित अपना निर्वाह करै इसप्रकार चलने से
धर्मादिक सिद्ध होते हैं केशप्रसाधन दन्तधावन देवदर्शन
औ पूजन आदि काम मध्याह्नके पूर्व करने चाहिये अग्नि
का सेवन दूरसे करै मूत्रपुरीषका त्याग घरसे दूरजाकर करै
लोष्ट अर्थात् ढेला मर्दन करनेहारा तृणच्छेदन करनेहारा
दांतसे नख काटनेहारा सदा उच्छिष्ट रहनेहारा औ संकर
करनेहारा पुरुष बहुत आयुष् नहीं भोगता नंगी परस्त्रीको
न देखै अपनी विष्ठा न देखै रजस्वला स्त्रीके साथ संभा-
षण न करै औ उसका दर्शन औ स्पर्शभी न करै जलके
बीच मूत्र विष्ठाकात्याग औ मैथुन न करै मूत्रविष्ठा केश
भस्म तुष अंगार अस्थि धूलि आदि के ऊपर न बैठै जो
वृद्धहोयँ उनको अभिवादनकरै आसनपर बैठावै हाथजोड़
उनके सन्मुखरहै औ जब वे उठकर जायँ तब कुछ दूरतक
उनके पीछे चलै फूटे पात्रमें भोजन न करै औ कांस्यके फूटे
पात्रको विशेष करकेत्यागै केशखोलकर भोजन नकरै नग्न
होकर स्नान न करै नग्न औ उच्छिष्ट होकर शयन न करै

उच्छिष्ट हाथसे शिरको स्पर्श न करै क्योंकि सबप्रण उसके आश्रयहैं शिरमें प्रहार न करै परन्तु शिक्षाके लिये शिष्य औ पुत्रको शिरमें भी ताड़नकरै दोनों हाथोंसे शिरको न खुजावै बिना कारण निरन्तर शिरस्नान न करै ग्रहणके बिना रात्रिको स्नान नकरै भोजनके अनन्तर स्नान नकरै औ गहरेजलाशयमें भी न नहावै शिरस्नान करके किसी अंगमें तैलका स्पर्श न करै तिलपिष्ट न खाय तो आयुष् का क्षय नहीं होता है गुरुका दुष्कृत न कहै धर्मका सदा साधनकरै परनिंदा न करै औ दूसरा मनुष्य परनिंदा करताहोय तो न सुनै सदा नये औ सुन्दर वस्त्रपहिने उत्तम औषधीधारे केशोंको निर्मल औ चिकनेरक्खै सुगन्धद्रव्य धारै औ उत्तम वेष रक्खै श्वेतपुष्प धारणकरै यत्किंचित् भी पराई वस्तु न हरै औ कभी अप्रिय वचन न बोलै प्रिय वचन भी असत्यहोय तो न बोलै असत्यसे सदा बचता रहै दूसरेके छिद्र ढूंढ़ना औ बैर करना कभी भला न समझै विद्वेषी पतित उन्मत्त बड़ा बैरी संकर व्यभिचारिणी कुलटापति क्षुद्र मत्त हठी क्रोधी आदिके साथ मैत्री नकरै एकाकी मार्गमें न चलै जलाशयमें अवगाहन न करै प्रदीप्त घरमें प्रवेश न करै पर्वतके शिखरपर न चढ़ै दांत न पीसै नासिकाको न खोदै बिना मुखढके उबासी नलेवै ऊंचे स्वरसे न हसै शब्दसहित पवन न त्यागै रात्रि के समय चतुष्पथ श्मशान उपबन में औ वृक्षकी छायामें न जाय दुष्टका संग न करै ग्रीष्म औ वर्षामें छतरी धारणकरैरात्रि के समय औ वनमें दण्डधारणकरै जूतापहिने बिना न फिरै केश अस्थि कांटे भस्म तुष बालि औ स्नानके जलसे भीगी

हुई भूमि इनको दूरसे त्यागै ब्राह्मण गौ राजा विद्वान् गर्भिणी स्त्री मूक अन्ध बधिर मत्त उन्मत्त औ भार करके पीड़ित इन सबको रस्ता देनाचाहिये अर्थात् ये आगे से आवैं तो मार्ग छोड़देवै जूता वस्त्र औ पुष्पमाला दूसरेके धारेहुये धारण नकरै परस्त्री संगसे सदाबचै इससे अधिक आयुष्का क्षय करनेहारा कोई कर्म नहीं है यत्नसे स्त्री की रक्षाकरै ईर्षा न करै ईर्षा करनेसे आयुष् घटताहै मूर्ख उन्मत्त व्यसनी कुरूप मायावी हीनांग अधिकांग विद्याहीन आदि पुरुषों को कभी दान न देवे परन्तु अन्न और जल इनको भी देनाचाहिये अर्द्धरात्रिके समय भोजन न करै खड़ाहोकर नपढ़ै बहुतहास्य नकरै पैरसे आसनको खैंचकर न बैठै ब्राह्मण क्षत्रिय औ सर्पइनसे वैर नकरै ये तीनों तुल्य हैं बिनाबदलालिये नहींरहते प्रभात सायंकाल औ मध्याह्न में गमन न करै अपरिचित मनुष्योंके साथ यात्रा न करै औ परिचित मनुष्योंमें भी सबके आगे न चले अरुंतुद अर्थात् किसीके मर्मको स्पर्श करनेहारा न होय क्रूरवचन न बोलै निकृष्टपुरुषसे वेद ग्रहण नकरै जिसबाणीसे दूसरे को उद्वेगहोय उसको न बोलै वह वाणी अलक्ष्मीका रूप है औ नरक देनेहारीहै वचनरूप बाण मुखसे निकलतेहैं जिन करके ताड़ित पुरुष दिन रात शोचता है वे दुर्वचन बाण दूसरे के मर्मों में लगते हैं इसलिये पण्डित पुरुष वे दुर्वचन बाण औरों में न छोड़ैं शस्त्रका घाव भरजाता है परन्तु दुष्ट औ बीभत्स वचनोंकाघाव नहींभरता नास्तिकत्व वेदनिन्दा द्वेष स्तम्भ अभिमान क्रूरता औ वेदों का कुत्सन इनका सदात्यागकरै ब्राह्मणकी निन्दा नकरै नक्षत्र

न दिखावै पक्षके आदिकी तिथि नकहै इससे आयुष्नहीं घटता छींकलेकर निष्ठीवन करके उवासीलेकर वस्त्रपहिन आचमनकरै जिसदेशमें शत्रुओंके जीतनेवाला औ धर्मात्मा राजाहोय उस देशमें निवासकरना चाहिये जहां दुष्ट राजाहोय वहां बसनेसे सुख नहींहोता जहांकेलोक मत्सर आदिसे रहित न्यायमें तत्पर औ परस्पर मिलकररहनेहारे होयँ वहां बसनेसे सुखहोताहै जिसदेशके कृषीवल अर्थात् किसान अति भोगी होयँ जहां पूर्वबैरहोय निरंतर मनुष्य उत्सवोंमें व्यग्ररहैं औ जिगीषुराजाहोय वहां निवास न करै जिस देशमें ऋणदेनेहारा वैद्य श्रोत्रिय अर्थात् वेदवेत्ता ब्राह्मण औ सजलानदी नहोय उसदेशमें निवास नकरै मलिन दर्पणमें मुखनदेखै औ रात्रिकेसमयमेंभी दर्पणनदेखै इससे आयुष्घटताहै सुनारके घरमेंकभी भोजन नकरै न सुनारका विश्वासकरै न सुनारके घरमेंनिवासकरै औ न सुनारको अपनेघरमेंरहनेदेवै फूटापात्र टूटीखाट कुक्कुट औ श्वानइनको घरमें नरक्खै औकांटोंके वृक्षभीघरमें न लगावै येसबअप्रशस्तहैं फूटापात्र घरमें होनेसे नित्यकलह होताहै टूटीखाट रहनेसे बाहनोंका क्षय कुक्कुट औ श्वानके रहनेसे उसघरमें पितर भोजन नहीं करते औ कण्टकी वृक्षोंकेनीचे पिशाच रहतेहैं बिनास्नानकिये भोजनकरनेहारा मलभोजनकरता है पंचयज्ञ किये बिना पूय औ रुधिर के समान भोजन है औ असंस्कृत अन्न मूत्रके तुल्यहै औ सुवासिनी गर्भिणी वृद्ध बालक रोगी आदिको प्रथम भोजनकराय पीछे गृहस्थी भोजनकरै देखतेहुये मनुष्योंको बिनादिये जो भोजन करै वहकेवल पाप भोजनकरताहै पहिले वैश्वदेवकर आ-

हुतिदेवै। ब्रह्मणेनमः । भूतानांपतयेनमः। गृह्येभ्योनमः। कश्यपायनमः। भूपतयेनमः। इन मंत्रों से आहुति देकर गोग्रास देवै फिरि पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि दिक्पालों को बलिदेकर। ब्रह्मणेनमः। अन्तरिक्षायनमः। सूर्यायनमः। विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः। विश्वभूतेभ्योनमः। इन मन्त्रों से बलिदेवै पीछे अपसव्य करके यमको बलिदेकर अग्निको निकाल हन्तकार कल्पना करै औ विधिपूर्वक ब्राह्मणको देवै फिर अतिथि ब्राह्मण गुरु आदिको भोजनकराय उत्तम गन्ध औ माल्यधारणकर हाथ पैर आर्द्रकरके पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठ प्रसन्नचित्तहो भोजन करै दुष्ट पुरुषका लायाहुआ जुगुप्सित असंस्कृत औ उच्छिष्ट अन्न को भोजन न करै बहुत मनुष्योंके बीच अतिकाल होजाने पर क्रोध करके व्याकुल होकर औ पात्रबिना भोजन नकरै आसनपर बैठ उत्तमपात्रमें एकाग्र चित्तहोकर भोजनकरै पहिले मीठा भोजनकर लवण अम्ल कटु तिक्त आदि रस भोजनकरै प्रथम मृदुभोजनकरै मध्यमें गरिष्ठ पदार्थ औ अन्तमें फिर कोमल भोजनकरै दिनमें अम्लके बीच रात्रि में दही सत्तूके बीच औ सर्वकालमें कोविदारके बीच अलक्ष्मीका निवास होताहै भोजनके समय अन्नकी निन्दा न करै मौनसे भोजनकरै प्राणायस्वाहा इत्यादि मन्त्रों से पांचग्रास मौनपूर्वक लेकर पीछे भोजनकरै भलीभांति भोजनकर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर आचमन करै पीछे हाथ पैर धोकर इष्टदेवताका स्मरणकर (प्राणापानसमानानामुदानव्यानयोस्तथा। अन्नंपुष्टिकरंचास्तु ममास्त्वव्याहतंसुखम्। अगस्तिरग्निर्वडवानलश्चभुक्तं

मयान्नंजरयंत्वशेषम्। सुखंचतन्मेपरिणामसंभवंगच्छन्त्व रोगंखलुवासुदेव) ये मन्त्र पढ़ अपने उदर पर हाथ फेरै सायंकालके समय जो अतिथि आवै उसको पैर धाने के लिये जल देवै औ भोजन कराय उत्तम शय्यापर सुलावै आपभी रात्रिके समय उत्तम शय्यापर सोवै जिस खाटमें जीव न होयँ कोमल बिछौना बिछाहोय बहुत ऊंची नीची औ टूटी न होय उसपर शयन करै पूर्व अथवा दक्षिणकी ओर शिर करके सोवै और दिशाओंमें शिर करनेसे रोग उत्पन्न होते हैं विहित कालमें प्रसन्न चित्तहोय सामर्थ्य के अनुसार स्त्री संगकरै रजस्वला गर्भिणी अस्नाता क्रोध युक्त रोगिणी कुरूपा परस्त्री कामरहित क्षुधाकरके पीड़ित औ अतिभोजन कियेहोय ऐसी नारीसे संग न करै आप भी स्नानकर भूषितहोकर सकाम सानुराग औ प्रसन्नचित्त होकर न तो क्षुधित औ न बहुत भोजन करके एकांत में स्त्रीसंगकरै चतुर्दशी अष्टमी पंचदशी आदि पर्वदिनोंमें स्त्री संग औ तैलाभ्यंग न करै ऋतुके अनन्तर युग्म रात्रियों में स्त्रीसंगकरै क्षौरकराय स्त्री संभोगकर तैल लगाय औ श्मशानमें जाकर सचैल स्नान करनाचाहिये गुरु पतिव्रता तपस्विनी आदि स्त्रियोंकी निन्दा न करै औ इनके साथ हास्यभी न करै जल औ अग्निको साथही धारण न करै देवता गुरु औ ब्राह्मणकी ओर पांव न पसारै अंजलिसे जल न पीवै धूप औ प्रचण्डवायुका सेवन न करै जो पुरुष बन्धुओंका सन्मानकरै भयभीतका आश्वासनकरै औ सदाचारमें रहै उसके धर्म अर्थ औ कामकी हानि नहीं होती वृथा मांसभक्षण नकरै आक्रोशविवाद औ पैशुन्यका त्याग

करै मांस कृसर शष्कुली खीर आदि पदार्थ केवल अपने अर्थपाक न करै देवता औ पितरों के निमित्त बनावै रक्त पुष्पोंकी माला धारण न करै श्वेत पुष्पमाला धारै कमल औ कुवलय पुष्पोंकीमालाका निषेध नहींहै शयनकेसमय देवपूजन समय औ भोजनके समय अलग २ वस्त्रधारण करै पिप्पल वट पनस लकुच औ गूलर के फल न खाय इनके खानेसे सन्तानकीवृद्धि नहींहोती पतित मनुष्योंका संसर्ग न करै वृद्ध यति दरिद्री मित्र इनको अपने घरमें निवासदेवै इनके रहनेसे घरकी वृद्धिहोतीहै पारावत शुक औ मैना घरमें रखने चाहिये छुछुन्दरी चमगीदड़ आदि दुष्ट पक्षियोंको घरमें न रहनेदेवै बकरा बैल चन्दन बीणा दर्पण घृत शहत जल औ अग्नि सदाघरमें रखनेचाहिये हाथी रथ अश्व आदि उत्तम वाहनों पर चढ़ना योग्यहै राजाको सदा प्रजापालन करनाचाहिये प्रजापालन करने हारा राजा पापकरकेलिप्त नहींहोता यज्ञशास्त्र शब्दशास्त्र गांधर्वशास्त्र पुराण इतिहास आदिसब जाननेचाहियेइतना कहराजायुधिष्ठिरके प्रति श्रीकृष्णभगवान् कहतेभये कि हे महाराज यहसदाचारकालक्षणहमने संक्षेपसे कहाहैविशेष करके सदाचार वृद्धों से सीखना चाहिये आचारसे ऐश्वर्य कीर्त्ति आयुष् बढ़तेहैं आचार अलक्षणको दूरकरताहै सब आगमोंमें आचारको श्रेष्ठकहाहै आचारसे धर्मकी उत्पत्ति है आचारसे धनकी औ सन्तानकी वृद्धि होतीहै यह सदा चारलक्षण यशआयुष् स्वर्ग औ मङ्गल देनेहाराहै आचार के सेवनसे त्रिवर्गकी प्राप्तिहोतीहै इसलिये बुद्धिमान् पुरुष शास्त्रोक्त रीतिसे सर्वदा सदाचारका सेवन करै॥

एकसौइकहत्तरका अध्याय॥

पुराण श्रवण आदिका माहात्म्य और पुराणसमाप्ति॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज व्रत औ दानमय धर्म हमने आपको श्रवणकराया धर्म सबका मूल है इसलिये धर्म का सेवन करना चाहिये अर्थ औ कामका हमने जानकर बर्णन नहींकिया क्योंकि अर्थ औ काम में लोकोंकी स्वयमेव प्रवृत्ति होरहीहै कामी पुरुष को काममें प्रेरणाकरना औ लोभीको लोभमें प्रवृत्तकरना अन्धे को कुवेमें डालनाहै इसलिये अर्थ औ कामका किसीको उपदेश न करनाचाहिये सदाचार पुरुषों के हितके लिये यह भविष्योत्तर हमने कहाहै इतिहास पुराण वेद वेदांग आदिमें जो कुछ देखा सो वर्णनकिया लोक औ वेदसे बिरुद्ध जो बातहोय उसमें श्रद्धानहींकरना वह केवल मत्तप्रलाप है ऋषियोंके सन्मुख अतिस्नेहसे हमने यह पुराण बर्णन कियाहै दांभिक शठ नास्तिकदुराचार आदिको यह प्रकाशित नहीं करना चाहिये साधु जितेन्द्रिय सदाचार औ देव ब्राह्मणभक्त जो पुरुष होयँ वे इसके पठन श्रवण के अधिकारीहैं वर्णाश्रम देवता ऋष्यादिकोंके सब व्यवहार इस भविष्यपुराणमें बर्णित हैं जहां यह पुराणरहै उस घर में सदा लक्ष्मी का निवास रहता है औ महामारी आदि उपद्रव नहींहोते संक्रांति ग्रहण व्यतीपात आदि पर्वों में दक्षिणासहित इस पुराणका दानकरै वह दिव्य बिमानमें बैठ स्वर्ग को जाताहै औ उसके पितरों का अक्षय स्वर्ग वास होताहै हे महाराज आप धर्मका अवतार हैं औधर्म का तत्त्व भलीभांति समझते हैं इसीलिये आपके ९

यह धर्मोपदेश हमने किया इस कारण सब लोकोंको इस पर श्रद्धा रखनीचाहिये जो पुरुष सदाचार ब्राह्मणके मुख से इस पुराणका श्रवणकरैं औ दक्षिणा भोजन आदि से पौराणिक को सन्तुष्ट करैं वे धन सन्तान ऐश्वर्य यशपाते हैं औ बहुतदिन संसार सुख भोगकर विष्णुलोकको जाते हैं राजा शतानीकके प्रति इतनीकथा श्रवणकराय सुमन्तु मुनि कहतेभये कि हे राजन् आपके पितामह राजा युधिष्ठिरके प्रति इसप्रकार धर्मोपदेशकर श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि हे महाराज अब हम द्वारकाको गमन कियाचाहते हैं फिर जब आप स्मरण करोगे तब आवेंगे सब संसार कालके वशहै यह जानकर पुरुषको सदा प्रसन्न रहनाचाहिये पाण्डवोंनेभी सत्कारपूर्वक श्रीकृष्ण भगवान्को द्वारका जांनेके लिये विदाकिया श्रीकृष्णभगवान् भाई बन्धु जातिके लोग औ इष्टमित्रोंसे मिल ब्राह्मणोंको प्रणामकर द्वारकाके प्रति यात्रा करते भये याज्ञवल्क्य मुनिके प्रति ब्रह्माजीने जो उपदेश किया औ श्रीकृष्ण भगवान् ने जो राजा युधिष्ठिरको श्रवणकराया वही हमारेगुरु महर्षि श्री वेदव्यासजीनेरचा औ हमने आपको उपदेशकिया इतनी कथासुनाय राजाशतानीकसे बिदाहोय सुमन्तुमुनि अपने आश्रमको जातेभये ॥ श्लोक ॥ जयतिपराशरसूनुः सत्यवतीहृदयनन्दनोव्यासः। यस्यास्यकमलगलितं वाङ्मयममृतंजगत्पिबति ॥ दोहा ॥ भाषामाहिंविचारिकै तजिमकोपरमाद। रचीरुचिरयहहरिकथा बुधदुर्गापरसाद हरनेहारीश्रवणतैं भक्तनकेभवफन्द। बनीरहैयहभूमिमें जबलौंसूरजचन्द २ भविष्यपुराणका उत्तरभाग समाप्त

श्रीभविष्यपुराण सम्पूर्णभया ॥